'वीरविनोद' राजस्थान के इतिहास का एक विशालकाय और चिरस्मरणीय ग्रन्थ है। यह सन् १८८६ ई० में मुद्रित हुआ था और अब एक दीर्घ अन्तराल के पश्चात् प्रथम बार इसका पुनर्मुद्रण प्रस्तुत किया जा रहा है। उर्दू-मिश्रित हिन्दी में लिखित एवं एक निराली स्पष्टोक्तिपूर्ण शैली में रचित इस ग्रन्थ ने हिन्दी के शुरू के भारतीय-इतिहास-साहित्य में बहुत उच्च स्थान प्राप्त कर लिया था।

चार जिल्दों और २७१६ पृष्ठों में मुद्रित यह ऐतिहासिक वृत्तान्त मेवाड़ को राजपूत वैभव, शौर्य एवं पराक्रम के केंद्र के रूप में प्रदर्शित करता है। इसमें प्रमुख घटनाओं से उत्पन्न हलचलों का, उनकी चुनौतियों का, तथा विभिन्न महाराणाओं के नेतृत्व में मेवाड़वासियों ने उनका जिस साहस और वीरता के साथ सामना किया उसका सजीव वर्णन किया गया है। इसके प्रत्येक पृष्ठ पर अस्त्रों की झनझनाहट एवं राजपूत शौर्य के अभूतपूर्व कारनामे अंकित हैं।

ग्रंथकार ने राजस्थानी इतिहास का वर्णन संपूर्ण विश्व के परिप्रेक्ष्य में किया है। इसमें यूरोप, अफ्रीका, उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथा एशिया महाद्वीपों का सामान्य सर्वेक्षण किया गया है; भारत पर सिकन्दर के आक्रमण एवं मुसलमानों के आगमन को चित्रित किया गया है; भारतीय उपमहाद्वीप के बाहर घटनेवाली उन घटनाओं का गंभीर विवेचन-विश्लेषण किया गया है जिन्होंने मेवाड़ के जन-जीवन को प्रभावित किया; तथा हिमालय की गोद में बसे हुए नेपाल-राज्य के इतिहास की भी सूक्ष्म छानबीन की गई है।

राजस्थान के राजनीतिक, आर्थिक एवं प्रशासनिक पहलुओं पर प्रकाश डालनेवाली प्रचुर सामग्री बहुमूल्य अभिलेखों, राजकीय दस्तावेजों, अनेक फरमानों तथा आंकड़ों के रूप में इस ग्रंथ में संगृहीत है।

भारतीय विद्वानों, अनुसंधानकर्ताओं, छात्रों एवं सामान्य पाठकों के द्वारा लम्बे अरसे से इस कृति के पुनर्मुद्रण की मांग की जा रही थी, और स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् तो यह मांग और भी जोर पकड़ गई थी। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रस्तुत प्रयास किया गया है।

कविराज श्यामलदास, जिन्होंने यह ग्रन्थ लिखा है, मेवाड़ के महाराणा सज्जनसिंह (१८५९-८४) के दरबार को सुशोभित करनेवाले राजकवि थे। उनके विशाल ज्ञान एवं पाण्डित्य से अभिभूत होकर उन्हें 'महामहोपाध्याय' तथा 'कैसर-ए-हिन्द' की सम्मानजनक उपाधियों से विभूषित किया गया था। 'वीरविनोद' उनकी प्रधान रचना है।

आवरण चित्र : महाराणा सज्जनसिंह (१८५९-८४)

चार जिल्दों में सम्पूर्ण : रु० ८००

वीरविनोद

मेवाड़ का इतिहास

महाराणाओं का आदि से लेकर सन् १८८४ तक का विस्तृत वृत्तान्त
आनुषंगिक सामग्री सहित

प्रथम भाग

लेखक
महामहोपाध्याय कविराज
'श्यामलदास'
[महाराणा सज्जनसिंह के आश्रित राजकवि]

प्राक्कथन
प्रो० थियोडोर रिकार्डी (जूनियर)
कोलम्बिया विश्वविद्यालय (न्यूयार्क)

मोतीलाल बनारसीदास
दिल्ली वाराणसी पटना मद्रास

FOREWORD

The *VIRVINOD* of Shyamaldas, one of the earliest Indian historical works written in Hindi, has long been inaccessible to scholars and the general public. Printed in folio size in Udaipur in 1893, it was never distributed widely and only a few copies found their way outside of Rajasthan. Scholars have seldom seen it or had the opportunity to study it, and it has remained a legend, often mentioned in scholarly conversation but rarely referred to in print and even more rarely read. The work was first brought to my attention many years ago by Professor S. Rudolph of the University of Chicago. At the time I was searching for Indian texts dealing with Nepal, and I was happy to find that Shyamaldas had included an account of that country in his work. I later published the Nepal section with a brief introduction and translations of the portions dealing with caste and the history of the Shah kings.[1] It was quite clear to me then, however, that this immense work would be of the greatest interest to almost all students of South Asia, and I suggested to Narendra Jain that he reprint it in its entirety. I am happy to see that this project has finally come to fruition and that this beautiful work, almost unsurpassed as an example of the Indian printer's art as well, is now generally available in a facsimile edition.

Of the *VIRVINOD*, one Indian historian has written:

> After Tod, the pioneer work in this field was done by Kaviraj Shyamaldas, court poet of Maharana Sajjan Singh (1874-1884) of Mewar. Kaviraj Shyamaldas in his monumental history entitled Vir Vinod which runs to nearly 2800 pages, has covered a very wide field of the history and geography of the whole of Rajasthan. The author has also brought together a large amount of statistical material on the political, economic, and administrative aspects of Rajasthan. He has also given copies of many inscriptions as well as *farmans* etc. of the Mughal kings. Thus this great work will ever remain a standard work of reference on the political history of Rajasthan.[2]

This assessment is essentially correct, but it would be misleading to characterize the work as only a history of Rajasthan. Mewar was Shyamaldas' central concern, but he included British, European, and Asian history in order to provide a context for his work, and he enriched it with detailed descriptions of society and religion.

[1] *Kailash: A Journal of Himalayan Studies*, Vol. 14, 3, 1976.

[2] P. Saran, 'A Survey and General Estimation of the Importance of Historical Sources in Regional Languages with Reference to Rajasthan and Gujarat' in Mohibbul Hassan, *Historians of Medieval India*, Meenakshi Prakashan, Meerut, 1968, p. 200.

How well he was able to exploit the materials available to him awaits the critical evaluation of future historians.

It may be too that the ultimate importance of the *VIRVINOD* lies in its value as the intellectual biography of a man who, with great restrictions as well as opportunites, laboured over many years to portray himself, his people, and the court of which he was a member. In this way, as part of Indian intellectual history during the last century, it will remain a work of abiding interest. Just short of a century after its first appearance, the *VIṚVINOD* of Kaviraj Shyamaldas is now presented to the wider audience that it so well deserves.

THEODORE RICCARDI, JR.
Professor of Indic Studies
Columbia University
in the City of New York

16 *March*, 1986
Barakhamba Road, New Delhi
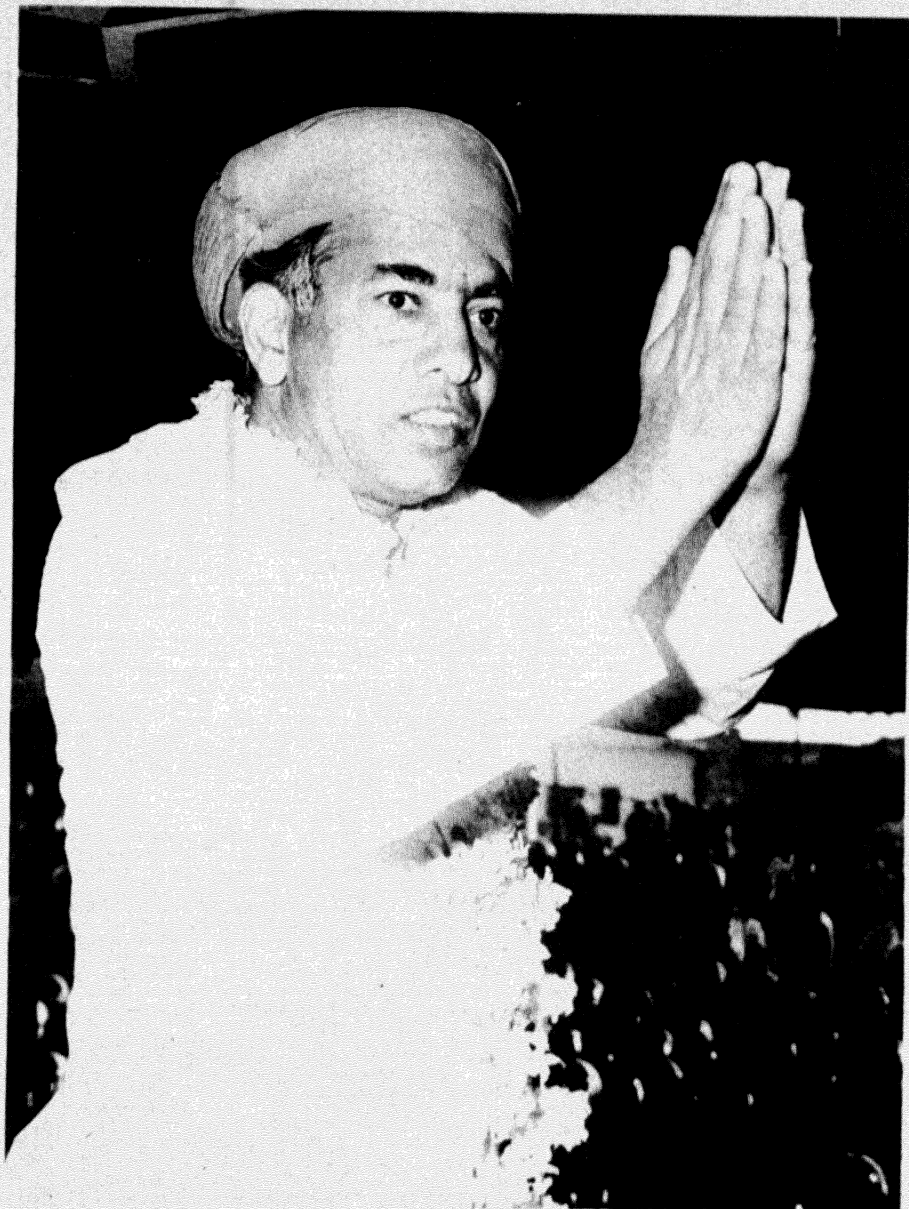
समर्पण

कैलासवासी श्री जी महाराणा भगवतसिंह जी, मेवाड़
(जन्म दिनांक ६ जून, १९२१, गद्दी बिराजे ५ जुलाई, १९५५
कैलासवास दिनांक ३ नवम्बर, १९८४ ई०)
की पवित्र स्मृति में
सादर समर्पित।

THE PALACE
UDAIPUR
INDIA

भूमिका

यह हमारे लिए विशेष महत्त्व और गौरव का विषय है कि मेवाड़-राज्य की स्थापना किसी युद्ध के कारण, समझौते या संधि के परिणामस्वरूप अथवा बख्शीश के फलस्वरूप न होकर ईश्वरीय अनुकंपा तथा गुरु-आशीर्वाद से ही हुई। मेवाड़-राज्य की स्थापना भगवान् श्रीमद् एकलिंगेश्वर के आदिपीठाधीश, दैवज्ञ ऋषि हारीत के आशीर्वाद से उनके मनोनीत पट्ट शिष्य रघुकुल-तिलक प्रभु रामचंद्र के सूर्यवंश में अवतरित गुहिलोत-वंशीय बापा रावल द्वारा आठवीं सदी में की गई। दैवज्ञ ऋषि हारीत ने निम्नवर्णित चतुर्मुखी आदर्श सनातन सिद्धान्तो के पालन का निर्देश करते हुए मेवाड़-राज्य का संचालन मेवाड़-स्वामी परमेश्वर एकलिंगनाथ के प्रतिनिधिस्वरूप बापा रावल को सौंपा–

१– मानव-धर्म निर्वहन,
२– मानव-सेवा अनुपालन,
३– मानव-आत्मा को सतत चैतन्य बनाये रखना, और
४– मानव को सृष्टि के विराट स्वरूप उस अविनाशी तत्व का बोध कराना।

ऐसी दैविक पद्धति से प्रशासित मेवाड़ केवल वीरभूमि ही नहीं सर्वधर्म-समन्वय-रूपी देवभूमि भी है। इस प्रसंग का मेवाड़ के महान् योगी व संत राजर्षि महाराज चतुरसिंहजी बावजी रचित निम्नांकित दोहा द्रष्टव्य है:–

एकलिंग गिरिराजधर, ऋषभदेव भुजचार।
सुमरो सदा सनेह सों, चार धाम मेवार।।

राजवंश ही नहीं अपितु प्रत्येक मेवाड़ी अपनी स्वाभिमानी भावना के कारण विश्व में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त कर चुका है। भारत की अभिजातीय महत्ता और आर्यत्व-स्वाभिमानता का सदियों तक निरन्तर रक्षण करना प्रत्येक मेवाड़ी का कर्त्तव्य एवं धर्म रहा है। मेरी यह मान्यता है कि इस धरती द्वारा अर्जित इस महत्ता का एकमात्र कारण जाति, वर्ग और धर्म से ऊपर उठकर शताब्दियों से सनातन सिद्धांतों का पालन करना ही रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि इन मूल्यों का युगानुकूल अनुसरण होता रहेगा तो यह धरती भविष्य में और अधिक महत्ता प्राप्त करने में सक्षम होगी। मेवाड़-संबंधी विभिन्न युगान्तरकारी घटनाओं को सुरक्षित करने का प्रयत्न शिलाभिलेखों, ताम्रपत्रों और ग्रन्थों से समय-समय पर किया जाता रहा। व्यापक रूप में प्रचलित मौखिक काव्यों और कथाओं द्वारा प्राचीन परंपराओं को सुरक्षित रखने का श्रेय अनेक चारणों और कविराजों को प्राप्त है।

इस समस्त सामग्री का सर्वेक्षण, संकलन और उपयोग करते हुए सर्वप्रथम कर्नल जेम्स टॉड ने अपना सुप्रसिद्ध ग्रन्थ "एनल्ज एण्ड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान" क्रमशः सन् १८२९ और १८३२ ई० में लंदन से दो भागों में प्रकाशित करवाया। इस ग्रन्थ द्वारा मेवाड़ की महत्ता सर्वप्रथम प्रतिष्ठित हुई। पोलिटिकल एजेन्ट कर्नल जेम्स टॉड के इस परिश्रम की सराहना स्वर्णाक्षरों में अंकित करें तो भी कम है।

कालान्तर में महाराणा सज्जनसिंहजी (१८७४-१८८४ ई०) ने अपने अल्प शासनकाल में अनेक नवीन निर्माण-कार्यों के साथ ही मेवाड़ की शासन-व्यवस्था, साहित्य, कला, इतिहास आदि क्षेत्रों में व्यापक विकास-कार्य किये। महाराणा सज्जनसिंहजी ने समकालीन संस्कृत, हिन्दी, मेवाड़ी और अरबी-फारसी आदि भाषाओं में साहित्य-रचना को व्यक्तिगत रुचि एवं योगदान द्वारा प्रोत्साहित किया।

"वीर-विनोद" नामक बृहद् ग्रन्थ को कविराजा श्यामलदासजी की अध्यक्षता में लिखवाना महाराणा सज्जनसिंहजी की मेवाड़-इतिहास को प्रतिष्ठित एवं प्रसारित करने वाली अमर देन है। उस समय इस ग्रन्थ के लेखन हेतु एक लाख रुपये की स्वीकृति प्रदान की गई थी। डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा जैसे महान् इतिहासकार और अन्य प्रमुख विद्वानों का सहयोग भी इस कार्य के लिए प्राप्त किया गया। इस प्रकार का बृहद् कार्य अपने शासन-काल में वे पूर्ण नहीं करवा सके। इस ग्रन्थ का शेष लेखन और मुद्रण-कार्य महाराणा फतहसिंहजी ने शासन-कार्य संभालते ही प्राथमिकता के साथ पूर्ण करवाया।

ब्रिटिश शासकों ने महाराणा फतहसिंहजी के कार्यों में हस्तक्षेप करते हुए अनेक बाधाएं उपस्थित की, क्योंकि स्वाधीनता के पक्षधर होने के कारण आप भारत में एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिनसे ब्रिटिश शासन को संकट था। महाराणा फतहसिंहजी को आधुनिक युग में भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के प्रारंभकर्ता और प्रेरक कहा जाय तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी।

कैलासवासी श्री जी महाराणा भगवतसिंहजी (सन् १९५५-१९८४) की यह हार्दिक अभिलाषा थी कि इस महान् ग्रन्थ का सुसंपादित संस्करण पुनः प्रकाशित किया जाय और इसमें वर्तमान काल मेवाड़ के संपूर्ण इतिहास का नवीन ज्ञात तथ्यों सहित समावेश किया जाय।

मेरे कैलासवासी पिता श्री के मतानुसार राज्यों का विलीनीकरण हो सकता है परन्तु मानव के कर्त्तव्यों और धर्म का विलीनीकरण नहीं होता। श्री जी महाराणाा भगवतसिंहजी ने मेवाड़ में मानव-महत्ता के मूलभूत सिद्धांतों की ज्योति अखण्ड रूप में प्रज्वलित रखने हेतु तथा इसके पुनीत प्रकाश से समस्त भारत को आलोकित करने और भावी मानव को इस भूभाग के संदेश के रूप में इन सनातन भावनाओं को वर्तमान परिस्थितियों में प्रदान करने के लिए स्थायी महत्त्व के अनेक ट्रस्टों की स्थापना की।
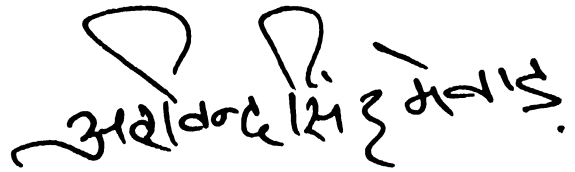
मेरे पिता श्री का असामयिक कैलासवास हो जाने के कारण उनकी अनेक हार्दिक अभिलाषाएं पूर्ण नं हो सकीं। उन्होंने वंश का कर्त्तव्य-भार-निर्वहन का जो उत्तरदायित्व मुझे सौंपा उसके महत्त्व से मैं भलीभांति परिचित हूँ। मुझे विश्वास है कि एकलिंगनाथ की अनुकंपा, मेरे कैलासवासी पिता श्री के आशीर्वाद और मेवाड़ के सनातन सिद्धांतों में आस्था रखने वाले महानुभावों के सहयोग से मैं उनकी अभिलाषाओं की पूर्ति कर सकूंगा।

''वीर-विनोद'' का प्रस्तुत संस्करण श्री जी महाराणा भगवतसिंहजी द्वारा संस्थापित महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन ट्रस्ट के सहयोग से प्रकाशित किया जा रहा है।

यह ग्रन्थ मात्र मेवाड़ का इतिहास ही नहीं अपितु ब्रिटिश, यूरोपीय और एशियाई अनेक देशों के अज्ञात ऐतिहासिक अध्यायों पर भी प्रकाश डालता है। इस संस्करण का अभाव अनेक वर्षों से अनुभव किया जाता रहा है जिसकी पूर्ति के लिए मैसर्स मोतीलाल बनारसीदास द्वारा ''वीर-विनोद'' का पुनर्मुद्रण कार्य अत्यन्त सराहनीय है।

शुभकामनाओं सहित।

राजमहल, उदयपुर
महाराणा श्री प्रताप जयंती,
ज्येष्ठ शु० ३ वि०सं० २०४३
१० जून, १९८६

(अरविन्दसिंह, मेवाड़)

प्रकाशकीय

'वीरविनोद' राजस्थान के इतिहास से सम्बन्धित, विशेषतः मेवाड़ के महाराणाओं के विषय में लिखित, एक बहुचर्चित ऐतिहासिक ग्रन्थ है, जिसकी रचना मेवाड़ के महाराणा सज्जनसिंह (सन् १८५६-१८८४ ई०) के आश्रित राजकवि महामहोपाध्याय पं० श्यामलदास ने की थी।

यह ग्रन्थ राजदरबारों में प्रयुक्त तत्कालीन उर्दू-मिश्रित हिन्दी में सरल एवं सरस शैली में लिखा गया है। यह सन् १८८६ के आसपास मोटे अक्षरों और बड़े आकार के लगभग २६०० पृष्ठों में उदयपुर में छपा था। प्रचार के समुचित साधनों के अभाव में उस समय इस ग्रन्थ को जितनी लोकप्रियता मिलनी चाहिए थी उतनी न मिल सकी, यद्यपि महत्त्व की दृष्टि से यह कर्नल टॉड के अंग्रेजी में लिखित राजस्थान के इतिहास-विषयक ग्रन्थ की टक्कर का है, उससे कदापि कम नहीं।

ग्रन्थ का प्रथम मुद्रण पांच जिल्दों में हुआ था जिनमें प्रथम भाग एवं बीस प्रकरणों सहित द्वितीय भाग का समावेश है।

प्रथम भाग में यूरोप, अफ्रीका, उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथा एशिया के सामान्य भौगोलिक सर्वेक्षण के पश्चात् सिकन्दर महान् के सैनिक अभियानों का वर्णन एवं भारत पर मुसलमानों के द्वारा बार-बार किए गए आक्रमणों की चर्चा है। इसमें अनेक महत्त्वपूर्ण सूचियां भी दी गई है, जैसे ब्रिटिश भारत के तत्कालीन रजवाड़ों की तथा गुहिल से लेकर ग्रन्थकार के समसामयिक महाराणा फतेहसिंह तक अठहत्तर महाराणाओं की सूचियां। इसके अतिरिक्त गुहिल से संग्रामसिंह तक पचपन महाराणाओं के शासन-काल की सभी मुख्य घटनाओं का वर्णन भी दिया गया है।

द्वितीय भाग [तीन खण्ड] में छप्पनवें महाराणा रत्नसिंह के १५२७ ई० में सिंहासनारूढ़ होने के बाद की एवं १८८४ ई० में सतहत्तरवें महाराणा सज्जनसिंह के स्वर्गवास तक की घटनाओं का विस्तृत इतिहास दिया गया है।

ग्रन्थ का मुख्य विषय मेवाड़ का राजनीतिक इतिहास है, पर लेखक ने अनुषंगतः यूरोप और एशिया के समसामयिक इतिहास की भी चर्चा की है। मेवाड़ की घटनाओं को प्रभावित करनेवाली सामान्य आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों का भी यत्र-तत्र उल्लेख किया गया है। नेपाल तक का इतिहास इसमें मिलेगा। महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेजों, पुरालेखों और फर्मानों ने इस ग्रन्थ की उपयोगिता में आशातीत वृद्धि की है। संक्षेप में, यह ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण और उपयोगी ऐतिहासिक सूचनाओं का एक विशाल भण्डार है। आशा है, राजस्थान के और विशेषतः मेवाड़ के इतिहास की प्रामाणिक जानकारी चाहनेवाले विद्वान्, एवं सामान्य पाठक भी, चार जिल्दों में पुनर्मुद्रित इस ग्रन्थ का स्वागत करेंगे।

अनुक्रमणिका,

प्रथम भाग

अनुक्रमणिका २.

वीरविनोद

वीरविनोद,

प्रथम भाग.

भूगोल.

इस अपार शून्याकार आकाशमें अनेक ग्रह, उपग्रह, और उपग्रहोपग्रह भ्रमण करते हैं, जिनके विषयमें अनेक विद्वानोंका प्रमाण भिन्न भिन्न युक्तियोंके साथ प्रसिद्ध हुआ और होता जाता है, तथापि अबतक इस खगोलका निर्णय हस्तामलक नहीं हुआ. कितनेएक विद्वानोंका विचार है, कि जैसा यह सूर्य दिखाई देता है, और इसके साथ बहुतसे ग्रह, उपग्रह भ्रमण करते हैं वैसेही और भी अनेक सूर्य हैं, जो हमको नक्षत्र रूपसे दिखाई देते हैं और वे किसी एक बड़े सूर्यके गिर्द घूमते हुए चले जाते हैं. कई ऐसा कहते हैं, कि उस बड़े सूर्यके समान, जो हमारी पृथ्वीसे सम्बन्ध रखता है, अनेक सूर्य किसी अन्य बड़े सूर्यके गिर्द अपनी अपनी परिधिपर चक्कर खारहे हैं; परन्तु हम इस अपार महाकाशका वर्णन करनेमें पूरा पूरा सामर्थ्य न रखनेके कारण विस्तारको छोड़कर केवल अपना प्रयोजन सिद्ध करते हैं. जो सूर्य कि हमको दिखलाई देता है, उसके विषयमें अनेक विद्वानोंका कथन है, कि वह पृथ्वीके सदृश ठोस और किसी न किसी प्रकारकी स्टष्टि रखनेवाला है. कई विद्वानोंका यह आशय है, कि वह कुहरा अथवा धुएंके समान वस्तुका एक प्रकाशमान गोला है. कितनेएक यों बयान करते हैं, कि यह गैसके मुवाफ़िक़ रौशनीका एक गोला है. परन्तु इस समयके अनेक विद्वानोंकी

यह राय है, कि न इसमें कठोरता है और न किसी प्रकारकी स्टाष्टि है. जो पाठकगण इस प्रकरणको सविस्तर देखना चाहें, खगोलकी किताबोंमें द[illegible] हैं; हम इसके लिये केवल इतनाही लिखेंगे, कि यह ८ लाख ६० हज़ार मीलके क़रीब व्यासवाला एक अग्निका गोला है, जो अपनी कीलपर २५ दिन ८ घंटा ९ मिनट में पूरा एक दौरा करता हुआ बड़े वेगसे अपने ग्रह, उपग्रहोंके साथ निज परिधिपर दौड़ता है. पहिले हमारे भारतवासी विद्वानोंने यह निर्णय किया था, कि सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, और शनैश्चर इस पृथ्वीके गिर्द घूमते हैं, परन्तु इस बातमें सिद्धान्त वेत्ता ज्योतिषियोंको विश्वास नहीं था, जैसाकि आर्य भट्टने अपने ग्रन्थ आर्य-सिद्धान्तमें सूर्यके गिर्द पृथ्वीका घूमना माना है, और पिछले दैवज्ञोंने पुराणोंका खण्डन समझकर इस विषयको छोड़दिया. सूर्य मंडलके गिर्द घूमने वाले ग्रह इस क्रमसे हैं- बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, वृहस्पति, शनैश्चर, युरेनस या हर्शल और नेपच्यून इत्यादि, जिनके उपग्रह और आकार वगैरहका मुफ़स्सल हाल नीचे लिखे हुए नक़्शहसे मालूम होगाः-

ग्रहोंके नाम और उनके उपग्रह, व्यास व गति वगैरहका नक़्शह.

ग्रहोंके नाम.	उप ग्रहोंकी संख्या.	व्यास ब हिसाब मील.	अपनी अपनी कीलपर एकबार घूमनेका समय.	सूर्यसे ग्रहोंका अन्तर ब हिसाब मील.	सूर्यकी एक प्रदक्षिणामें ग्रहोंका समय.	गतिका वेग एक घंटेमें.
बुध	०	३०५८	२४घंटा,५ मिनट	३५३९२०००	८७·९ दिन	१२६००० मील
शुक्र	०	७५१०	२३घंटा,२१मिनट	६६१३४०००	२२४·७ दिन	८०००० मील
पृथ्वी	१	७९२६	२३घंटा,५६मिनट	९१४३०००	३६५ $\frac{1}{4}$ दिन	६४८०० मील
मङ्गल	०	४३६३	२४घंटा,३७मिनट	१३९३११०००	६८६·९ दिन	५४००० मील
वृहस्पति	४	८४८४६	९ घंटा, ५५मिनट	४७५६९२०००	४३३२·५दिन	३२४०० मील
शनैश्चर	८	७०१३६	१०घंटा,२९मिनट	८७२१३७०००	१०७५९·२दिन	२१६००मील

युरेनस या हर्शल	६	३३२४७	९घंटा, ३०मिनट	१७५३८६९०००	३०६८६·८दिन	१८०००मील
नेपच्यून	२	३७२७६	अनिश्चित	२७४५९९८०००	६०१२६·७दिन	१०८०० मील

मङ्गल और वृहस्पतिके बीच वाले एक ग्रह के टूटजानेसे जो कईएक टुकड़े होगये, उनके नाम यूरोपिअन विद्वानोंने फ़्लोरा, वेस्टा, ईरिस, मेटिस, हिबी, आस्ट्रिया, जूनो, सीरिस और पालास वग़ैरह रक्खे हैं.

अब हम उपरोक्त ग्रहोंमेंसे इस प्राकृतिक पृथ्वीका वर्णन करते हैं, जिसको यूरोपिअन विद्वानोंने हस्तामलकवत् कर दिखलाया है. पुराणोंके मतको छोड़कर भारतवर्षीय प्राचीन और अर्वाचीन गणितकारोंका मत, वर्त्तमान यूरोपिअन विद्वानोंके मतसे एकता के साथ यह प्रगट करता है, कि यह प्राकृतिक भूगोल नारंगीके समान गोलाकार है, जिसके दक्षिण और उत्तर ध्रुवोंके समीपवाले हिस्से दबे हुए हैं. इस भूमंडलका व्यास ७९२५ मील, परिधि २४८९६ मील, और क्षेत्रफल १९७०००००० वर्गात्मक मील है, जिसका दो तिहाई हिस्सह जल और एक तिहाई थल है. यह गोला ३६० अंशोंमें विभक्त किया गया है, और हरएक अंश ६९$\frac{1}{10}$ मीलका माना गया है. गोले के दक्षिणोत्तर भागोंको अक्षांश, पूर्व-पश्चिम भागोंको देशान्तर, और एक अंशके साठवें भागको कला तथा कलाके साठवें भागको विकला कहते हैं. इस भूमंडलकी मध्य रेखाका नाम विषुवत रेखा (ख़त्ति इस्तिवा) है, जिसके दक्षिणोत्त ध्रुवोंकी तरफ़ अर्थात् उत्तर और दक्षिण दोनों ओर साढ़े तेईस तेईस अंशकी दूरीपर उष्ण कटिबद्ध माना गया है, उसके बीच वाले देश उष्ण प्रधान हैं; और दोनों ध्रुवोंसे साढ़े तेईस तेईस अंशके अन्तरपर दो शीत कटिबद्ध रेखा कहलाती हैं. इन दोनों रेखाओं अर्थात् उष्ण-कटिबद्ध और शीत कटिबद्धके बीचवाले देश शीतोष्ण प्रधान माने गये हैं; और शीत-कटिबद्धसे दोनों ध्रुवोंकी तरफ़के देश शीत प्रधान माने गये हैं, क्योंकि वहां सूर्यकी किरणें सदा तिरछी पड़ती हैं. जो कि इस गोलेका दो तिहाई हिस्सह जलसे ढकाहुआ है, सलिय उसमें यात्रा करनेके निमित्त भूगोल वेत्ता लोगोंने उसके न्यारे न्यारे विभाग बनाकर उनको नीचे लिखे हुए कल्पित नामोंसे प्रसिद्ध करदिया है. प्रथम पासिफ़िक महासागर, जो एशिया और अमेरिकाके बीचमें है, उसका क्षेत्रफल अनुमान ७२०००००० वर्गमील है; दूसरा अटलांटिक महासागर, जो यूरोप, आफ़्रिक़ा और अमेरीकाके बीचमें है, और इसका क्षेत्रफल अनुमान ३५०००००० वर्गमील है; तीसरा हिन्द महासागर, यह हिन्दुस्तानके दक्षिणमें है, और इसका क्षेत्रफल अनुमान

२५०००००० वर्गमील है; चौथा उत्तर महासागर, जो उत्तर ध्रुववृत्त अर्थात् ध्रुवसे २३ $\frac{1}{2}$ अंशकी दूरीपर फैलाहुआ है, इसका क्षेत्रफल अनुमान ५०००००० वर्गमील है; और पांचवां दक्षिण महासागर, जो दक्षिण ध्रुववृत्तके भीतर अनुमान ८०००००० वर्गमीलके विस्तारमें फैला हुआ है.

इस गोलेमें $\frac{1}{4}$ स्थल है, जिसके दो बड़े भाग अर्थात् एक पूर्व गोलार्द्ध, और दूसरा पश्चिम गोलार्द्ध कहलाता है. अंग्रेज़ी किताबोंमें लिखा है, कि पश्चिम गोलार्द्धका भेद पहिले लोगोंको मालूम नहीं था, परन्तु ईसवी १४९२ [वि० १५४८ = हि० ८९७] में क्रिस्टोफ़र कोलम्बसने दर्याफ़्त करके इसका नाम नई दुनया रक्खा. जलके समान स्थलके भी ५ बड़े विभाग माने गये हैं. पहिला एशिया, दूसरा यूरोप, तीसरा आफ़्रिका, चौथा उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका, और पांचवां ओशेनिया अर्थात् आस्ट्रेलिया व न्यूज़ीलैण्ड वग़ैरह टापू.

अब हम एशियाको छोड़कर, जिसका हाल पीछे लिखा जायेगा, यहांपर दूसरे ४ खंडोंका वर्णन करते हैं.

यूरोप.

सीमा– उत्तरको, उत्तर महासागर; पश्चिमको, अटलांटिक महासागर; दक्षिणमें, भूमध्यसागर, मारमोरा सागर, काला सागर, और काकेशस पर्वत; और पूर्वमें कास्पिअन समुद्र, यूराल नदी, और यूराल पहाड़ है. यह महाद्वीप पूर्व गोलार्द्धके ३६°-०' से ७१°-१०' उत्तर अक्षांश, और ९°-३०' से ६८°-०' पूर्व देशान्तरके बीचमें वाके है. इसकी अधिकसे अधिक लम्बाई ३००० मील और चौड़ाई २४०० मील है, क्षेत्रफल इसका ३८३०००० मील मुरब्बा, और आबादी ३२७५००००० से कुछ अधिक है. इस महाद्वीपमें नीचे लिखे अनुसार २१ राज्य हैं:-

यूरोपके राज्योंका नक्शह.

नम्बर.	नाम राज्य.	राजधानी.	क्षेत्रफल (वर्ग मील)	आबादी.	कैफ़ियत.
१	इंग्लैण्ड मए वेल्सके	लण्डन	५८३२०	२५९७४४३९	ये तीनों मुल्क एक बादशाह, याने क्वीन विक्टोरियाके आधीन हैं.
२	स्कॉट लैण्ड	एडिम्बरा	३०४६३	३७३५५७३	
३	आइलैंण्ड	डब्लिन	३१७५४	५१७४८३६	

नम्बर.	नाम राज्य.	राजधानी.	क्षेत्रफल (वर्गमील)	आबादी.	कैफ़ियत.
४	फ़्रांस	पैरिस	२०१९००	३७६७२०००	
५	स्पेन	मैड्रिड	१८२७५८	१६८५८७२१	
६	पुर्तगाल	लिस्बन्	३६५००	४७४५१२४	
७	बेल्जिअम्	ब्रुसेल्स	११३५०	५९१००००	
८	हॉलैण्ड	ऐम्स्टर्डम्	१२६३७	४३९१०००	
९	जर्मनी व प्रुशिया	बर्लिन्	२१२०००	४६८५६०००	ये दोनों देश मिलक जर्मनीकी बादशाहत बनी है.
			१३६२३८	२८३१८०००	
१०	डेन्मार्क	कोपन-हेगन्	१४५५३	१९६९०००	
११	नॉर्वे	क्रिश्चे-निया	१२१८०७	१८०६९००	
१२	स्वीडन	स्टॉक्होम्	१६८०४२	४७१७०००	
१३	यूरोपीय रशिया	सेण्टपीट-र्सबर्ग	२२०००००	८८५०००००	इसमें पोलैण्ड व फ़िन्लैण्ड भी शामिल हैं.
१४	आस्ट्रिया-हंगरी	वीएना	२४०९४३	३९२२४०००	
१५	स्विट्ज़रलैण्ड	बर्न	१५७२७	२८४६१०२	
१६	इटली	रोम	११४४१५	२९९४४०००	
१७	टर्की (रूम)	कॉन्स्टेंटीनोपल (कुस्तुन्तुनया)	१३५५००	८९८७०००	

नम्बर.	नाम राज्य.	राजधानी.	क्षेत्रफल (वर्ग मील)	आबादी.	कैफ़ियत.
१८	रोमानिया	बुचारेस्ट	४९४६३	५३७६०००	
१९	सर्विया	बेल्ग्रेड	१८८१६	१९७००००	
२०	मॉंटिनिग्रो	सेटिन	२८९८	२३६०००	
२१	ग्रीस (यूनान)	एथेन्स	२५४४१	१९८००००	

पहाड़- आल्प्स पर्वत, इटलीको जर्मनी, स्विट्ज़रलैंएड और .फ्रांससे जुदा करता है; पिरेनीज़, फ़्रांस और स्पेनके बीचमें; एपिनाइन्ज़, इटलीमें; बाल्कन, टर्कीमें; कार्पेथिअन, आस्ट्रियामें; डॉफ़्रिन अथवा डोवर फ़ील्ड, नॉर्वेमें; कोलन पर्वत, नॉर्वे और स्वीडनके मध्यमें; यूराल और काकेशस पर्वत, यूरोप और एशियाके बीचमें हैं.

एटना पर्वत जो सिसिलीके टापूमें है, सबसे बड़ा ज्वालामुखी है; इसके सिवा हेक्ला तथा विसूविअस नामके दो छोटे ज्वालामुखी पर्वत और भी हैं. हेक्ला आइसलैंएड में और विसूविअस इटली देशमें है.

द्वीप- नोवाज़ेम्बला, स्पिट्ज़बर्जन, और लोफ़ोडन उत्तर महासागरमें; फ़्यूनन, ज़ीलैंएड, और लालैंएड, कैटेगेटमें; ओलैंएड, गॉथलैंएड, ओज़ल, डेगो और आलैंएड, बाल्टिक समुद्रमें; आइसलैंएड, फ़ैरो, ग्रेट ब्रिटन और आइलैंएड अटलांटिक महासागरमें; मैजॉरका, मिनॉरका, सार्डिनिया, कॉर्सिका, सिसिली, माल्टा, इयोनिअन द्वीप, कैण्डिया अथवा क्रीट, भूमध्य सागरमें; और नीग्रोपॉन्ट तथा साइक्लेडीज़ यूनानके समुद्रमें हैं.

प्रायद्वीप- जटलैंड, डेन्मार्कमें; मोरिया, ग्रीस (यूनान) में; और क्रिमिया, रशिया के दक्षिणमें है.

अन्तरीप- उत्तरी अन्तरीप, नॉर्वेके उत्तरमें; स्पार्टिवेन्टो, इटलीके दक्षिणमें; मटापान, यूनानके दक्षिणमें; नेज़ नॉर्वेके दक्षिणमें; स्का, डेन्मार्कके उत्तरमें; क्लिअर, आइलैंएडके दक्षिणमें; फ़्लेम्बोरो और फ़ोरलैंड, इंग्लिस्तानके पूर्वमें; डंकन्सबे हेड, स्कॉट्लैंडके उत्तरमें; लैंड्ज़एंड, इग्लैंडके दक्षिण-पश्चिममें; लाहोग, फ्रांसके उत्तर-पश्चिममें; ओर्टेगल और फ़िनिस्टर, स्पेनके उत्तर-पश्चिममें; और सेंट विन्सेंट, पुर्तगालके दक्षिण-पश्चिममें है.

डमरूमध्य- पहिला कॉरिन्थ, जो मोरिया और उत्तर ग्रीस (यूनान) को जोड़ता है, और दूसरा पैरेकॉप, जो क्रिमियाको रशियासे मिलाता है.

समुद्र और खाड़ी- श्वेत समुद्र, रशियाके उत्तरमें; स्कैगररैक्, डेन्मार्क और नॉर्वेके मध्यमें; कैटेगेट, डेन्मार्क और स्वीडनके बीचमें; बाल्टिक, स्वीडनको जर्मनी, प्रुशिया और रशियासे जुदा करता है; रिगा और फ़िन्लैण्डकी खाड़ी, रशियाके पश्चिममें; बॉथनियाकी खाड़ी, स्वीडन और रशियाके बीचमें; उत्तरी समुद्र या जर्मन सागर, नॉर्वे और ब्रिटानियाके मध्यमें; सेण्ट ज्यॉर्जकी नहर और आइर्लैण्डका समुद्र, आइर्लैण्ड और ब्रिटनके मध्यमें; इंग्लैण्डकी नहर, इंग्लिस्तान और फ्रांसके मध्यमें; बिस्केकी खाड़ी, फ्रांसके पश्चिम और स्पेनके उत्तरमें; रूमसागर अथवा भूमध्य-सागर, यूरोप और आफ़िकाके बीचमें; लायन्सकी खाड़ी फ्रांसके दक्षिणमें; जिनोआकी खाड़ी, इटलीके उत्तर-पश्चिममें; टॉरेन्टोकी खाड़ी, इटलीके दक्षिणमें; एड्रियाटिक् समुद्र, या वेनिसका खाल, इटली और टर्की (रूम) के बीचमें; यूनानका समुद्र, यूनान और एशिया कोचकके बीचमें; मारमोरा सागर, यूरोपीय रूम और एशियाई रूमके मध्यमें; काला सागर और अज़ोफ़ सागर रूसके दक्षिणमें हैं.

मुहाने- साउण्ड, ज़ीलैण्ड और स्वीडनके बीचमें; मसीना, इटली और सिसि-लीके मध्यमें; बोनिफ़ेशियो, कॉर्सिका और सार्डिनियाके बीचमें; जिब्राल्टर, स्पेन और आफ़िकाके बीचमें; ओट्रेन्टो, इटली और यूरोपीय रूमके बीचमें; बास्फ़ोरस, मारमोरा और काले सागरके बीचमें; काफ़ा, काले सागर और अज़ोफ़ सागरके मध्यमें; डोवर, जर्मन सागर और इंग्लिश चैनलके मध्यमें.

झील- लडोगा, ओनीगा, और पीपस नामके झील, रशियामें; वेनर और वेटर, स्वेडनमें; जिनीवा, स्विट्ज़रलैंडमें; और कॉन्स्टेन्स, स्विट्ज़रलैंड और जर्मनीके बीचमें है.

यूरोप देशकी मुख्य मुख्य नदियां.

नम्बर.	नाम नदी	लंबाई ब हि-साब मील.	जिन देशोंमें होकर बहती है.	गिरनेका स्थान.
१	वॉल्गा	२४००	रशिया	कास्पिअन समुद्र

नम्बर.	नाम नदी.	लम्बाई व हिसाब मील.	जिन देशोंमें होकर बहती है.	गिरनेका स्थान.
२	डैन्यूब	१७९०	जर्मनी, आस्ट्रिया टर्की, रोमानि[illegible] और सर्विया.	काला समुद्र
३	नीपर	१२६०	रशिया.	काला समुद्र
४	डोन	११००	रशिया.	अज़ोफ़ सागर
५	पिचोरा	९००	रशिया.	उत्तर महासागर
६	राइन	७६०	स्विट्ज़लैंण्ड,जर्मनी व हॉलैण्ड.	उत्तर समुद्र
७	उत्तर ड्वीना	७६०	रशिया.	श्वेतसा[illegible]
८	नीस्टर	७००	आस्ट्रिया और रशिया.	कालासा[illegible]
९	एल्ब	६९०	जर्मनी.	उत्तर समुद्र
१०	विश्च्यूला	६२८	रशियाका पोलैण्ड और प्रुशिया	बाल्टिक समुद्र
११	लोयर	५७०	.फ्रांस	बिस्केकी खाड़ी
१२	ओडर	५५०	प्रुशिया.	बाल्टिक समुद्र
१३	टेगस	५१०	स्पेन और पुर्तगाल.	[illegible] महासागर
१४	टेमस	२१५	इंग्लैण्ड	जर्मन समुद्र

इस महाद्वीपकी आबो हवा सम और सुहावनी है, उत्तरी देशोंमें शरदी और दक्षिणी विभागोंमें गर्मी रहती है.

यूरोप खण्डके लोग विद्या, बल, दस्तकारी, हुनर, इज़्ज़त, और लियाक़तमें दूसरे मुल्कोंसे उत्तम हैं, और सिवा रियासत टर्की (रूम) के जो मुसल्मानी धर्म पालते हैं, यहांके तमाम बाशिन्दोंका मुख्य धर्म क्रिश्चियन है.

आफ़्रिका.

आफ़्रिका महाद्वीप पूर्वी गोलार्द्धके पश्चिममें है; इसकी आबादी अनुमान २०६०००००, लम्बाई क़रीब ५००० मील, चौड़ाई ४६०० मील, और रक़बह ११७५०००० वर्गमील है.

सीमा – इसके उत्तरमें, भूमध्यसागर; पश्चिममें, अटलांटिक महासागर; दक्षिणमें, दक्षिण महासागर; और पूर्वमें हिन्द महासागर, लाल सागर और स्वेज़की नहर है. इस महाद्वीपमें १८ देश हैं, जिनके नाम मए राजधानीके नीचे लिखे अनुसार हैं:-

आफ़्रिक़ाके राज्योंका नक्शह.

नम्बर.	नाम देश.	नाम राजधानी.	नम्बर.	नाम देश.	नाम राजधानी.
१	मिश्र (इजिप्ट)	क़ाहिरा	७	ट्यूनिस	ट्यूनिस
२	न्यूबिया	ख़र्तूम	८	एल्जीरिया	अल्जिअर्स
३	एबिसीनिया	गौंडार	९	मोराको	मोराको
४	बार्क़ा	बेनग़ाज़ी	१०	सोडान	[illegible]
५	फ़ेज़ान	मर्ज़ूक़	११	सेनिगेम्बिया	बैथर्स्ट
६	त्रिपोली	त्रिपोली	१२	उत्तरी गिनी	कोमासी

नम्बर.	नाम देश.	नाम राजधानी.	नम्बर.	नाम देश.	नाम राजधानी.
१३	दक्षिणी गिनी	लोआंगो	१६	मैडेगास्कर	टैनन्रिवो
१४	केप कॉलोनी	केपटाउन	१७	मोज़ेम्बिक	मोज़ेम्बिक
१५	नेटाल	पीटरमैरिट्ज़बर्ग	१८	जैंज़िबार या जंगुबार	जैंज़िबार

पहाड़- अतलस पर्वत, बार्बरीके पश्चिममें; लापाट., मोज़ेम्बिकके पश्चिममें; किलिमैन्जारो और केनिया नामके पर्वत भूमध्य रेखाके पास; एबिसीनिया या हब्शके पहाड़, एबिसीनियामें; कॉंग पर्वत, निग्रीशियाके दक्षिणमें; कैमेरून्स, ब्याफ़ामें; निउ वेल्ड, केप कॉलोनीमें; और टेनेरिफ़ नामका ज्वालामुखी, कैनेरी द्वीपमें है.

द्वीप- मैडीरा, कैनेरी, केपवर्डके द्वीप, फ़र्नैण्डोपो, सेण्ट टॉमस, असेन्शन, और सेण्ट हेलिना नामके द्वीप अटलांटिक महासागरमें; मैडेगास्कर, बोर्बन, मॉरिशिअस, कोमोरो, अमिरैन्टी, सेशेल्, और सोकोट्रा हिन्द महासागरमें हैं.

अन्तरीप- बॉन और स्पार्टल, उत्तरमें; ब्लैंको और वर्ड, पश्चिममें; केप ऑव गुड होप और अगलहास दक्षिणमें; कॉरिन्टीज़, डेल्गाडो, और ग्वार्डाफ़्यु पूर्व दिशामें हैं.

समुद्र व खाड़ी- सिड्रा और केब़ नामकी खाड़ियां उत्तरमें; गिनी, बेनिन् और ब्याफ़ाके आखात, पश्चिममें; सेण्ट हेलिना, फ़ाल्स और अल्गोआ आखात, दक्षिणमें; लालसमुद्र, अदनकी खाड़ी (जो आफ़्रिका और अरबके मध्यमें है) और मोज़ेम्बिककी नहर (मोज़ेम्बिक और मैडेगास्करके बीचमें) पूर्वमें हैं.

झील- झील चाड, सोडानमें; अल्बर्ट न्यान्ज़ा, विक्टोरिया न्यान्ज़ा, मुटाज़िज और टंगेनिका, ज़ैंज़िबारके पश्चिममें; और न्यासा, शिर्वा, और बैंगव्योलो, मोज़ेम्बिकके पश्चिममें हैं.

आफ़्रिकाकी मुख्य मुख्य नदियां.

नम्बर.	नाम नदी.	लम्बाई ब हिसाब मील.	जिन देशोंमें होकर बहती है.	गिरनेका स्थान.
१	नाइल	३३००	मिश्र, न्यूबिया और विषुवत रेखाके आसपास वाले मुल्क.	भूमध्य सागर
२	कौंगो अथवा ज़ेरी	३०००	कौंगो फ़्री स्टेट	अटलांटिक महासागर
३	नाइजर	२३००	सोडान और उत्तर गिनी	गिनीकी खाड़ी
४	ज़ेम्बेज़ी	१४००	दक्षिणी आफ़्रिका	मोज़ेम्बिककी नहर
५	ऑरेंज	१०००	केप कॉलोनीके उत्तरमें	अटलांटिक म.ासागर
६	सेनिगाल	१०००	सेनिगेम्बिया	ऐज़न
७	गेम्बिया	१०००	सेनिगेम्बिया	ऐज़न

इस महाद्वीपकी आबोहवा पृथ्वीके अन्य भागोंसे अधिक गर्म है. यहांपर ख़ासकर दो ऋतु अर्थात् गर्मी और बरसात ही होते हैं, शरदी कम पड़ती है.

यहांके क़रीब क़रीब तमाम बाशिन्दे असभ्य और जंगली हैं, और उनका मज़्हब यातो मुसल्मानी या मूर्तिपूजक है.

अमेरिका.

इस खंडके दो विभाग किये गये हैं, जिनको उत्तर अमेरिका और दक्षिण अमेरिका कहते हैं.

(उत्तर अमेरिका.)

इस खण्डकी ज़ियादह से ज़ियादह लम्बाई ४४०० मील, और चौड़ाई ३०००

मील है, इसका क्षेत्रफल ९००००० मील मुरब्बा और आबादी ७२००००० से कुछ अधिक है.

सीमा- इसके उत्तरमें, उत्तर महासागर; पश्चिममें, पासिफ़िक महासागर; दक्षिणमें पासिफ़िक महासागर, पनामाका डमरूमध्य, और मैक्सिकोका आखात; और पूर्वमें अटलांटिक महासागर है. उत्तर अमेरिकाके देशोंके पृथक् पृथक् नाम मए उनकी राजधानियोंके नीचे लिखे अनुसार हैं:-

उत्तर अमेरिकाके राज्योंका नक़्शह.

नम्बर.	नाम देश.	नाम राजधानी.	नम्बर.	नाम देश.	नाम राजधानी.
१	ग्रीनलैण्ड	जूलिअनशाव	९	क्वाटि-	फ़ोर्ट यार्क
२	कनाडा	ओटावा	१०	न्यूफ़ाउंडलैण्ड	सेन्ट जॉन्स
३	नोवा स्कोशिया	हैलिफ़ैक्स	११	युनाइटेडस्टेट्स	वाशिंग्टन
४	न्यूब्रंज़्विक	फ़्रेडेरिक्टन	१२	मैक्सिको	मैक्सिको
५	क्वेबेक	क्वेबेक	१३	ग्वाटेमाला	ग्वाटेमाला
६	ऑन्टेरियो	ओटावा	१४	सैन्‌साल्वेडोर	सैन्‌साल्वेडो
७	मॉनीटोबा	विन्नीपेग	१५	ब्रिटिश हौंडूराज़	बेलीज़
८	ब्रिटिश कोलम्बिया	विक्टोरिया			

पहाड़- अलेघनी पर्वत, युनाइटेड स्टेट्समें; रॉकी पर्वत, अमेरिकाके पश्चिमी तटपर उत्तर महासागरसे पनामा डमरूमध्यतक फैला हुआ है; कैलिफ़ोर्नियाका पहाड़, कैलिफ़ोर्नियामें; कोरडिलेरास, मैक्सिकोमें; फ़ेअरवेदर और सेण्ट एलियास अलास्काके तटपर. इनके अलावह पोपोकैटेपेल और ओरिज़ाबा नामके दो ज्वालामुखी पर्वत मैक्सिकोमें हैं.

द्वीप- वेस्ट इंडीज़, बर्म्यूडाज़, केप ब्रिटन, प्रिन्स एडवर्ड, और न्यूफ़ाउण्डलैण्ड, अटलांटिक महासागरमें; ग्रीनलैण्ड, ब्रिटिश अमेरिकाके ईशान कोणमें; बैंक्सलैण्ड, कॉक्बर्न, पैरी द्वीप, ग्रिन्नलैण्ड, हॉललैंड, और ग्रेटलैण्ड, उत्तर महासागरमें; और एल्यूशियन तथा वैंकोवर, उत्तर पासिफ़िक महासागरमें हैं.

प्रायद्वीप – लैब्रेडोर, बूथिया और मेल्विल, उत्तरमें; नोवा स्कोशिया, ब्रिटिश अमेरिकाके अग्नि कोणमें; फ़्लॉरिडा, युनाइटेड स्टेट्सके अग्निकोणमें; यूकेटन, मैक्सिको के अग्निकोणमें; लोअर कैलिफ़ोर्निया, मैक्सिकोके पश्चिममें; और अलास्का, अलास्काके दक्षिण-पश्चिममें है.

अन्तरीप- फ़ेअरवेल, ग्रीनलैण्डके दक्षिणमें; चडले, ब्रिटिश अमेरिकाके उत्तरमें, और चार्ल्स दक्षिणमें; सेबल, नोवास्कोशियाके दक्षिणमें; सेबल या टांचा, फ़्लॉरिडाके दक्षिणमें; कैटोच, यूकेटनके उत्तरमें; सेन्ट लूकस, कैलिफ़ोर्नियाके दक्षिणमें; प्रिन्स ऑव वेल्स, बहरिंग मुहानेपर; और बारो, उत्तरमें.

समुद्र व खाड़ी- बैफ़िन आखात, ग्रीनलैण्डके पश्चिमोत्तरमें; हडसन, ब्रिटिश अमेरिकाके उत्तरमें, और सेन्ट जेम्सकी खाड़ी दक्षिणमें; कैलिफ़ोर्नियाकी खाड़ी, मैक्सिकोके पश्चिममें; कैम्पेचे, यूकेटनके पश्चिममें; हॉंडूराज़ आखात, हॉंडूराज़के पूर्व में; कैरिबिअन, मध्य अमेरिकाके, पूर्वमें; चेसापीक आखात, युनाइटेड स्टेट्सके पूर्वमें; सेण्ट लॉरेन्सकी खाड़ी, अमेरिका और न्यूफ़ाउण्डलैण्डके बीचमें; फ़्लॉरिडाकी नहर, युनाइटेड स्टेट्स और बहामा द्वीपके मध्यमें; और फ़ंडेकी खाड़ी, नोवास्कोशिया और न्यू ब्रन्स्विकके मध्यमें है.

मुहाना- डेविस, अटलांटिक महासागर और बैफ़िन आखातको मिलाता है; लैंकेस्टर साउण्ड, बारो, मेल्विल साउण्ड, और बैंक्स स्ट्रेट, बैफ़िन आखातके पश्चिममें; स्मिथ साउण्ड, केनेडी नहर, और रोबसन, बैफ़िन आखातके उत्तरमें; हडसन, और फ़्राबिशर, हडसनकी खाड़ी में; बेल आइल, लैब्रेडोर और न्यूफ़ाउण्ड लैण्डके मध्यमें; बहरिंग, उत्तरी अमेरिका और एशियाके मध्यमें, जुआन डि फ्यूका, युनाइटेड स्टेट्स और वैंकोवर द्वीपके मध्यमें.

झील- ग्रेट स्लेव, ग्रेटबेअर, एथाबास्का, और विनिपेग, कनाडाके राज्यमें; सुपीरिअर, ह्यूरन, ईरी, ऑन्टेरियो, युनाइटेड स्टेट्स और कनाडाके बीचमें; मिशिगन और ग्रेट साल्ट, युनाइटेड स्टेट्समें; निकारागुआ, मध्य अमेरिकामें; और नियागाराका मशहूर झरना ऑन्टेरियो और ईरी झीलके बीचमें हैं.

उत्तरी अमेरिकाकी मुख्य मुख्य नदियां.

नम्बर.	नाम नदी.	लंबाई ब हिसाब मील.	जिन देशोंमें होकर बहती है.	गिरनेका स्थान.
१	मिसिसिपी	३१६०	युनाइटेड स्टेट्स	मैक्सिकोकी खाड़ी
२	सेन्ट लॉरेन्स	२०००	कनाडाके दक्षिण पूर्व	अटलांटिक महासागर
३	आर्केन्सस	२०००	०	मिसिसिपी नदी
४	मैकेन्ज़ी	१६००	कनाडा राज्यके उत्तरी पश्चिमी ज़िलोंमें	उत्तर महासागर
५	लालनदी	१५००	०	मिसिसिपी नदी
६	रायो ग्रैण्डी डेल् नोर्ट	१४००	युनाइटेड स्टेट्स और मैक्सिकोके बीचमें	मैक्सिकोकी खाड़ी
७	ओहियो	१०३३	०	मिसिसिपी नदी
८	कोलम्बिया (आरेगोन)	१०००	युनाइटेड स्टेट्सके उत्तर–पश्चिममें	पासिफ़िक महासागर
९	फ़ेज़र	०	ब्रिटिश कोलम्बिया	ज्यॉर्जियाकी खाड़ी

इस महाद्वीपकी आबोहवा, पूर्वी गोलार्द्धके देशोंकी अपेक्षा ठंढी है.

इस खण्डमें अंग्रेज़ोंके अलावा कई दूसरे देशोंके लोग और वहांके अस्ली बाशिन्दे रहते हैं. यहांके निवासियोंका मज़्हब प्रायः क्रिश्चियन है. यह देश नई नई बातों और वस्तुओंके निर्माण करनेकी शक्तिमें यूरोपसे भी बढ़कर है.

—∞—

(दक्षिण अमेरिका.)

इस महाद्वीपकी ज़ियादहसे ज़ियादह लम्बाई ४७०० मील, और चौड़ाई ३२००

मील है. क्षेत्रफल इसका ६५०००००० मील मुरब्बा, और आबादी २८०००००० मनुष्योंकी है.

सीमा—उत्तरमें, कैरिबिअन सागर और पनामाका डमरूमध्य; पश्चिममें, पासिफ़िक महासागर; दक्षिणमें, दक्षिण महासागर; और पूर्वमें, अटलांटिक महासागर है. इस खण्डमें नीचे लिखे हुए १४ राज्य हैं:—

दक्षिण अमेरिकाके राज्योंका नक़्शह.

नम्बर.	नाम देश.	नाम राजधानी.	नम्बर.	नाम देश.	नाम राजधानी.
१	कोलम्बिया	बगोटा	८	पेरू	लाइमा
२	इक्वेडोर	क्वीटो	९	बोलीविया	चुकीसाका
३	वेनेज्यूला	कैरेकास	१०	पैराग्वे	ऐसेनूशन
४	गियाना (.फ्रांसीसी)	केनी	११	लाप्लाटा	बोनस एरीज़
५	गियाना (ब्रिटिश)	ज्यॉर्ज टाउन	१२	यूरूग्वे	मोन्टविड्यो
६	गियाना (डची)	पैरेमैरिबो	१३	चीली	सेनूशिएगो
७	ब्राज़िल	रायोजैनीरो	१४	पटेगोनिया	पन्टा एरिनाज़

पर्वत—एंडीज़ अथवा कॉर्डिलेराज़, पश्चिमी तटपर पनामा डमरूमध्यसे मैजेलनके मुहानेतक फैला हुआ है, इसमें कोटोपाक्सी, एंटीसाना, और पिचिनूचा नामी तीन ज्वालामुखी हैं; पेरिम, अमेज़न और ओरिनिको नदियोंके मध्यमें; और ब्राज़िल का पहाड़, ब्राज़िल देशमें है.

द्वीप—टेराडेल् फ्यूगो, फ़ॉकलैण्ड और स्टेटन, अटलांटिक महासागरमें; जुआन-फ़र्नेन्डीज़, चिलीके पश्चिममें; चिन्का द्वीप, पेरूके पश्चिममें; और गेलापागोस, इक्वेडोर के पश्चिममें है.

अन्तरीप - सेन्टरॉक, ब्राज़िलके पूर्वमें; और हॉर्न, टेराडेल् फ्यूगोके दक्षिणमें है.

डमरूमध्य - पनामा, उत्तर और दक्षिण अमेरिकाको जोड़ता है. आज कल इसको काटकर अटलांटिक और पासिफ़िक महासागरको मुहानेके ज़रीएसे एक करनेकी कोशिश होरही है.

समुद्र व खाड़ी- डारिअन आखात, कोलम्बियाके उत्तरमें; माराकेबो, वेनेज़्यूलाके किनारेपर; ऑलसेएट्सका आखात और अमेज़न नदीका दहाना, ब्राज़िलके उत्तरमें; लाप्लाटा नदीका दहाना, लाप्लाटाके पूर्वमें; ग्वायाकिलकी खाड़ी और पनामाका आखात, कोलम्बियाके किनारेपर पासिफ़िक महासागरमें हैं.

मुहाना - मैजेलन्, पैटेगोनिया और टेराडेल् फ्यूगोके बीचमें; लेमेरी, टेराडेल्-फ्यूगो और स्टेटन द्वीपके बीचमें हैं.

झील - माराकेबो, वेनेज़्यूलामें; टीटीकाका, पेरू और बोलीवियामें; और पेटास ब्राज़िलके दक्षिणमें.

दक्षिण अमेरिकाकी मुख्य मुख्य नदियां.

नम्बर.	नाम नदी.	लम्बाई ब हिसाब मील.	जिन देशोंमें होकर बहती है.	गिरनेका स्थान.
१	अमेज़न	४०००	ब्राज़िल	अटलांटिक महासागर
२	लाप्लाटा	२३००	[illegible]	"
३	सैन् फ्रैन्सिस्को	१५००	ब्राज़िल	"
४	ओरिनोको	१४८०	वेनेज़्यूला	"
५	मैग्डेलिना	८६०	कोलम्बिया	केरेबिअन सागर
६	एसूकीबो	४५०	गियाना	अटलांटिक महासागर

इस महाद्वीपकी आबोहवा उत्तरी अमेरिकाकी अपेक्षा गर्म है. मुल्कके बाशिन्दोंकी हालत और उनका मज़्हब उत्तर अमेरिकासे मिलता जुलता हुआ है.

ओशिनिया.

इस द्वीप समूहमें सम्पूर्ण पासिफ़िक महासागरके और बहुतसे हिन्द महासागरके द्वीप शामिल हैं. ये सब द्वीप तीन भागोंमें विभक्त हैं,- पहिला मैलेशिया, दूसरा आस्ट्रेलेशिया, और तीसरा पॉलिनेशिया.

(१) मैलेशिया सम्बन्धी द्वीप.

नम्बर.	नाम द्वीप.	मुख्य शहर.	नम्बर.	नाम द्वीप.	मुख्य शहर.
१	समात्रा	बेन्कूलन् और आचीन	४	सेलिबीज़्	मकासर
२	जावा	बटेविया	५	मौल्यूकस और बैंडास	ऐम्बॉयना
३	बोर्नियो	ब्रूनी	६	फ़िलिपाइन	मैनिल्ला

मैलेशियाके कुल द्वीपोंका रक़बह ८००००० मील मुरब्बा, और आबादी २७०००००० मनुष्योंकी है.

(२) आस्ट्रेलेशिया सम्बन्धी द्वीप.

नम्बर.	नाम द्वीप.	मुख्य नगर.	नम्बर.	नाम द्वीप.	मुख्य नगर.
१	न्यू साउथ वेल्स	सिडनी	३	दक्षिणी आस्ट्रेलिया	एडिलेड
२	विक्टोरिया	मेल्बोर्न	४	क्वीन्स लैंड	ब्रिस्बेन

नम्बर.	नाम द्वीप.	मुख्य नगर.	नम्बर.	नाम द्वीप.	मुख्य नगर.
५	पश्चिमी आस्ट्रेलिया	पर्थ	९	न्यू हेब्रिडीज़	०
६	उत्तरी आस्ट्रेलिया	पोर्ट एसिंग्टन	१०	न्यू कैलेडोनिया	०
७	न्यू गिनीज़	०	११	टैस्मानिया	हॉबर्ट टाउन
८	सुलैमान द्वीप	०	१२	न्यू ज़ीलैण्ड	ऑक्लैण्ड

आस्ट्रेलिया, टैस्मानिया, और न्यूज़ीलैण्ड, ये तीनों आस्ट्रेलेशियाके मुख्य विभाग हैं.

आस्ट्रेलियाकी लम्बाई २५००, और चौड़ाई १९७० मील है. यह द्वीप दुनयाभरके सब द्वीपोंमें बड़ा है; इसका क्षेत्रफल ३०००००० मील मुरब्बा, और इसके पृथक् पृथक् विभागोंकी आबादी नीचे लिखे मूजिब है:-

न्यू साउथवेल्सकी ९८१०००, विक्टोरियाकी ९९२०००, दक्षिण आस्ट्रेलियाकी ३१९०००, और क्वीन्स लैण्डकी ३३३०००.

(३) पॉलिनेशिया.

इसमें कई एक छोटे बड़े टापू हैं, जिनमेंसे सैंडविच, फ़िजी, सोसाइटी, कोरल, कैरोलाइन्स, मार्शल, गिल्बर्ट और बोनिन वग़ैरह मुख्य हैं. इस विभाग की कुल आबादी अनुमान १५००००० मनुष्य है.
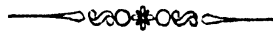
एशिया.

यह खंड १°-२०′ से ७८° उत्तर अक्षांश, और २६° अंशसे १९०° पूर्व देशान्तरके बीचमें वाके है. इसकी ज़ियादहसे ज़ियादह लम्बाई ६००० मील, और चौड़ाई ५३०० मील है. इसका क्षेत्रफल मए इसके मुतअ़ल्लक़ द्वीपोंके १७५००००० मील मुरब्बा, और आबादी अनुमान ७९६०००००० मनुष्योंकी है.

सीमा-उत्तर तरफ़, उत्तर महासागर; पश्चिम तरफ़, यूराल पर्वत, यूराल नदी,

[illegible] समुद्र, काकेशस पर्वत, काला समुद्र, भूमध्य सागर, स्वेज़की नहर, और लाल समुद्र; दक्षिण तरफ़, हिन्द महासागर; और पूर्व तरफ़, पासिफ़िक महासागर है.

इस महाद्वीपमें निम्न लिखित मुख्य मुख्य देश हैं:-

एशियाई रूम (टर्की); अरेबिया (अरबिस्तान); ईरान (पर्शिया); अफ़गानिस्तान; बिलोचिस्तान; हिन्दुस्तान; ईस्टर्न पेनिनशुला (पूर्वी [illegible]); चीनका राज्य, जिसमें चीन, तिब्बत, मंगोलिया, मंचूरिया और पूर्वी तुर्किस्तान शामिल हैं; तुर्किस्तान; एशियाई रूस; कोरिया, और जापान.

अब हम हिन्दुस्तानको छोड़कर, जिसका सविस्तर हाल आगे लिखा जायेगा, यहांपर एशियाके दूसरे मुल्कोंका मुख्तसर हाल लिखते हैं:-

एशियाई रूम.

यह मुल्क (अरबके ज़िलोंको छोड़कर) ३०° से ४२° उत्तर अक्षांश, और २६° से ४८°-३०' पूर्व देशान्तरके बीचमें वाके है. इसकी ज़ियादह से ज़ियादह लम्बाई ९५० मील, और चौड़ाई ७६० मील है. क्षेत्रफल ७१०३२० मील मुरब्बा, और आबादी १७०००००० के क़रीब है.

सीमा- उत्तरमें डार्डेनल्स, मारमोराका आखात, काला समुद्र और रशिया; पश्चिममें आर्किपेलैगो, और भूमध्यसागर; दक्षिणमें अरब; और पूर्वमें ईरान और रशिया है.

विभाग- १-एशिया माइनर, जिसमें एनेटोलिया, कैरेमानिया और सीवास शामिल हैं; २- सिरिया, जिसमें पैलेस्टाइन (ईसा मसीहकी जन्म भूमि) भी शामिल है; ३- एल्जेसिरा; ४- आर्मीनिया; ५- कुर्दिस्तान; ६- इराकि अरब; और इनके अलावा इस रियासतके तीन ज़िले, याने हिजाज़, यमन और एल्हासा अथवा लाहसा अरबमें हैं.

पहाड़- टौरस, (कोह तूर), ओलिम्पस, ईदा, और लेबेनन, ये चारों इस रियासतमें मुख्य पर्वत हैं.

द्वीप- इस रियासतमें लेसबोस, सायो, सामोस, पैटमोस, कोस, रोडस, स्कार्पैंएटो और साइप्रस टापू शामिल हैं, जिनमेंसे साइप्रस अंग्रेज़ोंका है.

नदी- किज़िल इर्माक, सकरिया या सैंगेरिअस, सरबत, मेंडर, ओरंटीज़, जॉर्डन,

यूफ़्रेटीज़ और टाइग्रिस इस देशकी मुख्य नदियां हैं. यूफ़्रेटीज़की लम्बाई १७०० मील, और टाइग्रिसकी ८०० मील है.

झील- रूम देशमें दो झील याने वान, और एसफ़ाल्टिटीज़, जिसमें मछलियां न जीनेके सबब उसे मृत्यु सरोवर भी कहते हैं, मुख्य झील हैं.

मुख्य शहर-स्मर्ना, इस रियासतकी राजधानी है; ओलिम्पस पर्वतकी तलहटीमें ब्रूसा, अंगोरा, और टोकट व्यापारके लिये मश्हूर हैं. इनके अलावह अलप्पो, दमिश्क़, बेरूत, जेरूसलम, मोसल, बग़दाद, बसरा, ट्रेबिज़ोन्ड, अर्ज़िरूम, बितूलीस और वान वगैरह मश्हूर शहर हैं.

यह रूम की सल्तनत यूरोप और एशिया दोनों खण्डों में है, परन्तु ऊपर लिखा हुआ हाल सिर्फ़ उस हिस्सहका है, जो एशियामें वाक़े है. यह मुल्क अक्सर पहाड़ी है, परन्तु दरोंकी ज़मीनमें पैदावार ज़ियादह होती है; और यहां अंगोराके बकरे ऊनके लिये मश्हूर गिने जाते हैं. यह मुल्क पुरानी तवारीख़के लिये बड़ा मश्हूर है, जिसमें आज कल भी ज़मीन खोदनेसे मूर्ति वगैरह पुरानी चीज़ें निकलती हैं. कई जगह पुराने ज़मानहके बने हुए टूटे फूटे सूर्य्यके मन्दिर भी आज दिनतक दिखलाई देते हैं. ट्रॉय, सार्डिस, इफ़ेसस, एंटियोक, टायरे, सिडौन, बाल्बक, टाडमर, यापलमाइरा, निनिवे और बाबिलन, ये शहर पुराने ज़मानहमें बड़े मश्हूर थे, परन्तु समयके फेरफारसे बिल्कुल खण्डहर होगये हैं, यहांतक कि उनका पूरा पूरा पता भी नहीं लगसक्ता. इस मुल्कमें तुर्कमान, यूनानी, आर्मीनी, अरब, मुसल्मान और ईसाई भी बसते हैं; और यहां यूनानी, टर्की, शामी, आर्मीनी, अरबी, फ़ार्सी वगैरह ज़बानें बोली जाती हैं.

अरब.

यह मुल्क १२°- ४०′ से ३५° उत्तर अक्षांश, और ३२°- ३७′ से ६०° पूर्व देशान्तरके बीचमें वाक़े है. इसकी ज़ियादहसे ज़ियादह लम्बाई १५०० मील, चौड़ाई १३०० मील, क्षेत्रफल १२१९००० मील मुरब्बा, और आबादी ४०००००० है (१).

---

(१) एशियाई रूमका जो विभाग अरबमें है, उसकी आबादी और क्षेत्रफल वगैरह इसमें शामिल नहीं है.

सीमा- उत्तरमें, सिरिया और यूफ़ेटीज़ नदी; पश्चिममें, लाल समुद्र और स्वेज़की नहर; दक्षिणमें, अदनका आखात और अरबका समुद्र; और पूर्वमें ओमन और ईरान के आखात हैं.

विभाग- इस मुल्कके ख़ास हिस्से १- एल्-हिजाज़, २- एल्-यमन, ३- हेड्रामॉट, ४- ओमन, ५- एल्-हासा, और ६- नेज्जेद हैं.

पहाड़- इस देशमें मुख्य पर्वत सरबल, हॉरेब और सीनाई (१) हैं.

द्वीप- इस मुल्कके मुतअ़ल्लक़ जज़ीरे सौकोट्रा और बहरिंग हैं.

मशहूर शहर- एल्-हिजाज़में मक्का, जो मुहम्मदकी जन्मभूमि होनेके कारण प्रसिद्ध है; लाल समुद्रके तटपर जिद्दा; उत्तरकी तरफ़ मदीना, जिसमें पैग़म्बर मुहम्मदकी क़ब्र है; एल्-यमनसे दक्षिण-पश्चिमको मोचा; और मध्यमें वाहबी लोगोंकी राजधानी रियाद है. ऊपर लिखे हुए शहरोंके अ़लावह साना व मस्क़त वग़ैरह और भी बड़े २ शहर हैं. दक्षिणी किनारेपर अदन शहर अंग्रेज़ोंका है.

यह मुल्क बिल्कुल रेगिस्तानी है, केवल कहीं कहीं उर्वरा धरती टापूकी तरह दिखलाई देती है. इस मुल्कमें बर्साती नालोंके सिवा कोई नदी या झील नहीं है. यहांके घोड़े दुनयाभरमें मशहूर हैं, और ऊंट व गधे भी यहां बहुत होते हैं. बहरिंग टापूके बाशिन्दे समुद्रमेंसे मोती निकालते हैं. सौकोट्रा टापूसे मूंगा और अंबर बाहिर भेजाजाता है. यहांके आदमी रूई अथवा ऊनकी पन्द्रह पन्द्रह तक टोपियां ऊपर तले पहिनते हैं, जिनमें ऊपर वाली टोपी सबसे बढ़िया होती है. ग़रीबसे ग़रीब आदमी भी दो टोपी ज़रूर पहिनता है, और उसके ऊपर दुपट्टा बांधते हैं. मुहम्मदसे पहिले यहांके लोग भी मूर्त्ति पूजक थे.

ईरान.

यह मुल्क २६° से ३९° उत्तर अक्षांश, और ४४° से ६३° पूर्व देशान्तरके बीचमें वाक़े है. इसकी लम्बाई अनुमान १३०० मील, और चौड़ाई ८०० मील है. इसका क्षेत्रफल ६२८००० मील मुरब्बा और आबादी अनुमान ७६५३००० मनुष्योंकी है.

सीमा- इसके उत्तरमें, रूसका मुल्क और कास्पिअन समुद्र; पश्चिममें, एशियाई

(१) इस पहाड़की अधिकसे अधिक ऊंचाई ८५९३ फ़ीट है.

रूम; दक्षिणमें, ईरानका आखात, और ओमनकी खाड़ी; और पूर्वमें, अफ़्गानिस्तान व बिलोचिस्तान हैं.

विभाग- ईरानका देश बारह ज़िलों व हिस्सोंमें तक्सीम कियागया है.

पहाड़- इस देशमें मुख्य पर्वत एल्बुर्ज़ और डेमावेन्ड हैं.

द्वीप- हुर्मुज़ और कर्क आदि कई छोटे छोटे टापू, जो ईरानकी खाड़ीमें हैं, इसी बादशाहतमें गिनेजाते हैं.

नदी- ईरानमें बहने वाली दो नदियां, याने आरास या आरेक्सिस, और किज़िल-ओज़न हैं, जो दोनों कास्पिअन समुद्रमें गिरती हैं.

झील- उरूमिया, बख्तेगान, और सीस्तान या हांमू इस मुल्कके ख़ास झील हैं.

शहर- तिहरान, जो हालमें राजधानी है; इस्फ़हान, पुरानी राजधानी; शीराज़; बूशहर; गौम्ब्रून; तब्रेज़; रेश्ट; अस्त्राबाद मश्हद; यज़्द; और किर्मान वगैरह मुख्य शहर हैं.

ईरानकी खाड़ीमेंसे बहुत .उम्दह मोती निकलते हैं. इस मुल्कमें पहाड़ और रेगिस्तान अधिक है, तोभी बीच बीचकी भूमि बड़ी उपजाऊ और मनोहर है. यहांकी खांनोंमेंसे चांदी, सीसा, लोहा, तांबा, संगमर्मर और गन्धक वगैरह चीज़ें निकलती हैं. यहांके लोगोंकी मुख्य सवारी घोड़ा है; औरतें ऊंटोंपर पर्दके अन्दर बैठती हैं, गाड़ी यहां नहीं होती. रेशमी कपड़ा, कम्ख़ाब, शाल, बन्दूक़, पिस्तौल और तलवारें यहां बहुत अच्छी बनती हैं.

ईरानके पुराने बाशिन्दोंकी भाषा और धर्म भारतवर्षके आर्य लोगोंके मुवाफ़िक़ था. वे अग्निहोत्री थे, और उनमें ब्राह्मण आदि चारों वर्ण भी थे; परन्तु पिछले ज़मानहमें बड़ा फेरफार हुआ, और सन् ६३६ ईसवी में कुद्सियाकी लड़ाईमें जब ईरानके बादशाह यज़्दगुर्दने अरबी लोगोंसे शिकस्त पाई, तभीसे ईरानियोंको मुसल्मान होना पड़ा.

शीराज़से ३० मील वायुकोणमें ईरानकी अति प्राचीन राजधानी प्रसिद्ध है, जिसको अंग्रेज़ लोग पार्सिपोलिस कहते हैं, और सिकन्दरने उसे ग़ारत किया था. अब यह राजधानी एक खंडहर है, परन्तु इसका कुछ भाग, जो अभीतक मौजूद है, उसपर बहुतसे प्राचीन फ़ार्सी अक्षर तीरके फलकी सूरतपर खुदे हुए हैं, जिनको इस ज़मानहमें कोई नहीं पढ़सक्ता था, परन्तु मेजर रॉलिन्सन साहिबने दस वर्षकी मिह्नतसे उस

लिपिका मतलब निकाला, और उन अक्षरोंकी वर्णमाला बनाई. अब उसकी सहायतासे जहां जहां पुराने मकानोंपर उस समयके अक्षर लिखेहुए मिले हैं वे सब पढ़लिये गये. यह प्राचीन भाषा जो तीरके सदृश अक्षरोंमें लिखी है, संस्कृतसे और विशेषकर वेदकी भाषासे मिलती हुई है; और वहांके पत्थरोंमें खुदी हुई मूर्तियोंकी पोशाक, उनके हथियार, उनकी सवारी और आकृति हिन्दुस्तानके कई प्राचीन मन्दिरोंकी नक़ाशीसे ऐसी मिलती है, कि जिन लोगोंने ईरान और हिन्दुस्तानके प्राचीन इतिहासको अच्छी तरह देखा है, उनके मनको यह निश्चय होगया है, कि उस समय हिन्दुस्तान और ईरानके चाल चलन, मत और व्यवहार आदिमें कुछ विशेष अन्तर न था.

अफ़ग़ानिस्तान.

यह मुल्क २८°-५०′ से ३७°-३०′ उत्तर अक्षांश, और ६१° से ७४°-४०′ पूर्व देशान्तरके दर्मियान वाक़े है. क्षेत्रफल इस देश का २६०००० मील मुरब्बा और आबादी अनुमान ४०००००० मनुष्योंकी है.

सीमा– इसके उत्तरमें, एशियाई रूस और बुख़ारा; पश्चिममें, ईरान; दक्षिणमें, बिलौचिस्तान; और पूर्वमें, हिन्दुस्तान है.

विभाग – अफ़्ग़ानिस्तानमें काबुल, जलालाबाद, ग़ज़्नी, क़न्धार, हिरात, और अफ़्ग़ान तुर्किस्तान नामके ६ ज़िले हैं.

पहाड़ व नदी– अफ़्ग़ानिस्तानके मुख्य पर्वत हिन्दूकुश (१) व सुलैमान और नदियां काबुल व हेल्मंड हैं.

शहर– इस देशके मुख्य मुख्य नगर काबुल (राजधानी), जलालाबाद, ग़ज़्नी, क़न्धार, हिरात और कंडूज़ हैं.

इस मुल्कमें पहाड़ और जंगल बहुत है, परन्तु जो धरती पानीसे तर है वह अत्यन्त उपजाऊ और उर्वरा है. मेवा यहां बहुत .उम्दह होता है, और हिरातके पहाड़ोंमें हींगके पेड़ बहुत हैं. सोना, चांदी, माणक, सीसा, लोहा, सुरमा, गंधक, हरताल और फिटकरी आदि चीज़ें यहांकी खानोंसे निकलती हैं.

पुराने ज़मानेमें यह मुल्क भारतवर्षीय राजाओंके आधीन था, उसके बाद

(१) इस पहाड़की अधिकसे अधिक ऊंचाई २५००० फ़ीट है.

सिकन्दरके समयमें यूनानी सूबेदारोंके तह्तमें रहा, फिर धीरे धीरे ईरानके बादशाहों के क़बज़हमें आया, और बादको ईरानके साथ ही ख़लीफ़ाओंकी सल्तनतमें शामिल होगया.

बिलोचिस्तान.

यह मुल्क २४°-५०′ से ३०°-२०′ उत्तर अक्षांश, और ६२°- से ६९°-१८′ पूर्व देशान्तरके बीचमें वाके़ है. इसका क्षेत्रफल अनुमान १००००० मील मुरब्बा, और आबादी अनुमान १०००००० मनुष्योंकी है.

सीमा - इसके उत्तरमें, अफ़्ग़ानिस्तान; पश्चिममें, ईरान; दक्षिणमें, अरबका समुद्र; और पूर्वमें, हिन्दुस्तान है.

इस मुल्कमें मुख्य पर्वत हाला, और मुख्य शहर क़िलात और गंडावा हैं.

इस मुल्कमें पर्वत अधिक हैं, और बिलोची और ब्राहोइ क़ौमें ज़ियादहतर बसती हैं. क़िलातका ख़ान बिलोचिस्तानका राज्य कर्त्ता कहाजाता है, परन्तु वह केवल नामका ही राज्य कर्त्ता है, हक़ीक़तमें वहांकी अलग अलग क़ौमोंके सर्दारोंको ही वहांका राज्य कर्त्ता मानना चाहिये.

पूर्वी प्रायद्वीप.

यह विभाग १°-२०′ से २८° उत्तर अक्षांश और ९१° से १०९° पूर्व देशान्तरके बीचमें वाके़ है. इसकी ज़ियादहसे ज़ियादह लम्बाई १८०० मील, चौड़ाई ९६० मील, क्षेत्रफल ८७८००० मील मुरब्बा, और आबादी २५५००००० मनुष्योंकी है.

सीमा - इसके उत्तरमें, चीन व तिब्बत; पश्चिममें, हिन्दुस्तान और बंगालकी खाड़ी; दक्षिणमें, मलाकाका मुहाना और स्यामका आखात; और पूर्वमें चीनका समुद्र व टौंक्विनका आखात है.

विभाग - इस मुल्कके मुख्य ६ विभाग हैं, उनमेंसे अव्वल अंग्रेज़ी मुल्क, जिसमें आसाम, चिटागौंग, उत्तर और दक्षिण बर्मा, पिनांग या प्रिन्स ऑव वेल्स टापू, और वेलेज़ली, मलाका, तथा सिंगापुर शामिल हैं; दूसरा स्याम; तीसरा कम्बोदिया; चौथा उत्तर कोचीन चाइना या अनाम; पांचवां टौंकिन; और छठा दक्षिण कोचीन चाइना है.

नदी- इरावदी (१), उत्तर और दक्षिण बर्ह्मामें; सैलून, बर्ह्मा और स्यामके बीचमें; मीनाम (२) स्याममें; और मेक्यांग (३) स्यामसे निकलकर कम्बोदिया और दक्षिण कोचीन चाइनामें भी बहती है.

मुख्य शहर - उत्तर बर्ह्मामें मंडाले, जो यहांकी राजधानी है; दक्षिण बर्ह्मामें अराकान, रंगून, मोलमीन और टेनासरिम हैं; पिनांग टापूका मुख्य शहर ज्यॉर्ज टाउन, और सिंगापुर टापूका सिंगापुर है; स्यामका मुख्य शहर बैंकॉक; कम्बोदियाका पेनोंपिंग; उत्तरी कोचीन चाइनाका ह्यू; टॉकिनका केशो या हेनोई; और दक्षिण कोचीनचाइनाका मुख्य शहर सेगोन है.

बर्ह्मा देशमें चावलकी पैदाइश बहुत होती है, और जंगलोंमें सागके दरख़्त बहुत हैं. यहांके टैंगन सर्वोत्तम गिने जाते हैं. पेगूके नज़्दीकवाले जंगलोंमें शेर और हाथी अधिक पाये जाते हैं. इस देशकी खानोंमेंसे सोना, चांदी, माणक, नीलम, लोहा, सीसा, सुरमा, गंधक, हरताल, संखिया, मिटिया तैल, कोयला, और संगमर्मर वगैरह क़ीमती पत्थर बहुत निकलते हैं. यहांके लोग सूरत व शक्लमें चीनियोंसे मिलते हैं. मर्द डाढ़ी व मूछोंके बाल मोचनेसे उखाड़ डालते हैं, और औरतोंकी तरह सुरमा और मिस्सी लगाते हैं. औरतें यहांकी गोरी लेकिन् भद्दी सूरत वाली होती हैं, और कुल घरके कामका भार अक्सर उन्हींको उठाना पड़ता है. धर्म यहांका बौद्ध है, और जातिभेद नहीं है, परन्तु बौद्ध धर्मके मुख्य नियमोंका उल्लंघन करके मछली तथा मांस खाते हैं और शराब भी पीते हैं. मुलम्मेका काम इस देशके लोग अच्छा करते हैं, और धातु तथा मिट्टीके बर्तन और रेशमके कपड़े, और संगमर्मरकी मूर्त्तियां उम्दह बनाते हैं. यह मुल्क पहिले स्वतंत्र था, परन्तु सन् १८८६ ई० में लॉर्ड डफ़रिनके समयमें छीनाजाकर हिन्दुस्तानके शामिल करलियागया.

स्यामके मुल्कमें भी चावलकी पैदाइश अच्छी होती है, और इलायची, दारचीनी, तेजपात, काली मिर्च, और अगर भी बहुत होता है. इस मुल्ककी खानोंमेंसे हीरा, नीलम, माणक, लोहा, रांगा, सीसा, तांबा, और सुरमा निकलता है. नदियोंका रेता धोनेसे सोना भी मिलता है. इस मुल्कमें चुम्बकका पहाड़ है. यहांकी राजधानी

(१) इस नदीकी लम्बाई १२०० मील है.
(२) इस नदीकी लम्बाई ८०० मील है.
(३) इस नदीकी लम्बाई १७०० मील है.

बैंकॉकका बाज़ार बिल्कुल पानीके ऊपर है, बांसके बेड़े बनाकर उनपर दूकानदार रहते और अपना माल बेचते हैं; घोड़ा व गाड़ीका कुल काम किश्तियोंसे लिया जाता है. यहांके लोगोंका चालचलन और धर्म बर्ह्माके लोगोंका सा है. इन लोगोंको गानेका अधिक शौक़ है, और ये अपने नाखुन कभी नहीं कटवाते.

चीनका राज्य.

(१)– चीन ख़ास.

यह मुल्क २०° से ४२° अंश उत्तर अक्षांश और ९८° से १२३° पूर्व देशांतरके बीचमें वाक़े है. इसकी ज़ियादहसे ज़ियादह लम्बाई १६०० मील, चौड़ाई १३०० मील, क्षेत्रफल १६००००० मील मुरब्बा, और आबादी ३८१०००००० मनुष्योंकी है.

सीमा – इसके उत्तरमें, मंगोलिया, और मंचूरिया; पश्चिममें, मंगोलिया, तिब्बत, और बर्ह्मा; दक्षिणमें, टॉंकिन, और चीनी समुद्र; और पूर्वमें, पीला समुद्र और पासिफ़िक महासागर है.

द्वीप – दक्षिणमें, हेनन्; पूर्वमें फ़ॉरमोसा, चूज़न और लूचू हैं; मकाओ नामी टापू पुर्त्तगाल वालोंका है, और हॉंगकॉंग अंग्रेज़ोंका है.

नदियां – उत्तरमें, पेहो और होआंगहो (१); मध्यमें, यांग्सिक्यांग (२); और दक्षिणमें चूक्यांग (३) है.

मश्हूर शहर – पेहो नदीके पास पेकिन राजधानी; यांग्सिक्यांग नदीके ऊपर नैन्किन; टे झीलके नज़्दीक सूचू; पूर्वी किनारेपर अमोय, फ़्यूचू, निंग्पो, और शंघाई; और दक्षिणी किनारेपर कैंटन है.

(२)– तिब्बत.

चीन राज्यका यह विभाग हिन्दुस्तानके उत्तरमें है. इसकी लम्बाई १५०० मील, चौड़ाई ५०० मील, क्षेत्रफल ७००००० मील मुरब्बा, और आबादी ६०००००० मनुष्योंकी है.

(१) इस नदीकी लम्बाई २६०० मील है.

(२) इस नदीकी लम्बाई ३२०० मील है.

(३) इस नदीकी लम्बाई १०५० मील है.

इस देशमें मुख्य पर्वत हिमालय और क्वेनलू हैं. मुख्य नदियां सिंधु और सांपू (ब्रह्मपुत्र) हैं. मुख्य झील पाल्टी, टेंग्री और मानसरोवर हैं. तिब्बतकी राजधानी शहर लासा है.

(३)- मंगोलिया.

इसकी लम्बाई १७०० मील, चौड़ाई १००० मील, और आबादी अनुमान २०००००० मनुष्योंकी है.

इसमें ख़ास पर्वत इनूशान, और मुख्य शहर साइबेरियाके पास उरगा, और मेवतचिन हैं.

(४)- मंचूरिया.

यह राज्य चीनका उत्तर-पूर्वी कोना है, जिसमें १२०००००० मनुष्योंकी आबादी है. इसमें मुख्य नदी आमूर (१), और शहर किरिनौला व मोक्डेन हैं.

(५)- पूर्वी तुर्किस्तान.

चीन राज्यका यह विभाग तिब्बतके उत्तर पश्चिममें है. इसमें मुख्य पर्वत क्वेनलून; मुख्य नदियां काशग़र, यार्क़न्द, और खोतन हैं. मुख्य झीलें लॉबनोर और बास्टन हैं, और मुख्य शहर कराशर, खोतन या इल्ची, यार्क़न्द और काशग़र हैं.

चीन देश बहुत पुराना मुल्क है. यहांके लोग प्राचीन समयसे ही सुधरे हुए हैं, और प्राचीन समयसे ही इसमें विद्याका प्रचार चला आता है. इन्हीं लोगोंने चुम्बकके गुण प्रगट किये हैं, और आजतक हरएक गांवमें बादशाहकी तरफ़से स्कूल नियत हैं. आदमीकी बनाई हुई अजीब चीज़ोंमेंसे इस मुल्कमें एक बड़ी दीवार है, जो १४०० मील लम्बी और २० से ३० फ़ुट तक ऊंची और इतनीही चौड़ी है, जिसमें सौ सौ गज़के फ़ासिलेपर बुर्ज बने हैं. एक बड़ी नहर क़रीब ७०० मील लम्बी बनाई हुई है. यहांके लोगोंकी मुख्य ख़ुराक चावल है. इस मुल्कके बाशिन्दे ख़ुदपसन्द, कायर, कपटी, शक्की, चालाक और मिहनती होते हैं. उनका चिहरा ज़र्द, पेशानियां बुलन्द, आंखें छोटी, और बाल काले होते हैं. औरतोंके पैरके पंजे जितने छोटे हों उतनी ही वे ख़ूबसूरत गीनी जाती हैं, और इसीलिये

(१) इस नदीकी लम्बाई २३०० मील है.

छोटी उम्रमें उनके पैरके पंजे ऐसे कसकर बांधदिये जाते हैं, कि बड़े होनेपर बढ़ने नहीं पाते. वहांके लोगोंका मज़्हब बौद्ध है, परन्तु वे लोग मांस खाते हैं और देवी देवताओंकी संख्या बहुत बड़ी मानते हैं. वहांकी मुख्य पैदावार चाय, रेशम, कोयला और कई तरहके खनिज धातु हैं. चीनी भाषामें एक एक शब्दके लिये एक एक अक्षर मौजूद है, इसी कारण वहांकी वर्णमालामें ३०००० से ज़ियादह अक्षर हैं. यहांके लोग कारीगरीमें बहुत होश्यार हैं और हाथी दांत, रेशम और मिट्टीसे कई तरहकी चीज़ें बनाते हैं. तिब्बतका मालिक लामा गुरु कहलाता है, और चीनी उसको बुद्धका अवतार मानते हैं. मुल्कका कारोबार उसका नाइब जिसको राजा कहते हैं, करता है; परन्तु हक़ीक़तमें इख्तियार बिल्कुल सूबेदारका है, कि जो चीनकी तरफ़से वहां रहता है. धर्म बौद्ध है. मंगोलियाका मुल्क समुद्रके सत्हसे बहुत ऊंचा है. मंचूरिया बड़ा उपजाऊ मुल्क है. इन दोनों मुल्कोंमें हरएक क़ौमका ख़ान या सर्दार रहता है, जो चीनके बादशाहको ख़िराजदेते हैं. पूर्वी तुर्किस्तानमें नाज और फल अच्छे पैदा होते हैं; और पाहाड़ोंमेंसे सोना, चांदी, लोहा, और कोयला निकलता है. सन् १८६३ .ई० में यहांके लोग बग़ावत करके चीन राज्यसे स्वतंत्र होगये थे, लेकिन् सन् १८७८ .ई० में फिर चीन वालोंने उन्हें अपना मातहृत बनालिया. मज़्हब यहांका मुसल्मानी है.

तुर्किस्तान.

यह मुल्क ३६° से ४४° उत्तर अक्षांश, और ५६° से ७४° पूर्व देशान्तरके बीचमें वाक़े है. इसकी लम्बाई ज़ियादहसे ज़ियादह ९०० मील, चौड़ाई ५०० मील, क्षेत्रफल ११४००० मील मुरब्बा, और आबादी अनुमान ३०००००० मनुष्योंकी है.

सीमा– इसके उत्तर और पश्चिममें, एशियाई रूस; दक्षिणमें, फ़ारिस (पर्शिया), और अफ़्ग़ानिस्तान; और पूर्वमें, पूर्वी तुर्किस्तान है. इस मुल्कके दो विभाग, याने ख़ीवा और बुख़ारा कियेगये हैं. इसमें मुख्य पर्वत दक्षिणकी ओर हिन्दूकुश, और पूर्वमें, बेलोरताग़ है. बड़ी नदी इस मुल्कमें सिर्फ़ ऑक्सस या अमू दर्या (१) है. मुख्य शहर बुख़ारा, ऑक्सस नदीके नज़्दीक है; दूसरा शहर ऑक्सस नदीके किनारेपर ख़ीवा है. इस मुल्कका बहुतसा हिस्सह रेगिस्तान है. ऑक्सस और ज़ेगज़ार्टीज़ नदियोंके किनारेकी ज़मीन उपजाऊ है. यहांके लोग ज़ियादहतर मवेशी रखते हैं, और जहां

(१) इस नदीकी लम्बाई १३०० मील है.

घासका आराम देखते हैं वहीं जारहते हैं. सन् ईसवीके चौदहवें शतकमें बुख़ारा नगर एशियाको फ़त्ह करने वाले तीमूरकी राजधानी था, और ख़ीवा भी प्रबल राज्य था, लेकिन् अब ये दोनों ज़िले मात्र रहगये हैं, जो रशिया (रूस) के मातह्त हैं. यहांके लोग मुसल्मानी मज़्हब रखते हैं.

एशियाई रूस.

यह मुल्क ३८° से ७८° उत्तर अक्षांश, और ३७° से १९०° पूर्व देशान्तरके बीचमें वाक़े है. इसकी ज़ियादहसे ज़ियादह लम्बाई ४००० मील, चौड़ाई २००० मील, क्षेत्रफल ६२२१००० मील मुरब्बा, और आबादी १३०००००० मनुष्योंकी है.

सीमा – इसके उत्तरमें, उत्तर समुद्र; पश्चिममें, यूरोपी रूस; दक्षिणमें, ईरान, अफ़्ग़ानिस्तान, तुर्किस्तान, मंगोलिया और मंचूरिया; और पूर्वमें पासिफ़िक महासागर है.

पहाड़–काकेशस (कोह क़ाफ़), यूराल और अल्ताई, इस देशके मुख्य पहाड़ हैं.

द्वीप – इस देशके मुख्य द्वीप लियाखोव या नया साइबेरिया, रेंगललैण्ड, और सघेलिअन हैं.

नदी – इस देशकी बड़ी नदियां यूराल, जेग्ज़ार्टीज़, ओबी, येनिसी, लीना, और आमूर हैं.

झील – बेकल, चॅनी, बाल्कश और एरिवन है.

मुख्य शहर–ताश्क़न्द, कोकन, टोबॉल्स्क, टॉम्स्क, क्याच्टा, इर्कूट्स्क, याकूट्स्क, टिफ़्लिस, बाकू और मर्व हैं.

इस मुल्कमें जंगल और उजाड़ बहुत है, परन्तु दक्षिण भागकी धरती उपजाऊ है. यहां घोड़े और मवेशी बहुत होते हैं. उत्तर भागमें केवल झील, दलदल, और बर्फ़िस्तान है. यहांकी खानोंसे सोना, चांदी, प्लाटिनम्, तांबा, सीसा, लोहा, पारा, गंधक, फिटकरी, हीरा, लसनिया और पुखराज वग़ैरह क़ीमती चीज़ें निकलती हैं. इस मुल्कके साइबेरिया नामक विभागमें रूसके राजद्रोही और बड़े बड़े गुनहगार रक्खे जाते हैं, और उनसे खान खोदनेका काम लियाजाता है. साइबेरियाके आग्नेयकोणमें कैमचाटका नामी प्रायद्वीप क़रीब ६०० मील लम्बा है, जिसमें कई ज्वालामुखी पर्वत हैं. उत्तरी

विभागमें शरदीके कारण खेती नहीं होसक्ती, वहांके बाशिन्दे शिकार व जंगली फलोंसे निर्वाह करते हैं. यहां नावकी क़िस्मसे एक बिना पहियोंकी गाड़ीमें कुत्ते जोड़कर बर्फ़िस्तानमें सफ़र कियाजाता है. उत्तरी समुद्रके नज़्दीक वाले लोग छोटे व मज्बूत होते हैं और उनकी गर्दन तंग, आंखें काली, सिर बड़ा, पेशानी चौड़ी, नाक चिपटी, मुंह लंबा, होंठ पतले, रंग गेहुवां, कड़े और कंधेतक लटकते हुए काले बाल, डाढ़ी कम, और पैर छोटे होते हैं. वे लोग जलजीवोंसे पेट भरते, और वस्त्रकी जगह चमड़ा पहिनते हैं. शीतकालमें जब वहां महीनोंकी लम्बी रातें होती हैं, तो उस समय वहांके लोग बर्फ़में खड्डे खोदकर उसके ऊपर बर्फ़से कुटीसी बना लेते हैं, और उसके अन्दर रहते हैं. ये लोग शरदीके दिनोंमें घास व मछलीकी चर्बीको जलाकर उससे तापते हैं. ठंढ वहां इतनी सख़्त होती है, कि आग लगानेपर भी ये मकान नहीं गलते, और अन्दर रहने वालोंको बाहिर की हवासे बचाते हैं. जब कभी गर्मीसे बर्फ़ गलजाती है, तो ज़मीनके अन्दरसे हाथियोंके दांत निकलते हैं. ईसवी १८०३ [वि० १८६० = हि० १२१८] में बर्फ़के नीचे एक जानवरकी पूरी लाश मिली थी, जो ९ फ़ीट ४ इंच ऊंची, और १६ फ़ीट ४ इंच लम्बी थी, उसके दांत भैंसके सींगोंके मुवाफ़िक़ मुड़े हुए ९ फ़ीट ६ इंच लम्बे और ४॥ मन वज़नमें थे. उसके बदनपर ऊनकी तरह काले बाल थे. वहां वाले इस जानवरको मेमात कहते हैं, और उसके दांतोंकी बिक्री होती है. यह जानवर हाथीकी जातिका है, परन्तु आजतक वैसे दांतोंका हाथी ज़िन्दह देखनेमें नहीं आया. यह बड़े आश्चर्यकी बात है, कि जब इन दिनोंमें कोई हाथी वहांपर खाने पीनेके लिये कुछ न मिलनेके कारण क्षण भरभी नहीं जी सक्ता, तो जिन हज़ारों जानवरोंकी हड्डियां वहां मिलती हैं वे कैसे ज़िन्दह रहे होंगे.

कोरिया.

यह प्राय द्वीप रूप मुल्क ३३° से ४३° उत्तर अक्षांश, और १२४° से १३०° पूर्व रेखांशके मध्यमें वाके है. इसका क्षेत्रफल अनुमान ८७७६० मील मुरब्बा, और आबादी अनुमान ९०००००० मनुष्योंकी है.

सीमा— उत्तरमें, मंचूरिया; पश्चिम और दक्षिणमें, पीला समुद्र; और पूर्वमें कोरियाका मुहाना है.

इस मुल्कमें मुख्य नदी टोमनक्यंग और मुख्य शहर किकिंटाओ या सेउल और पिंगयंग हैं. यह मुल्क सख़्त होनेपर भी उपजाऊ है, और इसमें खेती अच्छी

होती है. कोरियाका अन्दरूनी हाल बहुत ही कम जाना गया है, क्योंकि यहांके लोग विदेशियोंको अपने देशके अन्दर अक्सर कम आनेदेते हैं, और धर्मका वर्ताव चीन वालोंके बराबर रखते हैं.

जापान.

यह कई छोटे बड़े टापुओंके समूहसे बना हुआ मुल्क २६° से ५१° उत्तर अक्षांश, और १२९° से १५६° पूर्व देशान्तरके बीचमें वाके है. क्षेत्रफल इसका १५०००० मील मुरब्बा, और आबादी ३८१५१००० मनुष्योंकी है.

द्वीप- जापानके मुख्य टापू निफ़ोन, येस्सो, सिकोफ, क्यूसू, क्युराइल और लूचू हैं.

मुख्य शहर - निफ़ोनके टापूमें टोक्यो या येडो और क्योटो (म्याको) हैं. येस्सोमें मेट्स्मे और हाकोडाडी; और क्यूसूमें नेगेसाकी मुख्य नगर है. यहांकी धरती ज़ियादह उपजाऊ नहीं है, परन्तु [illegible] श्रमसे पैदावार अच्छी होती है. इस मुल्कमें ज़रा भी ज़मीन खेतीसे ख़ाली नहीं है. पहाड़ोंपर भी जहां बैल नहीं जासक्ते, आदमी हाथोंसे ज़मीन खोदकर बोते हैं. एक वर्ष पर्यन्त जो ज़मीन बिना बोई रहजावे, तो ख़ालिसह होजाती है. यहांकी खानोंसे चांदी, सोना, लोहा, रांगा, सीसा, तांबा, पारा, गंधक और हीरा, निकलते हैं. समुद्रके किनारेपर मोती, मूंगा, और अंबर मिलता है.

आदमी वहांके चालाक, मिहनती, निष्कपटी, उदार, सच्चे, सन्तोषी, और मिलनसार होते हैं, और चुग़लीको बड़ा भारी ऐब समझते हैं. ये लोग विदेशी आदमीका एतिबार नहीं करते और अदबके साथ रहते हैं. बदन उनका भराहुआ, लेकिन् कम मोटा होता है; आंखें छोटी, गर्दन तंग, सिर बड़ा, नाक छोटी और फैली हुई, बाल काले और मोटे, तैलसे चमकते हुए होते हैं. इन लोगोंकी खुराक बहुधा चावल और मांस है, जिसकी उनके धर्ममें मनाई है. ये लोग उम्र भरमें तीन बार नाम पलटते हैं. औरतें अक्सर पतिव्रता होती हैं, और बीस बीसतक ऊपर तले गौनें पहिनती हैं. वे मर्दोंके समान पढ़ी लिखी भी होती हैं.

रेशमी और सूती कपड़ा, फ़ौलादी चाक़ू, तलवार, और चीनीके बर्तन यहां अच्छे बनते हैं

हिन्दुस्तान.

यह मुल्क एशियाके दक्षिणमें ८°-४′से ३६° उत्तर अक्षांश, और ६६°-४४′ से ९१° पूर्व देशान्तरके बीचमें वाके है. लम्बाई इसकी हिमालयसे कन्याकुमारीतक १९०० मील, और चौड़ाई भी इतनी ही है. क्षेत्रफल इसका अनुमान १५५३९२५ वर्ग मील, और आबादी २८७२८९७८३ मनुष्योंकी है (१).

सीमा - इसके उत्तरमें, हिमालय पर्वत; पश्चिममें, सुलैमान और हाला पहाड़; दक्षिणमें, हिन्द महासागर; और पूर्वमें आसामका पहाड़ है.

पर्वत - हिन्दुस्तानके उत्तरमें, हिमालय पर्वत दुन्याके सब पहाड़ोंसे ज़ियादह ऊंचा है, जिसकी सबसे ऊंची चोटी माउण्ट एवेरेस्ट समुद्रके सत्हसे २९००२ फ़ीट ऊंची है; मध्यमें विंध्याचल नामक पहाड़ीश्रेणी है, जिसकी ऊंची चोटी जाम घाट है; राजपूतानहमें अर्वली; दक्षिणमें पूर्वी किनारेपर पूर्वी घाट; और पश्चिमी किनारेकी ओर पश्चिमी घाट या सह्याद्रि पहाड़ है. इन दोनों घाटोंके दक्षिणमें, नीलगिरि पर्वत; और नीलगिरिसे दक्षिण कन्याकुमारीतक कर्दमन् पर्वत है.

द्वीप - मद्रास इहातेके मदूरा ज़िलेके दक्षिण पूर्वमें सिलोन (सिंहल द्वीप); मलाबारके किनारेके पश्चिममें लकद्वीप और मालद्वीप; और बंगालके आखातमें अन्डमान, और निकोबार द्वीप हैं.

अन्तरीप - पालमेरास, कटकके दक्षिणमें; कालीमीर, कावेरीके मुहानेपर; मुंज, सिन्धमें; जगत पॉइंट और दीव गुजरातमें; और कन्याकुमारी हिन्दुस्तानके दक्षिणमें है.

समुद्र, मुहाने व खाड़ी - हिन्दुस्तानके पूर्वकी ओर बंगालकी खाड़ी हिन्दुस्तान और बर्ह्माके बीचमें; मनारकी खाड़ी और पाक मुहाना, सिंहलद्वीप और हिन्दुस्तानके बीचमें हैं; पश्चिमकी तरफ़ कच्छकी खाड़ी, गुजरातके पश्चिममें; और खंभातकी खाड़ी गुजरातके दक्षिणमें है.

नदी - उत्तरमें, गङ्गा नदी (२) हिमालयके दक्षिण गङ्गोत्री स्थानसे निकलकर बंगालेकी खाड़ीमें गिरती है; और जमुना, रामगङ्गा, गोमती, कर्मनाशा, घाघरा, सोन, गंडक, वाग्मती और कोसी ये सब उसकी सहायक नदियां हैं.

---

(१) यह संख्या .ईसवी १८९१ के अनुसार है.
(२) इस नदीकी लम्बाई १५०० मील है.

पूर्वमें, ब्रह्मपुत्र नामी नदी हिमालयके उत्तरसे निकलकर गङ्गाके साथ मिलनेके बाद बंगालेकी खाड़ीमें गिरती है. गङ्गा और ब्रह्मपुत्रकी मिली हुई धाराको मेग्ना कहते हैं.

पश्चिममें, सिन्धु नदी हिमालयके उत्तरसे निकलकर अरबके समुद्रमें गिरती है. झेलम, रावी, चिनाब, सतलज और व्यासा इसकी सहायक नदियां हैं.

दक्षिणमें, महानदी, कृष्णा, गोदावरी, और कावेरी बंगालेकी खाड़ीमें, और नर्मदा व तापी, खंभातकी खाड़ीमें गिरती हैं.

झील- मानसरोवर, हिमालयमें; डल और उलर, कश्मीरमें; चिल्का, उड़ीसामें; कोलेर, उत्तरी सर्कारमें; और सांभर राजपूतानहमें है.

स्वाभाविक विभाग- कुल हिन्दुस्तानके तीन स्वाभाविक विभाग हैं, जिनमें १- उत्तर हिन्दुस्तान, जो हिमालयके पास है; २- मध्य हिन्दुस्तान, जो हिमालय और विन्ध्याचलके बीचमें वाक़े है; और ३- दक्षिण हिन्दुस्तान, जो विन्ध्याचलके दक्षिणमें वाक़े है.

देश विभाग- १-ब्रिटिश इण्डिया याने वह मुल्क जिसमें ख़ास सर्कार अंग्रेज़ीका क़ब्ज़ह है; २- रक्षित देश, जो सर्कार अंग्रेज़ीको कर देते हैं; ३- स्वाधीन राज्य; और ४- अन्य देशीय राज्य.

---

१ - ब्रिटिश इण्डिया.

ब्रिटिश इण्डियामें इहातह बंगाल, मद्रास, बम्बई, और वह मुल्क, जो सुप्रीम गवर्मेण्टके तह्तमें है, शामिल हैं. इनमेंसे इहातह बम्बई और मद्रास, गवर्नरोंके आधीन हैं.

बंगाल इहातहके तीन भाग हैं- १- बंगाल; २- पश्चिमोत्तर देश व अवध; और ३- पंजाब. ये तीनों भाग लेफ़्टिनेण्ट गवर्नरोंके आधीन हैं.

जो मुल्क, कि सुप्रीम गवर्मेण्टके आधीन हैं, उनमें कमिश्नर रहते हैं, और वे गवर्नर जेनरलके इज्लाससे मुक़र्रर होते हैं.

कुल ब्रिटिश इण्डियाके १२ हिस्सह हैं, जिनके नाम मए आबादी व क्षेत्रफल वग़ैरहके नीचे लिखे जाते हैं:-

ब्रिटिश इंडियाके सूबोंका नक़्शह.

नम्बर.	नाम सूबा.	आबादी.	क्षेत्रफल.	क़िस्मत.	ज़िला.	कैफ़ियत.
१	बंगाल	७१२७०३०२	१६३९०२	९	५२	
२	पश्चिमोत्तर देश व अवध	४६९०३१०२	१०६१०४	११	४९	ये लेफ़्टिनेण्ट गवर्नरोंके आधीन हैं.
३	पंजाब	२०८६६८४७	१०७९८९	६	३१	
४	बम्बई	१५९८५२७०	१२४१२२	४	२३	ये गवर्नरोंके आधीन हैं.
५	मद्रास	३५६३०४४०	१३९६९८	०	२२	
६	ब्रिटिश बर्ह्मा	४६५८६२७	८७२२०	३	१९	
७	आसाम	५४७६८३३	४६३४१	१	११	
८	मध्य हिन्द	१०७८४२८७	८४४४५	४	१८	
९	अण्डमान व निकोबार द्वीप	३००००	३२८५	०	२	ये चीफ़ कमिश्नरोंके आधीन हैं.
१०	अजमेर	५४२३५८	२७१०	०	२	
११	बरार	२८९७४९१	१७७११	२	६	
१२	कुर्ग	१७३०५५	१५८३	०	१	

(गवर्मेण्ट बंगाल)

सीमा - इसके उत्तरमें, नयपाल, सिक्किम और भूटान; पूर्वमें, आसाम; दक्षिणमें, बंगालेका उपसागर, और मद्रास इहातह; और पश्चिममें, मध्य प्रदेशके ज़िले हैं.

क़िस्मत और ज़िले - बंगाल लेफ़्टिनेण्टीमें सूबा उड़ीसा, छोटा नागपुर, बंगाल, और बिहार शामिल हैं, जिनमें नीचे लिखी हुई ९ क़िस्मतें और ५२ ज़िले हैं. राजधानी इस सूबेकी कलकत्ता है.

(१)- क़िस्मत बर्दवानमें, बर्दवान, बांकोड़ा, बीरभूमि, मेदनापुर, हुगली, और हवड़ा नामके ६ ज़िले हैं.

(२)- क़िस्मत प्रेज़िडेन्सीमें, कलकत्ता, खोलना, चौबीसपर्गनह, नदिया, जैसोर और मुर्शिदाबाद है.

(३)- क़िस्मत राजशाही व कूचबिहारमें, दीमाजपुर, राजशाही, रंगपुर, बोगरा, पबना, दार्जिलिंग, जलपाईगोड़ी और कूचबिहार.

(४)- क़िस्मत ढाकामें, ढाका, फ़रीदपुर, बाक़रगंज, और मैमनसिंह.

(५)- क़िस्मत चटगांवमें, चटगांव, नवाखोली, प्रदेश चटगांव पहाड़ी, टिपरा, प्रदेश टिपरा पहाड़ी.

(६)- क़िस्मत पटनामें, पटना, गया, शाहाबाद, दर्भंगा, मुज़फ़्फ़रपुर, सारन, और चम्पारन.

(७)- क़िस्मत भागलपुरमें, मुंगेर, भागलपुर, पुर्निया, माल्दा, और सन्थाल पर्गनह.

(८)- क़िस्मत उड़ीसामें, कटक, जगन्नाथपुरी, बालासोर, अंगोल, बांकी, और बाजगुज़ार महाल.

(९)- क़िस्मत छोटा नागपुरमें, हज़ारी बाग़, लुहारडिग्गा, सिंहभूमि, मान-भूमि, और बाजगुज़ार महाल.

मश्हूर शहर व क़स्बे - इस सूबहमें बर्दवान बड़ा रौनक़दार शहर है, और यहां महाराज बर्दवान रहते हैं. कलना और कटवा व्यापारकी जगह हैं. रानीगंजमें कोयलेकी खान है. बंकोड़ामें रेशमी और टसरी थान अच्छे होते हैं. बैजनाथ (ज़िला

बीरभूमिमें) महादेवजीका प्रसिद्ध मन्दिर है. कलकत्ता, हुगली नदीपर हिन्दुस्तानकी राजधानी है; यह बहुत बड़ी सौदागरीकी जगह, और बहुत बड़ा आबाद शहर है; इसमें फ़ोर्ट विलिअम नामी क़िला है; मिटिया बुर्जमें लखनऊके पदभ्रष्ट नव्वाब वाजिद-अलीशाह रहते थे. अलीपुर, जो फ़ोर्ट विलिअमसे चार मीलके फ़ासिलहपर है, लेफ्टि-नेण्ट गवर्नर बंगालके रहनेकी जगह है. दमदम और बारकपुर पल्टनोंके रहनेकी जगह हैं. हवड़ामें, जो कलकत्ताके पास है, ईस्ट इंडिया रेलवेका एक बड़ा कारखाना है.

नदिया - भागीरथी नदीपर वाक़े है; संस्कृतके पण्डितोंमें यहांके न्यायशास्त्री प्रसिद्ध हैं. शान्तिपुरमें सूती कपड़ा अच्छा होता है. किशननगर, झिलंगी नदीपर प्रसिद्ध जगह है. प्लासीमें सिराजुद्दौलहने लार्ड क्लाइवसे शिकस्त पाई थी.

मुर्शिदाबाद- भागीरथी नदीपर नव्वाब नाज़िम बंगालाका सद्र मक़ाम था; और बहरामपुरमें सर्कारी कचहरियां हैं. दार्जिलिंगमें बंगालाके हाकिम हवाख़ोरीके लिये जाते हैं. ढाकाकी मलमल और चिकन प्रसिद्ध हैं.

चटगांव- यह बहुत अच्छा बन्दर है, और यहांसे लकड़ी और चावल बाहिरको भेजे जाते हैं.

माल्दा - रेशमी कपड़ा और आमके लिये प्रसिद्ध है. भागलपुरमें रेशमी और टसरी कपड़ा अच्छा होता है.

मुंगेर- यहांकी छुरी और पिस्तौल प्रसिद्ध हैं. जमालपुर, ईस्ट इंडिया रेलवेका सद्र मक़ाम है. राजमहल बंगालेके नव्वाबोंकी राजधानी था.

गया- फल्गू नदीपर हिन्दुओंका तीर्थ स्थान है.

पटना या अज़ीमाबाद- गङ्गाके किनारेपर एक बहुत बड़ा शहर है, जो पहिले बिहार की राजधानी था. बांकीपुरमें सर्कारी कचहरियां हैं. दानापुरकी छावनी प्रसिद्ध है.

आरा- शाहआबादके ज़िलेमें प्रसिद्ध स्थान है. बक्सरमें अन्नकी बड़ी मंडी और सहसराममें शेरशाहका मक़्बरा है.

सोहनपुर- मुज़फ़्फ़रपुरके ज़िलेमें है, जहां कार्तिकी १५ को हरिहर क्षेत्रका मेला बहुत अच्छा होता है.

बालासोर- यहां फूलके बर्तन बहुत अच्छे होते हैं. कनारकमें सूर्यका एक बहुत बड़ा मन्दिर है.

कटक- उड़ीसाके सब शहरोंमें बड़ा है. जगन्नाथपुरी हिन्दुओंके तीर्थकी जगह है. हज़ारी बाग़की आबोहवा अच्छी है.

(पश्चिमोत्तर देश व अवध).

सीमा - इस देशके उत्तरमें, हिमालय पहाड़ व नयपाल; पश्चिममें, राजपूतानह व पंजाब; दक्षिणमें, एजेण्टी मध्य हिन्द; और पूर्वमें, गवर्मेण्ट बंगाल है.

क़िस्मत और ज़िले - इस सूबेमें नीचे लिखी हुई ११ क़िस्मतें और ४९ ज़िले हैं, और इसकी राजधानी इलाहाबाद है.

(१)- क़िस्मत मेरटमें, देहरादून, सहारनपुर, मुज़फ़्फ़रनगर, मेरट, बुलन्दशहर और अलीगढ़ नामके ६ ज़िले हैं.

(२)- क़िस्मत रुहेलखण्डमें, बिजनौर, मुरादाबाद, बदायूं, बरेली, शाहजहांपुर, और पीलीभीत.

(३)- क़िस्मत आगरामें, मथुरा, आगरा या अक्बराबाद, एटा, फ़र्रुख़ाबाद, मैनपुरी, और इटावा.

(४)- क़िस्मत इलाहाबादमें, कानपुर, हमीरपुर, फ़तहपुर, बांदा, इलाहाबाद और जौनपुर.

(५)- क़िस्मत बनारसमें, मिर्ज़ापुर, बनारस, ग़ाज़ीपुर, आज़मगढ़, गोरखपुर, बस्ती, और बलिया.

(६)- क़िस्मत झांसीमें, जालौन, झांसी, और ललितपुर.

(७)- क़िस्मत कमाऊंमें, तराई पर्गनह, कमाऊं, और गढ़वाल.

(८)- क़िस्मत लखनऊमें, उन्नाव, बारहबंकी और लखनऊ.

(९)- क़िस्मत सीतापुरमें, सीतापुर, हरदोई, और खेरी.

(१०)- क़िस्मत फ़ैज़ाबादमें, फ़ैज़ाबाद, गोंडा, और बहरायच.

(११)- क़िस्मत रायबरेलीमें, रायबरेली, सुल्तानपुर, और प्रतापगढ़.

मशहूर शहर व क़स्बे- देहरादूनकी चाय मशहूर है. लन्धोरा और मन्सूरीमें अंग्रेज़ी हाकिम हवाख़ोरीके लिये जायाकरते हैं. सहारनपुरका कम्पनी बाग़ अच्छा है; यहां सर्कारी घुड़साल है, और सिफ़ेद लकड़ीके सन्दूक़ और क़लमदान अच्छे बनते हैं. हरद्वार, हिन्दुओंके तीर्थकी जगह है. रुड़कीका कॉलिज और धुएंकी कलोंका कारख़ाना प्रसिद्ध है.

मेरटमें चैतके महीनेमें नौचन्दीका मेला होता है. बरौतमें लोहेके बर्तन अच्छे बनते हैं.

अलीगढ़में मुसल्मानोंका कॉलेज है. हातरसमें चाक़ू अच्छे बनते हैं.

मुरादाबादमें क़लईके बर्तन और देशी कपड़े अच्छे बनाये जाते हैं.

अमरोहामें मिट्टीके बर्तन अच्छे बनते हैं. चंदौसी व्यापारकी जगह है. ठाकुर द्वाराकी छींट अच्छी होती है.

बदायूंमें दिल्लीका बादशाह अलाउद्दीन राज्य छोड़कर रहा था.

बरेलीमें मेज़ और कुर्सियां, और पीलीभीतके चावल अच्छे होते हैं.

शाहजहांपुरमें चाक़ू और सरौते अच्छे होते हैं, और वहांका रौज़ा फ़ैक्टरी (रम शराब और क़न्द बनानेका कारख़ानह) प्रसिद्ध है; और तिलहरमें तीर और कमान अच्छे बनते हैं.

मथुरा, वृन्दावन, नन्दगांव, बरसाना, गोकुल और गोवर्द्धन ये सब श्री कृष्णके रास विहारके स्थान होनेके कारण हिन्दुओंके पवित्र स्थान हैं.

आगरेमें क़िला, ताजमहल, आराम बाग़; और सिकन्दरेमें अक्बर बादशाहका मक़्बरा देखनेके योग्य है, यहांकी दरी और पच्चीकारीका काम प्रसिद्ध है.

फ़त्हपुर सीकरीमें अक्बर बादशाह और उसके वज़ीरोंके महल हैं.

फ़र्रुख़ाबाद व्यापारका स्थान है.

कानपुरमें चमड़ेका काम अच्छा बनता है.

महोवाके पान मश्हूर हैं.

इलाहाबाद (प्रयाग), गंगा और यमुनाके संगमपर वाक़े होनेसे हिन्दुओंका मुख्य तीर्थ है; और पश्चिमोत्तर व अवध देशकी राजधानी है.

मिर्ज़ापुरमें पीतलके बर्तन अच्छे बनते हैं.

चुनारगढ़का क़िला और वहांके मिट्टीके बर्तन मश्हूर हैं.

बनारस (काशी), हिन्दुओंका तीर्थ स्थान है. यहां संस्कृत विद्याका प्रचार सबसे बढ़कर है.

नैनीतालपर ज़िले कमाऊंमें अंग्रेज़ लोग हवाख़ोरीके लिये आते हैं.

लखनऊ, गोमती नदीपर बादशाही समयमें अवध देशकी राजधानी था. यहां पर काग़ज़ अच्छे बनते हैं.

फ़ैज़ाबादमें लकड़ीकी चीज़ें अच्छी बनती हैं. इसके नज़्दीक अयोध्या हिन्दुओंके तीर्थकी जगह है. यहांपर पुराने मकानातके चिन्ह अबतक दिखाई देते हैं.

(गवर्मेण्ट पंजाब).

सीमा- इस सूबेके उत्तरमें, कश्मीरका राज्य; पश्चिममें, सुलैमान पर्वत; दक्षिणमें, राजपूताना; और पूर्वमें, जमुना नदी है.

क़िस्मत व ज़िले- इस विभागमें नीचे लिखी हुई छः क़िस्मतें और ३१ ज़िले हैं, राजधानी इसकी लाहौर है.

(१)- क़िस्मत दिल्लीमें, दिल्ली, गुड़गांवा, करनाल, हिसार, रुहतक, अंबाला, और शिमला नामके ७ ज़िले हैं.

(२)- क़िस्मत जालंधरमें, लुधियाना, फ़ीरोज़पुर, जालंधर, होश्यारपुर, और कांगड़ा.

(३)- क़िस्मत लाहौरमें, लाहौर, अमृतसर, गुरदासपुर, मुल्तान, झंग और माउंटगोमरी.

(४)- क़िस्मत रावलपिंडीमें, रावलपिंडी, झेलम, गुजरात, शाहपुर, गूजरांवाला, और सियालकोट.

(५)- क़िस्मत देहराजातमें, देरह इस्माईलखां, देरह ग़ाज़ीखां, बन्नू, और मुज़फ़्फ़रगढ़.

(६)- क़िस्मत पिशावरमें, पिशावर, हज़ारा, और कोहाट.

मशहूर शहर व क़स्बे- दिल्ली, बादशाही समयमें भारतवर्षकी राजधानी था. करनाल और पानीपत ये दोनों लड़ाईके प्रसिद्ध स्थान हैं. कुरुक्षेत्र, पांडव और कौरवोंके महाभारत युद्धकी जगह है. थानेश्वर, हिन्दुओंके तीर्थका स्थान है.

लुधियाना- यहां सूती और रेशमी कपड़ा अच्छा बनता है.

शिमला- यहां गर्मीके मौसममें गवर्नरजेनरल हिन्द रहते हैं. अमृतसरमें गुरुगोविन्दका मन्दिर है.

रावलपिंडी- यहां सर्कारी फ़ौज रहती है.

अटक - यहांका क़िला मशहूर है.

मरी - अंग्रेज़ोंके लिये हवाख़ोरीका स्थान है.

मुल्तान - यहां रेशमी कपड़ा अच्छा बनता है.

पिशावर - हिन्दुस्तानकी पश्चिमी सीमापर वाक़े है, यहां अंग्रेज़ी फ़ौज रहती है.

(गवर्मेण्ट बम्बई).

सीमा - इसके उत्तरमें, पंजाब व बिलोचिस्तान; पश्चिममें, बिलोचिस्तान व अरबका समुद्र; दक्षिणमें, मैसोर और इहातह मद्रास; और पूर्वमें, राजपूतानह व मध्य हिन्दका मुल्क है.

क़िस्मत व ज़िले - इस इहातेमें चार क़िस्मतें और २३ ज़िले हैं:-

(१)- उत्तरी क़िस्मतमें, अहमदाबाद, खेड़ा, पंचमहाल, भड़ोच, सूरत, थाना या उत्तरी कोकण और कोलाबा.

(२)- क़िस्मत मध्यमें, ख़ानदेश, नासिक, अहमदनगर, पूना, शोलापुर और सितारा,

(३)- क़िस्मत दक्षिणीमें, बेलगांव, धारवाड़, कलाडगी, कनाड़ा, रत्नागिरी या दक्षिणी कोकण.

(४)- क़िस्मत सिन्धमें, किरांची, हैदराबाद, थर और पार्कर, शिकारपुर उत्तरी सिन्ध सर्हद.

मशहूर शहर व क़स्बे - अहमदाबाद, साबरमती नदीपर गुजरातकी पुरानी राजधानी था.

भड़ोच - नर्मदा नदीपर, और सूरत तापी नदीपर व्यापारके शहर हैं.

बम्बई - इस इहातेकी राजधानी और व्यापारकी प्रसिद्ध जगह, और बड़ी आबादीका शहर व बन्दर है.

अहमदनगर - निज़ामशाही बादशाहोंकी राजधानी था.

नासिक - गोदावरीके तटपर हिन्दुओंका प्रसिद्ध तीर्थ है.

पूना - पेश्वाओंकी राजधानी था.

पंढरपुर - हिन्दुओंका तीर्थ स्थान है.

शोलापुर - व्यापारका शहर है.

सितारा - पहिले मरहटोंकी राजधानी था. महाबलेश्वर - अंग्रेज़ोंके लिये हवाख़ोरीकी जगह है.

बीजापुर - आदिलशाही बादशाहोंकी राजधानी था.

किरांची - सिन्धका नामी बन्दर और व्यापारकी जगह है.

हैदराबाद - दस्तकारीके लिये मश्हूर है. ठठा और शिकारपुर व्यापारकी जगह हैं.

मियानीमें लॉर्ड नेपिअरने सिन्धके अमीरोंको शिकस्त दी थी.
अमरकोटमें अक्बर बादशाहका जन्म हुआ था.

(गवर्मेण्ट मद्रास).

सीमा- इस सूबेके उत्तरमें, उड़ीसा, और हैदराबाद; पूर्व और दक्षिणमें, समुद्र; पश्चिममें, इहातह, बम्बई, और समुद्र है. इस विभागमें कुल २२ ज़िले हैं, जो नीचे लिखे जाते हैं:-

१- गंजाम, २- विज़िगापट्टन, ३- गोदावरी, ४- कृष्णा, ५- कर्नोल, ६- बेलारी, ७- कड़ापा, ८- नेलोर, ९- चिंगलेपट, १०- मद्रास, ११- उत्तरी आर्कट, १२- तंजौर, १३- त्रिचिनापल्ली, १४- मदूरा, १५- तिनावली, १६- सालम, १७- कोयंबाटूर, १८- नीलगिरी, १९- मलाबार, २०- दक्षिणी कनारा, २१- दक्षिणी आर्कट, और २२- अनन्तपुर है.

मश्हूर शहर व क़स्बे- मद्रास, इस इहातेकी राजधानी है.

ब्रह्मपुर- यहां रेशमी कपड़ा अच्छा होता है. विज़िगापट्टन एक बड़ा बन्दर है.

राजमंद्री- ज़िले गोदावरीका सद्र मक़ाम है. मछलीपट्टन- यह एक बन्दर है, और यहां छींटें अच्छी बनती हैं. गूटीका क़िला मश्हूर है.

कांजीवरम- यहांके मन्दिर मश्हूर हैं.

आर्कट- कर्नाटकके नव्वाबोंकी राजधानी थी.

तंजौर- यह व्यापारकी जगह है.

त्रिचिनापल्ली- इस बड़े शहरके पास श्रीरंगजीका प्रसिद्ध मन्दिर है.

मदूरा- यहां बहुतसे उत्तम उत्तम मन्दिर हैं.

उटाकमन्ड- अंग्रेज़ोंके लिये हवाख़ोरीका स्थान है.

कालिकट- समुद्रके किनारेपर है.

मंगलोर- दक्षिणी कनाराका सद्र मक़ाम है.

रामेश्वर- इस छोटेसे द्वीपमें शिवका एक बड़ा प्रसिद्ध मन्दिर है.

(सुप्रिम गवर्मेण्टके मातहत मुल्क).

इस विभागमें नीचे लिखेहुए मुल्क हैं, और वे चीफ़ कमिश्नरोंके अधिकारमें हैं.

१- ब्रिटिश बह्मा; २- आसाम; ३- मध्य देश; ४- अन्डमान और निकोबार द्वीप; ५- अजमेर; ६- बरार; और ७- कुर्ग.

(ब्रिटिश बह्मा) (१).

सूबह ब्रिटिश बह्मा, बंगालेकी खाड़ीके पूर्वी किनारेपर चटगांवके ज़िलोंसे आसामतक फैला हुआ है.

क़िस्मत व ज़िले- इसमें तीन क़िस्मतें और १९ ज़िले हैं; रंगून इस सूबहकी राजधानी है.

(१)- क़िस्मत पेगूमें रंगून, हंथावाडी, थौंका, बेसीन, हेनूज़ादा, थिरावाडी, प्रोम, और थेएटम्यो हैं.

(२)- क़िस्मत आराकानमें अक्याब, उत्तरी अराकान, क्यूकप्यू और सेण्डवे हैं.

(३)- क़िस्मत तनासरिममें मोलमीन, एम्हर्स्ट, टेवाय, मरगुई, श्यूगेंग, टौंगू और साल्वीन हैं.

मश्हूर शहर व क़स्बे- रंगून, ब्रिटिश बह्माकी राजधानी है; श्यूडिगोन बोद्ध-मतवालोंका पवित्र स्थान है; पेगू पहिले समयमें टालैंग घरानेकी राजधानी था; प्रोममें बोद्धमतवालोंका बड़ा मन्दिर है; अक्याब एक बन्दर है, जहांसे चावल बाहिर भेजे जाते हैं, और यहांके मकानात व मद्रसह अच्छे हैं; भीलोंगमें मन्दिर बहुत हैं, जो अशोक राजाके नामसे प्रसिद्ध हैं.

(गवर्मेण्ट आसाम).

सीमा- इसके उत्तरमें भूटान; दक्षिण व पूर्वमें बह्मा व मनीपुर; और पश्चिममें, गवर्मेण्ट बंगाल व कूचबिहार हैं.

---

(१) लॉर्ड डफ़रिनके वक्तमें बह्मा देशका जो विभाग जीतकर हिन्दुस्तानमें मिलाया गया, वह इससे अलग है, यह वही है जो पहिलेसे अंग्रेज़ोंके तहतमें है.

ज़िले- इस मुल्कमें सिल्हट, कछार, ग्वालपाड़ा, कामरूप, दरंग, नौगांव, शिवसागर, लखिमपुर, नागा, खासी, और गारू नामके ११ ज़िले हैं, और गोहाटी इसकी राजधानी है.

मुख्य शहर व क़स्बे- सिल्हटकी नारंगियां और सीतलपाटी अच्छी होती है.

गोलाघाटमें चावलोंका व्यापार बहुत होता है.

चेरापूंजीमें छः सौ इंचतक पानी बरसता है.

शिलांग, चीफ़ कमिश्नरके रहनेकी जगह है.

(गवर्मेएट मध्य हिन्द).

सीमा- उत्तरमें, एजेएटी मध्य हिन्द; पूर्वमें, गवर्मेएट बंगाल; दक्षिणमें, मद्रास इहातह और हैदराबादका राज्य; और पश्चिममें बरार है.

क़िस्मत और ज़िले- इस देशमें ४ क़िस्मतें और १८ ज़िले हैं. इस सूबेकी चीफ़कमिश्नरीका सद्र मक़ाम नागपुर नाग नदीपर वाक़े है.

(१)- क़िस्मत जबलपुरमें सागर, दमोह, जबलपुर, मण्डला, और सिउनी नामके ज़िले हैं.

(२)- क़िस्मत नर्मदामें नृसिंहपुर, हौशंगाबाद, नीमार, बेतूल, और छिंदवाड़ा.

(३)- क़िस्मत नागपुरमें नागपुर, भण्डारा, बरदा, चान्दा, और बालाघाट.

(४)- क़िस्मत छत्तीसगढ़में रायपुर, बिलासपुर, और सम्भलपुर.

मुख्य शहर व क़स्बे- सागर, सर्कारी पल्टनके रहनेकी जगह है. हंडिया मुसल्मानोंका पुराना शहर है. बुर्हानपुर, तापी नदीपर ख़ानदेशका सद्र मक़ाम है. कामटीमें सर्कारी छावनी है. हिंगनघाटमें रूईकी मंडी है. जबलपुर व्योपारका शहर है. हौशंगाबाद, हौशंगशाहका बसाया हुआ है, इसके पासकी धरती बहुत उपजाऊ है. नागपुर, चीफ़ कमिश्नरीका सद्र मक़ाम है, जो मरहटोंके राज्यमें भौंसला राजाओंकी राजधानी था. वीरागढ़ और सम्भलपुरमें हीरेकी खान है.

(अण्डमान और निकोबार द्वीप).

ये द्वीप बंगालेकी खाड़ीमें हैं, इनमें पोर्ट ब्लेअर बड़ा आबाद शहर है. यहांपर हिन्दुस्तानके जन्म क़ैदी भेजेजाते हैं.

(अजमेर व मेरवाड़ा).

यह ज़िला जोधपुर, उदयपुर और कृष्णगढ़से घिरा हुआ है. चीफ़ कमिश्नरी का सद्र मक़ाम अजमेर है, जहां ख़्वाजिह मुईनुद्दीन चिश्तीकी दर्गाह है. नसीराबादमें सर्कारी छावनी है. पुष्कर हिन्दुओंका तीर्थ स्थान है.

(बरार).

सीमा – इसके उत्तरमें तापी नदी; पूर्वमें वरदा; दक्षिणमें पैनगंगा; और पश्चिममें ख़ानदेश है.

क़िस्मत व ज़िले – इसमें दो क़िस्मतें और ६ ज़िले हैं. इसका सद्र मक़ाम अमरावती है.

(१)– क़िस्मत पूर्वी बरारमें अमरावती, एलिचपुर, और वन नामके तीन ज़िले हैं.

(२)– पश्चिमी बरारमें अकोला, बल्डाना और बेसिम.

मुख्य शहर व क़स्बे– अमरावती सद्र मक़ाम है. मुर्तज़ापुरमें रूईकी बड़ी मंडी है. ग्वालगढ़का क़िला प्रसिद्ध है. ख़ामगांवमें रूईकी मंडी है. आरगांवमें जेनरल वेलेज़्ली साहिबने मरहटोंको शिकस्तदी थी.

(कुर्ग).

कुर्ग, मलाबार और मैसोरके बीचमें है. इसमें जंगल और पहाड़ बहुत हैं और छोटी इलायची और क़हवा बहुत होता है. इसका प्रबन्ध साहिब कमिश्नर बरारके सुपुर्द है. मरकाड़ा इसका सद्र मक़ाम है.

(रक्षित राज्य).

हिन्दुस्तानके रक्षित राज्योंकी आबादी विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = .ई० १८८१] में क़रीबन् साढ़े पांच करोड़ थी, जिनके नाम मए क्षेत्रफल व आमदनी वग़ैरहके नीचे लिखे हुए नक़्शहमें दर्ज हैं:–

हिन्दुस्तानके रक्षित राज्योंका नक्शह (१).

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके है.	रईसका लकब.	कौम रईस.	तोप सलामी.	क्षेत्रफल ब हिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वगैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज.	कंटिंजेएट फ़ौज ख़र्च.	
१	अजयगढ़	बुंदेलखंड	महाराजा	बुंदेला राजपूत	११	८०२	२२५०००	७०१०	०	०
२	अलवर	राजपूताना	महाराजा	कछवाहा नरूका राजपूत	१५	३०२४	२३२४३१०	०	०	यह रियासत सर्कार अंग्रेज़ीको ख़िराज नहीं देती, लेकिन् ज़ुरूरतके वक्त फ़ौज देती है.
३	अली-राजपुर	सेन्ट्रल इण्डिया	महाराणा	सीसोदिया राजपूत	९	८३६	९५०००	११०००	१५००	११०००) रुपये ख़िराजमें से१००००) रुपया धारको दिया जाता है.
४	इन्दौर	सेन्ट्रल इण्डिया	महाराजा	मरहटा	१९	८४००	१०७४४००	०	०	२३८१९२०) रुपया ब्रिटिश गवर्मेण्ट (अंग्रेज़ी सर्कार) को सन् १८६५ ई०के इक्रारके मुताबिक़ देदिये हैं, जिसके ब्याजकी आमदनी मालवा भील कॉर्प्स और महीदपुर कंटिन्जेण्टमें ख़र्च होती है.
५	ईडर	मही कांठा (गुजरात)	महाराजा	राठौड़ राजपूत	१५	४९६६	६०००००	३०३४०	०	ख़िराज गायकवाड़को देते हैं.

(१) इन राज्योंके क्षेत्रफल और आमदनी वगैरह सब किताबोंमें एकसे नहीं मिलते, इसलिये यह नक्शह हंटर साहिबके गेज़ेटिअरसे बनाया गया है.

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके है.	रईसका लक़ब.	क़ौम रईस.	तोप सलामी.	क्षेत्रफल व हिसाब मील [illegible]	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वग़ैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज.	कंटिंजेण्ट फ़ौज ख़र्च.	
६	उदयपुर (मेवाड़)	राजपूताना	महाराणा	सीसोदिया	१९	१२६७०	२६४६९१०	२०००००	५००००	ये फ़ौज ख़र्चके रुपये भील कॉर्प्सके लिये दियेजाते हैं.
७	उदयपुर छोटा	रेवाकांठा (गुजरात)	राजा	चहुवान राजपूत	९	८७३	१६००००	१०१४०	०	यह दस हज़ार एक सौ चालीस रुपया ख़िराजका गायकवाड़को देते हैं.
८	ओर्छा	बुंदेलखण्ड	महाराजा	बुंदेला राजपूत	१५	२०००	९०००००	०	०	०
९	कच्छ	बम्बई	मिर्ज़ा महाराव	जाड़ेचा राजपूत	१७	६५००	१६०३०५०	१८६९५०	०	०
१०	कपूरथला	सतल[illegible]	राजा	सिक्ख	११	१३२०	१८०००००	०	१३१०००	०
११	क़रौली	राजपूतानह	महाराजा	यादव राजपूत	१५	१२०८	४८३८१०	०	०	ज़ुरूरतके वक्त मांगे जानेपर फ़ौज देते हैं.
१२	कारोंद (कालाहांडी)	सेन्ट्रल इण्डिया	राजा	गङ्गावंशी राजपूत	९	३७४५	१०००००	३६००	०	०
१३	कालूर (बिलासपुर)	सतलजके इस तरफ़	राजा	राजपूत	११	४४८	८६०००	०	०	०
१४	काश्मीर	पंजाब	महाराजा	डोगरा राजपूत	२१	८०९००	८०७५७८२	०	०	०

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके है.	रईसका लक़ब.	क़ौम रईस.	सलामी तोप.	क्षेत्रफल ब हिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वगैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज.	कंटिंजेएट फ़ौज ख़र्च.	
१५	कृष्णगढ़	[illegible]	महाराजा	राठौड़ राजपूत	१५	७२४	२७५११०	०	०	०
१६	कूचविहार	बंगाल	महाराजा	राजवंशी राजपूत	१३	१३०७	१३२०४००	६७७००	०	०
१७	कोचीन	मद्रास	राजा	चेतियरराजपूत	१७	१३६१	१४४९२८०	२०००००	०	०
१८	कोटा	राजपूताना	महाराव	चहुवान हाड़ा राजपूत	१७	३७९७	२९४१९७०	१८४७२०	२०००००	०
१९	कोल्हापुर	बम्बई	महाराजा	मरहटा	१९	२८१६	२२१९७६०	०	०	०
२०	खम्भात	बम्बई	नव्वाब	पठानमुसल्मान	११	३५०	४२६१३०	२५९५०	०	०
२१	ख़िल्चीपुर	भोपाल	राव	खीची राजपूत	९	२७३	१७५०००	१३१३०	०	अंग्रेज़ी सर्कारकी मारिफ़त सेंधियाको ख़िराज देते हैं.
२२	ख़ैरपुर	सिन्ध	नव्वाब	बिलोची	१५	६१०९	५७२५००	०	०	ज़ुरूरतके वक़ फ़ौज देते हैं.
२३	गहरवाल (टेहरी)	पश्चिमोत्तर देश	राजा	राजपूत	११	४१८०	८००००	०	०	०

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाक़े है.	रईसका लक़ब.	क़ौम रईस.	तोप सलामी.	क्षेत्रफल ब हिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वग़ैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज.	कंटिंजेएट फ़ौज ख़र्च.	
२४	गौंडल	काठिया-वाड़	ठाकुर	जाड़ेचा राजपूत	९	६८७	१२५८१५०	११०७२०	०	ब्रिटिश गवर्मेंट, जूनागढ़ और गायकवाड़को शामिल ख़िराज देते हैं.
२५	ग्वालियर	सेन्ट्रल इण्डिया	महाराजा	मरहटा	१९	२९०४०	१२००००००	०	१९६५६	०
२६	चम्बा	पंजाब	राजा	राजपूत	११	३१८०	२४००००	५०००	०	०
२७	चरखारी	बुंदेलखंड	महाराजा	बुंदेलाराजपूत	११	७८७½	५०००००	८५८३	०	०
२८	छत्रपुर	ऐजन	राजा	पंवार राजपूत	११	११६९	२५००००	०	०	गद्दीनशीनीके वक़ एक वर्षकी आमदनीका चौथा हिस्सह देते हैं, और दत्तक बैठता है, तो आधा हिस्सह देते हैं.
२९	जयपुर	राजपूतानह.	महाराजा	कछवाहा राजपूत	१७	१४४६५	४९५८७६०	४०००००	०	०
३०	जयसलमेर	राजपूतानह	महारावल	यादव भाटी राजपूत	१५	१६४४७	११८५४०	०	०	०

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके है.	रईसका लक़ब.	क़ौम रईस.	तोपसलामी.	क्षेत्रफल व हिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वगैरह. ख़िराज.	कंटिंजेण्ट फ़ौज ख़र्च.	कैफ़ियत.
३१	जावरा	मालवा	नव्वाब	पठान मुसल्मान	१३	८७२	७९९३००	०	१६१८१	यह २००००० रुपये हुल्कर को गद्दी नशीनीके वक़ नज़ानहके देते हैं.
३२	जूनागढ़	काठिया-वाड़	नव्वाब	बाबी मुसलमान	११	३२८३	२००००००	६५६०४	०	अंग्रेज़ी सर्कारको व गायकवाड़को शामिल ख़िराज देते हैं.
३३	जोधपुर (मारवाड़)	राजपूता-नह	महाराजा	राठौड़ राजपूत	१७	३७०००	४००००००	९८०००	११५०००	फ़ौज ख़र्चके रुपये ऐरनपुर कॉर्प्सके लिये दिये जाते हैं.
३४	जंजीरा	बम्बई	नव्वाब	सीदीमुसलमान	९	३२५	३७६०००	०	०	०
३५	झाबुआ	सेन्ट्रल इण्डिया	राजा	राठौड़ राजपूत	११	१३३६	१४७१००	०	१४७४	०
३६	झालावाड़	राजपूता-नह	महाराज-राणा	झाला राजपूत	१५	२६९४	१५२५२३०	८००००	०	०
३७	झींद	सतलजके [illegible]ली तरफ	राजा	सिक्ख	११	१२३२	६५००००	०	०	पच्चीस घोड़े सवार सर्कार की नौकरीमें भेजते हैं.
३८	टिपरा	उत्तर पूर्वी सर्हद	राजा	क्षत्री	१३	४०८६	७५००००	६७७००	०	०
३९	टोंक	राजपूतानह	नव्वाब	पठान	१७	२५०९	१२८५२६०	०	०	०

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके है.	रईसका लक़ब.	क़ौम रईस.	तोप सलामी.	क्षेत्रफल ब हिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वग़ैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज.	कंटिंजेएट फ़ौजख़र्च.	
४०	डूंगरपुर	राजपूताना	महारावल	सीसोदिया राजपूत	१५	१०००	२०९३१०	३५०००	०	०
४१	त्रावणकोर	मद्रास इहातह	महाराजा	राजपूत	२१	६७३०	६०२२५४०	०	८०००००	०
४२	दतिया	बुंदेलखंड	महाराजा	बुंदेला राजपूत	१५	८३६	१००००००	१५०००	०	यह पन्द्रह हज़ार रुपया सर्कार अंग्रेज़ीकी मारिफ़त सेन्धियाको देते हैं.
४३	देवास	सेन्ट्रल इंडिया	राजा	पंवार राजपूत	१५	२८९	६०२८९०	०	३५६००	०
४४	धर्मपुर	सूरत	राजा	सीसोदिया राजपूत	९	७९४	२५००००	७०००	०	०
४५	धरोल	काठियावाड़	ठाकुर	जाड़ेचा राजपूत	९	४००	११७०००	१०२३१	०	यह ख़िराज जूनागढ़ तथा गायकवाड़को देते हैं.
४६	धार	मालवा	महाराजा	पंवार राजपूत	१५	१७४०	७४३१२०	०	१९६५०	ये रुपये मालवा भील कॉर्प्सके लिये दियेजाते हैं.
४७	धौलपुर	राजपूताना	महाराजराणा	जाट	१५	१२००	११०५७२०	०	०	०

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके है.	रईसका लक़ब.	क़ौम रईस.	तोप सलामी.	क्षेत्रफल ब हिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वग़ैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज	कंटिंजेएट फ़ौज ख़र्च.	
४८	ध्रांगधड़ा	काठिया-वाड़	राजा	झाला राजपूत	११	११४२	४०००००	४४६७७	०	यह ख़िराज जूनागढ़ और अंग्रेज़ी सर्कारको शामिल देते हैं.
४९	रसिंहगढ़	भोपाल	ऐज़न	ऊमट राजपूत	११	६२३	५०००००	८५०००	०	ख़िराज अंग्रेज़ी सर्कारकी मारिफ़त हुल्करको देते हैं.
५०	नवानगर	काठिया-वाड़	जाम	जाड़ेचा राजपूत	११	१३७९	२३१८५१०	१२०११०	०	सर्कार अंग्रेज़ी, गायकवाड़ और जूनागढ़ नव्वाब, तीनोंको शामिल ख़िराज देते हैं.
५१	नागोद	बघेल खंड	राजा	पडियार राजपूत	९	४५०	१५००००	०	०	०
५२	नाभा	सतलजके इस तरफ़	राजा	सिक्ख	११	९२८	६५००००	०	०	पचास सवार नौकरीमें देते हैं.
५३	पटियाला	ऐज़न	महाराजा	ऐज़न	१७	५८८७	४०८९५६०	०	०	सौ आदमीकी नौकरी देते हैं.
५४	पन्ना	बुंदेल खंड	महाराजा	बुंदेला राजपूत	११	२५६८	५०००००	९९५०	०	०
५५	पालनपुर	बम्बई	दीवान	अफ़्ग़ान मुसल्मान	११	३१५०	४४५०००	४३७५०	०	ये रुपये गायकवाड़को दिये जाते हैं, और अंग्रेज़ी सर्कारको डेढ़सौ सवार और सौ पियादोंका ख़र्च देते हैं.

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके है.	रईसका लकब.	कौम रईस.	तोप सलामी.	क्षेत्रफल ब हिसाब मील मुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वग़ैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज.	कंटिंजेण्ट फ़ौज ख़र्च.	
५६	पालीताना	काठिया-वाड़	ठाकुर	गुहिल राजपूत	९	२८८	२०००००	१०३६४	०	यह ख़िराज गायकवाड़ और जूनागढ़ नव्वाबको दिया जाता है.
५७	प्रतापगढ़	राजपूता-नह	महारावत्	सीसोदिया राजपूत	१५	१४६०	३५००००	५६८८०	०	०
५८	पोरबन्दर	काठिया-वाड़	राणा	जेठवा राजपूत	११	६३६	४०००००	४८५०४	०	ख़िराज अंग्रेज़ी सर्कार, गायकवाड़ और जूनागढ़ नव्वाब, तीनोंको शामिल देते हैं.
५९	फ़रीदकोट	सतलजके इसतरफ़	राजा	जाट	११	६१२	३०००००	०	०	०
६०	बड़वानी	सेन्ट्रल इण्डिया	राणा	सीसोदिया राजपूत	९	१३६२	१३००००	०	४०००	ये रुपये हाली सिक्केके मालवा भील कम्पनीके लिये देते हैं.
६१	बड़ौदा	गुजरात	महाराजा	मरहटा	२१	८५७०	११९८२३२०	०	०	०
६२	बनारस	पश्चिमोत्तर देश	महाराजा	ब्राह्मण गोतम	१३	९८५	८०००००	०	०	३०००००) रुपये हासिलके तौरपर अंग्रेज़ी सर्कारको देते हैं.
६३	बहावलपुर	पंजाब	नव्वाब	दाऊद पोत्रा मुसल्मान	१७	१५०००	१६०००००	०	०	०
६४	बेरोंदा	बुंदेलखण्ड	राजा	रघुवंशी राजपूत	९	२३८	२८०००	०	०	०

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके है.	रईसका लकब.	कौम रईस.	तोप सलामी.	क्षेत्रफल ब हिसाब मीलमुरब्बा.	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वगैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज.	कंटिंजेण्ट फ़ौजख़र्च.	
६५	बड़वान	काठिया-वाड़	ठाकुर	झाला राजपूत	९	२३७	४०००००	२८६९१ १/२	०	सर्कार अंग्रेज़ी और नव्वाब जूनागढ़, इन दोनोंको शामिल ख़िराज देते हैं.
६६	बावनी	बुंदेलखंड	नव्वाब	पठान	११	१२७	१०००००	०	०	जब गोद लिया हुआ गादीपर बैठता है, तब एक सालकी आधी आमदनी सर्कारको नज़ानहमें देते हैं.
६७	बारिया	रेवाकांठा	महारावल	चहुवान राजपूत	९	८१३	१८२३७०	९३३०	०	०
६८	बाला-सिनोर	ऐजन	नव्वाब	ईरानी मुसल्मान	९	१८९	११००००	१४६८०	०	११०८०) सर्कार अंग्रेज़ीको और ३६००) रुपया गायकवाड़को देते हैं.
६९	बांसदा	सूरत	महारावल	सोलंखी राजपूत	९	३८४	१६८६१०	७३५०	०	जब गोद रखते हैं तब रु० ३००००) नज़ानहके अंग्रेज़ी सर्कारको देते हैं.
७०	बांसवाड़ा	राजपूता-नह	महारावल	सीसोदिया राजपूत	१५	१३००	२८००००	३८०००	०	०
७१	बांकानेर	काठिया-वाड़	राजा	झाला राजपूत	९	३७६	१६२४२०	१८८७९	०	सर्कार अंग्रेज़ी और जूनागढ़के नव्वाबको ख़िराज देते हैं.

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके़ है.	रईसका लक़ब.	क़ौम रईस.	तोपसलामी.	क्षेत्रफल ब हिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वग़ैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज.	कंटिंजेएट फ़ौज ख़र्च.	
७२	बिजावर	बुंदेलखण्ड	सवाई महाराजा	बुंदेला राजपूत	११	९७३	२२५०००	०	०	०
७३	बीकानेर	राजपूताना	महाराजा	राठौड़ राजपूत	१७	२२३४०	१२५००००	०	०	०
७४	बूंदी	राजपूताना	महाराव-राजा	हाड़ा राजपूत	१७	२३००	१०१४०००	१२००००	०	०
७५	भरतपुर	राजपूताना	महाराजा	जाट	१७	१९७४	२८०००००	०	०	०
७६	भावनगर	काठियावाड़	ठाकुर	गोहिल राजपूत	१५	२८६०	२३०००००	१५४४९९ १/२	०	जुनागढ़, गायकबाड़, और सर्कार अंग्रेज़ी, इन तीनों को शामिल ख़िराज देते हैं.
७७	भोपाल	सेन्ट्रल इण्डिया	बेगम	मिरासी खेल अफ़ग़ान	१९	६८७३	४००००००	२०००००	०	०
७८	मणिपुर	उत्तर–पूर्वी हिन्दुस्तान	महाराजा	क्षत्री	११	८०००	५०००००	०	०	०
७९	मालेर-कोटला	सतलजके इस पार	नव्वाब	अफ़ग़ान मुसल्मान	११	१६४	२८४०००	०	०	पच्चीस घोड़े सवार नौकरी में भेजते हैं.

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके है.	रईसका लक़ब.	क़ौम रईस.	तोप सलामी.	क्षेत्रफल ब हिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वग़ैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज.	कंटिंजेण्ट फ़ौज ख़र्च.	
८०	मेहर	बघेल खंड	राजा	जोगी	९	४००	७०९६०	०	०	०
८१	मैसोर	मद्रास	महाराजा	यादव राजपूत	२१	२४७२३	१०६३५५७०	०	२४५००००	०
८२	मोरवी	काठिया-वाड़	ठाकुर	जाड़ेचा राजपूत	११	८२१	८३५८५०	६१५६०	०	यह ख़िराज सर्कार अंग्रेज़ी, जूनागढ़के नव्वाब, और गायकवाड़, तीनोंको दियाजाता है.
८३	मंडी	सतलज पार	राजा	चन्द्र वंशी राजपूत	११	१०००	३६००००	१०००००	०	०
८४	रतलाम	सेन्ट्रल इण्डिया	राजा	राठौड़ राजपूत	१३	७२९	१३०००००	८४०००	०	चौरासी हज़ार रु० सालिमशाही सेंधियाको देते हैं.
८५	राधनपुर	गुजरात	नव्वाब	ईरानी	११	११५०	६०००००	०	०	०
८६	राजगढ़	भोपाल	नव्वाब	मुसल्मान	११	६५५	५०००००	८६१७०	०	८५१७०) सेंधियाको और १०००) झालावाड़को देते हैं.
८७	राज-पीपलां	रेवाकांठा	राजा	गोहिल राजपूत	११	१५१४	६७००००	६५०००	०	सर्कार अंग्रेज़ीकी मारिफ़त गायकवाड़को ख़िराज देते हैं.

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके है.	रईसका लक़ब.	क़ौम रईस.	तोप सलामी.	क्षेत्रफल ब हिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वग़ैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज.	कंटिंजेण्ट फ़ौज ख़र्च.	
८८	राजकोट	काठियावाड़	ठाकुर	जाड़ेचा राजपूत	९	२८३	१७२७८०	२१३२०	०	सर्कार अंग्रेज़ी और नव्वाब जूनागढ़को शामिल ख़िराज देते हैं.
८९	रामपुर	रुहैलखण्ड	नव्वाब	पठान	१३	८९९	१५८६५७०	०	०	०
९०	रीवां	बघेलखण्ड	महाराजा	बघेला राजपूत	१७	१००००	१११२५८०	०	०	०
९१	लींबड़ी	काठियावाड़	ठाकुर	झाला राजपूत	९	३४४	२२१३७०	४५५३३	०	सर्कार अंग्रेज़ी और जूनागढ़के नव्वाब को शामिल ख़िराज दिया जाता है.
९२	लूणावाड़ा	रेवाकांठा (गुजरात)	महाराणा	सोलंखी राजपूत	९	३८८	१६२१६०	१८०००	०	अंग्रेज़ी सर्कार और गायकवाड़को शामिल ख़िराज देते हैं.
९३	समथर	बुंदेलखंड	राजा	बुंदेला राजपूत	११	१७४	४०००००	०	०	०
९४	सावंतवाड़ी	बम्बई	सर देसाई	मरहटा	९	९००	३२५०००	०	०	फ़ौज ख़र्च देते हैं
९५	सिरोही	राजपूताना	महाराव	देवड़ा चहुवान राजपूत	१५	३०२०	१४९२४०	६८८०	०	०
९६	सिरमोर (नाहन)	सतलजके इस तरफ़	राजा	क्षत्री	११	१०७७	२१००००	०	०	०

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके है.	रईसका लक़ब.	क़ौम रईस.	तोप सलामी.	क्षेत्रफल बहिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वग़ैरह. ख़िराज.	ख़िराज वग़ैरह. कंटिंजेएट फ़ौजख़र्च.	कैफ़ियत.
९७	सिक्किम	हिमालय	राजा	टिपिहार	१५	१५५०	७०००	०	०	०
९८	सीतामऊ	सेन्ट्रल इण्डिया	राजा	राठौड़ [illegible]	११	३५०	१९५८७०	५०००	०	ख़िराज अंग्रेज़ी सर्कारकी मारिफ़त सेंधियाको दिया जाता है.
९९	सुकेत	सतलज पार	ऐज़न	क्षत्री	११	४७४	१०००००	११०००	०	०
१००	सेलाना	मालवा	ऐज़न	राठौड़ राजपूत	११	११४	१४८०००	४२०००	०	०
१०१	सोंठ	रेवाकांठा	ऐज़न	पंवार राजपूत	९	३९४	९००००	७०००	०	०
१०२	हैदराबाद	दक्षिण	नव्वाब	पठान मुसल्मान	२१	८००००	३१००००००	०	०	कंटिंजेएट फ़ौजख़र्चमें बरारका प्रांत देदिया है.

स्वाधीन राज्य.

१-नयपाल- इसके उत्तरमें हिमालय पर्वत; पूर्वमें सिक्किम व भूटान; दक्षिणमें अवध, और बंगालेके ज़िले; और पश्चिममें काली नदी है. राजधानी इस रियासतकी काठमांडू है. ललितपट्टन और गोरखा अच्छे शहर हैं.

२-भूटान- इसके उत्तरमें हिमालय पहाड़; पूर्वमें चीन; दक्षिणमें आसाम; और पश्चिममें सिक्किम वाके है. इसकी राजधानी तासीसूदन है.

अन्य देशीय राज्य.

हिन्दुस्तानमें फ़रांसीसियोंके राज्यकी राजधानी चन्द्रनगर हुगली नदीपर वाके है. इसके अलावह पांडीचेरी और कालीकट कर्नाटकके किनारेपर, माही मलाबारके किनारेपर, और येनाम गोदावरीके ज़िलेमें हैं.

पुर्तगाल वालोंकी अमल्दारीका मुख्य नगर गोआ है; और इसके सिवा दमन बम्बईके उत्तरमें, और ड्यू नामक द्वीप काठिआवाड़के समुद्री तटपर है.

वर्तमान समयके देशी राज्योंका सूक्ष्म वृत्तान्त ऊपर नक़्शहमें दर्ज करनेके बाद हमको उचित हुआ, कि प्राचीन समयके सूर्य, चन्द्र और अग्निवंशी राजाओंके हालसे भी पाठक लोगोंको किसीक़द्र सूचित करें, और इसी ग़रज़से सामग्री एकत्र करनेमें बहुत कुछ परिश्रम किया गया, परन्तु शृंखलाबद्ध इतिहास सिवाय संस्कृत ग्रन्थोंके और कहीं नहीं मिला, तब लाचार महाभारत, भागवतादि ग्रन्थोंमें लिखी हुई सूर्य व चन्द्र वंशकी वंशावलियोंपर ही भरोसा करना पड़ा; परन्तु उनका इतिहासमें लिखना अवश्य नहीं जाना, क्योंकि प्रसिद्ध पुराणोंमें लिखेजाने और छापेकी हिकमत ईजाद होनेसे उन पुस्तकोंके हर जगह पाये जानेके कारण उनका प्रचार मज़्हबी तरीक़ेसे पठित और अपठित लोगोंके घरोंमें हमेशहसे चला आता है; और कुछ वंश ऐसे भी वर्णन हुए हैं, जो सूर्य और चन्द्र वंशसे जुदे हैं; याने नाग, तक्षक, शक, शुंग, मित्र, चालुक्य, चहुवान, परमार, परिहार, गोहिल, मकवाणा और टांटेड वगैरह, जिनका हाल उन ग्रन्थोंमें नहीं है. ऐसा मालूम होता है, कि उन्हीं प्राचीन वंशोंमेंसे कई कारण पाकर ये नई शाखें प्रगट होगई हैं; जैसे कि बौद्ध मज़्हब प्रबल होनेसे वेदके माननेवाले ब्राह्मण और क्षत्रिय अर्वली पहाड़में जाछुपे, और जब उस मज़्हबको ज़वाल आने लगा, तब ब्राह्मणोंने मौक़ा पाकर आबूपर एक यज्ञ किया, जिसमें उन क्षत्रियोंको बुला-

या, जो अर्वली पहाड़में भीलोंके शामिल रहकर आचारहीन होगये थे, और जंगलोंमें फिरनेसे अपनी वंशशृंखला भी भूलगये थे, और उन लोगोंसे ब्राह्मणोंने प्रायश्चित्त करवाकर नवीन संस्कार होनेके कारण उन्हें अग्नि वंशी प्रसिद्ध किया. उनके आचार विचार शुद्ध हुए, तब उनको धनुर्वेद वगैरह विद्या पढ़ाई, और उन्हीं लोगोंको सेनापति बनाया, जिन्होंने आबूके चारों तरफ़ अपनी राजधानियां क़ाइम करके आहिस्तह आहिस्तह बौद्ध मज़्हबको ग़ारत करदिया, केवल जैन मत वाले, जो वीरताको छोड़कर साधु वृत्तिमें रहते थे, बचे, और कुछ समयतक शास्त्र विद्याका अभिमान छोड़कर शस्त्रविद्याके द्वारा लड़ते भिड़ते रहे. प्राचीन सूर्य और चन्द्रवंशी शाखा वालोंने भी जहां कहीं क़ाबू पाया, अपना अपना दख़्ल जमाया, लेकिन् उस समयका हाल केवल अनुमानसे मालूम होसक्ता है, परीक्षित प्रमाणोंसे नहीं मिलता. इसलिये लाचार होकर हमको इससे भी हटना पड़ा, और आधुनिक प्राचीन शोधकारक लोगोंके लेखसे प्रयोजन लेकर अपने चित्तको सन्तुष्ट करलिया. हमारे यहां अभीतक देश काल और विद्याकी उन्नति ऐसी नहीं हुई है, कि स्वतंत्रताके साथ कोई पुरुष इतिहास लिखसके, अल्बत्तह वह समय समीप आता जाता है, जिसमें हमारे इतिहासकी ज़ुरूर क़द्र होगी.

अब हम आधुनिक विद्वानोंकी तह्क़ीक़ातके मुताबिक़ पाटलीपुत्र (पटना) के राजा चन्द्रगुप्तका हाल लिखते हैं, जो यूनानी किताबोंसे तस्दीक़ होचुकनेके अलावह अलेग्ज़ेंडर (सिकन्दर) के सेनापति नियार्कस और गवर्नर सेल्यूकसके सफ़रनामहमें विस्तारके साथ लिखागया है.

चन्द्रगुप्त राजा मोरी ख़ानदानका चन्द्रवंशी राजा था, जिसकी गद्दीनशीनी सन्.ईसवी से पूर्व ३१७ से ३१२ वर्षके बीचमें हुई थी. इसका पोता अशोक हुआ, जिसकी आज्ञाएं अनेक जगह पर्वत और स्तंभोंमें खुदी हुई मिली हैं, उन स्थानोंके नाम नीचे लिखे जाते हैं:-

शाबाज़गिरि, जो पिशावरके क़रीब है; ख़ालसी, पश्चिमोत्तर देशमें; मेरट, विराट, प्रयाग, लोरिया, सहसराम, और गिरनारके सिवा और भी कई स्थान हैं.

राजा अशोकका समय सन्.ईसवी से पूर्व २६४ से २२३ वर्षतक माना गया है. यह राजा बड़ा नामवर और बौद्ध धर्मका प्रचारक था. इस ख़ानदानके बाद बाक्ट्रिया ख़ानदान के राजा हुए, उनका समय .ईसवी सन्से पहिले २५० से १२० वर्षतक दर्याफ़्त हुआ है, और उनका हाल एशियाटिक सोसाइटी वगैरहके जर्नलोंमें लिखा है. इन राजाओंको

मध्य एशियाके सिथियन क़ौमके राजाओंने जीतलिया, और ये भी बौद्ध मज़्हबके प्रचारक होगये थे. इनके नाम कनिष्क, हुष्क, यष्क, वगैरह पाये गये हैं. इनका राज्य कश्मीर वगैरह उत्तरी हिन्दुस्तानमें था. ईसवी सन्के पहिले व दूसरे शतकमें क्षत्रप नामके एक ख़ानदानका अमल सौराष्ट्रतक फैलगया था. इसके बाद गुप्त ख़ानदानका राज्य चमका, जो सूर्य वंशियोंमेंसे था. हमारे अनुमानसे ये राजा वही हैं, जो रामचन्द्रकी औलादमेंसे पश्चिमको आये थे, परन्तु इस ख़ानदानका पहिला राज्य हिन्दुस्तानके कई हिस्सोंमें था. इनका संवत् ईसवी सन् ३१९ से शुरू हुआ, जो गुप्त संवत् और वल्लभी संवत् कहा जाता है. नाम इन राजाओंके ये हैं, १- महाराज गुप्त, २- घटोत्कच, ३- चन्द्रगुप्त, ४- समुद्रगुप्त, ५- चन्द्रगुप्त दूसरा, ६-कुमारगुप्त, और ७- स्कन्दगुप्त. स्कन्दगुप्तका आख़री गुप्त संवत् १४९ पायागया है. इसके बाद बुधगुप्तके लेख गुप्त संवत् १६५ से १८० तकके मिले हैं, और संवत् १९१ के लेखमें भानुगुप्तका नाम है. इस ख़ानदानका सविस्तर हाल "कॉर्पस इन्स्क्रिप्शनं इंडिकेरं" ग्रन्थकी तीसरी जिल्दमें लिखा है. इनके पीछे वल्लभी ख़ानदानका हाल निश्चय हुआ है, जिसका हाल आगे लिखा जायेगा, क्योंकि मेवाड़का ख़ानदान इसी ख़ानदानसे निकला मानते हैं. इसके बाद हिन्दुस्तानमें जुदे जुदे ख़ानदानके जुदे जुदे राजा राज्य करते रहे, जो आपसमें कभी लड़ते और कभी मेलमिलाप करलेते थे, लेकिन् तमाम हिन्दुस्तानका एक महाराजाधिराज कोई न हुआ. इनमें काबुल और पंजाबके राजा, तथा कश्मीरके उत्पल वंशी राजा, कांगड़ाके महाराजा, अजमेरके चहुवान राजा, ग्वालियरके कछवाहा, मेवाड़के गुहिलोत, मालवा और आबूके परमार, गुजरातके चापोत्कट (चावड़ा), और चालुक्य (सोलंखी), क़न्नौजके राठौड़, मारवाड़के परिहार, बंगाल और बिहारके पाल और सेन वगैरह कई ख़ास ख़ास ख़ुदमुख़्तार राजा थे. ये राजा नर्मदा नदीके उत्तर तरफ़ राज्य करते थे, और दक्षिणमें अशोकके ज़मानेके बाद आंध्रभृत्य या शातवाहन वंशके राजा और उनके बाद चालुक्य, राष्ट्रकूट, फिर चालुक्य, कलचुरी, यादव और शिलारा वंशके राजा क्रम क्रमसे अपनी हुकूमत चलाते रहे, जिसका सविस्तर हाल दक्षिणकी प्राचीन तवारीख़में रामकृष्ण गोपाल भांडार-करने लिखा है. ये लोग अपने अपने राज्यमें स्वतंत्रताके साथ राज्य करते थे परन्तु कभी कभी कोई प्रबल राजा निर्बलको दबादेता या नष्ट भी करडालता था, जिसकी कोई हार पुकार सुनने वाला न था.

यह भारत तीन तरफ़ समुद्रसे घिरा हुआ है, परन्तु उस समय जलयात्राकी विद्या प्रबल न होनेके कारण जहाज़ किनारों किनारोंपर ही घूमते थे, जिससे इस देशको समुद्रकी

तरफ़ कोई भय नथा, और उत्तर तरफ़से हिमालयको उल्लंघन करके कोई नहीं आसक्ता था, बाहिरके शत्रुओंको केवल काबुल और कन्धारके रास्ते हिन्दुस्तानमें घुसनेके लिये सुगम थे.

इस देशमें पहिला हमलह यूनानके बादशाह अलेग्ज़ेंडर (सिकन्दर) का हुआ था, जिसका तवारीख़ी हाल मेगस्तनी, टोलोमी, नियार्कस, और एरियन वगैरह मुवर्रिख़ोंकी किताबोंके छपेहुए खुलासोंसे लिया गया है. सन् .ईसवी से ३३४ वर्ष और विक्रमी संवत्से २७७ वर्ष पहिले सिकन्दर अपने मुल्कसे ४५०० सवार और ३४५०० पियादे साथ लेकर देश विजय करनेके लिये निकला, और हिल्ज़पोंटके किनारेपर पहुंचा, वहांसे किश्ती के रास्ते पार होकर उस मुल्कके राजाओंको, जो एक लाख दस हज़ार फ़ौज लेकर मुक़ाबले को तय्यार थे, पराजय किया. इसीतरह अन्यदेशियोंको पराजय करता हुआ सारे एशिया कोचक (एशिया माइनर) का मालिक बनगया. जब वह आगे बढ़ा, तो ईरानका शाह दारा बड़ी भारी सेना लेकर उसे रोकनेको आया, लेकिन् उसे ज़बर्दस्त पाकर आधा राज्य देदेनेको तय्यार हुआ, परन्तु सिकन्दरने दाराकी यह दर्ख्वास्त क़बूल न करके आसीस नदीके पास उसको जीत लिया; इसके बाद मिस्रको फ़त्ह किया, और उसके बाद पूर्वी तरफ़ फिरकर मिसोपोटेमियाको जीता, और अरबिला स्थानमें ईरानके बादशाह दारासे फिर मुक़ाबलह हुआ और दारा भागते वक़् अपने एक सर्दारके हाथसे मारागया. सिकन्दरने ईरानका मालिक बननेके बाद फिर हिन्दुस्तान और अफ़ग़ानिस्तान लेनेका इरादह किया, और हिरात, काबुल, बुख़ारा, व समरक़न्दको फ़त्ह करता हुआ हिन्दुस्तानमें आया. उस समय झेलम नदीके किनारेपर राजा पोरससे लड़ाई हुई, और पोरसको भी जीतलिया, परन्तु उसका मुल्क वापस देदिया. फिर आगे बढ़कर गुजरातके मार्गसे चिनाब नदीके पार उतरकर लाहोरमें पहुंचा. उस वक़्के ग्रन्थकार स्ट्रेबो, व एरियन वगैरहने कलानूस, मंडनीस वगैरह विद्वानोंका हाल इस तरहपर लिखा है:-

मेगस्तनी लिखता है, कि हिन्दुस्तानी लोग आत्मघातको बुरा समझते हैं, लेकिन् कभी कभी शस्त्रसे मरने, अग्निमें जलने, और पहाड़परसे गिरनेसे आत्मघात करते भी हैं. वह कलानूसके लिये इस तरहपर लिखता है, कि वह लोभमें आकर नौकरकी तरह सिकन्दरके साथ चलागया, और कुछ अरसह बाद बीमार होनेपर मक़्दूनिया के लश्कर, सामने आगमें जलमरा, और अग्निके तापसे कुछ तक्लीफ़ ज़ाहिर नकी. मंडनीसके हालमें वह इस तरह लिखता है, कि सिकन्दरके दूत उसको बुलानेके लिये आये और कहा, कि अगर तुम सिकन्दरके पास आजाओगे, तो इन्आम मिलेगा, और न आओगे, तो सज़ा पाओगे; परन्तु उसने जानेसे इन्कार किया, और कहा, कि जिस आदमीकी तृष्णा कभी पूरी नहीं होती उससे मैं इन्आम लेना नहीं चाहता, और न मैं उससे

डरता हूं, अगर ज़िन्दह रहा तो हिन्दुस्तानमें मुझे खानेको मिलजायेगा और मरगया, तो इस मांसके शरीरसे मुक्त होकर इससे अच्छा जन्म पाऊंगा. सिकन्दरने यह सुनकर उसकी प्रशंसा की और उसको अपने पास न बुलाया, जिसपर लोगोंने उसकी तारीफ़ की.

मेगस्तनी हिन्दुस्तानके विषयमें लिखता है, कि हिन्दुस्तानके लोगोंमें निम्न लिखित ७ विभाग हैं:-

पहिले, फ़िलॉसफ़र (तत्ववेत्ता) जो दरजहमें सबसे अव्वल हैं, परन्तु संख्या में कम हैं. लोग इनके द्वारा यज्ञ या धर्म सम्बन्धी कार्य करते हैं, और राजा लोग नये सालके प्रारम्भमें सभा करके उनको बुलाते हैं, और वहां वे लोग अपने कियेहुए उत्तम कामोंको प्रगट करते हैं.

दूसरा वर्ग काश्तकारों याने उन लोगोंका है, जो ज़मीनको जोतते बोते हैं, और शहरमें नहीं रहते. इनका रक्षण लड़ने वाली कौमें करती हैं.

तीसरा वर्ग ग्वाल और शिकारियोंका है, जो चौपाये रखते और शिकार करते हैं, और बोये हुए बीजोंको खाने वाले जानवरोंको मारते हैं, जिसके .एवज़में उनको राजाकी तरफ़से नाज मिलता है.

चौथे वर्गमें वे लोग हैं जो व्यापार करते, बर्तन बनाते, और शारीरक मिहनत करते हैं. इनमेंसे कितनेएक लोग अपनी आमदका कुछ भाग राजाको देनेके अलावह मुक़र्रर कीहुई नौकरी भी करते हैं. शस्त्र और जहाज़ बनाने वालोंको राजाकी तरफ़से तनख्वाहें मिलती हैं. सेनापति सिपाहियोंको शस्त्र देता है, और जहाज़ी सेनापति मुसाफ़िरों और व्यापारकी चीज़ोंको एक जगहसे दूसरी जगह पहुंचानेमें जहाज़ किरायेपर देता है.

पांचवां वर्ग लड़नेवालोंका है. जब लड़ाई नहीं होती तब ये लोग अपना वक़्त नशे और सुस्तीमें गुज़ारते हैं. उनको कुल खर्च राजाकी तरफ़से मिलता है, जिससे वे हरवक़् लड़ाईपर जानेको तय्यार रहते हैं.

छठा वर्ग निगरानी रखने वालोंका है. ये लोग सब जगह निगरानी रखकर राजाको गुप्त रीतिसे ख़बर देते हैं, अर्थात् इनमेंसे कोई शहरकी और कोई फ़ौजकी निगरानी रखता है. सबसे लाइक़ और भरोसे वाला आदमी इन .उहदोंपर रक्खा जाता है.

सातवें वर्गमें राजाके सलाहकार या सभासद होते हैं, जो न्याय आदिके बड़े कामोंपर नियत रहते हैं.

इन फ़िर्क़ोंमेंसे कोई अपनी जातिके बाहिर शादी नहीं करसक्ते, और न अपना पेशह छोड़कर दूसरेका पेशह इख़्तियार करते, और न एकसे ज़ियादह काम करसक्ते हैं, परन्तु फ़िलॉसफ़रों (तत्ववेत्ताओं) के लिये यह पाबन्दी नहीं है, उनको सद्गुणोंके लिये इतनी आज़ादी है.

सिकन्दरका इरादह था, कि पंजाबसे निकलकर पूर्वी हिन्दुस्तानकी यात्रा करे, लेकिन् उसकी सेनाने, जो देशाटन और लड़ाईसे थकी हुई थी, उधर जाना स्वीकार न किया, इससे लाचार होकर उसको पीछा फिरना पड़ा; और उसने ठठ्ठा नगरमें आकर अपनी सेनाके तीन भाग किये, जिनमेंसे दो भाग अफ़ग़ानिस्तान और बिलोचिस्तानकी तरफ़ और एक भाग जहाज़ी सेनापति नियार्कसके द्वारा सिन्धु नदीके मार्गसे रवानह किया. सिकन्दर अपने देशमें चले जानेके बाद भी हिन्दुस्तानकी तरफ़ आनेका इरादह रखता था, परन्तु ज्वरकी बीमारीसे वह १३ वर्ष राज्य करके ३२ वर्षकी अवस्थामें परलोकको सिधार गया.

अब हम बीचका हाल अंधेरेमें छोड़कर मुसल्मानोंकी उन चढ़ाइयोंका हाल लिखते हैं, जो हिन्दुस्तानपर हुईं.

हिन्दुस्तानकी तरफ़ पहिली चढ़ाई दूसरे ख़लीफ़ा उमरने की थी, लेकिन् उसे कोई बड़ी फ़त्ह नसीब नहीं हुई, और उसका सेनापति मारागया. उसके बाद ख़लीफ़ा अलीने फिर फ़ौज भेजकर सिन्धके किनारेवाले मुल्कपर अपनी कुछ अमल्दारी जमाई, लेकिन् अलीके मारेजानेसे मुसल्मान लोग उसको छोड़कर चलेगये. फिर ख़लीफ़ा वलीदने हिज्री ८६ [वि० ७६२ = ई० ७०५] में क़ासिमके बेटे महमूदको फ़ौज देकर हिन्दुस्तानकी तरफ़ रवानह किया. उसने सिन्ध देशको जीतकर चित्तौड़की तरफ़ अपनी सेना बढ़ाई, लेकिन् चित्तौड़के राजा बापारावलसे शिकस्त पाकर भागना पड़ा (१). इसके बाद ख़लीफ़ा हारूंरशीदके बेटे मामूंरशीदने फिर चित्तौड़पर चढ़ाई की. इतिहास तिमिरनाशक (२) में लिखा है, कि मामूंने राजा खुमाणसे २४ लड़ाइयां लड़ीं, लेकिन् अख़ीरमें शिकस्त पाकर भागगया. इसके बाद ख़ुरासानके हाकिम नासिरुद्दीन सुबुक्तगीनने हिन्दुस्तानमें आकर पंजाबपर चढ़ाई की, और सिन्धके कई क़िले फ़त्ह करके वापस लौटगया. यह सुनकर लाहोरके राजा जयपालको बड़ा क्रोध आया और वह हिन्दुस्तानके कई राजाओंकी मदद लेकर ख़ुरासानपर चढ़ दौड़ा, लेकिन् ईश्वरकी कुद्रतसे उसे वहां पहुंचकर परास्त होना पड़ा, और सुबुक्तगीनको ख़िराज देना कुबूल करके पीछा लाहोरमें आया; लेकिन् सुबुक्तगीनके जो लोग नज़ानह लेनेके लिये आये, उनको क़ैद करलिया,

---

(१) इस हालमें साल संवतका फ़र्क़ मालूम होता है.

(२) टॉड राजस्थान वग़ैरह अंग्रेज़ी किताबोंमें भी ऐसा ही लिखा है.

और कुछ न भेजा, तब सुबुक्तगीनने फिर चढ़ाई की, और लमग़ानके पास राजा जयपालसे लड़ाई शुरू हुई. इस लड़ाईमें भी मुसल्मानोंकी फ़त्ह हुई. सुबुक्तगीन लड़कर वापस अपने मुल्कको लौटगया. हिज्री ३८७ [वि० १०५४ = ई० ९९७] में सुबुक्तगीन बल्ख़के ज़िलेमें मरगया. इसवक़ उसके बेटोंमेंसे बड़ा महमूद नशापुरकी तरफ़ था, इसलिये उससे छोटा इस्माईल बल्ख़में अपने बापकी गद्दीपर बैठा, और इस्माईलसे छोटा नस्रुद्दीन महमूदका मददगार बना. महमूदने अपनी इताअ़त कुबूल करानेके लिये ख़तके ज़रीएसे इस्माईलको बहुत समझाया, लेकिन् उसपर कुछ असर नहुआ. आख़र-कार महमूदने लड़ाई करके अपने भाईको क़ैद करलिया, जो जुजानके क़िलेमें मरगया, और आप ग़ज़नीका बादशाह बना. उन दिनों ख़िलाफ़त क़ादिरबिल्ला अ़ब्बासीका ज़मानह था, उसने भी इसको ज़बर्दस्त जानकर एक बड़ा भारी ख़िल्अ़त मए अल्क़ाब "अमीनुल्-मिल्लत यमीनुद्दौलह" के भेजदिया.

हिज्री ३९० के अख़ीर ज़िल्क़ाद [वि० १०५७ मार्गशीर्ष शुक्ल १ = ई० १००० ता० ३१ ऑक्टोबर] को महमूद बल्ख़से हिरात और वहांसे सीस्तान होता हुआ ग़ज़नीको आया. उसी ज़मानहमें उसने हिन्दुस्तानकी तरफ़ चढ़ाई करनेका इरादह किया और सिन्ध पारके ज़िलोंमें लूट खसोट करके पीछा लौटगया.

दूसरी दफ़ा वह हिज्री ३९१ शव्वाल [वि० १०५८ भाद्रपद = ई० १००१ सेप्टेम्बर] में १०००० सवार लेकर हिन्दुस्तानको चला और पिशावरमें आ पहुंचा. इधरसे लाहौरका राजा जयपाल भी १२००० सवार, ३०००० पैदल और ३०० हाथी लेकर मुक़ाबलेको तय्यार हुआ. हिज्री ३९२ ता० ८ मुहर्रम [वि० १०५८ मार्गशीर्ष शुक्ल ९ = ई० १००१ ता० २७ नोवेम्बर] सोमवारको दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबलह हुआ. बहादुरीके साथ ख़ूब लड़ाई होनेके बाद महमूदने फ़त्ह पाकर जयपालको मए उसके भाई बेटोंके क़ैद करलिया, बहुतसी हिन्दुस्तानी रिआ़याको लौंडी गुलाम बनाया और दूसरी लूटके सिवा कई जड़ाऊ माला राजाके कुटुम्बियोंसे मह-मूदके हाथ लगीं, जिनमेंसे एक मालाकी क़ीमत १८०००० दीनार (१) थी. और वहांसे चलकर क़िले भटिंडाको फ़त्ह किया. फिर सालियानह ख़िराज देते रहनेकी शर्तपर राजा जयपाल और उसके रिश्तेदारोंको छोड़कर आप ग़ज़नीको चलागया. राजा जयपाल इस शर्मिन्दगीसे अपने बेटे आनन्दपालको राज्य सौंपकर आप अग्निमें जलमरा.

तीसरी दफ़ा हिज्री ३९५ [वि० १०६२ = ई० १००५] में वह भटनेरपर

(१) यह सिक्का तोलमें ३२ रत्ती सोने का होता है.

चढ़ा, जहांका राजा विजयराज (१) था, वहां भी फ़त्ह हासिल की, जिससे विजयराज अपनेको ख़ंजर मारकर मरगया.

चौथी दफ़ा उसने मुल्तानके मुसल्मान हाकिम अबुल्फ़त्हपर चढ़ाई की, और रास्तेमें आनन्दपालको हटानेके बाद अबुल्फ़त्हको भगाकर उसका मुल्क छीनलिया.

पांचवीं दफ़ा महमूदने नवासाशाह (२) पर चढ़ाई की, और फ़त्ह पाई.

छठी दफ़ा क़िले भीमनगरपर चढ़ दौड़ा, और आनन्दपालके बेटे ब्रह्मपालको फ़त्ह करके क़िला लेलिया, यहांपर उसको बेशुमार ख़ज़ानह हाथ लगा.

सातवीं दफ़ा उसने हिन्दके राजा नारायणपर फ़त्ह पाकर उसे अपना मातहत बनाया.

आठवीं दफ़ा हिज्री ४०४ [वि० १०७० = ई० १०१३] में नारदीनपर चढ़ाई की, लेकिन् बर्फ़की शिद्दतसे पीछा ग़ज़नीको लौटना पड़ा, और बर्फ़ कम होनेपर फिर हमलह करके उस मुल्कको लेलिया; लेकिन् एक बात तारीख़ यमीनीमें तअ़ज्जुबकी यह लिखी है, कि वहांके मन्दिरोंमेंसे एक पत्थर खुदा हुआ मिला, जिसका संवत् देखनेसे वह ४०००० वर्ष पहिलेका साबित हुआ.

नवीं दफ़ा महमूदने थानेसरपर हमलह किया, और वहांपर भी फ़त्ह पाई.

दसवीं दफ़ा हिज्री ४०९ [वि० १०७५ = ई० १०१८] में उसने क़न्नौजपर चढ़ाई की, और रास्तेमें कई राजा लोगोंके क़िले फ़त्ह करता हुआ मथुरामें पहुंचा, वहांके कई मन्दिरोंको नष्ट करके बेशुमार ख़ज़ानह लूटा, और वहांसे क़न्नौजके राजा राजपालपर फ़त्ह पाकर कई दूसरे क़िलोंको जीतता हुआ ग़ज़नीको लौटगया. इस सफ़रमें यमीनी वग़ैरह तवारीख़ वालोंने बड़े बड़े मारिके और बेशुमार लूटके मालका हाल लिखा है.

ग्यारहवीं दफ़ा उसने राजा बरोचारपर हमलह किया, और फ़त्ह पाई. यह मारिका हिज्री ४१० [वि० १०७६ = ई० १०१९] में हुआ था.

यहांतकका हाल हमने तारीख़ यमीनीसे दर्ज किया है, जो महमूदकी ज़िन्दगीमें बनी थी. अब आगे तबक़ाति नासिरी व तबक़ाति अक्बरी वग़ैरहसे दर्ज करते हैं.

---

(१) तारीख़ यमीनीमें इस शहरका नाम भाटिया और राजाका नाम बछरा व बजरा लिखा है, और तारीख़ फ़िरिश्तह वग़ैरह पिछली किताबोंमें शहर भटनेर और राजा विजयराव लिखा है, और जयसलमेरकी तवारीख़में विजयराजके बेटे देवराजका क़िले देवरावलको अपनी राजधानी बनाना लिखा है, पहिली राजधानी लोद्रवा था, और भटनेरमें भी रहते होंगे.

(२) मालूम होता है, कि यह कोई हिन्दुस्तानी राजा था, जिसको मुसल्मान बनाकर महमूदने इस मुल्कका हाकिम बनाया, फिर यह बदलगया, तब उसपर चढ़ाई की होगी.

राजा बरोचारको शिकस्त देनेके बाद महमूदने राजा नंदापर हमलह किया, और उसपर फ़त्ह पाई.

बारहवीं दफ़ा वह कश्मीरकी तरफ़ चला, लेकिन् लौकूटका क़िला मज्बूत होनेके सबब उसे फ़त्ह न करसका, तब दूसरे मुल्कोंको लूटता हुआ वापस ग़ज़नीको चलागया.

तेरहवीं दफ़ा वह हिज्री ४१३ [वि० १०७९ = .ई० १०२२] में क़िले ग्वालियरको फ़त्ह करके कालिंजरके राजा नंदासे नज़ानह लेकर वापस चलागया.

चौदहवीं दफ़ा हिज्री ४१५ [वि० १०८१ = .ई० १०२४] में उसने गुजरातकी तरफ़ चढ़ाई की, और सोमनाथके बड़े प्रसिद्ध मन्दिरको आघेरा. इसवक़्त कई राजाओंने मुक़ाबलह किया, लेकिन् उसने सबको शिकस्त देकर मन्दिरको लूटलिया, और महादेव की मूर्तिको तोड़कर उसका एक टुकड़ा ग़ज़नीको लेगया, जिसे मस्जिदमें लगवाया.

पन्द्रहवीं दफ़ा हिज्री ४१७ [वि० १०८३ = .ई० १०२६] में उसने मुल्तान के जाटोंपर चढ़ाई की, जिन्होंने सोमनाथकी चढ़ाईसे लौटते वक़्त रास्तेमें इसकी फ़ौजको तक्लीफ़ दी थी, और इन लोगोंको शिकस्त देकर वह ग़ज़नीको चलागया.

महमूदका जन्म हिज्री ३७१ ता० १० मुहर्रम रहस्पतिवार [वि० १०३८ श्रावण शुक्ल ११ = .ई० ९८१ ता० १५ जुलाई] को हुआ था, और तपेदिक़की बीमारीसे वह हिज्री ४२१ ता० २३ रबीउस्सानी [वि० १०८७ ज्येष्ठ कृष्ण ९ = .ई० १०३० ता० २८ एप्रिल] रहस्पतिवारको मरगया.

हमने बहुतेरा चाहा, कि महमूदका हाल हिन्दुस्तानी पुस्तकोंसे लिखाजावे, लेकिन् इसका ज़िक्र कहीं नहीं मिला, क्योंकि हिन्दुस्तानमें पहिले तवारीख़ लिखनेका क़ाइदह नहीं था, और फ़ार्सी तवारीख़ोंमें इसका हाल मुख़्तलिफ़ तौरपर लिखा है, इसलिये तारीख़ यमीनी, और तबक़ाति नासिरी वग़ैरह पुरानी किताबोंसे चुनकर यह हाल दर्ज कियागया है. अगर्चि ये किताबें भी रिआयत और तअ़स्सुबसे ख़ाली नहीं हैं, क्योंकि महमूदके हिन्दुस्तानमें इतने हमले हुए, परन्तु उनमेंसे किसीमें भी उसकी शिकस्त नहीं लिखी, जो एक असम्भव बात है; मगर दूसरा सहारा न मिलनेके सबब जहांसे जैसा हाल मिला वैसा ही लिखदिया गया.

इसके बाद सुल्तान नासिरुद्दीन मसऊदने अपने भाई जलालुद्दौलह मुहम्मदको गिरिफ़्तार करके अंधा बनाया, और आप गद्दीपर बैठगया. इसने भी हिन्दुस्तानपर कई हमले किये, जिनका सिल्सिलेवार हाल तारीख़ मसऊदीमें लिखा है. आख़रकार हिज्री ४३२ ता० ११ जमादियुल्अव्वल [वि० १०९७ माघ शुक्ल १२ = .ई० १०४१ ता० १६ जैन्युअरी] को वह अपने बाग़ी सर्दारोंके हाथ क़ैद होकर मारागया, और उसका

अंधा भाई जलालुद्दौलह मुहम्मद तख़्तपर बिठाया गया, लेकिन् मसऊदके बेटे मौदूदने जलालुद्दौलहको मए बालबच्चोंके मारडाला, और ख़ुद भी हिज्री ४४१ [वि० ११०६ = .ई० १०४९] में फ़ौत होगया, तब तुर्कोंने मसऊदके बेटे अली और मौदूदके बेटे मुहम्मद दोनों चचा भतीजोंको गद्दीपर बिठादिया, लेकिन् दो महीनेके बाद इन दोनोंको क़िलेमें क़ैद करके महमूदके बेटे अब्दुर्रशीदको बादशाह बनाया, परन्तु अढ़ाई वर्षके बाद उसके बापके गुलाम तुग़रलने बाग़ी होकर उसको मारडाला, और ४० दिन बाद तुग़रलको भी नोश्तगीन नामी तुर्कने मारडाला, तब मसऊदके बेटे फ़र्रुख़ज़ादको सर्दारोंने तख़्तपर बिठाया, जो हिज्री ४५१ [वि० १११६ = .ई० १०५९] में मरगया, और उसका भाई इब्राहीम गद्दीपर बिठाया गया. हिज्री ४९२ [वि० ११५६ = .ई० १०९९] में इब्राहीमके मरनेपर उसका बेटा अलाउद्दीन मसऊद तख़्त नशीन हुआ, और हिज्री ५०९ [वि० ११७२ = .ई० १११५] में जब वह फ़ौत होगया, तो उसके बाद उसका बेटा मलिक अर्सलाम बादशाह हुआ, जो दो वर्षतक सल्तनत करके हिन्दुस्तानमें भाग आया, और हिज्री ५११ [वि० ११७४ = .ई० १११७] में मरा. मलिक अर्सलामके बाद उसका भाई बहरामशाह गद्दीपर बैठा, जिसने अलाउद्दीन ग़ौरीसे तीन बार शिकस्त पाई, और अख़ीरमें जब ग़ज़नीको ग़ौरियोंने लेलिया, तो यह हिन्दुस्तानको भाग आया, और ग़ौरियोंके निकलजाने बाद वापस ग़ज़नीको जाकर हिज्री ५४७ [वि० १२०९ = .ई० ११५२] में मरगया. फिर इसका बेटा खुस्रौशाह गद्दीपर बैठा; ग़ौरियोंने उसकी सल्तनत बिगाड़ रक्खी थी, और उसके कई मुल्क लेलिये थे, इस सबबसे यह अपने मुल्कका पूरा बन्दोबस्त न करसका, और खुरासानके ग़ज़ोंने चढ़ाई करके ग़ज़नीको छीनलिया, तब यह हिन्दुस्तानमें चलाआया. बारह वर्ष पीछे ग़यासुद्दीन मुहम्मद शाम ग़ौरीने ग़ज़ोंसे ग़ज़नीका मुल्क छीनलिया, और अपने भाई सुल्तान मुइज़्ज़ुद्दीन मुहम्मद शाम ग़ौरीको, जो शहाबुद्दीनके नामसे भी प्रसिद्ध था, तख़्तपर बिठाया.

खुस्रौशाह हिज्री ५५५ [वि० १२१७ = .ई० ११६०] में लाहौर मक़ामपर मरा, और उसका बेटा खुस्रौ मलिक लाहौरमें उसकी जगह गद्दीपर बैठा, लेकिन् यह बहुत अय्याश था, इसलिये शहाबुद्दीन ग़ौरीने इसे ग़रजिस्तानके क़िले लरवानमें क़ैद करके मए बेटेके हिज्री ५९८ [वि० १२५९ = .ई० १२०२] में क़त्ल करडाला, और उसीके साथ ग़ज़नवी ख़ानदानका ख़ातिमह हुआ.

ग़यासुद्दीन और शहाबुद्दीन (मुइज़्ज़ुद्दीन) दोनों बहाउद्दीन मुहम्मदशाहके बेटे ग़ौरके .इलाक़ह फ़ीरोज़कोहके मालिक थे, हिज्री ५६९ [वि० १२३० = .ई० ११७३] में ग़यासुद्दीनने ग़ज़ोंको निकालकर ग़ज़नीका मुल्क फ़त्ह करलिया, और अपने छोटे

भाई शहाबुद्दीनको तख़्तपर बिठाकर आप फ़ीरोज़कोहको लौटगया. शहाबुद्दीनने पहिले ग़ज़्नीके आसपास मुल्कोंका बन्दोबस्त करके हिज्री ५७० [वि० १२३१ = .ई० ११७४] में कुर्देज़का मुल्क फ़त्ह किया. हिज्री ५७१ [वि० १२३२ = .ई० ११७५] में उसने मुल्तानपर चढ़ाई करके करामितहसे मुल्क छुड़ालिया और इसी वर्षमें सनक़रान वालोंने सर्कशी की, जिनके साथ हिज्री ५७२ [वि० १२३३ = .ई० ११७६] तक लड़कर उनपर फ़त्ह पाई. फिर हिज्री ५७४ [वि० १२३५ = .ई० ११७८] में मुल्तानको फ़त्ह करता हुआ नेहरवालेतक पहुंचा. वहांके राजा भीमदेव सोलंखीसे मुक़ाबलह हुआ, जिसमें शहाबुद्दीनको शिकस्त खाकर भागना पड़ा. हिज्री ५७५ [वि० १२३६ = .ई० ११७९] में उसने फिर चढ़ाई करके पिशावरको फ़त्ह किया; हिज्री ५८० [वि० १२४१ = .ई० ११८४] में देवलकी तरफ़ चढ़ाई की, जिसमें समुद्रके किनारेका मुल्क अपने क़बज़हमें लाकर इसी सन्में सियालकोटका क़िला बनवाया; हिज्री ५८२ [वि० १२४३ = .ई० ११८६] में खुस्रोमलिकको गिरिफ़्तार करके लाहौरपर क़बज़ह किया, और अली किर्माख़को वहांका हाकिम बनाया. फिर क़िला सरहिन्द फ़त्ह करके क़ाज़ी तोलकको सौंपा. इसी अरसहमें राजा कोला पिथोरा (पृथ्वीराज चहुवान) बहुतसे हिन्दुस्तानी राजाओंकी भीड़भाड़ लेकर आपहुंचा. शहाबुद्दीन ग़ोरीने भी ग़ज़्नीकी तरफ़ लौटना मौक़ूफ़ रखकर मुक़ाबलह किया; तरायनके पास लड़ाई शुरू हुई. शहाबुद्दीन बर्छा लेकर चला, और दिल्लीके राजा गोविन्दरायपर, जो हाथीपर सवार था, चलाया, जिसकी चोटसे राजाके दो दांत गिरपड़े, और उसने भी सुल्तानपर बर्छेका वार किया, जिससे बादशाहके बाज़ूपर सख़्त चोट आई. वह घोड़ेसे गिरनेको था, कि इतनेमें एक ख़िल्जी सिपाहीने बादशाहके घोड़ेपर सवार होकर बादशाहको संभाललिया, और घोड़ेको मोड़कर लेनिकला. इस लड़ाईमें शहाबुद्दीनको शिकस्त और राजा पृथ्वीराज चहुवानको फ़त्ह नसीब हुई. १३ महीनेतक क़ाज़ी तोलक सरहिन्दके क़िलेमें राजा पृथ्वीराजकी फ़ौजसे लड़तारहा, लेकिन् अख़ीरमें राजाने क़िलेको फ़त्ह करलिया. इसी अरसहमें १२०००० जंगी सवार लेकर शहाबुद्दीन तरायन (तलावड़ी) के क़रीब आपहुंचा, जहां तर्फ़ैनमें बड़ी भारी लड़ाई हुई, और दस दस हज़ार सवारोंके गिरोह बांधकर चारों तरफ़से लड़ने लगे, जिसमें राजा पृथ्वीराज सरस्वतीके किनारेपर मारागया, और दिल्लीका राजा गोविन्दराय भी काम आया. हमने यह कुल हाल तबक़ाति नासिरीसे लिया है, जो इस लड़ाईके ७० वर्ष पीछे बनाई गई थी, और जिसका बनाने वाला लिखता है, कि जो लोग लड़ाईमें शामिल थे उनके ज़बानी हालात सुनकर हमने यह लिखा है. पृथ्वीराजकी राजधानी अजमेर, सवालक,

हांसी, सरस्वती वगैरहको शहाबुद्दीनने फ़त्ह करलिया. यह लड़ाई हिज्री ५८८ [वि० १२४९ = ई० ११९२] में हुई थी. इसके बाद सुल्तान शहाबुद्दीन क़िले कुहरामपर अपने सर्दार क़ुतुबुद्दीन ऐबक (१) को मुक़र्रर करके आप ग़ज़नीको लौटगया, और क़ुतुबुद्दीनने दिल्ली, कोयल, व मेरट, वग़ैरह मक़ामात फ़त्ह करलिये. सुल्तान शहाबुद्दीन हिज्री ५९० [वि० १२५१ = ई० ११९४] में फिर हिन्दुस्तानकी तरफ़ चला, जहां उसने बनारस, चन्दवार और क़न्नौजको फ़त्ह करके राजा जयचन्द राठौड़को शिकस्त दी, और ३०० हाथी और बहुतसा माल लेकर ग़ज़नीको लौटगया. आख़रकार हिज्री ६०२ ता० १ शश्र्बान [वि० १२६३ चैत्र शुक्ल २ = ई० १२०६ ता० १३ मार्च] को शहाबुद्दीन ग़ज़नीके इलाक़ह दमयकमें खक्खरोंके हाथसे मारागया. इसके बाद क़ुतुबुद्दीन ऐबक, जो शहाबुद्दीन ग़ौरीका ग़ुलाम था, हिन्दुस्तानका पहिला मुसल्मान बादशाह बना. शहाबुद्दीनके गुज़रजाने बाद ग़यासुद्दीनके बेटे ग़यासुद्दीन महमूदने फ़ीरोज़कोहसे क़ुतुबुद्दीन ऐबकके लिये बादशाहतका लवाज़िमह और सुल्तानका ख़िताब भेजदिया, और हिज्री ६०२ ता० १८ ज़िल्क़ाद [वि० १२६३ श्रावण कृष्ण ५ = ई० १२०६ ता० २७ जून] को वह लाहौरमें तरूतपर बैठकर ४ साल बादशाहत करनेके बाद हिज्री ६०७ [वि० १२६७ = ई० १२१०] में गेंद खेलते वक्त घोड़ेसे गिरकर मरगया.

क़ुतुबुद्दीनके गुज़रजानेपर अमीरों और सर्दारोंने उसके बेटे आरामशाहको लाहौर में तरूतपर बिठाया, लेकिन् वह एक साल भी सल्तनत न करने पाया था, कि उसके अमीर अली इस्माईलने कई अमीरोंको मिलाकर क़ुतबुद्दीनके दामाद शम्सुद्दीन अल्तिमशको बदायूंसे बुलाकर दिल्लीमें तरूतपर बिठादिया, और आरामशाह शिकस्त खाकर भाग गया. अल्तिमशने हिज्री ६०७ [वि० १२६७ = ई० १२१०] में दिल्लीके तरूतपर बैठकर "सुल्तान शम्सुद्दीन" अपना लक़ब रक्खा. इसके वक्तमें ताजुद्दीन यल्दोज़ (२) लाहौरमें आकर क़ाबिज़ होगया. शम्सुद्दीनने हिज्री ६१२ [वि० १२७२ = ई० १२१५] में उसको शिकस्त देकर क़ैद करलिया, और बदायूंके क़िलेमें भेजदिया. हिज्री ६२२ [वि० १२८२ = ई० १२२५] में वह लखनौती और बिहारकी तरफ़ लश्कर लेगया. वहां सुल्तान ग़यास ख़िल्जी मुरूतार बन बैठा था, उसको शिकस्त देकर वह मुल्क अपने बेटे नासिरुद्दीनके सुपुर्द किया, और हिज्री ६२३ [वि० १२८३ = ई० १२२६] में रणथम्भोर, और हिज्री ६२४ [वि० १२८४ = ई० १२२७] में क़िला मांडू फ़त्ह करके दिल्लीको

---

(१) इसकी एक हाथकी छोटी अंगुली टूटी हुई थी, और ऐसे आदमीको लोग ऐबक बोलते हैं, इससे इसका लक़ब ऐबक हुआ.

(२) यह क़ुतुबुद्दीनके ग़ुलामोंमेंसे अव्वल था और ग़ज़नीके तरूतपर भी बैठगया था.

लौट आया, और हिज्री ६२७ [वि० १२८७ = ई० १२३०] में इसका बड़ा बेटा नासिरुद्दीन मरगया, तब उसने अपने छोटे बेटेका नाम नासिरुद्दीन रक्खा, जिसके बादशाह होने बाद तबक़ाति नासिरी नामी किताब बनी है, और हिज्री ६२९ [वि० १२८९ = ई० १२३२] में ग्वालियरपर एक वर्षतक घेरा डालकर हिज्री ६३० [वि० १२९० = ई० १२३३] में उसे फ़तह किया. हिज्री ६३१ [वि० १२९१ = ई० १२३४] में मालवेपर चढ़ाई करके क़िला भेल्सा और शहर उज्जैनपर क़बज़ह किया, और महाकालके मन्दिरको तोड़ा, जिसके तय्यार होनेमें ३०० वर्ष लगे थे. आख़रकार हिज्री ६३३ ता० २० शअ्बान [वि० १२९३ ज्येष्ठ कृष्ण ६ = ई० १२३६ ता० २९ एप्रिल] को यह बादशाह फ़ौत होगया. इसी सालमें उसका बेटा रुक्नुद्दीन फ़ीरोज़शाह तख़्तपर बैठा, लेकिन् वह अय्याश, ग़ाफ़िल और बदचलन था, इसलिये ६ महीने ही न गुज़रे थे, कि जब वह पंजाबकी तरफ़ गया, तो पीछेसे सर्दारोंने उसकी बहिन रज़िया बेगमको तख़्त पर बिठादिया. रुक्नुद्दीन लौट आया, और रज़िया बेगमकी फ़ौजसे केतूखेड़ीके पास लड़ाई हुई. वह शिकस्त खाकर अपनी बहिनका क़ैदी बना, और उसी हालतमें मरगया. यह बेगम हिज्री ६३५ [वि० १२९४ = ई० १२३७] में तख़्तपर बैठी. यह बहुत होश्यार, अक्लमन्द, और नेकचलन थी. इसके बाप (शम्सुद्दीन अल्तिमश) ने भी अपने बाद इसी लड़कीको तख़्तपर बिठानेकी वसिय्यत की थी. इसने नये आईन व क़ानून बनाकर इन्साफ़से काम लिया, विरोधियोंको सज़ा दी, और रणथम्भोरके क़िलेमें जो मुसल्मान हिन्दू राजाकी क़ैदमें थे उनको छुड़ाया, लेकिन् क़िला राजपूतोंके क़बज़हसे न निकला. यह औरत मर्दानह लिबास पहिनकर आम लोगोंके सामने तख़्तपर बैठती थी. हिज्री ६३७ [वि० १२९६ = ई० १२३९] में इसने क़िले सरहिन्दपर चढ़ाई की, उसवक़्त तुर्क अमीरोंने रास्तेमें बग़ावत करके उसे क़ैद करलिया, और सुल्तान शम्सुद्दीनके बेटे मुइज़ुद्दीन बहरामशाहको बादशाह बनाकर दिल्लीके तख़्तपर बिठादिया. इस बेगमने दो दफ़ा दिल्लीपर चढ़ाई की, लेकिन् दोनों बार शिकस्त पाई. मुइज़ुद्दीन बहरामशाह हिज्री ६३७ ता० २८ रमज़ान [वि० १२९७ द्वितीय वैशाख कृष्ण १४ = ई० १२४० ता० २३ एप्रिल] को दिल्लीमें तख़्तपर बैठा (१), जिसको अख़ीरमें उसीके वज़ीर निज़ामुल्मुल्कने अमीरोंको मिलाकर हिज्री ६३९ ता० ६ ज़िल्क़ाद [वि० १२९९ ज्येष्ठ शुक्ल ७ = ई० १२४२ ता० ७ मई] के दिन क़ैद करके मारडाला, और सुल्तान शम्सुद्दीनके बेटे पोते जो क़ैद थे, उनको छोड़कर उनमेंसे सुल्तान रुक्नुद्दीनके बेटे सुल्तान अलाउद्दीन

---

(१) इसके वक़्तमें हिज्री ६३९ [वि० १२९९ = ई० १२४२] में चंगेज़ख़ानी मुग़लोंने लाहौरमें आकर लूटमार मचाई.

मसऊदशाहको तख़्तपर बिठाया (१), जिसको अख़ीरमें उसीके सर्दारोंने क़ैद करके शम्सुद्दीनके बेटे नासिरुद्दीन महमूदको हिज्री ६४४ [वि० १३०३ = ई० १२४६] में उसकी जगह तख़्तपर बिठादिया, और अलाउद्दीन क़ैदकी हालतमें मरगया. इसने मलिक ग़यासुद्दीन बल्बनको अपना वज़ीर बनाया, जो इसके बापका दामाद और गुलाम था. इसने हिज्री ६४६ [वि० १३०५ = ई० १२४८] में रणथम्भोरपर चढ़ाई की, और वहांके राजपूतोंको धमकाकर पीछा चला आया. हिज्री ६४९ [वि० १३०८ = ई० १२५१] में ग्वालियर, चंदेरी, और मालवाकी तरफ़ उसने चढ़ाई की और उधर राजपूतोंको शिकस्त देकर क़िला नरवर लेता हुआ पीछा दिल्लीको आगया. इस बादशाहकी तारीफ़ तवारीख़ोंमें बहुत कुछ लिखी है. यह कुरआन लिखकर उसीकी आमदनीसे अपना गुज़ारा करता था, और एक ही बीबी रखता था, जो ख़ुद अपने हाथसे उसे खाना पकाकर खिलाती थी. आख़िरकार यह बादशाह हिज्री ६६४ ता० ११ जमादियुल्अव्वल [वि० १३२२ फाल्गुन शुक्ल १२ = ई० १२६६ ता० १९ फ़ेब्रुअरी] को बीमारीसे मरगया. नासिरुद्दीनके कोई औलाद न थी, इसलिये इसके वज़ीर ग़यासुद्दीन बल्बनको सर्दारोंने मिलकर तख़्तपर बिठाया. यह शख़्स नेक आदत और अच्छा इन्तिज़ाम करने वाला था. इस के दो बेटे थे, बड़ा महमूद सुल्तान, जो चंगेज़ख़ानी मुग़लोंके हमलोंमें लाहौरके पास हिज्री ६८३ ता० ३ ज़िलहिज [वि० १३४१ फाल्गुन शुक्ल ४ = ई० १२८५ ता० १० फ़ेब्रुअरी] को मारागया, और दूसरा बग़राख़ां, जो लखनौतीका हाकिम बना. जब ग़यासुद्दीनकी उम्र ८० बरससे ज़ियादह होगई तो उसने ज़ईफ़ीकी हालतमें अपने बड़े बेटेका बहुत रंज किया और बग़राख़ांको बुलाया, लेकिन् वह अपने बापको बीमार छोड़कर पीछा लखनौतीकी तरफ़ चला गया. पीछेसे हिज्री ६८५ [वि० १३४३ = ई० १२८६] में बादशाह मरगया, तब उसके सर्दारोंने बग़राख़ांके बेटे कैकुबादको तख़्तपर बिठाया, जो उसवक़ १८ वर्षका था, और उसका नाम "मुइज़्ज़ुद्दीन कैकुबाद" रक्खा. यह लड़कपनकी उम्रके सबब बड़ा बदचलन होगया. इसने केलूखेड़ीमें एक बड़ा बाग़ और महल बनाया, और बहुतसी रंडियां और गवय्ये रक्खे. इसने महमूद सुल्तानके बेटे कैख़ुस्रोको भी मरवाडाला. आख़िरकार तीन वर्ष और कई महीने सल्तनत करके लक़वा (फ़ालिज) की बीमारीमें गिरिफ़्तार हुआ; उसी हालतमें उसका सर्दार जलालुद्दीन ख़िल्जी हिज्री ६८८

(१) इसके वक़में हिज्री ६४२ [वि० १३०१ = ई० १२४४] में चंगेज़ख़ानी मुग़ल लखनौती तक आये थे, लेकिन् इसके लश्करसे शिकस्त खाकर चले गये. मालूम होता है, कि वे लोग तिब्बतकी तरफ़से आये होंगे. दूसरी दफ़ा फिर मुग़लोंने उछेलेकी तरफ़ आकर उसका मुहासरह किया, और बादशाहने ख़ुद जाकर उन्हें शिकस्त दी.

[वि० १३४६ = .ई० १२८९] में (१) उसको मरवाकर आप तख्तपर बैठगया. यहांसे गुलामोंकी बादशाहतका खातिमह हुआ और कुछ अरसहतक खिल्जियोंका इक़बाल चमका. जलालुद्दीनको भी उसके भतीजे और दामाद अलाउद्दीन खिल्जीने हिज्री ६९५ ता० १७ रमज़ान [वि० १३५३ भाद्रपद कृष्ण ४ = .ई० १२९६ ता० २० जुलाई] को दग़ासे मारडाला, और अलाउद्दीन आप तख्तपर बैठगया. उसका पूरा लक़ब "सिकन्दर सानी सुल्तान आज़म अलाउद्दीन मुहम्मदशाह खिल्जी" हुआ. पहिले इसने हिज्री ६९७ [वि० १३५५ = .ई० १२९८] में गुजरातको फ़त्ह किया और सोमनाथकी मूर्त्ति जो महमूदके बाद नई स्थापन कीगई थी, उसको दिल्लीमें लाकर ज़मीनमें गड़वादिया. इसने हिज्री ६९९ [वि० १३५७ = .ई० १३००] में रणथम्भोरके राजा हमीरदेव चहुवानपर चढ़ाई की, और बहाना यह था, कि मीरमुहम्मदशाह वगैरह लोग जालौरसे भागकर रणथम्भोरमें हमीरदेवके पास आ रहे हैं, जो बादशाहके विरोधी थे. फ़िरिश्तह लिखता है, कि बाज़ लोगोंने एक वर्षमें और बाज़ने तीन वर्षके मुहासरेमें इस क़िलेका फ़त्ह होना बयान किया है. इस लड़ाईकी बाबत ऐसा मश्हूर है, कि जब अलाउद्दीनने क़िलेका मुहासरह किया उस समय राजपूतोंने क़िलेके भीतरसे निकल निकलकर कई हमले किये; और आख़रको हमीरदेवने यह सोचा, कि अब ऐसा हमलह कियाजावे, कि जिसमें या तो मुसल्मानोंपर फ़त्ह हासिल हो या हम लोग मर मिटें. यह विचार दृढ़ करके क़िलेके भीतर बारूद बिछाकर उसके ऊपर एक लम्बा चौड़ा फ़र्श बिछादिया, जिसपर क़िलेकी कुल औरतें बिठादी गईं और अपनी तरफ़ वाले लोगोंको समझादिया, कि अगर अपनी फ़त्ह हुई, तो पचरंगी निशानकी झंडियां आगे होंगी और मुसल्मानोंकी हुई तो नीली झंडियां आगेको दिखाई देंगी; यदि नीली झंडियां आगेको दिखाई देवें तो बारूदमें आग डाल देना. ईश्वरकी कुद्रतसे इस बड़े भारी हमलहमें हमीरदेवकी फ़त्ह हुई और राजपूत लोग पीछे क़िलेकी तरफ़ लौटे, उसवक्त ग़लतीसे मुसल्मानोंसे छीनी हुई नीली झंडियां आगे करदी गईं, जिनको देखकर क़िलेके लोगोंने बारूदमें आग डालदी. जिससे क़िलेकी कुल औरतें जल मरीं. हमीरदेवने यह देखकर अपना जीना भी बे फ़ायदह समझा, और दोबारह अलाउद्दीनकी फ़ौजपर टूट पड़ा. उसवक्त किसी कविने एक दोहा कहा था, जिसके दो मिस्रे इस तरहपर मश्हूर हैं— "तरियां तैल हमीर हट चढ़ै न बीजी वार". मुसल्मानोंने

---

(१) ज़ियाबरनीकी फ़ीरोज़शाही किताबके पृष्ठ १७५ के नोटमें अमीर खुस्रोकी किताब मस्नवी मिफ्ताहुल् फ़ुतूहका हवाला देकर इसका सन् हिज्री ६८९ ता० २ जमादियुस्सानी लिखा है.

भी बड़ी मज़्बूती और बहादुरीके साथ हमीरदेवका मुक़ाबलह किया, और अख़ीरमें हमीरदेवके मारे जानेपर अलाउद्दीनको फ़त्ह नसीब हुई.

तारीख़ फ़िरिश्तहमें लिखा है, कि जब मीर मुहम्मदशाह जालौरी ज़ख़्मी होनेपर अलाउद्दीनके पास लायागया, तो बादशाहने उसे पूछा, कि अगर इलाज मुआ़लजा करके तुझको अच्छा करें, तो तू हमारे साथ क्या सुलूक करे ? उसने जवाब दिया, कि अगर मैं ज़िन्दह रहूं, तो तुझे मारकर हमीरदेवके बेटेको गद्दीपर बिठाऊं. बादशाहने इस कलामसे गुस्सेमें आकर उसे हाथीके पैरसे मरवाडाला. रणथम्भोरको फ़त्ह करके अलाउद्दीन दिल्लीको चलाआया.

हिज्री ७०३ मुहर्रम [वि० १३६० भाद्रपद = .ई० १३०३ ऑगस्ट] में उसने क़िले चित्तौड़पर चढ़ाई की, जिसमें वहांके रावल रत्नसिंहने उसका ख़ूब मुक़ाबलह किया. लड़ाईसे यह क़िला बादशाहके हाथ न आया, लेकिन् सामानकी कमीके सबब जब राजपूत लोग दर्वाज़ह खोलकर बहादुरीके साथ लड़मरे, और हज़ारहा स्त्रियां आगमें जलमरीं उस समय ख़ाली क़िला अलाउद्दीनके क़बज़हमें आया. इस लड़ाईका मुफ़स्सल हाल मौक़ेपर लिखा जायेगा.

हिज्री ७०४ [वि० १३६२ = .ई० १३०५] में अलाउद्दीनने अपने सेनापति ऐनुल्मुल्क मुल्तानीको बड़ी भारी फ़ौजके साथ मालवेकी तरफ़ भेजा, और उसने वहां जाकर उज्जैन, चन्देरी, मांडू, धारा, और जालौर वग़ैरहको फ़त्ह किया. इस बादशाहने अपने अह्दमें हिन्दुओंके हज़ारों मन्दिरोंको तोड़ने और लाखों आदमियोंको क़त्ल करनेके अलावह ख़ज़ानह भी बहुतसा एकट्ठा किया, और हिज्री ७१६ ता० ६ शव्वाल [वि० १३७३ पौष शुक्ल ७ = .ई० १३१६ ता० २१ डिसेम्बर] को जलंधरकी बीमारीसे मरगया.

अलाउद्दीनके बाद उसके नौकर मलिक नायक ख़ोजाने, जो अलाउद्दीनके सामने ही कुल कामका मुख़्तार बनगया था, और जिसने बादशाहके बड़े बेटे ख़िज़रख़ांको पहिले ही क़ैद करके ग्वालियरके क़िलेमें भेजदिया था, इसवक़ उसको अंधा बनाकर अलाउद्दीनके ७ वर्षकी उम्र वाले छोटे बेटे शहाबुद्दीन उमरको गद्दीपर बिठा दिया, और आप कुल कामका मुख़्तार बना. क़रीब तीन महीनेके बाद वहांके अमीरोंने मलिक ख़ोजाको मारकर उस लड़के बादशाहको अंधा करवा डाला, और क़ैद करके क़िले ग्वालियरमें भेजनेके बाद अलाउद्दीनके तीसरे बेटे मुबारकख़ांको हिज्री ७१७ ता० ८ मुहर्रम [वि० १३७४ चैत्र शुक्ल ९ = .ई० १३१७ ता० २४ मार्च] के दिन "कुतुबुद्दीन मुबारकशाह" का ख़िताब देकर तख़्तपर बिठादिया; लेकिन् हिज्री ७२१ ता० ५ रबीउल्अव्वल [वि० १३७८ वैशाख शुक्ल ७ = .ई० १३२१ ता०

५ एप्रिल] को उसका खिद्मतगार खुस्त्रौखां कुतुबुद्दीनको भी मारकर, जो उसी का बढ़ाया हुआ खुद्सर होगया था, आप तख़्तपर बैठगया, और अपना लक़ब "नासिरुद्दीन खुस्त्रौशाह" रक्खा. इसने हिन्दुस्तानमें बहुतसे ज़ुल्म और ज़ियादतियां कीं, जिससे देपालपुरका हाकिम गाज़ियुलमुल्क मुख़ालिफ़ बनकर इसपर चढ़दौड़ा. इसने भी उसका मुक़ाबलह किया, लेकिन् आख़रको गाज़ियुलमुल्कने फ़त्ह पाई, और वह खुस्त्रौशाहको उसके मददगारों समेत क़त्ल करके उसी सन् की ता० १ शअ़्बान [वि० भाद्रपद शुक्ल २ = .ई० ता० २५ ऑगस्ट] को "गाज़ियुलमुल्क गयासुद्दीन तुग़लक़शाह" के नामसे तख़्तपर बैठगया. यह बादशाह बहुत नेक और सादा मिज़ाज था, हिज्री ७२५ रबीउ़ल्अव्वल [वि० १३८१ फाल्गुन = .ई० १३२५ फ़ेब्रुअरी] में एक मकानके गिरनेसे दबकर मरगया, और उसका बेटा फ़ख़्रुद्दीन "मुहम्मद तुग़लक़शाह" के ख़िताबसे तख़्तपर बैठा. यह बादशाह फ़य्याज़, आलिम, और ज़ालिम भी था. इसके बहुत बड़े बड़े इरादे थे, लेकिन् वे पूरे नहीं होने पाये. इसने दक्षिणमें देवगढ़को अपनी राजधानी बनाया. आख़री चढ़ाई इसने मुल्क सिन्धमें ठट्ठा मक़ाम पर की थी, लेकिन् वहां पहुंचनेसे पहिले ही रास्तेमें १४ कोस इस तरफ़ तपकी बीमारीसे हिज्री ७५२ ता० २१ मुहर्रम [वि० १४०८ प्रथम वैशाख कृष्ण ७ = .ई० १३५१ ता० २० मार्च] को मरगया. इसके बाद उसका भतीजा मलिक फ़ीरोज़ बार्बक उसीकी वसिय्यतसे हिज्री ता० २४ मुहर्रम [वि० वैशाख कृष्ण १० = .ई० ता० २३ मार्च] को तख़्तपर बिठाया गया, और उसका लक़ब "अबुल्मुज़फ़्फ़र सुल्तान फ़ीरोज़शाह" रक्खा. इसने बहुतसे आईन व क़ानून बनाये, गंगा व जमुनासे नहरें निकालीं, सड़कोंपर वृक्ष लगाये, और मद्रसे, शिफ़ाख़ाने व सरायें बनवाईं. अगर्चि इस बादशाहके नेक होनेमें कुछ शक नहीं है, लेकिन् मज़्हबी तअ़स्सुबके सबबसे इसने ज़ुल्म भी बड़े बड़े किये, याने सुन्नत जमाअ़तके सिवा मुसल्मानोंके गैर फ़िर्क़े और हिन्दू व जैनोंके हज़ारों पेश्वाओंको क़त्ल करवाडाला. इन बातोंको इस बादशाहने खुद अपनी ही क़लमसे फ़ुतूहाति फ़ीरोज़ शाहीमें लिखा है. यह बादशाह ३८ वर्षतक सल्तनत करके ८३ वर्षकी .उ़म्रमें हिज्री ७९० ता० १८ रमज़ान [वि० १४४५ कार्त्तिक कृष्ण ४ = .ई० १३८८ ता० २० सेप्टेम्बर] को मरगया. इसके बाद उसका पोता गयासुद्दीन तुग़लक़शाह तख़्तपर बैठा, जिसका बाप फ़ीरोज़शाहके सामने मरगया था; लेकिन् इसके भतीजे ज़फ़रख़ांके बेटा अबूबक्र हिज्री ७९१ ता० २१ सफ़र [वि० १४४५ चैत्र कृष्ण ८ = .ई० १३८९ ता० १९ फ़ेब्रुअरी] को इसे मारकर बादशाहतका मालिक बना, जिसका लक़ब "अबूबक्रशाह" था. हिज्री ७९२

ता० २० ज़िल्हिज [वि० १४४७ पौष कृष्ण ७ = .ई० १३९० ता० २९ नोवेम्बर] को फ़ीरोज़शाहका बेटा नासिरुद्दीन मुहम्मदशाह, जिसको उसके बापने ख़ारिज करदिया था, अबूबक्रको मारकर तरूतपर बैठा. इस बादशाहने मेवातियोंको सज़ा देनेके लिये चढ़ाई की, लेकिन् रास्तेमें बीमार होकर पीछा जलेसरमें आगया, और हिज्री ७९६ ता० १७ रबीउ़ल्अव्वल [वि० १४५० फाल्गुन कृष्ण ४ = .ई० १३९४ ता० २० जैन्युअरी] को वहीं मरगया. इसका बेटा हुमायूंखां "अलाउद्दीन सिकन्दरशाह" के लक़बसे तरूतपर बैठा, लेकिन् वह भी सख्त बीमार होकर उसी सन्की ता० ५ जमादियुल्अव्वल [वि० १४५१ चैत्र शुक्ल ६ = .ई० ता० ८ मार्च] को मरगया. इसके बाद नासिरुद्दीन मुहम्मदशाहका दूसरा बेटा नासिरुद्दीन महमूदशाह तरूतपर बैठा. इसके वक्तमें बहुतसी ख़राबियां पेश आईं. इसने पूर्वकी तरफ़ जौनपुर वग़ैरहपर "सुल्तानुलशर्क" का ख़िताब देकर ख़्वाजह जहानको ख़ुदमुरूतार बनाकर भेजदिया. हिज्री ७९७ रबीउ़ल्अव्वल [वि० पौष = .ई० १३९५ जैन्युअरी] में उसके एक सर्दार सआदतखां नामीने फ़ीरोज़शाहके बेटे नुस्रतशाहको "नासिरुद्दीन नुस्रतशाह" का ख़िताब देकर फ़ीरोज़ाबादमें तरूतपर बिठादिया, जिसने तमाम हिन्दुस्तानपर अपना क़बज़ह करलिया, और महमूदशाहके क़बज़हमें सिवा दिल्लीकी शहरपनाहके भीतर वाली ज़मीनके और कुछ न रहा. बहुतसी लड़ाइयां होनेके बाद महमूदशाहके सर्दार ग़ालिब आये, और नुस्रतशाह फ़ीरोज़ाबादमें जा छुपा. यहां इस तरहकी छीना झपटी होरही थी, कि हिज्री ८०१ [वि० १४५६ = .ई० १३९९] में अमीर तीमूर दिल्लीतक आया, और बहुतसी लूटमार और क़त्ल करके पीछा तुर्किस्तानको लौटगया. फिर मालवा, गुजरात, पंजाब व जौनपुर वग़ैरहके जुदे जुदे हाकिम ख़ुदमुरूतार बनबैठे. इसी अब्तरीकी हालतमें नासिरुद्दीन महमूदशाह हिज्री ८१५ ज़िल्क़ाद [वि० १४६९ फाल्गुन = .ई० १४१३ फेब्रुअरी] में फ़ौत होगया. अब यहां तुग़लक़ोंकी बादशाहत ख़त्म होकर सय्यदोंकी बादशाहत क़ाइम हुई.

हिज्री ८१६ मुहर्रम [वि० १४७० वैशाख = .ई० १४१३ एप्रिल] के महीने में सब सर्दारोंने मिलकर दौलतखां लोदीको तरूतपर बिठाया, लेकिन् यह हिज्री ८१७ रबीउ़ल्अव्वल [वि० १४७१ ज्येष्ठ = .ई० १४१४ मई] में ख़िज़रखांका क़ैदी बनकर फ़ीरोज़ाबादमें मरगया, और ख़िज़रखां तरूतपर बैठा. इसका लक़ब "रायाते आला ख़िज़रखां" रक्खा गया. इसने सिक्का और ख़ुत्बह अमीर तीमूरके नामका रक्खा. जब हिज्री ८२४ ता० १७ जमादियुल्अव्वल [वि० १४७८ आषाढ़ कृष्ण ४ = .ई० १४२१ ता० १९ मई] को यह भी मरगया,

तो उसके बेटे मुबारकखांने तख़्तपर बैठकर अपना लक़ब "मुइज़्ज़ुद्दीन अबुल् फ़त्ह मुबारकशाह" रक्खा. यह बादशाह नेक था, लेकिन् इसके वज़ीर सरुरुल मुल्कने इसे हिज्री ८३७ ता० ९ रजब [वि० १४९० फाल्गु॰ शुक्ल ११ = ई० १४३४ ता० २० फ़ेब्रुअरी] को दग़ासे मरवाडाला. इसके बाद फ़रीदख़ांका बेटा और ख़िज़रख़ांका पोता मुहम्मदशाह तख़्तपर बैठा. इस बादशाहको तारीख़ वाले डरपोक और जाहिल बतलाते हैं. इसने अपने सर्दार बहलोल लोदीको बहुत कुछ बढ़ादिया था, जो पीछे बाग़ी होगया था. हिज्री ८४९ [वि० १५०२ = ई० १४४५] में मुहम्मदशाह अपनी मौतसे मरगया. उसके मरनेपर उसका बेटा सुल्तान अलाउद्दीन तख़्तपर बिठाया गया, जो अपने बापसे भी ज़ियादह ख़राब था. इसने अपने बापके सर्दार बहलोल लोदीको लिखभेजा, कि मैं नाताक़त हूं, आप दिल्लीके तख़्तपर बैठ जाइये, और मेरे ख़र्चके लिये बदायूं नियत करदीजिये. बहलोलने वैसाही किया, याने हिज्री ८५५ ता० १७ रबीउल्अव्वल [वि० १५०८ ज्येष्ठकृष्ण ४ = ई० १४५१ ता० २१ एप्रिल] को सुल्तान बहलोल लोदीके ख़िताबसे तख़्तपर बैठकर अलाउद्दीनको बदायूं भेजदिया, जहां वह हिज्री ८८३ [वि० १५३५ = ई० १४७८] में मरगया.

अब सय्यदोंकी बादशाहतका ख़ातिमह होकर लोदियोंके इक्बालका सितारा चमका. तवारीख़ वाले बहलोल लोदीकी बहुत तारीफ़ लिखते हैं. उसने बादशाहत मिलने पर भी ख़ज़ानह और माल कुल पठानोंमें बांटदिया. यह पठानोंके गिरोहमें फ़र्शपर बैठता, हर एक सर्दारके घर खाना खानेको चलाजाता, और हर एक की सवारीपर चढ़लेता था. यह बादशाह हिज्री ८९४ [वि० १५४६ = ई० १४८९] में मरा. इसके बाद इसका बेटा निज़ामख़ां "सुल्तान सिकन्दर" के लक़बसे इसी हिज्रीके शअ्बान [वि० श्रावण = ई० जुलाई] में तख़्तपर बैठा, और हिज्री ९२३ [वि० १५७४ = ई० १५१७] में आगरेमें मरगया. तब इसका बेटा इब्राहीम लोदी "सुल्तान इब्राहीमशाह" के लक़बसे इसी हिज्रीकी ता० १५ ज़िल्हिज [वि० माघ कृष्ण २ = ई० ता० २९ डिसेम्बर] को तख़्तपर बैठा. इस बादशाहके वक़्में सल्तनतमें बहुत कुछ गड़बड़ रही. यह कुछ उम्दह इन्तिज़ाम नहीं करसक्ता था; आख़रकार हिज्री ९३२ ता० ८ रजब [वि० १५८३ वैशाख शुक्ल १० = ई० १५२६ ता० २१ एप्रिल] को पानीपतमें बाबर बादशाहसे मुक़ाबलह करके मारागया, जिसका मुफ़स्सल हाल मुग़लोंके बयानमें लिखाजावेगा.

अब हम यूरोपिअन लोगोंके हिन्दुस्तानमें आनेका हाल लिखते हैं:-

पुराने समयमें हिन्दुस्तानी चीज़ोंका व्यापार अरब और मिस्र वालोंकी मारिफ़त

यूरोप वालोंके साथ होता था, जिससे हिन्दुस्तानी चीज़ोंके व्यापारका फ़ायदह मिस्र वाले उठाते थे. यूरोप वाले चाहते थे, कि हिन्दुस्तानको जानेके लिये कोई जहाज़ी रास्तह दर्याफ़्त होजावे, तो हिन्दुस्तानी चीज़ें खुद वहां जाकर ख़रीद लावें, जिससे बहुत कुछ नफ़ा हासिल हो, क्योंकि कई व्यापारियोंके हाथमें होकर माल ख़रीदनेसे दरजे ब दरजे क़ीमत बढ़ती जाती है, और जगह जगहके लोग उसी मालसे अपना फ़ायदह उठाते जाते हैं. इस विचारसे यूरोपके साहसिक पुरुष अपने अपने अनुमानके मुताबिक़ हिन्दुस्तानमें आनेके मन्शासे समुद्रका रास्तह दर्याफ़्त करने लगे; परन्तु हिन्दुस्तानका हाल पूरा पूरा मालूम न होनेके सबब और और मुल्कोंमें जा निकलते, जैसा कि कोलम्बस हिन्दुस्तानकी तलाशमें निकला और अमेरिकामें जा पहुंचा. पुर्त्तगालका बार्थोलोमियो नामक एक नाविक हिन्दुस्तानको आफ़्रिकाके पूर्वमें समझकर .ईसवी १४८६ [वि० १५४३ = हि० ८९१] में लिस्बन शहरसे निकला और आफ़्रिक़ाके दक्षिणी अन्तरीपतक आया, परन्तु समुद्रमें तूफ़ान अधिक होनेके कारण आगे न बढ़सका.

.ईसवी १४९७ [वि० १५५४ = हि० ९०२] में इसी मुल्कका दूसरा जहाज़ी वास्कोडिगामा अपने बादशाहके हुक्मसे ३ जहाज़ लेकर पुर्त्तगालसे आफ़्रिक़ाकी परिक्रमा करता हुआ मलाबारके किनारे कलिकट बन्दरपर आ पहुंचा. वहांके राजाने जहाज़ोंको उतरनेदिया, और उन लोगोंको सत्कारके साथ व्यापार करनेकी इजाज़त दी, परन्तु मुसल्मान व्यापारियों (अरबों) ने राजाको बहकाकर यूरोपिअन व्यापारियोंके साथ नाइत्तिफ़ाक़ी करादी, जिससे कुछ महीनों बाद वास्कोडिगामा तो अपने मुल्कको वापस चलागया, और पुर्त्तगालके बादशाहने दूसरी मर्तबह १३ जहाज़ और १२०० सिपाही पेड्रोकेब्रल नामी सेनापतिकी मातहतीमें भेजे, जो .ईसवी १५०० के सेप्टेम्बर [वि० १५५७ भाद्रपद = हि० ९०६ सफ़र] में कलिकटमें पहुंचे. केब्रलको व्यापारके लिये कोठी बनानेका हुक्म राजाकी तरफ़से मिलगया, लेकिन् मुसल्मानोंके साथ नाइत्तिफ़ाक़ी यहांतक बढ़ी, कि वह कोठी उड़ादी गई. केब्रलने १० जहाज़ मुसल्मानोंके लूटकर जलादिये, और शहरपर गोलन्दाज़ी शुरू की. आख़रकार वह कोचीनको चलागया, और वहां कोठी बनानेके लिये कुछ आदमी नियत करके आप कानानोरको गया, जो कलिकटके उत्तरमें है, और वहांसे यूरोपको चलागया.

इसके पहुंचनेसे पहिले ही पुर्त्तगाल वालोंने तीसरी बार जुएन्डी न्यूवा सेनापतिकी मातहतीमें फ़ौज रवानह करदी थी. यह सेनापति कोचीनमें आया, तो कलिकटके राजा

ज़ामोरिनने इसके मुक़ाबलहके लिये एक जहाज़ी क़ाफ़िलह भेजा, परन्तु जुएन्डी न्यूवाने उसको बखेरदिया, और बहुतसा क़ीमती माल लेकर यूरोपको वापस चलागया.

इन तीन चढ़ाइयोंसे पुर्त्तगाल वालोंको यह मालूम होगया, कि हिन्दुस्तानमें अपने व्यापारकी तरक़ी फ़ौज और हथियारोंकी ताक़तसे होसक्ती है, और ईसवी १५०२ [वि० १५५९ = हि० ९०७] में वास्कोडिगामा पूरी फ़ौजके साथ फिर हिन्दुस्तानको भेजागया. इसने विचार किया, कि हिन्दुस्तानका बहुत बड़ा व्यापार, जो अरब और दक्षिणी ईरानके साथ होता है, वह बिल्कुल मुसल्मानोंसे उठाकर अपने क़बज़हमें करलेवे, इस मुरादसे वह कई जहाज़ोंको जलाने, लूटने, और लोगोंको मारने और हाजियोंको तक्लीफ़ देनेलगा. कलिकटके पास उसने कई जहाज़ियोंको पकड़ा, और राजाको धमकी दी, कि हमारा कहा न मानोगे, तो हम इन सब क़ैदियोंको मारडालेंगे; लेकिन् जब राजाने उसकी बातपर ख़याल न किया तब उसने उन पकड़े हुए लोगोंको फांसी देदी, और उनके हाथ पांव काटकर राजाके पास भेजदिये. कलिकटके राजासे कई लड़ाइयां करके उसने कोचीन और काननोरके राजाओंसे मज्बूत दोस्ती पैदा की, और ईसवी १५०३ [वि० १५६० = हि० ९०८] में वहां एक हाकिम मुक़र्रर करके ख़ुद वापस चलागया. इसके बाद दिन बदिन ज़मीन और समुद्र दोनों पर इन लोगोंकी तरक़ी होती गई. वास्कोडिगामाके जाने बाद ज़ामोरिनने कोचीनपर चढ़ाई की, परन्तु इस मौक़ेपर पुर्त्तगालसे अल्फ़ान्ज़ो आल्बुकर्क फ़ौज लेकर आपहुंचा, इस कारण उसे फ़त्ह नसीब नहीं हुई, और हारकर संधि करनी पड़ी. आल्बुकर्क के वापस चलेजानेपर ज़ामोरिन ५०००० फ़ौज लेकर कोचीनपर चढ़ा, परन्तु १३ जहाज़ इस मौक़ेपर पुर्त्तगालसे आगये, जिससे पुर्त्तगाल वालोंकी फ़त्ह हुई, और कलिकट बर्बाद कियाजाकर १७ जहाज़ ज़ामोरिनके पकड़ेगये. ईसवी १५०६ [वि० १५६३ = हि० ९१२] में पुर्त्तगालका जहाज़ी सेनाधिपति सोअरेज़ लूटका बहुतसा माल अस्बाब लेकर पुर्त्तगालको चलागया. दूसरे साल डोम्फ़्रान्सिस अलमीडा १५०० क़वाइदी सिपाही लेकर आया, और उसने अंजिदिव टापूपर क़िला बनाया, और कोचीनमें जाकर वहांके राजाको एक रत्नजटित मुकुट दिया. इस समय मुसल्मानोंके व्यापारको नुक़्सान पहुंचनेके सबब मुसल्मान और पुर्त्तगाल वालोंके बीच दुश्मनी होगई. बीजापुरका बादशाह और गुजरातका बादशाह महमूदशाह दोनों आपसमें मिलगये, और मिस्रके बादशाहने भी इनकी मददके लिये जहाज़ भेजे. लड़ाई होनेपर पुर्त्तगाल वालोंका बहुतसा नुक़्सान हुआ, परन्तु अल्फ़ान्ज़ो आल्बुकर्क फिर मदद लेकर आया, जिससे उनका टिकाव होगया, और दोबारह मदद पहुंचनेपर लालसमुद्र व ईरानके आखातमें

मुसल्मानोंपर हमलह किया, जहां ओर्मज़ व मस्क़त नामके दो स्थान लेलिये, और लड़ाइयां होतीरहीं. इसके बाद बीजापुरके बादशाह इब्राहीमने आदिलशाहसे गोआ छीनलिया, जो इसवक़ हिन्दुस्तानमें पुर्तगाल वालोंकी राजधानी है. इसी तरह हिन्दुस्तानके पश्चिमी किनारेका कुछ मुल्क इनके क़बज़हमें आगया. .ईसवी १५२१ [वि० १५७८ = हि० ९२७] में पुर्तगाल वालोंने दीवपर क़िला बनाना चाहा, लेकिन् गुजरातके लश्करसे हारकर भागना पड़ा. अहमदनगरके लश्करकी मददसे थाणा और सालसेटीका टापू इनके क़बज़हमें आगया. फिर गुजरातके अन्दर आपसकी लड़ाइयोंमें मौक़ेपर मदद देकर दीव और बसईको इन्होंने अपने हाथमें लेलिया. ईसवी १५३७ [वि० १५९४ = हि० ९४३] में टर्कीके बादशाहने दीव बन्दरपर फ़ौज भेजी, लेकिन् पुर्तगालसे ज़ियादह फ़ौज आजानेके सबब ८ महीने बाद घेरा उठाकर फ़ौजको वापस लौटना पड़ा. उस समयके बाद डच, .फ्रेंच और अंग्रेज़ व्यापारियोंके हिन्दमें आनेसे इन लोगोंका समुद्री बल कम होगया, और देशी राजाओंके बखेड़ोंसे पश्चिमी किनारेका मुल्क भी इनके हाथसे चलागया, सिर्फ़ गोआ, दम्मन, और दीव नामके तीन स्थान इनके हाथमें रहे, जो आजतक इन्हींके क़बज़हमें चले आते हैं.

.ईसवी १५९६ [वि० १६५३ = हि० १००४] में कार्नेलियस होटमन नामके एक डच जहाज़ीने आफ़्रिक़ाके दक्षिणी अन्तरीपकी प्रदक्षिणा की, और .ईसवी १६०२ [वि० १६५९ = हि० १०१०] में व्यापारके लिये एक कम्पनी खड़ी हुई, जिसका नाम "डच ईस्ट इंडिया कम्पनी" रक्खा, और ५० वर्षके भीतर इस कम्पनीने हिन्दुस्तान, सीलोन (लंका), सुमात्रा, ईरानी आखात, और लाल समुद्र वगैरहके स्थानोंमें अपनी कोठियां जमाईं, और कुछ समयतक दिन ब दिन तरक़ी करतेरहे. ईसवी १७५९ [वि० १८१६ = हि० ११७२] में अंग्रेज़ोंके साथ बखेड़ा होनेपर लॉर्ड क्लाइवने चिन्सुरा नामी स्थानमें डच लोगोंपर हमलह करके चिन्सुरा ख़ाली करवालिया और उन्हें ऐसी शिकस्त दी, कि इस समय हिन्दुस्तानमें डच लोगोंका निशानतक बाक़ी न रहा.

.ईसवी १६०४ [वि० १६६१ = हि० १०१३] में फ्रेंच लोगोंने भी हिन्दुस्तानमें व्यापार करनेके लिये फ़ांसमें "ईस्ट इंडिया" नामकी एक कम्पनी खड़ी की. फिर .ईसवी १६११ [वि० १६६८ = हि० १०२०] में इसी नामकी एक दूसरी कम्पनी क़ाइम हुई, और .ईसवी १६१५ [वि० १६७२ = हि० १०२४] में तीसरी, .ईसवी १६४२ [वि० १६९९ = हि० १०५२] में चौथी, ईसवी १६४४ [वि० १७०१ = हि० १०५४] में पांचवीं, और अख़ीरमें सब कम्पनियां मिलकर एक कम्पनी होगई, जिसने हिन्दुस्तानमें आकर रफ़्तह रफ़्तह कलकत्ताके पास चन्द्रनगर पाया, और दिन ब दिन ऐसी तरक़ी

की, कि अंग्रेज़ोंके हरीफ़ होगये. इन लोगोंका बाक़ी हाल अंग्रेज़ोंके इतिहासके साथ मौक़ेपर दर्ज किया जायेगा.

.ईसवी १६१२ [वि० १६६९ = हि० १०२१] में डेन्मार्कके लोगोंने भी एक कम्पनी क़ाइम की जो "डैनिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी" के नामसे प्रसिद्ध हुई, और दूसरी कम्पनी .ईसवी १६७० [वि० १७२७ = हि० १०८०] में खड़ी हुई.

.ईसवी १६१६ [वि० १६७३ = हि० १०२५] में ट्रेंकेबार और सीरामपुर बसायेगये, जो .ईसवी १८४५ [वि० १९०२ = हि० १२६१] में सर्कार अंग्रेज़ीने क़ीमत देकर मोल लेलिये.

ईसवी १५९९ [वि० १६५६ = हि० १००७] में इंग्लिस्तानमें ईस्ट इण्डिया कम्पनी क़ाइम होकर उसने वहांकी मलिका क्वीन एलिज़ाबेथसे इस मज़्मूनकी एक सनद हासिल की, कि १५ वर्षतक इंग्लिस्तानका कोई आदमी बिना इजाज़त कम्पनीके पूर्वी मुल्कोंमें तिजारत न करे. ईसवी १६०९ [वि० १६६६ = हि० १०१८] में सर हेनूरी मिडल्टन ३ जहाज़ लेकर सूरतमें आया, परन्तु वहांके हाकिमसे खटपट होजानेके सबब कोठी खोलनेकी इजाज़त न मिली, तब कप्तान हॉकिन इंग्लैण्डके बादशाह जेम्स अव्वल और ईस्ट इण्डिया कम्पनीकी तरफ़से वकीलके तौरपर दिल्लीके बादशाह जहांगीरके पास गया, और ३ वर्षतक वहीं ठहरा रहा. ईसवी १६११ [वि० १६६८ = हि० १०२०] में सर हेनूरी मिडल्टन खम्भातको गया, और वहां पुर्त्तगाल वालोंसे लड़ा. ईसवी १६१३ [वि० १६७० = हि० १०२२] में सूरत, घोघा, खम्भात और अहमदाबादमें इसको व्यापार करनेकी इजाज़त मिली. ईसवी १६१५ [वि० १६७२ = हि० १०२४] में पुर्त्तगाल वालोंने सूरत बन्दरके पास कम्पनीके जहाज़ों पर हमलह किया, परन्तु अंग्रेज़ फ़त्हयाब हुए. इसी सालमें इंग्लैण्डके बादशाहकी तरफ़से सर टॉमस रो जहांगीरके दर्बारमें वकील बनकर गया, और उसने बादशाही मुल्कमें व्यापार करनेकी इजाज़त हासिल की. ईसवी १६१९ [वि० १६७६ = हि० १०२८] में डच लोगोंसे संधि की, और इक़ार किया, कि अंग्रेज़ और डच आपसमें न लड़ें, परन्तु इस संधिका अमल दरामद न हुआ. ईसवी १६२२ [वि० १६७९ = हि० १०३१] में इन्होंने मछलीपट्टनमें कोठी जमाई. ईसवी १६२५-२६ [वि० १६८२-८३ = हि० १०३४-३५] में आर गांवमें, जो कारोमंडलके किनारेपर है, कोठी खोलीगई. ईसवी १६३४ [वि० १६९१ = हि० १०४३] में इनको दिल्लीके बादशाहने बंगालेमें कोठी खोलनेकी इजाज़त दी. ईसवी १६३९ [वि० १६९६ = हि० १०४९] में इन्होंने चन्द्रगिरिके राजाकी इजाज़तसे मद्रास शहर बसाया, और वहां

सेंट ज्यॉर्ज नामका क़िला बनाया. ईसवी १६४० [वि० १६९७ = हि० १०५०] में कारवाड़ और हुगलीमें कोठियां खोलीं. ईसवी १६४२ [वि० १६९९ = हि० १०५२] में बालासिनोरमें कोठी खोलीगई. ईसवी १६४५ [वि० १७०२ = हि० १०५५] में मिस्टर गेब्रियल बोग़्टन डॉक्टरने शाहजहां बादशाहकी ख़िद्मत की और उसके .एवज़में उसने कम्पनीके लिये कुछ ज़ियादह हक़ हासिल किये. ईसवी १६५८ [वि० १७१५ = हि० १०६८] में क़ासिम बाज़ारमें कोठी खोलीगई. ईसवी १६६८ [वि० १७२५ = हि० १०७८] में इंग्लैण्डके बादशाह चार्ल्स दूसरेने बम्बईका शहर, जो पुर्तगाल वालोंसे जिहेज़में पाया था, १००) रुपया सालानह ख़िराजपर कम्पनीको देदिया, जिसको कम्पनीने पश्चिमी हिन्दुस्तानमें व्यापारका मुख्य स्थान बनाया. इसके बाद उक्त कम्पनीने कलकत्ताको ज़ियादह आबाद करके उसमें फ़ोर्ट विलिअम नामी एक क़िला बनाया. .ईसवी १७१५ [वि० १७७२ = हि० ११२७] में कलकत्ताके प्रेसिडेण्टने दो अंग्रेज़ी एल्ची दिल्लीके बादशाह फ़र्रुख़सियरके पास भेजे. इस समय बादशाह बीमार था, जिसको इन एल्चियोंके साथ वाले डॉक्टर हैमिल्टनने आराम किया. बादशाहने खुश होकर डॉक्टरसे कहा, कि तुम्हारी इच्छा हो सो मांगो, परन्तु उस नेक शख़्सने अपने लिये कुछ न मांगा, और कम्पनीका फ़ायदह सोचकर दो बातोंकी दर्ख़्वास्त की, याने एक तो कम्पनीको बंगालेमें ३८ गांव ख़रीदनेकी इजाज़त, और दूसरे यह, कि जो माल कलकत्तेके प्रेसिडेण्टके दस्तख़त होकर रवानह हो उसका महसूल न लियाजावे. बादशाहने उक्त डॉक्टरकी दोनों बातें क़बूल करलीं, लेकिन् बंगालेके सूबेदारने ज़मींदारोंको मनादी करादी, जिससे ज़मींदारी तो हाथ न लगी, लेकिन् महसूल मुआफ़ होगया.

.ईसवी १७०७ [वि० १७६४ = हि० १११९] में बादशाह औरंगज़ेबके मरनेपर दक्षिणका मुल्क स्वतन्त्र होगया. निज़ामुलमुल्क हैदराबादका मालिक बना, और आर्कटका नव्वाब हैदराबादकी मातह्तीमें करनाटकका राज्य करने लगा; उस समय तंजावर व मैसोरमें हिन्दू राजाओंका राज्य था, और .फ्रांस वालोंने ईसवी १६७४ [वि० १७३१ = हि० १०८५] से पौंडिचेरीमें अपना अधिकार जमा रक्खा था.

.ईसवी १७४४ [वि० १८०१ = हि० ११५७] में जब यूरोपमें अंग्रेज़ और .फ्रांसीसियोंमें लड़ाईकी आग भड़की, तो उसकी चिनगारियां हिन्दुस्तानमें भी फैलने लगीं. .ईसवी १७४६ [वि० १८०३ = हि० ११५९] में .फ्रांस वालोंने पौंडिचेरीसे फ़ौज लेजाकर मद्रासको जाघेरा, और ५ दिनतक घेरा रखकर उसे अंग्रेज़ोंसे ख़ाली करवालिया. क्लाइव वग़ैरह अंग्रेज़ लोग यहांसे निकलकर फ़ोर्ट सेंट डेविडमें जाठहरे. इस

समय आर्कटका नव्वाब अंग्रेज़ोंकी मददके लिये १०००० दस हज़ार आदमी लेकर मद्रासको आया, परन्तु उसने फ्रांसीसियोंसे शिकस्त पाई. ईसवी १७४८ [वि० १८०५ = हि० ११६१] में विलायतसे फ़ौज आई, और पौंडिचेरीपर अंग्रेज़ोंने घेरा डाला, परन्तु फ्रांस वालोंने बराबर लड़ाई ली, और इसी सालमें फ्रांस और अंग्रेज़ोंके दर्मियान संधि होजानेके कारण फिर मद्रास अंग्रेज़ोंके क़बज़हमें आगया.

इस समय फ्रांसका गवर्नर डुप्ले अपने राज्यकी जड़ दक्षिणमें जमाना और अंग्रेज़ोंको वहांसे उखेड़ना चाहता था, कि इसी अरसहमें तंजावरके राजा प्रतापसिंहके नाबालिग़ होनेके सबब उसके भाई साहूजीने अंग्रेज़ोंको देवीकोटाका मुल्क देना क़बूल करके अपने भाईसे गद्दी छीनलेनेमें मदद चाही. इसपर लेफ्टिनेएट क्लाइवने मदद देकर साहूजी को तंजावरका मालिक बनादिया, जिससे देवीकोटा मए क़िलेके कम्पनीके हाथमें आगया.

ईसवी १७४८ [वि० १८०५ = हि० ११६१] में जब दक्षिणके सूबेदार आसिफ़जाह की मृत्यु हुई, तो उसके बेटे पोते गद्दीके लिये आपसमें तक्रार करने लगे. इस मौक़ेपर डुप्लेने उसके पोते मुज़फ़्फ़रजंगको गद्दी नशीन करके उसके एवज़में कृष्णा नदीसे कुमारी अन्तरीप तकका मुल्क हासिल करलिया, और जब आर्कटकी गद्दीके लिये भी वारिसों में तक्रार हुई, तो फ्रांस वालोंने चन्दा साहिबको आर्कटकी गद्दीपर बिठादिया. अंग्रेज़ोंने चन्दा साहिबके विरोधी मुहम्मदअली (वालाजाह) की मदद की, जोकि इस वक्त त्रिचिनापल्लीका हाकिम था. चन्दा साहिबने भी फ्रांसीसियोंकी मददसे त्रिचिनापल्लीपर हमलह किया. अंग्रेज़ोंने यह मौक़ा ग़नीमत समझकर आर्कटको लेलिया, तब चन्दा साहिबके आदमियोंने आर्कटको घेरलिया, और फ्रेञ्चोंकी भी पूरी मदद हुई, लेकिन् क्लाइवने क़िला न छोड़ा. चन्दा साहिब मुहम्मदअलीके किसी मददगारके हाथसे मारागया, और अंग्रेज़ोंने मुहम्मदअलीको गद्दीपर बिठाकर उसे सारे करनाटकका नव्वाब बनादिया. इस तरहपर दक्षिणमें अंग्रेज़ और फ्रांसीसियोंने देशी राजाओंको मदद दे देकर अपना मत्लब निकाला. आर्कटकी फ़त्हसे अंग्रेज़ोंका ज़ोर दक्षिणमें बढ़गया, और फ्रांसवालोंने उत्तर सर्कारपर अपना क़बज़ह जमालिया. फ्रांस वालोंने डुप्लेकी क़द्र न की, और उसको फ्रांसमें बुलाकर उसकी जगह दूसरा हाकिम मुक़र्रर करके यहां भेजदिया. डुप्ले जैसे बहादुर हाकिमके चले जानेसे अंग्रेज़ोंको और भी सुभीता मिला, और ईसवी १७६० [वि० १८१७ = हि० ११७३] में कर्नेल् कूट (सर आयर कूट) वोंदी वाशकी लड़ाईमें फ्रेंच जेनरल लालीको शिकस्त देकर वहांसे पौंडिचेरीपर हमलह करनेको निकला. ईसवी १७६१ [वि० १८१८ = हि० ११७४] में उसने गिंजीका क़िला फ्रांसवालोंसे लेलिया.

.ईसवी १७५६ [वि० १८१३ = हि० ११६९] में अलहवर्दीख़ां मरा तो उसके भतीजेका बेटा सिराजुद्दौलह बंगाला, बिहार और उड़ीसाका हाकिम बना. यह बद मिज़ाज और अंग्रेज़ोंसे ज़ियादह नफ़्रत रखने वाला था. इसका कोई आदमी अपने बचावके लिये अंग्रेज़ोंकी हिफ़ाज़तमें कलकत्ते चलागया था, जिसको मंगवानेके लिये उसने एक आदमी अंग्रेज़ोंके पास भेजा, परन्तु अंग्रेज़ोंने उसको नहीं सौंपा. इस बातसे नाराज़ होकर उसने कलकत्ताके क़िलेकी मज्बूती जो उसवक़ अंग्रेज़ कर रहे थे, उसके बन्द करनेका हुक्म भेजा, परन्तु इसपर भी अंग्रेज़ोंने कुछ ध्यान न दिया, तब सिराजुद्दौलहने अंग्रेज़ोंकी क़ासिम बाज़ारकी कोठी लेली और कलकत्ताके क़िलेको जाघेरा. बहुतसे अंग्रेज़ किश्तीमें सवार होकर निकल भागे और कितनेएक उसकी क़ैदमें आये. रातके वक़ १४६ क़ैदी अंग्रेज़ोंको १८ फ़ुट लम्बे और १४ फ़ुट चौड़े कमरेमें बन्द किया, जिनमेंसे १२३ तो मकानके भीतर हवाके आने जानेका रास्तह न होनेके सबब रातभर में ही मरगये, और २३ ज़िन्दह सुब्हके वक़ बाहिर निकाले गये, उनमेंसे हॉलवेल साहिब और दूसरे दो अंग्रेज़ तो पैरोंमें बेड़ियां डालीजाकर मुर्शिदाबादको भेजदिये गये, और बाक़ी छोड़दियेगये. ये तीन अंग्रेज़ अलहवर्दीख़ांकी बेगमकी सिफ़ारिशसे छूटे. इस हालकी ख़बर मद्रास पहुंचनेपर क्लाइव ९०० अंग्रेज़ व १५०० सिपाही लेकर वहांसे रवानह हुआ, और .ईसवी १७५७ ता० २ जैन्युअरी [वि० १८१३ पौष शुक्ल १३ = हि० ११७० ता० १२ रबीउस्सानी] को कलकत्ते पहुंचा. ता० ३ फ़ेब्रुअरी [वि० माघ शुक्ल १५ = हि० ता० १४ जमादियुल्अव्वल] को सिराजुद्दौलह ४०००० आदमियोंकी फ़ौज लेकर कलकत्तेपर चढ़ा, क्लाइव भी बड़ी बहादुरीसे लड़ा, और सिराजुद्दौलहने अपने बहुतसे आदमी मारेजानेके कारण सुलह करली, इससे अंग्रेज़ोंका जो माल अस्बाब गया था वह वापस मिलगया, और क़िला मज्बूत करने व टकशाल क़ाइम करनेके अलावह पहिले जो जो सनदें हासिल होचुकी थीं उन सबके बदस्तूर बहाल रहनेकी इजाज़त मिली; परन्तु सिराजुद्दौलह अंग्रेज़ोंसे दिली नफ़्रत ज़ियादह रखने, और .फ्रेंचोंको नौकर रखने लगा. यह बात अंग्रेज़ोंको नापसन्द होनेसे अलहवर्दीख़ांके दामाद मीर जाफ़रके सिराजुद्दौलहकी गद्दीपर क़ाइम करने का विचार हुआ, और जाफ़रसे पोशीदह तौरपर एक अहदनामह भी लिखा लिया, जिसमें सिराजुद्दौलहके साथ क़ाइम कीहुई शर्तोंके अलावह यह भी लिखवालिया, कि .फ्रांसीसी बंगालसे निकालदिये जावें, कलकत्तेसे दक्षिण कालपीतककी ज़मीन कम्पनीकी समझीजावे, और नुक्सानके एवज़ १०००००००) एक करोड़ रुपये कम्पनीको और कई लाख कलकत्ताके अंग्रेज़, हिन्दू वग़ैरह लोगोंको देना क़रार पाया. अमीचन्द सेठको, जो इस जालमें शरीक था, ५) रुपया सैकड़ा देनेका

क़रार किया; लेकिन् क्लाइवकी दग़ाबाज़ीसे सबको रुपया मिलनेपर भी सेठको न मिला. इस तरहपर खूब जाल गूंथकर क्लाइव ३००० आदमी साथ लेकर कलकत्तेसे निकला, और सिराजुद्दौलह भी ५०००० आदमियोंके समूहसे लड़ाईके लिये पलासी मकामपर आया, और अंग्रेज़ोंसे लड़ाई शुरू हुई, तो मीर जाफ़र अंग्रेज़ोंसे मिलगया, जिससे सिराजुद्दौलह भागा, और अंग्रेज़ोंकी फ़त्ह हुई. सिराजुद्दौलह राजमहलके पास गिरिफ्तार होकर मुर्शिदाबाद लायागया. वहांपर मीरजाफ़रके बेटे मीरनने उसे क़त्ल करवादिया. मीर जाफ़र गद्दीपर बिठायागया और उसके बाद अहदनामहके मुताबिक़ रुपये चुकाये गये. हिन्दुस्तानमें अंग्रेज़ोंके राज्यका प्रारम्भ पलासीकी लड़ाईसे ही समझना चाहिये. यह लड़ाई .ईसवी १७५७ ता० २३ जून [वि० १८१४ आषाढ़ शुक्ल ८ = हि० ता० ७ शव्वाल] को हुई थी. इसके बाद क्लाइव कम्पनीकी तरफ़से बंगाल इहातेका गवर्नर मुक़र्रर हुआ.

दक्षिणमें अंग्रेज़ों और फ्रांसीसियोंके बीच लड़ाई होती रही, और .ईसवी १७६१ [वि० १८१८ = हि० ११७४] तक .फ्रेंचोंका कुल मुल्क अंग्रेज़ोंने लेलिया, सिर्फ़ कलिकट और सूरतकी कोठियां उनके क़बज़हमें बाक़ी रहीं, जिससे फ़्रेञ्चोंने हिन्दुस्तानमें अपना राज्य जमानेकी उम्मेद छोड़दी.

.ईसवी १७५९ [वि० १८१६ = हि० ११७२] में दिल्लीके शाहज़ादह आलीगुहरने अवधके सूबेदारकी बहकावटसे अपने बाप बादशाह आलमगीर सानीसे नाराज़ होकर मीर जाफ़रपर हमलह किया, परन्तु क्लाइवने शाहज़ादहको भगादिया. बादशाहने ३०००००) रुपयोंकी जागीर देकर क्लाइवको अपने अमीरोंमें शामिल किया. .ईसवी १७६० [वि० १८१७ = हि० ११७३] में क्लाइवने इंग्लिस्तानमें जाकर लॉर्डका ख़िताब पाया.

जब दिल्लीका बादशाह मरगया, तो उसका शाहज़ादह "शाह आलम" के नामसे बादशाह बना, और उसने मीर जाफ़रपर दोबारह हमलह किया, लेकिन् फिर भी हारकर भागनापड़ा. मीर जाफ़रके दामाद क़ासिमअलीख़ांने बर्दवान, मेदिनीपुर और चटगांवके ज़िले और कई लाख रुपया अंग्रेज़ोंको देना क़ुबूल करके यह चाहा, कि मीर जाफ़रको गद्दीसे ख़ारिज करवाकर आप वहांका सूबेदार बनजावे, जिसपर अंग्रेज़ोंने मीर जाफ़रको ख़ारिज करके उसको बंगालेका सूबेदार बनादिया.

अब कम्पनीके नौकरोंने अपना घरू व्यापार शुरू किया और अपने व्यापार का महसूल न देनेके अलावह वे नौकरोंका माल भी बिना महसूल निकालने लगे, जिससे क़ासिमअलीकी आमदमें बड़ा घाटा होने लगा; तब उसने कौन्सिलको लिखा,

लेकिन् कौन्सिलके मेम्बर खुद ब्यापार करते थे, इसलिये उसके लिखनेका कुछ असर न हुआ, तब उसने सब व्यापारियोंका महसूल मुआफ़ करदिया, जिससे अंग्रेज़ोंका नफ़ा जातारहा. इसपर अंग्रेज़ोंने उसको कहा, कि हम लोगोंके अलावह सब लोगों से महसूल लिया करो, लेकिन् उसने न माना, तब अंग्रेज़ोंने पीछा मीर जाफ़रको बंगाल इहातेका सूबेदार बनानेके लिये इश्तिहार जारी किया, और उसके पाससे एक अह्दनामह इस मज़्मूनका लिखालिया, कि ३००००००) रुपया अंग्रेज़ोंको देवे और १२००० सवार व १२००० पियादोंका खर्च दियाकरे. फिर अंग्रेज़ी फ़ौजने मुर्शिदाबाद पर हमलह किया और क़ासिमअलीखां पटनाकी तरफ़ चलागया. अंग्रेज़ोंने उसका पीछा किया और दो लड़ाइयां लड़ीं, जिनमें अंग्रेज़ोंकी फ़त्ह हुई, लेकिन् क़ासिमअलीखांने पटनामें दोसौ अंग्रेज़ोंको क़ैद करके क़त्ल करवाडाला, तब अंग्रेज़ोंने उसका फिर पीछा किया. इसपर वह अवधके सूबेदार शुजाउद्दौलहको अपनी मददपर चढ़ालाया, लेकिन् पटनाके पास शिकस्त खाकर फिर भागना पड़ा. इस वक्त भी अंग्रेज़ोंने पीछा किया, और बक्सर मक़ामपर शुजाउद्दौलहको पूरी शिकस्त हुई. इस फ़त्हसे दिल्लीका बादशाह बहुत खुश हुआ और अपने वज़ीरकी क़ैदसे छूटकर अंग्रेज़ोंके रक्षणमें आया. .ईसवी १७६५ [वि० १८२२ = हि० ११७८] में मीर जाफ़र मरगया और उसके भाई नज्मुद्दौलहको अंग्रेज़ोंने गद्दीपर बिठाकर उससे यह इक़ार लिखवालिया, कि नाइबसूबा अंग्रेज़ोंकी सलाहसे मुक़र्रर कियाजावे, और बिना उनकी मन्ज़ूरीके वह मुआफ़ न होसके.

.ईसवी ता० ३ मई [वि० चैत्र शुक्ल १३ = हि० ता० १२ ज़िल्क़ाद] को लॉर्ड क्लाइव विलायतसे कलकत्ते आया और इसी रोज़ कोडेकी लड़ाईमें शुजाउद्दौलह अंग्रेज़ोंसे शिकस्त पाकर उनका ताबे बना. अंग्रेज़ लोगोंने इलाहाबाद, व कोडा स्थान और ५००००००) रुपया फ़ौज खर्चका लेकर उससे सुलह करली. लॉर्ड क्लाइवने नज्मुद्दौलह से यह लिखवालिया, कि ५००००००) रुपया सालानह लेलिया करे, और मुल्कसे कुछ सरोकार न रक्खे. इस तरह बिहार, बंगाल, और उड़ीसा अंग्रेज़ोंके तह्तमें आगये, और नज्मुद्दौलह केवल नामका सूबेदार बनारहा. जब .ईसवी १७६६ [वि० १८२३ = हि० ११८०] में नज्मुद्दौलह मरगया, तो उसका भाई सैफुद्दौलह गद्दीपर बैठा, और .ईसवी १७७० [वि० १८२७ = हि० ११८४] में सैफुद्दौलहके मरजानेपर उसका नाबालिग़ भाई मुबारकुद्दौलह सूबेदार हुआ. इसके गद्दी नशीन होनेपर कम्पनीने इसकेलिये १६०००००) रुपया सालानह खर्च मुक़र्रर करके बाक़ी रुपया बचतमें रखलिया.

.ईसवी १७६३ [वि० १८२० = हि० ११७६] में जब इंग्लिस्तान और .फ्रांस

के आपसमें सुलह हुई, तो यह क़रार पाया, कि .ईसवी १७४९ [वि० १८०६ = हि० ११६२] में .फ्रांसीसियोंकी जो जो कोठियां थीं वे तो उनको वापस देंदी जावें, परन्तु सूबे बंगालके अन्दर वे क़िला न बनावें और न लश्कर रक्खें.

ईसवी १७६५ [वि० १८२२ = हि० ११७८] में दक्षिणके सूबेदार निज़ामअ़लीने करनाटकके नव्वाब मुहम्मदअ़लीपर हमलह किया, परन्तु अंग्रेज़ोंने मुहम्मदअ़लीकी मदद की, जिससे वह पीछा लौटगया; और लॉर्ड क्लाइवने मुहम्मदअ़लीको करनाटककी सनद दिलाकर कम्पनीके लिये उत्तर सर्कारकी सनद लिखवाली. इस समय हैदरअ़लीने मैसोरपर अपना क़बज़ह करलिया था. .ईसवी १७६७ [वि० १८२४ = हि० ११८१] में निज़ामअ़ली मैसोरपर चढ़ा और इक़ारके मुवाफ़िक़ अंग्रेज़ भी इसके मददगार बने. जब अंग्रेज़ी फ़ौजने हैदरअ़लीको परास्त किया, तो वह निज़ामअ़लीसे जामिला, और दोनोंने अंग्रेज़ी फ़ौजपर हमलह किया, परन्तु शिकस्त पाई. इसके बाद निज़ामअ़ली ने तो पीछी अंग्रेज़ोंसे संधि करली, और हैदरअ़ली कुछ समयतक लड़ताही रहा, परन्तु .ईसवी १७६८ [वि० १८२५ = हि० ११८२] में हैदरअ़लीने भी अंग्रेज़ोंके साथ सुलह करली. तर्फ़ैनने एक दूसरेकी छीनी हुई जगह वापस देदी, और आपसमें मदद देनेका इक़ार किया.

ईसवी १७७३ [वि० १८३० = हि० ११८७] में पार्लिएमेण्ट वालोंने हिन्दुस्तानके लिये एक गवर्नर जेनरल मुक़र्रर करना ज़ुरूरी समझकर २५००००) रुपये सालानहपर इस उह्दहके लिये एक बड़ा अफ़्सर भेजेजानेका क़ाइदह जारी किया, और वारन हेस्टिंग्ज़ हिन्दुस्तानका पहिला गवर्नर जेनरल मुक़र्रर हुआ. इसने इन्तिज़ामकी दुरुस्तीके लिये अ़दालतें मुक़र्रर कीं, महसूलका भी अच्छा बन्दोबस्त किया, और कौन्सिल क़ाइम की.

ईसवी १७७१ [वि० १८२८ = हि० ११८५] में तुकाजी राव हुल्कर और महाजी सेंधियाने शाह आ़लमको दिल्लीकी गद्दीपर बिठादिया, और इलाहाबाद व कोडेका इलाक़ह अपने नाम लिखवालिया, और अंग्रेज़ोंने बादशाहपर यह दोष लगाकर, कि तुम मरहटोंसे मिलगये हो, ये दोनों .इलाक़े ज़ब्त करके अवधके नव्वाब शुजाउद्दौलहको ५००००००) रुपये में बेचदिये. ईसवी १७७४ [वि० १८३१ = हि० ११८८] में इन्होंने शुजा- .उद्दौलहकी मददपर चढ़कर रुहेलोंको ताबे बनाया. ईसवी १७७५ [वि० १८३२ = हि० ११८९] में शुजाउद्दौलह मरगया, और उसका बेटा आ़सिफ़ुद्दौलह गद्दीपर बैठा, उस समय कौन्सिल वालोंने इसके बापके वक़्के अ़हद व पैमान जारी रखनेके लिये बनारसका .इलाक़ह और २६००००) रुपया माहवार फ़ौज ख़र्चके लिये लेना चाहा, जो आसिफ़ुद्दौलहको मज्बूरन् मन्ज़ूर करना पड़ा.

बाला बाजीराव पेश्वाके मरने बाद नारायणराव पेश्वाको मारकर उसका चचा रघुनाथराव पेश्वा गद्दीपर बैठा, और बम्बईमें अंग्रेज़ोंको साल्सेटीका टापू और बसईका बन्दर देकर उनसे मदद चाही, परन्तु कलकत्तेकी कौन्सिल वालोंने मदद देना कुबूल न किया, तब .ईसवी १७७६ [वि० १८३३ = हि० ११९०] में साल्सेटीका टापू रखकर बसईका दावा छोड़दिया. पेश्वाओंके सम्बन्धका हाल मरहटोंकी तवारीख़में लिखा जावेगा.

.ईसवी १७७८ [वि० १८३५ = हि० ११९२] में .फ्रांस और इंग्लैण्डके दर्मियान लड़ाई होजानेके कारण .फ्रांसीसियोंके स्थान चन्द्रनगर, पौंडिचेरी, करिकल, मछली बन्दर और माही कुछ समयके लिये अंग्रेज़ोंने छीन लिये.

जब मरहटोंने हैदरअलीपर चढ़ाई की, तो उसने अगली शर्तोंके मुताबिक़ अंग्रेज़ोंसे मदद चाही, परन्तु मदद न मिलनेपर .ईसवी १७८० [वि० १८३७ = हि० ११९४] में बड़े लश्करके साथ मद्रासके पास चढ़ाई की, और अंग्रेज़ोंको शिकस्त दी, लेकिन् कलकत्ता व बम्बईकी मदद आजानेसे लड़ाई दूर होगई, और अख़ीरमें हैदरअलीकी पूरी हार हुई. इसी सालमें हैदरअली गुज़रगया, और उसका बेटा टीपू गद्दीपर बैठा. इस समय फिर अंग्रेज़ोंसे कुछ दिनोंतक लड़ाई हुई, परन्तु अख़ीरमें अह्द-नामह होगया, और इसी अरसहमें .फ्रांस और इंग्लिस्तान वालोंमें भी सुलह होगई.

बनारसके राजा चेतसिंहसे बाईस लाख रुपया सालानह लेना ठहराकर अंग्रेज़ोंने .इलाक़ह बनारसकी बहालीका अह्दनामह करदिया, लेकिन् उसके दीवान बाबू औसानसिंहके बहकानेसे खज़ानहके लालचमें आकर वारन हेस्टिंग्ज़ने चेतसिंहको तंग करके अह्दनामहके .अलावह बहुतसा रुपया लेनेपर भी सन्तोष न किया, और फ़ौज लेकर बनारसपर चढ़ाई की, परन्तु राजाने कुछ भी सामना न किया. इसपर भी वह उसके साथ बुरी तरहसे पेश आया, तब राजाके नौकरोंने नाराज़ होकर कई अंग्रेज़ी सिपाहियोंको क़त्ल करडाला, और अख़ीरमें अपने लश्करकी हार देखकर चेतसिंह ग्वालियरको भागगया. वारन हेस्टिंग्ज़ने बनारसकी गद्दीपर उसके भानजे महीप नारायणसिंहको बिठाया.

वारन हेस्टिंग्ज़को द्रव्यका इतना लालच था, कि वह भले बुरे और इन्साफ़ की ओर कुछ भी निगाह नहीं रखता था, और धनके लिये लोगोंको दुःख देनेमें कमी नहीं करता था. अवधकी बेगमपर उसने यह दोष लगाकर, कि उसने चेतसिंहको मदद दी थी, क़रीबन् १०००००००) रुपया बेगमसे लिया.

.ईसवी १७८६ [वि० १८४३ = हि० १२००] में जब वारन हेस्टिंग्ज़ इस्तेफ़ा देकर विलायतको गया, तो वहां उसपर पार्लिएमेण्टसे रअय्यतके साथ जुल्म और

बेरहमीका बर्ताव करने वगैरहका दोष लगाया गया, और क़रीब ७ वर्षतक मुक़द्दमह चलता रहा, जिसमें उसका सब धन बर्बाद होकर वह ग़रीबीकी हालतको पहुंचगया, और कोर्ट ऑफ़ डाइरेक्टर्सकी तरफ़से उसका गुज़ारा चला.

.ईसवी १७८६ [वि० १८४३ = हि० १२००] में लॉर्ड कॉर्नवालिस हिन्दुस्तान का गवर्नर जेनरल होकर कलकत्तेमें आया. .ईसवी १७८९ [वि० १८४६ = हि० १२०३] में टीपूने त्रावणकोरके राजापर चढ़ाई की, तब अह्दनामहके मुताबिक़ अंग्रेज़ोंने हैदराबादके नव्वाब निज़ामुल्मुल्क, और पेश्वाओंसे आपसमें मदद देनेका क़ौल क़रार करके मैसोरपर चढ़ाई की. कई जगह लड़ाइयां होते होते .ईसवी १७९२ [वि० १८४९ = हि० १२०६] में मैसोरकी राजधानी श्रीरंगपट्टनमें पहुंचकर उन्होंने टीपूपर हमलह किया. अख़ीरमें टीपूने हारकर अपने दो बेटोंको ओलमें अंग्रेज़ोंके हवाले किया, और लड़ाई ख़र्चके तीन करोड़ तीस लाख रुपये और आधा मुल्क अंग्रेज़ों, नव्वाब और मरहटोंको देकर सुलह करली.

.ईसवी १७९३ [वि० १८५० = हि० १२०७] में अंग्रेज़ों और फ़्रांसीसियोंमें फिर लड़ाई शुरू हुई, तो पौंडिचेरी वगैरह .इलाक़ोंपर अंग्रेज़ोंने क़बज़ह करलिया. लॉर्ड कॉर्नवालिसने बंगाल और बनारसमें ज़मींदारोंको इस्तमरारी पट्टा करके अदालतोंका उम्दह इन्तिज़ाम किया.

.ईसवी १७९३ [वि० १८५० = हि० १२०७] में सर जॉन शोर हिन्दुस्तान का गवर्नर जेनरल नियत हुआ. .ईसवी १७९७ [वि० १८५४ = हि० १२११] में नव्वाब वज़ीर आसिफ़ुद्दौलह मरगया, और वज़ीरअली गद्दीपर बैठा, परन्तु पीछेसे मालूम हुआ, कि यह अस्ली बेटा नहीं है, तब सर्कारने उसको ख़ारिज करके आसिफ़ुद्दौलह के भाई सआदतअलीख़ांको उसकी गद्दीपर बिठादिया, और उससे ७६०००००) रुपया सालानह फ़ौज ख़र्च और इलाहाबादका क़िला देनेका इक़ार लिखवालिया.

.ईसवी १७९८ [वि० १८५५ = हि० १२१२] में अर्ल ऑफ़ मॉर्निंगटन (मार्किस ऑफ़ वेलेज़्ली) हिन्दुस्तानका गवर्नर जेनरल होकर आया.

मैसोरके नव्वाब टीपूने अंग्रेज़ोंसे संधि करली थी, परन्तु वह .फ़्रांसीसियोंसे पोशीदह तौरपर ख़त किताबत रखता था, इसलिये गवर्नर जेनरलने इस बातसे नाराज़ होकर टीपूको लिखा, कि आगेके लिये एक अह्दनामह इस मज़्मूनका लिखदो, कि .फ़्रांसीसियोंसे किसी बातका सम्बन्ध नहीं रक्खेंगे, और जो .फ़्रेंच लोग तुम्हारे मुल्कमें हैं उनको एक दम निकाल दो; परन्तु टीपूने उसका कुछ ख़याल न किया, तब अंग्रेज़ोंने उसके मुल्कपर हमलह किया, और हैदराबादका नव्वाब भी अंग्रेज़ोंका

मददगार बना रहा, ईसवी १७९९ ता० ४ मई [वि० १८५६ वैशाख कृष्ण ऽऽ = हि० १२१३ ता० २८ ज़िल्क़ाद] को क़िला श्रीरंगपट्टन लेलिया, और टीपू लड़ाईमें मारागया. यहांपर बहुतसी बन्दूकें, तोपें, और ख़ज़ानह अंग्रेज़ोंके हाथ लगा. उसका मुल्क कुछ तो अंग्रेज़ोंने अपने क़बज़हमें रखलिया, और कुछ मैसोरके पुराने खानदानके किसी वारिसको गद्दीपर बिठाकर उसके सुपुर्द करदिया, और उसके मुल्कमें अंग्रेज़ी फ़ौज रखने और ज़ुरूरतके वक़ अंग्रेज़ोंकी तरफ़से इन्तिज़ाम करनेका अह्दनामह लिखवालिया.

तंजावर वाले राजाके निःसन्तान मरनेपर जब उसके दत्तक पुत्र और भाईके बीचमें गद्दीकी बाबत् लड़ाई शुरू हुई, तो अंग्रेज़ोंने गद्दी तो उसके बेटेको देदी, परन्तु कुछ पेन्शन मुक़र्रर करके मुल्क अपने क़बज़हमें करलिया.

सूरतका नव्वाब मरा, तो वहांपर भी इसीतरह पेन्शन देना क़बूल करके मुल्कको अपने तह्तमें लेलिया.

ईसवी १८०१ [वि० १८५८ = हि० १२१६] में करनाटकपर भी इसीतरह अंग्रेज़ोंका दख़्ल होगया.

अवधका नव्वाब सआदतअलीखां फ़ौज ख़र्च न देसका, इस सबबसे इन्होंने दबाव डालकर रुहेलखण्डपर क़बज़ह करलिया.

फ़र्रुख़ाबादके नव्वाबको भी पेन्शनदार बनालिया, और पेश्वाओंसे अंग्रेज़ी फ़ौज अपने मुल्कमें रखनेका अह्दनामह लिखवालिया.

सेंधिया और नागपुरके राजासे भी ऐसाही अह्दनामह कराना चाहा, परन्तु उनके नामन्ज़ूर होनेसे दोनों मुल्कोंपर ईसवी १८०३ [वि० १८६० = हि० १२१८] में चढ़ाई हुई, इसमें अहमदनगर और भड़ोच अंग्रेज़ोंके क़बज़हमें आये. उधर लॉर्ड लेकने अलीगढ़में सेंधियाकी फ़ौजको शिकस्त दी. लसवारी मक़ाममें मरहटोंकी ऐसी शिकस्त हुई, कि सेंधियाकी ताक़त टूटगई. अहमदनगर छीन लेनेके बाद दक्षिणमें भी मरहटोंकी शिकस्त होती रही, और बुर्हानपुर, आसीरगढ़ और गाविलगढ़ अंग्रेज़ोंके क़बज़हमें आये. नागपुरके राजाका वाईका क़िला भी ज़ब्त करलिया, और कटकका इलाक़ह लेकर उससे सुलह करली. अहमदनगर और भड़ोच खोकर सेंधियाने फ़्रांसीसियोंको न रखनेका इक़्रार करलिया. इन्दौरका राजा जशवन्तराव हुल्कर सर्कारी इलाक़हमें लूटमार करता था, इसलिये उसपर भी चढ़ाई की. कर्नेल् मॉन्सनने टोंकका क़िला फ़त्ह करलिया, परन्तु मुकन्दरा घाटेमें अंग्रेज़ोंकी हार होनेसे हुल्करने बहुत जोशमें आकर २०००० सेनासे दिल्लीको जाघेरा, मगर ऑक्टरलोनीने मरहटोंको पराजय किया, और ऐसी ही डीगमें भी अंग्रेज़ोंकी फ़त्ह हुई. लॉर्ड लेकने

फ़र्रुख़ाबादके पास हुल्करको ऐसी शिकस्त दी, कि उसको भरतपुरकी राजधानी डीगमें जाकर शरण लेनी पड़ी. अंग्रेज़ोंने पीछा किया, और हुल्करको पनाह देनेके कारण भरतपुर वालोंको सज़ा देनेके लिये डीगका क़िला फ़त्ह करके लेलिया. ईसवी १८०५ ता० ३ जैन्युअरी [वि० १८६१ पौष शुक्ल २ = हि० १२१९ ता० १ शव्वाल] को लेकने भरतपुर पर घेरा डाला, और चार दफ़ा बड़ी बहादुरीके साथ हमलह किया, परन्तु ३००० से ज़ियादह आदमी मारेगये और क़िला फ़त्ह न हुआ, तब वापस लौटना पड़ा. इसके बाद खुद राजा रणजीतसिंहने अपने बेटे रणधीरसिंहको क़िलेकी कुंजी देकर लॉर्ड लेकके पास भेजदिया, जिसने बड़ी ख़ातिरदारीके साथ कुछ फ़ौज ख़र्च लेकर सुलहका अहदनामह करलिया. लॉर्ड वेलेज़्लीकी यह पॉलिसी थी, कि देशी राजाओंको कमज़ोर करके कम्पनीका मुल्क बढ़ाया जावे, परन्तु लड़ाइयोंका ख़र्च ज़ियादह होनेके सबब कम्पनीके मेम्बर इस कार्रवाईसे कुछ नाराज़ होगये.

ईसवी १८०५ [वि० १८६२ = हि० १२२०] में लॉर्ड कॉर्नवालिस दूसरी दफ़ा हिन्दुस्तानका गवर्नर जेनरल नियत होकर आया. इसकी पॉलिसी लड़ाई करनेसे विरुद्ध थी, परन्तु वह इसी साल ग़ाज़ीपुरमें मरगया, तब उसकी जगह सर ज्यॉर्ज बार्लो हिन्दुस्तानका गवर्नर जेनरल नियत होकर आया, जिसने सेंधियासे सुलह करली, हुल्करसे भी अहदनामह किया, और जयपुर व बूंदीकी रक्षा करना छोड़कर उनको मरहटोंका शिकार बनादिया.

ईसवी १८०६ [वि० १८६३ = हि० १२२१] में मद्रासके सिपाहियोंने वेलूरमें ग़द्र किया, और कितनेएक अंग्रेज़ मारेगये.

ईसवी १८०७ [वि० १८६४ = हि० १२२२] में लॉर्ड मिन्टो गवर्नर जेनरल नियत होकर आया, और ईसवी १८१२ [वि० १८६९ = हि० १२२७] में कालिंजरका क़िला उसके हाथ लगा.

इस समय जबकि फ़्रांसके नामी बादशाह नेपोलियन बोनापार्टने अपना वकील ईरानके बादशाहके पास भेजा, तो अंग्रेज़ोंने भी पंजाब, अफ़ग़ानिस्तान, और ईरानके बादशाहोंसे संधि करना मुनासिब समझा, और पंजाबके राजा रणजीतसिंहसे ईसवी १८०९ [वि० १८६६ = हि० १२२४] में दोस्तीका अहदनामह होगया. अफ़ग़ानिस्तानके अमीर शुजाउल्मुल्कके पास लॉर्ड मिन्टोने मॉन्स्टुअर्ट एल्फ़िन्स्टनको भेजा, और ईरानके बादशाहके पास भी विलायतका वकील गया.

ईसवी १८१४ [वि० १८७१ = हि० १२२९] में लॉर्ड मॉइरा (मार्क्विस ऑफ़ हेस्टिंग्ज़) हिन्दुस्तानका गवर्नर जेनरल होकर आया. जब नयपाली लोग

अपना मुल्क बढ़ाते बढ़ाते अंग्रेज़ी सर्हद्दकी तरफ़ आने लगे, तो अंग्रेज़ोंको उनसे लड़ाई करना फ़र्ज़ हुआ, और इसी वर्षमें जेनरल जिलेस्पीने कलंगा नामी क़िलेपर हमलह किया, परन्तु वह तो वहीं मारागया, और फ़ौज शिकस्त खाकर वापस आई. इसी तरह जेतक और पाल्पा नामके क़िलेपर फ़ौज गई, उसको भी शिकस्त मिली. फिर जेनरल मारलो काठमांडूपर हमलह करनेको गया, परन्तु वह भी पीछा चला आया. यह हाल देखकर जेनरल ऑक्टरलोनीने नयपालियोंपर चढ़ाई की, और नालागढ़का क़िला ख़ाली करवाकर कई जगह नयपालियोंको शिकस्त दी, और अख़ीरमें अह्दनामह होकर अंग्रेज़ोंका गयाहुआ मुल्क वापस उनके हाथमें आनेके अलावह काठमांडूमें सर्कारी रेज़िडेण्टका रहना क़रार पाया.

इस समय पिंडारी नामके लुटेरोंने मध्य हिन्दुस्तानमें ऐसा उपद्रव मचाया, कि सर्कार को इन लोगोंकी सज़ादिहीके लिये फ़ौज भेजनी पड़ी. इन पिंडारियोंके सर्दार अमीरख़ां ने भी बहुतसी सेना व तोपख़ानह एकट्ठा करलिया था, जिससे गवर्मेण्टने अपनी फ़ौज के १२०००० आदमियोंसे दो तर्फ़ा हमलह किया, और उनको ऐसा दबाया, कि अमीरख़ांने अपनी लुटेरी फ़ौजको दूर करनेका अह्दनामह इस शर्तपर लिखदिया, कि टौंकका .इलाक़ह उसका बना रहे; और बाक़ी दो सर्दारों याने करीम और चीतूमेंसे करीम तो अंग्रेज़ोंकी पनाहमें चला आया, और चीतू जंगलमें शेरके हाथसे मारागया.

ईसवी १८१७ [वि० १८७४ = हि० १२३२] में मरहटोंने फिर सिर उठाया. इस वक़ भी अंग्रेज़ोंको मरहटोंसे लड़ना पड़ा और महीदपुरकी लड़ाईमें उन्हें शिकस्त देकर उनके क़बज़हका मुल्क अंग्रेज़ी मुल्कके साथ मिलालिया, और पेश्वाको ८००००० आठ लाखकी पेन्शनपर बिठूरमें रक्खा.

इन्हीं दिनों राजपूतानहमें भी कई अह्दनामे हुए.

.ईसवी १८२३ [वि० १८८० = हि० १२३८] में मार्क्विस ऑफ़ हेस्टिंग्ज़ विलायतको गया, और उसकी जगह लॉर्ड एम्हर्स्ट आया. इस समय ब्रह्मा वालोंने अराकान, मणिपुर (मनीपुर) और आसामका मुल्क दबाकर कछारपर हमलह किया, इससे अंग्रेज़ोंको कछारकी मददपर जाना पड़ा. दो बरसतक लड़ाई होनेके बाद यंडाबूमें सुलहनामह हुआ; जिससे आवाके राजाने आसामका दावा छोड़दिया और अराकान व तनासरिम भी अंग्रेज़ोंके क़बज़ .में आगये.

.ईसवी १८२५ [वि० १८८२ = हि० १२४०] में भरतपुरके राजा बलवन्त-सिंहको उसके चचेरे भाई दुर्जनशालने गद्दीकी बाबत् बखेड़ा डालकर ख़ारिज करदिया,

और आप गद्दीपर बैठकर डीगमें फ़ौज एकट्ठी करने लगा, तब अंग्रेज़ोंने ईसवी १८२७ ता० १८ जैन्युअरी [वि० १८८३ माघ कृष्ण ५ = हि० १२४२ ता० १९ जमादिउस्सानी] में सुरंगोंसे भरतपुरका क़िला तोड़कर उसे क़ैद कर बलवन्तसिंहको गद्दीपर बिठादिया.

लॉर्ड एम्हर्स्टके विलायत चलेजानेपर लॉर्ड बेंटिंक गवर्नर जेनरल नियत होकर आया. इसके समयमें सतीका रवाज बन्द हुआ, कुडक (कुर्ग) का मुल्क अंग्रेज़ी अमल्दारीमें मिलाया गया, और सर्कारी ख़र्चमें कमी कीगई.

ईसवी १८३५ [वि० १८९२ = हि० १२५१] में जब लॉर्ड बेंटिंकने अपना काम छोड़दिया, तो लॉर्ड मेट्कॉफ़ थोड़े रोज़तक गवर्नर जेनरलके कामपर रहा, जबतक कि लॉर्ड ऑक्लैंड गवर्नर जेनरल नियत होकर हिन्दुस्तानमें नहीं आया.

ईसवी १८३७ [वि० १८९४ = हि० १२५३] में लखनऊकी गद्दीकी बाबत् बेगमने फ़साद खड़ा किया. इसलिये अंग्रेज़ोंने हक़दारको गद्दीपर बिठाकर बेगमको क़ैद करके चुनारगढ़में भेजदिया. इसी अरसहमें सिताराके राजाने अंग्रेज़ोंके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई शुरू की, जिससे वह क़ैद कियाजाकर बनारसको भेजदिया गया, और उसका भाई सितारेका मालिक बनाया गया.

इन्हीं दिनोंमें शाह शुजाअको अफ़ग़ानिस्तानकी गद्दीसे उतारकर उसका भाई महमूद मालिक बन बैठा, और शुजाअ अंग्रेज़ोंकी पनाहमें आया. कुछ अरसहके बाद महमूदको गद्दीसे ख़ारिज करके उसके वज़ीरका बेटा दोस्त मुहम्मदख़ां काबुलपर क़ाबिज़ होगया, और रूसके साथ मेल मिलाप रखने लगा; तब अंग्रेज़ोंने रूसका अन्दरूनी मत्लब हिन्दुस्तानकी तरफ़ बढ़नेका समझकर शाह शुजाअको पीछा काबुलकी गद्दीपर बिठाना चाहा, और रणजीतसिंहको साथ लेकर अफ़ग़ानिस्तान पर चढ़ाई की. ईसवी १८३९ ता० ८ मई [वि० १८९६ ज्येष्ठ कृष्ण १० = हि० १२५५ ता० २३ सफ़र] को कंधारमें पहुंचकर शुजाअको गद्दीपर बिठादिया. ईसवी ता० २३ जुलाई [वि० आषाढ़ शुक्ल १२ = हि० ता० ११ जमादियुल्अव्वल] को ग़ज़नी लेकर ईसवी ता० ७ ऑगस्ट [वि० श्रावण कृष्ण १३ = हि० ता० २६ जमादियुल्-अव्वल] के दिन अंग्रेज़ी फ़ौज काबुलमें दाख़िल हुई, दोस्त मुहम्मद भागकर तुर्किस्तानको चलागया और शाह शुजाअको काबुलकी गद्दी हासिल हुई. यहांपर मददके लाइक़ फ़ौज छोड़कर बाक़ी अंग्रेज़ी सेना हिन्दुस्तानको चली आई. अफ़-ग़ानिस्तानकी रअय्यत शाह शुजाअसे नाराज़ थी, इसलिये कई एक लोगोंने ग़द्र मचाया और दोस्त मुहम्मदका बेटा अक्बरख़ां भी बलवाइयोंके शामिल होगया. इस ग़द्रने बड़ा ज़ोर पकड़ा, यहांतक कि अंग्रेज़ी एल्ची बार्निस और सर विलिअम मेक्नॉटन

वगैरह कई अंग्रेज़ लोग क़त्ल करडाले गये. इसके बाद अंग्रेज़ोंने अक्बरख़ांसे ६ तोपके सिवा सब तोपख़ानः और ख़ज़ानह काबुलमें छोड़कर हिन्दुस्तानमें चले जानेका इक्रार करके सुलह करली. जब अंग्रेज़ी फ़ौज वहांसे रवानह हुई तो अक्बरख़ां उनकी हिफ़ाज़तके लिये साथ चला. इस दग़ाबाज़ने रास्तेमें बलवाइयोंको इशारह करदिया, जिससे अंग्रेज़ोंपर गोलियां चलने लगीं. यह निर्दई ज़ाहिरदारीमें तो बलवाइयोंको रोकता रहा, लेकिन् काबुली बोलीमें यह कहता रहा, कि अंग्रेज़ोंका एक आदमी भी जीता न छोड़ो. आख़रकार नतीजह यह हुआ, कि उन १६५०० आदमियोंमेंसे, जो काबुल से निकले थे, सिर्फ़ एक डॉक्टर ब्रैडन जीता बचकर जलालाबादमें पहुंचा. जलालाबाद में रॉबर्ट सेल नामी एक अफ़्सर था उसने क़िला ख़ाली न किया और अक्बरख़ांकी ६००० सेनासे न डटा. क़न्धारमें जेनरल नॉटने बाग़ियोंके दांत खट्टे किये, परन्तु ग़ज़नीमें कर्नेल् पामरके पास रसद वगैरह सामान पूरा न होनेके सबब अख़ीरमें उसे क़िला छोड़ना पड़ा और कुल लश्कर पिशावर आता हुआ रास्तेमें मारागया.

ईसवी १८४२ [वि० १८९९ = हि० १२५८] में लॉर्ड ऑक्लैंड विलायतको चलागया, और लॉर्ड एलम्बरा गवर्नर जेनरल नियत होकर हिन्दुस्तानमें आया. इसके समयमें जलालाबादके लश्करकी मदद को और अफ़ग़ानोंको सज़ा देनेके लिये अंग्रेज़ी सेना काबुलकी तरफ़ रवानह हुई और एप्रिलके महीनेमें जलालाबादको पहुंची, और ऑगस्ट में वहांसे आगे बढ़कर अक्बरख़ांकी सेनाके साथ, जिसकी संख्या १६००० थी, मुक़ाबलह किया. इसमें अंग्रेज़ोंकी फ़त्ह हुई, और सेप्टेम्बर महीनेमें अंग्रेज़ी लश्कर काबुलमें दाख़िल हुआ. शाह शुजाअ़ तो मार्च महीनेमें माराही गया था, अब अंग्रेज़ी क़ैदियों (औरत व बच्चों) को छुड़ाना बाक़ी था, जो पहिली चढ़ाईमें अक्बरख़ांके हाथ पड़गये थे. कुछ फ़ौज जो क़न्धारको गई थी वह भी ग़ज़नीका क़िला तोड़कर महमूद ग़ज़नवीके मक्बरे से सोमनाथके चन्दनके किंवाड़ (१) लेकर इसवक़ काबुलके लश्करमें आमिली, और अंग्रेज़ लोग अपने क़ैदी बाल बच्चों और मेमोंको छुड़ाकर हिन्दुस्तानमें चले आये.

ईसवी १८४३ [वि० १९०० = हि० १२५९] में जब सिन्धके अमीरोंने सिर उठाया, तो सर चार्ल्स नेपीअरने मियानी स्थानपर अमीरोंकी २०००० फ़ौजको शिकस्त देकर मीरपुरमें अपना दख़्ल जाजमाया, और अमरकोटका क़िला लेलिया. इसके बाद आहिस्तह आहिस्तह अमीर लोग भी सर्कारी क़ैदमें चलेआये और सिन्धपर सर्कारी अधिकार होगया.

इसी समय ग्वालियरमें गद्दीकी बाबत् बखेड़ा खड़ा होकर आपसमें लड़ाई

(१) हंटर साहिब लिखते हैं, कि ये किंवाड़ सोमनाथके नहीं हैं, पीछेसे नये बनाये गये हैं.

होनेलगी, तब अंग्रेज़ लोग ग्वालियर महाराजाके बचावका इश्तिहार देकर अपना लश्कर ग्वालियरमें लाये, और महाराजपुर और पनीयरकी लड़ाईमें सेंधियाके लश्करको शिकस्त देकर इस म॰॰नका नया अह्दनामह लिखवालिया, कि महाराजा १८ वर्षके होजावें तबतक राजका काम अंग्रेज़ी रेज़िडेण्टकी सलाहसे होता रहे, और कंटिन्जेंट फ़ौज बढ़ाई जाकर उसके ख़र्चके लिये कुछ मुल्क अंग्रेज़ी सर्कारको देदियाजावे.

इसी सालमें लॉर्ड एलम्बराको पीछा विलायत बुलालिया, और उसकी जगह सर लॉर्ड हार्डिंग गवर्नर जेनरल नियत हुआ.

जब सिक्खोंका राजा रणजीतसिंह मरा, तो गद्दीकी बाबत् बड़ा बखेड़ा फैला, और लश्करकी ताक़त ख़ूब बढ़गई, कितनेएक राजा और सर्दार फ़ौजी आदमियोंके हाथसे मारेगये, और अख़ीरमें दिलीपसिंह गद्दीपर बैठा. .ईसवी १८४५ [वि० १९०२ = हि० १२६१] में राजा लालसिंह और सर्दार तेजसिंह ६०००० आदमी और १५० तोप लेकर सतलज नदीके पार उतरे, और अंग्रेज़ी फ़ौजपर हमलह किया. सर ह्यूज़ गॉफ़ अंग्रेज़ी फ़ौजका सेनापति, और ख़ुद गवर्नर जेनरल सिक्खोंसे मुक़ाबलह करनेके लिये गये और तीन हफ्तहमें मुडकी, फ़ीरोज़ शहर, अलीवाल और सोब्राउन इन चार स्थानोंमें बड़ी बड़ी लड़ाइयां हुईं. इसमें अंग्रेज़ोंका बहुतसा नुक्सान हुआ, परन्तु अख़ीरमें अंग्रेज़ोंकी फ़तह होनेसे सिक्ख लोग पीछे हटगये और अंग्रेज़ी फ़ौज लाहौरमें दाख़िल हुई. अह्दनामह लिखानेके बाद दिलीपसिंहको गद्दीपर बिठाया, और जालंधर दुआब, अर्थात् सतलज और रावीके बीचका मुल्क अंग्रेज़ी ख़ालिसहमें आगया. .ईसवी १८४८ [वि० १९०५ = हि० १२६४] में सर लॉर्ड हार्डिंग विलायतको गया, और उसकी जगह लॉर्ड डल्हाउसी गवर्नर जेनरल नियत होकर हिन्दुस्तानको आया.

पंजाबके इन्तिज़ाममें ख़लल होनेके सबब वहां गद्र मचगया, और दो अंग्रेज़ दग़ासे मारेगये. फिर अंग्रेज़ोंसे लड़ाई शुरू हुई. .ईसवी १८४९ ता० १३ जैन्युअरी [वि० १९०५ माघ कृष्ण ५ = हि० १२६५ ता० १८ सफ़र] को चिलियांवालाकी लड़ाईमें २४०० आदमी अंग्रेज़ोंके मारेगये, लेकिन् लॉर्ड गॉफ़ने गुजरातकी लड़ाईमें सिक्खोंको पूरी [illegible]कस्त दी, और पंजाब अंग्रेज़ी राज्यके शामिल कियाजाकर महाराजा दिलीपसिंहके लिये ५८००००) रुपया सालानह देना मुक़र्रर करके वह विला[illegible]त भेजदिया गया.

.ईसवी १८५२ [वि० १९०९ = हि० १२६८] में रंगूनके अंग्रेज़ी व्यापारियोंपर ब्रह्माके राजाने ज़ियादती की, जिसपर अंग्रेज़ोंको फ़ौज भेजनी पड़ी; [illegible]

और रंगून फ़त्ह करके .ईसवी १८५२ ता० २८ डिसेम्बर [वि० १९०९ पौष कृष्ण २ = हि० १२६९ ता० १६ रबीउल्अव्वल] को पेगूका सूबा भी ज़ब्त करलिया गया.

.ईसवी १८४८ [वि० १९०५ = हि० १२६४] में सिताराका राजा लावलद मरगया और उसका मुल्क खालिसहमें शामिल कियागया. .ईसवी १८५३ [वि० १९१० = हि० १२६९] में झांसीका, और इसी सालमें नागपुरका मुल्क भी अंग्रेज़ी अमल्दारी में आगया. .ईसवी १८५६ [वि० १९१३ = हि० १२७२] में बद इन्तिज़ामीका वृथा दोष लगाकर अवधका मुल्क भी खालिसह करलिया.

इसी साल लॉर्ड डल्हाउसीकी जगह लॉर्ड केनिंग गवर्नर जेनरल होकर हिन्दुस्तानमें आया.

.ईसवी १८५७ [वि० १९१४ = हि० १२७३] में सूबे बंगालकी पल्टनको राइफ़ल नामकी बन्दूकें दीगई, जिनके कार्तूसोंपर चरबी लगाई गई थी. कई लोगों ने यह अफ़वाह मश्हूर करदी, कि इनपर गाय और सूअरकी चरबी लगी है. यह बात सुनकर हिन्दुस्तानकी फ़ौजने कार्तूसोंको मुंहमें लेनेसे इन्कार किया, और बहुतसा समझानेपर भी उनका सन्देह दूर न हुआ, तब बारकपुरमें १९ वीं पल्टनका नाम गवर्नर जेनरलके हुक्मसे काटदिया गया, जिससे दूसरी पल्टनवालोंके दिलमें अधिक सन्देह पैदा हुआ, और ३४ वीं पल्टनके एक सिपाहीने अपने अफ़्सरपर हथियार चलाया, जिसको दूसरे सिपाहियोंने गिरिफ़्तार न किया. इस जुर्ममें ७ कम्पनियोंके नाम एकदमसे काटदिये गये. गवर्मेएटको यह भरोसा था, कि इस तरहपर सज़ा देनेसे ये लोग दबजायेंगे, परन्तु वे ज़ियादह बिगड़े और मेरटमें .ईसवी ता० १० मई [वि० ज्येष्ठ कृष्ण १ = हि० ता० १५ रमज़ान] को ग़द्र शुरू होगया, लाइन जलादी गई, बाग़ियोंने अंग्रेज़ोंको मारना शुरू किया, और जेलखानेसे कैदियोंको छुड़ादिया; वहांसे रवानह होकर बाग़ी लोग दिल्लीको गये, वहांकी सेना भी बाग़ियोंके शामिल होगई और हज़ारहा कैदियोंको छुड़ादिया. इसवक्त मुसल्मानोंके दिलमें मुसल्मानी बादशाहत फिरसे क़ाइम करनेका इरादह पैदा हुआ और जगह जगह बलवा शुरू होकर कई अंग्रेज़ मए औरत व बाल बच्चोंके क़त्ल करडाले गये, खज़ाने लूटे गये, कैदी रिहा कियेगये, छावनियां जलादी गई, और बाग़ी लोग दिल्लीकी तरफ़ एकट्ठे होतेगये. मगर सिक्ख लोग अंग्रेज़ोंके [illegible]दार बनेरहे, और बम्बई व मद्रासकी फ़ौज सर्कारकी मददगार बनी रही. जब कानपुरमें ग़द्र हुआ, तो बाला बाजीराव [illegible] पुत्र धंडुपंथ, जिसको नाना साहिब भी कहते हैं बिठूरसे आकर बाग़ियोंका सर्दार बनगया, और जेनरल ह्वीलरको जाघेरा. बाईस रोज़तक लड़नेके बाद बारूद, गोला वग़ैरह

सामान ख़त्म होजानेके सबब ह्वीलर साहिबने नाना साहिबसे बचन लेकर मोर्चा छोड़-दिया, परन्तु इसने विश्वासघात करके क़रीब ७०० अंग्रेज़ों व उनके बाल बच्चों वगैरह को मारडाला. अलावह इसके फ़त्हगढ़की तरफ़से जो १०० या २०० अंग्रेज़ कानपुरकी तरफ़ आते थे उनको भी क़त्ल करडाला. अवधमें वाजिदअलीशाहके बेटेने बादशाहत क़ाइम करदी, अवधके तअ़ल्लुक़ेदार भी बाग़ियोंके शामिल होगये. इसी तरह रुहेलखण्ड भी बिगड़ा और नीमच व नसीराबादमें (१) भी गृद्र खड़ा हुआ, हुल्कर व सेंधियाकी फ़ौजें बिगड़ीं, और झांसीकी राणी भी अपना राज्य फिरसे क़ाइम करनेको उद्यत हुई.

जब इसतरह उत्तरी हिन्दुस्तानमें गृद्र फैला, तो गवर्मेण्टने फ़ौजकशी करने का हुक्म दिया, और पांच सात हज़ार सेना दिल्लीमें ईसवी ता० ८ जून [वि० आषाढ़ कृष्ण १ = हि० ता० १५ शव्वाल] को आपहुंची. बाग़ियोंसे लड़ाई शुरू होकर ईसवी ता० १४ सेप्टेम्बर [वि० आश्विन कृष्ण ११ = हि० १२७४ ता० २४ मुहर्रम] को शहरपर हमलह हुआ, तीन रोज़तक गली कूचोंमें लड़ाई होती रही, जिसमें हज़ारहा आदमी मारेगये. सर्कारी फ़ौजके क़िलेमें दाख़िल होते ही बादशाह वहांसे निकल भागा, परन्तु जान बचानेकी शर्तपर मए बेगम और बेटोंके क़ैदमें आगया. बादशाह वहांसे रंगूनमें भेजदिया गया और शाहज़ादोंको हडसन साहिबने गोलियोंसे मारडाला.

जेनरल हेवलॉक साहिबकी मातहतीमें इलाहाबादसे फ़ौज रवानह हुई, और उसने ईसवी ता० १६ जुलाई [वि० श्रावण कृष्ण १० = हि० १२७३ ता० २३ ज़िल्क़ाद] को कानपुरके पास नाना साहिबको शिकस्त दी. कानपुरसे फ़ुर्सत पाकर अंग्रेज़ी सेना लखनऊ की तरफ़ रवानह हुई, और शहरको जाघेरा. नयपालकी तरफ़से जंगबहादुर भी सात आठ हज़ार गोरखा सिपाहियोंके साथ अंग्रेज़ी दुश्मनोंको काटता हुआ लखनऊमें आपहुंचा. जो बाग़ी लोग अंग्रेज़ोंके हाथसे बचे वे तराईमें जाकर जंगली जानवरोंका शिकार बने. दिल्ली और लखनऊका शहर टूटनेसे बाग़ियोंकी हिम्मत टूटगई, और ईसवी १८५८ [वि० १९१५ = हि० १२७४] में तमाम जगह गृद्र दबगया, और पहिले की बनिस्बत ज़ियादहतर सर्कारी इन्तिज़ाम होगया. गृद्र रफ़ा होनेके बाद हिन्दुस्तान का राज्य कम्पनीके हाथसे निकलकर मलिकह के आधीन होगया, और मलिकहकी तरफ़से एक इश्तिहार जारी हुआ, जिसकी नक़्ल मेवाड़के हालमें लिखेंगे.

---

(१) राजपूतानहका कुछ और मेवाड़के गृद्रका मुफ़स्सल हाल महाराणा स्वरूपसिंहके हालमें लिखा जायेगा.

.ईसवी १८६२ के मार्च [वि० १९१८ फाल्गुन = हि० १२७८ रमज़ान] में लॉर्ड केनिंग विलायतको गया, और वहां एक महीनेके भीतर मरगया. उसकी जगह लॉर्ड एल्ज़िन मुक़र्रर हुआ, और वह भी .ईसवी १८६३ के नोवेम्बर [वि० १९२० कार्तिक = हि० १२८० जमादियुस्सानी] में मरगया और उसकी जगह सर (लॉर्ड) जॉन लॉरेन्स नियत हुआ.

.ईसवी १८६४ [वि० १९२१ = हि० १२८१] में भूटानसे लड़ाई हुई, .ईसवी १८६६ [वि० १९२३ = हि० १२८३] में उड़ीसामें बड़ा दुष्काल पड़ा, और अफ़ग़ानिस्तानमें दोस्त मुहम्मदके बेटोंमें लड़ाइयां हुईं, तो लॉर्ड लॉरेन्सने शेरअलीको अफ़ग़ानिस्तानका अमीर क़बूल किया.

.ईसवी १८६९ के जैन्युअरी [वि० १९२५ माघ = हि० १२८५ शव्वाल] में लॉर्ड लॉरेन्स विलायतको रवानह हुआ, और उसकी जगह लॉर्ड मेयो आया. इसने अम्बालामें दर्बार करके शेरअलीको अफ़ग़ानिस्तानका अमीर क़रार दिया. .ईसवी १८६९ के डिसेम्बर [वि० १९२६ मार्गशीर्ष = हि० १२८६ रमज़ान] में श्री मती मलिकह का द्वितीय पुत्र ड्यूक ऑफ़ एडिम्बरा हिन्दुस्तानकी यात्राके लिये आया.

लॉर्ड मेयोके समयमें राज्य सम्बन्धी कारोबारका कई विभागोंमें सुधारा हुआ, खेतीका महकमह जारी हुआ, और सड़क, रेल, व नहरें बढ़ाई गईं.

.ईसवी १८७२ [वि० १९२९ = हि० १२८९] में वह ऐण्डमानके टापू (कालापानी) को गया, और वहां शेरअली नामके एक अफ़ग़ान क़ैदीके हाथसे मारागया.

इसके बाद लॉर्ड नॉर्थब्रुक हिन्दुस्तानका गवर्नर जेनरल हुआ.

.ईसवी १८७५ [वि० १९३२ = हि० १२९२] में बड़ौदाका गाइकवाड़ मल्हारराव राज्य पदसे ख़ारिज कियागया.

.ईसवी १८७५-७६ [वि० १९३२ = हि० १२९२-९३] के शीत कालमें महाराणीके ज्येष्ठ पुत्र श्रीमान् प्रिन्स ऑफ़ वेल्सने हिन्दुस्तानकी यात्रा की.

.ईसवी १८७६ [वि० १९३३ = हि० १२९३] में लॉर्ड नॉर्थब्रुककी जगह लॉर्ड लिटन हिन्दुस्तानका गवर्नर जेनरल हुआ.

.ईसवी १८७७ ता० १ जैन्युअरी [वि० १९३३ माघ कृष्ण २ = हि० १२९३ ता० १५ ज़िल्हिज] को श्रीमती मलिकहके "क़ैसर हिन्द" पद धारण करनेका दिल्ली में दर्बार हुआ, जिसका पूरा हाल महाराणा सज्जनसिंह साहिबके हालमें लिखा जायेगा. इन दिनोंमें अफ़ग़ानिस्तानका अमीर शेरअली रूसवालोंसे मेल मिलाप रखनेलगा.

और उसने अंग्रेज़ी वकीलको अपने मुल्कमें आनेसे रोका, जिससे उसपर फ़ौजकशी करनी पड़ी. ख़ैबर, कुरम और बोलान इन तीन रास्तोंसे फ़ौज भेजी गई. शेरअली भागकर अफ़ग़ान तुर्किस्तानको चलागया; उसके बेटे याकूबख़ांसे अह्दनामह हुआ, और एक अंग्रेज़ी अफ्सर काबुलमें रहना क़रार पाया; लेकिन् थोड़े ही महीनोंमें अंग्रेज़ी रेज़िडेएट सर लुइस कैवगनेरी दग़ासे मारागया, इसपर दूसरी बार फ़ौज कशी करनेकी ज़ुरूरत हुई.

.ईसवी १८८० [वि० १९३७ = हि० १२९७] में मार्किस ऑफ़ रिपन हिन्दुस्तानका गवर्नर जेनरल नियत हुआ. इसी सालमें क़न्धार और हेलमण्ड नदी के बीचमें अय्यूबख़ांसे अंग्रेज़ी लश्करकी हार हुई, परन्तु सेप्टेम्बर महीनेमें जेनरल सर .फ्रेडेरिक रॉबर्टने अय्यूबख़ांको पूरी शिकस्त दी, और अब्दुर्रहमानख़ांको अंग्रेज़ोंकी तरफ़ से काबुलका अमीर मुक़र्रर किया, और याकूबख़ांको क़ैदी बनाकर अंग्रेज़ी लश्कर वापस लौटआया. थोड़े दिनोंमें अय्यूबख़ांने अब्दुर्रहमानख़ांको शिकस्त देकर क़न्धारपर क़बज़ह किया, परन्तु अब्दुर्रहमानने फिर लड़ाई करके दोबारह क़न्धारपर अपना क़बज़ह जमाया. .ईसवी १८८१ [वि० १९३८ = हि० १२९८] में मैसोरका राज्य, जहांका कारोबार .ईसवी १८३१ [वि० १८८८ = हि० १२४६] से अंग्रेज़ों के तअ़ल्लुक़में था, वापस वहांके हिन्दू राजाको देदिया गया.

अलावः इसके देशी अख़्बारोंके लिये राज्य विरुद्ध सच्ची बात लिखनेका जो बन्धन था वह तोड़दिया गया. .ईसवी १८८२ [वि० १९३९ = हि० १२९९] में विदेशी मालका दाण अक्सर मुआ़फ़ हुआ. इस वाइसरॉयने हिन्दुस्तानियोंके फ़ायदह के लिये जितना कुछ किया उतना दूसरे किसी वाइसरॉयने नहीं किया, और यह ऐसा लोकप्रिय हुआ, कि आजतक भारतवर्षके लोग बड़े हर्षके साथ इसका स्मरण करते हैं.

.ईसवी १८८४ [वि० १९४१ = हि० १३०१] में इसकी जगह अर्ल ऑफ़ डफ़रिन हिन्दुस्तानमें आया. .ईसवी १८८५ [वि० १९४२ = हि० १३०२] में ब्रह्मामें अंग्रेज़ी व्यापारियोंसे कुछ बखेड़ा उठनेपर फ़ौजकशी हुई, और आसानीसे ब्रह्मापर सर्कारी क़बज़ह होकर राजा थीबा गिरिफ्तार कियाजाकर हिन्दुस्तानमें लाया-गया. इसके बाद लॉर्ड डफ़रिन भी ख़ुद ब्रह्माको गया था. .ईसवी १८८८ के डिसेम्बर [वि० १९४५ मार्गशीर्ष = हि० १३०६ रबीउस्सानी] में इसकी जगह मार्किस ऑफ लैन्सडाउन हिन्दुस्तानके गवर्नर जेनरल नियत हुए.

इसलिये यह हाल मेवाड़के जुग्राफ़ियेमें लिखनेके लिये छोड़कर अब हम संक्षेपसे राजपूतानहका जुग्राफ़ियह शुरू करते हैं:-

राजपूतानहका जुग्राफ़ियह.

सीमा—राजपूतानहके उत्तरमें पंजाब; पश्चिममें, सिन्ध व गुजरात; दक्षिणमें, महीकांठा व मालवा; और पूर्वमें, ग्वालियर व रुहेलखंड है. लम्बाई इसकी ५३० मील, चौड़ाई ४६० मील, क्षेत्रफल १३२४६१ मील मुरब्बा, और आबादी ईसवी १८८१ की गणनाके अनुसार १०७२९११४ मनुष्योंकी है.

पहाड़— अर्वली पहाड़ राजपूतानहमें सबसे बड़ा और मुख्य है. यह पहाड़ी सिलसिलह ईशान कोणसे शुरू होकर नैऋत कोणतक चलागया है; आबू स्थानपर इसकी सबसे बड़ी चोटी गुरुशिखर है, जो समुद्रके सत्हसे ५६५३ फ़ीट ऊंची है. इस पहाड़के बीचमें वाक़े होनेसे राजपूतानहके दो भाग होगये हैं, याने एक उत्तर-पश्चिमी और दूसरा दक्षिण-पूर्वी. उत्तर-पश्चिमी विभागके दक्षिणी प्रान्तमें कहीं कहीं छोटी छोटी पहाड़ियां हैं.

अर्वली पहाड़से दक्षिण तरफ़ विकट झाड़ियां और पहाड़ फैलकर दक्षिणमें विन्ध्याचलतक पहुंचगये हैं, और पूर्व तरफ़ छोटी छोटी पहाड़ियां हैं. अर्वलीके सिवा राजपूतानहमें दूसरा कोई पहाड़ वर्णन करनेके योग्य नहीं है.

नदियां—राजपूतानहके पश्चिमोत्तरी भागमें प्रसिद्ध नदी लूनी है, जो प्राय: २०० मील दक्षिण और पश्चिममें बहकर कच्छके रणमें चली जाती है; और सबसे बड़ी नदी चम्बल है, जो शहर कोटाके पास बहती हुई जमुनासे जामिलती है. चम्बलसे घटकर प्रसिद्ध नदी बनास है. यह मेवाड़में बहकर चम्बलमें जागिरती है. मेवाड़की दक्षिण-पश्चिम पहाड़ियोंके बीचमें पश्चिमी बनास और साबरमती निकलती है, लेकिन् राजपूतानहको पार करनेके पहिले यह बड़ी नहीं होती, इसलिये यहां ज़ियादह प्रसिद्ध नहीं है. माही जो गुजरातमें बड़ी नदी है, वह कुछ दूरतक प्रतापगढ़ और बांसवाड़ाके राज्योंमें बहती है.

झीलें— राजपूतानहमें बड़ी झील सांभर है, जो सांभरकी खारी झीलके नामसे प्रसिद्ध है. ढेबर (जयसमुद्र), राज समुद्र, और उदयसागर ये तीनों मेवाड़में हैं, और इनके सिवा कई एक छोटी छोटी कृत्रिम झीलें इस मुल्कमें और भी बहुतसी हैं.

क़िले — राजपूतानहमें लड़नेके लाइक़ क़िले बहुतसे हैं, जिनमें मुख्य चित्तौड़-

गढ़ और कुम्भलगढ़ मेवाड़में; रणथम्भोर जयपुरमें; और नागौर व जालौर जोधपुरमें हैं. ये पुराने और मज्बूत समझे जाते हैं.

राजपूतानहमें १८ खुद मुख़्तार रियासतें याने उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा, बूंदी, टौंक, भरतपुर, क़रौली, जयसलमेर, सिरोही, कृष्णगढ़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, अलवर, झालरापाटन, और धौलपुर हैं, जिनमेंसे हरएकका जुग्राफ़ियह उनकी तवारीख़के शुरूमें मुफ़स्सल तौरपर दियाजायेगा, इसलिये राजपूतानहके जुग्राफ़ियहको अधिक न बढ़ाकर अब हम मेवाड़का जुग्राफ़ियह शुरू करते हैं.

रियासत मेवाड़का जुग्राफ़ियह.

इस देशकी सीमा पहिले जुदे जुदे समयोंमें जुदे जुदे ढंगसे गिनी जाती थी, जैसे किसी समयमें, पूर्वमें भेलसा व चन्देरी; दक्षिणमें रेवाकांठा व महीकांठा; पश्चिममें पालनपुर; पश्चिमोत्तरमें मंडोवर व रूण; उत्तरमें बयाना; पूर्वोत्तरमें रणथम्भोर व ग्वालियर तक थी; और किसी ज़मानहमें इससे न्यूनाधिक थी, परन्तु मरहटोंके ग़द्रमें मेवाड़के बहुतसे ज़िले मत्लबी लोगोंने दग़ाबाज़ीसे दबालिये, याने किसीने फ़ौज देनेके बहानेसे, किसीने गिरवीके तौरपर, किसीने नौकरीके एवज़ और किसीने आपसकी फूटका मौक़ा देखकर भी दबाये, जिनको छोड़कर अब हम वर्त्तमान राज्यके अधिकारमें जितना देश है उसीका वर्णन करते हैं. इससे यह नहीं जानना चाहिये, कि मेवाड़से जुदे होने वाले ज़िलोंका दावा छोड़दिया गया हो, बल्कि गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने भी वादा किया है, कि रियासतोंके अह्दनामे नहोजावें उस वक़ मेवाड़का दावा सुननेके योग्य है.

(वर्त्तमान देशकी भूमिका आम तौरपर वृत्तान्त).

मेवाड़का राज्य, जो हिन्दुस्तानमें सबसे अव्वल दरजहका गिनाजाता है, राजपूतानहके दक्षिणी विभागमें वाके है. यह उत्तर अक्षांश २५°-५८′ से २३°-४९′-१२″ तक और पूर्व देशान्तर ७५°-५१′-३०″ से ७३°-७′ तक फैला हुआ है. इसकी लम्बाई उत्तरसे दक्षिणको १४७.६० मील और चौड़ाई पूर्वसे पश्चिम १६३.०४ मील है; और कुल विस्तार १२९२९.९ मील मुरब्बा है.

(देशका आकार).

इस रियासतकी सूरत कुछ टेढ़ी बांकी है, परन्तु यह कहाजा सक्ता है, कि यह

देश उत्तरमें अजमेरके सर्कारी ज़िलोंसे; वायव्य कोणमें अजमेरके कुछ हिस्से व मारवाड़से; पश्चिममें मारवाड़ व सिरोहीसे; नैॠत्य कोणमें दांता और ईडरसे; दक्षिणमें डूंगरपुर और थोड़ासा बांसवाड़ासे; अग्नि कोणमें प्रतापगढ़ और थोड़ासा ग्वालियरसे; पूर्वमें टौंक, ग्वालियर, इन्दौर, कुछ झालावाड़ और थोड़ासा कोटा व बूंदीसे; ईशान कोणमें बूंदी और कुछ जयपुरसे घिरा हुआ है.

कोटा सिर्फ़ भैंसरोड़के पास इस राज्यके एक निकले हुए ज़मीनके टुकड़ेसे स्पर्श करता है, जिसके दक्षिणमें हुलकरका ज़िला रामपुरा है. अग्नि कोणमें कई रियासतोंके हिस्से हैं, और टौंक (१), ग्वालियर व इन्दौरकी अमल्दारीके छोटे छोटे टुकड़े चारों तरफ़ मेवाड़की भूमिसे घिरेहुए हैं. सेंधियाके थोड़ेसे गांव जो एक दूसरेसे भिन्न भिन्न दूरीपर हैं, और जिनसे गंगापुरका पर्गनह बनता है, मेवाड़के बीचो बीच हैं; सिर्फ़ पालसोड़ाका छोटा पर्गनह जो नीमचसे १२ मील अग्नि कोणमें वाक़े है, मेवाड़का एक ऐसा हिस्सह है, जो देशके मुख्य भागसे बिल्कुल अलग है, और इसी तरह पीपलियाका पर्गनह भी है.

रियासतके उत्तर व पूर्वी हिस्सोंमें एक ऊंचा टीला अच्छी खुली हुई नाहमवार (ऊंची नीची) ज़मीनका बहुत दूरतक फैला हुआ है, जिसका ईशान कोणका विभाग किसीक़द्र ढालू है, जैसाकि बनास और उसकी सहायक नदियोंसे मालूम होता है, जो सब नदियां अर्वली पहाड़से निकलकर पहिले चम्बल और अन्तमें जमुना व गंगाके साथ मिलकर समुद्रका रास्तह लेती हैं. इस देशमें पहाड़ियां अकेली अकेली या समूहोंमें बहुतसी हैं, और भिन्न भिन्न चौड़ाईकी छोटी छोटी पहाड़ी पंक्तियां समस्त देशमें पाई जाती हैं.

हिन्दुस्तानका बड़ा ऊंचा भाग जो बंगालेकी खाड़ीमें गिरने वाली नदियोंके बहावको खंभातकी खाड़ीमें जानेवाली नदियोंके बहावसे अलग करता है, क़रीब क़रीब मेवाड़के बीचमें होकर गुज़रता है, और एक ऐसी रेखासे दिखलाया जासक्ता है, जो पूर्वमें नीमचसे बड़ी सादड़ी होती हुई उदयपुरको, और वहांसे गोगूंदाके आस पासकी ऊंची ज़मीन व बनासके निकासों, और पश्चिममें कुंभलगढ़के बड़े पहाड़ी क़िलेके निकट होकर अर्वलीपरसे अजमेरको खेंचीजावे. ईशान कोणकी ओर झुकाव साधारण है,

(१) टौंकका नींबाहेड़ा तीन तरफ़ मेवाड़ और एक तरफ़ सेंधियासे मिला है; मेवाड़का कणेरा तीन तरफ़ सेंधिया और एक तरफ़ मेवाड़से मिला है; और सेंधियाका भींचोर चारों तरफ़ मेवाड़मे घिराहुआ है. इसी तरह हुल्करका नंदवास और सेंधियाका जाठ, सिंगोली, और खेड़ी स्थान ज़ियादहतर मेवाड़के भीतर आगये हैं; और झालावाड़का एक गांव रूपापुर भी मेवाड़के भीतर है. इसी तरह मेवाड़का कुआखेड़ा सेंधियाकी अमल्दारीसे मिला है. मत्लब इसका यह है, कि हुल्कर, सेंधिया व टौंकके ये ज़िले अस्लमें मेवाड़के ही हिस्से हैं.

परन्तु बराबर एकसा है. उदयपुर नगर समुद्रके सत्हसे १९५७ फ़ीट और देवली स्थान, जो ईशान कोणके सिरेपर है, ११२२ फ़ीट ऊंचा है.

इस ऊंचे हिस्से को पार करनेके पश्चात् देशकी सूरत व शक्ल बहुत बदली हुई है, अर्थात् अच्छे खुलेहुए ऊंचे नीचे मैदानके एवज़ दक्षिण और पश्चिमका हिस्सह बिल्कुल चटानों, पहाड़ियों और घने जंगलोंसे ढकाहुआ है.

अर्वली पहाड़ जो पश्चिमी किनारेपर मेरवाड़ामें होकर गुज़रता है, रियासतके बिल्कुल नैऋत्य कोण व दक्षिणी हिस्सोंमें याने नैऋत्य कोणकी तरफ़ डूंगरपुरके किनारेपर सोमकी तराईतक, और दक्षिण तरफ़ महीकी तराईतक फैला हुआ है, और अख़ीरमें उन पहाड़ियोंके साथ मिलजाता है, जो अग्नि कोणकी ओर जाकुम नदीकी तराईके निकट विन्ध्याचलका हिस्सह बनाती हैं. देशके दक्षिणी हिस्सेका सब बहाव सिवा उसके कि, जो ढेबर (जयसमुद्र) तालाबमें रुकजाता है, जाकुम और सोम नदीमें होकर महीमें जाता है, और वहांसे खंभातकी खाड़ीमें पहुंचता है. इस तरफ़ देश बहुत नीचा होता चलागया है. सोमकी ऊंचाई, जो समुद्रके सत्हसे ६५० फ़ीट है उसमें ऊपर बयान कियेहुए टीलेसे २५ मीलमें ९५० फ़ीटका झुकाव है, अर्थात् एक मील पीछे क़रीब ४० फ़ीटका है; और बानसीसे धरियावदतक १७ मीलके फ़ासिलेमें ८५० फ़ीट याने फ़ी मील ५० फ़ीटका झुकाव है. इस प्रकार झुकावका एकबारगी बढ़जाना बेशक मुल्कके इस पेचीदह पहाड़ी टुकड़ेका कारण है. पहिले यह हिस्सह १० या १२ मीलतक थोड़ा बहुत जंगलसे ढकाहुआ है, और पहाड़ियां क़रीब क़रीब बराबर ऊंचाईकी हैं, लेकिन् दक्षिणकी तरफ़से पहाड़ी सिलसिले ऊंचे होते चलेगये हैं, या यह कि घाटियां नीची होती जाती हैं, और ऊपरी हिस्सेकी अपेक्षा जंगल अधिक सघन है. इस नाहमवार (ऊंचे नीचे) हिस्सेको पार करने और सोमके पासवाली धरतीमें पहुंचनेके बाद धरती बहुत खुलीहुई है, जिसमें बहुतसे गांव हैं, और खेती बाड़ी भी भली भांति होती है. रियासतके दक्षिणका यह जंगली भाग "छप्पन" के नामसे प्रसिद्ध है.

मेवाड़के पश्चिम तरफ़की समस्त पहाड़ी भूमि, दक्षिणमें डूंगरपुरकी सीमासे उत्तरमें सिरोही व मारवाड़की हदतक मगरा कहलाती है. इस हिस्सेमें अर्वली का सबसे चौड़ा भाग आगया है, और यद्यपि दक्षिणी पंक्तिकी चोटी उत्तरकी चोटियोंसे बहुत कम ऊंची है तिसपर भी इस तरफ़ धरतीके एकबारगी नीची होजानेके कारण घाटियोंके ऊपरकी पहाड़ियोंकी ऊंचाईमें अधिक भेद नहीं है.

गोगूंदा जो उदयपुरसे वायव्य कोणमें क़रीब १६ मील दूर और समुद्रके सत्हसे

२७५० फ़ीट ऊंचा है, इससे अग्नि कोणकी तरफ़ आते हुए उदयपुर १९५७ फ़ीट उसके बाद ढेबर भील ९६० फ़ीट, और सोमके पासवाला हिस्सा समुद्रसे ६५० फ़ीट ऊंचा पायाजाता है. गोगूंदासे सोमतक लगभग ६५ मीलका अंतर है, जिसमें फ़ी मील ३२ फ़ीटका ढाल है.

इसके बाद ठीक दक्षिण तरफ़ खेरवाड़ाकी छावनीतक, जो १००० फ़ीटके लगभग समुद्रसे ऊंची है, ५३ मीलमें फ़ी मील ३३ फ़ीटका ढलाव है. कोटड़ाकी छावनीसे (१) नैऋत्य कोणकी ओर ईडरमें केरके बंगलेतक, जो साबरमतीकी एक शाखापर है, फ़ी मील ३५ फ़ीटसे अधिक ढाल है. पश्चिम और वायव्य कोणका ढाल फिर भी बे ठिकाने है, क्योंकि वीरवाड़ा गांव, जो सिरोहीमें पिंडवाड़ाके पास है वह गोगूंदासे सिर्फ़ ३३ मील दूर और १५२५ फ़ीट नीचे है, जिससे फ़ी मील ४६ फ़ीटका ढाल साबित है; और गोड़वाड़के गांव बेड़ातक २८ मीलमें १६३५ फ़ीटका ढाल है, जो फ़ी मील ५८ फ़ीटसे अधिक है. मेवाड़के पश्चिमी हिस्सहका बहाव दक्षिण की ओर है, जिसमें खम्भातकी खाड़ीमें गिरनेवाली साबरमती नदीके मुख्य सोते हैं.

पश्चिमी पहाड़ियोंमेंसे दो नदियां निकलती हैं, यानि पहिली गोराई जो वायव्य कोणकी तरफ़ ऐरनपुरसे बढ़कर लूनीमें गिरती है, और दूसरी छोटी बनास, जो नैऋत्य कोणकी ओर चलकर कच्छके रणमें गिरती है.

(भूमि रचना).

कप्तान सी० ई० येट् साहिब राजपूतानहके गजेटिअरमें लिखते हैं, कि मध्य अर्वलीका विस्तार केवल संक्षेपमें शीघ्रता पूर्वक देखागया है, और इसके विषयमें इतना कम जानागया है, कि बनावटका बयान विधिपूर्वक नहीं होसक्ता. इस पहाड़ी श्रेणीकी सामान्य प्रकृति इसकी अस्ल बनावट है, ग्रेनिट (कड़ा पत्थर) गहरे नीले रंगके स्लेट (२) पत्थरके गढ़े और भारी चटानोंके ऊपर भिन्न भिन्न झुकावोंपर ठहरा हुआ है; (झुकाव नीचेको प्रायः पूर्वकी ओर है). भीतरी घाटियोंमें कई प्रकारके क्वार्ट्ज़ (Quartz) (३) पत्थर और प्रत्येक रंगके स्लेट बहुत कस्रत से हैं; बीच बीचमें नीस (Gneiss) (४) और साइनाइट (Syenite) के चटान

---

(१) यहांकी ऊंचाई १०३३ फ़ीट है.

(२) इस पत्थरकी तख्तियां आसानीसे अलग अलग होसक्ती हैं. यह पत्थर छतके काममें अधिक लायाजाता है.

(३) यह बिल्लौरी याने चमकीला पत्थर है. इसमें सब क़िस्मके बिल्लौरी पत्थर गिनेजाते हैं.

(४) यह एक क़िस्मका बिल्लौरी पत्थर है, जो अभ्रक वग़ैरह कितनेएक पदार्थोंका बनाहुआ होता है.

मालूम होते हैं. इस पहाड़ी सिल्सिलेमें गहरी घाटियों वाली चटानोंकी पंक्ति है, जहांपर सबसे नीचेवाले चटान बहुधा नीसके पाये जाते हैं, और छोटी पहाड़ियोंपर केवल ऊपरी चटान पायेजाते हैं. जो तह खैरवाड़ाके दक्षिणसे आरंभ होता है उसमें रेतीला पत्थर, हौर्न स्टोन (१) पौरफ़िरी (२) (Hornstone Porphyry) जो खैरवाड़ामें देखागया है, ग्रेनिट, नीस, जावरके निकट अभ्रककी मिट्टी और क्लोराइट स्लेट, (अर्थात् ऐसा स्लेट जिसमें क्लोरिनका अंश पायाजाता है.) और फिर उदयपुरके पास ग्रेनिट क्रमसे पायाजाता है. खैरवाड़ाके निकट और जावरके आस पास नीले और लाल मार्ल (Marls) (३) और सड़ी मिट्टीके पत्थर बहुत पाये जाते हैं.

मेवाड़में मकान बनानेके लिये नीचे लिखे प्रकारके पत्थर निकाले जाते हैं:-

ज्वालामुखीकी चटानोंमेंसे सामान्य डोलेराइट (Dolerite) और बासाल्ट (Basalt) उदयपुरके निकट बहुत पाये जाते हैं. २० फ़ीटकी पट्टियां मटांटकी खानसे और १४ फ़ीटतक बांसदरा पहाड़ (सज्जनगढ़) की खानसे निकलती हैं. राजधानीकी बहुतसी .इमारतें इसीसे बनती हैं; ट्रैपिअन चटान देवी माताके निकट थोड़ीसी पुरानी खानोंमें पाये जाते हैं, जो उदयपुरसे कुछ मील दूर है. पुरोहितजीके तालाबका बंध, जो एकलिङ्गजीकी सड़कपर चीरवाके घाटेके निकट इस पत्थरका बना है, इस पत्थरकी दृढ़ताका सुबूत है. नीमचकी सड़कपर उदयपुरसे १६ मील दूर ग्रेनिटका एक पेटा ६ मील लम्बा और एक मील चौड़ा है, परन्तु वहांकी खानें इस कारणसे छोड़दी गई हैं, कि पत्थर जो ठोस और नीले रंगका है, उसके निकालनेमें अधिक व्यय और कठिनता पड़ती है. पानीसे बने हुए चटानोंमें रेतीले पत्थरके ढोंके हैं, जो ढेबरकी पालमें भरे गये हैं. यह रेतीला पत्थर दो रंगका है, एक तो गुलाबी और दूसरा हल्के हरे रंगका याने सब्ज़ा; और पहिला दूसरेकी अपेक्षा अधिक सरलतासे टूटता है. इसमें क्वार्ट्ज़के कंकर मटरके बराबरसे लेकर अंडेके बराबर होते हैं; मेवाड़में रेतीला पत्थर बहुतायतसे पाया जाता है, मुख्य करके ढेबरके नज़्दीक और देबारीकी पहाड़ियोंमें, परन्तु देबारीका इतना नरम होता है, कि बहुत कामका नहीं है. मांसके समान गुलाबी रंगका पत्थर जिससे चक्की बनाईजाती है, महुवाड़ा और ढीकली गांवोंमें पायाजाता है, और उसके बनानेमें बहुत लोगोंकी रोटियां चलती हैं.

---

(१) यह चमककी क़िस्मका जल्दी टूटने वाला पत्थर है.
(२) संग समाक़ (एक क़िस्मका कड़ा पत्थर).
(३) यह पत्थर मिट्टी व रेत वग़ैरहसे बना हुआ होता है.

कंकर पहाड़ोंमें नहीं पायाजाता, परन्तु मेवाड़के मैदानोंमें बहुत मिलता है. कुछ आस्मानी और सिफ़ेद रंगका ठोस पत्थर जिससे चूना बनता है, उदयपुरसे क़रीब क़रीब दो मील के फ़ासिलेपर मिलता है, और उसपर अच्छी घुटाई होसक्ती है. अच्छा सिफ़ेद रंगका पत्थर राजनगरमें बहुत निकलता है. इसी संग मरमरसे वहां राजसमुद्रकी पाल बंधी है, और उसको जलानेसे चूना बनता है, जो बहुत चमकदार होता है, और राजधानीमें बहुतसे कामोंमें लगाया जाता है. संग मूसा (काला पत्थर) चित्तौड़में पायाजाता है और वैसाही अच्छा होता है.

हलके पीले रंगके पत्थर पहाड़ोंमें बहुत मिलते हैं. कार्ट्ज़ समस्त रियासतमें बहुतसा मिलता है. जिस पहाड़ी चटानके ऊपर राजधानीके महल बने हैं उसके भीतर उसकी एक गहरी तह है. परसाद और उदयसागरकी पहाड़ियां भी कार्ट्ज़की हैं.

मिट्टीका स्लेट पत्थर बहुत मिलता है, यह काले रंगका और एक चौथाईसे एक इंच तक मोटा होता है. ऋषभदेव और खैरवाड़ाके बीचमें मैला, सब्ज़ा और सर्पके बदन-पर जैसे दाग़ होते हैं वैसे दाग़वाला पत्थर निकलता है, जिसकी मूर्त्तियां और पियाले आदि बनाये जाकर यात्रियोंके हाथ बेचेजाते हैं, और इसीसे खैरवाड़ेका नया गिरजाघर बना है. शिस्ट पत्थर (Schist) मेरवाड़ा और खैराड़के पहाड़ी ज़िलोंमें बहुत मिलता है. मगरोंमें नीस बहुत हैं. जावरके पांच मन्दिर और तालाब इस नीस पत्थरके ही बने हैं, जो टीड़ीकी खानोंसे लायागया था; इसके सिवा जयसमुद्र (ढेबर) की पाल तथा ऋषभदेवके मन्दिर भी इसी पत्थरसे बने हैं, जो जयसमुद्र से १६ मील दूर बरोड़ाकी खानसे लायागया था.

(पहाड़ और पहाड़ियोंकी पंक्ति).

अर्व्वली पहाड़ मेवाड़में बहुत दूरतक फैलाहुआ है. यह अजमेरसे मेरवाड़ा होकर दिवेरके (१) निकट आ निकला है. यह समुद्रके सत्हसे २३८३ फ़ीट ऊंचा, और थोड़े ही मील चौड़ा है, और वहांसे नैर्ऋत्य कोणमें मारवाड़के किनारे किनारे जाकर धीरे धीरे बड़ा होगया है, कुम्भलगढ़पर ३५६८ फ़ीट ऊंचा होगया है, और जर्गा पहाड़ीपर, जो गोगूंदासे १५ मील उत्तरको है, ४३१५ फ़ीटकी ऊंचाईको पहुंच-जाता है. फिर वह रियासतके नैर्ऋत्य कोण और दक्षिणी हिस्सोंके अन्ततक फैला हुआ है, जहां उसकी चौड़ाई ६० मीलके लगभग है, और ऐसा कहा जासक्ता है, कि २४° उत्तर अक्षांशसे कुछ दक्षिण तरफ़ समाप्त होजाता है. जब देशकी

---

(१) दिवेरके उत्तर अक्षांश २५°-२४′ है.

भूमिका रूप बिल्कुल बदल गया, अर्थात् बहुत खुला होगया है, और ठीक अर्व्वलीकी सकड़ी समानान्तर (बराबर फ़ासिले वाली) पंक्तियोंके बदले पानीके बहावसे परस्पर रगड़ खाकर चिकने और गोल बने हुए पाषाणोंकी पहाड़ियां अलग अलग पाई जाती हैं. ये समानान्तर पहाड़ी पक्तियां पश्चिम और प्रायः ईशान कोणको चली गई हैं, और धीरे धीरे दक्षिणकी ओर वहांतक मुड़गई हैं, जहांसे कि क़रीब क़रीब अग्नि कोणको चली-जाती हैं, और वहां वे अधिक टूटी हुई और प्रथक प्रथक हैं.

पश्चिमी ढालोंमें यद्यपि जंगल बहुत है, परन्तु पानी बहुत ही कम है. जीलवाड़ाकी नालमें परलोकवासी श्री महाराणा शम्भुसिंह साहिबकी बाल्यावस्थामें सड़क बननेके पहिले बड़ से (जो ब्यावर नयाशहरके निकट है) ईडरतक अर्थात् इस पूर्व और पश्चिमकी तरफ़ २५० माइलकी दूरीतक अर्व्वलीमें गाड़ियोंपर जो सौदागरी होती थी उसको एक बड़ी रोक थी.

जीलवाड़ाकी नाल जिसको लोग "पगल्या नाल" भी कहते हैं, अनुमान ४ मील लम्बी और बहुत सकड़ी है, परन्तु जीलवाड़ा गांवके पास वाले टीलेकी चोटीसे नीचेकी तरफ़, सिवा पहिले आध मीलके उतार बहुत सरल है. देसूरी (जो मारवाड़में नालके नीचे है) एक छोटी चटानी पहाड़ीके निकट गांव है, जिसके चारों ओर एक दीवार है. इस दीवारके ऊपर एक गढ़ समुद्रके सत्हसे १५८७ फ़ीट ऊंचा है. देसूरीसे कुछ मील उत्तर तरफ़ "सोमेश्वर नाल" है; यह बहुत लम्बी और बिकट है, इसलिये देसूरीकी नालके खुलजानेपर लोगोंने इसका अवागमन बन्द करदिया.

देसूरीसे दक्षिण ५ मीलके लगभग दूरीपर "हाथी गुड़ाकी नाल" (१) है. जो नीचेकी ओर रास्तहको क़रीब $\frac{1}{3}$ हिस्सहतक रोके हुए है, और जिसके ऊपर एक मोरचा बन्ध फाटक है, जहां मेवाड़के सिपाहियोंका एक पहरा रहता है. कुम्भलगढ़का पहाड़ी क़िला इस नालके ठीक ऊपर है, और उसको दाबे हुए है, और केलवाड़ाका क़स्बह उसके सिरपर है. यह नाल कुछ मील लम्बी है, इसका पहिले ३ मीलतक झुकाव बहुत है, और दोनों तरफ़ पहाड़ियां नदीके पेटेसे क़रीब क़रीब सीधी उठी हुई हैं, किनारोंपर बहुत जंगल है, और देखनेमें अति रमणीय स्थान है. कोठारबड़से नीचला आधा हिस्सह, जहां एक कुआं और थोडासा खुलाहुआ मैदान है, गाड़ियोंके जानेके लाइक़ है. नालमें जो लोग लड़ाईमें मारे गये उनके बहुतसे

---

(१) ऐसा भी प्रसिद्ध है, कि महाराणा कुम्भा जब कुम्भलगढ़पर रहते थे तो उनके हाथी इस नालके नीचे रहाकरते थे, जहांपर एक छोटा गांव था जो हाथी गुड़ाके नामसे मश्हूर होगया और उसीके नामसे हाथी गुड़ाकी नाल मश्हूर हुई.

चबूतरे बने हैं, और उन मोरचोंका निशान भी कुछ कुछ अभीतक है, जिन्हें घाणेरावके ठाकुरने मेवाड़की तरफ़से बनवाया था (१), जब कि इस (उन्नीसवीं) सदी के आरम्भमें जोधपुरके महाराजा मानसिंहने उसको घाणेरावसे निकालदिया था.

भाणपुराकी नाल, जो घाणेरावसे ६ मील दक्षिणमें है, ख़ासकर राणपुरके जैन मन्दिरोंके लिये प्रसिद्ध है, और लोग ऐसा कहते हैं, कि प्राचीन नगरके स्थानमें ये बने हैं. नालसे आधी दूर ऊपरकी तरफ़ एक प्राचीन पत्थरके बन्धका कुछ भाग बचा हुआ है, जो वहां नदीके आरपार बंधाया गया था, जिसकी चोटीपरसे प्राचीन वृक्षोंके बीचके मन्दिर बड़े शोभायमान दीख पड़ते हैं.

सादड़ीके आगे और कोई अच्छी नाल नहीं है. पहाड़ियोंके बीचमें केवल पगडंडियां और बैलोंके जाने आनेके रास्ते हैं. उदयपुरसे जो सीधा मार्ग गोगूंदा होकर आबूको जाता है वह रियासत सिरोहीमें रोहेड़ा गांवके पास जानिकलता है, और पोसीनासे और कोटड़ासे भी सड़क इसकी तरफ़ आती है. रियासतके दक्षिणकी ऊंची ज़मीनसे नीचेकी ओर केवल दोही मार्ग ऐसे हैं, कि जिनका वर्णन करना अवश्य है; एक तो बानसीसे क़रीब क़रीब दक्षिणमें धरयावद होकर बांसवाड़ाको जाता है; दूसरा उदयपुरसे सलूंबर होकर डूंगरपुरको (२). गाड़ियां इनमें नहीं जासक्तीं, परन्तु सब प्रकारके लदू जानवर बोझा लादे हुए आसानीसे जासक्ते हैं. धरयावद और सलूंबर के बीचमें भी एक रास्तह है, जिसमें लदू जानवर आसानीसे जासक्ते हैं.

रियासतके पूर्वी किनारेपर पहाड़ियोंका एक समूह है, जो उत्तर और दक्षिणको समानान्तर (बराबर फ़ासिले वाली) सकड़ी घाटियां बनाता हुआ चलागया है, जिनमेंसे सबसे बड़ी घाटीमें विजयपुरका एक छोटा क़स्बह है. सबसे ऊंची दो पहाड़ियां ठीक २००० फ़ीट से कुछ ज़ियादह ऊंची हैं, परन्तु औसत ऊंचाई पहाड़ियोंकी १८५० फ़ीटके लग भग है.

यहांका बहाव अक्सर उत्तर और दक्षिणको है. उत्तरकी तरफ़का बहाव सीधा बेड़चमें जाता है, और दक्षिणका बहाव गंभीरी नामकी छोटी नदीमें जामिलता है, जो पश्चिमको बहकर पहाड़ियोंको घेरती हुई उनके पश्चिमी किनारेपर मुड़कर चित्तौड़के पास बेड़चमें मिलजाती है.

चित्तौड़से पश्चिमकी भूमि खुली हुई है, परन्तु इसके आरपार चलनेमें पड़त ज़मीनके बड़े बड़े टुकड़े पायेजाते हैं, और अकेली पहाड़ियां और छोटे छोटे ढूहे (३) उसपर

---

(१) उन दिनों घाणेरावका ठाकुर मेवाड़की नौकरीमें रहता था.

(२) वर्त्तमान महाराणा साहिबने एक सड़क उदयपुरसे जयसमुद्रतक बनवाई है, जिसमें बग्घी, गाड़ी अच्छी तरह जासक्ती है.

(३) ढूहे, याने ऊंची ज़मीन जो बहुत दूरतक चलीगई हो.

फैले हुए हैं. चित्तौड़के नैॠत्य कोणमें पहाड़ियां अधिक ऊंची और जंगलसे ढकी हुई हैं, जिनकी पंक्तियोंके पश्चिममें भदेसर है. इन पहाड़ियोंकी शोभा अति रमणीय है, विशेषकर उन निकले हुए सिफ़ेद चटानोंके कारणसे है, जिनकी बड़ी बड़ी ऊंची चोटियां जंगलके ऊपर दिखाई देती हैं. भदेसरकी पहाड़ीके दक्षिणकी भूमि फिर अधिक खुली हुई है, परन्तु कम ऊंचाईकी पहाड़ी पंक्तियां इसको भी काटती हैं.

बड़ी सादड़ी से एक बड़ी भारी, ऊंची और पेचीदा पहाड़ियोंकी पंक्ति अग्नि कोणको जाती है, और जाकुमके ऊपर एक बारगी पूरी होजाती है. ये पहाड़ियां एक बड़े चौड़े और सघन जंगलसे ढकी हुई ज़मीनवाली एक बड़ी घाटीकी पश्चिमी सीमा हैं, जहांकी ज़मीन नीची है. उसकी औसत ऊंचाई समुद्रके सत्हसे १२५० फ़ीटसे अधिक नहीं है, परन्तु वह उत्तरकी तरफ़ धीरे धीरे ऊंची होती गई है, और कहीं ज़ियादह ढाल नहीं है. निस्सन्देह ये पहाड़ियां विंध्याचलकी शाखा हैं, परन्तु ये अर्व्वलीमें मिलजाती हैं, इसलिये पहाड़ोंकी प्रथक पंक्ति जो वे देशके आरपार बनाती हैं, पूर्वकी तरफ़ कुछ लुप्त होजाती है, और अधिक पश्चिममें वे बिल्कुल नष्ट होजाती हैं, और अर्व्वलीकी समानान्तर शाखा अकेली रहजाती हैं. पहाड़ोंकी एक और पंक्ति वायव्य कोणको जाती हुई जहाज़पुरको चली गई है, जो उस पहाड़ी भागके पश्चिममें है, जिसको मीनोंका मुल्क "खेराड़" कहते हैं. इसपर मांडलगढ़का क़िला वाक़े है और उसके दक्षिणमें वह पहाड़की पंक्ति आरम्भ होती है जो रियासत बूंदीके मध्यमें होकर ईशान कोणको चली गई है.

(धातु और क़ीमती पत्थर).

टॉड साहिबके बयान और हमारे अनुमानसे मेवाड़में पहिले धातु बहुत पैदा होती थी, और जावर व दरीबाकी सीसेकी खानोंसे ३००००० से अधिककी सालियानह आमदनी थी, परन्तु बहुत वर्षोंसे वे छोड़दी गईं, इससे अब वे पानीसे भरगई हैं. जावर (१) उदयपुरसे ठीक दक्षिण तरफ़ क़रीब १८ मीलके अन्तरपर है, और अब यह खण्डहर की हालतमें है, परन्तु अभीतक खण्डहरके भीतर व बाहिरी स्थानोंमें चन्द मन्दिर अच्छे अच्छे हैं, और पासवाली एक पहाड़ीपर एक बड़े गढ़की दीवारका निशान भी पाया-जाता है. शहरके पश्चिम तरफ़ एक छोटी नदी बहती है, जिसके तीरपर एक बहुत अच्छा कुआं है, और पत्थरसे बनेहुए एक बन्धका कुछ हिस्सह है. पूर्व समयमें

---

(१) इसका नाम प्राचीन प्रशस्तियोंमें जोगिनीपुर लिखा है, और इस नामकी बुन्याद एक देवीके स्थानसे है, जिसको लोग जावरकी माताके नामसे पुकारते हैं.

यह बहुत पानी रोकता रहा होगा, परन्तु अब बिल्कुल फूटगया है. प्रत्यक्षमें मालूम होता है, कि यहां पहिले समयमें धातु बहुत गलाई जाती थी, क्योंकि प्राचीन स्थनोंकी बहुतसी दीवारें केवल प्राचीन घरियों (१) से बनी हुई हैं, जिनसे उनका एक अद्भुत आकार होगया है. ईसवी १८७३ [वि० १९३० = हि० १२९०] में खानोंको फिर जारी करनेकी कोशिश कीगई थी, और बहुतसा व्यय भी हुआ, परन्तु नतीजह उसका कुछ न निकला. एक मुख्य दरारमें सुरंग बनाया गया, और उसमेंसे ११ फ़ीट पानी निकाला गया, परन्तु यह मालूम हुआ, कि पहिले जो खानकी तह सोची जाती थी, वह हक़ीक़तमें पत्थर और मिट्टीका एक ढेर है, और एक दूसरा सुरंग बहुत नीचे बनाना आवश्यक है. फिर खोदनेके समय पांच ढेर या ढेले जिनमें सबसे बड़ा १० $\frac{1}{2}$ सेरका था, पाये गये. धातु निकालिस गैलिना (खानसे निकाला हुआ अशोधित सीसा) पाई गई, जिसमें ७१ सैंकड़ासे अधिक पाषाण मय अंश न था, परन्तु चांदीके हेतु इम्तिहान करनेसे एक टन (२८ मन) सीसेमें १० औंस (२), १२ पेनीवेट, ८ ग्रेन चांदी पाईगई, तब काम रोक दियागया; क्योंकि बिना कलके सब पानी दूर करना असंभव था, जिसका ख़र्च दर्बार नहीं देना चाहते थे, क्योंकि चांदी बहुत कम मिलती थी. इसका इम्तिहान बुशल साहिबने हमारे सामने किया था.

मांडलगढ़ ज़िलेके गुंहली गांवमें, जहाज़पुर ज़िलेके मनोहरपुरमें, गंगारमें रेलवे लाइनपर और पारसोलामें भी, जो बड़ी सादड़ीसे कुछ मील दक्षिणकी ओर है, लोहेकी खानोंका अभीतक काम जारी है, परन्तु वर्तमान समयमें बहुत कम लोहा निकाला जाता है. खानमें काम करने वाले लोग कच्ची धातुको गलानेके लिये हवासे तप्त होने वाली भट्टियां रखते हैं, और यह एक विचित्र बात है, कि मैल साफ़ करनेके लिये नमकको काममें लाना, जो हालकी तर्कीब समझी जाती है, पारसोलामें पीढ़ियोंसे चला आता है.

सादड़ी, हमीरगढ़ और अमरगढ़के ज़िलोंमें पुरानी खानें हैं, जिनका काम बहुत अरसहसे बन्द करदिया गया है. रियासतकी दक्षिणी पहाड़ियोंमें बेदावलकी पाल और अनूजेनीके बीचमें भी बहुतसा लोहा और फिर कुछ पश्चिममें तांबा पाया जाता है, परन्तु आज कल काम नहीं होता. देलवाड़ामें भी तांबा पाया गया है और उदयपुरके निकट केवड़ाकी नालमें भी बहुतसी प्राचीन खानें हैं.

पोटलां और दरीबामें सीसेकी खानें बहुत दिनोंसे बन्द हैं. तामड़ा (रक्तमणि)

---

(१) घरिया मिट्टीका एक पात्र है, जिसमें धातु गलाई जाती है.

(२) अंग्रेज़ी सोने चांदीके तोलके हिसाबसे एक पाउण्ड १२ रुपये भर होता है. पाउण्डका १२ वां हिस्सह औंस, औंसका २० वां हिस्सह पेनीवेट और पेनीवेटका २४ वां हिस्सह ग्रेन कहलाता है.

जो बहुमूल्य पाषाण है, मेवाड़में बहुत पाया जाता है; मांडल, पुर और भीलवाड़ाके ज़िलोंमें तथा दरीबामें जिन खानोंसे वह निकाला जाता है, अभीतक काम करनेके लाइक़ है.

(जंगल).

अर्व्वली पहाड़ प्रायः बांस और छोटे छोटे वृक्षोंसे ढकाहुआ है, परन्तु नदियोंके किनारोंपर ऊगनेवाले वृक्षोंके सिवा और वृक्ष बहुत छोटे और निरर्थक हैं. बानसी और धर्यावद्के जंगल, जो रियासतके अग्नि कोणमें हैं, सबसे बड़ी और बहुमूल्य लकड़ीके हैं, और वहांसे बहुतसी सागवानकी लकड़ी काट २ कर मेलोंमें बेची जाती है. घाटियोंमें महुवा और आम बहुत होते हैं. रियासतके बहुतेरे हिस्सोंमें बहुतसे झाड़ और छोटे छोटे पेड़ोंसे ढकेहुए बड़े बड़े भूमि विभाग हैं, और बहुधा छोटी छोटी पहाड़ियां भी अच्छी तरहसे ढकी हुई हैं.

(नदियां).

चम्बल जो यथार्थमें मेवाड़की नदी नहीं है, इसका लम्बा बहाव इस रियासतमें थोड़े ही मीलतक बहता है. और वह भी सिर्फ़ कोटाके निकट भैंसरोड़के एक निकले हुए हिस्सेपर है.

सालभर बहने वाली नदियां मेवाड़में बहुत कम हैं; बनासमें भी उष्ण कालके समय कई जगहोंपर खड्डोंमें पानी भरा रहता है. प्रायः इस नदीमें चटान और बालू है, और पानी सत्हके नीचे बहुत अरसहतक बहता है, जो नदीके दोनों तरफ़के किनारोंके कुओंमें जाता है. बनासका सिरा अर्व्वली पहाड़ोंमें कुम्भलगढ़से नैऋत्य कोणको ३ मीलकी दूरीपर २५°-७' उत्तरांशमें है, और यह प्रथम १५ मीलतक नैऋत्य कोणकी तरफ़ [illegible] श्रेणीसे समानान्तर रेखापर बहती है; फिर वह एक बारगी पूर्वमें मुड़कर पहाड़के दक्षिण किनारेकी ओर घूमकर ५-६ मीलके पीछे पहाड़ी श्रेणीमें होकर बहती है, और २० मीलतक इस प्रकार बहनेके बाद खुले मैदानमें पहुंचजाती है, फिर थोड़ीसी दूर ईशान कोणके मैदानमें नाथद्वाराके पास बहकर मांड[illegible]गढ़के समीप पहुंचती है. वहां पर दाहिनी ओरसे आकर बेड़च इसमें मिलती है, और उसी स्थानपर मैंनाली नदी भी इसमें मिल[illegible] है, जिससे उस [illegible] त्रिवेणी तीर्थ मानते हैं. फिर ठीक उत्तरकी तरफ़ बहनेके बाद थोड़ी दूरपर बाईं तरफ़से कोटेश्वरी भी आमिली है, वहांसे जहाज़पुरकी पहाड़ियोंमें होकर उनके पश्चिमी आधारके समीप होती हुई ईशान कोणको बहकर अन्तमें [illegible]वलीके निकट रियासतसे जुदी होती है. फिर अजमेर

और जयपुरकी सीमामें पहुंचती है, वहां ३०० मीलके लगभग बहकर चम्बलमें जागिरती है.

खारी, जो मेवाड़की नदियोंमें सबसे उत्तरमें है, मेवाड़के दिवेर ज़िलेकी पहाड़ियोंमेंसे निकलती है, और देवगढ़के पास ईशान कोणको बहती हुई अजमेरकी सीमामें क़रीब ११५ मील बहकर जयपुरकी हदमें बनाससे जामिलती है. इसके दक्षिणमें कुछ मीलके अन्तरपर इसकी सहायक नदी मानसी भी ६० मीलतक इससे समानान्तर रेखापर बहती है, और अजमेरकी हदपर फूलियाके समीप इसमें जा मिलती है. इसके सिवा दो और छोटी नदियां भी बनेड़ाके पाससे निकलकर शाहपुराके समीप होती हुई ४० मील बहकर सावरके पास इसी में आमिलती हैं.

खारीके दक्षिण कोटेश्वरी (कोठारी) बहती है, जो अर्व्वली पहाड़ोंसे निकलकर दिवेरकी दक्षिण तरफ़से ९० मील बहनेके बाद ठीक पूर्व और नन्दराय से एक कोसकी दूरीपर बनासमें जामिलती है. बनासके दक्षिणमें बेड़च बहती है, जो उदयपुरके पश्चिमकी पहाड़ियोंसे निकलती है, लेकिन् उदयसागर तालाबमें गिरनेसे पहिले आहड़की नदी कही जाती है. इसके बाद चन्द मीलतक उदयसागरका नाला कहाजाकर आगे कुछ दूरीपर बेड़च कही जाती है. फिर यह पूर्वको बहती हुई चित्तौड़ पहुंचती है और वहांसे उत्तरकी तरफ़ ईशान कोणको झुकती हुई बनासमें जागिरती है.

जाकुम, छोटी सादड़ीके समीप रियासतके नैर्ऋत्य कोणसे निकलती है, और दक्षिण तरफ़ प्रतापगढ़के नैर्ऋत्य कोणमें बहती है, जहांपर उसमें बाईं तरफ़से करमरी आमिलती है. फिर वहांसे मेवाड़में धरयावदके पास होकर नैर्ऋत्य कोणको बहती हुई सोममें जा मिलती है. यह क़रीब क़रीब अपना समस्त बहाव घटान और जंगलोंमें रखती है, इसकारण बहुधा स्थानोंमें बहुत सुन्दर दीखती है.

रियासतके समस्त नैर्ऋत्य कोणके हिस्सेका और जयसमुद्रके निकासका पानी सोममें जाता है, जो वहां पश्चिमसे पूर्वको बहती है, फिर वह दक्षिणको बबराना गांवके पास मुड़कर महीमें जागिरती है.

(झील).

जयसमुद्र तालाब उदयपुरसे ३२ मील दक्षिणको है. कप्तान येट् साहिब लिखते हैं, कि यह तालाब संसारमें मनुष्यका बनाया हुआ कदाचित् सबसे बड़ा जलाशय है. यह ९ मील लम्बा और ६ मील चौड़ा है, जिसके २८ मील मुरब्बा

विस्तारमें द्वीप हैं और ६९० मील मुरब्बाका पानी इसमें जाता है. इसकी सबसे बड़ी गहराई ८० फ़ीट है. यह तालाब, जो समुद्रके सत्हसे ९६० फ़ीट ऊंचा है, महाराणा जयसिंहने विक्रमी १७४४ से १७४८ [ई० १६८७ से १६९१ = हि० १०९८ से ११०२] तक एक सुन्दर संग मरमरका बन्ध पहाड़ोंके बीचकी नालमें बांधकर बनाया है; उसकी पिछली दीवार समान लम्बाई और ऊंचाईकी बनवाई गई थी, परन्तु मध्यकी ख़ाली जगह भरी नहीं गई, और दोनों भींतें अलग अलग खड़ी रहीं, क्योंकि संग मरमरका बन्ध ऐसा दृढ़ बंधवायागया था, कि वह अकेला अपने सामनेके सब पानीके दबावको रोक सक्ता था. जब ईसवी १८७५ [वि० १९३२ = हि० १२९२] के जल प्रवाहमें उसके टूटजानेका भय हुआ, तो वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबने बन्धकी मरम्मत करवाकर बीचके खड्डेको २०००००) से अधिक रुपया ख़र्च करके $\frac{२}{३}$ भरवाया, और बन्ध तथा पहाड़परके महलोंका भी जीर्णोद्धार करवाया. जलकी तरफ़ वाला पुश्तह १००० फ़ीट लम्बा, ९५ फ़ीट ऊंचा, और ५० फ़ीट चौड़े आधारपर है, जिसका ऊपरी भाग १५ फ़ीट चौड़ा है. इसके पूर्वी किनारोंपर गुम्बज़दार महल और मध्यमें एक बड़ा मन्दिर है, जिसके दोनों ओर बन्धपर छतरियां और पानीकी तरफ़ पत्थरके हाथी बने हैं. बन्धके एक किनारेपर वर्तमान महाराणा साहिबने भी महल बनवाये हैं. पीछेकी दीवार १३०० फ़ीट लम्बी है, क्योंकि पहाड़ियोंका दरार बढ़ताजाता है. अबतक इसका पानी कम ख़र्च कियागया है. इस तालाबके अग्नि कोणपर पानीका निकास है, जहांसे एक धारा सोम नदीमें जामिलती है.

राजसमुद्र तालाब, जो राजधानीसे क़रीब ४० मील उत्तरको है, ४ मील लम्बा और १ $\frac{१}{४}$ मील चौड़ा है. इसमें १९४ मील मुरब्बाका पानी जाता है. इसका आरंभ महाराणा राजसिंहने ईसवी १६६२ [वि० १७१८ = हि० १०७२] में किया और १४ वर्षमें बनकर तय्यार हुआ. यह तालाब एक मैदानके गढ़ेमें है, जहांपर वर्षभर जल धारण करनेवाली गोमती नामकी एक छोटी नदी तीन मीलके लम्बे अर्द्धवृत्ताकार बन्धसे रोकदी गई है. इसके दक्षिणको क़स्बह राजनगर है, और अग्नि कोणमें कांकड़ौली नामका क़स्बह है, जिसमें द्वारिकानाथका एक प्रसिद्ध मन्दिर बन्धपर बना है. यह बन्ध राजनगरकी पहाड़ीसे निकाले हुए संग मरमरका बना है, और ऊपरसे लेकर पानीके किनारेतक इसी पाषाणकी सीढ़ियां बनी हैं और बन्धके ऊपर सुन्दर मण्डपदार गृह हैं, जिनको नौ चौकियां कहते हैं. इस तालाबकी नाप, व लागत वगैरहका सविस्तर वृत्तान्त महाराणा राजसिंहके हालमें लिखा जायेगा.

इसके बाद एक दूसरा तालाब उदयपुरसे क़रीब ६ मील पूर्वमें उदयसागरके नामसे प्रसिद्ध है. इसकी लम्बाई २ १/२ मील, चौड़ाई २ मील है, और १७९ मील मुरब्बा भूमिका पानी उसमें जाता है. इसका पानी एक बड़े ऊंचे बन्धसे रुका है, जो बड़े चटानोंसे एक पहाड़ीकी नालके आरपार देबारीके दर्वाज़ेसे २ मील दक्षिणको बनायागया है, जो उदयपुर जानेके लिये पूर्वी दर्वाज़ह है. मुख्य करके इस तालाबमें अहाड़की नदीका पानी आता है और इसके निकाससे बेड़च निकली है. इसके आस पासकी पहाड़ियां बड़े जंगलसे ढकी हुई हैं, और किनारोंकी पहाड़ियोंपर महाराणाके आखेट गृह बने हैं, जो बड़े शोभायमान दृष्टिगत होते हैं.

राजधानी उदयपुरमें पीछोला तालाब २ १/४ मील लम्बा, और १ १/२ मील चौड़ा है. इसमें ५६ मील मुरब्बा भूमिका बहाव आता है. इस तालाबके बनानेके लिये जो धारा रोकी गई है, वह पहिले अहाड़की नदीमें मिलती थी, जो उदयसागरमें जाती है. यह तालाब १५ वीं सदी विक्रमीके बीचमें महाराणा लाखाके समय किसी वणजारेने बनवाया था. बांध इसका ३३४ गज़ लम्बा और इसका ऊपरी भाग ११० गज़की मोटाईका है, जो आधारकी ओर बढ़ता जाता है. विक्रमी १८५२ [हि० १२१० = ई० १७९५] में यह बांध टूटगया था, जिससे आधा शहर डूबगया, और वैसी ही विपत्तिका भय ईसवी १८७५ [वि० १९३२ = हि० १२९२] की घोर वर्षामें भी हुआ, परन्तु ईश्वरकी कृपासे कुछ हानि न हुई. इस तरह इन चार तालाबोंमें १११९ मील मुरब्बा भूमिका पानी जाता है. दूसरे दो तालाब ग्राम बड़ी और देवालीके हैं, जो १५ मील मुरब्बा ज़मीनका पानी खींचते हैं. ये भी उदयसागरमें जानेवाले पानीका कुछ भाग रोकते हैं. इनके अतिरिक्त और भी तालाब रियासतके उत्तरी और पूर्वी हिस्सोंमें बहुत हैं, जिनमें मुख्यकर घासा, सेंसरा, कपासन, लाखोला, गुरलां, मांडल, दरोली, भटेवर, और भूताला वगैरह स्थानोंमें हैं. इनका पानी बांधके नीचेके खेतोंको सींचनेके काममें लाया जाता है.

(जानवरोंका बयान).

मेवाड़में मांसाहारी, तृणचर, और उड़नेवाले जानवर अनेक प्रकारके हैं, जिनमेंसे कुछ जानवरोंका हाल यहांपर लिखाजाता है.

सिंह अर्व्वली पहाड़, खैराड़, और ऊपरमाल वगैरहमें पहिले बहुत थे, जिनसे पहाड़ी गांवोंके सिवा समान भूमिके गांवोंमें भी हर जगह चौपायोंको खतरह रहता था, लेकिन् मेरे (कविराजा श्यामलदासके) देखते ही देखते वे इतने कम होगये, कि वर्त्तमान महाराणा साहिब पश्चिमी और पूर्वी पहाड़ोंमें हर जगह बन्दोबस्त व तलाश रखवाते हैं, तब बड़ी मिह्नतके साथ उनका शिकार प्राप्त होता है, जिनका हाल वर्त्तमान महाराणा साहिबके हालमें लिखाजायेगा.

बघेरा जिसको अधवेसरा शेर भी कहते हैं और टीमरया चौफूल्या आदि नामोंसे इसके और भी भेद प्रसिद्ध हैं, हर एक जगहकी पहाड़ियोंमें अधिक मिलता है. यह जानवर बछड़ा, बकरी, भेड़, सूअरके बच्चे व हरिण वगैरह छोटे छोटे जानवरोंको मारकर अपना गुज़ारा करलेता है, और कभी कभी बैल गाय आदिको भी मारता है; और दबाया हुआ या ज़ख़्मी होनेकी हालतमें आदमीपर भी हमलह करता है. चीते, जो राजा लोगोंके शिकारी कारख़ानोंमें हरिणके शिकारके लिये रहते हैं, मेवाड़में हुरड़ा, भीलवाड़ा, और चित्तौड़के ज़िलोंमें पहिले मिलते थे, परन्तु अब नज़र नहीं आते. भेड़िया जिसको संस्कृतमें वृक और मेवाड़ी भाषामें वरघड़ा और ल्याली बोलते हैं, ज़ियादह खूंख़ार नहीं होता. यह बकरी, भेड़ी वगैरह छोटे जानवरोंको मारकर पेट भरता है, और सब जगह पाया जाता है. बन्दर, ये जानवर यहां काले मुंह और सिफ़ेद रंगका होता है, और फल फूल व पत्तोंसे अपना पेट भरलेता है. कूदनेमें २० या २५ फ़ीट ज़मीनको या इतने ही फ़ासिलेके एकसे दूसरे वृक्षको अच्छी तरह छलांग जाता है, और दरख़्तोंपर रहता है. इनके झुंडमें एक नर अपने सिवा दूसरे नरको नहीं आने देता. रींछ, यह जन्तु तृणमूलचर है, परन्तु इसपर शेर वगैरह जानवर हमलह नहीं करते, और न यह औरोंसे बोलता है. अक्सर बाज़ीगर लोग इनके बच्चोंको पहाड़ोंसे पकड़कर नाचना सिखाते और शहरों व गांवोंमें उनसे अपना रोज़गार करते हैं. शिकारी लोग बन्दूक़से इसका शिकार करते हैं. यह पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी पहाड़ोंमें अक्सर मिलता है, यह जानवर तंग होनेकी हालतमें या ज़ख़्मी होनेपर इसके नज़्दीक जा निकलनेसे आदमीके ऊपर ज़ुरूर हमलह करता है. सांमर एक तृणचर पशु और बड़े महिषकी बराबर होता है, जिसके बहुत बड़े बड़े शाख़दार सींग होते हैं. यह किसीको दुःख-दायी नहीं है. सिंह अक्सर इन्हीं जानवरोंसे अपनी क्षुधा शान्त करता है. इसीका दूसरा भेद चीतला सांमर है, जिसके बदनपर सुनहरी रंगमें सिफ़ेद धब्बे होते हैं. यह भी देखनेमें बड़ा सुन्दर होता है. मेवाड़के दक्षिण जयसमुद्रकी तरफ़ व पश्चिमी पहाड़ोंमें इन जानवरोंके झुंडके झुंड मिलते हैं, शिकारी लोग मार मारकर इनका मांस भक्षण करते और इनके क़ीमती चमड़ेको तय्यारकर अपने काममें लाते हैं. हरिण, यह भी एक प्रसिद्ध तृणचर और गरीब जानवर है, अक्सर चौड़े मैदानोंमें इसके झुंडके झुंड रहते हैं. दौड़ने और छलांग मारनेकी शक्ति इस जन्तुमें अधिक होती है. यह जानवर कई प्रकारका होता है, अर्थात् कोई काला और छीकला और कोई चौसींगा, जिसके चार सींग होते हैं; इसको भेड़ला और कहीं कहीं बूटाड़ भी कहते हैं, जो हरिणकी एक क़िस्म है. सियागोश, इस जानवरका क़द कुत्तेसे कुछ छोटा होता है, और यह मांसाहारी है. यह जानवर

दो दो शामिल रहते हैं, और बाज़ बाज़ अकेले भी मिलते हैं, लेकिन् बहुत थोड़े हैं. जंगली कुत्ते, जो कुत्तेकी बराबर और मांसाहारी हैं, दश दश पन्द्रह पन्द्रहका झुंड बनाकर रहते हैं. ये सूअर वगैरहको अच्छीतरह मारते हैं, और इनसे शेर भी डरता है. बाज़े बाज़े लोग इन्हींको करु कहते हैं, क्योंकि करु भी ऐसा ही होता है. गीदड़ (सियाल), यह मांसाहारी और कन्दमूल फलाहारी जन्तु मेवाड़में बहुत पायाजाता है. लोमड़ी, यह भी सियालकी क़िस्मका एक छोटा जंगली जानवर है. जरख भी मेवाड़में बहुतायतसे मिलता है. इसकी बाबत् देहाती लोगोंमें मश्हूर है, कि इस जानवर डाकिन सवारी करती है, इसीसे इसको यहां डाकिनका घोड़ा भी कहते हैं. सूअर, यह जानवर तृण और कन्द चर है, परन्तु मिलनेपर मांस भी खाजाता है; गुस्सेकी हालतमें यह शेरसे बराबरीका मुक़ाबलह करता है, और बहादुरीमें सबसे बढ़कर है. राज्यके आखेटके रक्षित जंगलोंमें तथा सर्दारोंके कितनेएक इलाक़ोंमें तो अधिक और बाक़ी हरएक जगह पायाजाता है. राजपूत लोग इसका शिकार बड़े उत्साहके साथ बन्दूक़से अथवा घोड़ेपर सवार होकर बर्छेसे करते हैं. रोझ, यह तृणचर जानवर मेवाड़के पूर्वी दक्षिणी जंगलोंमें कहीं कहीं मिलता है. इसका क़द घोड़ेके समान होता है, इत्यादि.

घरेलू जानवरोंमें हाथी, उत्तराखंडकी तरफ़ नयपालकी तराईमें, आसामके जंगलोंमें और दक्षिणी हिन्दुस्तानके जंगलोंमें होते हैं, जिन्हें सौदागरोंकी मारिफ़त राजा लोग ख़रीद ख़रीदकर अपने काममें लाते हैं. बाज़ वक़्त महाराणा साहिबके फ़ीलख़ानहमें ५० से कम और ३० से ज़ियादह हाथी रहते हैं, लेकिन् इसवक़्त ४५ मौजूद हैं (१). सुनते हैं, कि पहिले ज़मानहमें १०० हाथी ख़ास फ़ीलख़ानहमें रहते थे. उदयपुरके हाथियोंकी लड़ाई प्रसिद्ध है, और हक़ीक़तमें यहांके हाथी लड़ते भी अच्छे हैं. ये शेरका शिकार करनेके वक़्त मज़्बूत और दिलेर होते हैं; सवारीके काममें भी यहां ज़ियादह लाये जाते हैं. मुझको हाथीकी सवारीका ज़ियादह मुहावरा रहा है, अगर हाथी पाठा हो, तो आरामके लिये पालकीकी सवारीसे कम नहीं है, और बड़ी जुलूसी सवारियोंमें अथवा शिकारके वक़्त महाराणा साहिब भी अक्सर हाथी हीपर सवार होते हैं. गजनायक नामका एक हाथी नयपालके महाराजा राजेन्द्रविक्रमशाहने महाराणा जवानसिंहको तुह्फ़ेमें भेजा था, वह ऊंचाई, लम्बाई, चौड़ाई और ख़ूबसूरतीमें ऐसा था, कि अगर्चि मैंने हज़ारों हाथी देखे, लेकिन् वैसा कोई दूसरा हाथी देखनेमें नहीं आया. वह महाराणा शम्भुसिंहके समयमें मरगया. वर्त्तमान समय के हाथियोंमें विजयशृंगार नामी हाथी ऊंचाई, लम्बाई, और मोतबरीमें मश्हूर है.

(१) देवस्थानों और उमरावोंके हाथियोंकी संख्या इससे अलग है.

घोड़े, ये जानवर महाराणा स्वरूपसिंहके अख़ीर समयतक मेवाड़में बहुत थे, याने चौथा बांटा देने वाले हरएक राजपूतके घरमें १ या २ घोड़े, घोड़ी अवश्य मिलते थे, और बड़े ठिकानेदार तो अच्छे राजपूत और ज़ियादह घोड़े, घोड़ी रखनेमें अपनी .इज़्ज़त जानते थे, परन्तु वर्त्तमान समयमें सिवा महाराणा साहिब के तवेलेके (१) दूसरे सर्दारोंमें यह शौक़ कम होगया है. ऊंट, यह जानवर मेवाड़में अधिकतर बारबर्दारीके काममें लाया जाता है, किन्तु सवारीमें कम. केवल रियासतके शुतरख़ानहमें ३० या ४० .उम्दह सांडिये सवारीके लिये मेरे तअ़ल्लुक़में हैं, उनमें से कितनेएक पचास पचास कोसका धावा एक एक दिनमें करसक्के हैं. इसके सिवा ठिकानेदारोंके यहां भी रहते हैं, परन्तु ऊंटकी सवारी इस देशमें अधिक नहीं कीजाती, मारवाड़ और शैख़ावाटीमें इसकी सवारीका अधिक प्रचार है. गधे इस देशमें छोटे होते हैं. इस जानवरको यहां धोबी और कुम्भार व ओड़ आदि अधिकतर मिट्टी और पत्थर ढोहनेके काममें लाते हैं. इस देशमें अपराधीको सज़ा देनेके वक्त गधेपर बिठाकर शहरके बाहिर निकालदेते हैं. इसी सबबसे यहां गधेकी सवारीकी बड़ी हिक़ारत है, वर्नह धर्मशास्त्रमें तो ऊंट और गधेकी सवारीका बराबर दोष लिखा है, परन्तु यहां ऊंटकी सवारीका दोष नहीं समझते. गाय और भैंस मेवाड़में बहुतायतसे हैं. सब लोग इनको पालते हैं, बहुतसे लोगोंका ख़ास इन्हींके ज़रीएसे गुज़ारा होता है, और किसान लोगोंके यहां तो गाय भैंसके झुंडके झुंड रहते हैं. भैंसका दूध मीठा और गाढ़ा, गायका दूध (२) कुछ फीका और पतला होता है. बनिस्बत गायके भैंसके दूधसे घी अधिक निकलता है. भैंसका मूल्य मेरे बचपनमें २०)से २५) रुपये और गायका ५) व ८) रुपये से अधिक नथा, परन्तु वर्त्तमान समयमें भैंसकी क़ीमत ५०) या ६०) और गायकी २५) ३०) रुपयेतक बढ़गई है. भैंसके नरबच्चे याने पाड़ेका मोल १०) १२) रुपयेसे ज़ियादह नहीं लगता और गायके नर बच्चे याने बैलका मोल ८०) रुपये तक, या इससे अधिक भी होता है. आसूदह हाल किसानोंके यहां ५० से लेकर १०० तक गाय भैंस रहती हैं. यहांकी भैंस और गाय न बहुत छोटी और न बहुत बड़ी, अक्सर मंझले क़दकी होती है. बकरी और भेड़ मेवाड़में बहुत होती हैं. अव्वल दरजह गूजर, गाडरी, और दूसरे दरजह रैबारी व भील वगै़रह क़ौमें इन जानवरोंके झुंडके झुंड रखते हैं. इस मवेशीके पालनेमें

(१) महाराणा साहिबके तवेलेमें अरबी वगै़रह सब क़िस्मके घोड़े सौदागरोंसे ख़रीदे जाते हैं.
(२) यहांकी गाय दूध कम देती है.

केवल आदमीकी ज़रूरत है, और किसी क़िस्मका ख़र्च नहीं होता. अकालमें इस मवेशी के रखने वाले निर्भय रहते हैं. कुत्ता, बिल्ली वगैरह जानवरोंको यहां कोई नहीं पालता, शहर और गांवोंमें बहुतसे लावारिस फिरा करते हैं. कहीं कहीं बकरी, भेड़ी और खेतीकी रक्षा करनेके लिये अथवा शिकारके वास्ते कुत्ते पालेजाते हैं. परिन्द जानवरोंमें सिफ़ेद बतक़, मुर्ग़ा, और कबूतर हरएक जगह पालतू मिलते हैं. तोता आदमीकी बोली बोलनेमें चतुर होता है. साधारण तोता हरएक जगह मिलसक्ता है, लेकिन् गागरौनी सूआ, जो क़दमें भी बड़ा और जिसके पंखोंपर लाल दाग़ होते हैं, आदमीकी ज़बान अच्छी तरहसे बोलसक्ता है. इस पक्षीको बेगम पट्टेके धामण-घाटी गांवसे लाते हैं, और उदयपुरके दक्षिणी पहाड़ोंमें भी यह मिलता है. जंगली परिन्द गीध, ढींच, चील, शिकरा, कव्वा, तोता, कबूतर, मोर, जंगली मुर्ग़े, कोयल, पपीहा, तीतर, बटेर, और हरियल आदि हज़ारों पक्षी हैं, और कितनेही शिकारी परिन्द ख़ास मौसममें बाहिरसे यहां चले आते हैं, जिनकी गिनती करनेसे एक बड़ी किताब बनसक्ती है. पानीके ऊपर रहने वाले परिन्द बक (बगुला), हंजा, घरट, सारस, टिटहरी, बतक़ (आड़), जलकुक्कुट, जलकाक वगैरह सैकड़ों क़िस्मके जानवर हैं. पानीके भीतर रहने वाले जानवर मगर, मच्छी, जलमानस (१), मेंडक, कछुआ, कर्कट (केंकड़ा), और जलसर्प (डिण्डू) वगैरह अनेक प्रकारके जन्तु होते हैं, लेकिन् मच्छी बहुत क़िस्मकी बहुतायतसे मिलती हैं. यहां देवस्थानोंमें व बहुतसे अन्य जलाशयोंमें मच्छी मारनेकी पूरी मनादी है. गूंछ जातिकी एक मच्छी, जो बेड़च और बनास नदीमें मिलती है, वज़नमें एक मनसे भी ज़ियादह होती है, उसके मुंहमें दांतोंकी लकीर, बड़ी मूछें, और उसका सिर बहुत कठोर होता है. उसका मांस देखनेमें बहुत अच्छा, लेकिन् खानेमें ज़ियादह स्वाद नहीं होता. विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में एक बड़ी गूंछ मछली मारकर कहार लोग क़िले चित्तौड़पर लाये थे, जिसको हम लोगोंने वैकुण्ठवासी महाराणा साहिबके सामने हाथोंहाथ पकाया, लेकिन् वह खानेमें मज़ेदार न थी.

(कुए और सत्हके नीचे वाले जलकी सामान्य आकृति).

सत्हके नीचेकी धरती ऐसी कड़ी अर्थात् कठोर है, कि कुओंके बनानेमें बड़ा परिश्रम और व्यय होता है. सत्हके थोड़ेही फ़ीट नीचे कड़े चटानका एक तह है, जिससे नीचेका

(१) यह जानवर बिल्लीकी शक्लका होता है, लेकिन् यहां इसको जलमानस कहते हैं, शायद यह नाम बिल्लीके दूसरे नामसे पलटगया हो, क्योंकि राजपूतानहमें बिल्लीको मनस्वी बोलते हैं, यह शब्द भी जल मनस्वीका जलमानस होगया होगा.

पानी सुरंगकी सहायतासे मिलता है, परन्तु मुख्य सोता तो सुरंग लगानेपर भी मुश्किलसे निकलता है. कुए कम या अधिक तेज़ बहने वाले सोतेसे भरेजाते हैं; अति गहरे और अत्यन्त अधिक व्यय वाले कुए अक्सर थोड़ेही घंटोंतक पानी निकालेजानेसे सूख जाते हैं, और जबतक फिर नया पानी न निकले, किसानको ठहरजाना पड़ता है. इस-लिये एक मौसममें हरएक कुएसे बहुत कम ज़मीन सींची जाती है, और सबसे .उम्दह ज़मीन हो तोभी पांच बीघासे ज़ियादह तो थोड़े ही स्थलोंमें सींची जाती है, कभी कभी दो बीघा अथवा एक एकड़से कुछ अधिक ज़मीन सींची जाती है. अकालके वर्षमें संभव है, कि इनसे जल बिल्कुल न निकले. इन कुओंके देखनेसे कहा जासक्ता है, कि नदियां ही यथार्थमें देशको सींचती हैं. नदियोंके दोनों तरफ़की ज़मीनमें पानी बहुत दूरतक चलाजाता है, जिससे सत्हके पासही बहुत पानी रहता है, उसको सेजा कहते हैं. ऐसे मकामोंपर कुए बहुत होते हैं, और उनके बनानेमें व्यय भी बहुत कम लगता है, और खोदनेसे जल्दी पानी निकलआता है; परन्तु सदैव पानी रहना अधिक शीघ्र बहनेवाले सोतेका कारण है. अखारा एक दूसरी तरहका कुआ है, वह बहुत गहरा खोदा जाता है, इससे इन कुओंके खोदनेमें व्यय (खर्च) ज़ियादह पड़ता है, और पानी भी सेजे वाले कुओंकी बनिस्बत कम निकलता है. देशमें इस प्रकारके कुए बहुत हैं, और सेजा केवल नदियोंके किनारेपर है. सेजाकी औसत गहराई २५–३० फ़ीट तक और अखारेकी ४५ से ५० तक होती है. पहिलेमें २०० सौसे ३०० रुपये तक और दूसरेमें ४०० सौसे एक हज़ारतक रुपया ख़र्च होता है. पूर्वोत्तरी और मध्य पर्गनोंके कुओंमें एकसे ज़ियादह चरस चलते हैं, अर्थात् इसका कुछ मामूल नहीं है, परन्तु अधिक दक्षिणी ज़िलोंमें अक्सर एक कुएपर दो दो रहते हैं, और रहंटका ज़ियादह प्रचार है.

मेवाड़के पूर्वी तथा उत्तरी हिस्सेमें चरस और दक्षिणी तथा पश्चिमी हिस्सेमें रहंट चलते हैं; और यह भी याद रखनेकी बात है, कि क़रीब २०० वर्ष पहिले आबरेज़ी, याने खेतीको पानी पिलानेकी रीति बिल्कुल न थी, इसीलिये सिवा पानी पीने और बाग़ बगीचे सींचने वाले बावड़ी कुओंके ज़िराअ़तको सींचनेका एक भी पुराना कुआ नहीं मिलता, और तालाबोंमें भी पानी निकालनेकी नहरें न थीं, ख़ाली बर्सातके पानीपर दोनों फ़स्लोंका दार मदार था. इसीसे अकालके समय हज़ारहा आदमी मारे भूखके मरजाते थे, लेकिन् अब तालाब और कुओंके सहारेसे लाखों मन नाज पैदा करलेते हैं.

राजपूतानह गज़ेटिअरमें ५ वर्षके इम्तिहानसे, जो उदयपुरमें कियागया, शरदी व गर्मीका नक्शह बनाया गया है, उसकी नक़्ल हम पाठकोंके अवलोक-

नार्थ नीचे दर्ज करते हैं:-

माह.	जन्युअरी.	फ़ेब्रुअरी.	मार्च.	एप्रिल.	मई.	जून.	जुलाई.	ऑगस्ट.	सेप्टेम्बर.	ऑक्टोबर.	नोवेम्बर.	डिसेम्बर.	औसत.
गर्मी व शरदीका रोज़ानह औसत	५९°	६५°	७५°	८२°	८९°	८८°	८२°	७९°	७९°	७३°	६९°	६२°	७६°
रोज़ानह तब्दीलीका औसत.	३२°	३२°	३३°	३२°	२४°	२०°	१७°	१३°	१३°	२६°	३३°	२९°	२५°
बारिश.	०	०	०	०	०	१.६१"	१०.८५"	६.८६"	८.९०"	०	०	०	२८.४२"

यहां मुख्यकर विक्रमका संवत् मानाजाता है. ऐसा मालूम होता है, कि शुरू ज़मानहमें चान्द्र महीना और चान्द्रही वर्ष माना गया होगा, क्योंकि चन्द्रोदयसे तिथिका ज्ञान गणित किये बिना होसक्ता है. फिर गणित विद्याका प्रचार होनेपर सौर मास और सौर वर्षका प्रचार करना चाहा, परन्तु चान्द्र मासकी तिथियोंपर बहुतसे धर्म सम्बन्धी कार्य नियत होजानेसे चान्द्र मासका बदलना कठिन होगया. तब गणितकारोंने सौर मास बनाकर उसको १२ लग्न, अर्थात् १२ संक्रान्तिके नामसे जारी किया, परन्तु उसका प्रचार गणितकारों ही में रहा; तब लाचार चान्द्र मास साबित रखकर अनुमान ३२ (१) महीनोंके अनन्तर अधिक मास बनाकर चान्द्र वर्षको सौर वर्षके शामिल करलिया. हिन्दुस्तानमें आषाढ़ादि, कार्तिकादि, चैत्रादि, कई प्रकारसे संवत्का प्रारम्भ मानते हैं, परन्तु मेवाड़में मुख्य चैत्रादि संवत् गिनाजाता है, जो साहूकारों, गणितकारों, और प्रजागणमें प्रचलित है; अलबत्तह राज्यमें श्रावणादि संवत् मानाजाता है. पहिला चैत्र शुक्ल १ और दूसरा श्रावण कृष्ण १ (२) से प्रारम्भ होता है, और मौसम अधिक मासके कारण महीनोंपर आ मिलता है, याने चैत्रसे गर्मी, श्रावणसे वर्षा, और मार्गशीर्षसे शीत ऋतु गिनते हैं; परन्तु शास्त्रकारोंने एक वर्षके ६ ऋतु माने हैं, अर्थात् चैत्र, वैशाखमें बसन्त; ज्येष्ठ, आषाढ़में ग्रीष्म; श्रावण, भाद्रपदमें वर्षा; आश्विन, कार्तिकमें शरद;

(१) यह नियम सदाके लिये ऐसा नहीं रहता कभी कभी न्यूनाधिक होता रहता है.

(२) उन्नीसवें विक्रम शतकसे पहिले इसको आषाढ़ादिक मानते थे, और आषाढ़ शुक्ल १ को प्रारम्भ गिनते थे, परन्तु अब श्रावण कृष्ण १ से प्रारम्भ मानते हैं.

मार्गशीर्ष, पौष में हेमन्त; और माघ, फाल्गुन में, शशिर; परन्तु चान्द्र मास होनेके कारण कभी कभी मौसममें फ़र्क़ आजाता है, इसलिये विद्वान लोग संक्रांतिके हिसाबसे ऋतु मानते हैं, जैसे मीन, मेष, वसन्त; वृष, मिथुन, ग्रीष्म; कर्क, सिंह, वर्षा; कन्या, तुला, शरद; वृश्चिक, धन, हेमन्त; मकर, कुंभ, शशिर; परन्तु इनमें भी अनेक मत हैं. कितनेएक अर्द्धमास और कितनेएक अर्द्ध संक्रान्तिसे ऋतुका पलटा मानते हैं, पर हमारे अनुमानसे तो यहां तीन ही ऋतु मुख्य हैं- ग्रीष्म, वर्षा और हेमन्त, याने गर्मी, बारिश और जाड़ा, और इन्हींके अनुसार आरोग्यता व अनारोग्यता माननी चाहिये; क्योंकि ग्रीष्ममें, विसूचिका (हैज़े) का भय; वर्षामें, स्नायु (बाला) का भय, और हेमन्तके प्रारम्भमें ज्वरका प्रकोप होता है. हिन्दुस्तानके दूसरे देशों की अपेक्षा इस देशमें विसूचिका रोग कम आता है, परन्तु बाला याने नहरूकी बीमारी बहुत होती है; और ज्वरके प्रकोपमें गुजराती याने फेफड़ेका रोग, जिसको अंग्रेज़ीमें निमोनिया बोलते हैं, लोगोंको अक्सर होजाता है. यदि .इलाज जल्दी न कियाजाये, तो यह रोग मनुष्यको एक दम दबाकर मारडालता है. एक ज्वर २१ या २८ दिनका होता है, उसको मोतीज्वरा, या पानीज्वरा, कहते हैं. यह ज्वर भी मनुष्यका प्राणान्त करने वाला है.

इस देशमें मज़्हबी मेले व त्यौहार भी समयके अनुसार ही होते हैं, इसवास्ते राजधानीमें जो जल्से और उत्सव होते हैं उनका बयान यहांपर कियाजाता है.

विक्रमी चैत्र शुक्ल १ को नवीन वर्षका आरम्भ मानकर जितने ज्योतिषी लोग हैं वे उत्तम वस्त्र और आभूषणोंसे सज्जित होकर महाराणा साहिबकी सेवामें उपस्थित हो धन्यवादके आशीर्वादात्मक श्लोकों सहित नवीन पञ्चाङ्ग भेट करते हैं, इस दिन साधारण उत्सव होता है. चैत्र शुक्ल २ के दिन गणगौरका सिंझारा (१) मानकर शहरकी स्त्रियां अच्छे रंग रंग के कपड़े और गहने पहिनकर बाग़ बाड़ियोंमें जाती हैं और राज्यमें भी उत्सव होता है, परन्तु राज्यका उत्सव महाराणा साहिबकी मरज़ीके मुवाफ़िक़ होता है. चैत्र शुक्ल ३ को प्रथम गणगौरका उत्सव होता है. इसलिये राज्य और शहरमें बड़ी धूमधाम होती है. तीसरे पहरके वक्त पहिला नक़ारह, और बाद उसके दूसरा नक़ारह होता है, तीसरा नक़ारह बजनेपर महाराणा साहिब सवार होते हैं, और एकलिङ्गगढ़से १९ या २१ तोप सलामीकी चलती हैं. बड़ी पोलसे त्रिपोलिया घाटतक दोनों तरफ़ लकड़ीके खंभे गाड़ेजाकर उनमें लाल रस्सियां बांधदीजाती हैं, फिर खम्भोंके पास जगह जगह पुलिसके जवान खड़े रहते हैं. उस हदके भीतर राजकीय मनुष्योंके सिवा कोई तमाशाई मनुष्य नहीं फिरने पाता. जब महाराणा साहिब सवार होजाते हैं, और सवारी महलोंसे रवानह होती है, तो सबके आगे

(१) इसको दातणहेला भी कहते हैं.

निशानका हाथी रहता है, उसके पीछे दूसरे हाथियोंपर सर्दार, पासबान और मर्ज़ीके लोग चढ़े रहते हैं. फिर पल्टन व जंगी रिसाला मए अपने अफ़्सरोंके और अंग्रेज़ी बाजा बजता हुआ निकलता है, जिसके पीछे तामजान और ख़ासा हाथी, जिनपर सोने चांदीके हौदे कसेहुए, निकलते हैं. फिर राज्यकीय बड़े बड़े प्रतिष्ठित लोग, उमराव, सर्दार, चारण, और अहलकार अच्छे घोड़ोंपर चढ़ेहुए आते हैं, उनके पीछे ख़ासा घोड़े ज़रीके सामान व सोने चांदीके गहनोंसे सजेहुए, और मुख्य घोड़ोंके दुतर्फ़ा चंवर व मोरछल होतेहुए निकलते हैं. युवराज (वलीअह्द) के सवारीमें चलनेकी दो जगह, याने ख़ासा हाथी घोड़ोंके आगे अथवा महाराणा साहिबकी पैदल जलेबके आगे रहती हैं. फिर अर्दलीके सिपाही व लवाज़िमहके लोग और रणकंकणका मधुर सुरीला बाजा बजता हुआ, उसके पीछे श्री महाराणा साहिब अच्छी पोशाक, याने अमर शाही, अरसी शाही, और स्वरूप शाही पघड़ियोंमेंसे एक क़िस्मकी पघड़ी, जामा और कभी डोढ़ी भी जो उससे छोटी होती है, और नाना प्रकारके हीरे मोतियोंके आभूषणोंको धारण कियेहुए, कमरबन्ध व ढाल, तलवार लगाये हुए अश्वारूढ (घोड़े चढ़े) रहते हैं; और दोनों तरफ़ चंवर होते हुए, छत्र, छहांगीर, किरणिया, अडाणी, छवा आदि लवाज़िमहके साथ पधारते हैं. पीछे ख़ासावाड़ामें दूसरे सर्दार, जागीरदार, पासबान व रिसालेके सवार, उनके पीछे सांडनी सवार, जागिरदार सर्दारोंके सवार और सबके पीछे नक़ारेका हाथी रहता है. सवारीके दोनों तरफ़ छड़ीदारोंकी बुलन्द आवाज़ और आगे आगे वीरताके दोहोंका गायन करने वाले ढोलियोंकी आवाज़ें सवारीके आनन्दको बढ़ाती रहती हैं. इसी ठाठके साथ महाराणा साहिब घोड़ेको कुदाते हुए धीरे धीरे त्रिपोलिया घाटपर पहुंचते हैं और वहां घोड़ेसे उतरकर नाव सवार होते हैं, जहां दो बड़ी नावें मज़्बूत जुड़ी हुई रहती हैं. इनमेंसे एक नावके ऊंचे गोखड़ेपर अनुमान दो फ़ीट ऊंचा सिंहासन रहता है, उसपर चार खंभोंवाली लकड़ीकी एक छत्री होती है. छत्री और सिंहासनको पहिले कमख़ाब, ज़र्दोज़ी और ज़रीके वस्त्रोंसे सुशोभित करदेते हैं. छत्रीके चारों कोनों और गुम्बज़पर मुकैश (बादले) के तुर्रे और कलग़ी लगादिये जाते हैं. सिंहासनके चारों तरफ़ और नीचेके तख़्तोंपर अच्छी पोशाकें व गहनोंसे भूषित सर्दार, चारण, अहलकार व पासबान अपने अपने दरजेके मुवाफ़िक़ बैठते और कितने ही खड़े रहते हैं. दूसरे नम्बरके सभ्यगण उसीके समीप जुड़ी हुई एक दूसरी नावमें और बाक़ी किश्तियोंमें सवार होते हैं. फिर नौकाकी सवारी धीरे धीरे दक्षिणकी तरफ़ बड़ी पालतक जानेके बाद पीछी घूमकर त्रिपोलिया घाटपर आती है. इसके बाद महलोंसे गणगौर माताकी सवारी

निकलती है, जिसके साथ नाना प्रकारकी सुन्दर पोशाकें और सोने चांदीके गहनोंसे भूषित दासियोंके झुंड रहते हैं. एक स्त्रीके सिरपर अनुमान ३ फ़ीट ऊंची गणगौर माताकी काष्ठकी बनी हुई मूर्त्ति सोने तथा मोतियोंके आभूषणों युक्त, जिसके दोनों तरफ़ दो दासियां हाथमें चंवर लियेहुए और आगे पीछे सवारीका लवाज़िमह हाथी, घोड़े, जिनपर पंडित व ज्योतिषी और ज़नानीड्योढ़ीके महता अह्लकार वगैरह लोग चढ़े रहते हैं. त्रिपोलिया घाटपर सवारीके पहुंचते ही महाराणा साहिब अपने सिंहासनसे खड़े होकर गणगौर माताको प्रणाम करते हैं, फिर गणगौर माताको फ़र्श युक्त वेदिकापर रखकर पंडित व ज्योतिषी लोग पूजन करके महाराणा साहिबको आशिका देते हैं. इसके बाद दासियां गणगौर माताके दोनों तरफ़ बराबर खड़ी होकर प्रणामके तौरपर झुकतीहुई लूहरें (एक तरहका गाना) गाती हैं. यह जल्सह देखनेके लाइक़ होता है. यहां राज्यमें काष्ठकी गणगौरकी बड़ी मूर्त्तिके सिवा मिट्टीकी बनी हुई गणगौर और ईश्वरकी छोटी मूर्त्तियां भी निकाली जाती हैं. बाक़ी शहर और कुल मुल्कमें ईश्वर और गणगौरकी मूर्त्तियां साथ ही निकाली जाती हैं. राजपूतानहकी कुल रियासतोंमें इस त्यौहारपर बड़ा उत्सव माना जाता है. इस देशमें कहावत है, कि दशहरा राजपूतोंके लिये और गणगौर स्त्रियोंके वास्ते बड़ा त्यौहार है. यहां महादेवको ईश्वर और पार्वतीको गणगौर कहते हैं. फिर गणगौर माताको जिसतरह जुलूसके साथ लाते हैं उसीतरह महलोंमें पहुंचाते हैं, इसके बाद उसी फ़र्श पर रंडियोंकी घूमर और गाना होता है. रेज़िडेण्ट वगैरह साहिब लोग भी मए अपनी २ मेमोंके किश्तियोंमें सवार होकर इस जल्सहको देखनेके लिये आते हैं. फिर शुरूमें महाराणा साहिबकी नाव धीरे धीरे दक्षिणकी तरफ़ बढ़ती है और कई किश्तियां उसके आगे पीछे चलाकरती हैं. थोड़ी दूर जानेके बाद आतिशबाज़ी चलानेका हुक्म होता है और तालाबके परले किनारों तथा किश्तियोंपरसे तरह तरहकी रंगबरंगी आतिशबाज़ियां छूटती हैं. इस समयका आनन्द देखनेहीसे मालूम होता है. इस अवसरपर बहुतसे लोग दूर दूरसे देखनेको आते हैं, क्यौंकि उदयपुरके गणगौरके जल्सेकी राजपूतानहमें बड़ी तारीफ़ है. तालाबके किनारोंपर देखने वाले स्त्री पुरुषोंकी बड़ी भीड़ रहती है, जिससे उनके भीतर घुसना बहुत कठिन होता है. अख़ीरमें महाराणा साहिब रूपघाटपर नौकासे उतरकर तामजानमें सवार हो महलोंमें पधारजाते हैं, जहां क़ीमती ग़ालीचे मख़मलका फ़र्श बिछा हुआ, और सोने चांदीकी चोबोंपर ज़र्दोज़ी शामियाने तने हुए, और ज़र्दोज़ी व ज़रबफ़्तके गद्दी तकिये लगे हुए, सोने चांदीके सिंहासन व कुर्सियां बिछी हुईं, और झाड़ व फ़ानूस लगेहुए तय्यार रहते हैं. इस स्थानकी तय्यारी भी देखनेके योग्य होती है, परन्तु दूसरे लोग विदा होजाते हैं, और इस स्थानतक

सिर्फ़ वेही सर्दार पासबान लोग पहुंचते हैं, जो निरन्तर महाराणा साहिबके मर्ज़ी पात्र हैं. फिर इन लोगोंको रुख़्सत देकर महाराणा साहिब ज़नानहमें पधारजाते हैं. इसी तरह ४ दिनतक यह जल्सह इसी तरीक़ेपर होता है, मामूलसे दो या चार दिन अधिक रक्खाजाना महाराणा साहिबकी मर्ज़ीपर निर्भर है. हमने इस जल्से का बयान बहुत मुख़्तसर तौरपर लिखा है, लेकिन् देखने वाले इस बयानसे बढ़कर देखेंगे.

चैत्र शुक्ल ८ को शतचण्डीका पाठ, होम, और देवीका पूजन होता है. चैत्र शुक्ल ९ को रामचन्द्रका जन्मोत्सव मानकर मध्यान्हके समय राजकीय तोपख़ानहसे तोपोंके फ़ाइर होते और कुल मन्दिरोंमें राग, रंग, नाच, गान आदि उत्सव होता है, दूसरे दिन पुजारी लोग राज्यमें और सेवकोंके घर पंजेरी, पंचामृत व प्रसाद पहुंचाते हैं.

वैशाख कृष्ण १ को राज्यमें श्री एकलिंगेश्वरका प्रागट्योत्सव (१) होता है. इस दिन क़ाइदह है, कि दर्बार श्री एकलिंगजी दर्शनार्थ पधारते हैं, परन्तु वहांका जाना इच्छापर निर्भर है. इस उत्सवमें शामके वक़्त महाराणा साहिब दर्बार करते हैं, और मिष्टान्न भोजनकी गोठ भी होती है, बाद इसके हाथियोंकी लड़ाई और तोपोंकी सलामी कराईजाती है.

वैशाख कृष्ण ३ को धींगा गणगौरका त्यौहार मानाजाता है, जिसमें चैत्री गणगौरके मुवाफ़िक़ ही जल्सह होता है. यह त्यौहार उदयपुरके सिवा राजपूतानहकी किसी दूसरी रियासतमें नहीं होता. राजपूतानहमें धींगाई ज़बर्दस्तीको कहते हैं. उदयपुरके महाराणा राजसिंह अव्वलने अपनी छोटी महाराणीके प्रसन्नार्थ रीतिके विरुद्ध ज़बर्दस्ती यह त्यौहार प्रचलित किया था, जिससे इसका नाम धींगा गणगौर प्रसिद्ध हुआ.

वैशाख शुक्ल ३ को अक्षय तृतीयाका त्यौहार होता है. इस अवसरपर महाराणा साहिब जगन्निवास महलमें पधारकर गोठ आरोगते हैं. इस त्यौहारपर पहिले यह दस्तूर था, कि राज्यकी तरफ़से हाज़िरीन जल्सहके जामों और अंगरखियोंकी चोलियां केसरके रंगसे रंगी जाती थीं, लेकिन् वैकुण्ठ वासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबने उसके एवज़ केसर और कुसुम्भेके छींटोंसे सभ्यगणोंके सब वस्त्र वसंती बना देनेका हुक्म देदिया. दिनका जल्सह होचुकनेके बाद महाराणा साहिब सायंकालको जुलूसी नौकापर सवार होकर तालाबकी सैर करते हैं और राग रंग होता रहता है, फिर महलोंमें पधार जाते हैं.

वैशाख शुक्ल १४, नृसिंह जयन्तिके दिन मन्दिरोंमें नृसिंहका जन्मोत्सव मानाजाता है.

---

(१) जन्म दिनका जल्सह.

ज्येष्ठ शुक्ल ११ को निर्जला एकादशी मानी जाती है. इस धर्मके दिन निर्जल उपवास अत्यन्त भावके साथ छोटे बड़े सब हिन्दू लोग करते हैं, और मन्दिरोंमें उत्सव होता है.

आषाढ़ शुक्ल १५ को गुरुपूर्णिमा होती है. इस दिन पठन पाठन करने वाले बालक अपने अपने गुरुका पूजन करते हैं, और एकलिंगेश्वरकी पुरी तथा सवीना-खेड़ामें महंत सन्यासियोंका पूजन होता है. यदि अवसर हो तो महाराणा साहिब भी सवीने खेड़े पधारते हैं.

श्रावण कृष्ण १ को राज्यमें नवीन वर्षका उत्सव होता है. इसदिन यदि महाराणा साहिबकी इच्छा हो, तो किसी स्थानको बाहिर पधारते हैं, वर्नह महलों ही में रहते हैं; इसदिन प्रधानकी तरफ़से गोठ (दावत) मए रंग राग वग़ैरह ख़ुशीके साथ होती है, और अह्लकार लोग नज़्रें दिखलाते हैं.

श्रावण कृष्ण ऽऽ को हरियाली अमावास्या मानकर प्रजागण उत्सव करते हैं. इसदिन महाराणा साहिब अपने सभ्यगणों सहित बड़े पुरोहितके मकानपर पधारकर भोजन करते हैं, और शहरके आम लोग देवालीके पहाड़पर नीमच माताके दर्शनोंको जाते हैं.

श्रावण शुक्ल ३ को काजली तीजका त्यौहार मानाजाता है. इस त्यौहारको आम राजपूतानहमें राजा व प्रजा सब मानते हैं, और महाराणा साहिब जगन्निवास महलमें पधारकर गोठ जीमते हैं, और रंगीन रस्सोंके झूलोंपर वेश्याएं झूलतीं और गायन करती हैं. शामके वक्त महाराणा साहिब जुलूसके साथ नाव सवार होकर मए राग रंगके किनारेपर पहुंचते हैं. यदि इच्छा हो तो वहांसे हाथी या घोड़ेपर सवार होकर बाज़ारकी तरफ़ घूमते हुए, वर्नह तामजान सवार होकर सीधे महलोंमें पधार जाते हैं. बाज़ वक्त जगन्निवासमें और बाज़ वक्त बाड़ी महलमें वैसी ही तय्यारी होती है, जैसी कि गणगौरके उत्सवमें बयान कीगई.

श्रावण शुक्ल १५ को रक्षा बंधनका मुख्य त्यौहार मुहूर्तके अनुसार मानाजाता है. जब रक्षा बन्धन होता है उस समय राज्यके कुल ब्राह्मण, सर्दार, चारण व अह्लकार महाराणा साहिबके दाहिने हाथको राखी बांधते हैं. फिर आपसमें भी एक दूसरेके बांधता है, लेकिन् यह त्यौहार ख़ासकर ब्राह्मणोंके लिये है, जो हरएकके यहां जाते हैं और राखी बांधकर दक्षिणा लेते हैं. इस दिन बहिन बेटियां भी अपने पिता व भाइयोंके अवश्य राखी बांधती हैं और उसके एवज़ वे लोग पूहलीका दस्तूर देते हैं. नारियल और खोपरोंका इस त्यौहारपर बड़ा ही ख़र्च होता है.

भाद्रपद कृष्ण ३ को बड़ी तीजका त्योहार मानाजाता है. यह त्योहार भी अधिकतर उदयपुर ही में होता है. यदि राजपूतानहकी कितनी एक रियासतोंमें होता भी हो, तो यहांसे प्रचलित हुआ जानना चाहिये. मैंने सुना है, कि महाराणा राजसिंहने अपनी छोटी महाराणीके प्रसन्नार्थ श्रावण शुक्ल ३ को छोटी और इसको बड़ी कहकर प्रचलित किया था. इसका जल्सह भी श्रावणी तीजके मुवाफ़िक़ ही होता है.

भाद्रपद कृष्ण ८ को कृष्ण जन्माष्टमीका उत्सव होता है. यह मज़्हबी त्योहार राज्यके व शहरके मन्दिरोंमें बड़ी धूमधामके साथ कियाजाता है, और आम लोग व्रत उपवास करते हैं. दूसरे रोज़ पुजारी लोग राज्यके तथा नगरके प्रतिष्ठित लोगोंके यहां प्रसाद भेजते हैं, और इसी दिन दधिकर्दमका उत्सव भी होता है.

भाद्रपद कृष्ण १२ को वत्सद्वादशी होती है. इस दिन स्त्रियां बछड़े सहित गायका पूजन करती हैं, उस वक़्त लड़के लड़की अपनी माताकी साड़ी (ओढ़नी) का पल्ला पकड़ते हैं, तब वे अपने बालकोंको खोपरा देती हैं. राज्यके ज़नानहमें भी यही दस्तूर होता है, और हम लोगोंको क़ाइदेके मुवाफ़िक़ मुहर रुपया और नारियलका गोला मिलता है.

भाद्रपद कृष्ण १४ को श्री एकलिंगेश्वर तथा बाणनाथके अर्पण हुए पवित्रे महाराणा साहिब अपने हाथसे सभ्यगणोंको देते हैं. अव्वल नम्बरके लोगोंको सुनहरी, दूसरे नम्बरको रुपहरी और तीसरे दरजेवालोंको रेशमी पवित्रे दियेजाते हैं. इस पवित्रेका मिलना राज्यके लोग अपनी .इज़्ज़त मानते हैं.

भाद्रपद कृष्ण अमावास्या को कुशोदकी अमावास्या बोलते हैं. इस दिन ब्राह्मण लोग जंगलसे नवीन दर्भ लाकर एक सालतक उसीसे अपना धर्म सम्बन्धी कार्य करते हैं.

भाद्रपद शुक्ल ४ को गणेश चौथका उत्सव होता है. इस दिन नगरके बालक दण्डा बजाते हुए शहरमें घूमते और दर्बारमें भी जाते हैं. महाराणा साहिब रात्रिके समय महलोंके बड़े चौकमें रुपये, नारियल और लड्डू फेंकते हैं, और समीपवर्ती लोग भी फेंका करते हैं, जिनको आम लोग बड़े उत्साहसे लूटते हैं; दिनको महाराणा साहिब गणपतिके प्रसिद्ध स्थानोंमें दर्शनार्थ पधारते हैं. इसी प्रकार शहरके धनवान लोग भी अपने पड़ोसियोंके घरों पर नारियल अथवा लड्डू फेंकते हैं, लेकिन् मूर्ख लोग इसके विरुद्ध पत्थर फेंककर अपना मनोर्थ पूर्ण करते हैं. इसकी बाबत् यह मश्हूर है, कि आजके दिन गालियां खाना अच्छी बात है.

भाद्रपद शुक्ल ७ को नागणेचीका पूजन होता है, और महाराणा साहिब दर्बार करते हैं. इसका कारण यह है, कि जोधपुरके राव मालदेवके साथ मंगनी कीहुई

झाला जैतसिंहकी कन्याको महाराणा उदयसिंह व्याह लाये, जिनके साथ राठौड़ोंकी कुल-देवीका डब्बा चला आया था, जिसका हाल महाराणा उदयसिंहके हालमें लिखाजावेगा.

भाद्रपद शुक्ल ११ को देवझूलनी एकादशीका उत्सव होता है. इस मज़्हबी त्यौहारका जल्सह राजा तथा प्रजा सबमें बराबर होता है. पुजारी लोग विष्णुकी धातुमयी, पापाणमयी, अथवा चित्रमयी मूर्त्तिको विमान (रेवाड़ी) में बिठाकर किसी जलाशयपर लेजाकर स्नान करवाते हैं, और हज़ारों आदमी गाते बजाते विमानके साथ जाते हैं. इस दिन खुद महाराणा साहिब भी पीताम्बररायकी रेवाड़ीके साथ पीछोला तालाबतक जाते हैं. लेकिन् बाज़ वक्त बीचहीसे पीछे लौटजाते हैं, और इस दिन सब लोग उपवास करते हैं.

भाद्रपद शुक्ल १२ को वामनद्वादशी होती है. इस दिन वामनावतारका जन्मोत्सव मानाजाता है.

भाद्रपद शुक्ल १४ को अनन्त चतुर्दशी मानीजाती है. इस दिन महाराणा साहिब व आम लोग एक भुक्त (एक बार भोजन) करते हैं, और अनन्तका पूजन करके महाराणा साहिब अपने हाथसे रेशमी अनन्त (१) अपने सब समीपवर्तियोंको देते हैं. इस अनन्तका मिलना भी यहां .इज़्ज़तमें दाखिल है.

भाद्रपद शुक्ल १५ से आश्विन कृष्ण अमावास्यातक श्राद्ध पक्ष माना जाता है. इसमें हिन्दू लोग अपने अपने पूर्वजों (दादा पिता) की मरण तिथिके दिन श्राद्ध, तर्पण और ब्राह्मण भोजन करते हैं. श्राद्ध पक्षमें सब हिन्दू लोग मांस मद्यका त्याग करदेते हैं, और मुसल्मान वगैरह दूसरी क़ौमोंको भी जीव मारनेकी मनादी होजाती है.

श्रावण महीनेमें जितने सोमवार आते हैं उनको सुखिया सोमवार कहते हैं. इसी-लिये प्रत्येक श्रावणी सोमवारको शहरके सब स्त्री पुरुष अच्छे वस्त्र आभूषणोंको पहिनकर बाग़बग़ीचोंमें जाते हैं, वहां स्त्रियां आनन्दके साथ गायन करती और सोमवारका व्रत खोलती हैं. इन दिनोंमें विशेपकर सज्जननिवास बाग़में बड़े भारी मेले होते हैं, सड़कों पर बाज़ार लगजाते, और जगह जगह डोलर व झूले वगैरह अनेक प्रकारके खुशीके सामान नज़र आते हैं.

भाद्रपद महीनेमें कभी कभी देवझूलनी एकादशीके दिन मुसल्मानोंके मुहर्रमके ताज़िये भी निकलते हैं, वे चान्द्र संवत्सर और मास होनेके कारण अनुमान ३२–३३ वर्षमें देव[illegible]लनीके दिन आमिलते हैं. ताज़िये और रामरेवाड़ीके एकही दिन निकलनेके

---

(१) १४ सूत्रके तागोंसे चौदह गांठ देकर एक डोरा बनाया जाता है, उसको अनन्त कहते हैं, और व्रत करनेके बाद लोग उसे दाहिनी भुजापर बांधते हैं.

कारण हिन्दुस्तानके अक्सर नगरोंमें बड़े बड़े फ़साद होजाते हैं, परन्तु उदयपुरमें आजतक कभी फ़साद न हुआ. ख़ास उदयपुरमें बहुतसे अच्छे अच्छे ताज़िये निकलते हैं, लेकिन् भीम पल्टनका ताज़िया सबसे बड़ा होता है.

भाद्रपद कृष्ण ११ से भाद्रपद शुक्ल ४ पर्यंत जैन सितंबरी मतवालोंके पर्यूषण (पजूसन) होते हैं, जिनमें भी प्रजाकी ख़ातिरीके लिये राज्यसे क़साई लोगोंको जानवर मारनेकी मनादी होजाती है, इत्यादि.

आश्विन शुक्ल १ से नवरात्रिका प्रारम्भ होता है. पहिले दिन प्रातःकालके समय जुलूसी लवाज़िमह पल्टन, रणकंकणका बाजा, हाथी व घोड़ा वगैरहके साथ सवारी महलोंसे खड्ग लेकर कृष्णपोल दर्वाज़हके भीतर सज्जननिवास बाग़के पास "खड्ग स्थापन" मक़ामपर पहुंचती है. फिर खड्गको इ़ज़्ज़तदार सभ्यगण मन्दिरके भीतर लेजाते हैं. वहां लादूवासका आयस (नाथ महन्त) और पंडित ज्योतिषी व सभ्यगण एक गवाक्ष (गोखड़े) में खड्ग स्थापन करके एक नाथ (१) को उसके सामने बिठादेते हैं, जो अष्टमी पर्यंत निर्जल और निराहार वहीं बैठा रहता है. इस अरसेमें राज्यके पहरे वगैरहसे उस मन्दिरका अच्छी तरह बन्दोबस्त रक्खाजाता है. और हज़ारहा हिन्दू लोग प्रतिदिन उसके दर्शनोंको वहां जाते हैं, और लादूवासका आयस कई नाथों सहित इस मन्दिरके गिर्द डेरा लगाकर रहता है. महलोंके भीतर अमरमहलके नीचेकी चौपाड़में देवी पूजनकी स्थापना होती है, जहां देवीकी मूर्ति और सर्व प्रकारके शस्त्र कलशादि स्थापन करके ब्राह्मणोंकी वरणी (मज़्हबी दुर्गापाठ) बिठाई जाती है. फिर महाराणा साहिब वहां दर्शनानन्तर बलिदान अर्पण करके किश्ती सवार हो अम्बिका भवानीके दर्शनोंके लिये पधारते हैं. इस दिनसे प्रायः देवी भक्त लोग नव दिनतक एक भुक्त व उपवास करते हैं. इस व्रतमें मद्य मांसका निषेध नहीं होता. सायंकालके समय महाराणा साहिब सवारी करके खड्ग स्थापनके दर्शनोंको पधारते हैं.

आश्विन शुक्ल २ को महाराणा साहिब बहुत सवेरे उठते हैं, और स्नानादि नित्य नियम से निवृत्त होनेके पश्चात् अमरशाही, अरसीशाही, अथवा स्वरूपशाही पघड़ी, जिसपर बहुमूल्य रत्न जटित भूषण और मुक़ैशके तुर्रा, कलग़ी व छोगा रहते हैं; बदनपर जामा, दुपट्टेका कमरबन्ध, और पाजामा वग़ैरह कुल पोशाक, तथा अनेक प्रकारके

---

(१) लादूवासका आयस, जो बड़ा इ़ज़्ज़तदार और मुआफ़ीदार मठधारी महन्त है, नवरात्रिके पूर्व नाथों (कनफटे सन्यासियों) की एक सभा करता है, जिसमें एक आदमी सुपारी लेकर सबके सामने फिरता है; फिर जिस साधूकी सामर्थ्य नौ दिनतक निरान्नजल खड्ग लेकर बैठनेकी हो वह उस सुपारीको ग्रहण करलेता है. फिर उसको जुल्लाब देकर शुद्ध करवेते हैं, और वही नाथ खड्ग लेकर नवरात्रि तक बराबर बैठता है.

सोने व रत्नोंके भूषण और ढाल, तलवार आदि शस्त्र धारण करते हैं. तीसरे नक़्क़ारे की आवाज़ (१), तोपोंकी सलामी और बैंड बाजेका बजना और महाराणा साहिबका घोड़ेपर सवार होना, एकही साथ होता है. फिर महाराणा साहिब जुलूसकी सवारीके साथ हाथी पोल दर्वाज़हके बाहिर चौगानमें पधारते हैं, जहांपर अच्छे चढ़ैत सर्दारोंके साथ थोड़ी देर घोड़े दौड़ाकर दरीख़ानहमें पधार जाते हैं, जोकि दर्बारके लिये बनाया गया है. दरीख़ानह के नीचे एक तरफ़ हाथियोंकी लड़ाई, एक तरफ़ पहलवानोंकी कुश्ती, और सामने चौगानमें ख़रगोश, शियाल, व लोमड़ियोंका छोड़ाजाना और उनके पीछे कुत्तोंका दौड़ना वग़ैरह कई प्रकारके तमाशे होते हैं, और परिन्दोंपर बाज़, बहरी आदि छोड़े जाते हैं. पहिले हररोज़ शराब पिलायाहुआ एक मस्त महिष(भैंसा)छोड़ाजाकर किसी उमराव व सर्दारकी जमइयतके सवारोंको उसपर तलवार व बर्छोंके वार करनेका हुक्म होता था, मगर आजकल सिर्फ़ भलका ४ हीके दिन इस प्रकारसे चौगानिया वग़ैरह छूटता है. इसके अलावह हरएक दिन एक महिष दरीख़ानहके नीचे लाया जाता है, और जिस सर्दारको हुक्म होता है वही उसका सिर तलवारसे काट डालता है. फिर अगड़पर हाथियोंकी लड़ाई होकर दर्बार बर्ख़ास्त होता है, और सवारी महलोंमें पहुंचती है. महाराणा साहिबके महलोंमें दाख़िल होनेके समय मामूली तोपोंकी सलामी सर होती है. इसीतरह जुलूसी सवारीके साथ तीसरे पहरके वक़्त महाराणा साहिब अम्बिका भवानीके दर्शनोंको पधारते हैं, और वहां देवीके सामने दो बकरे और ५ महिषोंका बलिदान होता है. यहां खुद महाराणा साहिब व उमराव भी बलिदानके समय चक्र करते हैं, या महाराणा साहिब जिस किसीको हुक्म देते हैं वही सर्दार तलवारका वार करता है. मैंने हमेशह देखा है, कि महिषका सिर और पैर कटकर राजपूतोंकी तलवार ज़मीनतक पहुंचजाती है. बलिदान होनेके पश्चात् उसी सवारीके ठाठसे महाराणा साहिब किश्तियोंपर सवार होकर महलोंमें पहुंचते हैं.

आश्विन शुक्ल ३ के प्रातःकालको जुलूसी सवारीसे चौगानमें मामूली रस्में अदा करके महलोंमें प्रवेश करते हैं, और शामके वक़्त हरसिद्धि देवीके दर्शनोंको, जिसे लोग हरस्तमाता बोलते हैं, पधारना होता है. वहां भी दो बकरे और पांच महिषोंका बलिदान करवाकर वापस महलोंमें प्रवेश करते हैं.

आश्विन शुक्ल ४ के प्रातःकालको चौगान, और शामको खड्ग दर्शनके लिये जुलूसी सवारी होती है. महाराणा साहिब खड्ग दर्शनोंके बाद हाथीपर सवार होकर, जिसको

---

(१) पुराने समयसे यह दस्तूर है, कि जब महाराणा साहिबके सवार होनेका इरादह होता है, तो ४ घड़ी से लेकर दोपहर पेश्तर नक़्क़ारह बजाया जाता है. फिर कुछ अ़र्सह बाद दूसरा नक़्क़ारह होता है, जिसको सुनकर कुल रियासती लोग बे बुलाये हाज़िर होजाते हैं, और सवार होते समय तीसरा नक़्क़ारह होता है.

हुक्म देते हैं वही एक महिषका सिर छेदन करता है. महाराणा भीमसिंहतक यह रीति थी, कि ख़ुद महाराणा साहिब हाथीपर सवार होकर महिषपर तीर चलाते थे, जो उस के बदनको फोड़कर दूसरी तरफ़ ज़मीनमें जालगता था. यह मेरे पिताने अपनी आंखोंसे देखा था. इसी वास्ते इस दिनको भल्का चौथ कहते हैं, मगर महाराणा जवानसिंहने इस रीतिको बन्द करदिया. फिर सवारी उसी लवाज़िमहसे धीरे धीरे महलोंमें दाख़िल होती है.

आश्विन शुक्ल ५ के प्रातः काल चौगानको सवारी जाती है और शामको अन्नपूर्णाके दर्शनोंको पधारते हैं. अन्नपूर्णा देवीके सामने महिष व बकरोंका बलिदान नहीं होता.

आश्विन शुक्ल ६ के दिन प्रातःकाल चौगानकी सवारी होती है, और शामको कहीं पधारनेका आवश्यक दस्तूर नहीं है.

आश्विन शुक्ल ७ के प्रातः काल चौगान होकर श्यामलबागमें करणी माताके दर्शन करनेको पधारते हैं वहां दो बकरे और एक महिषका बलिदान चढ़ानेके बाद महलोंमें प्रवेश करते हैं, और शामको इच्छा हो तो कालिकाके दर्शन करनेको पधारते हैं.

आश्विन शुक्ल ८ के दिन प्रातः काल मामूली कृत्य कर, भंडारके चौकमें पधार, पूर्णाहुति कर, अमरमहलकी चौपाड़में प्रवेशकर, देवीविसर्जनका दर्शनकर, स्थापन किये शस्त्रोंमेंसे तलवार (१) हाथमें लेकर बाहिर चौकमें पधारते हैं, और एक बकरेका बलिदान होता है. इसके बाद ज़नानी ड्योढ़ीके दर्वाज़ेपर आकर एक महिषका बलिदान कराते हैं, पश्चात् किश्तियोंमें सवार होकर अम्बिका भवानीके दर्शन (२) को पधारते हैं.

आश्विन शुक्ल ९ के दिन यदि महाराणा साहिबको अवकाश हो, तो समीनाखेड़ाके मठमें होमकी पूर्णाहुति करनेको जाते हैं; शामके वक़ प्रथम घोड़ोंका और पीछे हाथियोंका पूजन करनेके बाद नगीनाबाड़ीमें गद्दीपर विराजकर दर्बार करते हैं. फिर उस खड्गधारी नाथको जो (लवाज़िमह और सवारीके साथ मियानेमें सवार होकर आता है), सीढ़ियोंके पाससे उतारकर दर्बारके स्थानमें लाते हैं. उस वक़ खड्गधारी नाथका हाथ एक तरफ़से लादूवासका आयस और दूसरी तरफ़से धर्माध्यक्ष (धर्मखाताका दारोगह) थामे रहता है, और साथमें उसके बहुतसे नाथ (कनफटे सन्यासी) सींगी नाद बजाते हुए आते हैं.

---

(१) यह तलवार शार्दूलगढ़के राव जशकरण डोडियाको बेचरा माताने दी बतलाते हैं, और उसने महाराणा गढ़लक्ष्मणसिंहको नज़्र की, जिसके प्रभावसे क़िला चित्तौड़ महाराणा हमीरसिंहने मुसल्मानोंसे वापस लिया, और इसी तलवारको कमरमें लगाकर महाराणा प्रतापसिंहने बादशाहोंसे बड़ी बड़ी लड़ाइयां लड़ीं और जय पाया.

(२) अम्बिका भवानीके दर्शन कभी होमकी पूर्णाहुति करनेके बाद और कभी पहिले करते हैं, इसमें कोई नियम नहीं है, और अम्बिकाके सामने २ बकरे व १ महिषका बलिदान करायाजाता है.

फिर महाराणा साहिब गद्दीपर खड़े होकर उस खड्गधारी नाथके हाथसे खड्ग और आशिका लेकर नाथोंको विदा करते हैं. तदनन्तर यहांसे ये लोग रसोड़े (कर्ण महलके चौक) में जाते हैं, और वहां धर्माध्यक्ष उस खड्गधारी नाथका खप्पर रुपये और अश्रफ़ियोंसे भरता है, और तमाम नाथ लोगों को भोजन कराया जाता है, इसके बाद सब नाथ सींगीनाद बजाते हुए अपने महन्तके साथ डेरोंको वापस जाते हैं.

आश्विन शुक्ल १० को दशहरेका बड़ा त्यौहार माना जाता है. यह वह दिन है कि जिस दिन रामचन्द्रने रावणपर चढ़ाई की थी. मेवाड़में इस दशहरेका सबसे बड़ा भारी उत्सव होता है और कुल उमराव, सर्दार व दूसरे जागीरदार, जिनको नौकरीके एवज़ जागीरें मिली हैं, उदयपुरमें हाज़िर होते हैं. इसके सिवा छोटे जागीरदार और कम हैसियत वाले व भौमिया लोग इस दिन अपने अपने हाकिमान ज़िलाके पास हाज़िर होजाते हैं. शामके ४॥ बजे तीसरा नक़ारह होते ही महाराणा साहिब जुलूसकी सवारीके साथ घोड़ेपर सवार होकर खेजड़ी (शमी) का पूजन करनेको पधारते हैं, जो खेजड़ीका वृक्ष हाथीपोल दर्वाज़हके बाहिर [illegible]ीके पश्चिम तरफ़ एक बड़े चबूतरेके किनारेपर है. इस चबूतरेके चारों तरफ़ सुर्ख़ रंगकी कनातका बाड़ा खींचदिया जाता है, जिसके भीतर एक बड़ा शामियानह फ़र्श वगैरह अच्छी तय्यारीसे सज्जित रहता है; बाहिरकी तरफ़ ड्योढ़ीके सामने प्राचीन रीतिके अनुसार शोभा निमित्त तोरण लगाया जाता है. महाराणा साहिब तोरण याने द्वारवंदनका दस्तूर कर भीतर जाके खेजड़ीका पूजन करते हैं. इस समय वेद मंत्रोंसे अभिषेक कियेहुए ४ तीर चारों दिशाओंमें शहरके दर्वाज़ोंपर प्रस्थान निमित्त (१) भेजदिये जाते हैं. इसके बाद महाराणा साहिब गद्दीपर विराजकर चारण कवि लोगोंके मुंहसे अपने पूर्वजोंकी वीरतामयी कविता (शाइरी) सुनते हैं. फिर क्रमसे कुल मौजूदह सर्दार, पासबान, चारण (२), अह्लकार वगैरहकी नज़्रें लीजाती हैं. ताज़ीम वालोंकी नज़्रें खड़े खड़े और बे ताज़ीम वालोंकी बैठकर लेते हैं. जलेबी तोपख़ानहसे तोपोंके १०० या १५० फ़ाइर होते हैं. दर्बारका यह दस्तूर है, कि महाराणा साहिबके दाहिने हाथ वाली लाइनको बड़ी ओल (पंक्ति) और बाएं हाथ वालीको कुंवरोंकी ओल कहते हैं. बाज़ बाज़ सर्दारोंमें बैठकका झगड़ा रहता है, लेकिन् क़दीमसे दस्तूर यह है, कि किसी सर्दारको किसी नम्बरकी बैठक मिली, तो उस नम्बरपर पहिले बैठने वाले सर्दारको एक नम्बर नीचे हटकर बैठना पड़ेगा और नई बख़्शीहुई नशिस्त (बैठक) उसी

---

(१) इन तीरोंके प्रस्थान रखनेका प्रयोजन यह है, कि एक वर्ष पर्यन्त महाराणा साहिबको चारों दिशाओंकी यात्राका मुहूर्त होचुका, फिर दोबारह मुहूर्त देखनेकी आवश्यकता नहीं.

(२) चारण और ब्राह्मण वगैरह लोगोंकी नज़्रें मुआफ़ कीजाती हैं.

नम्बरकी मानी जायेगी, जिस नम्बरपर कि बख़्शी गई हो. दरीख़ानहका दारोगह हरएक दर्बारी शख़्सको अपनी अपनी नशिस्त (बैठक) पर बिठा देता है. दर्बार बर्ख़ास्त होनेके वक़्त तंबोलख़ानहका दारोगह और दर्बारका दारोगह दोनों मिलकर महाराणा साहिबके हाथसे ताज़ीमी लोगोंको बीड़ा दिलाते हैं, और जिनको हाथसे देनेका दस्तूर नहीं उनको दारोगह देता है. बीड़ा तक्सीम होनेकी अर्ज़ होते ही दर्बार बर्ख़ास्त होकर महाराणा साहिब हाथीपर सवार होते हैं. सवारीके हाथीके दाई बाई तरफ़ ख़वासीके दो हाथी दूसरे अच्छी झूलें व चांदीके हौदोंसे कसेहुए रहते हैं, जिनपर एक एक सर्दार चंवर लेकर बैठता है. महाराणा साहिबकी ख़वासीमें क़दीम ज़मानहसे प्रधानके बैठनेका दस्तूर था, लेकिन् हालमें यह क़ाइदह है, कि पारसोली, आसींद, व सर्दारगढ़ वगैरह ठिकानोंके सर्दार बैठते हैं. एक चंवर ख़वासी वालेके हाथमें और दूसरा महावतके हाथमें रहता है, और दोनों इधर उधरके हाथियोंपरसे भी चंवर होते चलते हैं. यह सवारी बड़ी रौनक़ और जुलूसके साथ महलोंमें दाख़िल होती है. फिर नाहरोंके दरीख़ानहमें बड़ा दर्बार होता है, उस वक़्त चारण कवि लोग अपनी निजकृत कविता सुनाते हैं, और हाथी घोड़े नज़ होते हैं. थोड़ी देरके बाद दर्बार बर्ख़ास्त होता है, उस वक़्त उमरावोंको रुख़सतके बीड़े देकर विदा करते हैं. फिर महाराणा साहिब महलोंमें तशरीफ़ लेजाते हैं, और सबके रुख़्सत होनेके बाद आतिशबाज़ी छोड़ी जाती है, और रात्रिको कुल सर्कारी तोपोंसे एक एक फ़ाइर हाज़िरीके तौरपर होता है.

दशहरा और शरदकी पूर्णिमाके बीचमें एक दिन फ़ौजकी हाज़िरीके लिये मुहल्लाके नामसे नियत होता है. इस दिन भी कुल सवारी दशहरेके मुवाफ़िक़ ही होती है, लेकिन् महाराणा साहिब व कुल सर्दार, पासबान वगैरह लोग फ़ौजी लिबास पहिनते हैं, याने सिरपर लोहेका टोप, जिसपर तुर्रा कलगी लगे हुए, बदनपर कवच अथवा हज़ारमेख़ी अथवा कड़ीदार बक्तर, हाथोंमें दस्ताने, पैरोंमें कड़ीदार पाजामें; हाथोंमें बर्छे वा खाण्डे रखते हैं, घोड़ोंकी पीठोंपर पाखर, और मुंहपर बनावटी सूंडें लगी हुई होती हैं. इस सवारीका ठाठ भी देखने लाइक़ होता है. इस सवारीके देखनेको अंग्रेज़ लोग भी दूर दूरसे आते हैं. महाराणा साहिब महलोंसे सवार होकर दिल्ली दर्वाज़हके रास्तेसे सारणेश्वरगढ़के पास पहुंचते हैं, और वहां दर्बार होकर तोपख़ानह और फ़ौजकी हाज़िरी लीजानेके बाद हाथी सवार होकर वापस महलोंमें पधारते हैं. इस दिनका कुल दस्तूर दशहरेके मुवाफ़िक़ जानलेना चाहिये.

आश्विन शुक्ल १५को शरद पूर्णिमाकी ख़ुशी मानीजाती है. इस दिन शामके वक़्त महाराणा साहिब सवारी करके हाथीपोलके बाहिर चौगानको पधारते हैं, और वहां हाथियोंकी लड़ाई वगैरह देखकर वापस आते हैं. रात्रिके समय सबसे ऊपरवाले प्रासाद (महल) पर सिफ़ेद बिछायत

बिछाई जाती है, गद्दी तकिया, पलंगकी बिछायत भी सब सिफ़ेद ही होती है, फ़र्शपर बिखरे हुए मुकेशकी चमक चांदनी रातमें बड़ी शोभा देती है. इस स्थानमें महाराणा साहिब और कुल सभ्यगण सिफ़ेद अथवा फ़ाख्तई रंगकी पोशाकें पहिने हुए देखने वालोंके दिलोंको खुश करते हैं. सभ्यगणोंको विदा करनेके बाद महाराणा साहिब शयन करते हैं. इस दिन देव मन्दिरोंमें भी बड़े बड़े जलसे, और देव मूर्त्तियोंको चन्द्रमाकी चांदनीमें बिठाई जाकर पूजन वगैरह होता है.

कार्तिक कृष्ण १३ को धन तेरस होती है. इस दिन यहांके आम लोगोंमें प्रचार है, कि सायङ्कालको अपने घरका कुल ज़ेवर व नक्द एक जगह रखकर उसका पूजन करते हैं, जिसको लक्ष्मी पूजन बोलते हैं; और तीन दिनतक अखण्ड घृतका दीपक जलता हुआ रखते हैं. इन तीन दिनोंके भीतर रौप्य मुद्रा याने रुपया अपने घरसे कोई किसीको नहीं देता और दूसरेके यहांसे आवे तो उसको शुभ शकुन समझते हैं. महाराणा साहिब भी इस रोज़ लक्ष्मी देवीके मन्दिरमें दर्शनोंको पधारते हैं.

कार्तिक कृष्ण १४ को रूपचतुर्दशी होती है. यह दिन भी शुभ समझा जाता है. पुराने ज़मानहमें इस दिन जूआ खेलनेका दस्तूर था, लेकिन् अब नहीं.

कार्तिक कृष्ण अमावास्याको दीपमालिका बोलते हैं. दशहरेसे दीपमालिकातक आम लोग अपने अपने मकानोंको लींप पोतकर स्वच्छ करते हैं. इस त्यौहारको अमीर व ग़रीब सब मानते हैं. शामके वक़ महाराणा साहिब नगीनाबाड़ीमें दर्बार फ़र्माकर कुल सरदार पासवान वगैरह लोगोंको कालींगूंदगरीके सांठे बख़्शते हैं, बाद महाराणा साहिब नज़्दीकी भाई बेटों सहित ज़नाने महलोंमें हीड़ सिंचवानेको पधारते हैं. रात्रिके समय महलोंमें बहुतही अच्छी रौशनी होती है. अलावह इसके बाज़ार, गली, कूचे और आम लोगोंके मकान भी रौशनीसे ख़ाली नज़ नहीं आते. देहातोंमें भी सब लोग अपनी अपनी हैसियत के मुवाफ़िक़ ज़ुरूर दीपक जलाते हैं. साहूकार लोग इस त्यौहारको बहुतही ज़ियादह मानते हैं, क्योंकि बाज़ बाज़ साहूकारोंका वर्ष इसी दिन ख़त्म होता है.

कार्तिक शुक्ल १ को खेंखरा बोलते हैं. इस रोज़ चौगानके क़रीब जलंधर दैत्यकी एक बड़ी मूर्त्ति बांसों व लकड़ियोंसे बनाई जाती है, जिसमें रंग और आतिशबाज़ी भरकर ऊपरसे काग़ज़ मंढदिया जाता है. यह तमाशा देखनेके लिये हज़ारहा तमाशाई लोग जमा होते हैं, और महाराणा साहिब भी शामके वक़ चौगानमें पधारकर हाथियोंकी लड़ाई और दो दो घोड़ोंकी जोड़ियां दौड़ाकर देखते हैं. फिर दैत्यके कलेवर (शरीर) में आग लगाई जाकर वह उड़ाया जाता है. इसी दिन देव मन्दिरोंमें प्रसादके बड़े जल्से होते हैं, लेकिन् सबसे बड़ा जल्सह नाथद्वारेमें होता है, जिसको अन्नकूटोत्सव कहते हैं.

कार्तिक शुक्ल २ को यमद्वितीया होती है, इस दिन हरएक बहिन अपने भाईको

अपने घरपर बुलाकर जिमाती है. पुराणोंमें लिखा है, कि यमराजने आज अपनी बहिन जमुना नदीके घरपर भोजन किया था. और इसीदिन साहूकार लोग दवातपूजा करते हैं.

कार्तिक शुक्ल ३ को राज्यमें दवातपूजाका उत्सव होता है. दीपमालिकासे दवातपूजा तक कुल अदालतोंमें तातीलें रहती हैं.

कार्त्तिक महीनेमें अक्सर देव मन्दिरोंमें हमेशहकी बनिस्बत अधिक दीपक जलाये जाते हैं, परन्तु कार्तिकके सब दिनोंकी बनिस्बत कार्तिक शुक्ल १५ को, जिसे देवदीवाली बोलते हैं; अधिक रौशनी होती है. इस महीनेमें पुरुष और स्त्रियां पिछली रातको तालाब, नदी आदि जलाशयोंपर स्नान करनेको जाते और एक भुक्त करते हैं, याने दिनमें एक बार खाना खाते हैं, और रात्रिको कार्तिक माहात्म्यकी कथा सुनते हैं. इसी पूर्णिमाको ज़िले अजमेरमें पुष्करका बड़ा मेला होता है, जहां ऊंट, घोड़े और बैलोंका व्यापार बहुत होता है.

मार्गशीर्ष कृष्ण १ को मुहूर्तका शिकार होता है. इस रोज़ राज्यके सेवकोंको अमव्वा रंगके रूमाल दिये जाते हैं, और महाराणा साहिब सभ्यगणों सहित शिकारी रंगकी पोशाकसे नक़ारेकी जुलूसी सवारीके साथ, जिस दिशाका मुहूर्त होता है, उस दिशाको पधारते और सूअर वगैरह जानवरोंका शिकार करते हैं. यदि मुहूर्त ज़ियादह दिन चढ़ेका निकले, तो महलोंमें गोठ अरोगकर सवार होते हैं, और जल्दीका होता है, तो शिकार किये पीछे किसी रमणीक स्थानपर गोठ अरोगते हैं; सर्दारोंको फूलोंकी चौसरें बख़्शी जाती हैं, और शिकार होनेके पश्चात् दरीख़ानह होकर सर्दार, पासबान आदि कुल सेवकोंकी नज़ें लीजाती हैं; बाद चारण कविलोग कविता सुनाते हैं, फिर शामके वक़ वापस महलोंमें पधारते हैं. इस दिनसे सूअरका शिकार शुरू होता है.

पोष शुक्ल २ को वर्तमान महाराणा साहिबका जन्मोत्सव होता है. इस दिन श्री पीताम्बररायके उत्तरी चौकमें महाराणा साहिब होमकी पूर्णाहुति अपने हाथसेकर नवग्रहके दान आदिक पुण्य करते हैं. सबसे बड़ा दान सुवर्णका है, जो महाराणा साहिब जितने वर्षके हों उतना तोला दिया जाता है; और गज, अश्व, रथ, गो, महिषी वगैरह दान सद्रूप होते हैं. फिर श्रीएकलिङ्गेश्वरके गोस्वामीके दर्शन व भेट करके सभ्यगणोंकी नज़ें लेते हैं. इसके बाद तामजान सवार होकर जगदीशके दर्शनकरनेके पश्चात् सभाशिरोमणि स्थानमें दर्बार करते हैं; इस मौक़ेपर रेज़िडेण्ट मेवाड़ मुबारकबाद देनेको आते हैं. इस त्यौहारमें अधिक न्यून दस्तूर महाराणा साहिबकी प्रसन्नताके अनुसार होसक्ता है. पहिले यह दस्तूर था, कि कुल राजकीय मनुष्योंकी पोशाकें याने जामा, पघड़ी, दुपट्टा, वगैरह सब कुसुम्मल होते थे, परन्तु वर्त्तमान महाराणा साहिबने यह रीति बन्द करके हुक्म दिया, कि जिसको जैसी इच्छा हो वैसी उत्तम पोशाक पहिनकर

आवे. गादी उत्सवका जल्सह भी इसी प्रकार होता था, परन्तु वर्त्तमान महाराणा साहिबने इस उत्सवका करना छोड़दिया, इससे वर्त्तमान समयमें यह जल्सह बन्द है.

पोष शुक्ल १५ को फूसगजका तमाशा होता है, याने बड़े महलोंके चौकमें फूसका एक हाथी बनाया जाकर काले कपड़ेसे मंढदियाजाता है, और उसपर एक बनावटी महावत भी बिठादिया जाता है. यह हाथी मए महावतके ऐसा बनायाजाता है, कि मानो अस्ली हाथीही है. इसके बाद लड़ाईका हाथी लायाजाता है, जो उस बनावटी हाथीको देखते ही लपककर उसे बिखेरडालता है. महाराणा साहिब महलोंमें दर्बार करके यह तमाशा देखते हैं.

इन्हीं दिनोंमें मकर संक्रान्तिका प्रवेश होकर उस दिन मकर संक्रान्तिका मज़्हबी त्योहार मानाजाता है. महाराणा साहिब दानपुण्य करनेके बाद किसी बाग़ बगीचेमें गेंद खेलते हैं, और बाक़ी नगरके लोग गेंद खेलनेको हाथीपोलके बाहिर चौगानमें जाते हैं.

माघ शुक्ल ५ यानें वसन्त पंचमीके दिन महाराणा साहिब सभ्यलोगों सहित वसन्ती पोशाक पहिनकर दर्बार करते हैं, और मन्दिरोंमें भी गुलाल व रंग उछालाजाता है.

माघ शुक्ल ७ को नागणेची (१) देवीके पूजनका जल्सह और दर्बार होता है.

फाल्गुन कृष्ण १४ को शिवरात्रि कहते हैं, और इस दिन आम लोगोंमें उपवास तथा शिव पूजन होता है.

फाल्गुन शुक्ल ११ को आंवली एकादशी कहते हैं. इस दिन उपवास और आंवली का पूजन होता है, और गंगोद्भव स्थानपर, जो शहरसे क़रीब १॥ मील दूर है, भीलोंका मेला होता है.

फाल्गुन शुक्ल १५ को होलीका त्योहार होता है, जिसको हुताशनी भी कहते हैं. इस दिन प्रातःकालको महाराणा साहिब मामूली कृत्यके पीछे गोठ अरोगकर महलोंमें सभ्यगणोंपर गुलाल डालते, और सभ्यगण नज़्रें दिखलाकर अदबके साथ महाराणा साहिबपर भी गुलाल डालते हैं. फिर महाराणा साहिब और सभ्यगण हाथियोंपर सवार होकर महलोंके चौकमें गुलालसे फागखेलते हैं. इस फागमें गुलाल इतनी उड़ाई जाती है, कि ज़मीन और महलोंकी दीवारेंतक लाल होजाती हैं. महाराणा साहिब इसी तरह गुलाल उछालते हुए हाथियोंकी सवारीसे बाज़ारमें होकर सज्जननिवास या सर्वऋतुविलास वग़ैरह रौनक़की जगहपर पहुंचते हैं, और वहां स्नानादिसे निवृत्त होनेके बाद स्वच्छ वस्त्रालङ्कार धारणकर सायंकालको सवारहोके महलोंमें प्रवेश करते हैं और नगीनावाड़ीमें दर्बार फ़र्माकर राज सेवकोंको काष्ठके खांडे और नारियल देते हैं. इसके बाद मुहूर्त्तके साथ ज़नानी ड्योढ़ीके चौकमें होलीका पूजन होकर होली जलाई जाती है,

(१) इसका सविस्तर वृत्तान्त महाराणा उदयसिंहके हालमें लिखा जायेगा.

फिर बाहिरके चौकमें दूसरी होली जलाते हैं. यदि होलीका मुहूर्त देरसे हो, तो महलोंमें जाकर वापस आना पड़ता है. सभ्यजन नारियल फेंकते हैं. होलीके बाद घोड़ोंकी व नौकाकी सवारीसे तालाबमें भी फागहोती है. परन्तु यह बात महाराणा साहिबकी इच्छानुसार है, जिसतरह इच्छा हो उसीतरह फाग कीजाती है.

चैत्र कृष्ण १ को धूलहरी कहते हैं. इस दिन महाराणा साहिब महलोंमें रहकर निज़ सेवकोंको अपने अपने घरजानेकी आज्ञा देते हैं, जो अपनी अपनी क़ौमके गिरोहमें मिलकर फाग खेलते हैं. पहिले तो इस दिन कोई भला आदमी भी शहरमें नहीं फिरने पाता था, क्योंकि बदमआश लोग बेहूदा बोलकर उसकी दुर्दशा करदेते थे, और औरतोंका तो कहनाही क्या बल्कि रण्डियां भी अपने अपने मकानोंके किंवाड़ बन्दकर के चुप बैठी रहती थीं, जिसपर भी उनके किंवाड़ोंपर सैकड़ों पत्थर गिरते थे; परन्तु कुछ तो महाराणा स्वरूपसिंहने इस रिवाजको कम किया, और फिर महाराणा शम्भुसिंहके समयमें यह और भी कमज़ोर हुआ, लेकिन् महाराणा सज्जनसिंह साहिबने तो इसका ऐसा बन्दोबस्त करदिया, कि अब औरतोंकी आमदोरफ्त भी अच्छी तरह जारी होगई है. देहातों में भी इस दिन बड़ी धूम धाम रहती थी, पर अब कमज़ोर होगई है. लोग अपनी बिरादरी में फाग खेलते हैं, और सालभरके भीतर पैदाहुए लड़के लड़कियोंको ढूंढते हैं (१).

चैत्र कृष्ण २ को जमराबीज (यमद्वितीया) कहते हैं. इसदिन शामके वक़्त औरतें बेहूदा गीत (गालियां) गाती हुई होलीकी भस्म लाकर उसके पिंडोले बनाकर पूजती हैं. इन दिनोंमें महाराणा साहिब शामके वक़्त स्वरूपविलास महलमें हमेशह दर्बार करते और शहरके व देहाती लोगोंकी गहरें आती हैं, वे नाचते गाते और इन्आम ले लेकर अपने अपने घरोंको जाते हैं.

चैत्र कृष्ण ५ को महलोंके चौकमें हाथी, घोड़े, महिष, मींढे, सूअर, सांभर और हरिण वग़ैरह जानवरोंकी लड़ाइयां होती हैं.

चैत्र कृष्ण ८ को शीतला अष्टमी (२) कहते हैं. इस रोज़ महाराणा साहिब जुलूसकी सवारीसे शीतला देवीके दर्शन करनेको जाते हैं, और दर्शन करनेके बाद रंगनिवास महलकी छतपर कुछ देरतक विराजते हैं, जहां वेश्याओंका नाच व गाना होता

---

(१) चन्द आदमी लकड़ीके डंडे हाथमें लेकर बालकके ऊपर डंडेसे उन्हें परस्पर बजाते हुए मुखसे आशीर्वाद देते हैं, फिर गुड़ पापड़ी लेकर अपने घरजाते हैं.

(२) यह जल्सह हिन्दुओंमें सब जगह सप्तमीको होता है, लेकिन इस दिन महाराणा भीमसिंह का जन्मदिन होनेके सबब उन्होंने इस जल्सहका दिन अष्टमी रक्खा था, और उसी समयसे यह हमेशह अष्टमीको होने लगगया है.

है. फिर राजकी दासियां व शहरकी स्त्रियां गाती हुई शीतलाके पूजनको आती हैं, और पूजन करके इसी प्रकार वापस लौटजाती हैं. महाराणा साहिब सभ्यगणोंको फूलोंकी चौसरें .इनायत करके जुलूसी सवारीके साथ प्रधानकी हवेलीपर पधारते थे, परन्तु बीचमें प्रधान के यहां पधारना बन्द होगया; जबसे प्रधानकी एवज़का काम महकमहख़ासमें होने लगा. अब महकमहख़ासके सेक्रेटरी महता पन्नालालके मकानपर पधारकर प्रातः कालकी गोठ जीमते हैं, और दिनभर वहां विराजकर सायंकालको जुलूसकी सवारीसे महलोंमें पधारते हैं. इस दिन दोनों वक़्त मेला देखनेके लिये हज़ारहा आदमी एकट्ठे होते हैं. इसके बाद गनगौरतक फूल छाबड़ीका मेला होता है, और महाराणा साहिब महलोंमें दर्बार करते हैं.

ऊपर बयान किया हुआ, हाल सालभरके त्योहारोंका बहुत मुख़्तसर तौरपर लिखा गया है, अगर कोई बात छूटगई हो, तो पाठकगण उसको तवालतके सबब छोड़ी हुई जानलेवें.

अब हम जागीर व मुआफ़ी वग़ैरह पट्टे याने जागीर, भोम, चौथबंटिया, चौकीदार, और षट्दर्शन याने देवस्थान, ब्राह्मण, चारण, भाट, सेवड़ा, सन्यासी, नाथ, फ़क़ीर वग़ैरहका हाल लिखते हैं.

पहिला पट्टा जागीर, जिसमें नौकरीके .एवज़ पर्गना, गांव, या ज़मीन दीगई है. इस क़िस्मके जागीरदार काले पट्टेके नौकर कहलाते हैं, याने जबतक नौकरी देवें तबतक जागीर खाते रहें, मगर जागीरको बेचने या गिरवी रखने नहीं पाते; अगर किसी क़र्ज़ख़्वाहके यहां गांव या ज़मीन गिरवी रक्खें, तो दैवगतका ज़िम्मेवार क़र्ज़देनेवाला और राजगतका ज़िम्मेवार जागीरदार रहता है. महाराणा पहिले अमरसिंहके समयसे यह क़ाइदह जारी हुआ था, कि पटायत (याने पट्टेके मालिक) के रहनेका ख़ास गांव तो नहीं बदला जावे, लेकिन् पट्टेके गांव बदल दिये जावें, परन्तु महाराणा दूसरे अमरसिंहने इस ख़यालसे, कि पट्टेके गांव तीसरे वर्ष बदले जानेमें रइयतकी बर्बादी होती है, इससे यह प्रबन्ध करदिया, कि जबतक जागीरदार नौकरी अच्छी तरह देवें और सर्कारी हुक़ूक़ पूरे तौरपर अदा करता रहे, तो पट्टेके गांव भी नहीं बदले जावें. जागीरें नौकरीके .एवज़में हैं, और उनके ज़ब्त करने या नई बख़्शनेका इख़्तियार महाराणा साहिब को है, जिसका हाल पाठक लोगोंको इस इतिहासके दूसरे भागको देखनेसे मालूम होगा.

दूसरा पट्टा भौम है; इस देशमें जागीरकी बनिस्बत भौम पुख़्तह समझी जाती है, परन्तु क़ुसूरकी हालतमें ज़ब्त होजाती है. भौमिया लोगोंकी नौकरी ख़ास गांवकी रखवाली और हाकिम ज़िलाकी हाज़िरी है. अलावह, इसके राज्यमें जब कभी फ़ौजकी ज़रूरत हो, तो भौमिया लोग बेउज़्र हाज़िर होते हैं, और उनको पेटिया और घोड़ेका दाना राज्यसे मिलता है; लेकिन् मगरा भीलवाड़ा ज़िलेके भौमिया लोग मामूली नौकरी नहीं देते,

लेकिन् ज़रूरतके वक़ अपनी हैसियतके मुवाफ़िक़ फ़ौज लेकर हाज़िर होते हैं. इन लोगोंको भी राज्यसे खुराक मिलती है. कुल भौमिया लोग राज्यमें टांका व भौमवराड़ देते हैं.

चौथ बंटिये, याने किसान लोग तो तीसरा बांटा या आधा हिस्सह राज्यमें देते हैं, लेकिन् राजपूत व मीना वग़ैरह लड़ाई करने वाली क़ौमें अक्सर चौथा बांटा देती हैं. ये लोग भी फ़ौजकशीके वक़ खुराक मिलनेपर फ़ौजमें भरती होसक्ते हैं. बाज़ बाज़ जगह महाजन, सुतार (खाती), लुहार, दर्ज़ी, सिलावट और ओड़ वग़ैरह भी चौथा बांटा दियाकरते हैं. इन लोगोंके साथ यह रिआयत इस सबबसे बरती जाती है, कि फ़ौजकशीके वक़ कम्सरियट और मैगज़िनमें इनसे मदद लीजाती है.

चौकीदार, इन लोगोंकी नौकरी गांवकी चौकीदारी करना और राज्यका अहल्कार गांवमें आवे उसवक़ उसके पास हाज़िर रहना है.

षट्दर्शन, जिनको तांबापत्र व पत्थरपर मुआफ़ीकी सनद खुदवा दीजाती है, इससे देनेवाले और पालना करने वालेका हेतु यह है, कि काग़ज़ तो जल्दी नाश होजाता है, और इस क़िस्मके गांव या ज़मीन हमेशह बने रहनेके लिये दियेजाते हैं, इसलिये इसकी सनद भी दीर्घ कालतक ठहरनेवाली वस्तुपर खुदाई जावे. षट्दर्शनकी मुआफ़ीमें राजा, पटायत या अहल्कार वग़ैरह कोई दिल बिगाड़कर दस्तन्दाज़ी करे, तो उसकी बड़ी निन्दा होती है. बड़े अपराध करनेकी हालतमें मुआफ़ी भी ज़ब्त होती है, लेकिन् दूसरी तरह पीछी लेलेनेकी इच्छासे कोई हाथ नहीं डालते. इस देशमें हरएक देवस्थानकी पूजा वग़ैरहके लिये बहुतसे बड़े बड़े पट्टे मुआफ़ीमें हैं. मेवाड़में ऐसा कोई गांव न निकलेगा, कि जिसमें धर्मादाकी ज़मीन मन्दिरके लिये नहो, चाहे वह मन्दिर विष्णु, शिव, देवी, भैरव, जैन, खागलदेव, रामदेव, मामादेव, पाबू, झामादेव वग़ैरहमेंसे किसी का हो, या मुसल्मानोंकी मस्जिद आदि हो; लेकिन् मन्दिरोंकी मुआफ़ी मन्दिरोंके जीर्णोद्धार व पूजा प्रकारके लिये भेट कीजाती है, पुजारियोंके मज़ा उड़ाने या बेचकर ख़राब करदेनेके लिये नहीं. ब्राह्मण, चारण, भाट और सन्यासी वग़ैरह सब षट्दर्शनी लोगोंसे ज़मीनके एवज़ नौकरी आदि कुछ लगान नहीं लियाजाता.

इसके सिवा बहुत थोड़े लोग इस्तमरारदार भी हैं, लेकिन् वे लोग जागीर, भौम, या मुआफ़ीमें शुमार नहीं कियेजाते, वे ख़ालिसहकी रिआयाके मुवाफ़िक़ रिआयती समझेजाते हैं.

मेवाड़के बड़े बड़े जागीरदार सर्दारोंका नक़्शह (नामावली) यहांपर दिया जाता है, जिससे पाठक लोगोंको उनका हाल मालूम होगा:—

मेवाड़के अव्वल नम्बरके सर्दारोंका नक़्शह.

नम्बर.	नाम ठिकाना.	जिन दर्बारने ठिकाना दिया उनका नाम मए राज्याभिषेकादि संवत्के.			नाम उस सर्दारका जिसको ठिकाना मिला.	क़ौम.	ख़िताब या पद्वी.	नाम मौजूदह सर्दार का.	कैफ़ियत.
		महाराणाका नाम.	गद्दी विराजने का संवत्.	देहान्त का संवत्.					
१	सादड़ी	महाराणा संग्रामसिंह अव्वल	विक्रमी १५६५	विक्रमी १५८४	अज्जा	झाला	राजरणा	रायसिंह	यह ठिकाना अदल बदल कम हुआ.
२	बेदला	महाराणा अमरसिंह अव्वल	१६५३	१६७६	बल्लू	चहुवान	राव	कर्णसिंह	ऐज़न.
३	कोठारिया	महाराणा जगत्सिंह अव्वल	१६८४	१७०९	रुक्मांगद	ऐज़न	रावत्	जवानसिंह	पहिले जीरण व नींबाहेड़ा था, अब यह ठिकाना मिलनेके बाद अदल बदल कम हुआ.
४	सलूंबर	महाराणा उदयसिंह	१५९२	१६२८	कृष्णदास	सीसोदिया चूंडावत्	रावत्	जोधसिंह	यह ठिकाना एक दफ़ा महाराणा अव्वल राजसिंहने २५ वर्षतक पारसोलीके राव केसरीसिंहको बख़्शदिया था.
५	बीजोलिया	महाराणा विक्रमादित्य	१५८८	१५९२	अशोक	पंवार	राव	गोविन्ददास	यह ठिकाना अदल बदल कम हुआ.
६	देवगढ़	महाराणा दूसरे जयसिंह	१७३७	१७५५	द्वारिकादास	सीसोदिया चूंडावत्	रावत्	कृष्णसिंह	यह ठिकाना बीचमें दो बार ख़ालिसह हुआ, और आमेट वालोंको भी मिलगया था.

नम्बर.	नाम ठिकाना.	जिन दर्बारोंने ठिकाना दिया उनका नाम मए राज्याभिषेकादि संवत्के.			नाम प्रथम सर्दारका जिसको ठिकाना मिला.	कुल.	ख़िताब या पद्वी.	नाम मौजूदह सर्दारका.	कैफ़ियत.
		महाराणाका नाम.	गद्दी बिराजने का संवत्.	देहान्त का संवत्.					
७	बेंगूं	महाराणा अमरसिंह अव्वल	विक्रमी १६५३	विक्रमी १६७६	पहिला मेघसिंह	सीसोदिया चूंडावत	रावत	तीसरा मेघसिंह	यह ठिकाना अदल बदल कम हुआ.
८	देलवाड़ा	महाराणा संग्रामसिंह अव्वल	१५६५	१५८४	सज्जा	झाला	राजराणा	ज़ालिमसिंह	यह ठिकाना एक दफ़ा बदनोरके ठाकुर मनमनदासको मिलगया था, जो राज कल्याण पहिलेको वापस मिला.
९	आमेट	महाराणा प्रतापसिंह अव्वल	१६२८	१६५३	कर्णसिंह	सीसोदिया चूंडावत	रावत	शिवनाथसिंह	
१०	मेजा	महाराणा शम्भुसिंह	१९१८	१९३१	अमरसिंह	सीसोदिया चूंडावत	रावत	अमरसिंह	
११	गोगूंदा	महाराणा कर्णसिंह	१६७६	१६८४	कान्हसिंह	झाला	राज	अजयसिंह	यह ठिकाना अदल बदल कम हुआ.
१२	कान्हौड़	महाराणा दूसरे संग्रामसिंह	१७६७	१७९०	सारंगदेव	सीसोदिया सारंगदेवोत	रावत	नाहरसिंह	
१३	भींडर	महाराणा प्रतापसिंह अव्वल	१६२८	१६५३	भाणसिंह	सीसोदिया शक्तावत	महाराज	केसरीसिंह	यह ठिकाना अदल बदल कम हुआ.

नम्बर.	नाम ठिकाना.	जिन दर्बारने ठिकाना दिया उनका नाम मए राज्याभिषेकादि संवत्के.			नाम उस सर्दारका जिसको ठिकाना मिला.	क़ौम.	ख़िताब या पद्वी.	नाम मौजूदह सर्दारका.	कैफ़ियत.
		महाराणाका नाम.	गद्दी विराजने का संवत्.	देहान्त का संवत्.					
१४	बदनौर	महाराणा उदयसिंह	विक्रमी १५९२	विक्रमी १६२८	जयमल्ल	राठौड़ मेड़तिया	ठाकुर	गोविन्द-सिंह	यह ठिकाना दो तीन दफ़ा बादशाही ज़ब्तीमें आनेके वक़् छूटगया और पीछा मेवाड़में आनेपर वापस उन्हींको मिला.
१५	भैंसरोड़	महाराणा जगत्-सिंह दूसरा	१७९०	१८०८	रघुनाथ सिंह	सीसोदिया चूंडावत्	रावत्	प्रतापसिंह	
१६	बानसी	महाराणा राज-सिंह अव्वल	१७०९	१७३७	गंगदास	सीसोदिया शक्तावत.	ऐज़न	तरुत्सिंह	
१७	कुरावड़	महाराणा तीसरा अरिसिंह	१८१७	१८२९	अर्जुन-सिंह	सीसोदिया चूंडावत्	ऐज़न	जैतसिंह	
१८	पारसोली	महाराणा राज-सिंह अव्वल	१७०९	१७३७	केसरी-सिंह	चहुवान	राव	रत्नसिंह	
१९	आसींद	महाराणा भीमसिंह	१८३४	१८८५	अजीत-सिंह	सीसोदिया चूंडावत्	रावत्	अर्जुनसिंह	अजीतसिंह ठाकुर था, और रावत् का ख़िताब दूलहसिंहको मिला.
२०	करजाली	महाराणा दूसरा जगत्सिंह	१७९०	१८०८	बाघसिंह	सीसोदिया राणावत्	महाराज	सूरतसिंह	
२१	शिवरती	महाराणा तीसरा अरिसिंह	१८१७	१८२९	अर्जुन-सिंह	ऐज़न	ऐज़न	गजसिंह	पेश्तर इनकी जागीरमें अठाणाका पट्टा था.

नम्बर.	नाम ठिकाना.	जिन दर्बारने ठिकाना दिया उनका नाम मए राज्याभिषेकादि संवत्के.			नाम उस सर्दारका जिसको ठिकाना मिला.	क़ौम.	ख़िताब या पदवी.	नाम मौजूदह सर्दारका.	कैफ़ियत.
		महाराणाका नाम.	गद्दी विराजने संवत्.	देहान्त का संवत्.					
२२	बनेड़ा	महाराणा जयसिंह अव्वल	१७३७	१७५५	भीमसिंह	सीसोदिया राणावत्	राजा	गोविन्दसिंह.	इस ठिकानेको आलमगीरने मेवाड़से ज़ब्त करके भीमसिंहको दिया, फिर मुहम्मदशाहने महाराणा संग्रामसिंहके सुपुर्द करके मेवाड़में मिलादिया.
२३	शाहपुरा	महाराणा जगत्सिंह अव्वल	१६८४	१७०९	सुजानसिंह	ऐज़न	राजाधिराज	नाहरसिंह	फूलिया विक्रमी १६८९ में महाराणा जगत्सिंहसे शाहजहां बादशाहने ज़ब्त करके सुजानसिंहको दिया, और महाराणा राजसिंहने मेवाड़में मिलालिया, फिर आलमगीरने थोड़े वर्ष मेवाड़से अलग करदिया, लेकिन् आलमगीरके बाद पीछा मेवाड़में मिलायागया, जो मरहटोंके अख़ीर वक़में जुदा हुआ; और काछोला का पट्टा महाराणा तीसरे अरिसिंहने राजा उम्मेदसिंहको विक्रमी १८२३ में जागीर करदिया, जो अबतक मेवाड़के मातहत है.
२४	सर्दारगढ़	महाराणा दूसरा जगत्सिंह	१७९०	१८०८	सर्दारसिंह	डोडिया	ठाकुर	मनोहरसिंह	विक्रमी १८४० में शक्तावत संग्रामसिंहने छीनलिया था, जो विक्रमी १९०४ में महाराणा स्वरूपसिंहने शक्तावतोंसे छीनकर ठाकुर ज़ोरावरसिंहको वापस दिया.

जिस प्रकार प्रथम सर्दार, दूसरे देवस्थानोंके पुजारी, और तीसरे मुआफ़ीदार हैं, उसी क्रमसे इन तीनों गिरोहोंमें हरएक गिरोहके लिये इज़्ज़त भी अव्वल, दूसरे और तीसरे दरजेकी होती है. सर्दारोंमें अव्वल दरजहके लिये जुहार (१), ताज़ीम, बांहपसाव, पैरमें सोनेका ज़ेवर, नक़ारा, निशान और चांदीकी छड़ी, ये आम .इज़्ज़तें कहाती हैं. इसके अलावह और भी .इज़्ज़तें कई तरहकी होती हैं, लेकिन् वे ख़ास कारणोंसे दीजाती हैं. दूसरे दरजह वालोंके लिये जुहार, ताज़ीम, छड़ी, और पैरमें सोना; और तीसरे दरजह वालोंके लिये ख़ाली बड़ी ओल (दाहिनी पंक्ति) में बैठक और दर्बारमें पानका बीड़ा है.

इसी तरह देवस्थानोंके पुजारियोंका भी हाल है. इनमें कितनेएक पुजारी लोग गद्दीपर बैठते हैं और महाराणा साहिब उनके सामने दोवटी (एक तरहका आसन) पर बैठकर उनको दण्डवत (डंडोत) करके भेट करते हैं, और उन पुजारियोंपर चंवर भी होते हैं. बाज़ बाज़ गिरोहोंके महन्तोंको भी यही .इज़्ज़त हासिल है. दूसरे दरजहके पुजारियोंको बैठनेके लिये बानातका आसन मिलता है, और महाराणा साहिब उन्हें ताज़ीम देते हैं. तीसरे दरजह वाले आशीर्वाद देकर फ़र्शपर बैठजाते हैं. इसी तरह मुआफ़ीदारोंमें अव्वल दरजह वालोंको जुहार, आशीर्वाद, ताज़ीम, छड़ी, बांहपसाव, पैरमें सब तरहके सुवर्ण भूषण; दूसरे दरजह वालोंको ख़ाली ताज़ीम और छड़ी, और तीसरे दरजह वालोंको ख़ाली दर्बारमें बैठक और महाराणा साहिबके हाथसे बीड़ा मिलता है. हम यह नहीं कहते, कि तीनों गिरोहोंमें इतनी ही .इज़्ज़त मानी जाती है, लेकिन् मुख्य मुख्य बातें लिखीजाकर बाक़ी हाल विस्तारके भयसे छोड़दिया जाता है, और इन बातोंका विशेष हाल राज्यके दफ़्तरोंमें रहता है.

अब हम संक्षेपसे थोड़ासा हाल मज़्हबोंका लिखते हैं:-

संसार भरमें सबसे बड़े दो धर्म (मज़्हब) हैं, याने एक पूर्वी और दूसरा पश्चिमी. पूर्वी मज़्हबकी तीन शाखें, वेदाम्नायी, बौद्ध और जैन हैं; इसी तरह पश्चिमी मज़्हबकी भी तीन शाखें अर्थात् यहूदी, ईसाई और मुहम्मदी हैं. इन छओं शाखाओंकी शाखा प्रशाखा इतनी बढ़गई हैं, कि उनका हाल इस जुग्राफ़ियहमें प्रगट करना कठिन है. मेवाड़ देशमें सिवा बौद्ध और यहूदियोंके और सब मज़्हबके लोग थोड़े बहुत मौजूद हैं. प्राचीन

---

(१) जुहार शब्दका अर्थ यह है, कि आर्य लोग प्राचीन रीत्यानुसार प्रथम नित्य अग्निका कुशल पूछते थे, याने जुहु होमकी अग्नि, और आर अर्थात् मंगल. इसी रीतिसे जब कोई इस .इज़्ज़तका सर्दार महाराणा साहिबसे सलाम करता है, उस समय छड़ीदार लोग बुलन्द आवाज़से पुकारते हैं; कि करे जुहार, अमुक राजा या ठाकुर, राव या रावत वग़ैरह.

मत छओं शास्त्रोंका वेदसे निकला हुआ षट्दर्शनके नामसे प्रसिद्ध है, परन्तु उनमेंसे सिवा वेदान्तके और पांच शास्त्रोंका प्रचार बहुत कम है, बल्कि वेदान्तका प्रचार भी क्वचित् क्वचित् दिखाई देता है. वेदाम्नायी पांच हिस्सोंमें, याने शैव, वैष्णव, शाक्त, गाणपत्य और सौरमें विभक्त (तक्सीम) कियेगये हैं. इन पांचोंमेंसे शैव, वैष्णव, शाक्त, ये तीन आजकल अधिक तरक़्क़ीपर हैं. शैवोंमें सन्यासी, नाथ और बहुतसे ब्राह्मण भी आचार्य हैं, लेकिन् उन आचार्योंमें कई तरहके भेद होगये हैं. वैष्णवोंमें रामावत, नीमावत, माधवाचार्य, और विष्णुस्वामी, इन चारों नामोंसे चार संप्रदाय प्रसिद्ध हैं, और इनमेंसे फिर भी रामस्नेही, दादूपंथी, कबीरपंथी, नारायणपंथी, आदि कई शाखा प्रशाखा फैलगई हैं, जिनके आचार विचारमें भी कुछ कुछ भिन्नता पाईजाती है. कितनेएक अद्वैत सिद्धान्त और कितनेएक उपासना पक्षका आश्रय लेते हैं. मेवाड़के राजा प्राचीन कालसे शैव हैं, लेकिन् दूसरे मज़्हबोंको भी माननेवाले हैं. शाक्तोंकी दो शाखा, याने एक दक्षिण और दूसरी वाम है. दक्षिण आम्नाय वाले वेदानुकूल पूजा, प्रतिष्ठा, जप, होमादि करते हैं, और वामी वेदाम्नायके विरुद्ध तंत्रशास्त्रके अनुसार पशुहिंसा और मद्य मांसाचरण करते हैं. ये लोग चर्मकारी, रजकी, और चाण्डालीको काशीसेवी, प्रागसेवी, मांसको शुद्धि, मद्यको तीर्थ, कांदा (पियाज़) को व्यास, और लहसुनको शुकदेव बोलते हैं; रजस्वला व चाण्डालीकी योनि पूजा करते हैं, और मुख्य सिद्धान्त उनका इस श्लोकके अनुसार है- "अन्तः शाक्ता बहिर्शैवाः सभा मध्ये च वैष्णवाः॥ नाना रूप धराः कौला विचरन्ति मही तले॥१॥" यह मत बौद्धोंका भेद मालूम हुआ है. जानाजाता है, कि जातिभेद अधिक फैलने लगा, तब बौद्ध लोगोंने उसके रोकनेके लिये तन्त्र शास्त्र प्रचलित किये थे. इस मतके आचार्य अपने मतको प्रगट तौरपर प्रचलित रखना उचित नहीं समझते, वर्नह देखाजाये, तो भारतवर्षकी आधी प्रजाके लगभग लोग इस मतको मानने वाले होंगे.

गणपति और सूर्यके माननेवाले इसवक़् बहुत ही कम नज़र आते हैं, और हैं भी तो दक्षिण नहीं, बल्कि वामी लोग हैं, जो अपना ऊपरका ढोंग दिखलाते हैं; और इस वाम मतके आचार्य भी कहीं प्रसिद्ध नहीं होते.

मेवाड़में शिवमतका बड़ा स्थान कैलासपुरी, अर्थात् एकलिङ्गेश्वरकी पुरी है. इस देशके राजा श्रीएकलिङ्गेश्वर, और महाराणा साहिब उनके दीवान (मन्त्री) मानेजाते हैं, बाक़ी शिवमतके प्रचारक नाथ गुसाइंयोंके और भी बड़े बड़े मठधारी महन्त हैं, परन्तु केवल नामके लिये हैं; क्योंकि वे लोग निरक्षर और आचार विचारमें विपरीत मालूम होते हैं. नाथद्वारा, कांकड़ोली, चारभुजा और रूपनारायण, ये चार वैष्णवोंके मुख्य स्थान हैं, जिनमें चारभुजाके पुजारी गूजर और रूपनारायणके ब्राह्मण

हैं. ये लोग ख़ाली भेट पूजा लेने वाले बुभुक्षित, और निरक्षर बहुतसे हैं, वे अपने अपने ओसरेपर पूजन करते रहते हैं. उनको आचार्यत्वका अभिमान बिल्कुल नहीं है; लेकिन् नाथद्वारा और कांकड़ौलीके गुसाईं, जो विष्णु-संप्रदायके मुख्य आचार्य हैं, उनको भारतवर्षके तमाम वैष्णव लोग उसी तरह मानते हैं, जैसाकि ईसाइयोंमें रोमनकैथलिक लोग इटलीके पोपको. इस मतको विक्रमी पन्द्रहवें शतकमें वल्लभाचार्यने प्रचलित किया था, जिनके सात पुत्र हुए. उन सातोंकी गद्दियां और पूजनकी सातों मूर्त्तियां अलग अलग हैं, जिनको लोग बड़े आदर के साथ मानते हैं; और आठवीं इन सबसे बड़ी मूर्त्ति नाथद्वाराके श्री गोवर्द्धननाथकी है, और इन सातों भाइयोंमें टीकेत गोस्वामी भी नाथद्वाराके गोस्वामी (१) ही कहाते हैं; और कांकड़ौली वाले उनके छोटे भाइयोंमेंसे हैं.

बौद्ध मज़्हबका यहांपर कोई आदमी या मन्दिर नहीं है, शायद कि कलकत्ता, बम्बई या नयपालमें हो, इसीसे हमने कम वाक़फ़ियतके कारण उनका हाल छोड़दिया है.

तीसरी शाखा जैन है, जिसके सितम्बरी और दिगम्बरी दो भेद हैं. सितम्बरी का मुख्य शास्त्र ३२ सूत्र हैं. जिसतरह वेदाम्नायी गायत्री मंत्रको मानते हैं, उसी तरह जैन लोग नौकार मंत्रको मानते हैं; और समाईके समय उसीका जप करते हैं. इनमें भी दो भेद हैं, एक मूर्त्तिपूजक, और दूसरा अमूर्त्तिपूजक. मूर्त्तिपूजकोंमें जती, समेगी व महात्मा वग़ैरह हैं, और अमूर्त्तिपूजकोंमें ढूंडिया साधु हैं, लेकिन् २४ तीर्थंकर और ३२ सूत्रोंको सब मानते हैं, केवल उनका अर्थ अपने अपने सिद्धान्तानुसार करनेमें परस्पर विरोध है. उन जैनके आचार्योंको मानने वाले प्रायः महाजन लोग हैं, जिनमें सितम्बरीको मानने वाले राजपूतानहमें मुख्य ओसवाल महाजन हैं. भारतवर्षके दूसरे भागोंमें जुदी २ क़ौमोंके महाजन भी बहुत हैं. विक्रमी संवत्‌के सोलहवें शतकके शुरूमें जती लोगोंमेंसे वैराग्य न्यून होगया था, तब गुजरातमें लूंका महताने अपने सूत्र ग्रंथोंके अनुसार एक नया फ़िर्क़ा चलाया, जिसका नाम लूंका गच्छ प्रसिद्ध हुआ, और उसीमेंसे ढूंडिया साधु निकले, जिनके २२ गिरोह होकर २२ टोले कहेजाते हैं. इन टोलोंमेंसे हरएक टोलेमें एक एक मुखिया, याने आचार्य होता है. जब इन बाईस गिरोहोंका भी चाल चलन शिथिल होने लगा, तब रघुनाथ ढूंडियाके टोलेमेंसे उसीके शिष्य भीखमने विक्रमी १८१५ [हि० ११७२ = ई० १७५८] में एक नई शाखा निकाली और उसके तेरह शिष्य होनेके कारण तेरह पंथियोंकी बुन्याद पड़ी. भीखम आचार्य विक्रमी १७८५ [हि० ११४१ = ई० १७२८] में पैदा हुआ और उसने

(१) वर्तमान समयमें टीकेत गोस्वामी गोव [illegible] नाथद्वारेकी गद्दीपर विद्यमान है.

विक्रमी १८०८ [हि० ११६४ = .ई० १७५१] में साधुका भेष लिया; विक्रमी १८१५ [हि० ११७२ = .ई० १७५८] में तेरह पंथियोंका फ़िर्क़ा चलाया; और विक्रमी १८६० [हि० १२१८ = .ई० १८०३] में वह मरगया. उसके बाद उसका शिष्य भारमल्ल गद्दीपर बैठा, और विक्रमी १८७८ [हि० १२३६ = .ई० १८२१] में वह गुज़रगया. उसके पीछे रायचन्द गद्दीपर बैठा, जो विक्रमी १९०८ [हि० १२६७ = .ई० १८५१] में परलोक गामी हुआ. उसके बाद जीतमल्ल आचार्य हुआ, जिसके विक्रमी १९३६ [.ई० १८७९ = हि० १२९६] में मरजानेपर उसका क्रमानुयायी मेघराज हुआ, जो अब विद्यमान है.

दूसरा फ़िर्क़ा जैनका दिगम्बरी है, जिसका आचार्य भट्टारक कहाजाता है, वह अवस्त्र अर्थात् नग्न रहता है, और दोनों हाथोंकी आंजलीमें भोजन करता है. यदि वह खाते समय बिल्ली आदिका शब्द सुनले, तो उस दिन उपवास करता है. ऐसे भट्टारक कर्णाटक देशमें रहते हैं (१), जो कभी कभी पर्यटन करते हुए इधर भी चले आते हैं. इनको श्रावक लोग मुनिराज भी कहते हैं. सितम्बरी और दिगम्बरी दोनों शाखाओंमें कुछ कुछ अन्तर है. सितम्बरी लोग १२ अंग और बाक़ी उपांग मिलाकर ३२ सूत्र बतलाते हैं. इसी तरह दिगम्बरी भी १२ अंग कहते हैं और उनके नामोंमें भी अधिक अन्तर नहीं बतलाते, लेकिन् कहते हैं, कि महावीर स्वामीसे कई सौ वर्ष पीछे बारह वर्ष का दुष्काल पड़ा, जिसमें हमारे प्राचीन ग्रन्थ नष्ट होगये, और उन्हींका आशय लेकर जो दूसरे ग्रन्थ बने उनके अनुसार हम अपना धर्म ध्यान करते हैं. सितम्बरी भी १२ वर्षके दुष्कालका पड़ना मानते हैं, किन्तु प्राचीन ग्रन्थोंके नष्ट होनेमें ४५ सूत्रोंमेंसे ३२ का साबित रहना और १३ जो खण्डित हुए, उनका पीछेसे बनाया जाना प्रगट करते हैं. इन लोगोंमें दिगम्बरी लोगोंसे जो भेद है वह ८४ बोल, याने ८४ बातोंमें है, जिनमेंसे कुछ बोल (वाक्य) नीचे लिखे जाते हैं:-

१- सितम्बरी केवल ज्ञानीको आहार नीहार करना मानते हैं, और दिगम्बरी नहीं मानते.

२- सितम्बरी केवल ज्ञानीको रोग होना मानते हैं और दिगम्बरी नहीं मानते.

३- सितम्बरी केवल ज्ञानीको उपसर्ग अर्थात् शुभाशुभ सूचक महाभूत विकार मानते हैं, किन्तु दिगम्बरी इसको स्वीकार नहीं करते.

---

(१) दूसरे भट्टारक केवल नाम मात्रके हैं, वे वस्त्र, परिकर, और वाहन आदि सब कुछ रखते हैं. ऐसे लोग वास्तवमें ढोंगी हैं.

४- सितम्बरी केवल ज्ञानीका पाठशालामें जाकर पढ़ना प्रसिद्ध करते हैं, पर दिगम्बरी नहीं मानते.

५- सितम्बरी तीर्थंकरको गुरु द्वारा दीक्षा प्राप्त हुई मानते हैं, और दिगम्बरी नहीं मानते हैं.

६- सितम्बरी कहते हैं, कि तीर्थंकरको दीक्षाके समय इन्द्रने आकर कपड़ा ओढ़ाया है, परन्तु दिगम्बरी इस बातको स्वीकार नहीं करते.

७- सितम्बरी गणधरके विना महावीरकी कुछ वाणी व्यर्थ गई कहते हैं, किन्तु दिगम्बरी नहीं गई बतलाते हैं.

८- सितम्बरी कहते हैं, कि महावीर ब्राह्मणीके गर्भसे खींचकर तृषा राणीके गर्भमें लाये गये, किन्तु दिगम्बरी कहते हैं, कि वह प्रारम्भहीसे राणीके गर्भमें थे.

९- सितम्बरी आदिनाथको जुगलिया कहते हैं, और दिगम्बरी नहीं कहते.

१०- सितम्बरी आदिनाथके लिये विधवाका घरमें रखना बयान करते हैं, परन्तु दिगम्बरी इसको झूठ बतलाते हैं.

११- सितम्बरी दो तीर्थंकरोंका अविवाहित रहना मानते हैं, और दिगम्बरी ५ का.

१२- सितम्बरी केवल ज्ञानीको सामान्य ज्ञानीका प्रणाम करना मानते हैं, दिगम्बरी नहीं मानते.

१३- सितम्बरी केवल ज्ञानीको छींक होना मानते हैं, मगर दिगम्बरी नहीं मानते.

१४- सितम्बरी गौतमका त्रिडंडी तापसीके पास जाना कहते हैं, लेकिन् दिगम्बरी नहीं कहते.

१५- सितम्बरी स्त्रीका मोक्ष होना मानते हैं, दिगम्बरी नहीं मानते.

१६- सितम्बरी १९ वें तीर्थंकरको मल्लिकुंवरी कहकर स्त्री स्वरूप मानते हैं, और दिगम्बरी मल्लिनाथ कहकर पुरुष मानते हैं.

१७- सितम्बरी जुगलियाको देव हरलेगया कहते हैं, परन्तु दिगम्बरियोंका इस पर विश्वास नहीं है.

इत्यादि ८४ बोलोंका अन्तर है, हमने इसके विषयमें बहुतसी बातें विस्तारके भयसे छोड़दी हैं.

मेवाड़में जैनियोंका बड़ा तीर्थ स्थान उदयपुरसे १६ कोस दक्षिण खैरवाड़ाकी सड़क पर धूलेव गांवमें ऋषभदेवका मन्दिर है, जिसको वेदाम्नायी और जैन दोनों मानते हैं. इस मूर्तिको वेदाम्नायी लोग विष्णुके दशावतारोंमें समझकर अपने धर्मके अनुसार और जैन लोग तीर्थंकर समझकर अपने धर्मके अनुसार पूजते हैं. यहांपर कलकत्ता, बम्बई,

मद्रास, कर्णाटक, पंजाब और उत्तराखण्डके हज़ारों यात्री आते और बड़ी भावनाके साथ केसर चढ़ाते हैं. केसर चढ़ानेकी यह रीति है, कि यदि किसी यात्रीने मन भर केसर चढ़ाई हो और उसी समय दूसरा यात्री एक रुपये भर केसर लेकर आवे, तो मनभरको उतारकर वह अपनी रुपये भर केसर चढ़ादेगा. केसरको शिलापर पत्थरसे घिसकर यात्री लोग अपने हाथसे चढ़ाते हैं, इस उतरी हुई केसरके बड़े पुजारी लोग यात्रियोंको बेचते हैं, और केसर इस अधिकाईके साथ चढ़ती है, कि जिससे इनका दूसरा नाम "केसरियानाथ" प्रसिद्ध होगया है, और मूर्त्तिका काला रंग होनेसे कालाजी भी बोलते हैं. इस मन्दिरके चारों तरफ़ कोसों पर्य्यन्त भीलोंकी आबादी है और भील लोग केसरियानाथपर बड़ा विश्वास रखते हैं. वे लोग सौगन्द अर्थात् शपथ करनेके वक्त केसरियानाथकी केसर चबाकर जिस बातका प्रण (इक़ार) करते हैं, उससे फिर कभी नहीं बदलते. इस मन्दिरके बननेका मुख्य हाल कहानियोंके तौरपर है, लेकिन् मन्दिरकी प्रशस्तियोंसे इस मन्दिरका जीर्णोद्धार विक्रमी संवत्की १५ वीं सदीके प्रारम्भतक होना पायाजाता है. पहिले जो हज़ारों रुपया और ज़ेवर भेट होता था उसे पुजारी लोग अपना बनालेते थे, लेकिन् वैकुंठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबके समयसे वहांका प्रबंध एक कमिटीके अधिकारमें करदिया गया है, जिसके मेम्बर जैनमतावलंबी लोग हैं, और उस कमिटीका प्रेसिडेण्ट (सभापति) राजकी तरफ़से देवस्थानोंका हाकिम कोठारी बलवन्तसिंह है.

अब हम पश्चिमी मज़्हबोंका थोड़ासा हाल लिखते हैं, जो यहूदी, ईसाई, और मुहम्मदी हैं. यहूदी लोग राजपूतानह और मेवाड़में बिल्कुल नहीं हैं, और हमारी वाक़फ़ियत भी कम है. इन तीनों मज़्हबोंकी इब्तिदा (प्रारम्भ) और तरीक़ह एक ही है, परन्तु पीछेसे बहुत फ़र्क़ आगया है. सुनागया है, कि यहूदी लोग तौरातके मुवाफ़िक़ बर्त्ताव रखते हैं. यहूदी लोग और तौरात किताब इन तीनों फ़िक़ोंमें अव्वल हैं. दूसरे ईसाई, जिनका पैग़म्बर यसू याने ईसा (क्राइस्ट) है, जिसके समयको कुछ कम १९०० सौ वर्ष हुए हैं. इस ईसाई धर्मकी शाखाकी कई प्रतिशाखाएं हैं, जिनमेंसे तीन सबसे बड़ी सुनी गई हैं, याने प्रथम रोमनकैथलिक, दूसरी प्रोटेस्टैण्ट, और तीसरी ग्रीकचर्च. इनमें रोमन-कैथलिक, और ग्रीकचर्चको उपासना पक्षके समान जानना चाहिये, और प्रोटेस्टैण्ट को वेदान्त पक्षके मुवाफ़िक़; परन्तु प्रोटेस्टैण्ट जीव ब्रह्मको जुदा और वेदान्त वाले एक मानते हैं. इन तीनों प्रतिशाखाओंमें भी कई एक भेद मानेजाते हैं. उदयपुरमें वैकुंठवासी महाराणा साहिबके समयसे, याने विक्रमी १९३४ [ई० १८७७ = हि० १२९४] के बाद प्रोटेस्टैण्ट स्कार्[illegible] पादरी जेम्स शेपर्ड साहिब यहां आया है,

और उसने विक्रमी १९४८ [ई० १८९१ = हि० १३०८] में अपने मतका एक गिरजा भी बनवाकर खोला है. ग्रीक चर्चके लोग रशिया (रूस) में बहुत हैं. पश्चिमी मज़्हब वाले तौरात, ज़बूर, इंजील, और फ़ुर्क़ान इन ४ किताबोंको आस्मानी पुस्तक बतलाते हैं. तीसरी शाखामें मुहम्मदी याने हज़्रत मुहम्मदको मानने वाले हैं, जो फ़ुर्क़ान (कुर्आन) को मानते हैं, और कुर्आन इनके यहां आस्मानी किताब मानीगई है, जो हज़्रत मुहम्मदके मुंहसे ज़ुहूर (प्रगट) में आई; और हज़्रत पैग़म्बरके क़ौलको हदीस बोलते हैं. पैग़म्बरके बाद अबूहनीफ़ा, मालिक, शाफ़िई, और अहमद हम्बल ये ४ इमाम पैदा हुए. इन ४ इमामोंने उक्त पैग़म्बर साहिबके क़ौलोंको जमा करके जो ४ किताबें बनाईं वे हदीसकी किताबें कहलाईं. उनके बाद ६ इमाम दूसरे हुए, जिन्होंने उन चार किताबोंमें फेरफार और कमी बेशी करके ६ किताबें नई बनाईं. अस्ल तो ये १० ही हदीसकी किताबें हैं, लेकिन् इस समय सैकड़ों क़िस्मकी हदीसकी किताबें मिलती हैं जिनको "सिहाह सित्तह" कहते हैं. इन लोगोंमें दो बड़ी शाखा अर्थात् (फ़िर्क़े) हैं, १- सुन्नी और २- शीआ. सुन्नी कहते हैं, कि हज़्रत पैग़म्बरके बाद उनके चारों यार, याने अबूबक्र, उमर, .उस्मान और अली, ख़लीफ़ा कहलाये; और कहते हैं, कि ३० वर्षतक मज़्हबी ख़िलाफ़त रही, जिनको खुलफ़ाय राशिदीन बोलते हैं, और उनके बाद ९० वर्षतक खुलफ़ाय बिनी उमय्याने हुकूमत की, और उसके बाद क़रीब ५०० वर्षतक खुलफ़ाय बिनी अब्बास रहे, जिनके बाद चंगेज़ख़ानियोंने ख़िलाफ़तको ग़ारत किया. शीआ लोग हज़्रत पैग़म्बरके बाद हज़्रत अलीहीको ख़लीफ़ा व इमाम मानते हैं, और अबूबक्र, उमर, उस्मानको ज़ालिमोंमें गिनते हैं. हज़्रत अली पैग़म्बर साहिबके दामाद थे, जिनकी औलादको सय्यद कहकर उनकी बड़ी इज़्ज़त करते हैं. इस समय सुन्नियोंमें सय्यद अहमदने कुर्आनकी आयतोंका अर्थ नये ढंगसे करके उसे ज़मानहके रवाजसे मिलादिया है. पश्चिमी मज़्हबोंसे हमारी ज़ियादह वाक़फ़ियत नहीं है, यदि कोई ग़लती हो, तो पाठक लोग क्षमा करें.

अब हम मेवाड़का रियासती ढंग और कारख़ानोंका हाल लिखते हैं. इस राज्यका अनुमान ५०० वर्ष पूर्वतकका हाल मालूम होनेसे यही पायागया, कि यहांकी मुल्की हुकूमत दो क़ौमों याने कायस्थों, और महाजनोंके हाथमें रही, अर्थात् महाराणा साहिबको युद्ध सम्बन्धी कार्योंसे अवकाश न था, कि वे माली और मुल्की बन्दोबस्त करते, इसवास्ते ऊपर लिखी हुई दोनों क़ौमवालोंमेंसे किसी एक योग्य पुरुषको अपना प्रधान याने नाइब मुक़र्रर करके उसको माली और मुल्की कामका अधिकार देते रहे, लेकिन् नियम यह था, कि महाराणा साहिबकी इच्छाके विरुद्ध कोई कार्रवाई न करे तबतक .उहदहपर क़ाइम रहे, वर्नह दूसरी हालतमें .उहदेसे ख़ारिज करदियाजावे.

प्रधानके पदपर महाजन क़ौमका आख़री शख़्स् कोठारी केसरीसिंह था, जिसकी जगह अब महकमहख़ास क़ाइम होगया है. और प्रधानके और महकमहख़ासके अधिकारमें केवल इतनाही फ़र्क़ है, कि प्रधान कुल काम स्वतन्त्रतासे करते थे; यदि कोई बड़ा काम होता, तो महाराणा साहिबसे पूछलिया करते थे, परन्तु महकमहख़ास स्वयं नहीं करसक्ता. कुल कामोंके लिये ख़ुद महाराणा साहिब हुक्म देते हैं, जिनकी तामील महकमहख़ास कराता है.

इस महकमहके इख़्तियारमें अज़लाय ग़ैर व कुछ हिस्सह जागीरदारोंका है, और माली काम भी इसी महकमहके तअ़ल्लुक़ है. लेकिन् इन्साफ़का काम जुदा है, जिसका हाल आगे लिखा जायेगा. इस महकमहके मातहत हाकिमान ज़िला और नाइब हाकिम हैं, जो हरवक़ और सालानह जमाखर्चकी रिपोर्ट इस महकमहमें करते हैं. ख़ास महाराणा साहिबके कारख़ाने, याने कपड़ोंका भंडार, कपड़ द्वारा, रोकड़का भंडार, हुक्म खर्चकी ओवरी, पांडेकी ओवरी, सेजकी ओवरी, अंगोल्याकी ओवरी, रसोड़ा, पाणेरा, सिलहख़ानह, बन्दूक़ोंका कारख़ानह, छुरी कटारीकी ओवरी, धर्मसभा, देवस्थानकी कचहरी, शिल्पसभा, ख़ास ख़ज़ानह, शम्भुनिवास, ज़नानीड्योढ़ी, फ़ीलख़ानह, अस्तबल, फ़र्राशख़ानह, छापाखानह, पुस्तकालय, सांडियोंका कारख़ानह, विक्टोरिया हॉल, पुलिस, साइर, बाक़ियातकी कचहरी, रावली दूकान, टकशाल, जंगीफ़ौजका महकमह, और मुल्की फ़ौजका महकमह वगैरह कुल अपना अपना जमाख़र्च महकमहख़ासमें भेजते हैं, और महकमहख़ासकी तरफ़से एक कचहरी हिसाबदफ़्तरके नामकी है, जो कुल जमा खर्चकी जांच परताल करके महकमह ख़ासमें रिपोर्ट करती है, लेकिन् ऐसे कामोंकी मन्जूरी जबतक महकमह ख़ाससे नहो तबतक सहीह नहीं समझी जाती. यह महकमह विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = .ई० १८७०] में क़ाइम हुआ था.

मेवाड़के मुख्य पर्गने ये हैंः- गिरवा, मगरा, छोटी सादड़ी, चित्तौड़गढ़, राशमी, सहाड़ां, भीलवाड़ा, मांडलगढ़, जहाज़पुर, और कुम्भलगढ़. वैकुंठवासी महाराणा साहिबने ऊपर लिखे हुए पर्गने क़ाइम करके अपने पास रहने वालोंमेंसे हरएक पर्गनेका हाकिम नियत करदिया, और उनकी तनख़्वाह बढ़ादी. इन्हीं दिनोंमें मुल्की काम पुख़्तह करनेके लिये पैमाइश और ठेकेका प्रबन्ध करनेको गवर्मेण्टसे एक आदमी मांगा, जिसपर गवर्मेण्टने मिस्टर विंगेट साहिबको भेजा. जिसने खालिसहकी पैमाइश और बन्दोबस्तका काम बहुत अच्छी तरह चलाया. पहिले इस मुल्कमें लाटा और कूंतासे जमा वुसूल कीजाती थी. लाटा याने खालिसहकी ज़मीनमें किसानोंके यहां जितनी पैदावार हो उसमेंसे क़ाइदहके मुवाफ़िक़ राज्यका हिस्सह बांटलेनेको लाटा कहते हैं, और कूंता वह

क.लाता है, कि गांवोंके मुखिया लोगोंकी शमूलियतसे राज्यका अह्लकार पकीहुई खड़ी फ़स्लका तख़मीनह करके हिस्सह वुसूल करलेता है. अफ़ीम, ऊख, और कपास वग़ैरह बोई जानवाली ज़मीनपर पहिले फ़ी बीघा एक रुपयेसे दस रुपयेतक हासिल वुसूल किया-जाता था, लेकिन् अब ख़ालिसहमें बिल्कुल पक्का बन्दोबस्त होगया, जिससे राज्य और रअय्यत के दर्मियानसे मत्लबी लोगोंका दख़्ल उठगया. ऊपर बयान किये हुए पर्गनोंमें भी बन्दोबस्तके साथ कुछ तब्दीली हुई है.

अब हम हरएक पर्गनेका भूगोल सम्बन्धी वृत्तान्त तफ्सीलके साथ जुदा जुदा लिखते हैं.

१- गिरवा, जिसका सद्र ख़ास राजधानी उदयपुरमें गिनाजाता है, इसके दो हिस्से हैं- एक भीतरी गिरवा, और दूसरा बाहिरी गिरवा. भीतरी गिरवा पहाड़ोंके अन्दर उदयपुरके गिर्द वाला हिस्सह है, और बाहिरी गिरवा वह है, जो पहाड़ोंके बाहिर चौड़े मैदानमें वाके़ है. ख़ास शहर उदयपुर, जिसमें ४६६५८ आदमियोंकी आबादी है, पक्की शहरपनाहके अन्दर बसाहुआ है. इसके तीन तरफ़ याने उत्तर, पूर्व और दक्षिण ओर पक्की शहरपनाह और पश्चिमकी तरफ़ पीछोला तालाब वाके़ है. इस शहरपनाहकी शुरू बुन्याद महाराणा पहिले अमरसिंहने डाली थी, लेकिन् उस ज़मानहमें नातमाम रही. फिर महाराणा दूसरे अमरसिंहने इसका काम जारी किया, और उनके पुत्र महाराणा दूसरे संग्रामसिंहने विक्रमी १७९० [हि० ११४६ = ई० १७३३] में उसे ख़त्म किया. इसके पश्चिम तरफ़ अमरकुंडपर शिताबपोल और उसके उत्तर तरफ़ चांदपोल दर्वाज़ह है. इन दो दर्वाज़ोंके बाहिर शहरके पश्चिमी हिस्से ब्रह्मपुरीके दो दर्वाज़े और हैं, जो अंबापोल, और ब्रह्मपोलके नामसे प्रसिद्ध हैं. उत्तरकी तरफ़ हाथी-पोल दर्वाज़ह है, जिसके सामने शम्शेरगढ़का मरहला (जेलख़ानह) है, जो महाराणा दूसरे अरिसिंहने बनवाया था; और शम्शेरगढ़से पश्चिम एक छोटी पहाड़ीपर अंबावगढ़का मरहला है; और ईशानकोणमें दिल्ली दर्वाज़ह और उसके सामने सारणेश्वर गढ़का मरहला है. पूर्वकी तरफ़ सूरजपोल दर्वाज़ह और उसके सामने सूरजगढ़ नामका मरहला है. दक्षिण तरफ़ उदयपोल (१) है, जिसके सामने कृष्णगढ़ नामका मरहला था, जिसकी पुरानी इमारत खंडहर होजानेके सबब अब उसजगह वर्त्तमान महाराणा साहिबने क़ैदियोंके लिये एक नया जेलख़ानह बनवाया है. अग्निकोणके बुर्जपर जगत्शोभा नामी एक

---

(१) पहिले इस दर्वाज़हका नाम कमलिया पोल था, जो मरहटोंके ग़द्रमें बन्ध किया गया था, परन्तु वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबके पुत्र उत्पन्न हुआ, उस समय यह दर्वाज़ह खोला-जाकर उदयपोलके नामसे प्रसिद्ध कियागया.

बड़ी तोप महाराणा दूसरे जगत्सिंहकी बनवाई हुई है, और उसके सामने इन्द्रगढ़का मरहला है. दक्षिण तरफ़ कृष्णपोल दर्वाज़ह है, यहांसे शहरपनाह मांछला मगरा परसे गुज़रकर पश्चिमकी ओर पीछोला तालाबके किनारेतक पहुंचगई है. पहाड़की चोटीपर एकलिंगगढ़ नामका एक छोटासा क़िला है, जिसके दक्षिण तरफ़ पहाड़के अख़ीर हिस्सेपर ताराबुर्ज नामका मोर्चा, और इसी पहाड़के पश्चिम दूध तलाईके सामने रमणापोल दर्वाज़ह और उसके पश्चिम पीछोलाके किनारेपर, जहां शहरपनाह ख़त्म होती है, जलबुर्जकी खिड़की है. इससे आगे पीछोला तालाब है, जो महाराणा लाखाके समय विक्रमी संवत् के १५ वें शतकमें किसी बनजारेने बनवाया था. इस तालाबके दक्षिण तरफ़ पानीके बीचमें जगमन्दिर नामी महल और बग़ीचा है. इन महलोंमें विक्रमी १६७१ [हि० १०२३ = ई० १६१४] में शाहज़ादह ख़ुर्रमने एक बड़े गुम्बज़की नींव डाली थी, जबकि वह जहांगीरका भेजा हुआ फ़ौज लेकर उदयपुरमें आया था, और महाराणा कर्णसिंहने इस महलको तय्यार करवाया. फिर वही शाहज़ादह ख़ुर्रम अपने बाप जहांगीरसे बाग़ी होकर भागनेके समय महाराणाका शरणागत होकर इसी महलमें रहा था. इस महलके पूर्वका हौज़ फ़व्वारोंका ख़ज़ानह है. महलके पश्चिममें ज़नानह मकान, और महलके उत्तर तरफ़ बड़े चौकका हौज़ वग़ैरह महाराणा अव्वल जगत्सिंहने बनवाये थे, और १२ पत्थरका महल तथा नहरके महल और स्तम्भों वाले खुले हुए दोनों दरीख़ाने, कुंवरपदाके महल, और ४ हौज़ महाराणा दूसरे संग्रामसिंहके बनवाये हुए हैं. इन महलोंमें कपूरबाबाकी एक छत्री मशहूर है. सुना गया है, कि शाहज़ादह ख़ुर्रम इस नामके फ़क़ीरपर बड़ा एतिक़ाद रखता था, और उसीके नामसे शाहज़ादहने यह स्थान बनवाया था. इसी तालाबके अन्दर उत्तर तरफ़ महलोंके सामने जगन्निवास नामी दूसरा बहुत उम्दह महल बनाहुआ है, जिसमें बग़ीचा, हौज़, और फ़व्वारे वग़ैरह कई चीज़ें देखनेके लाइक़ हैं. आमके दरख़्तोंपर मयूर बैठकर बोलते हैं, उसवक़ देखनेवालोंकी टिकटिकी लगजाती है. इस तालाबके दोनों मकानोंको देखनेके लिये हज़ारहा कोसोंसे सैकड़ों मुसाफ़िर दौड़कर आते हैं, जो देखकर अपनी मिहनतका बदला भरपाते हैं. तालाबको दक्षिण और पश्चिम दोनों ओर पहाड़ोंसे घिरा हुआ देखकर, जिनमें सरसब्ज़ दरख़्त नज़र आते हैं, मुसाफ़िर लोग यही चाहते हैं, कि इसी यात्रामें अधिक समय व्यतीत हो. तालाबके अन्दर दो और भी छोटे छोटे महल हैं, पहिला अरसी विलास, महाराणा अरिसिंहका बनवाया हुआ, और दूसरा मोहन मन्दिर, जो महाराणा अव्वल जगत्सिंहके [illegible] पुत्र मोहनदासने बनवाया था. तालाबका उत्तरी हिस्सह शहरसे घिरा

हुआ है, और वहां यह तालाब जल पूरित नदीके आकारमें दिखाई देता है. तालाब के पूर्वी किनारेपर राजधानीके महलोंसे दक्षिण तरफ़ इस तालाबका बड़ा बन्ध है, जिसको बड़ीपाल कहते हैं. इस बन्धकी मरम्मत महाराणा अव्वल जगत्सिंह, संग्रामसिंह और भीमसिंहके वक्में होती रही, लेकिन् महाराणा जवानसिंहने इस बन्धको ऐसा मज्बूत बनवादिया, कि अब इसके टूटनेका भय नहीं रहा. विक्रमी १८५२ [हि० १२१० = ई० १७९५] में जब यह बन्ध टूटगया था, तो उससे शहरको बहुत नुक्सान पहुंचा. पूर्वी किनारेपर महाराणा साहिबके महल हैं, जिनका बयान आगे लिखा जायेगा, लेकिन् ऐन किनारेपर महाराणा स्वरूपसिंहके बनवाये हुए अखाड़ाके महल हैं, जिनमें एक तरफ़ सेवाके ठाकुर पीतांबररायका देवालय और दूसरा गुलाबस्वरूपबिहारीका मन्दिर है, जो महाराणा स्वरूपसिंहकी महाराणी राठौड़ने बनवाया था, उसके आगे नया महल और पार्वती विलास नामी महल हैं, जो महाराणा भीमसिंहने बनवाये थे, और उससे आगे रसोड़ेका महल है, जिसकी बुन्याद विक्रमी १६७१ [हि० १०२३ = ई० १६१४] में शाहज़ादह खुर्रमने डाली थी, जिसको महाराणा कर्णसिंहने समाप्त करवाया, और इसी कारण इसका दूसरा नाम कर्णविलास भी रक्खा गया. इसके ऊपरके कोठेपर महाराणा संग्रामसिंहने ग्रह नक्षत्र देखनेका यंत्र बनवाया था, जो अबतक मौजूद है. इसके पासही किनारेपर महाराणा जवानसिंहका बनवाया हुआ जलनिवास महल है, जिसमें नहर व फ़व्वारे बने हुए हैं. इसके नज़्दीक रूपघाट है, जो महाराणा अरिसिंहके धायभाइयोंमेंसे रूपा धायभाईने बनवाया था. उसके आगे नावघाट है, जहां नाव और किश्तियां बंधी रहती हैं, और उसीके क़रीब नाव चलाने वालोंके घर हैं. इसके आगे महियारिया चारण श्यामल-दास, जसकर्णकी हवेली है, जिसके पासही राणावत उदयसिंहकी हवेली, लालघाट और सनवाड़की हवेली है. आगे बढ़कर बागोरकी हवेली और त्रिपोलिया घाट है जिसे गनगौर घाट भी कहते हैं. यह त्रिपोलिया महाराणा अरिसिंहके समयमें सनावड़ ब्राह्मण बड़वा अमरचन्दने बनवाया था, जिसके ऊपर बागोरके महाराज शक्तिसिंहने एक उम्दह महल बनवादिया है. इसके आगे बीरूघाट, शिताब-पोल, चांदपोल, फ़तहखां महावत (फ़ीलबान) की हवेली, और मोती कुंडका मकान है. पश्चिमी किनारेपर जगन्निवासके सामने माजीका अंतरीपनुमा मन्दिर महाराणा सर्दारसिंहकी महाराणी बीकानेरीका बनवाया हुआ है, जिसके आगे आमेटकी हवेली है, जो सर्दारगढ़के डोडिया ठाकुर सर्दारसिंहने बनवाई थी. उसके आगे उदय-श्यामका मन्दिर है, जो महाराणा उदयसिंहने उदयपुरकी बुन्याद डालनेके वक्

बनवाया था. इससे आगे पीपलियाकी हवेली, पंच देवली घाट, थांवलाकी हवेली, बाबा हनुमानदासका बनवाया हुआ हनुमानघाट, और भीमपद्मेश्वरका मन्दिर, जो महाराणा भीमसिंहकी महाराणी बीकानेरीने बनवाया था, क्रमसे एक दूसरेके बाद वाके हैं. भीमपद्मेश्वर और शिताबपौल दर्वाज़हके बीचवाला तालाबका हिस्सह अमरकुण्ड कहलाता है, क्योंकि बड़वा अमरचन्दने इसके पूर्व और पश्चिममें घाट बनवाकर इसको फ़व्वारोंसे आरास्तह किया था. इसके उत्तरको चांदपौल दर्वाज़हसे ब्रह्मपुरीमें जानेके लिये एक पुल बना है. इस पुलके आगे जो हिस्सह तालाबका है वह स्वरूपसागर कहलाता है, जिसके दो हिस्से होगये हैं, और उन दोनोंके बीचमें अमरओटा नामसे एक दीवार पानी के सत्हकी बराबर बनी हुई है. इसके आगे पानीका निकास है, जिसको वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबने बहुत खूबसूरत और मज्बूत बनवाया है. बर्सातके दिनोंमें जब तालाब भरकर चद्दर गिरने लगती है, उस वक्त यहांकी शोभा देखनेके योग्य होजाती है. तालाबके दक्षिणी किनारे वाली एक टेकरीपर खास ओदी नामी एक शिकारगाह है, जिसको महाराणा संग्रामसिंहने बनवाया था. वर्त्तमान महाराणा साहिबने वहांपर महल वगैरह बनवाकर उसकी शोभा और भी बढ़ादी है. उसी तरफ़ खुशहाल ओदी, और धर्मओदी वगैरह छोटी छोटी कई शिकारगाहें और भी हैं. बाक़ी पहाड़के बीचमें महाकालीका एक मन्दिर महाराणा जवानसिंहका बनवाया हुआ है, और नैऋत कोणमें सीता माताका छोटासा पुराना मन्दिर है, जहां पौष महीनेमें रविवारको मेला होता है. तालाबके पश्चिमी किनारेपर सीसारमा गांवमें महाराणा संग्रामसिंहका बनवाया हुआ वैद्यनाथ महादेवका एक प्रसिद्ध मन्दिर है, और उसके पश्चिमोत्तरमें वांसदरा पहाड़पर, जो शहरसे ११०० फ़ीट और समुद्रके सत्हसे ३१०० फ़ीट ऊंचा है, वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबने बहुत अच्छे महल बनवाकर उसका नाम सज्जनगढ़ रक्खा है. उसमें जो बाक़ी काम रहगया था, वह वर्त्तमान महाराणा साहिबने पूर्ण करवाया. यह स्थान भी देखनेके योग्य है. क्योंकि इसके देखनेके लिये आदमी दो मीलकी चढ़ाई चढ़कर ऊपर जानेपर अपनी मिह्नतको उसी वक्त भूल जाता है. बड़ीका तालाब जो सज्जनगढ़के समीप उत्तरकी तरफ़ है, उसका हाल महाराणा अव्वल राजसिंहकी तवारीखके साथ लिखाजायेगा.

पीछोला तालाबके उत्तर तरफ़ फ़त्हसरोवरके नामसे एक नया तालाब बनरहा है, जो पीछोलेसे मिलादिया जावेगा. ब्रह्मपुरीके उत्तर पीछोला तालाबके किनारेपर अम्बिका भवानीका प्रसिद्ध मन्दिर है, जो महाराणा राजसिंह अव्वलने बनवाया था, और देवाली ग्रामके समीप फ़त्हसरोवरके उत्तरी किनारेवाले एक खड़े पहाड़की

चोटीपर कायस्थोंका बनवाया हुआ नीमचमाताका एक पुराना मन्दिर है, जहां श्रावण कृष्ण ऽऽ को मेला होता है, और कुल शहरके लोग दर्शनोंको जाते हैं. पुरोहितजीका तालाब उदयपुरसे ७ मीलके क़रीब ईशान कोणमें सिफ़ेद ख़ूबसूरत पत्थरसे बांधा गया है.

अब हम इसी जगहसे दक्षिणको चलकर शहरके बाहिर व भीतरका हाल लिखते हैं. फ़तहसरोवरके पीछे महाराणा संग्रामसिंहका बनवाया हुआ बाग़ है, जिसको सहेलियोंकी बाड़ी कहते हैं, इसमें महल और एक बड़ा हौज़ बना हुआ है. फ़तह-सरोवरके बन्धकी दक्षिणी पहाड़ीपर मोतीमहल नामका पुराना खण्डहर है, जहां विक्रमी १६१६ [हि० ९६६ = ई० १५५९] में महाराणा उदयसिंहने उदयपुरके शहर और महलकी बुन्याद डाली थी, जो बादको एक फ़क़ीरकी इजाज़तसे पीछोला तालाबके किनारेपर बनवाये गये. सहेलियोंकी बाड़ीके पूर्व शिवरतीके महाराज गजसिंह वगै़रह कई सर्दारों और पासबानोंकी बाड़ियां हैं, और एकलिंगेश्वरकी सड़कपर नदीका पुल और विष्णुका एक मन्दिर धायभाई रूपाका बनवाया हुआ है. पीछोलाके निकासी नाले (गुमा-निया खाल) के दक्षिण किनारेसे आबादी शुरू होती है. रेज़िडेंसीकी कोठी, जो महाराणा भीमसिंहके समयमें कॉब साहिबने बनवाई थी, और जिसको महाराणा जवानसिंहने १००००) रुपया देकर ख़रीदली थी, उस कोठीके पास पुराने गुम्बज़दार महल हैं, जो पेश्तर बेगूंके रावत्की हवेली थी, और अब उसमें अंग्रेज़ी रेज़िडेण्ट रहते हैं. इस कोठीके अग्नि कोणकी तरफ़ रेज़िडेंसी सर्जनका बंगला है. कोठीके दक्षिण रेज़िडेन्सी का बग़ीचा और सेठ ज़ोरावरमल्लकी बाड़ी है. उसके दक्षिण हज़ारेश्वर महादेवका मन्दिर है, और हज़ारेश्वरके महल, जो महाराणा दूसरे जगत्सिंहके समयमें एक दादूपंथी साधुने अपने आश्रमके लिये बनवाये थे. इसीके क़रीब स्कॉच मिशनका गिरजा है, जो पादरी डॉक्टर जेम्स शेपर्डने हालमें बनवाया है. गिरजाके पश्चिममें मेरा (कविराजा श्यामलदासका) श्यामल बाग़, और इसके उत्तर सरदफ़्तरका बंगला है, इसके आगे मिस्टर लोनार्गिन, गार्डन सुपरिण्टेण्डेण्ट मिस्टर स्टोरी, फ़ीरोज़शाह पिश्तनजी सौदागर और मिस्टर जर्मनीका बंगला पास पास वाक़े हैं. मिस्टर जर्मनीके बंगलेके क़रीब महता तख़्तसिंह और महता गोविन्दसिंहकी बाड़ियां हैं, जिनके क़रीब कचहरी बन्दोबस्तके बंगले, और इनके दक्षिण चौगान और दरीख़ाने वाक़े हैं. महाराणा साहिब नवरात्रिके त्यौहारोंपर जुलूसी सवारीसे अक्सर इसी जगह आते हैं. चौगानके पश्चिममें तोपख़ाना, और उसके पीछे महाराणा दूसरे अरिसिंह के समयके बने हुए जैन मन्दिर हैं, जिनमें बड़े बड़े क़दकी जैन मूर्त्तियां हैं. यहांसे

पश्चिम पीछोलाके निकासी नालेपर पादरी जेम्स शेपर्डका बंगला, नालेके पश्चिम विलिअम टॉमसका बंगला, और उसीके पासकी पहाड़ीपर एग्ज़िक्युटिव इंजिनिअर मिस्टर टॉमसनका और उसके उत्तरकी टेकरीपर मिस्टर विंगेटका बंगला है. ये कुल बंगले सिवा पादरी शेपर्डके राजकी तरफ़से बनवाये गये हैं, किसी साहिबकी मिल्कियत नहीं है. श्यामलबाग़के पश्चिम भीम और स्वरूप पल्टनकी लाइनें और उससे दक्षिण हाथीपोलकी सराय, और वायव्य कोणमें हाथीपोलका मरहला है. उसके आगे महाजनोंकी पंचायती थोभकी बाड़ी है, जिसमें एक जैनका मन्दिर और मकान बनाहुआ है.

अब हम हाथीपोल दर्वाज़हके भीतर चलते हैं. मोतीचौहट्टाकी पश्चिमी लाइनकी तरफ़ करजालीके महाराज सूरतसिंह और शिवरतीके महाराज गजसिंहकी हवेलियां हैं, और उसी लाइनमें बनेड़ाके राजा गोविन्दसिंहकी हवेली है, जिसके आगे घण्टाघरका मनारह और कोतवालीका मकान है. इससे आगे पश्चिमी लाइनमें शीतलनाथका जैन मन्दिर है, और उससे आगे महाराणा स्वरूपसिंहकी महाराणी अभयकुंवरका बनवाया हुआ अभयस्वरूपबिहारीका मन्दिर और एक बावड़ी है. इसके आगे महाराणा जगत्सिंह अव्वलकी धाय नौजूका बनवाया हुआ विष्णुका मन्दिर है, जो विक्रमी १७०४ [हि० १०५७ = ई० १६४७] में तय्यार हुआ था, और उसके क़रीब जगन्नाथरायका बड़ा मन्दिर है, जो इन्हीं महाराणाने विक्रमी १७०८ [हि० १०६१ = ई० १६५१] में बनवाया था. इससे आगे पूर्वी लाइनमें आसींदके रावत्की हवेली और पश्चिमी लाइनमें गोकुलचन्द्रमाका विष्णु मन्दिर है, जिसको बागोरके कुंवर शार्दूलसिंहकी पत्नी, याने महाराणा शंभुसिंहकी माता नन्दकुंवरने विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = ई० १८७४] में बनवाया है. इसके आगे जगच्छिरोमणिका मन्दिर है, जिसको महाराणा जवानसिंहकी महाराणी बाघेलीकी आज्ञानुसार महाराणा स्वरूपसिंहने बनवाकर विक्रमी १९०५ [हि० १२६४ = ई० १८४८] में समाप्त किया, और उसके सामने जवानस्वरूपेश्वरका मन्दिर है, जो महाराणा जवानसिंहकी आज्ञानुसार महाराणा स्वरूपसिंहने विक्रमी १८९९ [हि० १२५८ = ई० १८४२] में समाप्त किया. इस जगह दोनों तरफ़ दूकानोंकी लाइनें भी महाराणा स्वरूपसिंहकी बनवाई हुई हैं, जिनके आगे महलोंमें प्रवेश करनेको पहिला दर्वाज़ह बड़ीपोल है, जिसको महाराणा अव्वल अमरसिंहने विक्रमी १६७६ [हि० १०२८ = ई० १६१९] में बनवाया था. इसके दोनों तरफ़ वाले दो दालान महाराणा दूसरे अमरसिंहने विक्रमी १७५७ [हि० १११२ = ई० १७००] में बनवाये थे, और उनके दोनों तरफ़ घड़ियाः-

व नक़ारखानेकी मनारनुमा छतरियां हैं, जो इन्हीं महाराणाने बनवाई हैं. इसके आगे बढ़कर त्रिपौलिया याने बराबर क़तारमें सिफ़ेद पत्थरके तीन दर्वाज़े हैं. ये महाराणा दूसरे संग्रामसिंहके बनवाये हुए हैं. इनके ऊपर हवामहल नामका एक महल महाराणा स्वरूपसिंहका तय्यार करवाया हुआ है. इसके आगे महलोंका बड़ा चौक है, जिसके नीचे लदावके बड़े दालान और सूरज पौल दर्वाज़ह, महाराणा कर्णसिंहके बनवाये हुए हैं. इस लदावपर महाराणा दूसरे संग्रामसिंहकी बनवाई हुई हस्तिशाला है. सभाशिरोमणि दरीखानह, तोरण पौल, रावला (ज़नानह महल), और सूरज चौपाड़ तो महाराणा कर्णसिंहने और अमर महल महाराणा अमरसिंह अव्वलने तय्यार करवाये. पीतमनिवासमें चीनीका काम व सूरज चौपाड़में नक़ाशीका काम महाराणा दूसरे जगत्सिंहके और स्वरूपविलास महाराणा स्वरूपसिंहके, माणक महल, भीमविलास, और मोती महल, ये तीनों महाराणा कर्णसिंहके बनवाये हुए हैं, लेकिन् माणक महलमें स्वरूपसिंहने, भीमविलासमें भीमसिंहने, और मोती महलमें जवानसिंह ने काच वग़ैरहका नया काम और बनवाया. सिलहखानह, राय आंगन, नेकाकी चौपाड़, पांडेकी ओवरी और पाणेराकी नौचौकियां, ये कुल मकानात महाराणा उदयसिंहने बनवाये थे. पाणेराके ऊपरका चन्द्र महल, और दिलकुशाल (दिलख़ुश्हाल) की चौपाड़ महाराणा कर्णसिंहने; बड़ी चित्रशाली दिलकुशालका परछना, महाराणा संग्रामसिंहने; शिवप्रसन्न व अमरविलास (बाड़ी महल) महाराणा दूसरे अमरसिंहने; और खुशमहल महाराणा स्वरूपसिंहने तय्यार करवाये. कोठारका मकान महलोंके प्रारम्भ समयमें महाराणा उदयसिंहका बनवाया हुआ है. दक्षिण तरफ़ " शम्भुनिवास " नामी अंग्रेज़ी तर्ज़का एक महल महाराणा शम्भुसिंहका बनवाया हुआ है. पहिले इस जगह महाराणा अव्वल जगत्सिंहके बनवाये हुए कुंवरपदाके महल थे, जिसका एक पुराना हिस्सह शम्भुनिवासके सामने अबतक मौजूद है. इन महलोंकी तरक़्क़ी वैकुण्ठ वासी महाराणा सज्जनसिंहके समयमें भी होती रही, लेकिन् वर्त्तमान महाराणा साहिबने शम्भुनिवासके दक्षिण तरफ़ एक बड़ा आलीशान अर्द्धवृत्ताकार महल तय्यार करवाया है, जिसका काम अभीतक जारी है. इस महलको कुल महलोंका दक्षिणी रक्षक स्थान (दुर्ग या क़िला) कहना चाहिये. इसके दक्षिणमें बड़ी पालका बन्ध और उसके पीछे सज्जननिवास नामी एक बड़ा बाग़ महाराणा सज्जनसिंहका बनवाया हुआ देखनेके लाइक़ है, जिसमें नीलकंठ महादेवका प्राचीन स्थान, पाला गणेशका मन्दिर और अनेक तरहकी घूमी हुई पट्टियां याने सड़कें, जिनके दोनों तरफ़से अनेक प्रकारके फूलोंकी सुगंध आतीहुई, और कहीं हौज़ोंके बीचमें धातुमयी मूर्त्तियोंके हाथसे फ़व्वारे चलते हुए, कहीं

हौज़के गिर्द फ़व्वारोंके चलनेसे बर्सातकासा रूप दिखाई देना, कहीं जालीदार गुम्बज़ी हौज़में जलजन्तुओंका क्रीडा करते नज़र आना, कहीं शेर, चीते, तेंदुए, और रीछ वगैरह जंगली जानवरोंका बोलना, कहीं लोहेकी जालमयी दीवारोंके भीतर सामर, रोज, हरिण, चौसींगे आदि तृणचर जंगली जानवरोंका फिरना, कहीं तोता, मैना व चंडूल वगैरह अनेक प्रकारके पक्षियोंका किलोल करना, कहीं बड़े विस्तार वाले हरित चौगानमें अंग्रेज़, हिन्दुस्तानी, और मेवाड़ियोंका गेंद खेलना, कहीं गुलाबी व किर्मज़ी फूलोंवाली हरी बेलोंका वृक्षोंको ढंकना, कहीं मेवा और फलदार वृक्षावलीकी शोभा दिखाई देना, और ठौर ठौर वृक्षोंकी सघन छायामें बेंच और कुर्सियोंका रक्खाजाना इत्यादि इस सुहावनी छटा और शोभाको देखकर सैर करनेवालोंका दिल यह नहीं चाहता, कि वहांसे उठकर जावे. इस बाग़के भीतर महाराणा जवानसिंहके बनवाये हुए महल और उनसे अग्निकोणकी तरफ़ एक ऊंचे स्थानपर विक्टोरिया हॉल नामी बहुत ही सुन्दर तर्ज़का महल वर्त्तमान महाराणा साहिबने बनवाया है, जिसके सामने ज्युबिलीकी यादगार में श्रीमती महाराणी विक्टोरियाकी पाषाणमयी मूर्त्ति है. महलके भीतर अद्भुत वस्तु-संग्रहालय (म्यूज़िअम), प्राचीन वस्तु संग्रहालय, और पुस्तकालय बने हैं, जहां आम लोगोंको सैर करनेकी इजाज़त है. इस बाग़के उत्तरी फाटककी पूर्वी लाइनमें महता राय पन्नालालकी बाड़ी और पश्चिमी लाइनमें कविलोगोंका मद्रसह (चारण पाठशाला) है, जिसको मैं (कविराजा श्यामलदास) ने उमराव सर्दारोंके चन्दे और त्यागके रुपयोंसे वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबकी आज्ञानुसार बनवाया है. इसमें चारणोंके लड़के पठन पाठन करते हैं. वर्त्तमान महाराणा साहिबने इस पाठशालाके पाठक लोगोंका प्रबन्ध राजकी तरफ़से करदिया है. यहांसे थोड़ी दूर आगे बढ़कर वायव्य कोणमें राज यन्त्रालय (छापाख़ानह) है. शहरसे दक्षिण दो मीलके फ़ासिलहपर गोवर्द्धनविलास नामी स्थान है, जहां महाराणा स्वरूपसिंहके बनवाये हुए महल, तालाब व आखेट स्थान हैं, और एक पुराना कुण्ड धायभाई मानाका बनवाया हुआ है, जिसको उसने विक्रमी १७९९ [हि० ११५५ = ई० १७४२] में तय्यार करवाया था. गोवर्द्धनविलाससे पूर्व दिशाको शमीनाखेड़ा ग्रामके बीचमें गुसाइयोंका एक प्रतिष्ठित मठ है. यह मठ महाराणा दूसरे अमरसिंहके समयमें गुसाईं हरनाथगिरि और उसके शिष्य नीलकण्ठगिरिने बनवाया था. इस स्थानके मुआफ़ीके ग्राम व प्रतिष्ठा वगैरह अभीतक बहाल है, और इसके समीप शहरकी तरफ़ नागोंका अखाड़ा है, जहां नागा सन्यासी लोग चातुर्मासमें ठहरते हैं. कृष्णपोल और उदयपोल दर्वाज़हके बीचमें शहरके बाहिर अग्निकोणमें जंगी फ़ौजकी बारकें (रहनेके स्थान) हैं. शहरसे ईशानकोणकी तरफ़ शारणेश्वर महादेवका

मन्दिर है, जिसकी चौखटमें एक पाषाण लेख रावल अल्लटके समयका याने, विक्रमी १०१० [हि०३४२ = .ई० ९५३] का खुदा हुआ लगायागया है. यह पाषाण लेख पहिले विष्णु-मन्दिरका था. इस मन्दिरके समीप कुल शहरके स्मशान क्षेत्र हैं. शहरसे पूर्व एक मीलके अन्तरपर नदीके किनारे चम्पाबाग़ नामका एक उम्दह बाग़ महाराणा कर्णसिंहका बनवाया हुआ है, और उसके किनारेपर हरसिद्धि देवीका मन्दिर उसी ज़मानेका बना हुआ है. इस मन्दिरकी सीढ़ियोंमें एक पाषाण लेख रावल शक्तिकुमारके समयका लगाहुआ है. चम्पाबाग़से अग्निकोणको सड़कके दक्षिणी किनारेपर महाराणा जगत्सिंहकी राज-कुमारी रूपकुंवरकी बनवाई हुई सराय, और पुष्टि मार्गका मन्दिर है. शहरसे पूर्व आहड़ ग्रामकी पुरानी सड़कपर महाराणा दूसरे जगत्सिंहकी महाराणी भटियाणीकी बनवाई हुई सराय, बावड़ी, और पुष्टिमार्गका मन्दिर है. शहरसे २ मील पूर्वकी तरफ़ आहड़ नामी ग्राम है, जो गुहिलोत वंशके राजाओंकी चित्तौड़से पहिलेकी पुरानी राजधानी थी. वहां बड़ी बड़ी ईंटें और प्राचीन इमारतोंके पाषाण अभीतक मिलते हैं. अब यह एक छोटासा ग्राम रहगया है, जिसमें विक्रमी संवत्की आख़री १५ वीं सदीके बने हुए जैन मन्दिर हैं. दो मन्दिरोंमें १० वें शतकके पाषाण लेख भी लगादिये हैं, जो नरवाहन और शक्ति-कुमारके समयके मालूम होते हैं. इस ग्रामके क़रीब पूर्व तरफ़ गङ्गोद्भवका तीर्थ, महाराणाओंका स्मशान क्षेत्र है, जिसको महासती कहते हैं. यह गङ्गोद्भवका कुण्ड चित्तौड़से पहिले गुहिलोतोंकी राजधानीके समयका बतलाते हैं. कुण्डके बीचमें एक ऊंचा चबूतरा है, जिसको लोग गंधर्वसेनकी छत्री कहते हैं, इसके विशयमें यह भी कहावत प्रसिद्ध है, कि गुहिलोत राजाकी भक्तिके कारण इस कुण्डमें गंगा नदीका सोता आया है, इस कारण लोग इस कुण्डमें स्नान करनेका बड़ा महात्म्य समझते हैं. कुण्डके समीप महाराणा अमरसिंह अव्वलकी बड़ी छत्री है, जिसकी नेव विक्रमी १६७७ [हि० १०२९ = .ई० १६२०] में डाली गई थी, और इस स्मशान क्षेत्रमें यही पहिली छत्री है. इसके पास अग्निकोणकी ऊंची कुर्सीपर महाराणा कर्णसिंह और महाराणा जगत्सिंहकी दो छोटी छत्रियां हैं, जिनके दक्षिण तरफ़ महाराणा दूसरे अमरसिंहकी बड़ी छत्री, और उसके सामने दूसरे संग्रामसिंहकी बड़ी छत्री है, जिसके गुम्बज़का काम नातमाम रहगया है, और उसीके समीप श्वेत पाषाणकी बनीहुई महाराणा भीमसिं[illegible], महाराणा जवानसिंह, महाराणा सर्दारसिंह, महाराणा स्वरूपसिंह, महाराणा शम्भुसिंह, और महाराणा सज्जनसिंहकी छत्रियां हैं. इस महासती [illegible] क्षेत्रके गिर्द दीवार खिंची हुई है. बाहिरकी तरफ़ उत्तर और वायव्य कोणको रियासती लोगोंकी छोटी छोटी कई छत्रियां हैं, और महासतीके स्थानसे पूर्व महाराणा [illegible]ल राजसिंहके समयकी लाली

ब्राह्मणोंकी बनवाई हुई सराय, मन्दिर और बावड़ी है. उससे आगे उसी समयकी सुन्दर-बाव नामकी बावड़ी है; और उससे आगे पुरानी सड़कपर बेड़वास ग्राममें कायस्थ फ़त्हचन्दकी बनवाई हुई सराय, बावड़ी और एक पहाड़ीपर खेमज माताका मन्दिर है. इससे उत्तर नई सड़कपर महाराणा शम्भुसिंहके धवा बदनमल्लकी बनवाई हुई बावड़ी है; उससे आगे नई सड़कके दक्षिणको महाराणा अव्वल राजसिंहकी महाराणी रंगरसदेकी बनाई हुई त्रिमुखी बावड़ी, और उसीके समीप भरणाकी सराय है; और उससे आगे देबारीका दर्वाज़ह और अग्निकोणको उदयसागर नामका बड़ा तालाब है, जिसकी नेव महाराणा उदयसिंहने विक्रमी १६१६ [हि० ९६६ = ई० १५५९] में डाली थी. इससे अग्निकोणमें चेजाका घाटा, और बाहिर गिरवेमें घासाका तालाब है, जो विक्रमी संवत् के १० वें शतकसे पहिलेका बनवाया हुआ मालूम होता है, और ऊंटाला ग्राममें शीतला माताका प्रसिद्ध मन्दिर है. उदयपुरसे क़रीब १६ मील ईशान कोणको महाराणाका आखेट स्थान नाहरमगरा है, जहां महाराणा दूसरे संग्रामसिंहके बनवाये हुए महल थे, लेकिन् महाराणा शम्भुसिंह साहिब और महाराणा सज्जनसिंह साहिबने वहां कई महल और आखेट स्थान नये बनवाकर उसको अति रमणीय करदिया है. उदयपुरसे उत्तर क़रीब ६ कोसपर एकलिंगेश्वरकी पुरी है. यह स्थान बहुत पुराना है. जब चित्तौड़में पहिले राजधानी न थी उससे पहिले गुहिल कुलके राजा इसी नागदा गांवमें राज्य करते थे. इन राजाओंमेंसे बापा रावलने एकलिंगेश्वरको स्थापन करके चित्तौड़का राज्य लिया; उस समयसे यह मन्दिर प्रसिद्ध रहा, लेकिन् मालवी और गुजराती मुसल्मानोंके हमलोंसे मन्दिरको दो तीन बार नुक्सान पहुंचा; तब महाराणा मोकल, महाराणा कुम्भकर्ण और महाराणा रायमल्लने समय समयपर इसका जीर्णोद्धार करवाया. मन्दिरके गिर्द संगीन दीवार महाराणा मोकलने बनवाई और मन्दिर व मूर्त्तिका जीर्णोद्धार महाराणा रायमल्लने करवाया, और बड़े मन्दिरके दक्षिण तरफ़ नाथ लोगोंकी पुरानी समाधि और मन्दिर वगैरह भी हैं. गोस्वामीके रहनेका मठ भी पुराना है, परन्तु पीछेसे उसका जीर्णोद्धार होता रहा है. बड़े मन्दिरसे उत्तर ऊंची कुर्सीपर विंध्यवासिनी देवी और हारीत ऋषि (१) के मन्दिर हैं; मन्दिरसे पूर्व इन्द्रसरोवर तालाब, जिसको भोडेला भी कहते हैं, विद्यमान है. यह तालाब इसी मन्दिरके साथ बनवाया गया था, जिसका जीर्णोद्धार महाराणा मोकल और महाराणा अव्वल राजसिंहने करवाया. मन्दिरसे नैर्ऋतकोणको बाघेला तालाब है, जो महाराणा मोकलने अपने भाई बाघसिंहके नामपर बनवाया था. इस तालाबके

---

(१) प्रशस्तियोंमें इस नामको हारीत राशि लिखा है.

पश्चिमी तीरपर नागदाके पुराने खण्डहर अबतक मौजूद हैं. खुमाण रावलकी समाधिपर बनाहुआ दो सभामण्डपका मन्दिर अबतक खड़ा है, और ग्रामके नैऋत कोणमें दो जैन मन्दिर विक्रमी १५ वीं सदीके बने हुए हैं, जिनमें बड़ी बड़ी मूर्तियां हैं. तालाबके नैऋती तीरपर दो बहुत .उम्दह पुराने मन्दिर हैं, जिनको लोग सास बहूके मन्दिर कहते हैं. इन मन्दिरोंमें नक़ाशीका काम देखनेके लाइक़ है. इन .इमारतोंका ढंग देखनेसे मालूम होता है, कि ये विक्रमी संवत्की ११ वीं सदीमें बनाये गये होंगे. एकलिंगेश्वरके मन्दिरसे पूर्व एक खड़े पहाड़की चोटीपर राष्ट्रसेना देवीका मन्दिर है. नवरात्रिमें इस देवीको १ महिष और २ बकरे महाराणा साहिबकी तरफ़से, और ९ महिष, व १८ बकरे देलवाड़ाके राजकी तरफ़से बलिदान कियेजाते हैं. एकलिंगेश्वरके मन्दिरके क़रीब एक मीलसे ज़ियादह दूर बापा-रावलका समाधिस्थान है, और इसी तरह एकलिंगेश्वरके गिर्दोनवाहमें कई मन्दिर पुराने मिले हैं, और उनसे प्रशस्तियां भी प्राप्त हुईं, जिनका हाल प्रसंग स्थानपर लिखाजायेगा.

२– ज़िला मगरा–यह ज़िला उदयपुरके दक्षिण तथा पश्चिममें पहाड़ोंसे घिरा हुआ महा दुर्गम स्थल वाला है. इसका सद्र (मुख्य) मक़ाम हालमें सराड़ा है, जहां एक छोटीसी गढ़ी है, जिसके अन्दर हाकिम रहता है. उदयपुरसे तीस मीलके लगभग दक्षिणमें चावण्ड ग्राममें महाराणा अव्वल प्रतापसिंहने अपने रहनेके महल बनवाये थे, जो अब खण्डहर पड़े हुए हैं. भोराईका क़िला डूंगरपुरकी हदपर वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबका बनवाया हुआ है. पश्चिम भोमटमें राघवगढ़का क़िला है, जो देलवाड़ाके राज राघवदेवने क़रीब १२५ वर्ष पहिले बनवाना चाहा था, लेकिन् वह पूरा न होने पाया, और राघवदेव उदयपुरमें मारागया. सिरोही, पालनपुर और ईडरके इलाक़ोंतक भोमटका ज़िला कहलाता है. इसमें भोमिया लोगोंके छोटे बड़े कई ठिकाने हैं, और ये लोग राजपूत व भीलोंके पैवन्दसे पैदा हुए कहे जाते हैं. बाक़ी भीलोंकी अनेक पालें नाहर, भांडेर, ऊपरेट, छप्पन, मेवल, और डांगल नामके ज़िलोंमें आबाद हैं. इस ज़िलेमें जयसमुद्र नामका एक बड़ा भारी और अनुपम तालाब, जिसको ढेबर भी कहते हैं, महाराणा दूसरे जयसिंहका बनवाया हुआ है. इसका वृत्तान्त महाराणा जयसिंहके हालमें लिखाजायेगा. इसी ज़िलेमें धूलेव ग्रामके अन्दर ऋषभदेवका एक बड़ा प्रसिद्ध मन्दिर है, जो जैन और वैष्णवोंका बड़ा तीर्थ है, और जिसका वर्णन ऊपर होचुका है.

३– ज़िला छोटी सादड़ी–यह ज़िला मेवाड़, मालवा और पहाड़ी ज़िलेकी हदपर सेंधिया, प्रतापगढ़ और नीबाहेड़ाके इलाक़ोंसे मिला हुआ है; हाकिमके रहनेका सद्र मक़ाम छोटी सादड़ी शहरपनाहके भीतर आबाद है. इसके दक्षिण तरफ़ पहाड़ और बाक़ीमें मैदान और काली ज़मीन है. इस ज़िलेमें कोई स्थान लिखनेके लाइक़ नहीं है.

४ - ज़िला चित्तौड़गढ़- इसका पूर्वी भाग पहाड़ी और बाक़ी मैदान है. हाकिमके रहनेका मुख्यस्थान चित्तौड़गढ़ है. इस क़िलेकी बुन्यादका हाल सविस्तर तौरपर नहीं मिलसक्ता, लेकिन् इतना माना जाता है, कि मौर्य (मोरी जातिके) क्षत्रिय राजा चित्रंगने यह क़िला बनवाकर अपने नामपर इसका नाम चित्रकोट रक्खा था, उसीका अपभ्रंश चित्तौड़ है. मोरी खानदानके अन्तिम राजा मान मोरीसे विक्रमी ७९१ [हि० ११६ = ई० ७३४] में गुहिलोत राजाओंके हाथमें आया, जो आजतक मौजूद है. इस क़िलेके दो बड़े मार्ग और दो खिड़कियां हैं, जिनमें एक पश्चिमी मार्ग आसानीसे चढ़नेके लाइक़ है. इस मार्गमें चढ़ते समय ७ दर्वाज़े पड़ते हैं- जिनमें १-पाडलपौल, २-भैरवपौल, ३-हनुमानपौल, ४-गणेशपौल, ५-लछमनपौल, ६- जोड़लापौल, और ७- रामपौल है. इन दर्वाज़ोंमेंसे भैरवपौलको विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबने सड़ककी दुरुस्ती करवानेके समय गिरवादिया, क्योंकि वह पहिले ही से गिराहुआ था, केवल दोनों तरफ़की शाखोंके निशान बाक़ी रहगये थे, जो रास्तह चौड़ा करनेके लिये गिरादिये गये; बाक़ी ६ दर्वाज़े मौजूद हैं. पहिले इस रास्तेपर एकही दर्वाज़ह ऊपरका था, जिसका नाम मानपौल है, लेकिन् महाराणा कुंभकर्णने रामपौल, जोड़लापौल, गणेशपौल और हनुमानपौल, ये चार दर्वाज़े नये बनवाये, और बाक़ी पीछेसे बनवायेगये हैं. भैरव-पौल, और हनुमानपौलके बीचमें राठौड़ कल्ला और ठाकुर जयमल्लकी छत्रियां हैं, जिनको बदनोरके ठाकुर प्रतापसिंहने बनवाई हैं. ये दोनों सर्दार यहांपर विक्रमी १६२४ [हि० ९७५ = ई० १५६७] में अक्बरसे लड़कर मारेगये थे, और पाडलपौलके बाहिर देवलिया वालोंके बड़े रावत् बाघसिंहका चबूतरा है, जो अक्बरसे बड़ी बहादुरीके साथ लड़कर काम आया था. ऊपरकी तरफ़ रामपौलके भीतर आमेटके रावत् पत्ताका चबूतरा है, जो अक्बरसे लड़कर बहादुरीके साथ मारागया था. क़िलेके उत्तरी हिस्सेमें रत्नेश्वर तालाब है, और उसके ऊपर हींगलू अहाड़ाके महल हैं, इसके बन्धके पीछे राठौड़िया तालाब है, और उससे आगे अन्नपूर्णा देवीका मन्दिर और कुण्ड, और उसके क़रीब पश्चिमको कुकड़ेश्वर महादेवका मन्दिर है. मन्दिरसे दक्षिण भीमगोड़ी नामका एक बड़ा गहरा पुष्कर (जलाशय) और कुंभसागर तालाब तथा तुलजा भवानीका मन्दिर और कुण्ड है. यहांसे आगे आला काबाकी जगहका खण्डहर, और नौ कोठा मकानकी दीवारका निशान है, जो बनवीरने भीतरी क़िला बनवानेके इरादहसे बनवाया था. इस दीवारके पश्चिमी बुर्ज और दालानके बीचमें शृंगार चंवरी नामका एक जैन मन्दिर है. उससे दक्षिण महाराणा साहिबके पुराने

महल, त्रिपोलिया और बड़ी पोल नामका दर्वाज़ह है. बड़ी पोल दर्वाज़हसे पूर्व सात वीश देवरीके नामका एक पुराना जैन मन्दिर है. महलोंके दक्षिणी फाटकसे पूर्वी कोनेपर महाराणा कुम्भकर्णका बनवाया हुआ एक कीर्त्ति स्तम्भ (मनार) और महलोंकी पूर्वी सीमाके पास कुम्भश्यामका मन्दिर है, जिसको महाराणा कुम्भकर्णने विक्रमी १५०५ [हि० ८५२ = .ई० १४४८] में बनवाया था. महलोंके दक्षिणी फाटकके बाहिर महासती स्थान है, जो पहिले चित्तौड़के राजाओंका दग्धस्थान था. इसमें समिद्धेश्वर महादेवका एक मन्दिर है, जिसको विक्रमी १४८५ [हि० ८३१ = .ई० १४२८] में महाराणा मोकलने बनवाया था, और इसीके क़रीब पुराने जैन मन्दिरकी कुर्सीपर गुसाइयोंका मठ है, और उसके दक्षिणमें गोमुख नामी झरना और हौज़ है. इसकी सीढ़ियां उतरते वक्त दाहिने हाथको गुफ़ाके तौरपर एक छोटीसी मढ़ी है, जो महाराणा रायमल्लके समयमें जैनियोंने बनवाई थी. इससे दक्षिण रावत् पत्ताका तालाब और पत्ता व जयमल्लकी हवेलियां हैं. इस तालाबके पूर्व भीमलत नामी पानीका एक बड़ा पुष्कर (चारों ओर पत्थरोंसे बन्धाहुआ जलाशय) है. पत्ताकी हवेलीसे दक्षिण कालिका देवीका प्रसिद्ध और प्राचीन मन्दिर है. इस मन्दिरके दक्षिण तरफ़ पद्मिनीका तालाब और महल है, जिनकी मरम्मत वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबने करवाई थी. इसके पश्चिम ऊंचाईपर सलूंबर, रामपुरा, और बूंदीवालोंकी हवेलियोंके खण्डहर हैं, और दक्षिणको बादशाहकी भाक्षी (क़ैदख़ानह) (१) और उसके पूर्व घोड़ा दौड़ानेका चौगान तथा घोरा वादलके गुम्बज़ हैं. इसके दक्षिणमें चित्रंग मोरीका तालाब है. यहांसे आगे बढ़कर कोई प्रसिद्ध स्थान नहीं है. क़िलेकी पूर्वी दीवारमें सूरजपोल नामी दर्वाज़ह है. इस रास्तहपर ३ दर्वाज़ोंके निशान हैं, लेकिन् दो साबित हैं. दर्वाज़हके भीतर नीलकण्ठ महादेवका प्राचीन मन्दिर और उससे उत्तर एक पुराना कीर्त्ति स्तम्भ है, जो विक्रमी १० वीं सदीमें जैनियोंने बनवाया था. क़िलेके दक्षिणकी खिड़की बंद है, और उत्तर तरफ़ वाली लाखोटा नामकी खिड़की खुली है. पश्चिम तरफ़ पहाड़से मिला हुआ क़स्बह आबाद है, जिसको तलहटी बोलते हैं. इस क़स्बेमें क़िलेके पाडलपोल दर्वाज़हके बाहिर महाराणा उदयसिंहकी महाराणी झालीकी बनवाई हुई एक बावड़ी है, जिसको झालीबाव कहते हैं. सिवा इसके दो कुण्ड पुराने और हैं, जो ज़मीनमें दबगये थे, लेकिन् महता शेरसिंह के पुत्र सवाईसिंहने उन्हें दुरुस्त करवाया. मालूम नहीं, कि ये कुण्ड शुरूमें किसने

---

(१) यहांपर बादशाह क़ैद कियागया था.

और कब बनवाये थे. क़स्बहमें एक पाठशालाका और दूसरा अस्पतालका, ये दोनों मकान नये बनवाये गये हैं. यह क़स्बह एक छोटी शहरपनाहसे रक्षित है. पश्चिम तरफ़ गंभीरी नदीपर अलाउद्दीन ख़िल्जीके पुत्र ख़िज़रख़ांका बनाया हुआ पुल अबतक मौजूद है. इस नदीमें बारहों महीना पानी बहता है. क़स्बह चित्तौड़के पश्चिम रेलकी सड़क बनी है, जो विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में खोलीगई थी. क़िला चित्तौड़ हिन्दुस्तानमें बहुत पुराना और लड़ाईके लिये अधिक प्रसिद्ध है. इसमें पानीके ८४ निवाण बतलाते हैं, परन्तु १२ तो हमेशह भरे रहते हैं, जिनमें कितनेएक तो ऐसे हैं, कि उनका पेंदा आजतक किसीने नहीं देखा.

क़िलेसे उत्तर ३ कोसके फ़ासिलहपर नगरी नामी गांव है, जहां पहिले बहुत पुराना शहर था. ऐसा सुनागया है, कि मोरी गोतके राजाओंने इस शहरको छोड़कर चित्तौड़का क़िला बनवाया था; यहां पुराने मकानोंके कई निशानात और प्राचीन सिक्के भी मिलते हैं. इसके पश्चिम तरफ़ बेड़च नदी और तीन तरफ़ गिरे हुए शहरपनाहका चिन्ह है, जिसके भीतर बड़े बड़े पत्थरोंसे बनाहुआ चार दीवारोंके भीतर एक स्थान है, जिसको वहां वाले हाथियोंका बाड़ा कहते हैं, लेकिन् यह बुद्ध लोगोंका स्तूप मालूम होता है. इसी तरह एक मनार भी है, जिसको लोग ऊभदीवट बोलते हैं, और कहते हैं, कि अक्बर बादशाहने अपनी फ़ौजमें प्रकाश रखनेके लिये यह मनार बनवाया था, परन्तु यह बात सत्य नहीं है, क्योंकि यह मनार बहुत पुराना बुद्ध लोगोंका बनवाया हुआ मालूम होता है. हमने इस शहर, स्तूप, और मनार (कीर्ति स्तम्भ) वग़ैरहका हाल एशियाटिक सोसाइटी बंगालके ईसवी सन् १८८७ के जर्नल में विस्तार सहित लिखा है. इसमें दो प्रशस्तियां विक्रमादित्यके संवत्से अनुमान २०० वर्ष पहिलेकी मिलीं, जिनमें एक छोटा टुकड़ा तो नगरीमें और दूसरी बड़ी प्रशस्ती वहांसे डेढ़ कोसके फ़ासिलहपर घोसूंडी ग्रामकी बावड़ीमें मिली है. इससे मालूम होता है, कि यह शहर बहुत पुराने ज़मानहसे आबाद था.

मेवाड़में तीन ज़िले याने ५-रासमी, ६-सहाड़ां और ७-भीलवाड़ा चौड़के हैं, और इनमें जुग्राफ़ियहमें लिखनेके लाइक़ कोई बड़े या प्राचीन स्थान भी नहीं हैं. केवल रासमी ज़िलेमें मातृकुंडियां नामी तीर्थ स्थान बनास नदीपर है और वहां एक महादेवका मन्दिर है, जहां वैशाखी पूर्णिमाको मेला भरता है. इसके सिवा करेड़ा गांवमें एक बहुत बड़ा और पुराना जैन मन्दिर है.

८-ज़िला मांडलगढ़-यहांका क़िला अजमेरके चहुवानोंके समयका बनाहुआ बहुत

पुराना है. इसके बाबत क़िस्से कहानी तो कई तरहसे मश्हूर हैं, जैसे कितनेक लोगोंका बयान है, कि मांडिया नामी एक भीलको बकरियां चराते वक्त पारस (१) मिला था, उसपर उसने अपना तीर घिसा और वह तीर सुवर्णका होगया. यह देखकर वह उस पारसको चांनणा नामी गूजरके पास लेगया, जो अपनी मवेशी चरारहा था, जाकर कहा, कि इस पत्थरपर घिसनेसे मेरा तीर ख़राब होगया. गूजर समझदार था, उसने भीलसे वह पत्थर लेलिया, और यह क़िला बनवाकर उसी भील (मांडिया) के नामपर इसका नाम मांडलगढ़ रक्खा, और बहुत कुछ फ़य्याज़ी (उदारता) करके अपना नाम मश्हूर किया. उसने वहांपर सागर और सागरी नामके दो पानीके निवाण बनवाये, जिनमेंसे सागरकी सीढ़ियोंपर उस (चांनणा गूजर) की देवली मौजूद है. अगर्चि सागर पेश्तरसे ही गहरा था, लेकिन् सुना है, कि महता अगरचन्दने दो कुए उसमें खुदवाकर उसे अटूट करदिया. अब इसका पानी कभी नहीं टूटता. सागरीका पानी अकालमें टूटजाता है. ये दोनों निवाण पहाड़के एकही दरेके बीचमें बंध डालकर बनवाये गये हैं. क़िलेके अग्निकोण और उत्तरमें जालेसर और देवसागर नामक तालाब है, और पूर्वको तलहटीका क़स्बह. क़िलेका पहाड़ पूर्वकी तरफ़ ऊंचा और पश्चिमको नीचा झुकगया है. इस क़िलेमें एक रास्तह और दो खिड़कियां हैं. उत्तर तरफ़ नकटियाका चौड़ (चढ़ाव) (२) बीजासणका पहाड़ है. लड़ाईके वक्त इन पहाड़ोंपर भी मोर्चा बन्दी कीजाती है. इस क़िलेपर मालवी बादशाह महमूद ख़िल्जीने दो तीन वार हमलह किया, और दिल्लीके मुग़ल अक्बर बादशाहने विक्रमी १६२४ [हि० ९७५ = ई० १५६७] में इस क़िलेपर क़बज़ह करलिया था. यह क़िला ज़िले खैराड़की पनाहका मक़ाम समझा जाता है. मांडलगढ़से पूर्व और दक्षिण तथा ईशान कोणके ज़िलोंमें पुराने खण्डहर और कई जगह पुरानी प्रशस्तियां मिली हैं. मैनाल, भैंसरोड़ और बीजोलिया वगैरह ज़िलोंमें कई पुराने खण्डहर मौजूद हैं.

९- ज़िला जहाज़पुर- इस ज़िलेका मुख्यस्थान जहाज़पुर एक पहाड़के दामनमें शहरपनाहके भीतर आबाद है. यह बहुत पुराने समयमें बसाया गया था. राजा जन्मेजयने इस जगहपर सर्पोंको होमनेके लिये यज्ञ किया था, और इसी सबबसे इसका नाम यज्ञपुर रक्खागया, जहाज़पुर इसका अपभ्रंश है. क़स्बहसे अग्निकोणकी तरफ़

(१) पारस एक क़िस्मका ख़यालीं पत्थर है, जिसके छूनेसे लोग लोहेको सुवर्ण होजाना मानते हैं.

(२) यह पहाड़ मांडलगढ़से आध मीलके क़रीब है और इसकी घाटीके चढ़ावपर किसी शत्रु की नाक काटी गई थी, इस कारण यह नकटियाका चौड़ कहागया.

क़रीब १ $\frac{1}{2}$ मीलके अन्तरपर नागेला तालाब है, जिसके बन्धपर नाग होमे गये थे, और उसी तालाबसे एक छोटी नदी निकली है, जिसका नाम नागदही है. जहाज़पुरका क़स्बह इसी नदीके किनारेपर बसा है. हाकिमके रहनेकी जगहमें नौचौकियां नामक एक मकान बड़ा बुलन्द और .उम्दह बना है (१), जिसको वैकुण्ठवासी महाराणा साहिबने जीर्णोद्धार करवाकर बहुत उ़म्दह बनवादिया है. नौचौकियांके पीछे नागदहीके किनारेपर एक बहुत अच्छा बग़ीचा बना है; और इसी नदीके पूर्वी किनारेपर १२ देवरा याने बारह मन्दिर एक स्थानमें बने हैं. इन मन्दिरोंकी निस्बत कहा जाता है, कि ये बहुत पुराने हैं; इनकी बाबत् यह भी बयान है, कि राजा जन्मेजयने यहांपर सोमनाथ महादेवकी मूर्तिकी प्रतिष्ठा अपने हाथसे की थी, जो अबतक मौजूद है. अगर्चि हमको यहां कोई प्रशस्ति नहीं मिली, लेकिन् मन्दिरोंका ढंग देखनेसे वे बहुत पुराने मालूम होते हैं. बस्तीके दक्षिण शहरपनाहसे मिला हुआ पहाड़की चोटीपर एक छोटा क़िला है, जिसमें क़िलेदार रहता है. क़िलेमें पानीके दो हौज़ हैं, जिनमें बारहों महीना पानी रहता है. शहरमें एक अस्पताल और एक स्कूल (पाठशाला) भी है. जहाज़पुरके उत्तर, पूर्व, और दक्षिणकी तरफ़ अधिकतर मीना लोगोंकी आबादी है, जिनका सविस्तर हाल हमने बंगाल एशियाटिक सोसाइटीके जर्नल सन् १८८६ .ई० में लिखा है. जहाज़पुर पर्गनहके दो विभाग हैं, जिनमें पहिला भाग बनास नदीके पश्चिम तरफ़ किसान लोगोंकी आबादीका है, और वहांकी ज़मीन बिल्कुल हमवार अर्थात् बराबर है, पहाड़का कहीं निशानतक नहीं दिखाई देता; और दूसरा विभाग बनास नदीके पूर्व तरफ़ वाला है, जिसमें लोहारी, गाडोली, टीकड़, इटोंदा, शुकरगढ़, और सरसिया वग़ैरह मीनोंकी आबादीके बड़े बड़े गांव हैं. इनमें सर्कारी आदमियोंके रहनेके लिये छोटी छोटी गढ़ियां बनाई गई हैं. यह ज़िला जयपुर और बूंदीकी अमल्दारीसे लेकर कोटा, झालावाड़, सेंधिया, और हुल्करकी अमल्दारीतक खैराड़के नामसे प्रसिद्ध है; परन्तु इसके अंतरगत छोटे छोटे कई ज़िले हैं, याने ऊपरमाल, आंतरी, पठार, कुंडाल और पचेल वग़ैरह. खैराड़के उत्तरी हिस्सहमें ज़ियादहतर मीनोंकी आबादी, और दक्षिणी हिस्सहमें मीनोंके शामिल दूसरी क़ौमोंके लोग भी बहुत बसते हैं. खैराड़की ज़मीनमें यह तासीर है, कि इस प्रान्तमें रहनेवाले ब्राह्मण, बनिये और किसानतक भी बहादुर होते हैं, लेकिन् निर्दयी और ज़ुल्मसे भरे हुए इत्यादि. इस ज़िलेमें कई जगह राजा सोमेश्वरदेव और उसके बेटे पृथ्वीराज चहुवानके समयकी प्रशस्तियां मिली

(१) प्रसिद्ध है, कि यह मकान अ़लाउद्दीन ख़ल्जीने बनवाया था.

है. हमको इस ज़िलेकी तह्क़ीक़ातमें महता लक्ष्मीलालने अच्छी मदद दी, जो तह्क़ीक़ातके समय वहांका हाकिम था.

१० - ज़िला कुम्भलगढ़ - इस ज़िलेमें विशेषकर पहाड़ी भाग है; कितनीएक जगह तो इसमें चौगानका नाम निशानतक भी नहीं मिलता. किसान लोग एक एक या दो दो बिस्वेका खेत पहाड़को काट काट कर बड़ी मुश्किलके साथ निकालते हैं, दो चार बीघेका खेत तो बहुतही कम नज़र आता है; लेकिन् मक्का, गेहूं, जव, चना, शाल, माल और शमलाई वगैरह नाज बहुतायतके साथ निपजते हैं. गन्नेकी खेती यहां बहुत होती है. इस ज़िलेमें गाड़ीका नाम निशान भी नहीं, क्योंकि गाड़ी वहां चलही नहीं सक्ती, केवल बैल और गधोंसे माल अस्बाब पहुंचाने व लानेका काम लियाजाता है, लेकिन् एक रीति यहां ऐसी है, कि हर एक गांवमें भील लोगों (जिनको बेठिया कहते हैं) के दो चारसे लेकर पचास साठतक घर ज़रूर होते हैं, और प्रत्येक गांवमें उनके बेठ (बेगार) के एवज़ थोड़ीसी ज़मीन मुआफ़ीकी भी होती है. गांवके किसान व जागीरदार और ख़ालिसहका हरएक अह्लकार इन बेठियोंके घरोंमें जितने मर्द व औरत हों उनके सिरपर गठाड़ियां देकर यदि सौ कोसतक लेजावे, तोभी वे इन्कार नहीं करते, परन्तु उनको रोटी खिलादीजावे, या रोज़ानह आध सेरके हिसाबसे जव अथवा मक्की भत्तेके तौरपर देदीजावे. गांवमें रहनेकी हालतमें भी उनसे खेतीका, इमारतका, मवेशी चरानेका, अथवा घास कटवानेका काम लियाजाता है. इस बातमें ये लोग अपने मालिक तथा अफ्सरकी कभी शिकायत नहीं करते, बल्कि ऐसी ख़िदमतोंका करना अपना फ़र्ज़ समझते हैं. इस ज़िलेकी रिआया सद्रमें अथवा हाकिम ज़िलेके पास फ़र्याद करनेमें डरती है. ज़मानहके फेरफारसे अब कुछ कुछ सिल्सिला जारी होने लगा है. इनकी बोलचालके शब्दोंमें भी मेवाड़ी ज़बानसे किसी प्रकार अन्तर है, याने इस प्रान्तके लोग बैलको टाला, भैंसको डोबा, बकरीको टेटूं या टेटा, चलनेको हींडना, बुलानेको सादना या हादना वगैरह बोलते हैं. क़िला कुम्भलगढ़, जिसको कुम्भलमेर भी कहते हैं, चित्तौड़गढ़से दूसरे दरजहपर है. इसकी चोटी समुद्रके सतहसे ३५६८ फ़ीट और नीचेकी नालसे ७०० फ़ीट ऊंची है. कैलवाड़ा गांवमें हाकिम ज़िलाका सद्र मक़ाम है, जहां जैनके पुराने मन्दिर और बाणमाताका एक प्रसिद्ध मन्दिर है. यहांसे एक रास्तह पश्चिमकी तरफ़ पहाड़ी नालमें होकर एक पर्वती घाटीके फाटकपर पहुंचता है, जो क़िलेका आरेटपौल नामी पहिला दर्वाज़ह है. यहां राज्यकी तरफ़से बन्दोबस्तके लिये सिपाही व जागीरदार लोग रहते हैं, जहांसे क़रीब एक मीलके फ़ासिलहपर हल्लापौल नामी दर्वाज़ह आता है. फिर थोड़ी दूर आगे चलकर हनुमानपौल दर्वाज़ह है. इस दर्वाज़हपर हनुमानकी एक मूर्त्ति है, जिसको महाराणा कुम्भकर्ण नागौरके मुसल्मानोंको फ़त्ह करके लाये थे. वहांसे आगे

विजयपोल दर्वाज़ह है, जिसके समीप क़िलेकी मज्बूत और ऊंची दीवार नये ढंगके बुर्जों सहित खड़ी है. इस दीवारके भीतर शहरके खण्डहर, टूटे फूटे मन्दिर और मकानात नज़र आते हैं. नीलकण्ठ महादेवका मन्दिर और वेदीका मंडप, ये दोनों पुराने ढंगके हैं. कहते हैं, कि क़िलेकी प्रतिष्ठाके समय इस मण्डपमें विधिपूर्वक होम किया गया था. इसी जगहसे कटारगढ़ नामी छोटेसे क़िलेका चढ़ाव शुरू होता है, जो बड़े क़िलेके अन्दर एक पहाड़की चोटीपर बना है. इसका पहिला दर्वाज़ह भैरवपोल, दूसरा नींबूपोल, तीसरा चौगानपोल, चौथा पागड़ापोल, पांचवां गणेशपोल और उसके आगे महाराणा साहिबके गुम्बज़दार महल हैं. यहां देवीका एक स्थान भी है. उक्त स्थानसे कुछ सीढ़ियां चढ़कर पहाड़की चोटीपर महाराणा उदयसिंहकी महाराणी झालीका महालिया याने महल है, जिसका वृत्तान्त महाराणा उदयसिंहके हालमें लिखाजायेगा. इस भीतरी क़िले कटारगढ़के उत्तर झालीबाव (बावड़ी) और मामा देवका कुण्ड है. इस कुण्डपर एक हौज़नुमा चारदीवारके अन्दर महाराणा कुम्भकर्णकी स्थापन कीहुई कई देवताओंकी मूर्त्तियां हैं, और चारों तरफ़की ताक़ोंमें श्याम वर्णके पाषाणपर खुदी हुई प्रशस्तियां हैं, जिनमेंसे कुछ तो नष्ट होगईं, और कुछ बाक़ी हैं. इनमेंसे एक पाषाण उदयपुरमें विक्टोरिया हॉलके बरामदेमें हमने रक्खा है. क़िलेके पश्चिम तरफ़का रास्तह टीडाबारी है, जिससे कुछ दूरीपर महाराणा रायमल्लके पुत्र कुंवर पृथ्वीराजकी छत्री है, जहां उनका देहान्त हुआ था, और क़िलेके भीतर मामादेवके समीप भी, जहां इनका दग्ध हुआ था, एक छत्री बनी हुई है. क़िलेके उत्तरकी तरफ़ पैदलोंका रास्तह टूंट्याका होड़ा, और पूर्व तरफ़ हाथियागुढ़ाकी नालमें उतरनेका एक रास्तह है, जो दाणीवटा कहलाता है. इस क़िलेमें पहिले शहर आबाद था, जो बिल्कुल वीरान होगया है, और अब केवल खंडहर पड़े हैं. यह क़िला विक्रमी १५०५ से १५१५ [हि० ८५२ से ८६२ = ई० १४४८ से १४५८] तक बना था. इसका सविस्तर हाल महाराणा कुम्भकर्णके वृत्तान्तमें लिखाजायेगा. कैलवाड़ाके उत्तर मारवाड़में जानेका रास्तह हाथियागुढ़ाकी नाल है. उसमें कोठारवड़के समीप एक दर्वाज़ह है, जहां बन्दोबस्तके लिये कुछ चौकीदार और सिपाही रहते हैं. कैलवाड़ासे अनुमान ५ कोसपर चारभुजाके समीप मारवाड़में जानेका एक बड़ा रास्तह देसूरीकी नाल है. इस रास्तहसे गाड़ी भी आ जा सक्ती है. यह पहाड़की श्रेणी अजमेरकी तरफ़ चलीगई है, जिसके पश्चिममें मारवाड़ और पूर्वमें मेवाड़ है. पहिले इस श्रेणीके पश्चिममें पर्गनह गोड़वाड़ ज़मानह क़दीमसे मेवाड़के शामिल था, लेकिन् १०० वर्षसे पहिले मारवाड़में चलागया है. इसी श्रेणीमें मेवाड़का पश्चिमोत्तर विभाग, याने मेरवाड़ा नामी ज़िला गवर्मेएट अंग्रेज़ीको इन्तिज़ामके वास्ते कुछ समयके

लिये सौंपा हुआ है, जिसका सद्रमक़ाम छावनी ब्यावर अर्थात् नयाशहर है. हमने जो ज़िले ऊपर लिखे वे वैकुंठवासी महाराणा साहिबके नियत किये हुए हैं. इस समय सेटलमेण्ट याने मालगुज़ारीका पक्का बन्दोबस्त होनेसे नज़्दीक व दूर होनेके कारण उन्हीं पर्गनोंमेंसे चुन चुन कर चन्द जुदे पर्गने क़ाइम करदिये गये हैं, जैसे कपासन, हुरड़ा, राजनगर, खमणोर, रींछेड़, सायरा वगै़रह, और ल्हसाड़ियाका पाहाड़ी ज़िला मगरेसे जुदा करके गिरवेमें, और कणेराका ज़िला सादड़ीसे अलग करके चित्तौड़में मिलादिया गया है. इसी तरहसे कई गांव एक पर्गनेसे दूसरे पर्गनेमें मिलाकर दुरुस्ती करदीगई है. इनके सिवा कुम्भलगढ़, भीतरी गिरवा, ल्हसाड़िया और मगरा ज़िलोंमें मालगुज़ारीका पक्का बन्दोबस्त अभीतक नहीं हुआ है.

(क़ौमी हालात).

अब हम मेवाड़में बसनेवाली क़ौमोंका मुख़्तसर हाल लिखते हैं. पहिले मैं अपनी क़ौमका हाल लिखूंगा, क्योंकि ग्रन्थके प्रारम्भमें ग्रन्थकर्ताके इतिहासकी ज़ुरूरत होती है.

मैं (कविराजा श्यामलदास) चारण जातिमें पैदा हुआ हूं, पाठक लोग जानेंगे, कि चारण कौन, कैसे और कहां हैं, तो जानना चाहिये, कि यह जाति सृष्टि सर्जन काल से पाई जाती है, क्योंकि हमारे भारतवर्षका पहिला मुख्य शास्त्र वेद मानागया है, उसमें भी चारण जातिका नाम मिलता है, और चारणोंकी देवताओंमें गणना है, जिसके बहुतसे प्रमाण ग्रन्थान्तरोंके मिलते हैं, जिनमेंसे कुछ प्रमाण यहांपर लिखेजाते हैं:—

प्रथम तो श्री मद्भागवतमें विदुरने मैत्रेय ऋषिसे पूछा है, कि लोक पितामह ब्रह्माने कितने प्रकारकी सृष्टि रची, इसपर मैत्रेयने जो उत्तर दिया वह नीचे लिखा जाता है:—

श्लोक.

देवसर्गश्चाष्टविधो विबुधाः पितरोऽसुराः।
गन्धर्वाप्सरसः सिद्धा यक्षरक्षांसि चारणाः॥
भूतप्रेतपिशाचाश्च विद्याध्राः किन्नरादयः। (१)

(अर्थ).

देवताओंकी उत्पत्ति आठ तरहकी इस प्रकार है, कि प्रथम देवता; दूसरे पितृ; तीसरे दैत्य; चौथे गन्धर्व और अप्सर; पांचवें यक्ष और राक्षस; छठे भूत, प्रेत,

(१) देखो तृतीय स्कन्द, १० वां अध्याय, २७-२८ वां श्लोक.

और पिशाच; सातवें सिद्ध, चारण तथा विद्याधर; और आठवें किन्नरादि. यह देवसर्ग का उपरोक्त क्रम श्रीधरी टीकाके अनुसार है.

ऊपर लिखे हुए प्रमाणसे चारणोंकी उत्पत्ति देवसर्गमें हुई, तो इनका व्यवहार भी आज दिनतक देवता व ऋषियोंके बराबर उत्तम बना रहा. इस विषयमें पहिले आदि काव्य वाल्मीकि रामायणके कुछ प्रमाण दियेजाते हैं:-

जब रामचन्द्रका अवतार हुआ, तब ब्रह्माने देवता, ऋषि, सिद्ध और चारण आदिकोंको आज्ञा दी, कि हमारे कल्याणके लिये विष्णुने राजा दशरथके यहां अवतार लिया है, इसवास्ते तुम सब उनकी सहायताके वास्ते वानरोंकी योनिमें उत्पन्न हो. इस आज्ञासे देवता, ऋषि आदिके साथ चारणोंने भी वानर योनिमें अपने अंशसे पुत्र पैदा किये, जिसका प्रमाण यह है:-

श्लोक.

ऋषयश्च महात्मानः सिद्धविद्याधरोरगाः ।
चारणाश्च सुतान् वीरान् ससृजुर्वनचारिणः ॥ (१)

(अर्थ).

ऋषि, महात्मा, सिद्ध, विद्याधर, उरग और चारणोंने वानरोंकी योनिमें अपने अपने अंशसे वीर पुत्रोंको पैदा किया.

गौतम ऋषिकी स्त्री अहल्यासे जब इन्द्रने मुनिका वेष करके दुराचार किया, और गौतमने इस बातको जाना, तब इन्द्रको अफल अर्थात् पुरुषार्थ रहित होनेका और अहल्याको पाषाण होनेका शाप दिया, और आपने उस आश्रमको छोड़कर, जहांपर सिद्ध चारण रहते थे, उस हिमालयके सुन्दर शिखरपर तप किया, जिसका प्रमाण इस प्रकार है:-

श्लोक.

एवमुक्त्वा महातेजागौतमोदुष्टचारिणीम् ।
इममाश्रममुत्सृज्य सिद्धचारणसेविते ॥
हिमवच्छिखरे रम्ये तपस्तेपे महातपाः । (२)

(अर्थ).

तेजस्वी गौतम अपनी दुष्ट आचरण वाली स्त्रीको शाप देकर इस आश्रमको छोड़ सिद्ध और चारणोंसे सेवा किये गये हिमालयके सुन्दर शिखरपर तप करने लगे.

---

(१) देखो बालकाण्ड सर्ग, १७, श्लोक ९.
(२) देखो बालकाण्ड सर्ग, ४८, श्लोक ३३.

रामचंद्रने धनुष तोड़ा उस विषयके प्रकरणमें एक यह प्राचीन कथा लिखी है, कि जब शिव और विष्णुके मध्यमें युद्ध हुआ, तो वहांपर विष्णुने हुंकार मात्रसे शिवको स्तंभित करदिया था, उस समय देवता, ऋषिसमूह, और चारणोंने उनको समझाया, इस विषयका प्रमाण नीचे लिखाजाता है:-

श्लोक.

हुंकारेण महादेवस्तम्भितोथ त्रिलोचन : ।
देवैस्तदा समागम्य सर्षिसंघैः सचारणैः ॥ (१)

(अर्थ).

हुंकारसे तीन नेत्रवाले महादेवको जड़ करदिया, उस समय ऋषि और चारणोंके साथ देवताओंने आकर शान्ति की.

जब रावण सीताको हरकर पीछा लङ्काको गया, तब सीताके हरेजानेपर समुद्र स्तम्भित होगया, और चारण तथा सिद्ध कहने लगे, कि अब रावणका बिनाश आया, जिसका प्रमाण नीचे लिखाजाता है:-

श्लोक.

वैदेह्यां ह्रियमाणायां बभूव वरुणालय : ।
अन्तरिक्षगतावाचः ससृजुश्चारणास्तथा ॥
एतदन्तो दशग्रीव इति सिद्धास्तदाब्रुवन् । (२)

(अर्थ).

सीताके हरेजानेपर समुद्र स्तम्भित होगया, तब अन्तरिक्षमें प्राप्त चारणोंने यह वाक्य कहे, कि रावणका मृत्यु आपहुंचा, और इसी तरह सिद्धोंने भी कहा.

लङ्काको जला देनेके पीछे हनुमानके चित्तमें इस बातका बड़ा पश्चाताप हुआ, कि इस अग्निसे यदि सीताका दाह होगया होगा, तो उसके शोकसे राम लक्ष्मण आदि सब प्राण त्यागदेंगे, और उनके शोकसे सुग्रीव और अङ्गदादिक भी मरजायेंगे, तो इस दोषका मुख्य कर्त्ता मैं हुआ; इसलिये इनसे पहिले मुझेही अपना शरीर त्यागदेना योग्य है. इस प्रकार विचार करते हुए हनुमानने चारण ऋषियोंके मुखसे सुना, कि लङ्का जलगई, परन्तु सीताका दाह नहीं हुआ. इसका प्रमाण नीचे लिखाजाता है:-

श्लोक.

सतथा चिन्तयंस्तत्र देव्याधर्मपरिग्रहम् ।

---

(१) देखो बालकाण्ड, सर्ग ७५, श्लोक १८.
(२) देखो अरण्यकाण्ड, सर्ग ५४, श्लोक १०-११.

शुश्राव हनुमांस्तत्र चारणानां महात्मनाम् ॥ (१)

(अर्थ).

सीताके विषयमें चिन्ता करते हुए हनुमानने चारण महात्माओंके वचनोंको श्रवण किया.

फिर जब हनुमान लङ्काको जाकर पीछा आया, तब अङ्गदादिक वानरोंने पूछा, कि तुम किस प्रकार लङ्कामें गये ? उस समय हनुमानने अपना सब वृत्तान्त कहा, उसमें यह भी कथा कही, कि मैंने लङ्काको जलानेके पीछे समुद्रके किनारेपर आकर सोचा, कि सब लङ्का जलाई गई, तो सीता भी उसमें अवश्य जलगई होगी, अतः मुझको भी मरजाना योग्य है; उस समय चारणोंसे सुना, कि जानकी नहीं जली, उसके प्रमाणमें यह श्लोक हैः-

श्लोक.

इति शोकसमाविष्ट श्चिन्तामहमुपागतः।
ततोहं वाचमश्रौषं चारणानां शुभाक्षराम्॥
जानकी न च दग्धेति विस्मयोदन्तभाषिणाम्।
ततो मे बुद्धिरुत्पन्ना श्रुत्वा तामद्भुतां गिरम्॥ (२)

(अर्थ).

जब मैं इस प्रकारके शोकमें डूबा, तो आश्चर्यके वृत्तान्त कहने वाले चारणोंसे ये सुन्दर वचन सुने, कि सीता नहीं जली. फिर इस अद्भुत वाणीको सुनकर मुझमें भी बुद्धि पैदा होगई.

जब रावण वरदानसे मानी होकर चन्द्रलोकको विजय करनेके लिये गया, तब मार्गमें चारणोंका लोक भी आया, जिसका प्रमाण नीचे लिखाजाता हैः-

श्लोक.

अथ गत्वा तृतीयन्तु वायोः पंथानमुत्तमम्।
नित्यं यत्र स्थिताः सिद्धाश्चारणाश्च मनस्विनः॥ (३)

(अर्थ).

इसके पश्चात् तीसरे उत्तम वायुके मार्गको गया, जहां सिद्ध और मनस्वी याने शुद्ध मनवाले चारण सदैव निवास करते हैं.

---

(१) देखो सुन्दरकाण्ड, सर्ग ५५, श्लोक २९.
(२) देखो सुन्दरकाण्ड, सर्ग ५८, श्लोक ६१-६२.
(३) देखो उत्तरकाण्ड, सर्ग ४, श्लोक ४.

ऊपर लिखे हुए प्रमाणोंके अतिरिक्त और भी बहुतसे प्रमाण हैं, जो विस्तारके भयसे नहीं लिखेजाते.

अब हम यहांपर महाभारतके प्रमाण भी संक्षेप रूपसे लिखते हैं.

वसिष्ठ ऋषिने जहां राजा जनकको सृष्टिका क्रम बताया है, वहां २४ तत्व सब आकृतियोंमें कहे हैं, उनमेंसे दो श्लोक यहांपर प्रमाणके लिये लिखेजाते हैं, जिनसे यह प्रयोजन है, कि चारण सृष्टिके आदिसेही हैं न कि पीछेसे.

श्लोक.

एतद्देहं समाख्यानन्त्रैलोक्ये सर्वदेहिषु।
वेदितव्यं नरश्रेष्ठ सदेवनरदानवे ॥
सयक्षभूतगन्धर्वे सकिन्नरमहोरगे ।
सचारणपिशाचे वै सदेवर्षिनिशाचरे ॥ (१)

(अर्थ).

हे उत्तम नर, उक्त देह समाख्यानको, देवता, मनुष्य, दानव, यक्ष, भूत, गन्धर्व, किन्नर, महोरग, चारण, पिशाच तथा देवर्षि और राक्षसोंके साथ त्रैलोक्यके सब प्राणियोंमें जानना चाहिये.

जिस समय राजा पांडु तपश्चर्या करनेके लिये इन्द्रद्युम्न सर और हंसकूटको छोड़कर शतशृङ्ग नामक पर्वतपर गया, और वहांपर चारणोंका प्रीतिपात्र बना, उसका प्रमाण नीचे लिखाजाता हैः-

श्लोक.

तत्रापि तपसि श्रेष्ठे वर्तमानः सवीर्यवान् ।
सिद्धचारणसंघानां बभूव प्रियदर्शनः ॥ (२)

(अर्थ).

उत्तम तपमें प्रवृत्त होता हुआ वह पराक्रमी राजा पांडु शतशृङ्ग पर्वतपर भी सिद्ध और चारण लोगोंके समूहका प्रीतिपात्र (प्यारा) बना.

वहां तपश्चर्या करनेपर जब पाण्डुका देहान्त हुआ, तब येही चारण ऋषि पाण्डुके पांचों पुत्रों और उनकी माता कुन्तीको साथ लेकर हस्तिनापुरमें आये, उस समय द्वारपालोंने उनका आना राजासे निवेदन किया, जिसका प्रमाण इस प्रकार हैः-

---

(१) देखो शान्तिपर्व मोक्षधर्म पर्वका अध्याय ३०३, श्लोक २९-३०.

(२) देखो आदि पर्वका अध्याय १२०, श्लोक १.

श्लोक.

तञ्चारणसहस्राणां मुनीनामागमं तदा ।
श्रुत्वा नागपुरे नृणां विस्मयः समपद्यत ॥ (१)

(अर्थ).

इस प्रकार उन हज़ार चारण मुनियोंका आना सुनकर हस्तिनापुरके मनुष्योंको आश्चर्य हुआ.

जहांपर अगस्त्य ऋषिने राजा युधिष्ठिरके सामने कुरुक्षेत्र और सरस्वती नदीकी प्रशंसा की है, उस प्रकरणके एक श्लोकमें इस प्रकार कहा है:-

श्लोक.

तत्र मासं वसेद्धीरः सरस्वत्यां युधिष्ठिर ।
यत्र ब्रह्मादयो देवा ऋषयः सिद्धचारणाः ॥ (२)

(अर्थ).

हे युधिष्ठिर, जहां ब्रह्मादिक देवता, ऋषि, सिद्ध, और चारण रहते हैं उस सरस्वतीके समीप धीर पुरुष मास पर्यन्त निवास करे.

जब राजा ययाति स्वर्गमें गया, तो वहांपर उसका बड़ा सत्कार कियागया, उस विषयके दो श्लोक नीचे लिखेजाते हैं:-

श्लोक.

उपगीतोपनृत्तश्च गंधर्वाप्सरसां गणैः ।
प्रीत्या प्रतिगृहीतश्च स्वर्गे दुन्दुभिनिःस्वनैः ॥

(अर्थ).

गन्धर्व लोग गाते हुए, अप्सराएं नाचकर प्रसन्न करती हुईं, और दुन्दुभि (नौबत नफ़ीरी) बजते हुए, इस तरह प्रीति पूर्वक आदरके साथ वह ययाति राजा स्वर्गमें लियागया.

श्लोक.

अभिष्टुतश्च विविधैर्देवराजर्षिचारणैः ।
अर्चितश्चोत्तमार्घेण दैवतैरभिनंदितः ॥ (३)

---

(१) आदिपर्व, अध्याय १२६, श्लोक १११.
(२) देखो वनपर्व, अध्याय ८२, अंक ५ का श्लोक.
(३) देखो उद्योगपर्व, अध्याय १२३, श्लोक अंक ४ से ५ तक.

(अर्थ).

देवता, राजर्षि और चारणोंने ययाति राजाकी अनेक प्रकारसे स्तुति की, और उत्तम अर्घसे पूजा, और वह देवताओंसे प्रसन्न कियागया. इस प्रमाणके अनुसार स्तुति करना चारणोंका मुख्य धर्म है, और चारण शब्दकी व्युत्पत्ति भी " चारयन्ति कीर्तिमितिचारणाः" इस प्रकार है.

दोनों तरफ़की सेनाओं और अर्जुनको युद्धके लिये तय्यार देखकर श्रीकृष्णने अर्जुनसे कहा कि " हे अर्जुन, तू देवीकी स्तुति कर, वह तेरे को विजय प्राप्त करावेगी ". तब अर्जुनने स्तुति की है, वहांका एक श्लोक इस प्रकार है :-

श्लोक.

तुष्टिः पुष्टिर्धृतिर्दीप्तिश्चंद्रादित्यविवर्द्धिनी ।
भूतिर्भूतिमतां संख्ये वीक्ष्यसे सिद्धचारणैः ॥ (१)

(अर्थ).

हे देवी, तू तुष्टि, पुष्टि, धृति, दीप्ति, चन्द्र और सूर्यकी वृद्धि करने वाली, और ऐश्वर्य वालोंकी ऐश्वर्य ऐसी, संग्राममें सिद्ध और चारणोंको दिखाई देती है.

जयद्रथके मारनेके लिये द्रोणाचार्यने जो व्यूह रचा उसकी प्रशंसा देवता और चारणोंने की, जिसका वृत्तान्त संजयने धृतराष्ट्रके आगे कहा है, उसमेंसे एक श्लोक यहांपर लिखाजाता है:-

श्लोक.

तत्र देवास्त्वभाषन्त चारणाश्च समागताः ।
एतदन्ताः समूहा वै भविष्यन्ति महीतले ॥ (२)

(अर्थ).

उस समयपर आये हुए देवता और चारणोंने कहा, कि पृथ्वीपर अन्तिम समूह यही होगा, अर्थात् फिर ऐसी व्यूह रचना कभी न होगी.

---

(१) देखो भीष्मपर्व, अध्याय २०, श्लोक अंक १६.
(२) देखो द्रोणपर्व, अध्याय १२४, श्लोक अंक १०.

जब श्री मद्भागवत, रामायण और महाभारतके प्रमाणोंसे यह निश्चय हुआ, कि चारणोंका कर्म तथा व्यवहार आदिसे उत्तम रहा, और राजा पांडुके मृत देहका दाह करना तथा पाण्डवोंका हस्तिनापुरमें लाना और हिमालयमें रहना इत्यादि बातोंसे पृथ्वीपर निवास होना भी प्रमाणित हुआ; और जहां देवताओंका वर्णन है वहां चारणोंका भी वर्णन है, कारण यह कि प्राचीन कालमें स्वर्ग, भूमि और पातालोंका एक सम्बन्ध था, क्योंकि भारतवर्षके दशरथादिक अनेक राजा इन्द्रकी सहायताको गये थे, और इन्द्रादिक देवताओंने भी पृथ्वीपर आकर कई एक भूमिपालोंकी सहायता की थी. मेरे विचारसे ऐसा मालूम होता है, कि प्राचीन कालमें हिमालय पर्वतके मध्यस्थ देश तिब्बतको (१) स्वर्ग, और आर्यावर्तको भूमिलोक, और समुद्रतटस्थ दक्षिणी देशोंको पाताल कहते थे. इसके प्रमाणमें महाभारतके दो श्लोक नीचे लिखते हैं, जहांपर कि भारद्वाजने भृगुसे पूछा है:-

श्लोक.

अस्माल्लोकात् परोलोकः श्रूयते नच दृश्यते ।
तमहं ज्ञातु मिछामि तद्भवान् वक्तुमर्हति ॥ (२)

(अर्थ).

हे महाराज, इस लोकसे परलोक सुनाजाता है, परन्तु देखा नहीं जाता; उस परलोकका वृत्तान्त मैं आपसे जानना चाहता हूं, जो आप कहनेके योग्य हैं. तब भृगु महाराजने इस प्रकार उत्तर दियाः-

श्लोक.

उत्तरे हिमवत्पार्श्वे पुण्ये सर्व गुणान्विते ।
पुण्यः क्ष्येम्यश्च काम्यश्च सपरोलोक उच्यते ॥

(अर्थ).

उत्तर दिशामें हिमालयकी पवित्र सब गुणोंवाली भूमिके पास अति पवित्र विघ्नों रहित जो सुन्दर लोक है वही परलोक कहाता है.

मेरे इस लिखनेका हेतु यह है, कि चारण लोग भी स्वर्गसे भूमि लोकमें आते जाते थे; उनमेंसे बहुतसोंका भूमिलोकमें रहकर स्वर्गीय सम्बन्ध छूटगया, तब वे क्षत्रियोंको देवता मानकर जैसे इंद्रादिकोंकी स्तुति करते, वैसे ही क्षत्रियोंकी स्तुति करने लगे और क्षत्रिय भी इनको पूज्य तथा स्वर्गीय देवता मानने लगे; इससे चारणोंका सम्बन्ध

---

(१) अभी होर्नेली साहिबको तिब्बतसे ५ वें शतकका भोजपत्रपर लिखाहुआ एक संस्कृत ग्रन्थ मिला है, जिसमें तिब्बतको त्रिविष्टप लिखा है, जो स्वर्गका नाम है.

(२) देखो शान्ति पर्व मोक्षधर्म पर्व, अध्याय १९२, श्लोक ७-८

क्षत्रियोंके साथ दृढ़ हुआ, यहां तक कि राजा लोग न्याय अथवा राजनैतिक विचारोंमें भी चारणोंको शामिल रखने लगे और अद्यावधि राजपूतानहकी रियासतोंमें चारण लोग बड़े बड़े राजकीय कार्योंको कररहे हैं.

जब क्षत्रियोंपर बौद्धोंका दबाव पड़ा और हरएक क़ौमके लोग राजा बनकर वैदिक क्षत्रियोंको बौद्ध बनाने लगे; तब ये लोग क्षत्रियोंके साथ भागकर राजपूतानह और गुजरात वगैरह पश्चिमी देशोंमें आरहे; इसीसे भारतवर्षके अन्य भागोंमें चारणोंका वंश नहीं रहा. उस समय चारण लोग सौदागरी पेशह इख्तियार करके अपने यजमान क्षत्रियोंको आपत् कालमें अन्नादिक वस्तुओंसे सहायता देते रहे, परन्तु उस दशामें चारणों की सब विद्या नष्ट होगई, और उक्त बौद्ध लोगोंने चारणोंके बनाये हुए प्रत्येक प्राचीन ग्रन्थ भी नष्ट करादिये, तोभी क्षत्रियोंसे एकता बनी रही, और पोएट हिस्टोरियन याने इतिहास वेत्ता और कवि कहलाये. ये लोग प्राकृत भाषा आदिमें अपनी काव्य रचना श्लोकोंके स्थानपर दोहा आदि छन्दोंमें करने लगे, इसीसे इनका दोहे छन्द आदिका पढ़ना मुख्य कार्य प्रसिद्ध हुआ, और राजा लोग भी इनका पूर्ण सत्कार करते आये और करते हैं, जिसके विषयमें हम पिछले समयमें गुज़रे हुए राजाओंका भी कुछ वृत्तान्त लिखते हैं, जिन्होंने अपने पूज्य चारणोंको बड़ी बड़ी .इज़्ज़तें, बड़े बड़े पद और करोड़ों रुपयों का द्रव्य और लक्षों रुपयोंकी जागीरें प्रदान कीं, जिनसे पाठकोंको विदित होगा, कि राजा लोग चारणोंको नाम मात्रही से पूज्य नहीं मानते, किन्तु अधिकसे अधिक सत्कार भी करते आये हैं.

इस विषयमें प्रथम हम अजमेरके राजा बछराज गौड़का उदाहरण देते हैं, जिसने एक चारणको अरब पसाव (१) दिया तब उसने राजाकी तारीफ़में उस समय मरु भाषामें यह दोहा कहाः–

दोहा.

देतांअरबपशाव दत बीर गौड़ बछराज ॥
गढ़ अजमेर सुमेरसूं ऊंचो दीशे आज ॥ १ ॥

इस दोहेका अर्थ यह है, कि हे बछराज गौड़, ऐसे अरब पसावके दिये जानेसे यह अजमेरका क़िला सुमेरुसे भी ऊंचा दीखता है.

यदुवंशी राजा ऊनड़, जो सातों ही सिन्धु देशोंका स्वामी था, और जिसका ख़िताब

(१) पसाव शब्द प्रसव शब्दका अपभ्रंश है और इसका अर्थ उत्पत्ति है, इससे लाख पसाव शब्दका अर्थ लाख रुपयोंकी उत्पत्ति जिस दानमें हो वह लाख पसाव कहाजाता है, इसी तरह करोड़ पसाव, अरब पसाव आदिका अर्थ जानना चाहिये.

जाम था उसने अपनी कीर्तिके लिये शांवल जातके शूद नामक चारणको अपना सातोंही सिन्ध देशोंका राज्य दानमें देदिया, और आप दान दियेहुए उस देशको छोड़कर गुजरातमें चलागया, और वहीं अपना राज्य जमाया, जिस ऊँनड़के वंशमें इस समय जामनगर और भुजके राजा हैं. इस बड़े भारी दानकी साक्षीमें उस चारणने यह दोहा कहाः-

दोहा.

माई एहा पूत जण जेहा ऊँनड़ जाम ॥
समपी सातों सिन्धड़ी ज्यों दीजे हिक गाम ॥ १ ॥

इस दोहेका अर्थ यह है, कि हे माता इस प्रकारके पुत्रोंको पैदाकर जैसाकि जाम पदवीको धारण करनेवाला राजा ऊँनड़ है, जिसने सातों ही सिन्ध देशोंको एक गांवकी तरह दानमें देदिये.

चित्तौड़के महाराणा सांगा, जो दस कोटी मेवाड़के राजा कहलाते थे, उन्होंने अपना चित्तौड़का राज्य महियारिया गोत्रके हरिदास नामक एक चारणको दानमें देदिया, जिसके प्रमाणमें मरु भाषामें गीत जातिके छन्दके दो फ़िक़्रे इस प्रकार हैं:-

गीत.

कवराणा कीधा केलपुरा, हिंदवाणा रव बिया हमीर ।

इसका अर्थ यह है, कि हे (दूसरे हमीर जैसे) हिन्दुओंके सूरज केलपुरा (सीसोदिया महाराणा सांगा), तूने कवि लोगोंको राणा बनादिया.

इसके सिवा जयपुरके महाराजा मानसिंहने छः चारणोंको छ: करोड़का दान दिया. बीकानेरके महाराजा कर्मसी तथा उन्हींके वंशज बीकानेरके महाराजा रायसिंहने रोहड़िया गोत्रके बारहट चारण शंकरको सवा करोड़ पसाव दिया, और सिरोहीके महाराव सुरताणने आहाड़ा गोत्रके चारण दुरशाको सवा करोड़का दान दिया, और लाख लाख के दान तो अनेक राजाओंने असंख्य दिये, और अब भी देते हैं, जिनका लिखना केवल बढ़ावेके सिवा और कुछ नहीं है. क्षत्रिय राजा लोग योग्य चारणोंके साथ अपने भाई बेटे, सर्दार, उमरावोंका जैसा बर्ताव करते हैं, और किसी किसी समयमें तो कितनेएक राजा लोगोंने इससे भी बढ़कर .इज़्ज़त की और अब भी करते हैं, जिसके लिये कुछ नज़्रें और भी देते हैं. जब कि जोधपुरके महाराजा अभयसिंहने कविया जातिके चारण करणीदानको लाख पसावका दान देकर अपनी पुरानी राजधानी मंडोवरसे हाथीपर सवार कराया और आप घोड़ेपर सवार हो उसके आगे आगे चलकर उसको जोधपुर शहरतक पहुंचाया, जो मंडोवरसे २ $\frac{1}{2}$ कोसके फ़ासिलेपर है, उस समय उक्त महाराजाकी प्रशंसामें करणीदान ने मरु भाषामें यह दोहा कहा थाः-

दोहा.

अश चढियो राजा अभो कव चाढे गजराज ॥
पोहर हेक जलेबमें मोहर हले महाराज ॥ १ ॥

इसका अर्थ यह है, कि महाराजा अभयसिंह कवि करणीदानको हाथीपर चढ़ाकर आप घोड़ेपर सवार हुए, और एक पहरतक उसके आगे जलेबमें चले.

जबकि जोधपुरसे मूंधियाड़ ठिकानेका बारहट चारण करणीदान, जो महाराजाका पौल़पात (१) था, किसी राज्य कार्यके लिये उदयपुरमें आया, तब महाराणा जगत्सिंहने उसकी पेश्वाई महलोंसे जगन्नाथरायके मन्दिर तक की, जो महलोंसे ३०० सौ क़दमके अन्तपर है, इस प्रकारका आदर करनेमें उक्त बारहटने महाराणाकी प्रशंसामें यह दोहा कहाः-

दोहा.

करनारो जगपत कियो कीरत काज कुरब्ब ॥
मन जिण धोखो ले मुआ शाह दिलेस शरब्ब ॥ १ ॥

इसका अर्थ यह है, कि महाराणा जगत्सिंहने करणीदानकी जितनी इज़्ज़त की, उतनी ही इज़्ज़तके लिये दिल्लीके सब बादशाह चित्तमें धोखा लेकर मरे, अर्थात् जिन महाराणाओंने दिल्लीके बादशाहोंकी पेश्वाई नहीं की उन्होंने करणीदानकी की. इसी तरह बहुतसा आदर राजा लोगोंने चारणोंका किया, और करते हैं. इसके सिवा जोधपुरके राज्यमें अभीतक यह दस्तूर चलाआता है, कि जब नवीन राजा गद्दी नशीन होता है, तब किसी योग्य चारणको लाख पसाव देकर महलोंके दर्वाज़ेतक साथ जाकर उसे पहुंचाता है, इत्यादिक बहुतसी बातें हैं.

इसके सिवा स्वयं महाराजा लोग भी चारणोंके गुणानुवाद (तारीफ़) करते हैं, और चारणोंकी तारीफ़में क्षत्रिय महाराजाओंकी बनाई हुई बहुतसी कविता भी प्रसिद्ध है, जिसमेंसे भी कुछ उदाहरणके लिये यहांपर दे देते हैं, जो बड़े बड़े महाराजाओंने अपने योग्य चारणोंकी प्रशंसामें की है. जोधपुरके पूर्व महाराजा जशवन्तसिंहने रूपावास नामक ग्रामके बारहट चारण राजसिंहके मरनेपर यह दोहा कहाः-

दोहा.

हथ जोड़ा रहिया हमें गढ़वी काज गरत्थ ॥
ऊ राजड़ छत्रधारियां गो जोड़ावण हत्थ ॥ १॥

(१) पौल़पात शब्दका अर्थ यह है, कि पौल़ अर्थात द्वारके नेग (दानादिक दस्तूरों) के लेने वालोंमें पात्र याने योग्य. पात्र शब्दका अपभ्रंश पात शब्द है.

इसका अर्थ यह है, कि अब जो चारण लोग रहे हैं, वे रुपयोंके लिये हाथ जोड़ने वाले हैं, परन्तु छत्रधारी लोगोंसे हाथ जोड़ाने वाला वह राजसिंह चलागया.

जब कविराजा बांकीदान परलोकगामी हुआ, जो जोधपुरके महाराजा मानसिंहका बड़ा ही प्रतीतपात्र था, तो उसकी प्रशंसामें महाराजाने यह सोरठा दोहा फ़र्मायाः–

सोरठा.

विद्या कुल विख्यात राज काज हर रहशरी ॥
बांका तो विण बात किण आगल मनरी कहां ॥१॥

इसका अर्थ यह है, कि विद्यामें, और कुलमें विख्यात, हे बांकीदान तेरे विना राज्य कार्यकी हरएक गुप्त बात किसके आगे कहें. इन्हीं महाराजाने चारण जातिकी प्रशंसामें गीत जातिका एक छन्द इस प्रकार बनाया थाः–

गीत.

करण मुकर महलोक कृतारथ परमारथ ही दियण पतीज।
चारण कहण जथारथ चौड़े चारण बड़ा अमोलख चीज ॥

(अर्थ).

पृथ्वी लोकको कृतार्थ करने, परमार्थकी प्रतीत दिलाने और यथार्थ बातको स्पष्ट कहनेके लिये चारण लोग एक अमौल्य वस्तु हैं.

रतलामके महाराजा बलवन्तसिंहने भी इन्हीं चारणोंकी तारीफ़में यह सोरठा फ़र्मायाः–

सोरठा.

जोगो किणिअन जोग शह जोगो कीधो सुकव ॥
लूंठा चारण लोग तारण कुल क्षत्रियां तणो ॥ १ ॥

(अर्थ).

इसका अर्थ यह है, कि जोगा नामक क्षत्रिय कुछ भी योग्य नहीं था, तोभी सुकवियोंने उसे योग्य बनादिया, इससे क्षत्रियोंके कुलको तारनेके लिये चारण लोग प्रबल हैं. यह जोगा एक साधारण क्षत्रिय था, जिसका नाम राजपूतानहमें प्रसिद्ध है.

इसी तरह चारणोंकी तारीफ़में राजाओं और क्षत्रियोंके बनाये हुए अनेक दोहे छन्द आदि हैं, और राजा लोग अपनेसे सनातन सम्बन्ध रखने वाली चारण जातिके गुणोंको अच्छी प्रकार जानते हैं, और चारणोंको शासन (१) गांवकी सनद भी ब्राह्मणोंकी तरह बेलगान ताम्रपत्रपर खुदवाकर दीजाती है.

---

(१) राजपूतानहमें चारणों और ब्राह्मणोंके गांव शाशणीक कहलाते हैं.

आधुनिक विद्वान भी उक्त जातिका सन्मान और सत्कार राजपूतोंमें ब्राह्मणोंकी बराबर ही स्वीकार करते हैं.

इसके अतिरिक्त अंग्रेज़ विद्वानोंने भी इस जातिका प्राचीन और पवित्र होना निश्चय किया है. इसका हाल जिन पाठक लोगोंको देखना हो, वे नीचे लिखी हुई किताबोंमें देखलेवेंः–

विल्सन साहिबकी बनाई हुई इण्डियन कास्ट नामक किताबकी दूसरी जिल्दके एष्ठ १८१ से १८५ तक.

शेरिंग साहिबके बनाये हुए पुस्तक ट्राइब्ज़ ऐण्ड कास्टस् ऑफ़ इण्डियाकी तीसरी जिल्द, एष्ठ ५३–५४.

टॉड राजस्थान जिल्द दूसरीके एष्ठ ६३१ और ६३२.

इन चारणोंके दो भेद होगये हैं, जो इस समय भी बने हुए हैं, याने एक काछेला, जो कच्छमें जानेसे कहलाये, और दूसरे मारू जो मारवाड़से फैले हैं. काछेला चारणोंका पूर्व व्यवहार छूट गया है, लेकिन् मारू चारणोंका पूर्व कर्म वैसाका वैसाही बनाहुआ है. मारू चारणोंके १५० के क़रीब गोत्र थे, परन्तु उनमेंसे बहुतसे नष्ट होगये, किन्तु इस समय १२० गोत्र विद्यमान हैं.

इन्हीं १२० गोत्रोंमें देवल ऋषिकी संतान देवल गोत्रके चारण कहलाये, जिनको शांखला क्षत्रियोंने अपना पौल्पात बनाया. रूणके राजा सोढदेव शांखलाकी बेटीसे जब अलाउद्दीन ख़ल्जीने जब्रन शादी की, और बहुतसे क्षत्रियोंका नाश किया, उस समय देवल गोत्रके चारण मेहाजलने बादशाहको प्रसन्न करके शेष क्षत्रियोंको बचाया, और अलाउद्दीन ख़ल्जीको मए फ़ौजके बहुत उम्दह दावत दी. इसपर बादशाहने खुश होकर कहा, कि यह चारण कूर्वा (सामानका) समुद्र है, तबसे मोतीसर, रावल, और वीरम ढोली (जो चारणोंको मांगनेवाले हैं) देवल (दधिवाड़िया) गोत्रके चारणोंको कूर्वा समुद्र कहकर सलाम करते हैं. मारवाड़में रूणके राजाओंने अपने पौल्पातको दधिवाड़ा ग्राम शासन (उदक) दिया, जिससे ये लोग दधिवाड़िया कहलाये.

जब राठौड़ राव रणमल्ल और जोधाने रूणका राज शांखलोंसे छीन लिया, उस समय रहे सहे शांखला क्षत्रिय चित्तौड़में आरहे, क्योंकि महाराणा कुम्भकर्ण इन शांखलोंके भानजे थे; और इनके पौल्पात चारण भी मारवाड़ छोड़कर मेवाड़में चलेआये. फिर यहां महाराणाकी तरफ़से दधिवाड़िया जैतसिंहको नाहरमगराके क़रीब धारता और गोठीपा दो गांव मिले. जैतसिंहके ४ पुत्र हुए, उनमें बड़ा महपा, दूसरा मांडण, तीसरा देवा, और चौथा बरसिंह था. विक्रमी १५७५ [हि० ९२४ = .ई० १५१८]

में महमूद ख़ल्जीको जब महाराणा अव्वल संग्रामसिंहने गिरिफ्तार किया, और उस फ़त्ह की खुशीका दर्बार क़िले चित्तौड़के रत्नेसर तालाबपर हुआ, उस वक्त मेहपाको ढोकलिया और उसके भाई मांडणको शावर गांव शासन दिया गया, तब मेहपा और मांडण ने अपना विभाग छोड़कर छोटे भाई देवाको धारता और बरसिंहको गोठीपा देदिया. मांडणकी औलाद मारवाड़में वासनी, कूंपड़ास, और बलूंदा वगैरह गांवोंमें; देवाकी धारता और खेमपुरमें; और बरसिंहकी गोठीपामें मौजूद हैं. मेहपाका बड़ा पुत्र आसकरण और आसकरणका चत्रा हुआ, जिसके समयमें विक्रमी १६२४ [हि० ९७५ = .ई० १५६७] में जब अक्बर बादशाहने मांडलगढ़का क़िला लेकर चित्तौड़पर हमलह किया, तो उस वक्त ढोकलिया भी खालिसहमें शामिल करलिया. परन्तु कई वर्षोंके बाद चत्रा दिल्ली गया, और जोधपुरके मोटा राजा उदयसिंहकी मारिफ़त अर्ज़ मारूज़ करवाकर उसने गांव पीछा बहाल करवालिया. चत्राका पुत्र चावंडदास और चावंडदासका पुत्र हरिदास था, जिसके समयमें महाराणा राजसिंहने नाराज़ होकर ग्राम ढोकलिया खालिसह करलिया. जब मांडलगढ़पर आलमगीरका क़बज़ह होगया, तब भी यह गांव खालिसहमें ही रहा. बहुतसी तक्लीफ़ें उठानेके बाद हरिदासका बेटा अर्जुन उदयपुरमें आया, और विक्रमी १७६५ [हि० ११२० = .ई० १७०८] में उसने चन्द्रकुंवर बाईके विवाहोत्सवपर ग्राम ढोकलिया महाराणा दूसरे अमरसिंहसे वापस इनूआममें पाया. अर्जुनका बड़ा बेटा केसरीसिंह और उसका मयाराम हुआ, जिसने महाराणा जगत्सिंहके समयमें नया ग्राम मिलनेकी एवज़ ढोकलियाके चारों तरफ़ हद बन्दी करवाकर गो बच्छा सहित पत्थर (१) रुपवा दिये. मयारामका बड़ा पुत्र कनीराम था, जिसका जन्म विक्रमी १८१० [हि० ११६६ = .ई० १७५३] में, और देहान्त विक्रमी १८७० [हि० १२२८ = .ई० १८१३] में हुआ. इसको महाराणा भीमसिंहने जयसिंहपुरा, और झालरा नामके दो ग्राम दिये. कनीरामका पुत्र रामदान था, जो विक्रमी १८४७ [हि० १२०४ = .ई० १७९०] में पैदा हुआ, और विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ = .ई० १८३८] में मरा. इसके दो पुत्र, बड़ा क़ाइमसिंह और दूसरा खुमाणसिंह हुआ. क़ाइमसिंहका जन्म विक्रमी १८६७ [हि० १२२५ = .ई० १८१०] में, और देहान्त विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = .ई० १८७०] में हुआ. क़ाइमसिंहके ४ पुत्र, बड़ा ओनाड़सिंह, दूसरा मैं (श्यामलदास), तीसरा व्रजलाल और चौथा गोपालसिंह हुए, जिनमेंसे ओनाड़सिंह खेमपुर गोद गया. मेरा (श्यामलदासका) जन्म विक्रमी १८९३ द्वितीय

---

(१) सीमा आदि स्थानोंपर गो बच्छाके चिन्ह वाले पत्थर रोपेजानेसे यह मत्लब होता है, कि जो कोई इन पत्थरोंको उखेड़े उसको बच्चे वाली गायके मारेका पाप हो.

आषाढ़ कृष्ण ७ [हि० १२५२ ता० २० रबीउल्अव्वल = ई० १८३६ ता० ५ जुलाई] को; और मेरा प्रथम विवाह विक्रमी १९०७ [हि० १२६६ = ई० १८५०] में, और दूसरा विवाह विक्रमी १९१६ [हि० १२७६ = ई० १८५९] में हुआ. विक्रमी १९१८ [हि० १२७८ = ई० १८६१] में मेरी बड़ी स्त्रीका देहान्त होगया. विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = ई० १८७०] में मैं अपने पिताका क्रमानुयायी बना. विक्रमी १९०४ [हि० १२६३ = ई० १८४७] में मैं अपने पिताके साथ महाराणा स्वरूपसिंह की सेवामें आया था. इसके दो तीन वर्ष पहिलेसे मैंने सारस्वत और अमरकोश पढ़ना प्रारम्भ करदिया था. उसके पीछे दूसरे भी कोश और काव्य तथा साहित्यके ग्रंथ पढ़ता रहा. फिर मुझको ज्योतिषका शौक़ हुआ, और थोड़ासा गणितका अभ्यास करके फलित ग्रन्थोंमें लग गया. मुहूर्तचिन्तामणि, मुहूर्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तगणपति, जातकाभरण, मुहूर्तमुक्तावलि, चमत्कार चिन्तामणि, हिल्लारजातक, पद्मकोशजातक, लघुपाराशरी, वृहत्पाराशरी, षट्पंचाशिका, प्रश्नभैरव, और हायनरत्न वगैरह कई ग्रन्थ देखनेके पश्चात् फलितपरसे मेरी श्रद्धा उठगई. फिर मेरा चित्त थोड़े दिनोंके लिये मन्त्र शास्त्र, सिद्धनागार्जुन, इन्द्रजालादिककी तरफ़ रुजू हुआ, लेकिन् उनको भी व्यर्थ जानकर शीघ्र ही चित्त हटगया. फिर मैंने थोड़े दिनोंके लिये वैद्यकपर चित्त लगाया. अल्बत्तह इस विद्यामें मुझको कुछ लाभ मालूम हुआ, लेकिन् अंग्रेज़ी डॉक्टरोंसे मित्रता होनेके कारण संस्कृत वैद्यकका अभ्यास छूटगया. उसके बाद मुख्य विद्या काव्य, कोश और साहित्यकी तरफ़ मन लगाया, और बीच बीचमें महाभारत, रामायण, भागवत, देवीभागवत आदि कई पुराण ग्रन्थ भी देखे. इन सबका फल यह हुआ, कि मेरे मनसे मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन और डाकिन, भूत, मूठ, जादू वगैरहका वहम बिल्कुल निकलगया. इसीके साथ धर्म सम्बन्धी ग्रन्थोंमें भी सन्देह होने लगा. तब मैंने वेदान्तके पंचदशी वगैरह छोटे छोटे ग्रन्थ देखे, जिससे कुछ विश्वास हुआ, क्योंकि संसारमें जितने धर्म हैं, उन सबमें बहुत कुछ बारीकियां निकाली गई हैं, लेकिन् यह सोचा कि सब सृष्टिका नियम बनाने वाली कोई एक वस्तु है, अनेक नहीं; इसलिये कुल मज़्हबोंमें एक दूसरेके साथ कुछ न कुछ अन्तर अवश्य है; परन्तु सच्चाई, दया, और ईमानदारी प्रभृति अच्छी बातें, और झूठ, चोरी, तथा हिंसा आदि बुरी बातें सब मज़्हबोंकी रायसे एकसी हैं, और सबोंके मतसे सृष्टिको बनानेवाली वस्तु एक और व्यापक है, इसलिये मैंने सब मतोंकी रायके अनुसार अपने ही वेदान्त शास्त्रको ठीक जानकर उसीपर सन्तोष करलिया. फिर मेरा शौक़ ज़ियादहतर इतिहासकी तरफ़ झुका, लेकिन् हमारे ऐतिहासिक ग्रन्थोंको तो लोगोंने मज़्हबमें मिलाकर बढ़ावे और करामाती बातोंसे बहुतही

कुछ भरदिया है, और इसके सिवा पुराने ग्रंथोंमें देखाजावे, तो साल संवत् भी नहीं मिलते, अल्बत्तह हमारे काव्य और जैनके ग्रन्थोंसे कुछ कुछ साल संवत् और इतिहासका प्रयोजन सिद्ध होता है. मैं इन बातोंकी खोजनामें लगा हुआ था, कि इसी समय याने विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = ई० १८७१] में मेवाड़के पोलिटिकल एजेण्टने महाराणा शम्भुसिंह साहिबसे मेवाड़का इतिहास बनानेके लिये बहुत कुछ कहा. तब महाराणा साहिबने इस कामके लिये दो चार आदमी मुक़र्रर किये, लेकिन् जैसा चाहिये वैसा काम न चला. फिर मुझको आज्ञा मिली, तो मैंने और पुरोहित पद्मनाथने ऐतिहासिक सामग्री एकट्ठी करना शुरू किया, और कुछ सामग्री एकत्र होने बाद तवारीख़ लिखनी शुरू करदी; परन्तु उसका मुसवद्दह बहुत बढ़ावेके साथ लिखाजाने लगा, क्योंकि पहिले मुझको इतिहास विद्यामें पूरा अनुभव प्राप्त नहीं हुआ था, केवल दो चार फ़ार्सी तवारीख़ें देखकर उसी ढंगसे तअस्सुबके साथ लिखने लगा. थोड़े ही दिन पीछे ईश्वरने इस कार्यको रोकदिया, याने महाराणा शम्भुसिंह साहिबका परलोक वास होनेसे मेरे दिलपर बड़ा भारी सद्मा पहुंचा, जिससे यह काम भी बन्द होगया, लेकिन् मैंने ऐतिहासिक सामग्री एकट्ठी करना नहीं छोड़ा. अपने तौरपर पाषाण लेख, सिक्के, ताम्रपत्र, पुराने काग़जात, जनश्रुति, भाषा और संस्कृतके ग्रन्थ, काव्य, तथा अंग्रेज़ी व फ़ार्सी वग़ैरह ऐतिहासिक पुस्तकें एकत्र करता रहा. इसी अरसेमें वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबने मुझको कुछ दिनों बाद मुसाहिबों (मन्त्रियों) में दाख़िल करके अपना सलाहकार अर्थात् मुख्य मन्त्री बनालिया, जिससे मुझको रियासती कामोंके सबब इस कामके लिये बहुत ही कम फ़ुर्सत मिली. रियासती प्रबन्धमें मेरी तुच्छ सलाहसे विद्याकी उन्नति, देशका सुधार, सेटलमेंट और जमाबन्दीका प्रबंध, कौन्सिल वग़ैरह न्यायकी कचहरियोंका खोलाजाना, नई नई इमारतोंके बनानेसे देशको रौनक़ और प्रजाको लाभ पहुंचाना वग़ैरह अनेक अच्छे अच्छे कार्य कियेगये, जिनका फल इस वक़्त दिखाई देरहा है. फिर मेवाड़के पोलिटिकल, एजेण्ट कर्नेल् इम्पी साहिबने वैकुण्ठवासी महाराणा साहिबसे गुज़ारिश की, कि मुसाहिबीके कामके लिये तो बहुत आदमी मिलसक्ते हैं, लेकिन् तवारीख़के लिये नहीं, इसलिये तवारीख़का काम श्यामलदाससे शुरू करवाना चाहिये, जिससे आपकी और आपके राज्यकी नामवरी हज़ारों वर्षोंतक क़ाइम रहेगी. उक्त साहिबकी यह राय महाराणा साहिबको बहुत पसन्द आई, और मुझको हुक्म दिया, कि रियासती बड़े बड़े कामोंमें कभी कभी हमको सलाहसे मदद देतेरहनेके अ़लावह तुम अपना मुख्य काम इतिहास लिखनेका रक्खो. तब मैं यह आज्ञा

पाकर और भी अधिक तेज़ीके साथ सामग्री एकत्र करने लगा, और विक्रमी १९३६ [हि० १२९६ = ई० १८७९] के माघ फाल्गुनसे मैंने इस बृहत् कार्यका प्रारम्भ किया. फिर मैंने गवर्मेंट अंग्रेज़ीसे पाषाणलेख पढ़नेवाला एक आदमी मांगा. इसपर फ़्लीट साहिबकी मारिफ़त गोविन्द गंगाधर देश पांडे नामका एक पंडित एक वर्षसे ज़ियादह समयके लिये हमको मिला. इस पंडितके ज़रीएसे मैंने मेवाड़ और मेवाड़के समीपवर्ती स्थानोंसे कई एक पाषाण लेख प्राप्त किये, और हमारे दो तीन आदमियोंको भी उक्त पंडितके पास रखकर प्रशस्ति छापने और बांचनेका कार्य सिखलाया. इन बातोंसे मुझको बहुत कुछ अनुभव हासिल होगया. इसके बाद मैं रॉयल एशियाटिक सोसाइटी बंगालका मेम्बर बना, और कुछ लेख भी उक्त सोसाइटीके जर्नलोंमें दिये. फिर उक्त सोसाइटीके मेम्बरोंने मुझको आर्कियोलॉजी और हिस्टरीका ऑनरेरी मेम्बर चुना, और बाद उसके मैं रॉयल एशियाटिक सोसाइटी लण्डन व बम्बई ब्रैंच रॉयल एशियाटिक सोसाइटीका मेम्बर होगया. फिर हिस्टोरिकल सोसाइटी लण्डनका फ़ेलो बना. यदि मैं इन सोसाइटियोंमें लेख देनेका ही काम रखता, तो कोई जर्नल मेरे लेखसे ख़ाली न रहता, लेकिन् मैंने आजतक अपना कुल समय इसी इतिहास वीरविनोदके बनानेमें व्यतीत किया. महाराणा सज्जनसिंह साहिबने मुझको कविराजाकी पदवी (ख़िताब), जुहार, ताज़ीम, छड़ी, बांहपसाव, चरण शरणकी बड़ी मुहर, पैरोंमें सर्व प्रकारका सुवर्ण भूषण, और पघड़ीमें मांझा (१) वग़ैरह सब प्रकारकी इज़्ज़त इनायत की, और गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीसे मुझको महामहोपाध्यायका ख़िताब मिला. वर्तमान महाराणा साहिबने भी इस इतिहास वीरविनोदकी क़द्र करके मेरा बहुत कुछ उत्साह बढ़ाया. महाराणा शम्भुसिंह साहिब और सज्जनसिंह साहिबने मुझको यह आज्ञा दी थी, कि तवारीख़में तारीफ़ नहीं चाहिये, उसी तरह वर्तमान महाराणा साहिबकी भी अभिरुचि है, जिससे इस इतिहासके शीघ्र पूर्ण होनेकी आशा है.

अब मैं अपना ऐतिहासिक वृत्तान्त पूरा करनेके बाद दूसरी क़ौमोंका मुख़्तसर हाल वर्तमान समयके अनुसार नीचे दर्ज करता हूं, जो पुराने जाति भेदसे भिन्न है, क्योंकि यदि मनु और याज्ञवल्क्यके कथनानुसार आजकलका जाति भेद

(१) मांझा उस तासके कपड़ेके टुकड़ेको कहते हैं, जो मेवाड़के बड़े दर्जहवाले सर्दारोंको पघड़ियोंमें लगायाजाता है, और यह विशेषकर अमरशाही पघड़ीमें लगायाजाता है. इसके लगाने की इजाज़त उन्हीं लोगोंको होती है जिनको महाराणा साहिब बख़्शते हैं, और यह सुनहरी और रुपहरी दो प्रकारका होता है.

मिलाया जावे, तो बिल्कुल नहीं मिलता, और उसका कारण यह है, कि प्राचीन समयमें कर्मप्रधान जाति मानीजाती थी, और अब वीर्यप्रधान मानीजाती है.

ब्राह्मण.

इनके दो भेद हैं, अव्वल पञ्चगौड़, और दूसरे पञ्चद्राविड़. ब्राह्मणोंमें पहिले कोई जाति भेद नथा, उस समय ये लोग ऋग्वेदी, यजुर्वेदी, सामवेदी, और अथर्ववेदी कहलाते थे, और विशेष पहिचान उनकी वेदोंकी शाखाके अनुसारही होती थी. परन्तु जब विन्ध्याचलके पार दक्षिणमें ये लोग आबाद हुए, तो हिमालयसे विन्ध्याचलके बीचमें रहनेवाले पञ्चगौड़ याने १- गौड़, २- कान्यकुब्ज, ३- सारस्वत, ४- मैथिल, और ५- उत्कल; और विन्ध्याचलसे रामेश्वरतक रहनेवाले पञ्चद्राविड़, याने १- द्रविड़, २- तैलंग, ३- कर्णाटक, ४- महाराष्ट्र और ५- गुर्जर, देशोंके नामसे प्रसिद्ध होगये, लेकिन् उस समयमें सब ब्राह्मणोंका आचार व्यवहार एकसाही था. जब मुसल्मानोंने भारतमें आकर जातिध्वंस करना आरम्भ किया, तबसे ब्राह्मणों तथा अन्य जातियोंमें भी अनेक जातियां होगईं, और उनके आचार, विचार तथा व्यवहारमें भी बहुत कुछ फ़र्क़ आगया है. क़रीब क़रीब तमाम राजपूतानह और विशेषकर मेवाड़के ग्रामीण ब्राह्मण, जिनको ग्राम तथा ज़मीन उदक मिली है वे तो बिल्कुल कृषिकार ही होगये हैं, और ऐसे निरक्षर हैं, कि गायत्री मंत्रका भी एक अक्षरतक नहीं जानते, क़ौमी पहिचानके लिये शादीके समय केवल यज्ञोपवीत गलेमें डाल लेते हैं, और उसीसे ब्राह्मण कहलाते हैं. शहर अथवा क़स्बोंमें रहने वाले ज़ियादहतर नौकरी अथवा व्यापारसे अपना गुज़र करते हैं, और बहुतसे कणभिक्षा करके भी पेट भरते हैं. इन लोगोंमें अल्बत्तह बाज़ बाज़ पढ़ते भी हैं. थोड़े पढ़ने वाले पञ्चाङ्ग बांचकर और उनसे ज़ियादह पढ़े हुए जन्मपत्री, वर्षपत्र आदि बनाकर अपना गुज़ारा करते हैं. यदि किसीने ज़ियादह हिम्मत की तो कथाभट्ट बनगया, जो पुराणोंकी कथा बांचकर जीविका प्राप्त करता है; परन्तु वेदाभ्यास और शास्त्र पठन करने वाले तो यहांपर हज़ारों ब्राह्मणोंमें एक दोही नज़र आते हैं, जो भी अपने शेष जाति समूहमें फंसकर देशोपकारपर चित्त नहीं लगाते. राजपूतानहमें पञ्चद्राविड़ थोड़े, और पञ्च गौड़ अधिक आबाद हैं.

क्षत्री.

पिछले ज़माने याने १२ वें शतक विक्रमीसे लेकर इस समयतक ब्राह्मणोंकी तरह क्षत्रियोंमें भी बहुतसी पृथक् पृथक् जातियां होगई हैं, कि जिनकी गणना करना

कठिन है. अलग अलग जातियां क़ाइम होनेके दर्मियानी समयमें क्षत्रियोंके कुल ३६ वंश नियत हुए, जिनमें १६ सूर्यवंशी, १६ चंद्रवंशी, और ४ अग्निवंशी थे. इन छत्तीस वंशोंमेंसे बहुतसे तो नष्ट होगये और कई वंशोंकी प्रतिशाखाओंको लोगोंने जुदा वंश समझ लिया. इस गड़बड़से ३६ वंशकी गणनाका क्रम भंग होगया. कुमारपाल चरित्र काव्यमें ३६ वंशकी गणना लिखी है, परन्तु उसमें भी कई शाखाओंको जुदा वंश मानलिया है; और कर्नेल् टॉडने जो कई ग्रन्थोंसे चुन चुनकर फ़िहरिस्तें बनवाईं और उसके बाद अपने ख़यालके मुवाफ़िक़ एक नई लिस्ट याने फ़िहरिस्त तय्यार की उसमें भी हमारे विचारसे गड़बड़ है, इसलिये हमने ऐसे सन्देहमें पड़ना ठीक न जानकर उक्त ३६ वंशोंका क्रम ढूंढना छोड़दिया, और वर्त्तमान समयमें जो लोग क्षत्रियोंके प्रचलित वंशोंकी शाखा और प्रतिशाखाओंको मानते हैं उन्हींका लिखना उचित समझा, जो इस प्रकार हैं (१) :-

(सीसोदियोंकी २५ शाखा.)

१- गुहिलोत, २- सीसोदिया (२), ३- पीपाड़ा, ४- मांगल्या, ५- मगरोपा, ६- अजवख्या, ७- केळवा, ८- कूंपा, ९- भीमल, १०- धोरण्या, ११- हुल, १२- गोधा, १३- आहाड़ा, १४- नादोत, १५- सोवा, १६- आशायत, १७- बोढा, १८- कोढा, १९- करा, २०- भटेवरा, २१- मुदोत, २२- घालस्या, २३- कुचेला, २४- दुसंध्या, और २५- कड़ेचा.

(चहुवानोंकी २४ शाखा.)

१- खीची, २- हाड़ा, ३- बालेछा, ४- सोनगरा, ५- मादड़ेचा, ६- मालवण, ७- बील, ८- बागड़ेचा, ९- सांचोरा, १०- बागट, ११- बागड़िया, १२- चालशखा, १३- वयबधणा, १४- जोजा, १५- भमरेचा, १६- बालोत, १७- बरड़, १८- देवड़ा,

---

(१) यह नहीं जानना चाहिये, कि हमारी लिखी हुई शाखा और प्रति शाखा बहुत ही ठीक हैं, क्योंकि इनमेंसे भी बहुतसी प्रातिशाखा नष्ट होगईं, और कई नवीन कल्पना कीहुईका भी भ्रम है, लेकिन् इस विषयमें कुछ न कुछ लिखना अवश्य समझकर लिखदी गई हैं.

(२) यहांपर सीसोदिया वंशकी २५ शाखाओंमें उक्त वंशके नामकी जो एक शाखा लिखी गई है, उससे यह मत्लब है, कि कुछ राजपूत इस वंशमें ऐसे हैं, जो केवल सीसोदिया नामसे ही प्रसिद्ध हैं; और इसी तरह चहुवान, पुंवार, झाला आदि वंशोंमें भी जहां जहां वंशके नामकी शाखा आवे, ऐसाही समझलेना चाहिये.

१९- चन्दाणा, २०- सेपट्या, २१- पामेचा, २२- चीबा, २३- गहरवा, और २४- चहुवान.

(पुंवारों की ३५ शाखा.)

१- पुंवार, २- शोढा, ३- शांखला, ४- चावड़ा, ५- खेह, ६- खेजड़, ७- शागर, ८- पड़कोड़ा, ९- भायला, १०- भीमल, ११- काला, १२- प्रमार, १३- काबा, १४- कालमुहा, १५- डोडा, १६- ऊमट, १७- धांधू, १८- सुमरा, १९- रेवर, २०- कालेज, २१- काहस्या, २२- बाढेल, २३- ढीढा, २४- ढेबा, २५- बेहका, २६- बोढ, २७- गहला, २८- जीपा, २९- शायस्या, ३०- रांकमुहा, ३१- ढीक, ३२- सूंढा, ३३- फटक, ३४- बरड़, और ३५- हूंमड़.

(झालोंकी ९ शाखा.)

१- झाला, २- मकवाणा, ३- रेणवा, ४- लूणगा, ५- [illegible], ६- बालायत, ७- बूहा, ८- पीठड़, और ९- बापड़.

(राठौड़ोंकी १३ शाखा.)

१- दानेसुरा, २- अभयपुरा, ३- कपालिया, ४- करहा, ५- जलखेड़िया, ६- बुगलाना, ७- भरह, ८- पारकेश, ९- चंदेल, १०- वीर, ११- बख्यावर, १२- खरबदा, और १३- जैवन्त.

(सोलंखियोंकी २४ शाखा.)

१- सोलंखी, २- बालणोत, ३- बाघेला, ४- टहल, ५- कुटबहाड़ा, ६- आलमोच, ७- शेष, ८- खेड़ा, ९- तवड़[illegible]ा, १०- महलगोता, ११- बाघेला, १२- भाशूंडा, १३- बड़[illegible]ढा, १४- राणक्या, १५- दलावड़ा, १६- भाड़ंग्या, १७- वीरपरा, १८- नाथावत, १९- खटड़, २०- हराहर, २१- कांधल, २२- बलहट, २३- चूडामणा, और २४- माहेड़ा.

(बड़गूजरोंकी २ शाखा.)

बड़गूजरोंकी दो शाखाओंमें पहिली बड़गूजर, और दूसरी शकरवाल है.

(ईदोंकी २ शाखा.)

बड़गूजरोंके समान ईदा राजपूतोंकी भी दो शाखा हैं, याने अव्वल ईदा, और दूसरे पाडिया.

(भाटियोंकी ७ शाखा.)

१- भाटी, २- जादव, ३-- माहेड़ा, ४- जाड़ेचा, ५- बोधा, ६- लहुवा, और ७-- भाड़ेचा.

(गौड़ोंकी ६ शाखा.)

१- गौड़, २- ऊंठेड़, ३- शालियाना, ४- तंवर, ५- दुहाणा, और ६- बोडाणा.

जिन जिन वंशोंकी दूसरी शाखा नहीं जानी गई, उनके नाम नीचे लिखे- जाते हैं:-

डोडिया, डाबी, टांक, कछावा, पंडीर, बांलो, गोरवाळ, जोइया, गोयील, शरबय्या, टामेर, आदेण, कुनणेचा, दायमा, मोरी, गोहिल, चूह, थेगा, बल्ला, गोरवा, बगड़्या, नकूप और खरवड़ वग़ैरह.

क्षत्रियोंकी स्त्रियां पर्देमें रहती हैं; प्राचीन समयमें इनके यहां यह रवाज नहीं था, परन्तु जब मुसल्मानोंकी बादशाहत हिन्दुस्तानमें क़ाइम हुई, तबसे क्षत्रियोंने भी पर्देका रवाज जारी करलिया, इस ग़रज़से कि अव्वल तो उनकी स्त्रियोंकी बराबर अपनी स्त्रियोंकी .इज़्ज़त दिखलाना, क्योंकि मुसल्मान लोग बाहिर फिरने वाली स्त्रियोंकी हिक़ारत करते थे; और दूसरे मुसल्मानोंके दुराचरणसे औरतोंको बचाना, कि जो उनके घरोंमें रूपवती स्त्रियोंको देखकर उनकी .इज़्ज़तपर हमलह करनेको तय्यार होते थे, जिसमें हज़ारों राजपूत लड़कर मारेजाते और उनकी स्त्रियां भी अपना सत बचानेके लिये आगमें जल मरतीं. इस समय पर्देका रवाज ऐसा दृढ़ होगया है, कि नवीन मालूम नहीं होता. राजपूत लोग प्राचीन कालसे भारतवर्षके राजा, ईमानदार, सत्यवक्ता, वीर और उपकारको माननेवाले होते आये हैं; दग़ाबाज़ी इन लोगोंमें बहुत कम थी, क्योंकि पहिले ज़मानेमें दग़ाबाज़ीसे मारने वालेकी पूरी निन्दा करते थे, परन्तु मुसल्मानोंके आने बाद इनमें भी थोड़ी थोड़ी दग़ाबाज़ी फैलगई, तोभी इतना तो इन लोगोंमें पिछले समयतक भी बना रहा, कि शस्त्र डालकर हाथ जोड़ने वालेको न मारना, और मज़्हबी पेश्वा, तथा पटदर्शन वग़ैरहको न लूटना इत्यादि.

क्षत्रिय लोग मांस मद्य खाते पीते हैं. मेवाड़के राजा और उनके सजातीय सीसोदिया पहिले मद्यपान नहीं करते थे, परन्तु महाराणा दूसरे अमरसिंहसे इनमें भी मद्यपान करनेका प्रचार हुआ, जिसको महाराणा स्वरूपसिंहने निज पुरातन रीतिके अनुसार कुल सीसोदियोंसे छुड़ा दिया था, लेकिन उनका देहान्त होते ही फिर प्रचलित

होगया. उत्तम घरानेकी स्त्रियां हरएक रंगके वस्त्र, भूषण, और हाथीदांत, नारियल तथा लाखकी चूड़ियां दोनों हाथोंके पहुंचे और भुजोंपर पहिनती हैं. इनके पहिननेका घाघरा (लहंगा) ३०० फुटतकका घेरदार और ओढ़नेकी साड़ी १२ फुटतक लंबी होती है. पहिले बाज़ बाज़ स्त्रियां तो यथा विधि अपने पतिके मरनेपर उसके साथ ही जलजाती थीं, परन्तु सतीकी रस्म बन्द होनेके बादसे वे विधवापनमें पूर्ण सन्यासका व्रत पालन करती हैं. मद्य मांस त्यागदेनेके सिवा कच्चे रंगको तो वे छूती भी नहीं, बल्कि पक्के रंगमें भी आलके रंगकी या काली साड़ी, और साधारण सिफ़ेद छींट अथवा पक्के लाल या काले रंगका थोड़े घेरवाला घाघरा पहिनती हैं. खाने पीनेमें उत्तम और स्वादिष्ट भोजनोंका परित्याग करदेती हैं, किसी प्रकारका भूषण नहीं पहिनतीं, और अपनी बाक़ी .उम्र मज़्हबी अक़ीदेपर पूरी करती हैं.

क्षत्रियोंमें ज़ियादहतर बड़ा लड़का बापकी कुल जायदादका मालिक होता है, और बाक़ी छोटे लड़के जितने हों उनको बापकी जायदादमेंसे गुंजाइशके मुवाफ़िक़ ख़र्चके लाइक़ थोड़ा थोड़ा हिस्सह दियाजाता है, लेकिन् उनको बड़े भाईकी नौकरी करनी पड़ती है.

महाजन.

इस देशमें वैश्य वर्ण महाजनोंको गिनते हैं, जो पुराने समयसे वैश्य नहीं हैं, किन्तु अहीर वगैरह पुराने वैश्य हैं. इनमेंसे कितनेएक तो कृषि और गोरक्षा वगैरह कर्म करते ही हैं, और कितनेएक अपना कर्म छोड़कर नौकरीमें लगगये हैं. बहुतसी अन्य जातियोंने बौद्ध और जैनमतावलम्बी होनेके कारण अहिंसा धर्ममें प्रवृत्त होकर कृषि वाणिज्यको ही अपना मुख्य कर्म समझलिया, जिनके दो विभाग हुए, याने एक वह जिन्होंने कायस्थोंसे अह्लकारी पेशह छीनकर उसे अपना पेशह बनालिया, और दूसरे वे जिन्होंने वाणिज्य ही को अपना पेशह समझा; और येही लोग महाजन तथा बनिया कहलाते हैं. इन लोगोंकी ८४ शाखा हैं, जिनमेंसे राजपूतानहमें बारह प्रसिद्ध हैं, अव्वल श्री श्रीमाल, दूसरी श्री माल, और तीसरी ओसवाल, जिनके आपसमें शादी सम्बन्ध होता है, और इन तीनोंकी १४४४ प्रशाखा हैं; चौथी पोरवाळ, जिसकी अनन्त प्रशाखा हैं; पांचवीं महेश्वरी, जिसकी ७२ प्रशाखा हैं; छठी हूंमड़, जिनकी १८ प्रशाखा; सातवीं अगरवाला, जिनकी साढ़े १७ प्रशाखा; आठवीं नागदा, जिनकी १३ प्रशाखा; नवीं नरसिंहपुरा, जिनकी २७ प्रशाखा; दसवीं चित्तौड़ा, जिनकी २७ प्रशाखा हैं; ग्यारहवीं बघेरवाळ; और बारहवीं बीजावर्गी.

इन जातियोंके अलावह श्रावगी और खं.......... मिलकर एक शाखा और कहलाती है, जिसकी ८४ प्रशाखा हैं. ये सब शाखावाले खाना पीना शामिल करसके हैं, परन्तु कन्याका लेना देना अपनी शाखामें ही करते हैं. शादी और ग़मीकी रस्में सर्व साधारण हैं, केवल किसी किसी बातमें कुछ फ़र्क़ होता है, विशेष नहीं. ये लोग ख़र्चमें किफ़ायत शिआरी करने, और धनकी वृद्धि करनेमें अव्वल दरजहके गिनेजाते हैं. इनमें महेश्वरी वगैरह कोई कोई वे.ाम्नायी और बाक़ी सब जैन मतावलम्बी हैं. इनमेंसे कितनीएक शाखाओंमें फिर दो भेद हैं, याने एक बीसा, और दूसरे दशा. उपरोक्त सब शाखाओंमें पासवान स्त्रीसे पैदा होनेवाले पांचड़े कहे जाते हैं.

कायस्थ.

ये लोग ज़ियादहतर अहलकार पेशा होते हैं; बंगालेमें बाबू, पश्चिमोत्तर देशमें लाला, और राजपूतानहमें पंचोली वा ठाकुर भी कहलाते हैं. इनके यहां शादी और ग़मीका व्यवहार सबमें एकसा है. प्राचीन कालसे इनका मौरूसी पेशह अहलकारी चला आता है, और इसीसे इनका मसीश (सियाहीके मालिक) नाम रक्खा गया था. इनकी कई शाखा हैं. भविष्यपुराणमें इनकी मुख्य ८ शाखा, याने १- श्री मद्र, २- नागर, ३- गौड़, ४- श्री वत्स, ५- माथुर, ६- अहिफण, ७- सौरसेन, और ८- शैवसेन लिखी हैं; इसके सिवा वर्णावर्ण अंवष्ठादि और भी कई भेद हैं. दक्षिण राढीय घटक कारिकामें इनकी ८ शाखा इस तरहपर लिखी हैं :- १- दत्त, २- सेन, ३- दास, ४- कर, ५- गुह, ६- पालित, ७- सिंह, और ८- देव. फिर इनकी ७२ प्रशाखा हैं, और ये गौड़ देशमें मुख्य मानेगये हैं. बंगजकुलाचार्य कारिकामें अग्निपुराणके हवालेसे लिखा है, कि इनका मूल पुरुष होम था, जिसका प्रदीप और उसका कायस्थ हुआ, जिसके ३ पुत्र पैदा हुए, १- चित्रगुप्त, २- चित्रसेन, और ३- विचित्र. इनमेंसे चित्रगुप्त तो स्वर्गमें, विचित्र पातालमें, और चित्रसेन पृथ्वीपर रहा, जिसके ७ पुत्र हुए:- १- वसु, २- घोष, ३- गुह, ४- मित्र, ५- दत्त, ६- करण, और ७ मृत्युञ्जय. इनमेंसे छठे करणके ३ पुत्र, १- नाग, २- नाथ, और ३- दास; और सातवें मृत्युञ्जयके ४ पुत्र, १- देव, २- सेन, ३- पालित, और ४- सिंह हुए. इस तरह करण और मृत्युञ्जयको छोड़कर बारह भेद हुए, जो बंग देशमें मुख्य मानेगये हैं, और इनकी ८७ प्रशाखा गिनी गई हैं. इसके सिवा देशाचारके भेदसे भी कई शाखा प्रशाखा होगई हैं. राजपूतान.के कायस्थ मांस मिश्रित भोजनका छूना कम मानते हैं.

हमने विस्तारके भयसे यह हाल सूक्ष्म तौरपर लिखदिया है; क्योंकि यदि हरएक जातिका हाल जुदे जुदे तौरपर बहुत थोड़ा थोड़ा भी लिखें, तो बहुत कुछ विस्तार होना सम्भव है, इसलिये नमूनेके तौरपर ख़ास ख़ास कौमोंका थोड़ासा वृत्तान्त लिखकर बाक़ीको छोड़देते हैं; लेकिन् जो क़ौमें कि जङ्गली गिनी जाती हैं, जैसे भील, मीना वग़ैरह उनका थोड़ासा वृत्तान्त नीचे लिखते हैं:-

भील.

भील लोग थोड़े या बहुत राजपूतानहके तमाम हिस्सोंमें आबाद हैं, लेकिन् मुख्य गिरोह इनका आबू पहाड़से लेकर नर्मदा नदीके किनारेतक फैला हुआ है. उदयपुर सिरोही, पालनपुर, ईडर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ वग़ैरह रियासतोंके पहाड़ी हिस्सोंमें ख़ासकर यही प्रजा बसती है. इनका प्राचीन इतिहास मिलना बहुत कठिन है. इन लोगोंके गांव बड़े विस्तारमें आबाद होते हैं, हरएक भीलकी झोंपड़ी बांस, लकड़ी, और पत्तोंकी बनी हुई जुदी जुदी पहाड़ी टेकरियोंपर होती है, और उस झोंपड़ीकी सीमाके भीतर जो खेत, पहाड़ तथा जंगल हो उसका मुख़्तार वही भील होता है. एक झोंपड़ीसे कुछ फ़ासिलेपर उसी तरह दूसरे भीलका झोंपड़ा जानना चाहिये. इसी तरह कई झोंपड़े मिलकर एक 'फळा' कहलाता है, और ऐसे कई फळे मिलकर एक गांव होता है, जिसको वे लोग 'पाल' बोलते हैं, यह पाल कई वर्गात्मक मील याने मीलमुरब्बामें आबाद होती है. हरएक फळेमें एक या दो भील मुखिया और कुल पालका एक सरगिरोह भील 'गमेती' कहलाता है. उसी गमेतीकी मारिफ़त कुल पालमें मुक़द्दमों और दूसरे मुआमलोंकी कार्रवाई कीजाती है; और वह गमेती जुदे जुदे फळोंके मुखियोंकी मारिफ़त इस कामको करता है; लेकिन् फळाके मुखिया और पालके गमेतीकी ताक़त कम होजानेपर जो ज़बर्दस्त और बहादुर होता है, वह पहिले वालेको रद करके आप मुखिया और गमेती बनजाता है. ये लोग सूअर आदि सब जानवरोंके सिवा गायतकको भी खाजाते हैं, परन्तु फिर भी हिन्दू होनेका अभिमान रखते हैं. सौगन्ध खाने का रवाज इनके यहां इस तरहपर है, कि साफ़ ज़मीनपर गोलकुंडा खेंचकर उसमें तलवार रखदेते हैं, और उसपर अफ़ीम रखकर इक़ार करने वाला शख़्स उसमेंसे थोड़ीसी अफ़ीम खालेता है. इसके सिवा दूसरा तरीक़ह यह है, कि ऋषभदेवको अर्पण कीहुई थोड़ीसी केसर पानीमें घोलकर इक़ार करने वाला पीलेता है. फिर वह इक़ारके बख़िलाफ़ कभी नहीं करता. बड़े शहरोंके समीपवर्ती स्थानोंमें रहने वाले भीलोंके सिवा दूसरे भील लोग झूठ बहुत कम बोलते हैं, और इन लोगोंमें भविष्यत्का विचार बिल्कुल नहीं है. ये लोग शराब पीकर पुरानी बातोंको याद करके आपसमें लड़ मरते हैं, और यदि उसमें किसी

पालका भील माराजावे, तो उस पालवाले भील मारनेवालेकी पालसे बदला मांगते हैं. यदि मवेशी या रोकड़ रुपया देकर मारनेवाले पंचायतसे फ़ैसला करलेवें तो ठीक, वर्नह बदला मांगनेवाली पालके लोग अपने दुश्मनकी पालपर चढ़जाते हैं, और आपसमें लड़ाई होनेके वक्त ऊंची आवाज़से 'फाइरे, फाइरे' कहकर किलकारी मारते हैं. हज़ारों आदमियोंकी ऐसी आवाज़ोंसे पहाड़ गूंज उठते हैं. ये लोग ढाल, तलवार और तीर कमठा रखते हैं; बाज़ बाज़के पास बन्दूक़ भी रहती है, परन्तु बारूद वगैरह सामान पूरा नहीं मिलता. लड़ाईके वक्त दोनों ओरकी औरतें अपने अपने गिरोहको पानी, रोटी और लड़ाईके लिये पत्थर पहुंचाती हैं. ये लोग अपनी जातिकी औरतोंपर हथियार नहीं चलाते, चाहे वे दोस्तकी हों या दुश्मनकी. लड़ाईके समय ढाल वाला सबसे आगे रहकर दुश्मनके तीरोंको अपनी ढालसे रोकता है और उसके पीछे पांच पांच या दस दस आदमी तीर कमठा वाले रहकर तीर चलाते हैं. कमसरियट (सेनाको सामग्री पहुंचानेवाला महकमह) की इनको ज़रूरत नहीं होती, हरएक घरसे दो दो चार चार रोटी लाकर औरतें लड़ने वालोंको खिला जाती हैं. अगर नाजकी कमी हो, तो महुवा रांधकर लेआती हैं, और अगर यह भी न हो तो भैंसा, बकरा वगैरह जानवरको मारकर उसके मांसका एक एक टुकड़ा हरएक भीलको देदेती हैं, जिसको वे आगपर सेंककर खालेते हैं, नमक मिरचकी भी ज़रूरत नहीं होती. दोनों तरफ़के गिरोहोंमेंसे चाहे कोई जीते या नहीं, उनके गुरु जो बाबा कहलाते हैं वे अथवा तीसरे पालके भील बीचमें आकर लड़ाईको शान्त करादेते हैं. फिर पंचायतके तौरपर कुछ दे दिलाकर फ़ैसला करदेते हैं. रास्तह लूटने अथवा चोरी करनेको ये लोग ऐब नहीं समझते, और कहते हैं, कि ईश्वरने हमको इसी वास्ते पैदा किया है. ये लोग मुसाफ़िरके खून निकाले बिना उसका अस्बाब नहीं लेते. अगर मुसाफ़िर कहे, कि हमको तक्लीफ़ दिये बिना अस्बाब लेलो, तो वे कहेंगे, कि क्या हमको खैरात देता है ! इस तरह वे मुसाफ़िरको पत्थर, तीर या तलवारसे थोड़ा बहुत ज़ख्म पहुंचाकर अस्बाब लेते हैं; लेकिन् यह भी उनका स्वभाव है, कि यदि कोई मुसाफ़िर कितनाही अस्बाब लेकर किसी भीलके घर जा पहुंचे, तो फिर उसको कुछ ख़तरह नहीं रहता. इस हालतमें उस घरके जितने मर्द औरत हों वे सब उस मुसाफ़िरकी हिफ़ाज़तके लिये जान देनेको तय्यार होजाते हैं, सिवा इसके मुसाफ़िरको अपने घरपर भूखा भी नहीं रहने देते; लेकिन् उसकी हदसे बाहिर चलेजाने बाद वही भील लुटेरोंके शामिल होकर उस मुसाफ़िरको लूटलेता है. अगर मुसाफ़िर उसी भीलको या किसी दूसरेको कुछ उज्रत देकर अपने साथ बोलावा (पहुंचाने वाला) लेलेवे, अथवा भीलनी औरत भी पहुंचानेको साथ होजावे, तो मुसाफ़िरको लूटमारका कुछ भय नहीं

रहता. कोई शख़्स देशमें बगावत करके पालमें आबैठता है, तो उसकी मददके लिये भी सैकड़ों आदमी तय्यार होजाते हैं. राज्यकी फ़ौज या थानेदार अथवा राजपूत लोग जब किसी समय इन लोगोंपर धावा करते हैं, तो राजपूत इनको कांडी (१) कहकर पुकारते हैं. जो कोई भील किसी सवारके घोड़ेको मारलेता है वह पाखरयाके नामसे अपनी कौममें बड़ा बहादुर कहलाता है. अगर किसी भीलको सर्कारी मुलाज़िम या राजपूत पाड़ा (भैंसा) कहे तो, वह बहुत खुश होता है, मानो उसको सिंहकी पदवी दी. इस कौममें एकता बहुत है. अगर कोई एक भील किलकारी करे, तो उसी वक्त कुल पालके भील चाहे वे उसके दोस्त हों वा दुश्मन दौड़कर मौक़ेपर आ मौजूद होते हैं, और दूरसे एककी किलकारी सुनकर दूसरा भी किलकारी करता है. इसतरह मददके लिये किलकारीकी आवाज़ कई कोसों तक पहुंच जाती है. जब इनके लड़के लड़कियोंकी मंगनी याने सगाई होती है, तो बकरा या भैंसा मारकर मिह्मानोंको खिलाते या शराब पिलाते हैं. अगर मंगनी कीहुई लड़कीकी शादी दूसरी जगह होजावे, तो पहिला पति उस दूसरे पतिसे स्त्रीके एवज़में उसका अथवा उसके किसी सम्बन्धीका जीव लेता है, अथवा पंचायत द्वारा मवेशी या नक्द रुपया ठहरकर आपसमें फ़ैसला होजाता है. मंगनी कीहुई लड़कीका बाप दापेका मामूली रुपया लेता है, लेकिन् ऐसी छीना झपटीमें पहिला पति अपने मनमाना रुपया वुसूल करता है. अगर ब्याही हुई औरतको कोई दूसरा लेजावे, तो भी ऊपर लिखे मुवाफ़िक़ ही फ़ैसला होता है; और विधवा औरत किसीके साथ नाता करलेवे तो पहिले पतिके रिश्तेदार नाता करने वालेसे मामूली दापा लेते हैं, इसके सिवा औरतका बाप भी कुछ हिस्सह लेता है. अगर कुंवारी लड़कीको कोई उड़ा लेजावे, तो लड़कीका बाप दापेका मामूली रुपया लेकर फ़ैसला करलेता है. इन लोगोंको खानेके लिये मक्की, जुवार, और जव तो कम, लेकिन् कूरी, कोदरा, माल, और शमलाई, अधिक मिलता है, जो कि एक क़िस्मका जंगली नाज है; इसके अलावह महुवेको उबालकर खानेमें ये लोग बहुत खुश होते हैं. आम और महुवा इनकी बड़ी जायदाद है. सर्कारी फ़ौजकी चढ़ाईके समय आम और महुवे काटेजानेपर ये लोग जल्द ही सुलह करलेते हैं. ग़मीके वक्त एक तरहके जंगली गृहस्थ सन्यासी इनके यहां क्रिया कर्म करवाते हैं, जिनको ये लोग बाबा कहते हैं. द्वादशाहके दिन जवकी दो दो बाटी मनुष्य प्रति अपनी जाति वालोंको देते हैं, अथवा एक अंजलि भर मक्कीकी घूघरी देकर शराब पिलाते हैं, और बाज़े भैंसा मारकर मांस भी खिलाते हैं. इस समय हज़ारों भील भीलनियोंके गिरोह एकत्र होकर नाचते और

---

(१) संस्कृतमें बाणका नाम कांड है, और बाण धारण करने वालेको कांडी कहते हैं, लेकिन् अब यह शब्द भीलोंको हिक़ारतके साथ पुकारनेमें बोलाजाता है.

गाते भी हैं. नाचने गानेका इन लोगोंमें बड़ा शौक़ होता है. अगर किसी भीलनीका पति अच्छा नहीं नाचता हो, तो ऐसा भी होता है कि वह उसे छोड़कर अच्छे नाचने वालेके साथ नाता करलेती है. प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ल १५ को हरएक ख़ानदानके लोग एकट्ठे होते हैं, और हरएकके बदनमें अपने अपने पूर्वजोंका भाव आता है. ये सब आदमी शराब पीकर खूब उछलते कूदते हैं, और हरएक कहता है, कि मैं अमुक पूर्वज हूं, और मुझे अमुक पालवालेने मारडाला था, जिसका बदला नहीं लिया गया. अगर उस हालतमें उक्त पालके भील मौजूद हों, तो फ़साद भी होजाता है.

कल्याणपुरके ज़िलेमें ओवरी गांवके भील मसार कहलाते हैं, जो अपनी निस्बत यह क़िस्सह बयान करते हैं, कि हम धारके पुंवार राजाकी औलाद हैं, जिसके दो बेटे १- मसार और २- डामर थे, जिनमेंसे मसार ओवरीमें और डामर धनकावाड़ामें आरहा. हम लोग कुटुम्ब अधिक बढ़जानेके कारण खेती करते वक़ बैलकी पूंछ मुंहमें लेनेसे बिटल गये, बाद उसके भीलोंमें शादियां करनेसे भील होगये, और बापा नाम अलग अलग गोत होगये, जिनके नाम ये हैं:- हीरोत, तेजोत, और नीबोत. धनकावाड़ाके डामरोंके गोत ये हैं:- खेतात, रतनात, अमरात, मतात, जोगात, रंगात, और नीक्यात.

पारड़ावाले कहते हैं, कि हम पहिले गूजर थे और यहां आरहनेके बाद भीलोंमें शादियां होनेसे भील होगये; हमारी जाति बूज है.

महुवाड़ा, खेजड़, और सराड़ा वाले पारगी जातके भील हैं. ये कहते हैं, कि हम चित्तौड़के उत्तम क़ौमके बाशिन्दोंमेंसे थे. वहांसे हम लोग झाड़ोलमें आरहे और झाड़ोल से पीलाधर और वहांसे खेजड़में आये, जहांपर रोझको मारकर उसका मांस खालेने तथा भीलोंमें शादियां होजानेसे भील बनगये. हम लोग सराड़ाके रखेश्वर महादेवको मानते हैं.

देपराके भीलोंका बयान है, कि पहिले हम सीसोदिया राजपूत थे, पहाड़में आरहने के समयसे भील लोगोंमें विवाह करने लगगये; लेकिन् ख़राब खानेमें हम उनके शामिल नहीं होते, और हम ग्रासिया भील कहे जाते हैं. पडूणा, खरवड़, मांडवा, जावर, चीणा-वदा, सरू, लींबोदा, सींगटवाड़ा, अमरपुरा, और देरवास वगैरह पालोंके भील अपनेको रावत् पूंजाके वंशमेंसे बतलाते हैं. और कहते हैं, कि पहिले हम सीसोदिया राजपूत थे, पहाड़में आरहनेके बाद सांभर (शामर) के भ्रममें गायको मारकर खाजानेसे भील होगये. हम खराड़ी जातके भील हैं, और ऋषभदेव, भैरव, हनुमान तथा अंबा भवानीको मानते हैं.

बीलक वाले अपनेको चहुवान राजपूतोंकी हाड़ा शाखमेंसे बतलाते हैं, और कहते हैं, कि हमारे मूल पुरुष हाड़ौतीसे आये थे, और दुष्कालके सबब बिटलकर भील होगये.

अब हम लोग अहारी नामसे प्रसिद्ध हैं. इसी तरह कागदरके भील अपनेको राठौड़ बतलाकर पीछेसे भील होना बयान करते हैं. नठारा, और बारापालके भील कटार नामसे मश्हूर हैं, पहिले ज़मानहमें ये अपनेको चहुवान राजपूतोंमेंसे होना बतलाते हैं. हमारे ख़यालसे ऐसा मालूम होता है, कि जब बौद्धोंके भयसे बहुतसे क्षत्रिय अर्वली पहाड़में आकर छुपे, उसी समय राजपूतोंका पैवन्द इन भीलोंके साथ हुआ होगा, लेकिन् समयका पूरा पता लगना कठिन है. अर्वलीके पश्चिमोत्तरमें रहने वाले भील गराया (ग्रासिया) कहलाते हैं, और जिस ज़िलेमें वे रहते हैं वह नायरके नामसे प्रसिद्ध है. नायरसे दक्षिण तरफ़ भाडेरका ज़िला है, और उससे पूर्व सोम नदीके किनारेतकका हिस्सह छप्पन कहलाता है. उदयपुरसे केवड़ाकी नाल और जयसमुद्रके बीच वाले मन्पोलनामक पर्वतसे पूर्वका ज़िला मेवलके नामसे मश्हूर है. केवड़ाकी नालसे पश्चिम ज़िलेके रहने वाले भील, और पूर्वमें प्रतापगढ़की सीमातक रहने वाले मीना कहलाते हैं.

इन भीलोंमें रहनेवाले भोमिया लोग अपनेको राजपूत कहते हैं, लेकिन राजपूतोंके साथ उनका खाना पीना या शादी व्यवहार नहीं है. इन लोगोंका सविस्तर हाल बांसवाड़ा व प्रतापगढ़के असिस्टैंएट पोलिटिकल एजेएट कप्तान सी० ई०येट साहिब, और कप्तान जे० सी० ब्रुक साहिब तथा कर्नेल् सी० के०एम० वाल्टर साहिबने अपनी अपनी किताबोंमें लिखा है. ये लोग महाराणा साहिबकी दीहुई जागीरें खाते हैं, और उदयपुरमें टांका भरनेके सिवा फ़ौजका काम पड़नेपर अपनी अपनी जमइयतके अलावह अपने मातहत भीलोंको भी हाज़िर करते हैं. मेवाड़के मगरा ज़िलेमें तीन क़ौमके भोमिया हैं- अव्वल चहुवान, दूसरे सीसोदिया, और तीसरे सोलंखी. चहुवानोंमें दो शाखा हैं, एक बागड़िया और दूसरे पूर्विया. जवास, पाड़ा, छाणी और थाणाके भोमिया बागड़िया चहुवानोंसे निकले हैं. जवासकी जागीरमें ७०, पाड़ाकी जागीरमें ३९, छाणीकी जागीरमें ७, और थाणाकी जागीरमें ७ गांव हैं. छाणी और थाणा जवासके भाई हैं और इनकी जागीरें भी जवासके पट्टेसे ही निकली हैं. ये लोग अपना कुर्सीनामह माणकराव चहुवानसे मिलाते हैं. बागड़ियोंमें जवासका वर्तमान भोमिया रावत् अमरसिंह; पाड़ाका रावत् लछमणसिंह; छाणीका भोमिया गुमानसिंह; और थाणाका पर्वतसिंह है. दूसरा, पूर्विया चहुवानोंका ठिकाना जूड़ा है. इस ठिकाने वाले अपने पूर्वजोंका आना मैनपुरीसे बतलाते हैं. जूड़ाके पट्टेमें १३५ गांव हैं, और वर्तमान जागीरदार रावत् ज़ोरावरसिंह हैं. सीसोदियोंका ठिकाना मादड़ी है. ये लोग अपना कुर्सीनामह रावत् सारंगदेवसे मिलाते, और अपनेको कानोड़के भाई बतलाते हैं. इनकी जागीरमें २३ गांव हैं, और वर्तमान रावत्का नाम रघुनाथसिंह है. तीसरे दो मुख्य सोलंखी भोमिया पानड़वा और

ओगणा वाले हैं. पानड़वाकी जागीरके गांवोंकी तादाद ४८ है. ये लोग अपना कुर्सीनामह अनहलवाड़ा पट्टनके राजा सिद्धराज सोलंखीसे जा मिलाते हैं, और कहते हैं कि लोहियाना छोड़कर हमारे पूर्वज ७ भाई, याने १- अक्षयसिंह, २- उदयसिंह, ३- अनोपसिंह, ४- जैतसिंह, ५- किशनसिंह, ६- जगत्सिंह, और ७- रूपसिंह पहाड़में चलेआये थे, जिनमेंसे जैतसिंहकी औलाद तो ग्रासिया भील हैं और अक्षयसिंह वगैरह दूसरे भाइयोंकी औलादमें हम हैं. पानड़वा वाला कहता है, कि पहिले मेरे पूर्वज रावत् कहलाते थे, परन्तु बादशाहके साथ लड़ाइयां होनेके वक्त अच्छी नौकरी देनेके कारण महाराणा प्रतापसिंहने राणाका ख़िताब बख़्शा. यहांके वर्तमान जागीरदारका नाम अर्जुनसिंह है. ओगणाकी जागीरमें ४५ गांव हैं. इस ठिकानेका वर्तमान जागीरदार अमरसिंह है, जो रावत् कहलाता है. पानड़वा वाले और यह एकही ख़ानदानमेंसे हैं. इसके सिवा पानड़वाके भाइयोंमें ऊमरया, आदीवास, और ओड़ा नामके तीन और भी जागीरदार ठिकाने हैं; जिनमेंसे ऊमरयाके तह्तमें २३ गांव, आदीवासके १० गांव और ओड़ाके ११ गांव हैं, जो इनको पानड़वा के पट्टेसे मिले हैं. ऊपर लिखे हुए ठिकानोंकी भायपमेंसे छोटे छोटे जागीरदार और भी हैं, लेकिन् हमने उनके नाम मज़्मूनको तवालत होनेके सबब नहीं लिखे. मेवाड़के राज्यमें विक्रमी १९४७ [हि० १३०८ = ई० १८९१] की मर्दुमशुमारीके तख़्मीनेसे १३४४२९ भील हैं, जिनकी तफ़्सील इसतरहपर हैः-

भीलोंकी तादादका तख़्मीनह.

१	उदयपुर	२८८३	६	बानसी	४२०४
२	गिरवा	१२३९३	७	भाड़ोल	६३८१
३	मगरा, सराड़ा	२४३३२	८	धरयावद	२३८१५
४	सलूंबर	८२५३	९	खैरवाड़ा, भोमट	३४१६९
५	कानोड़	४१६६	१०	कोटड़ा, भोमट	१३८३३

मीनोंका हाल.

मीना लोग मेवाड़के ज़िले जहाज़पुर और मांडलगढ़के पर्गनोंमें कस्रत से आबाद हैं. हमने इनका मुफ़स्सल हाल रॉयल एशियाटिक सोसाइटी बंगाल (कलकत्ता) के जर्नल सन् १८८६ ई० में लिखा है, और यहां मुख्तसर तौरपर लिखते हैं:-

'मीना' शब्द 'मेवना' से बना है, जिसका अर्थ मेवका, अथवा मेवके वंशका है. मेव (मेद) एक पुरानी कौम है, जो पहिले मेवाड़के मेवल प्रांतमें रहती थी, और 'ना' गुजराती भाषाका प्रत्यय है, जो हिन्दी भाषाके प्रत्ययकी जगहपर आता है. मीनोंकी उत्पत्ति उत्तम वर्णके पुरुष और नीच वर्णकी स्त्रीसे है. इन लोगोंकी १४० शाखा हैं, उनमेंसे नीचे लिखी हुई १७ शाखा मुख्य हैं:-

१- ताजी, २- पवड़ी, ३- मोरजाला, ४- चीता, ५- हुणहाज, ६- बरड़, ७- बेगल, ८- काबरा, ९- डांगल, १०- घरटूद, ११- भूड़वी, १२- कीड़वा, १३- धोर्धींग, १४- भील, १५ बोपा, १६- मोठीस, और १७- परिहार (पड़िहार). इन १७ मेंसे दो शाखावाले याने मोठीस और परिहार मेवाड़के .इलाक़हमें बहुत फैले हुए हैं. इनके सिवा केवड़ाकी नाल और जयसमुद्रके पूर्व प्रतापगढ़की सीमातक रहनेवाले भी मीने कहलाते हैं, लेकिन् ये लोग भीलोंमें शादी करलेते हैं, इसलिये इनको कितनेएक लोग भील भी कहते हैं; परन्तु भीलोंकी और इन (मीनों) की चाल ढाल और कुछ कुछ शरीरकी बनावटमें भी फ़र्क़ है. मीनोंका एक फ़िर्क़ा उदयपुरसे वायव्य कोण ज़िले गोड़वाड़में आबाद है, जो ज़िला कुछ वर्ष हुए मेवाड़से मारवाड़में चलागया है. इन सबमें जहाज़पुर और मांडलगढ़के मीने बहादुर और नामी लुटेरे हैं. ये लोग तलवार, कटार, तीर, कमठा, और बन्दूकें भी रखते हैं. लड़ाईके वक्त जिसतरह भील किल्कारी करते हैं उसी तरह खैराड़के मीने डुडकारी याने डू डू डू डू करते हैं, और इनको ढेढ़ कहकर पुकारनेमें ये अपनी हिक़ारत समझते हैं. ये लोग महादेवको ज़ियादह मानते हैं. परिहार मीने सूअर नहीं खाते, बाक़ी सब प्रकारका मांस खाते हैं, परन्तु मोठीस वगैरह दूसरी कौमके मीने सूअरको भी खाजाते हैं. मोठीस मीने अपने पूर्वज माला नामी जुझारको बहुत मानते हैं, और अक्सर सौगन्ध भी उसीकी खाते हैं. सन् १८९१ .ई० की मर्दुमशुमारीमें मेवाड़के मीनोंकी तादाद २००३२ गिनी गई है.

मेरोंका हाल.

मेर लोग अपनी उत्पत्तिका हाल कहानीके तौरपर बयान करते हैं, जिसपर हम

पूरा पूरा भरोसा नहीं कर सके. इस कौमका हाल अच्छी तरह दर्याफ्त नहीं किया-गया, इसलिये नीचे लिखा हुआ हाल स्केच ऑफ़ मेरवाड़ा नामकी किताबसे मुख्तसर तौरपर लिखाजाता हैः-

मेर लोग अपनी उत्पत्ति अजमेरके राजा पृथ्वीराज चहुवानसे इस तरहपर बतलाते हैं, कि एक दफ़ा पृथ्वीराजने बूंदीपर हमलह किया था उस वक्त वहांसे तीजकी पूजा करती हुई सहदे नामक एक लड़कीको जो आसावरी जातिकी मीनी थी, पकड़कर लेगया, और उसे हाड़ा राजपूतकी लड़की जानकर अपने बेटे जोध लाखणको सौंपदी. जोध लाखणसे उसके अनहल और अनूप नामके दो लड़के पैदा हुए. कई वर्ष पीछे जब जोध लाखणको सहदेकी कुलीनतामें सन्देह हुआ, और उसने इस विषयमें उससे पूछा, तो सहदेने अपनेको आसावरी जातिकी मीनी होना बयान किया. इसपर जोध लाखणने नाराज़ होकर सहदेको उसके दोनों लड़कों समेत निकालदिया. तब वह अपने दोनों बेटों सहित मेरवाड़ा ज़िलेके चंग ग्राममें चंदेला गूजरोंके पास आरही. पांच पीढ़ीतक अनहल और अनूपके वंशवाले उसी ग्राममें रहते रहे, और अख़ीरमें वहांके गूजरोंको मारकर वह ग्राम (चंग) उन्होंने छीन लिया. अनहलकी पांचवीं पीढ़ीमें कान्हा और काला नामके दो लड़के पैदा हुए, जिनमें कान्हासे चेता और काला से बड़ नामी दो शाखा निकलीं. इसके पीछे जोध लाखणके वंशवालोंने कान्हा और कालाको उनके साथियों सहित मारडालनेके लिये चंगपर फ़ौज भेजी, उस समय कान्हा और काला वहांसे भागकर टॉडगढ़ ज़िलेके चेटण ग्राममें जावसे, और वहां जानेके बाद इन दोनों (कान्हा और काला) के वंशवाले आपसमें विवाह सम्बन्ध करने लगगे. कुछ दिनों पीछे काला तो मेवाड़के कैलवाड़ा ग्राममें जारहा, और कान्हा पीछा चंगमें चलाआया, पीछे इसके वंश वालोंने मीना, भील, और धाकड़ मीना आदि जातियोंकी लड़कियोंसे विवाह करना शुरू करदिया. इस तरहपर २४ शाखा कान्हाके वंशवालों (चेतों) की और २४ काला (बड़ों) की मिलाकर मेरोंकी ४८ शाखा हुईं.

चेता वंशमेंसे हीरा नामी एक मेर बादशाह आलमगीरके ज़मानहमें दिल्ली जाकर बादशाही नौकरी करने लगा, वहांपर अच्छी नौकरी करनेके सबब उसको 'कट्टा' (मज़्बूत) का ख़िताब मिला, और इसके बाद वह बादशाहको खुश करनेके लिये मुसल्मान होगया, फिर उसने चंगमें वापस आकर अपनी औलादको भी मुसल्मान बनादिया. इसी तरह इलाके अजमेरके करील गांवमें रहनेवाला एक दूसरा ख़ानदान भी मुसल्मान होगया, जिसने ज़िले अजमेरमें कई गांव अलाउद्दीन गौरीसे जागीरमें पाये. इस रीतिसे ये लोग मेर जातिमेंसे मुसल्मान हुए.

इस जातिके विषयमें ऐसा भी कहते हैं, कि जोध लाखण और सहदेकी औलादके सिवा मेरोंकी कई एक शाखें उत्तम वर्णके लोगोंसे बनी हैं, जो किसी सबबसे पहाड़ोंमें आबसने और मेरोंके साथ रहनेसे इन लोगोंमें मिलगये, जिसका हाल इस-तरहपर कहागया है, कि अलाउद्दीन गोरीने जब चित्तौड़पर हमलह किया, और मेवाड़को लूटा, उस समय गुहिलोत वंशके दो राजपूत भागकर मेरवाड़ा ज़िलेमें सारोठके पास बूरवा ग्राममें जाबसे, उनमेंसे एकने वहांपर मीना जातिकी स्त्रीसे शादी करली, और उसके बारह बेटे हुए जिनसे बारह शाखें उत्पन्न हुईं; और दूसरा भाई अजमेरके ज़िलेमें जारहा, जो भी उसके हाथसे गोहत्या होजानेके सबब भागकर पहाड़ोंमें जा रहा, और उससे मेरोंकी ६ शाखा निकलीं.

मोठीसोंकी उत्पत्तिके विषयमें ऐसा कहते हैं, कि भायलां ग्राममें रुगदास नामी वैरागी के पास एक वनजारी औरत रहती थी, जिसके दो बेटे पैदा हुए, उस वनजारीने उनको रुगदासकी औलाद होना ज़ाहिर किया. इसपर रुगदासने उस औरतको लड़कों समेत अपने यहांसे निकाल दिया, तब वह वनजारी एक ब्राह्मणके घर जारही. जब लड़के बड़े होगये, तो ब्राह्मणने उन्हें गऊ चरानेपर मुक़र्रर किया, परन्तु उन लड़कोंने एक गाय मारडाली इस सबबसे उस ब्राह्मणने भी उनको अपने घरसे निकाल दिया. इन लड़कोंकी पांचवीं पीढ़ीमें माकूत नामी एक शख़्स पैदा हुआ, जिसने ज़िले भायलांके तमाम ब्राह्मणोंको मारकर उस ज़िले पर अपना क़बज़ह करलिया. माकूतको उसके वंशके (मोठीस) लोग अबतक पूजते हैं; पहिले ये लोग वर्षमें एक बार उसके मन्दिरमें गौका बलिदान किया करते थे. माकूतके हाथसे बचा हुआ एक ब्राह्मण बरड़ ग्रामके धाकड़ मीनोंमें जाबसा था, और वहांपर उसने मीना जातिकी स्त्रीके साथ विवाह करलिया, जिससे धाकड़ मेरोंकी कई शाखें उत्पन्न हुईं.

मेर लोग अपनेको हिन्दू बतलाते हैं, परन्तु हिन्दू धर्मके नियमोंपर पूरे पाबन्द नहीं हैं. वे देवी, देवजी, आलाजी, शीतला माता, रामदेवजी और भैरवको पूजते हैं; और होली, दिवाली तथा दशहराका त्यौहार मानते हैं. उनकी ख़ास ख़ुराक मक्की, जव, और भेड़ी, गाय, बकरा तथा भैंसेका मांस है. मेर लोग सूअर, हरिन, मछली और मुर्गेका मांस नहीं खाते. इस क़ौममें विवाह सम्बन्ध वगैरह हिन्दुओंके मुवाफ़िक़ ही होते हैं. यदि कोई इनके यहां मरजावे तो ये उसका कस्यावर करते हैं, जिसमें अपनी सब जातिको बुलाते हैं. ये लोग भूत डाकिन वगैरहको भी मानते हैं. पहिले ज़मानहमें मेर लोग अपने लड़के लड़कियां और ख़ासकर औरतोंको गाय भैंसकी

तरह बेचदिया करते थे, बल्कि यह भी रवाज था, कि बापके मरनेके पीछे बेटा अपनी माताको बेचदेता. इसके सिवा ये अपनी लड़कियोंको मार भी डाला करते थे; परन्तु इस समय लड़कियोंका मारना वगैरह बहुतसी बुरी रस्में बन्द करदीगई हैं. इन लोगोंमें बड़ा भाई छोटे भाईकी विधवा स्त्रीको घरमें नहीं डाल सक्ता, परन्तु छोटा भाई बड़े भाईकी औरतसे नाता करलेता है. विवाहमें लग्नके वक़ ये लोग गुरुको ७), ढोलीको ४०) और बेटीके बापको १०६) रुपये देते हैं. ख़ाविन्दके मरजानेपर उसका बारहवां होनेके पीछे औरतके सामने लाल और सिफ़ेद रंगकी दो ओढ़नियां डालदीजाती हैं, अगर वह लाल चूंदड़ी पसन्द करे, तो समझलियाजाता है, कि नाता करनेकी इच्छा रखती है, और उसका देवर उसको अपने घरमें डाललेता है. अगर वह औरत अपने देवरके घरमें रहना न चाहे, तो दूसरेसे नाता करसक्ती है, परन्तु इस हालतमें नाता करनेवाला उसके हक़दार वारिसको २००) से ५००) तक रुपये देता है. अगर स्त्रीकी इच्छा नाता करनेकी नहीं होती, तो वह सिफ़ेद ओढ़नी पसन्द करलेती है.

मेर जातिमें यह क़ाइदह है, कि ये लोग अक्सर कोई दुःख अथवा आपत्ति आन पड़नेपर सर्दार लोगोंके यहां जाकर उनके ग़ुलाम हो जाते हैं, जो तीन प्रकारके होते हैं, एक चोटीकट, दूसरे बसी अथवा बसीवान, और तीसरे अंगुलीकट. जो शख़्स चोटीकट ग़ुलाम बनना चाहता है वह अपनी चोटी काटकर सर्दारको देदेता है, और वह सर्दार उसको अपनी रक्षामें रखलेता है. चोटीकट ग़ुलामकी ग़ैर मौजूदगीमें उसकी तमाम जायदाद और माल अस्बाबका मालिक सर्दार होता है, बल्कि चोटीकट अपनी कमाईका चौथा हिस्सह अपने मालिकको देता रहता है. बसीवान और चोटीकटमें केवल इतना भेद है, कि बसीवानकी बाबत् लिखापढ़ी होती है और चोटीकटमें सिर्फ़ चोटी ही काटदी जाती है. इसके सिवा यह भी बात है, कि सब जातियोंकी तरह बसीवान तो मुसल्मान शख़्स भी होसक्ता है, परन्तु (चोटी न रखनेके कारण) वह चोटीकट नहीं होसक्ता. अंगुलीकट ग़ुलाम वह कहलाता है, जो ग़ुलाम बननेके समय अपने हाथकी अंगुली काटकर मालिकके हाथमें थोड़ासा लोहू टपका देता है, और इसके बाद मालिक और ग़ुलामके बीचमें बाप बेटेकासा भाव माना जाता है; परन्तु अंगुलीकटके माल जीविकापर मालिकका दावा नहीं होसक्ता.

मेरोंमें यह क़ाइदह है, कि ग़ुलाम अपने मालिककी जायदाद समझा जाता है; और यह भी दस्तूर है, कि एक मालिकके लौंडी ग़ुलाम आपसमें भाई बहिनके समान माने जाते हैं, उनके आपसमें विवाह नहीं होता.

मेर लोग मरनेमें बड़े बहादुर होते हैं, वे अपनी और दूसरेकी जानको कुछ ख़यालमें

नहीं लाते. औरतकी .इज़्ज़त बिगाड़ने वालेको ये जानसे मारडालते हैं, शस्त्रोंमें तलवार और ढाल रखते हैं, और वैर पीढ़ियोंतक नहीं भूलते. ये लोग बड़े मिहनती, मज़्बूत, चालाक और शरीरमें लम्बे चौड़े तथा पुष्ट होते हैं, और किसी बातसे नहीं डरते, यहांतक कि शेरपर तलवारसे वार करते हैं, परन्तु बहादुरीका घमंड नहीं जताते.

हमने ऊपर लिखी हुई जंगली क़ौमोंका हाल मुरूतसर तौरपर लिखा है, जिनसे चारों तरफ़ मेवाड़का .इलाक़ह घिरा हुआ है. इन क़ौमोंके अ़लावह जंगलमें रहने वाले वनजारा, कालबेलिया, सांसी, साटिया, कांजर, बागरिया, और लुहार वग़ैरह और भी लोग हैं, जो सदैव एक स्थानपर जमकर नहीं रहते बल्कि .इलाक़ोंमें फिरते रहते हैं.

वनजारोंमें कई भेद हैं, जिनमें तीन मुख्य मानेजाते हैं- हैवासी, गवारिया और भाट. हैवासी मुसल्मान, और गवारिया नीच जातिमेंसे हैं. ये लोग बैलोंपर नमक और नाज वग़ैरह लादकर दूर दूर मुल्कोंमें पहुंचाते, और जंगलमें तम्बू तानकर रहते हैं.

कालबेलिया लोग, जो कापालिक मतके नाथ जोगी कहलाते हैं, केवल नामके जोगी हैं, वर्नह अस्लमें इनको नीच जातिमेंसे समझना चाहिये. ये लोग सांपोंको पकड़कर बांसके पिटारोंमें लिये फिरते हैं, जिनको लोगोंके सामने पूंगी बजाकर खिलाते, और ख़ास इसी ज़रीएसे रोटी टुकड़ा या पैसा वग़ैरह मांगकर अपना गुज़र करते हैं. इन लोगोंमें भैंसा वग़ैरह हरएक जानवरका मांस खाते और शराब पीते हैं. बाज़े लोग इनमें अच्छे बन्दूक़ लगाने वाले शिकारी भी होते हैं. इनके रहनेकी कोई ख़ास जगह नहीं है, बस्तीसे दूर जंगलमें जहां कहीं जी चाहता है रहते हैं.

सांसी और साटिया, ये दोनों क़ौमें चालचलन और रीति व्यवहारमें एकसी हैं, जो कांजरोंकी तरह जंगलमें रहती और बस्तियोंमेंसे रोटी टुकड़ा मांगकर या भंगियों के यहांकी जूठन (उच्छिष्ट भोजन) से अपना पेट भरती हैं. साटियोंमें अगर्चि कई लोग मालदार होते हैं, तो भी वे अपने दूसरे जातिवालोंकी तरह बस्तीके टुकड़े खाकर और सिर्फ़ एक लंगोटी पहरकर गुज़र करते हैं. इनमें यह एक विचित्र दस्तूर है, कि गाय, भैंस और बैल वग़ैरह जानवरोंके एवज़ आपसमें एक दूसरेकी औरतको लेते देते हैं, और इसके सिवा कुछ रुपया लेकर बूढ़ी .औरतके .एवज़ जवान .औरत बदल देनेका भी रवाज है. ये लोग चोरी और डकैती भी करते हैं.

कांजर असलमें गूजर और मीनोंके भाट हैं, जो उन लोगों की वंशावली ज़बानी तौरपर याद रखते हैं, और इनकी स्त्रियां नट विद्याके तमाशे करती हैं. इन लोगोंमें बहती हुई नदीका पानी नहीं पीते, इनका ख़याल है, कि नदीका पानी पीनेसे वंशावली याद नहीं रहती. इनकी लड़कियां जो खिलावड़ी कहलाती हैं तीस तीस वर्षकी होनेपर व्याही जाती हैं, और जबतक बापके घर रहती हैं अपनी सारी कमाई, याने नाच गाकर बस्तीमेंसे जोकुछ रोटी टुकड़ा, नाज और पैसे वगैरह मांग लाती हैं, मा बापोंको ही देती हैं. इनका पहराव सूथन याने पायजामा और दुपट्टा (ओढ़नी) है. जब ये लड़कियां नाचती हैं तो मर्द इनके साथ ढोलकी बजाते हैं. कालबेलियों और सांसियोंकी तरह ये भी सरकियां तानकर जंगलमें रहते हैं, और मौक़ा पाकर चोरी भी कर बैठते हैं.

बागरिया - इन लोगोंका चाल चलन अक्सर सांसी और साटिया लोगोंके मुवाफ़िक़ ही है, लेकिन् सुना जाता है, कि इनकी औरतें व्यभिचार नहीं करतीं. जब किसी अवसरपर ये लोग एकट्ठे होते हैं, तो लोहेकी कढ़ाईमें तेल औटाकर उसमें एक छल्ला डालदेते हैं, जिसको हरएक औरत उस औटते हुए तेलमेंसे निकालती है. इन लोगोंका ख़याल है, कि जिस औरतने व्यभिचार किया होगा, उसका हाथ जलेगा, और जिसका हाथ जल जाता है उसको बिरादरीके लोग दण्ड देते हैं. ये लोग भी जंगलोंमें रहते और टुकड़े मांग खाते हैं.

गाड़ोलिया लुहार, जो घर बनाकर एक जगह नहीं रहते, किन्तु गाड़ियोंमें अपना डेरा डांडा लादकर ऊपर लिखी हुई जातियोंकी तरह जगह जगह फिरते रहते हैं, लोहेकी घड़ाईसे गुज़र करते हैं. ये कहते हैं, कि हम पहिले ज़मानहमें चित्तौड़-गढ़पर बस्ते थे, लेकिन् जब मुसल्मानोंके हमलोंसे चित्तौड़ ऊजड़ होगया, तो हम भी वहांसे निकल भागे; अब जबकि मेवाड़के महाराणा चित्तौड़को फिरसे राजधानी बनाकर राज्य करेंगे उस समय हम भी वहां घर बनाकर रहेंगे.

अब हम यहांपर हिन्दुस्तानकी जातियोंके विषयमें थोड़ासा हाल यूनानके एल्ची मेगस्थिनीज़का लिखा हुआ दर्ज करते हैं, जो उसने हिन्दुस्तानमें आनेके समय लिखा था.

वह लिखता है, कि इस समय हिन्दुस्तानमें ७ जाति विभाग हैं, जिनमें पहिला

वर्ग फ़ेल्सूफ़ लोगों (तत्ववेत्ता) का है. ये दरजेमें सबसे अव्वल हैं, परन्तु संख्यामें कम हैं. इनके द्वारा सब लोग यज्ञ या धर्म सम्बन्धी कार्य करते हैं. राजा लोग नये वर्षके प्रारम्भपर सभा करके इनको बुलाते हैं, जहां ये अपने किये हुए उत्तम कामोंको प्रगट करते हैं.

दूसरा वर्ग कृषिकारों (खेती करनेवालों) का है, जो ज़मीनको जोतते बोते हैं, और शहरमें नहीं रहते. इनका रक्षण लड़ने वाली कौमें करती हैं.

तीसरा वर्ग ग्वाल और शिकारियोंका है. ये लोग चौपाये रखते, शिकार करते, और बोये हुए बीज खाने वाले जानवरोंको मारते हैं, जिसके .एवज़में उनको राज्यकी तरफ़से नाज मिलता है.

चौथे वर्गमें वे लोग हैं, जो व्यापार करते, बर्त्तन बनाते, और शारीरिक मिह्नत करते हैं. इनमेंसे कितनेएक लोग अपनी आमदनीका कुछ हिस्सा राज्यको देते हैं, और मुक़र्रर कीहुई नौकरी भी करते हैं. शस्त्र और जहाज़ बनाने वालोंको राज्यकी तरफ़से तनुख्वाह मिलती है. सेनापति सिपाहियोंको शस्त्र देता है, और नौका – सेनापति मुसाफ़िरों तथा व्यापारकी चीज़ोंको एक जगहसे दूसरी जगह पहुंचानेके लिये जहाज़ किराये देता है.

पांचवां वर्ग लड़ने वालोंका है. जब लड़ाई नहीं होती है, तो उस हालतमें ये लोग अपना वक्त नशे और सुस्तीमें गुज़ारते हैं, और इनको कुल खर्च राजाकी तरफ़से मिलता है, इस कारण जिसवक्त लड़ाई हो उसवक्त जानेको तय्यार होते हैं.

छठा वर्ग निगरानी रखने वालोंका है. ये लोग सब जगहकी निगरानी रखकर राजाको गुप्त रीतिसे ख़बर देते हैं. इनमेंसे कितनेएक शहरकी और कितनेएक सेनाकी निगरानी रखते हैं. सबसे लाइक़ और भरोसे वाले आदमी निगरानीके .उह्दोंपर रक्खे जाते हैं.

सातवां वर्ग वह है, जिसमें राजाके सलाहकार या सभासद होते हैं, जो इन्साफ़ वग़ैरह बड़े बड़े कामोंप नियत कियेजाते हैं.

इन फ़िर्क़ोंमेंसे न कोई अपनी जातिके बाहिर शादी करसक्ता, न अपना पेशह (वृत्ति) छोड़कर दूसरोंका पेशह इख्तियार करसक्ता, और न एकसे ज़ियादह पेशह करसक्ता है, परन्तु फ़ेल्सूफ़ (तत्ववेत्ता) लोगोंके लिये यह नियम नहीं है, क्योंकि उनको अपने सद्गुणोंके सबब इतनी आज़ादी है.

अब हम क़ौमोंका हाल पूरा करनेके बाद सर्व साधारण तौरपर हिन्दुस्तानका रीति रवाज लिखते हैं, जिससे पाठकोंको मालूम होगा, कि पुराने ज़मान. और ज़मान.

हालके रीति रवाजमें कितना फ़र्क़ पड़गया है. सिकन्दरके साथी जहाज़ी सेनापति नियार्कस और पंजाबके गवर्नर शेल्यूकसके एल्ची मेगस्थिनीज़के लेखका जो खुलासह आरियन लिखता है, उसका सारांश हम नीचे लिखते हैं:-

हिन्दुस्तानके लोग अनपढ़ आदमियोंको ज़ियादह पसन्द नहीं करते, उनके यहां चोरी बहुत कम होती है. चंद्रगुप्तकी छावनीमें ४००००० आदमी रहते थे, परन्तु वहां एक दफ़ा सिर्फ़ २०० द्रम्म (१) की चोरी हुई थी; लेन देनमें हिसाब किताब, गवाही, ज़मानत या मुहर करनेकी कुछ ज़रूरत नहीं रहती, और न उनको अदालत में जाना पड़ता है. लेन देनका काम विश्वासपर चलता है, उनके घर और जीविकाकी हिफ़ाज़तके लिये पहरा चौकी नहीं रखना पड़ता; वे शरीरको मुद्गर वगैरह फिराकर श्रम देते हैं, ज़ेवर पहिनना और शरीरकी शोभा दिखलाना ज़ियादह पसन्द करते हैं; उनके अंगरखे सुनहरी कामके और रत्नजड़ित होते हैं; ख़िद्मतगार लोग छत्री लेकर इनके पीछे पीछे चलाकरते हैं, और ये हर तरहसे अपने चिहरेको ख़ूबसूरत रखनेकी कोशिश करते हैं; सत्य और सद्गुणकी .इज़्ज़त बराबर करते हैं, और बहुतसी औरतोंसे शादियां करते हैं. यज्ञके वक़्त कोई सिरपर मुकुट नहीं रखता, और यज्ञ पशुको सांस रोककर मारते हैं (२), झूठी साक्षी देने वालोंको बड़ी सज़ा होती है; यदि कोई किसीका अंग भंग कर-डाले, तो इस अपराधके एवज़ उसका वही अवयव ख़ारिज कियाजानेके सिवा सज़ाके बदलेमें एक हाथ भी काटडाला जाता है; कारीगरका हाथ काटने और आंख फोड़नेपर अपराधीको मौतकी सज़ा होती है. इनके यहां बहुधा गुलाम नहीं रक्खे जाते (३), राजाके शरीरकी

---

(१) यह साढ़ेतीन माशा वज़नका एक चांदीका सिक्का है.

(२) इसके मुंहमें जव और तिल भरकर दर्भसे मुंह बांधनेके बाद अण्डकोशपर मुक्की मारकर मारडालते हैं.

(३) हमारे धर्म शास्त्रके ग्रंथोंमें दास लिखे हैं, परन्तु वे गुलामोंकी तरह पराधीन नहीं थे, किन्तु नौकरकीसी स्वतन्त्रता रखते थे, और वे शास्त्रमें पन्द्रह तरहके लिखे हैं- १- गृहजातः (दासीपुत्र), २-क्रीतः (ख़रीदा हुआ), ३-लब्धः (मिलाहुआ), ४- दायप्राप्तः (हिस्सेमें आयाहुआ), ५-अन्नाकाल भृतः (दुष्कालमें पाला हुआ), ६-आहितः (गिरवी रक्खाहुआ), ७-मोक्षितः (क़र्ज़ेसे छुड़ाया हुआ), ८- युद्ध प्राप्तः (लड़ाईमें पकड़ाहुआ), ९-पणेजितः (जूएमें जीताहुआ), १०-स्वयंदासः (दिलसे दास बनने वाला), ११- सन्न्यास भृष्टः (सन्न्याससे भृष्ट हुआ), १२- कृतकः (किसी निमित्त अवधिके साथ दास किया हुआ), १३-भक्तदासः (प्रीतिसे दास हुआ), १४-वडवाहृतः (दासीके लोभसे दास हुआ), और १५ आत्म विक्रयी (ख़ुद बिका हुआ).

रक्षा औरतोंके आधीन है. राजा दिनमें नहीं सोते, और रातमें कई जगह बदलते हैं; सिवा लड़ाईके इन्साफ़, यज्ञ, और शिकारके लिये भी राजा महलोंसे बाहिर निकलते हैं. शिकारके वक्त बहुतसी औरतें राजाके पास रहती हैं, और उनके पीछे भालावाले आदमी रहते हैं. रास्तोंपर रस्सियां बांधी जाती हैं; ढोल नक़ारे वाले लोग आगे चलते हैं. ऊंचे बनेहुए स्थानसे जब राजा शिकारपर तीर चलाता है, तो दो तीन शस्त्रबंध औरतें उसके पास खड़ी रहती हैं, और चौड़ेमें हो, तो हाथीपर सवार होकर शिकार खेलता है. शिकारके समय स्त्रियां हाथी, घोड़े और रथोंपर सवार होकर साथ रहती, और सब प्रकारके शस्त्र रखती हैं. इन लोगोंमें सिवा यज्ञके सुरा नहीं पीते (१), और रूईके वस्त्र पहिनते हैं. नीचेकी पोशाक (धोती) घुटने और पिंडलीके बीचतक होती है, और एक दुपट्टा सिरपर बांधकर उसका कुछ हिस्सा कंधेपर डाललेते हैं. धनाढ्य लोग कानोंमें हाथीदांतके कुण्डल पहिनते हैं, और डाढ़ीको सिफ़ेद, आस्मानी, लाल, बैंगनी अथवा हरी, अपनी इच्छाके अनुसार रंगलेते हैं, और सिफ़ेद चमड़ेके मोटे तलेवाले जूते पहिनते हैं; लड़ाईके वक्त आदमीके क़दकी बराबर बड़ा धनुप और क़रीब तीन गज़ लंबा तीर पैदल आदमी काममें लाते हैं, और तीर छोड़ते वक्त धनुपको ज़मीनपर टेककर बाएं पैरसे दबाते हैं. हिन्दुस्तानियोंके तीरको ढाल, कवच वग़ैरह कोई चीज़ नहीं रोक सक्ती. चौड़े फलकी तलवार जो तीन हाथसे ज़ियादह न हो, हरएक आदमीके पास रहती है, और बाज़े भाला भी रखते हैं. नज़्दीकी लड़ाईमें तलवारको दोनों हाथोंसे पकड़कर मारते हैं. सवारोंके पास दो दो भाले रहते हैं. हिन्दुस्तानी आदमी क़दमें ऊंचे और पतले और कम वज़नके होते हैं. हाथीकी सवारी इनमें अव्वल दरजहकी गिनीजाती है, और दूसरे दरजेपर रथ, तीसरेपर ऊंट और इसके बाद घोड़ेकी सवारी है. जब लड़की व्याहनेके योग्य होती है, तो उसका पिता उसे आम लोगोंके सामने ले आता है, और दौड़ने तथा कुश्ती वग़ैरहके इम्तिहानोंमें जो शख़्स तेज़ निकलता है, उसीके साथ अपनी लड़कीको व्याह-देता है (२). यहांके लोग मांस नहीं खाते, नाजसे गुज़र करते हैं.

चीन देशके यात्री जो हिन्दुस्तानमें आये उन्होंने भी अपनी अपनी किताबोंमें हिन्दुस्तानके रीति रवाजका कुछ वर्णन किया है. ईसवी सन्की चौथी सदीके विपयमें

---

(१) सौत्रामणि यज्ञमें सुरा पीते थे.

(२) यह स्वयंबरकी रीति है, जो कि रामचंद्रने सीताको और अर्जुनने द्रौपदीको व्याहनेके समय की थी; प्राचीन समयमें यह रवाज ज़ियादहतर क्षत्रियोंमें था, जो आठ प्रकारके विवाहोंमेंसे एक है.

फ़ाहियान लिखता है, कि मध्य देशके लोग सुखी हैं, और उनपर कोई कर नहीं है. जो लोग राज्यकी ज़मीन बोते हैं वे अपनी आमदनीका कुछ हिस्सह राजाको देते हैं. राजा लोग अपराधियोंको मौतकी सज़ा नहीं देते, उनके कुसूरोंके मुवाफ़िक़ दंड देते हैं. बार बार उपद्रव करनेपर अपराधीका दाहिना हाथ काटडालते हैं. राजाके शरीरकी रक्षा करने वालोंको मुक़र्रर तनुख्वाहें मिलती हैं. चांडालोंके सिवा कोई आदमी जीतेहुए जानवरोंको नहीं मारते, न शराब पीते और न पियाज़ लहसुन खाते हैं. चांडाल लोग बस्तीसे अलग रहते हैं, और जब शहर या बाज़ारमें जाते हैं, तो बांसकी लकड़ी खटकाते हुए चलते हैं, कि जिससे उनको कोई भींटे नहीं. सिर्फ़ चांडाल लोगही शिकार करके मांस बेचते हैं.

दूसरा चीनी मुसाफ़िर ह्युएन्त्संग जो ईसवी सन् की ७वीं सदीमें हिन्दुस्तानमें आया था, लिखता है, कि यहांके लोगोंके वस्त्र काट छांटकर नहीं बनाये जाते, मर्द अपने पहिननेके कपड़ोंको कमरसे लपेटकर कन्धोंपर डाललेते हैं, औरतोंकी पोशाक ज़मीनतक लटकती रहती है, और वे अपने कन्धोंको ढक लेती हैं. ये लोग केशोंका थोड़ासा हिस्सा बांधकर बाक़ीको लटकते रखते हैं. कितनेएक आदमी मूछ कटवा डालते हैं, सिरपर टोपा और गलेमें फूलों तथा रत्नोंकी माला पहिनते हैं. इनके पहिननेके वस्त्र रूई, रेशम सण, और ऊनके बनेहुए होते हैं. उत्तर हिन्दुस्तानमें जहां ठंढ ज़ियादह पड़ती है, वहांके लोग तंग कपड़े पहिनते हैं. कई आदमी मोरपंख धारण करते हैं, कई खोपरियोंकी माला पहिनते हैं, और कितनेएक नंगे रहते हैं. कई ऐसे हैं, जो दरख़्तोंके पत्ते और छालसे अपना शरीर ढकलेते हैं. बाज़े लोग अपने केश उखेड़ डालते हैं, और मूछें कटवाडालते हैं. श्रमण लोगों (बौद्धोंके भिक्षु) के पहिननेके वस्त्र उनके मतोंके अनुसार न्यारे न्यारे तीन तरहके होते हैं; राजा और बड़े बड़े मंत्री लोग भी अलग अलग तरहके ज़ेवर और पोशाकें पहिनते हैं. धनाढ्य व्यापारी लोग सुवर्णके कड़े वगैरह ज़ेवर पहिनते हैं. वे लोग बहुधा नंगे पैर चलते, माथेपर चंदन लगाते, दांतोंको लाल और काले रंगते, केशोंको बांधते और कानोंको बींधते हैं.

इस समय मनुष्य बलि भी बाज़ बाज़ जगह होता था. ह्युएन्त्संगके जीवन-चरित्रमें लिखा है, कि जब वह अयोध्यासे रवानह होकर अस्सी मुसाफ़िरोंके साथ जहाज़में बैठकर गंगाके रास्तेसे हयमुखकी तरफ़ जारहा था, तो क़रीब १०० ली (१) दूर जानेपर अशोकवनकी एक छायामें डाकुओंकी १० किश्तियां छुपी हुई मिलीं,

(१) एक मील क़रीब क़रीब छः ली के बराबर होता है.

जिन्होंने आकर उनके जहाज़को घेरलिया, और माल असबाब लूटने लगे. ये डाकू दुर्गाके भक्त होनेसे मनुष्य बलि किया करते थे. उन्होंने ह्युएन्त्संगको शरीरका पुष्ट देखकर इस कामके लिये पकड़ लिया, और दरख़्तोंके एक कुंजमें तय्यारकी हुई वेदीपर लेगये, जहां डाकुओंके सर्दारने उसके मारनेके लिये दो आदमियोंको छुरी निकालनेका हुक्म दिया; जब वे मारनेको तय्यार हुए, ह्युएन्त्संग उनकी इजाज़तसे बोधिसत्व-मैत्रेयका स्मरण करने लगा. इतनेमें एकदम ऐसा तूफ़ान आया, कि दरख़्त गिरने लगे, चारों तरफ़से धूल उड़ने लगी, और नदीके पानीमें किश्तियां टकराने लगीं. इससे डाकू लोगोंने डरकर उसे छोड़दिया, और मुआफ़ी मांगी.

मनुष्य बलिका ऐसा ही हाल गोडवध काव्यमें विन्ध्यवासिनीके वर्णनमें लिखा है, और बाज़ बाज़ (१) मुल्कोंमें अंग्रेज़ी अमलदारीके प्रारम्भतक भी यह रवाज जारी था.

वर्तमान समयका रवाज राजपूतानहमें नीचे लिखे मुवाफ़िक़ है:- राजपूतानहके मर्दोंका ख़ास पहराव पघड़ी, कुड़ता, अंगरखी, धोती और कमरबन्धा है; बाज़ बाज़ लोग पायजामा भी पहिनते हैं. दर्बारी लिबास, जो महाराणा साहिबके दर्बारमें जानेके समय पहिनना पड़ता है, उसमें अमरशाही और अरसीशाही पघड़ी (२), कुड़ता, झग्गा (जामा), और पायजामा पहिनकर कमर बांधनी पड़ती है. औरतें बड़े घेरका लहंगा पहिनकर अनुमान ६ हाथ लम्बी साड़ी (ओढ़नी) ओढ़ती हैं; और दोनों हाथोंके भुजों तथा पहुंचोंपर हाथी दांतकी अथवा लाखकी चूड़ियां और उनके बीच बीचमें जड़ाऊ सोने व चांदीका ज़ेवर भी पहिनती हैं. माथेका बोर, नाककी नथ, गलेका तिमणियां और हाथकी चूड़ियां सुहागिन (सधवा) स्त्री के चिन्ह गिनेजाते हैं. इनके सिवा और भी कई तरहके भूषण पहिनती हैं. विधवा स्त्री आंखमें काजल आंजना, सर्व प्रकारके भूषण, और कसे रंगका वस्त्र पहिनना त्यागनेके अलावह मद्य व मांसका भी परित्याग करदेती है. ब्राह्मण और महाजन मद्य मांस नहीं खाते, परन्तु क्षत्रियोंमें इसका रवाज है. उत्तराखण्ड और पूर्वके क्षत्री मद्य नहीं पीते, इसी तरह वे लोग पियाज़ और लहसुन भी नहीं खाते. क्षत्री लोग अपनी स्त्रियोंको पर्देमें रखते हैं, यहांतक कि ग़रीबसे

(१) बंगाला और आसाम वग़ैरह.

(२) इससे पुरानी एक छौगादार पघड़ी थी, उसका रवाज तो मिटगया, आजकल अमरशाही और अरसीशाहीके सिवा महाराणा साहिबकी इजाज़तसे बाज़ बाज़ सर्दार स्वरूपशाही पघड़ी बांधते हैं. अमरशाही महाराणा दूसरे अमरसिंहने, अरसीशाही महाराणा अरिसिंहने और स्वरूपशाही महाराणा स्वरूपसिंहने चलाई थी.

ग़रीब क्षत्री भी, चाहे वह अपने कंधेपर रखकर पानीका घड़ा भरलावे, परन्तु औरतको पर्देसे बाहिर नहीं निकालता. अगर्चि यह रस्म हिन्दुस्तानके प्राचीन रवाजमें दाख़िल नहीं है, लेकिन् मुसल्मानोंके ज़ुल्मसे बचनेके लिये उन्हींका अनुकरण करलियागया है. धर्म शास्त्रमें जो षोडश संस्कार लिखे हैं उनमेंसे राजपूतानहमें बहुत थोड़े प्रचलित हैं, और जो हैं भी तो उनका बर्ताव यथाविधि नहीं है. जब बालक पैदा होता है, तो उस वक्त नाम करण करदेते हैं, यज्ञोपवीतका कोई समय नियत नहीं है, बाज़ लोग पहिले और बाज़े विवाहके समय करदेते हैं, और क्षत्रिय तथा वैश्योंमें नहीं भी करते. शादीका रवाज इस तरहपर है, कि नियत समयपर दूल्हा बरातके साथ आकर दुल्हिनके बापके दर्वाज़ेपर तोरण वंदना करता है. घरके भीतर जानेके समय बेटीकी माता जमाईको आरती वगैरह करके भीतर लेजाती है. फिर गणेश चित्रके आगे दूल्हा और दुल्हिनको बिठाकर दुल्हिनके दक्षिण हाथको, जिसमें मिंहदी और १) रुपया रखते हैं, दूल्हाके दक्षिण हाथसे मिलादेते हैं, याने हथलेवा जोड़ते हैं, और दुल्हिनकी ओढ़नी और दूल्हाके दुपट्टेको गांठ देकर एक रुपया उसमें बांध देते हैं, जो गठजोड़ा कहलाता है. इसके पीछे दोनोंको मंडपके नीचे लाकर ब्राह्मण लोग वेद मंत्रोंसे होम करते हैं, और कन्याके माता पिता जोड़ेसे बैठकर यह कृत्य करवाते हैं. फिर वर कन्याको होमकी अग्निके गिर्द ४ परिक्रमा (फेरा) करवाते हैं. इसके बाद कन्याका पिता हाथमें जल लेकर, जबकि वर कन्याका हथलेवा छुड़ाया जावे, वरके हाथमें कन्यादानका संकल्प छोड़ता है. पीछे कन्याको जनवासे (१) लेजाते हैं, जहां वरकामामा कन्याकी गोदमें सूखा मेवा, पताशे, और कुछ नक्द रुपया देता है, और यह रस्म होजानेपर कन्याको उसके रिश्तेदार जनवासेसे वापस अपने घर ले आते हैं. पहिले दिन जो भोजन बरातको दियाजाता है उसको कुंवारीभात, दूसरे दिनके भोजनको घोरण, और तीसरे दिन दियाजावे उसको जीमणवार कहते हैं. चौथे दिन बरात विदा करदी जाती है. हमने यह हाल प्रचलित रीतिके मुवाफ़िक़ लिखा है वर्नह भोजन देने और बरातको रखनेमें अधिक न्यून भी होता है. यह रीति ख़ासकर क्षत्रियोंकी है, और चारणोंकी भी इसीके मुवाफ़िक़ है, बाकी क़ौमोंमें बाज़ बाज़ रस्मोंमें थोड़ा बहुत फेर फार भी होता है. कन्याका पिता दहेज़में हाथी, घोड़ा, कपड़ा, ज़ेवर और जुहारी (२) देता है.

(१) जहांपर बरातका उतारा दियागया हो, उस जगहको जनवासा कहते हैं.

(२) दूल्हाके संबन्धियों अथवा कुछ बिरादरीको जो बेटीका बाप सरोपाव, या रुपया और नारियल, अथवा ख़ाली नारियल देता है उसको जुहारी कहते हैं.

जब कोई मरजाता है, तो मृत्युका यह रवाज है, कि मरने वालेको गीता या भागवतका पाठ सुनाते हैं, और हाथी, घोड़ा, कपड़ा, ज़ेवर तथा गाय वगैरहका उससे दान करवाते हैं. फिर गायके गोबर और शुद्ध मृत्तिकासे लीपी हुई ज़मीनपर दर्भ (डाब) और जव, तिल, बिछाकर मरने वालेको खाटसे उतारकर उसपर सुलादेते हैं, और उसके मुखमें गंगाजल, गंगामाटी और थोड़ासा सुवर्ण देदेते हैं. जब श्वास निकलजाता है, तो स्नान और हजामत करवानेके बाद उसपर गंगाजल व गंगामाटी वगैरह डालकर उसे वस्त्र पहिनाते हैं. फिर त्रिकटी (शववाहिनी) पर दर्भ, दर्भ पर रूई, और रूईपर कपड़ा बिछाकर लाशको उसपर रखते हैं, और ऊपर कपड़ा ढककर यदि मिले तो उसपर दुशाला वगैरह भी डालदेते हैं. फिर रीतिके अनुसार पिंड वगैरह करके मुर्देको स्मशानमें लेजाते हैं, और वहां चितापर सुलाकर सिरकी तरफ़से आग लगा देते हैं. मुर्दा जल-जानेके बाद सब लोग उसपर लकड़ी डालते हैं, फिर रीति पूर्वक बारहवें (द्वादशाह) तक पिण्ड श्राद्ध होनेके बाद भोजन दियाजाता है. मरने वालेके रिश्तेदार और उसके आश्रित लोग डाढ़ी मूंछ मुंडवाकर भद्र होते हैं. यह रवाज हमने आम तौरपर लिखा है, वर्नह राजा महाराजाओंके यहां षोडश संस्कार शास्त्रके अनुसार होते हैं, और ग्रामीण लोगोंमें बिल्कुल कम. हिन्दुस्तानकी स्त्रियोंके पातिव्रत्यकी प्रशंसा प्राचीन कालसे बहुत कुछ चली आती है, बल्कि मेगस्थिनीज़ वगैरह विदेशी लोगोंने भी तारीफ़ लिखी है. इस देशकी ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वगैरह कई क़ौमोंमें पुनर्विवाहका रवाज नहीं है, अल्बत्तह कुछ दिनोंसे भारतवर्षके कई ज़िलोंमें पुनर्विवाह करनेकी चेष्टा होरही है, परन्तु वर्तमान समयमें आम लोगोंमें इस रवाजका प्रचलित होना असंभव मालूम होता है.

राजपूतानहके क्षत्रियोंमें पहिले अफ़ीम खानेका रवाज अधिक था, यहांतक कि मिह्मानकी ख़ातिर तवाज़ो भी अफ़ीम खिलाकर ही करते थे, लेकिन् अब यह रवाज धीरे धीरे कम होताजाता है. तम्बाकू पीनेकी रीति भी यहांके लोगोंमें बहुत है, थोड़े ही आदमी ऐसे निकलेंगे, जो न पीते हों. भांग पीनेका रवाज नगर निवासी ब्राह्मणोंमें ज़ियादह है.

सिक्का.

सिक्का इस मुल्कमें प्राचीन कालसे गुहिलोत राजाओंके नामका प्रचलित रहा है.

छठी सदी .ईसवी में गुहिलके नामका सिक्का चलता था, जिसके दो हज़ार सिक्के आगरेमें मिले थे. इन सिक्कोंका हाल जेनरल कनिंघमने आर्कियॉलॉजिकल सर्वेके चौथे नम्बरमें इसतरहपर लिखा है, कि दो हज़ारसे ज़ियादह सिक्के आगरेमें ज़मीनके भीतर गड़ेहुए निकले थे, जिन सबपर "श्री गुहिल" या "गुहिल श्री" (१) का लेख था. यह (गुहिल) मेवाड़के गुहिल खानदानका पहिला पुरुष .ईसवी ७५० [वि० ८०७ = हि० १३२] में मौजूद था, परन्तु अक्षरोंकी लिपि इस समयसे अधिक पुरानी है, इसलिये वे शिलादित्यके पुत्र गुहा अथवा गुहिलके होंगे, जिसके राज्यका समय ठीक ठीक मालूम नहीं है, परन्तु अनुमानसे मालूम होता है, कि वह सन् .ईसवीकी छठी सदीमें हुआ होगा. सौराष्ट्रके राजाओंका अधिकार क़रीब क़रीब आगरेतक था, जिससे यह भी अनुमान होसक्ता है, कि ये दो हज़ार सिक्के कोई मुसाफ़िर सौराष्ट्रसे आगरेमें लाया होगा, परन्तु ज़ियादहतर यह मुम्किन है, कि ये सिक्के गुहिलके समय आगरेमें चलते थे, क्योंकि समय समयपर इसी राजाके कई सिक्के आगरेमें और भी मिले हैं, जो मैंने नहीं देखे.

दूसरा सिक्का महाराणा हमीरसिंहका प्रिन्सेप साहिबको मिला, जिसकी बाबत् वह अपनी किताबकी पहिली जिल्दमें लिखता है, कि "हमीर" नाम कई सिक्कोंमें मिलता है, और यह हमीर मेवाड़का होगा. इन सिक्कोंपर एक तरफ़ "श्री हमीर" (२) और दूसरी तरफ़ किसीमें "ग़यासुद्दीन", किसीमें "महमद साम", तथा "सुरिताण (३) शमसुद्दीन", "अलाउद्दीन", "नासिरुद्दीन", और "फ़तूहुद्दीन" नाम लिखे हुए हैं (४).

तीसरा तांबेका एक चौखूंटा सिक्का महाराणा कुम्भाका है, जिसके एक तरफ़ "कुंभकर्ण्ण" और दूसरी तरफ़ "एकलिंग" साफ़ तौरपर पढ़ाजाता है. इस सिक्केके

---

(१) गुहिलपतिके नामका एक दूसरा सिक्का मिलनेसे जेनरल कनिंघम उसको तोरमान वंशका बतलाता है, लेकिन हमारी रायमें गुहिलपतिका सिक्का भी मेवाड़के पहिले राजा गुहिलका ही होना चाहिये, अथवा गुहिलके वंशमेंसे किसी ऐसे राजाका, जिसका विशेषण गुहिलपति हो. शिलादित्यका पुत्र गुहिल छठी सदी .ईसवी (पांचवीं सदीके अख़ीरमें) में हुआ है, क्योंकि गुहिलसे छठा राजा अपराजित विक्रमी ७१८ में मेवाड़के पहाड़ी ज़िलेमें राज्य करता था.

(२) इन सिक्कोंपर एक तरफ़ "श्री हमीर" और दूसरी तरफ़ बादशाहोंके नाम लिखे हैं, जिसका यह कारण है, कि महाराणा हमीरसिंहके पूर्वजोंने ऊपर लिखे हुए बादशाहोंसे बड़ी बड़ी लड़ाइयां लड़ी थीं, इसलिये दूसरी तरफ़ उनके नाम लिखेगये होंगे.

(३) सिक्कोंके शब्द यहांपर वैसेही लिखदिये हैं जैसे कि अस्ल सिक्कोंमें पढ़ेगये हैं.

(४) यही प्रिन्सेप साहिब अपनी किताबकी पहिली जिल्दके पृष्ठ ३३१ में हमीर शब्दको बादशाही खिताब मानकर इस सिक्केको बादशाही बतलाते हैं.

बारेमें प्रिन्सेप साहिबने अपनी किताबकी पहिली जिल्दके २९८ पृष्ठमें जो बयान किया है उसमें उन्होंने ग़लतीसे एकलिंगको एकलिस, और कुंभकर्णको कभकंस्मी पढ़लिया है, परन्तु सिक्केकी छापको देखनेसे कुंभकर्ण और एकलिंग साफ़ साफ़ पढ़ा-जाता है- (देखो प्रिन्सेप साहिबकी किताब जिल्द पहिली, प्लेट २४ में सिक्का नम्बर २६).

चौथा सिक्का महाराणा पहिले संग्रामसिंहका है, जिसकी बाबत् प्रिन्सेप साहिब अपनी तवारीख़की पहिली जिल्दमें लिखते हैं, कि नम्बर २४ व २५ के सिक्के पिछले ज़मानहके और तांबेके हैं, जो स्टेचींके संग्रहमेंसे इसी क़िस्मके कितनेएक सिक्कोंमेंसे पसन्द किये गये हैं. २४ नम्बरके सिक्केपर एक तरफ़ "श्री रण (सं) ग्रम सं (घ)" और दूसरी तरफ़ त्रिशूल और कुछ चिन्ह हैं; और नम्बर २५ में एक तरफ़ "श्री रा (णा सं) ग्राम सं (घ) ८१५८०" और दूसरी तरफ़ केवल त्रिशूल और स्वस्तिक (साथिये) का चिन्ह है. किसी किसी सिक्केपर "संग्रम" और किसीपर "संगम" भी पाया जाता है, जो सिक्केके अक्षरोंकी ख़राबी है. ऊपर लिखे हुए सिक्कोंके लिये अनुमान कियाजाता है, कि वे उस नामी संग्रामसिंहके सिक्के हैं, जिसका नाम मुग़ल मुवर्रिख़ोंने सिंह लिखा है, और जिसने बाबरसे बयानामें लड़ाई की थी. कर्नेल् टॉडने इन महाराणाका गद्दी बैठना विक्रमी १५६५ [हि० ९१४ = .ई० १५०८] में, और बाबरसे विक्रमी १५८४ कार्तिक कृष्ण ५ [हि० ९३४ ता० १९ मुहर्रम = .ई० १५२७ ता० १६ ऑक्टोबर] को खानवा ग्राममें लड़ाई होना (१) वग़ैरह लिखा है.

विक्रमी १६२४ [हि० ९७५ = .ई० १५६७] में जब अक्बर बादशाहने चित्तौड़को फ़त्ह करलिया, तो उस समयसे महाराणा उदयसिंह, प्रतापसिंह और अमरसिंह ये तीनों महाराणा पहाड़ोंमें रहकर बादशाह अक्बर और जहांगीरसे लड़ाइयां लड़ते रहे, और इस आपत्ति कालमें टकशाल भी बन्द रही; लेकिन् विक्रमी १६७१ [हि० १०२३ = .ई० १६१४] में जब महाराणा पहिले अमरसिंहसे जहांगीरकी सुलह होगई, तब यह क़रार पाया, कि सिक्का और ख़ुतबा तो बादशाही सिक्कोंके मुताबिक़ ही रहना चाहिये, याने रुपयेमें मज़्मून तो शाही सिक्केके मुवाफ़िक़ हो, और वज़न तथा नाम मेवाड़के पुराने सिक्कोंके मुवाफ़िक़ रहे. चुनांचि इसी इक़ारके मुवाफ़िक़ चित्तौड़ी सिक्का जारी हुआ; और इसके बाद विक्रमी १७७० [हि० ११२५ = .ई० १७१३] में उदयपुरी सिक्का बनवानेकी शर्त फ़र्रुख़सियर बादशाहसे क़रार पाई.

(१) यह लड़ाई विक्रमी १५८४ चैत्र शुक्ल १५ [हि० ९३३ ता० १३ जमादियुस्सानी = .ई० १५२७ ता० १७ मार्च] को हुई थी.

तांबेके सिक्के मेवाड़में कई तरहके चलते हैं, जो भीलवाड़ी, उदयपुरी, त्रिशूलिया, भींडरिया, सलूंबरिया, नाथद्वारिया वगैरह नामोंसे प्रसिद्ध हैं. इनमें अस्ली अक्षर तो बिगड़गये हैं, लेकिन् फ़ार्सी अक्षरोंकी सूरतके चिन्ह बनादियेजाते हैं, जो अच्छी तरह नहीं पढ़े जाते.

एक सिक्का चांदीका महाराणा स्वरूपसिंहने विक्रमी १९०६ [हि० १२६५ = ई० १८४९] में स्वरूपशाहीके नामसे जारी किया था, जिसके एक तरफ़ नागरीमें "चित्रकूट उदयपुर" और दूसरी तरफ़ "दोस्तिलंधन" लिखा है; और दूसरा सिक्का (चांदोड़ी) महाराणा भीमसिंहकी बहिन चन्द्रकुंवरबाईने जारी किया था, जिसमें फ़ार्सी अक्षर थे, परन्तु महाराणा स्वरूपसिंहने उन अक्षरोंको निकालकर केवल बेल बूटेके चिन्ह बनवादिये.

तोल व नाप.

मेवाड़में कई प्रकारके तोल हैं. देहातमें कहीं ४२ रुपये भरका सेर, कहीं ४४ भरका, कहीं ४६ भरका, कहीं ४८ भर, और कहीं ५६ रुपये भरका है. इसी तरह माशे और तोलेका भी हिसाब है, याने कहीं ६, कहीं ७, और कहीं ८ रत्तीका माशा माना जाता है, लेकिन् ख़ास राजधानी उदयपुरमें ८ रत्तीका माशा, और १२ माशेका तोला प्रचलित है, और इसीसे सोना चांदीका ज़ेवर वगैरह तोला जाता है. यहांका रुपया १० दस माशे भरका है, जिससे १०४ रुपये भर वज़नका एक सेर और चालीस सेरका एक मन है. बारह मन वज़नको एक माणी और बारह सौ मनको एक मणासा कहते हैं. मेवाड़के पहाड़ी ज़िलोंमें अनाज वगैरहका वज़न लकड़ीके बने हुए पात्रों अर्थात् पैमानोंसे कियाजाता है, जो पाई, माणा, और सेई वगैरहके नामसे प्रसिद्ध हैं. दवाइयोंके वज़नका मेवाड़में जुदाही ढंग है. ८ चांवलका एक जव, २ जवकी एक रत्ती, ५ रत्तीका एक माशा, ४ माशेका एक टंक, ४ टंकका एक कर्ष, ४ कर्षका एक पल, ४ पलका एक कुड़, ४ कुड़का एक प्रस्थ, और ४ प्रस्थका एक आढक कहलाता है.

मेवाड़में नाप भी कई तरहके हैं, लेकिन् ज़ियादहतर हाथकी नाप काममें आती है, जो क़रीब क़रीब दो फ़ीटके बराबर है; और ख़ास शहर उदयपुरमें दो क़िस्मके गज़ प्रचलित हैं, एक सिलावटी जो दो फ़ीट लम्बा है, और दूसरा बज़ाज़ी जो तीन गज़ मिलाकर चार हाथके बराबर होता है.

राज्यके कारखाने और न्यायालय.

अब हम यहांपर महाराणा साहिबके कारखानोंका कुछ हाल लिखते हैं, जिनका मुरूतसर बयान पहिले लिखा जाचुका हैः-

कपड़ेका भंडार- कुल राज्यमें जितना कपड़ा ख़र्च होता है वह सब इस कारखानेमें ख़रीद होकर जमा होता है, फिर जिस सीग़ेमें ख़र्च हो, यहांसे जाता है. मामूली ख़र्चके सिवा विशेष ख़र्च हो तो, वह महकमहख़ासके हुक्मसे होता है.

कपड़द्वारा- इस कारखानहमें ख़ास महाराणा साहिबके धारण करनेके वस्त्र रहते हैं.

रोकड़का भंडार- यह राज्यका मामूली ख़ज़ानह है, कुल राज्यमें रोकड़का ख़र्च यहांसे ही होता है.

हुक्म ख़र्च- यह कारख़ानह ख़ास महाराणा साहिबके जेबख़र्चका है, प्रति दिन जो ख़र्च महाराणा साहिबके ज़बानी हुक्मसे होता है, उसके हिसाबपर दूसरे दिन खुद महाराणा साहिब अपनी मुहर करदेते हैं.

पांडेकी ओवरी- इस कारख़ानहमें पहिले तो बहुतसी पर्चूनी चीज़ें रहती थीं, लेकिन् उसके हिसाब किताब और जमाख़र्चमें गड़बड़ देखकर महाराणा शम्भुसिंह साहिबने कुल कारख़ानहकी मौजूदह चीज़ोंको मुलाहज़ह फ़र्मानेके बाद जो चीज़ जिस कारख़ानहके लाइक़ पाई उसको वहां पहुंचादी, और रद्दी चीज़ें जो नीलाम व बख़्शिशके लाइक़ थीं वे बख़्शदीगईं. अब जो कोई चीज़ नज़ वग़ैरह हो, तो इस कारख़ानहमें लिखीजाकर जिस कारख़ानहके योग्य होती है, वहीं भेजदीजाती है, फ़क़त महाराणा साहिबके पहिननेका ज़ेवर और तस्वीरें इस कारख़ानहमें रहती हैं.

सेजकी ओवरी- इस कारख़ानहमें महाराणा साहिबके ख़ास आराम करनेके पलंग वग़ैरहकी तय्यारी रहती है.

अंगोलियाकी ओवरी- इस कारख़ानहमें महाराणा साहिबकी स्नान सम्बन्धी तय्यारी रहती है.

रसोड़ा - इस कारख़ानहमें ख़ास महाराणा साहिब और उनके सन्मुख पंक्तिमें भोजन करनेवाले सभ्यजनोंके लिये भोजन तय्यार होता है. पुराने समयमें वहींपर भोजन कियाजाता था, जिसका रवाज इसतरहपर था, कि महाराणा साहिब अपने चौंके (१) में बैठकेपर विराजकर, और सभ्यजन अपने चौकेमें पांतियेपर बैठकर भोजन करते थे.

(१) प्रत्येक मनुष्यके बैठकर जीमनेके लिये हद क़ाइम कीहुई ज़मीनको चौका कहते हैं, जो अबतक इस कारख़ानहमें बने हुए मौजूद हैं.

यह रवाज महाराणा तीसरे अरिसिंहतक तो बना रहा, लेकिन् उसके बाद किसी कारणसे उक्त कारखानहमें भोजन करना बन्द होगया, और क्रम क्रमसे भोजन करने वालोंमें भी न्यूनाधिक होता रहा. वर्त्तमान समयमें किसी उत्तम स्थानमें महाराणा साहिब अपनी इच्छानुसार जिन सर्दार पासबानोंको अपने सन्मुख पांतियेपर बैठकर भोजन करनेकी आज्ञा देते हैं वे नित्य प्रति वहांपर भोजन करते हैं, और सफ़रमें सर्दार, पासबान तथा कारखानहके नौकर सब जीमते हैं.

पानेरा – इस कारखानहमें महाराणा साहिबके पीनेका जल, खुश्क और तर मेवा, नाथद्वारा व एकलिंगेश्वर वग़ैरह देवस्थानोंका महाप्रसाद, और नशेली चीजें तथा दवाईखानह (१) वग़ैरह रहता है.

सिलहखानह – इस कारखानहमें तलवार, बर्छी और तीर कमान वग़ैरह कई प्रकारके शस्त्र रहते हैं, जिनमें वह खड्ग भी है, जो बहरी जोगिनी (देवी) ने राव मालदेव सोनगराको दिया था, और वहांसे महाराणा हमीरसिंहके हाथ आया. यह खड्ग नवरात्रियोंके दिनोंमें एक मुख्य स्थान (खड्ग स्थापना) में स्थापन कियाजाता है, जिसका ज़िक्र नवरात्रिके हालमें लिखाजा चुका है. दूसरी तलवार इस कारखानहमें वह है, जो बेचरामाताने शार्दूलगढ़के राव जशकरण डोडियाको और उसने महाराणा लक्ष्मणसिंहको दी थी. इस तलवारको बांधकर महाराणा हमीरसिंहने क़िला चित्तौड़गढ़ मुसल्मानोंसे वापस लिया, और महाराणा प्रतापसिंह अव्वलने अक्बर बादशाहके साथ कई लड़ाइयां लड़ीं. उपरोक्त शस्त्रोंके सिवा कई प्रकारकी ढालें, और तरह तरहके टोप, बक्तर, कवच, करत्राण वग़ैरह भी हैं.

बन्दूक़ोंका कारखानह – इस कारखानहमें कई प्रकारकी तोड़ादार बन्दूकें, और जुजावलें रहती हैं, जिनके सिवा नये फ़ैशनकी कई क़िस्मकी टोपीदार व कारतूसी बन्दूकें और पिस्तौलें वर्त्तमान महाराणा साहिबने एकट्ठी की हैं. पहिले यह कारखानह बाबा चन्दसिंहकी संभालमें था, और अब प्रतापसिंहकी निगरानीमें है.

छुरी कटारीकी ओवरी– इस कारखानहमें कई क़िस्मकी छुरी और कटारियां रहती हैं.

धर्मसभा– इस कारखानहके मुतअ़ल्लिक़ मामूली दान पुन्य वग़ैरहका काम और महाराणा साहिबकी ख़ास सेवाके श्री बाणनाथ महादेव, और पूजनकी सामग्री वग़ैरह रहती है.

---

(१) पेश्तर वैद्य अथवा हकीम वग़ैरह लोगोंसे जो औषधि बनवाते, वह इसी कारखानहमें बनाई जाती, और वहीं रक्खी जाती थी, लेकिन् अब डॉक्टरोंका इ़लाज जारी होनेके कारण इस कारखानहकी निगरानी डॉक्टर अकबरअ़लीके तअ़ल्लुक़में है.

देवस्थानकी कचहरी- इस कारख़ानहके मुतऋल्लक़ कई छोटे मोटे देवस्थानों (१) के जमाख़र्चका प्रबन्ध है, जिनके पुजारियोंके लिये जो कुछ बन्धान नियत करदिया-गया है, जो उनको इस कचहरीके द्वारा मिलता रहता है, और बाक़ी जो कुछ बचत जिस मन्दिरकी आमदनीमेंसे रहती है, वह उसी मन्दिरकी समझी जाती है, केवल निगरानी मात्र राज्यकी ओरसे मालिकानह तौरपर रहती है. यह कचहरी महाराणा स्वरूपसिंहके समयसे जारी हुई है.

शिल्पसभा - इस कारख़ानहके मुतऋल्लक़ कुल तामीरात (कमठाणे) का काम है. पहिले यह काम पर्चूनी कारख़ानहके मुतऋल्लक़ जुदे जुदे आदमियोंकी निगरानीमें था, लेकिन् महाराणा शम्भुसिंह साहिबके समयसे टेलर साहिबको सौंपागया, और उसके बाद दो हिस्सोंमें तक़्सीम होगया, तबसे इस कामका बड़ा हिस्सह साह अम्बाव मुरड़्याकी निगरानीमें और थोड़ासा इंजिनिअर टॉमस विलिअमकी सम्भालमें रहा; लेकिन् वर्तमान महाराणा साहिबकी गद्दीनशीनीके वक़्से कुछ समयकी मीआ़दके लिये एग्ज़िक्युटिव इंजिनिअर केम्बल टॉमसन साहिबके अधिकारमें होगया है.

ख़ास ख़ज़ानह - यह ख़ज़ानह वैकुण्ठवासी महाराणा साहिबने अपना ख़ास ख़ज़ानह मुक़र्रर किया था.

शम्भुनिवास- महाराणा शम्भुसिंह साहिबने शम्भुनिवास नामी अंग्रेज़ी तर्ज़का एक महल बनवाकर उसकी तय्यारी और रौशनी वग़ैरहका सामान तथा बहुतसी क़िस्मकी पर्चूनी नुमाइशी चीज़ें इसी महलके दारोग़ह महासाणी रत्नलालके सुपुर्द करदी थीं, जिससे यह एक बहुत बड़ा कारख़ानह बनगया.

ज़नानी ड्योढ़ी- यह कोई कारख़ानह नहीं है, बल्कि एक जुदी सर्कार है, सैकड़ों औरत व मर्द ड्योढ़ीसे पर्वरिश पाते हैं. ड्योढ़ी सीग़ेका कुल काम महता लालचन्द व प्यारचन्दकी निगरानीसे होता है, और इनके तहतमें महाराणियोंके कामदार, मोसल और दास, दासियां वग़ैरह सैकड़ों मनुष्य हैं.

---

(१) श्री एकलिंगेश्वर, श्री ऋषभदेव, श्रीचतुर्भुजनाथ, श्रीजगतशिरोमणि, श्रीनवनीतप्रिय, श्री गोकुलचन्द्रमा, श्री जवान स्वरूपबिहारी, श्रीबांकड़ाबिहारी, श्रीगुलाबस्वरूपबिहारी, श्रीऐजनस्वरूप-बिहारी, श्रीअभयस्वरूपबिहारी, श्रीजगदीश्वर, श्रीभीमपद्मेश्वर, श्रीसर्दारबिहारी; माजीका मन्दिर, अम्बिकाभवानी, ऊंटालामें शीतला देवी, चित्तौड़गढ़में श्रीअन्नपूर्णा (बरबड़ी देवी) वग़ैरहके सिवा राजधानी उदयपुर और इलाके मेवाड़में और भी बहुतसे देवस्थान हैं.

फ़ीलख़ानह - पहिले यह कारख़ानह बाबा चन्दसिंहकी सुपुर्दगीमें था, जिसको महाराणा स्वरूपसिंहने उससे जुदा करके ढींकड़िया राधाकृष्णको सौंपा, जो अबतक उसके बेटे श्रीकृष्णकी निगरानीमें बहुत दुरुस्तीके साथ चला आता है. इस कारख़ानहमें पेंतीससे लेकर पचासतक हाथी और हथनियां रहती हैं.

इस्तबल (घुड़शाला) - इस कारख़ानहमें ख़ास महाराणा साहिबकी सवारीके और सभ्यजनोंके चढ़नेके घोड़े और ख़ासा तथा बारगीर बग्घियोंके घोड़े घोड़ियां रहती हैं. पुराने ज़मानहमें पायगाहका दारोग़ह भंडारी गोत्रका एक कायस्थ था, जो महासाणी कहलाता था, लेकिन् पीछेसे नगीनाबाड़ीका दारोग़ह भी इस कारख़ानेकी संभालपर नियत कियागया, उसके बाद महासाणीका तअ़ल्लुक़ बिल्कुल उठकर दारोग़ह नगीना (१) बाड़ीहीके सुपुर्द यह काम होगया. उसके बाद भण्डारी गोत्रके कायस्थका वंश तो बिल्कुल नष्ट होगया, जो घराना कि पुराने पासबानोंमेंसे था, और अब इस कारख़ानहका दारोग़ह कायस्थ ज़ालिमचन्द है.

फ़र्राशख़ानह - इस कारख़ानहमें राज्यके कुल डेरे, सरायचे, क़नातें, पर्दे और फ़र्श वगैरह सफ़री सामान तथा महलोंका सामान रहता है.

छापाख़ानह - यह कारख़ानह वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबने क़ाइम किया था, जिसमें "सज्जन कीर्ति सुधाकर" नामका एक अख़्बार और अ़दालतोंके इश्तिहार व सम्मन वगैरह पर्चूनी काग़ज़ात छपते हैं, और यह तवारीख़ भी इसी कारख़ानहमें छपी है.

पुस्तकालय - इस राज्यमें दो पुस्तकालय हैं, एक नवीन पुस्तकालय जिसका नाम "श्री सज्जनवाणी विलास" है, जो महाराणा सज्जनसिंह साहिबने निर्माण किया है; और दूसरा प्राचीन, जो "सरस्वती भण्डार" के नामसे प्रसिद्ध है. इन दोनोंके अ़लावह मद्रसहकी और विक्टोरिया हॉलकी लाइब्रेरी अलग हैं.

सांड़ियोंका कारख़ानह - रियासतमें सांड़ियोंके दो कारख़ाने हैं. एक ढींकड़िया नाथूलालके तअ़ल्लुक़में, जिसमें बारबर्दारीके नौकर ऊंट और क़रीब हज़ार बारह सौ सर्कारी सांडनियां (ऊंटनी) हैं; और दूसरा कारख़ानह मेरे (कविराजा श्यामलदास) के तह्तमें है, जिसमें ४० सांड़िये और दस घोड़ियां हैं. ये चौकीके उन पचास सर्दारोंकी

(१) स्वरूपविलासके नीचे, जहां अब खुला हुआ दरीख़ानह है, पेश्तर एक बग़ीची थी, जिसका नाम "नगीना बाड़ी" था, उसकी निगरानी ज़ालिमचन्दके पूर्वजोंको दीगई थी, जिससे यह दारोग़ह नगीना बाड़ीके नामसे मश्हूर होगया. इस दारोग़हकी सुपुर्दगीमें महाराणा साहिबका रोज़नाम्चह लिखेजानेका काम भी है.

सवारीके लिये हैं, जो मेरे तह्तमें हैं. इन सर्दारोंकी नौकरी खास महाराणा साहिबके हुक्मसे लीजाती है.

विक्टोरिया हॉल- यह कारखानह वर्तमान महाराणा साहिबने अपनी क़द्रदानी और महाराणी क्वीन विक्टोरियाकी यादगार ज्युबिलीके निमित्त सज्जन निवास बाग़में एक बहुत अच्छा महल बनवाकर क़ाइम किया है, जिसमें दो कारखाने हैं- एक म्यूज़िअम (अद्भुत-द्रव्य संग्रहालय) और दूसरा लाइब्रेरी (पुस्तकालय). ये दोनों कारखाने दिनोदिन तरक्क़ी पातेजाते हैं.

पुलिस- यह महकमह वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबने क़ाइम किया है, जिसका सविस्तर हाल उक्त महाराणा साहिबके वृत्तान्तमें लिखाजावेगा.

साइर- इस महकमहका वृत्तान्त भी वैकुण्ठवासी महाराणा साहिबके वृत्तान्तमें दर्ज कियाजायेगा.

बाक़ियातकी कचहरी- कुल राज्यकी नक्द बक़ाया इस कचहरीकी मारिफ़त वुसूल होती है.

रावली दूकान- यह व्यापारी सीगेका एक महकमह है, जो महाराणा स्वरूपसिंह साहिबने जारी किया था.

टकशाल- इस कारखानहमें सिक्का पड़ता है, जिसका मुफ़स्सल हाल हम ऊपर लिखचुके हैं. पहिले इस राज्यमें दो टकशालें थीं, एक चित्तौड़में और दूसरी उदयपुरमें; लेकिन् इन दिनों उदयपुरकी टकशाल ही जारी है, जिसमें स्वरूपशाही अश्रफ़ी और स्वरूपशाही, उदयपुरी और चांदोड़ी रुपया बनता है.

जंगी फ़ौज- यह क़वाइदी फ़ौज है, जिसकी शुरू बुन्याद तो महाराणा शम्भुसिंह साहिबके समयसे पड़ी थी, लेकिन् वैकुण्ठवासी महाराणा (सज्जनसिंह) साहिबने इसको बढ़ाकर और भी दुरुस्ती करदी है. इसमें क़वाइदी पल्टनें, रिसालह, तोपखानह, बॉडीगार्ड और बैण्ड बाजा वग़ैरह शामिल हैं. यह फ़ौज मामा अमानसिंहके तह्तमें है.

मुल्की फ़ौज- यह फ़ौज महता माधवसिंहके पुत्र बलवन्तसिंहकी निगरानीमें है, जिससे मुल्की पुलिसका काम और पर्चूनी नौकरी लीजाती है. इस फ़ौजमेंसे भील-पल्टन और कुछ सवार तो हाकिम मगराके तह्तमें, और अर्दलीके दो सौ जवान तथा भील कम्पनी और दो रिसाले महासाणी रत्नलालके तह्तमें हैं.

महकमहखासके मुतअल्लक़ कारखानोंका बयान तो हम ऊपर लिखचुके हैं, अब दूसरा सीग़ह अदालती रहा, जिसमें सबसे बड़े दरजहकी अदालत राज्य श्री महद्राज-सभा है, जिसका मुफ़स्सल हाल महाराणा सज्जनसिंह साहिबके वर्णनमें लिखा-जावेगा, यहांपर मुख्तसर तौरसे लिखते हैं:-

महद्राज सभा - इसको मेवाड़की रॉयल कौन्सिल समझना चाहिये. इसके दो इज्लास होते हैं, एक इज्लास कामिल और दूसरा इज्लास मामूली. इन दोनों इज्लासों की रूबकारें बनकर महाराणा साहिबके सामने पेश होती हैं, और उनकी मन्ज़ूरी होनेके बाद फ़ैसले जारी कियेजाते हैं. इस सभाके मातहत एक अदालत सद्र फ़ौज्दारी और दूसरी सद्र दीवानी है, जिनका मुराफ़ा इसी सभामें सुनाजाता है.

महकमह स्टाम्प व रेजिस्टरी- इसमें स्टाम्प छपकर जारी होता है, और मकानात व ज़मीन जायदादकी ख़रीद फ़रोख़्त वग़ैरहके विषयमें रेजिस्टरीकी कार्रवाई होती है.

हाकिमान ज़िलाके पास दीवानी और फ़ौज्दारी सीग़ेका अमला रहता है, नाइब हाकिमोंका अपील हाकिम ज़िला सुनते हैं, और हाकिमान ज़िलेका अपील सद्र फ़ौज्दारी व सद्र दीवानीमें होता है.

वर्तमान महाराणा साहिबके समयमें एक नया महकमह गिराई भी क़ाइम हुआ है, जिसका अफ़्सर .इलाक़हभरमें हमेशह दौरा करता रहता है.

॥ श्री ॥
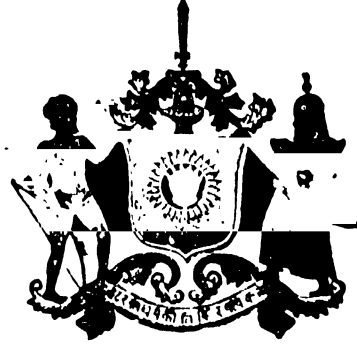
मेवाड़का प्राचीन इतिहास.

जिस तरह सारे हिन्दुस्तानभरका प्राचीन इतिहास अंधेरेमें छुपा हुआ पड़ा है, उसी तरह मेवाड़के पुराने इतिहासको भी समझलेना चाहिये, लेकिन् इसमें सन्देह नहीं कि इस ख़ानदानका बड़प्पन प्राचीन कालसे वर्त्तमान समयतक प्रकाशमें बना रहा है, क्योंकि यह घराना हिन्दुस्तानके सब राजाओंमें शिरोमणि और बड़ा मानागया है, जिसमें कभी किसी प्रकारका सन्देह नहीं हुआ; हिन्दुस्तानके लोगोंमें क्या छोटा और क्या बड़ा, जिसको पूछिये यही जवाब देगा, कि उदयपुरके महाराणा हिन्दुवा सूरज हैं, परन्तु कदाचित् मेरा यह कहना खुशामद मालूम हो, क्योंकि मैं उनका ख़ास नौकर हूं, इसलिये मैं यहांपर सबसे पहिले उन सफ़रनामों और तवारीख़ोंके लेखोंको दर्ज करता हूं, जो ग़ैर मुल्क और ग़ैर मज़्हबके लोगोंने मेवाड़ देशके राजाओंकी बाबत् बे रू रिआयत लिखे हैं, उनमेंसे चीनका मुसाफ़िर ह्युएन्त्सांग जो ईसवी ६२९ [हि० ८ = वि० ६८६] में हिन्दुस्तानकी यात्राको आया था, अपनी किताबकी दूसरी जिल्दके पृष्ठ २६६–६७ में वल्लभीके हालात इस तरहपर लिखता है, जो उदयपुरके राजाओंके पूर्वजोंकी राजधानी गिनी गई है.

" यह मुल्क घेरेमें ६००० (१) ली है; राजधानीका घेरा क़रीब ३० लीके है; ज़मीन, आब हवा और लोगोंका चालचलन मालवेकी तरहपर है; क़रीबन् १०० बाशिन्दे करोड़पति हैं; दूर दूरके मुल्कोंकी क़ीमती चीज़ें यहांपर बहुतायतसे मिलती हैं; यहां कई सौ देवताओंके मन्दिर हैं."

---

(१) क़रीब क़रीब ६ ली का एक अंग्रेज़ी माइल होता है.

"विद्यमान राजा क्षत्री क़ौमका है; वह मालवा. शिलादित्य राजाका भानूजा, कान्यकुब्जके राजा शिलादित्यके बेटेका दामाद है, और उसका नाम ध्रुवपट है; वह बड़ा चंचल और तेज़ मिज़ाज है, उसमें अक्ल और हुकूमत करनेकी लियाक़त कम है. थोड़े दिनोंसे उसने त्रिरत्नका मज़्हब (१) सच्चे दिलसे कुबूल किया है. हर साल वह एक बड़ी सभा करता है, और सात दिनतक क़ीमती जवाहिरात और उम्दह खाना तक्सीम करता है, और पुजारियोंको तीन पोशाक और औषधि, या उनके बराबर क़ीमत, और सातों प्रकारके जवाहिरातके बनेहुए ज़ेवर देता है. वह नेकीको उम्दह समझता है, वे लोग जो अक्लमन्दीके वास्ते मश्हूर हैं उनकी इज़्ज़त करता है, और बड़े बड़े धर्मगुरु लोग जो दूर दूरके मुल्कोंसे आते हैं उनकी भी बहुत इज़्ज़त करता है."

इस लेखसे उक्त राजाओंका बड़प्पन मालूम होता है, और जाना जाता है, कि वे हिन्दुस्तानके बड़े राजाओंमेंसे थे.

इसी तरह अरबके दो मुसल्मान मुसाफ़िरोंने, जो हिन्दुस्तानमें आये, इस खान-दानका ज़िक्र लिखा है. पहिला मुसाफ़िर सुलैमान् सन् ८५१ .ई० में और दूसरा अबूज़ैदुल्हसन .ई० ८६७ में हिन्दुस्तानकी सैरको आया था. इन दोनोंकी अरबी किताबोंका तर्जमह रेनॉडॉट साहिबने अंग्रेज़ी ज़बानमें किया है, जिसके १४-१५ एष्ठकी इबारतका तर्जमा नीचे लिखाजाता है:--

"हिन्दुस्तान और चीनके लोग मानते हैं, कि दुन्यामें चार बड़े बादशाह हैं, उन में अरबका बादशाह अव्वल, चीनका दूसरा, यूनानका तीसरा और चौथा बलहारा (२) गिनाजाता है, जो मुर्मियुल्उज़ुन (३) याने उन लोगोंका राजा है, जिनके कान बिंधे हुए हैं."

---

(१) त्रिरत्नके मज़्हबसे अभिप्राय बौद्ध मत है.

(२) बलहारासे मत्लब बल्लभी वाला है. इन मुसाफ़िरोंके हिन्दुस्तानमें आनेके वक़्त चित्तौड़ पर महारावल खुमाण राज्य करते थे, जिनको लोग बलहारा याने बल्लभीवाला नामसे पुकारते होंगे, क्योंकि वल्लभीका राज्य ग़ारत होनेके बाद मेवाड़का राज्य क़ाइम हुआ. यह एक आम रवाज है, कि एक जगहसे दूसरी जगह जाकर बसनेवाले लोग उनके पहिले निवास स्थानके नामसे पुकारे-जाते हैं, जिसतरह हिन्दुस्तानके पठान बादशाह अफ़ग़ान, और तुर्किस्तानके मुग़ल तुर्क कहलाते थे.

(३) इस शब्दको अंग्रेज़ी किताबमें छापने वालेने या किताबका तर्जमा करने वालेने ज़ाल अक्षरको दाल समझकर ग़लतीसे अदन लिख दिया है, क्योंकि दाल और ज़ालमें केवल एक नुक्तेका फ़र्क़ है.

"यह बलहारा हिन्दुस्तानभरमें बहुत ही मशहूर राजा है, और दूसरे राजा लोग अगर्चि अपने अपने राज्यमें स्वाधीन हैं, तोभी उसको बड़ा मानते हैं. जब वह उनके पास एल्ची भेजता है, तो वे उसको बड़ा और प्रतिष्ठित मानकर बड़ी इज़तसे उसका आदर सन्मान करते हैं. अरब लोगोंकी तरहपर वह बड़ी बड़ी बख़्शिशें देता है, और उसके बहुतसे घोड़े और हाथी और बहुतसा ख़ज़ाना है. उसके वे सिक्के चलते हैं, जोकि तातारी द्रम कहलाते हैं, उनका वज़न अरबी द्रमसे आधा द्रम ज़ियादह होता है. वे इस राज्यके ठप्पेसे बनते हैं, जिसमें राजाके राज्याभिषेकका संवत् (सन् जुलूस) लिखा है. वे अपना सन् अरब लोगोंकी तरह मुहम्मदके समयसे नहीं गिनते, किन्तु अपने राजाओंके समयसे. इन राजाओंमेंसे बहुतेरे बहुत दिनतक जीये हैं, और किसी किसीने पचास वर्षसे ज़ियादह समय तक राज्य किया है."

"बलहारा इस ख़ानदानके सब राजाओंका नाम है, किसी ख़ास शख़्सका नहीं. इस राजाका मातहत .इलाक़ह कामकाम (१) के सूबेसे शुरू होता है, और चीनकी सर्हदतक ज़मीनपर फैलाहुआ है. उसका राज्य बहुतसे राजाओंके .इलाक़ेसे घिराहुआ है, जो उसके साथ दुश्मनी रखते हैं, लेकिन् वह उनपर कभी चढ़ाई नहीं करता."

सर टॉमस रोने अपने सफ़रनामहके १९ वें पृष्ठमें सन् १६१५ .ई० में चित्तौड़का बयान इस तरहपर किया है:-

"यह शहर राणाके मुल्कमें है, जिसको इस बादशाहने थोड़े दिन पहिले अपना मातहत (२) बनाया है, बल्कि कुछ रुपया पैसा देकर अपनी मातह्ती कुबूल करवाई. अक्बर शाहने इस शहरको फ़त्ह किया था, जो इस बादशाहका पिता था. राणा उस पोरसके ख़ानदानमेंसे है, जिस बहादुर हिन्दुस्तानी राजाको सिकन्दरने फ़त्ह किया था."

इसी तरह सर टॉमस रोका पादरी एडवर्ड अपने सफ़रनामहके पृष्ठ ७७-७८ में चित्तौड़का हाल निम्न लिखित तौरपर लिखता है:-

"चित्तौड़ एक पुराने बड़े राज्यका ख़ास शहर एक ऊंचे पहाड़पर उपस्थित है. इसकी शहरपनाहका घेरा कमसे कम १० अंग्रेज़ी मीलके क़रीब होगा. आजतक याहांपर २०० से ज़ियादह मन्दिर और बहुतसे .उम्दह और पत्थरके एक लाख

(१) इसका सहीह लफ़्ज़ कोकण मालूम होता है.

(२) दूसरे राजाओंकी तरह मातहत नहीं बनाया था.

मकानोंके खण्डहर नज़र आते हैं. अक्बर बादशाहने इसको राणासे फ़त्ह किया था, जो राणा एक क़दीम हिन्दुस्तानी रईस है."

जॉन एल्बर्ट डी मैंडल्स्लो जर्मनकी फ़ांसीसी ज़बानकी किताबके अंग्रेज़ी तर्जमे से भी यही पायाजाता है, जो हैरिसके सफ़रनामहकी पहिली जिल्दके ७५८ वें पृष्ठमें लिखा है, कि-"अहमदाबादके शहरसे थोड़ी दूर बाहिरकी तरफ़ मारवा (१) के बड़े पहाड़ दिखाई देते हैं, जो २१० माइलसे ज़ियादह आगरेकी तरफ़ फैलेहुए हैं, और ३०० माइलसे अधिक औयौ (२) की तरफ़, जहां बिकट चटानोंके बीच चित्तौड़गढ़ में राजा राणाका वासस्थान था, जिसको मुग़ल और पाटन (३) के बादशाहकी मिली हुई फ़ौजें मुश्किलसे जीत सकीं. मूर्ति पूजक हिन्दुस्तानी लोग अभीतक उस राजाकी बड़ी ताज़ीम करते हैं, जो उनके कहनेके मुताबिक़ युद्धक्षेत्रमें एक लाख बीस हज़ार सवार लानेके योग्य था."

बर्नियरके सफ़र नामहकी पहिली जिल्दके पृष्ठ २३२-२३३ में इस तरहपर लिखा है:-

"ख़िराज न देने वाले एक सौ से ज़ियादह राजा हैं जो बहुत ताक़तवर हैं, और बिल्कुल राज्यमें फैले हुए हैं, जिनमें कोई आगरा और दिल्लीसे नज़्दीक और कोई दूर हैं. इन राजाओंमें १५ या १६ दौलतमन्द (धनाढ्य) और बहुत मज्बूत हैं, ख़ासकर राणा जोकि पहिले राजाओंका शहन्शाह समझा जाता था, और पोरसके ख़ानदान में गिनाजाता था, जयसिंह और जशवन्तसिंह. ये तीनों अगर मिलकर दुश्मनी करना चाहें, तो मुग़लके लिये भयानक वैरी होंगे, क्योंकि हरवक़्त वे लड़ाईमें बीस हज़ार सवार लेजानेका मक्दूर रखते हैं; उनका सामना करने वाले दूसरे लोग उनकी बराबरी के नहीं हैं. ये सवार राजपूत कहलाते हैं, इनका जंगी पेशह बापदादोंसे चला-आता है; और हरएक आदमीको इस शर्तपर जागीर दी जाती है, कि वह घोड़ेपर सवार होकर जहां राजाका हुक्म हो, जानेके लिये तय्यार रहे. ये लोग बहुत थकावट बर्दाश्त करते हैं, और अच्छे सिपाही होनेके लिये सिर्फ़ क़वाइद ही दर्कार है."

मेजर जेनरल कनिंघमने अपनी रिपोर्टकी चौथी जिल्दके पृष्ठ ९५-९६ में लिखा है, कि "पिछले अथवा बीचके हिन्दू ज़मानेकी बाबत् मेरा अनुमान है, कि गुहिल या

(१) मारवाड़ या मेवाड़ होगा.

(२) शायद उज्जैन होगा.

(३) पाटनसे मुराद गुजराती बादशाह होंगे, क्योंकि पहिले गुजरातकी राजधानी पट्टन नगरमें थी.

गुहिलोत नामी मेवाड़का ख़ानदान किसी ज़मानहमें आगरेपर राज्य करता था. सन् १८६९ .ई० में दो हज़ारसे ज़ियादह छोटे छोटे चांदीके सिक्के आगरेमें खोदनेसे निकले थे, जिन सबोंपर प्राचीन संस्कृत अक्षरोंमें लेख था, जो साफ़ साफ़ "श्री गुहिल" या "गुहिल श्री" पढ़नेमें आया. ये सिक्के शायद श्री गोहादित्य या गुहिलके होंगे, जो मेवाड़के गुहिलोत ख़ानदानकी बुन्याद डालने वाला था. लेकिन् गुहिलका ज़मानह सन् ७५० .ई० में था (१), और वह लिपि उस ज़मानेसे अगली मालूम होती है, तो कदाचित् ये सिक्के अगले गोहा वा ग्रहादित्यके हों, जो उसी ख़ानदानके राजा शिलादित्यका बेटा और गुहिलोत या सीसोदिया ख़ानदानका पहिला राजा था, जो ख़ानदान कि बलहारा, बल्लभी, या सौराष्ट्रके ख़ानदानसे निकला था और जो उस देशके ग़ारत होजानेपर निकलगये, परन्तु उस राजाका ठीक ज़मानह मालूम नहीं, शायद अनुमानसे छठी सदी ईसवीके लगभग रहा होगा. सौराष्ट्रके राजाओंका राज्य किसी ज़मानहमें इतना बड़ा था, कि उसका आगरेतक पहुंच जाना अल्बत्तह मुम्किन है, लेकिन् यह संभव नहीं, कि ये दो हज़ार सिक्के गुहिल श्री के कोई मुसाफ़िर आगरेमें लाया हो, जोकि उस राजाके समयमें मेवाड़ या सौराष्ट्रसे आया था, यह केवल अनुमान मात्र है; और यह ज़ियादह संभव मालूम होता है, कि ये सिक्के गुहिलके राज्य समयमें आगरेमें चलते थे, क्योंकि यह भी मुम्किन है, कि ऐसे ही सिक्के इसी राजा या ख़ानदानके और भी किसी समयमें आगरेमें पाये गये हों, जिनको मैंने नहीं देखा."

लुई रोसेलेट साहिबने अपने मध्य हिन्दुस्तानक सफ़रनामहके पृष्ठ २०० में लिखा है कि- " चित्तौड़की मश्हूर मोर्चाबन्द बस्ती, जो एक अकेले पहाड़की चोटीपर बसी हुई है, मेवाड़की पुरानी राजधानी थी, और कई सदियोंतक मुसल्मानोंके हमलोंके बख़िलाफ़ बचावकी अख़ीर मज्बूत जगह थी."

एचिसन् साहिबकी अह्दनामोंकी किताब, जिल्द तीसरीके पृष्ठ ३ में लिखा है कि- "उदयपुरका ख़ानदान हिन्दुस्तानके राजपूत रईसोंमें सबसे बड़े दरजे और रुत्बेका है. यहांके राजाको हिन्दू लोग अयोध्याके प्राचीन राजा रामका प्रतिनिधि समझते हैं, जिनके वंशमेंसे राजा कनकसेनने इस ख़ानदानकी बुन्याद सन् १४४ .ई० के

---

(१) गुहिल नामका एक ही राजा हुआ था, जो सन् .ई० की पांचवीं सदीके अख़ीर या छठी सदीके शुरूमें हुआ होगा, क्योंकि हमको एक प्रशस्ति विक्रमी ७१८ [हि० ४१ = .ई० ६६१] की मिली है, जो गुहिलसे छठे राजा अपराजितके राज्य समयकी है.

क़रीब डाली थी. डूंगरपुर, सिरोही (१) और प्रतापगढ़के ठिकाने भी यहींसे निकले हैं. मरहटा लोगोंकी ताक़तकी बुन्याद डालनेवाला सेवाजी, और घोंसला खानदान उदयपुरके घरानेसे निकले थे. हिन्दुस्तानमें किसी रियासतने यहांसे बढ़कर ज़ियादह दिलेरीके साथ मुसल्मानोंका सामना नहीं किया. इस घरानेका यह अभिमान है, कि उन्होंने कभी किसी मुसल्मान बादशाहको लड़की नहीं दी, और कई वर्षतक उन राजपूतोंके साथ शादी व्यवहार छोड़दिया, जिन्होंने बादशाहोंको लड़की दी थी."

डॉक्टर हंटर साहिब भी अपने गजेटिअरमें एचिसन् साहिबके अनुसार ही लिखते हैं.

हैरिस साहिबके सफ़रनामहकी पहिली जिल्दके पृष्ठ ६३२ के नोटमें लिखा है कि- "राजा राणा, जिसको तीमूरलंग (२) ने शिकस्त दी, वह सब इतिहास वेत्ताओंके अनुसार महाराजा पोरसके खानदानमें था."

"यद्यपि आगरेका नया शहर बसानेमें अक्बरका ध्यान लगरहा था, तोभी राज्यकी वह तृषा, जोकि उसकी तख्तनशीनीके शुरू सालोंमें नज़र आई थी, न बुझी. हिन्दुस्तानके एक राजाका हाल सुनकर, जोकि अक्लमन्दी और दिलेरीके वास्ते मश्हूर था, और पोरसके खानदानमें पैदा होनेके सबब नामवर था, और जिसका इलाक़ह बादशाहकी राजधानीसे सिर्फ़ बारह मंज़िलके फ़ासिलेपर था, उसको बादशाहने फ़ौरन् फ़त्ह करनेका इरादह किया, खासकर इस सबबसे, कि वह इलाक़ह उसके मौरूसी राज्य और नये फ़त्ह किये हुए मुल्कके बीचमें था. इस राजाका नाम राणा था, जो खिताब कि उसके खानदानके सब राजाओंको हिन्दुस्तानके पुराने दस्तूरके मुवाफ़िक़ दियाजाता था. वह राजा पोरसके खानदानके लाइक़ था, और अगर उसकी मदद अच्छी तरह करने वाला कोई दूसरा राजा होता, तो वह अपने मुल्ककी आज़ादी फिर हासिल करलेता, तोभी उसने बड़े दरजेकी कोशिश की, जोकि इस मुल्ककी तवारीखमें हमेशह याद रहेगी." और पृष्ठ ६४० में भी राणाका बयान एक ताक़तवर हिन्दुस्तानी रईस करके लिखा है.

मिल साहिबकी तवारीख़ हिन्दुस्तानकी सातवीं जिल्दके पृष्ठ ५७ में इस तरह लिखा है:- "उदयपुरके राणा अपनी पैदाइश रामके पुत्र लवसे बतलाते हैं, इसलिये वे

(१) सिरोहीके रईस चहुवान खानदानसे हैं, मेवाड़के राज्यवंशमेंसे नहीं हैं, एचिसन् साहिबने ग़लतीसे लिखदिया है.

(२) तीमूरकी किसी लड़ाईका ज़िक्र फ़ार्सी तवारीखोंमें नहीं मिलता, शायद बाबरके एवज़ तीमूरलंग लिखदिया होगा, जिसकी लड़ाई महाराणा सांगासे हुई थी.

सूर्यवंशी समझे जाते हैं, और राजपूतोंमें गुहिलोत खानदानकी सीसोदिया शाखमें हैं. सब राजपूत राजाओंमें वे बड़े माने जाते हैं, और दूसरे राजा लोग गद्दीपर बैठनेके समय उनके हाथसे तिलक क़बूल करते हैं, जिसका मत्लब यह है, कि उनकी गद्दी नशीनी राणाको मंजूर हुई."

इलियट साहिबकी तवारीख़की पहिली जिल्दके पृष्ठ ३५४-३६० में बलहारा तथा सौराष्ट्र और बल्लभीके नामसे इस खानदानका हाल कई इतिहास कर्त्ता लोगोंका हवाला देकर लिखा है.

थॉर्न्टन साहिबके गज़ेटिअरके पृष्ठ ७२३ में लिखा है, कि- "उदयपुरका राज्यवंश राजपूतोंमें अत्यन्त ही प्रसिद्ध है. दिल्लीके शाही खानदानके साथ वहांके राजाओंने कभी रिश्तेदारी नहीं की."

रेनाल्ड साहिब बयान करते हैं, कि- "उदयपुरके राणा हमेशह राजपूतोंके ठिकानोंके सर्दार समझेगये हैं. जो लोग कि और किसी तरहसे उनको बड़ा नहीं मानते, वे भी पुराने दस्तूरके मुवाफ़िक़ उनकी .इज़्ज़त करते हैं, जिससे साबित होता है, कि राणाके बुज़ुर्गोंके हाथमें पहिले पूरा इख्तियार था, और ग़ालिबन् उनकी मातह्तीमें सारा राजपूतानह एक ही राज्य था."

विलिअम रॉबर्टसन् साहिबकी तवारीख़ हिन्दुस्तानके पृष्ठ ३०२ में लिखा है कि- "चित्तौड़के राजा, जो हिन्दू राजाओंमें सबसे प्राचीन समझेजाते हैं, और राजपूत क़ौमोंमें सबसे बड़े हैं, अपनी पैदाइश पोरसके खानदानसे बतलाते हैं."

अर्म साहिब भी रॉबर्टसन्के मुवाफ़िक़ ही लिखते हैं.

मार्शमैनकी तवारीख़ जिल्द पहिली, पृष्ठ २३ में लिखा है कि- "उदयपुरका खानदान रामके बड़े बेटे लवसे पैदा हुआ है, और इसलिये हिन्दुस्तानके हिन्दू राजाओंमें बड़ा गिनाजाता है, यह खानदान पहिले सूरतके मुल्कमें गया और उसने खंभातकी खाड़ीमें बल्लभीपुरको अपनी राजधानी बनाया."

माल्कम साहिबकी तवारीख़ सेन्ट्रल इण्डियाकी पहिली जिल्द के पृष्ठ २७-२८ में मालवाके बादशाह महमूद खल्जीके बयानमें लिखा है, कि- "उसको चित्तौड़के कुम्भा राणाने क़ैद करलिया, और फिर मिहर्बानीकी नज़रसे छोड़दिया, और उसका .इलाक़ह वापस देदिया. उस वक़्के बयानमें सब तवारीख़ें लिखती हैं, कि बाज़ बाज़ राजपूत राजाओंने जिनमें खासकर चित्तौड़के राणाओंने अपने आसपासके मुसल्मानोंसे सख़्त लड़ाई करके उनपर बड़ी बड़ी फ़त्ह हासिल की." फिर इसी तवारीख़के छत्तीसवें पृष्ठके नोटमें लिखा है कि- "उदयपुरके राणा, जो राजपूतोंमें सबसे

बड़े खानदानके हैं, हमेशहसे यह अभिमान रखते हैं, कि उन्होंने मुगल बादशाहोंके साथ कभी शादीका सम्बन्ध नहीं किया. ''

मुसल्मान मुवर्रिखोंने लिखा है कि– " मालवाके बादशाहोंकी मुसीबतें दग़ाबाज़ी और खानदानी नाइत्तिफ़ाक़ीके सबबसे हुईं, जिनकी खास बुनयाद चित्तौड़के राणा सांगाकी दिलेरी और लियाक़त थी, जोकि अपने ज़मानेमें राजपूतोंका सरगिरोह मानाजाता था.'' और बादशाह बाबरने तुज़क बाबरीमें लिखा है कि– '' इस नामवर हिन्दू राजा ने शाह महमूदके ऊपर कई बार फ़त्ह पाई, और उससे बहुतसे सूबे छीन लिये, जैसे रामगढ़, सारंगपुर, भेल्सा, और चंदेरी. ''

ग्रैंटडफ़की मरहटोंकी तवारीख़ जिल्द पहिलीके पृष्ठ १९–२० में लिखा है कि– '' शालिवाहनने आसेरके राजाका .इलाक़ह लेलिया. यह राजा सूरजवंशके राजपूत-राजा सीसोदियाके खानदानमें था, उसका पुरुषा कोसल देशसे, जिसको आजकल अवध कहते हैं, निकलकर नर्मदाके दक्षिण तरफ़ आया, और अपना राज्य जमाया, जो शालिवाहनकी फ़त्हके वक़ सोलहसो अस्सी वर्षतक क़ाइम रहा था. शालिवाहनने उसके खानदानके सब लोगोंको सिवा एक .औरतके क़त्ल करडाला, जो अपने कम .उम्र बेटेके साथ सतपुराके पहाड़ोंमें जा रही; वह लड़का चित्तौड़के राणाओंके खानदानकी बुनयाद डालनेवाला हुआ. ''

'' चित्तौड़के राणाओंसे उदयपुरके राणा निकले, जिनका खानदान हिन्दुस्तानमें सबसे पुराना मानाजाता है, और ऐसा भी बयान है, कि मरहटा क़ौमकी बुनयाद डालनेवाला शख्स उदयपुरके .खानदानसे पैदा हुआ था. ''

एल्फ़िन्स्टनकी तवारीख़ हिन्दुस्तानके पृष्ठ ४३१ में इस तरहपर लिखा है:– " राजपूत राजा हमीरसिंह, जिसने अलाउद्दीन ख़ल्जीके वक्तमें चित्तौड़को वापस लेलिया था, उसने सारी मेवाड़पर दोबारह अपना क़बज़ह किया, जिसके शामिल उसके बेटेने अजमेरको मिलालिया. जबकि मालवा दिल्लीसे अलग होगया उसवक्त मालवाके बादशाहों और मेवाड़के राजाओंसे कई बार लड़ाइयां हुईं, और बाबरके ज़मानेसे थोड़े ही पहिले मालवेका बादशाह शिकस्त पाकर राजपूत राजा सांगाका क़ैदी बना था. हमीरसे छठी पीढ़ीमें सांगा राणा हुआ, जिसने मेवाड़का इख्तियार पानेके .अलावह भेल्सा और चंदेरीतक मालवाके पूर्वी .इलाक़ोंपर क़बज़ह करलिया. उसको मारवाड़ और जयपुरके राजा तथा दूसरे सब राजपूत राजा भी अपना सरगिरोह मानते थे. ''

इसी किताबके पृष्ठ ४८० में फिर लिखा है कि– '' उदयपुरके राणाका खानदान और क़ौम, जो पहिले गुहिलोत और पीछे सीसोदिया कहलाये, रामसे

निकले हैं, और इसलिये उनकी अस्लियत अवधसे है. पीछेसे वे गुजरातमें क़ाइम हुए, जहांसे ईडरको गये, और अख़ीरमें कर्नेल् टॉडकी रायके मुताबिक़ आठवीं सदी ईसवीके शुरूमें चित्तौड़पर क़ाइम हुए. सन् १३०३ ई० तक, जिस वक़ कि चित्तौड़ को अलाउद्दीनने लेलिया और थोड़े ही दिन पीछे राणा(हमीर) ने फिर उसको अपने तह्तमें करलिया, उनका (राणाओंका) नाम तवारीख़में मश्हूर नहीं हुआ. हमीरके बाद, जिसने कि यह काम किया, कई लाइक़ राजा हुए, और उनके ज़रीएसे मेवाड़ देश राजपूतोंमें उस बड़प्पनको पहुंचा, कि जिससे सांगा (संग्रामसिंह) बाबरके बर्ख़िलाफ़ लड़ाईमें उन सबोंको (राजपूतोंको) लेजानेके लाइक़ हुआ. "

टॉड नामह राजस्थानकी पहिली जिल्दके एष्ठ २११ में इसतरहपर लिखा है:-

"मेवाड़के बादशाह (महाराजा) राणा कहलाते हैं, और सूर्यवंशी अथवा सूर्यकी औलादकी बड़ी शाखा हैं. इनका एक दूसरा ख़ानदानी ख़िताब "रघुवंशी" है. यह ख़िताब रामके बाप दादाओंमेंसे किसीके नामपर निकला है. सूर्यवंशी ख़ानदानकी हरएक शाखा रामसे निकली है. सूर्यवंशी ख़ानदानकी शाखाओंका कुर्सीनामह लिखनेवाले इसको लंका फ़त्ह करनेवालेसे निकालते हैं. अक्सर इन मुद्दइयोंके दावोंकी बाबत् तक्रार है, लेकिन् हिन्दुओंकी सब क़ौमें इस बातमें एकमत हैं, कि मेवाड़के महाराणा अस्लमें रामकी राज्यगद्दीके वारिस हैं, और वे उनको हिन्दुवा सूरज कहते हैं. राजसी ३६ क़ौमोंमेंसे सब उनको अव्वल समझते हैं, और उनके कुलीन होनेमें कभी सन्देह उत्पन्न नहीं हुआ है."

ज्यॉर्ज टॉमसने अपनी किताबके एष्ठ १९६ में लिखा है कि- "उदयपुरका राजा वैसी ही हालतमें है, जैसा कि दिल्लीका बादशाह." इसके सिवा उक्त साहिबने अपनी इसी किताबमें महाराणाके ख़ानदानका बड़प्पन और भी कई जगह ज़ाहिर किया है.

इस घरानेके बड़प्पनकी बाबत् यूरोपिअन मुवर्रिख़ोंकी किताबोंसे ऊपर बयान किये हुए सुबूत दर्ज करनेके बाद अब कुछ लेख फ़ार्सी तवारीख़ोंसे भी चुनकर लिखेजाते हैं, जिनके बनाने वाले हमेशह उदयपुरके मुख़ालिफ़, बल्कि कुल हिन्दुओंके विरोधी रहे हैं, और जिन्होंने मज़्हबी व ख़ानदानी तअस्सुब (वैमनस्य) से ग़ैर मज़्हबी लोगों के लिये हमेशह हिक़ारतके लफ़्ज़ लिखे हैं :-

बाबर बादशाह अपनी किताब "तुज़क बाबरी" (क़ल्मी) के एष्ठ २४३ में लिखता है कि- "राणा सांगाकी ताक़त इस मुल्क हिन्दुस्तानमें इस दरजेकी थी, कि अक्सर राजा और रईस उसकी बुज़ुर्गीको मानते थे, और उसके क़बजेका मुल्क दस करोड़की आमदनीका था, जिसमें कि हिन्दुस्तानके क़ाइदेके मुवाफ़िक़ एक लाख सवारकी गुंजाइश होसक्ती है."

इसी तरह छपी हुई किताब अक्बरनामहकी दूसरी जिल्दके एष्ठ ३८० में लिखा है कि- "बादशाही जुलूसके बाद अक्सर ऐसे राजाओंने भी, जो कभी दूसरे बादशाहोंके फ़र्मांबर्दार (आधीन) न बने थे, इताअत (आधीनता) कुबूल करली; लेकिन् राणा उदयसिंहने, जो इस मुल्कमें अपनी बुजुर्गीका ख़याल रखने वाला था, और बहादुरी से अपने बुज़ुर्गोंके मुवाफ़िक़ विकट पहाड़ों और मज्बूत क़िलोंके सबब मग़्रूर था, बादशाही फ़र्मांबर्दारी कुबूल न की, इस लिये बादशाहको क़िला चित्तौड़ लेना पड़ा."

अक्बरनामहकी तीसरी जिल्दके १५१ एष्ठमें लिखा है कि- "जब कुंवर मानसिंह मेवाड़पर बादशाही फ़ौज लेकर मांडलगढ़में पहुंचा, तो राणाने उस वक्त ग़ुरूरके साथ बादशाही लश्करका ख़याल न करके मानसिंहको अपना मातहत जमींदार समझकर यह इरादह किया, कि उससे वहीं जाकर लड़े, लेकिन् उसके ख़ैरख़्वाहोंने उसको इस इरादेसे रोका."

इसी तरह तबक़ाति अक्बरीके २८२ एष्ठ में लिखा है कि- "हिन्दुस्तानके अक्सर राजाओं वग़ैरहने बादशाही मातहती कुबूल करली थी, लेकिन् राणा उदयसिंह मेवाड़का राजा मज्बूत क़िलों और ज़ियादह फ़ौजसे मग़्रूर होकर सर्कशी करता था."

इसी किताबके ३३३ वें एष्ठ में फिर लिखा है, कि- "राणा कीका (१) जो हिन्दुस्तानके राजाओंका सरदफ़्तर (बुजुर्ग) है, चित्तौड़ फ़त्ह होनेके बाद पहाड़ोंमें गोगूंदा नामी एक शहर बसाकर, जिसमें कि उसने .उम्दह .इमारतें और बाग़ तय्यार कराये थे, अपनी ज़िन्दगी सर्कशीके साथ बसर करता था."

मुन्तख़बुत्तवारीख़के पृष्ठ २१३-१४ में मौलवी अब्दुल्क़ादिर बदायूनी लिखता है कि- "हलदी घाटीकी लड़ाईमें राणाका रामप्रसाद हाथी बादशाही फ़ौज वालोंके हाथ लगा, उसको मैं आंबेरके रास्तेसे आगरेको लेजाने लगा, लेकिन् रास्तेके लोग राणाकी लड़ाई और मानसिंहकी फ़त्हका हाल सुनकर उसपर यक़ीन नहीं करते थे."

छपी हुई किताब तुज़क जहांगीरीके एष्ठ १२२ में बादशाह जहांगीर लिखता है कि- "मैं आगरेसे अजमेरकी तरफ़ दो ग़रज़से रवानह हुआ, एक ख़्वाजिह मुईनुद्दीन चिश्तीकी ज़ियारत, जिसने कि हमारे ख़ानदानको बहुत फ़ैज़ पहुंचाया है, और तख़्तनशीनी के बाद मैं वहां नहीं गया था; दूसरे राणा अमरसिंहका रफ़ा दफ़ा करना, जोकि हिन्दुस्तानके मोतबर राजाओंमेंसे है, और उसकी व उसके बाप दादोंकी बुजुर्गी और सर्दारीको इस मुल्कके राजा और रईस मानते हैं. बहुत मुद्दत गुज़री, कि हुकूमत और

(१) अक्बर नामह और तबक़ाति अक्बरी वग़ैरह किताबोंमें महाराणा प्रतापसिंहको कीका लिखा है, जो उनका कुंवरपदे और बचपनका नाम था.

रियासत इस घरानेमें है. एक अरसेतक पूर्वी .इलाकोंमें इनकी हुकूमत थी, और उस वक्त ये लोग राजाके ख़िताबसे मश्हूर थे. इसके बाद दकन (दक्षिण) में जारहे, और वहांका अक्सर .इलाक़ह अपने क़बज़ेमें किया, राजाके .एवज़ रावलका लक़ब अपने नामपर दाख़िल किया, इसके बाद मेवाड़के पहाड़ोंमें आये, और धीरे धीरे क़िले चित्तौड़को क़बज़ेमें करलिया. उसवक़्तसे अबतक, कि यह मेरे जुलूसका आठवां वर्ष है, चौदह सौ इकत्तर वर्ष हुए, २६ ऐसे आदमी हुए हैं, जो रावल ख़िताब रखते थे, और जिनकी हुकूमतका ज़मानह एक हज़ार और दस साल होता है; और सबसे पहिले रावल (१) से लेकर राणा अमरसिंहतक २६ पीढ़ियां होती हैं, जिन्होंने चार सौ इकसठ वर्ष राज्य किया है. इस अरसेमें उन्होंने हिन्दुस्तानके किसी बादशाहकी आधीनता नहीं की है. बाबर बादशाहसे राणा सांगाकी लड़ाई मश्हूर है, और अक्बर बादशाहका मज़्बूत क़िले चित्तौड़को लेना भी सब जानते हैं. राणासे .इताअ़त कराना बाक़ी रहगया था, और यह मुहिम (महत्कार्य) मेरे पिताने मेरे सुपुर्द की थी, इसलिये मैंने अपनी सल्तनतके वक़्में इसे पूरा करना चाहा."

तवारीख़ फ़िरिश्तहके ५४ पृष्ठमें मुहम्मद क़ासिम लिखता है कि - "राजा वीर विक्रमादित्यके ज़मानेके अगले राजाओंमेंसे बादशाह जहांगीरके इस ज़मानहतक ऐसा कोई न रहा, जिसका नाम लियाजावे, अल्बत्तह एक राजा राणा राजपूत है, जिसके घरानेमें मुसल्मानी ज़मानहके पहिलेसे राज्य चला आता है."

मुन्तख़बुल्लुबाबकी पहिली जिल्दके पृष्ठ १७२-७३ में ख़फ़ीख़ां लिखता है कि - "जबसे अक्बर बादशाहने क़िले चित्तौड़को फ़त्ह करके वीरान करदिया है, राणा और उसके आदमियोंने पहाड़ोंके भीतर उदयपुर नामकी एक आबादी बसाई है. यह किताब लिखनेवाला (ख़फ़ीख़ां) जिन दिनोंमें कि ईरानके एक शाहज़ादह ख़लीफ़ा सुल्तानके साथ मुसाफ़िर और मिह्मानके तौर उस मुल्कमें गया, तो राणाकी ख़्वाहिशसे उसकी दावत क़ुबूल करनेके लिये उसे कई रोज़तक ठहरनेका इत्तिफ़ाक़ हुआ. राणाकी साइर, राहदारी, और फ़ौजदारी वग़ैरह सीगोंकी आमदनीके सिवा मालकी

---

(१) "तुज़क जहांगीरी" में पहिला रावल लिखा है, परन्तु अस्लमें यह पहिला राणा मालूम होता है, जिसको बादशाहने अथवा किताब छापने वालेने भूलसे रावल लिखदिया होगा, क्योंकि महाराणा अव्वल अमरसिंहसे पहिले छब्बीसवीं पीढ़ीमें राणा राहप हुआ है, जिसने पहिले पहिल राणाका पद धारण किया. इसी तरह २६ रावल और २६ राणाओंके राज्य समयके वर्षोंकी संख्या (१४७१ वर्ष) में भी बहुत कुछ फ़र्क़ है, जो बादशाह जहांगीरने मेवाड़के तवारीख़ी हालातसे कम वाक़िफ़ होनेके कारण जैसा सुना वैसा ही लिखदिया होगा.

आमदनी एक करोड़से ज़ियादह है." और आगे लिखता है कि - "हिन्दुस्तान भरमें उस से बढ़कर कोई रईस नहीं है, और वह बादशाहको अपनी लड़की नहीं ब्याहता है."

तारीख़ सैरुल्मुतअख़्ख़िरीनके एष्ठ ३८-३९ में सय्यद गुलामहुसैन राजपूतानह की बाबत् लिखता है कि - "इसका दक्षिणी पहाड़ी .इलाक़ह अक्सर राणाके क़बज़ेमें है, जिसके .इलाक़ेमें चित्तौड़गढ़, मांडलगढ़, कुम्भलगढ़, मश्हूर क़िले हैं. इन लोगोंकी बड़ी लड़ाइयां बादशाह अलाउद्दीनसे लेकर अक्बर और उसकी औलादके ज़मानहमें अक्सर मश्हूर हैं."

इसी तरह प्राचीन और नवीन अरबी, फ़ार्सी, उर्दू व हिन्दी पुस्तकोंमेंसे बहुत थोड़ी ऐसी निकलेंगी, कि जिनमें हिन्दुस्तानका इतिहास हो और उदयपुरके महाराणाओंका बड़प्पनके साथ वर्णन न हो. यदि उन सब किताबोंका आशय यहां लिखा जावे, तो एक छोटीसी पुस्तक बनसक्ती है. इस घरानेकी बड़ाईके कई कारण हैं. अव्वल तो यह, कि हिन्दुस्तानमें सूर्य और चंद्रवंशके राजा बड़े समझेगये हैं, और उनमें भी ककुत्स्थके कुलमें महाराजा रामचंद्रका वंश मुख्य मानागया है, जिसकी शाखाओंमेंसे अव्वल उदयपुरका ख़ानदान है. दूसरे, यह ख़ानदान बड़े अरसेसे आज दिनतक प्रतिष्ठित राजाओंमें बनारहा है. तीसरे इस ख़ानदानके राजाओंने हिन्दुस्तानके मुसलमान बादशाहोंसे बड़ी बड़ी लड़ाइयां लड़कर अपने बड़प्पनको बचाया है; अल्बत्तह जहांगीर बादशाहके वक़्तसे दबाव पड़नेपर महाराणा अमरसिंह अव्वलने अपने बड़े पुत्र कर्णसिंहको बादशाही ख़िद्मतमें भेजदिया और उसी समयसे अपने वलीअहद (पाटवी पुत्र) का दरजह उमरावोंसे नीचा माना. अगर्चि मुग़ल बादशाहोंने युवराजके आनेसे अपनी मुराद हासिल होना मानलिया, और महाराणाने इसको एक नौकरका भेजना ख़याल करके अपने दिलको तसल्ली दी. इसतरह दोनों तरफ़ साम, दान, दंड, भेद चारों उपाय चलते रहे; लेकिन् हिन्दुस्तानके हरएक बादशाहने उदयपुरके ख़ानदानको हिन्दुस्तानियोंमें सबसे बड़ा माना. इसके सिवा मुसल्मानोंके मुवाफ़िक़ किसी मज़्हबके लोगोंसे इस ख़ानदानने द्वेष भाव नहीं रक्खा, जिसका पहिला सुबूत तो यह है, कि जैन मत वालोंने मेवाड़को पनाहकी जगह मानकर अपने मतके सैकड़ों बड़े बड़े मन्दिर बनवाये, और यहां के राजाओंने उनके बननेमें पूरी मदद दी. सिवा इसके अगर्चि यहांके राजा प्राचीन कालसे शैव हैं, परन्तु उन्होंने नाथद्वारा व कांकड़ौलीके मतावलंबियोंको बादशाह आलमगीरके भयसे बचाया, और शाक्त मतवालोंको भी कभी न सताया, जिनके इस राज्यमें बड़े बड़े प्रतिष्ठित मन्दिर हैं. इस राज्यमें सब मज़्हबके पेश्वाओंका आदर

सन्मान होता है. उपरोक्त कारणों तथा इसी प्रकारकी अन्य अन्य बातोंसे मेवाड़के महाराणाओंका बड़प्पन आजतक बहाल है.

अब हम मेवाड़के राजाओंकी प्राचीन वंशावली लिखना शुरू करते हैं, जिसमें पहिले तो वह वंशावली लिखेंगे, जो संस्कृत ग्रन्थोंसे मिलती है, और जिसको सब हिन्दुस्तानके लोग मंजूर करते हैं. अगर्चि महाभारतके हरिवंश तथा कालीदासके रघुवंश और श्री मद्भागवतके नवम स्कंधकी पीढ़ियोंमें कुछ कुछ अंतर है, परन्तु हमको भागवतके अनुसार पीढ़ियां लिखनी चाहियें, जो ग्रन्थ कि हिन्दुस्तानके अधिक हिस्सोंमें प्रचलित है, और वे निम्न लिखित हैं:-

आदि नारायण
ब्रह्मा
मरीचि
कश्यप
विवस्वान् (सूर्य)
मनु (वैवस्वत)
इक्ष्वाकु
विकुक्षि
पुरंजय (ककुत्स्थ)
अनेना (वेन)
पृथु
विश्वरंधि
चन्द्र
युवनाश्व - १
शाबस्त
बृहदश्व
कुवलयाश्व (धुंधुमार)
दृढाश्व
हर्यश्व - १
निकुम्भ
बर्हणाश्व
कृशाश्व
सेनजित
युवनाश्व - २
मांधाता
पुरुकुत्स
त्रसद्दस्यु
अनरण्य
हर्यश्व - २
अरुण
त्रिबन्धन
सत्यव्रत (त्रिशंकु)
हरिश्चंद्र
रोहित
हरित
चंप
सुदेव
विजय
भरुक
वृक
बाहुक
सगर
असमंजस
अंशुमान
दिलीप
भगीरथ
श्रुत
नाभ
सिंधु द्वीप
अयुतायु
ऋतुपर्ण
सर्वकाम
सुदास
मित्रसह (कल्माषपाद)
अश्मक
मूलक (नारीकवच)
दशरथ - १
ऐडविड
विश्वसह
खट्वाङ्ग
दीर्घबाहु (दिलीप)
रघु
अज
दशरथ - २
रामचन्द्र
कुश
अतिथि
निषध
नभ
पुण्डरीक
क्षेमधन्वा
देवानीक
अनीह
पारियात्र
बल
स्थल
वज्रनाभ
खगण
विधृति
हिरण्यनाभ
पुष्य
ध्रुवसन्धि
सुदर्शन
अग्निवर्ण
शीघ्र
मरु

प्रसुश्रुत	वत्सवृद्ध	सुनक्षत्र	शाक्य
संधि	प्रतिव्योम	पुष्कर	शुद्धोद
अमर्षण	भानु	अंतरीक्ष	लांगल
महस्वान	दीवाक	सुतपा	प्रसेनजित् - २
विश्वसाहू	सहदेव	अमित्रजित्	क्षुद्रक
प्रसेनजित् - १	बृहदश्व	बृहद्राज	रणक
तक्षक	भानुमान	बर्हि	सुरथ
बृहद्बल	प्रतीकाश्व	कृतंजय	सुमित्र
बृहद्रण	सुप्रतीक	रणंजय	
उरुक्रिय	मरुदेव	संजय	

यहांतक तो भागवतके नवम स्कंधसे वंशावली लिखी गई है, जिसमें किसीको कुछ शंका नहीं है; परन्तु इस बातमें अल्बत्तह शंका है, कि भागवतमें तो सुमित्रसे आगे वंश चलना ही नहीं लिखा है, और हिन्दुस्तानके जितने सूर्यवंशी राजपूत हैं, वे सब अपना मूल पुरुष सुमित्रको मानते हैं. इसकी बाबत् मेरा (कविराजा श्यामलदासका) ख़याल यह है, कि अयोध्यामें सूर्य वंशियोंका राज्य सुमित्रतक रहा होगा, अथवा राजा सुमित्रके पुत्रोंने वेदमत छोड़कर बौद्धधर्म इख्तियार करलिया होगा, इसलिये ब्राह्मणोंने उनके नाम सूर्यवंशकी वंशावलीसे निकालदिये होंगे, यह नहीं कि वंश ही नष्ट होगया हो, क्योंकि सूर्य वंशके बड़े राजा रामचन्द्रकी औलादमें उदयपुरके ख़ानदानका होना बहुत सहीह मालूम होता है, हां यह बात ज़रूर है, कि सुमित्रसे पीछे वल्लभीके राजा भट्टारकतक अथवा गुहिलतक वंशावलीमें सन्देह है, सो मालूम होता है, कि अस्ली नाम तो उन राजाओंके लुप्त होगये, और बड़वा भाटोंने अपनी पोथियोंको मोतबर साबित करनेके लिये मन माने नाम घड़कर लिखदिये हैं, और क़रीब क़रीब उन्हींके मुताबिक़ उदयपुर राज्यकी वंशावलीके जोतदानोंमें भी लिखे हैं जो ये हैं:-

वीर्यनाभ	अजासेन	हरादित्य	देवादित्य
महारथि	अभंगसेन	सुयशादित्य	आशादित्य
अतिरथि	महामदनसेन	सोमादित्य	भोजादित्य
अचलसेन	सिद्धरथ	शिलादित्य	ग्रहादित्य
कनकसेन	विजयभूप	केशवादित्य	
महासेन	पद्मादित्य	नागादित्य	
दिग्विजयसेन	शिवादित्य	भोगादित्य	

ऊपर लिखेहुए नामोंमें शायद कुछ सहीह भी हों, लेकिन् कल्पित नामोंके साथ मिलजानेसे उनका जुदा करना कठिन होगया. हमने ये नाम उदयपुर राज्यकी वंशावली के जोतदानोंसे लिखे हैं, क्योंकि ख्यातिकी पोथियोंमें देखिये, तो एकके नाम दूसरीके नामोंसे आपसमें नहीं मिलते, किसीमें बीस नाम ज़ियादह हैं और किसीमें कम; और ऐसी हालतमें ग्रन्थकार किसी एकपर पूरा पूरा भरोसा नहीं करसक्ता. अब हम बापा रावलसे महाराणा हमीरसिंहके बीचकी वंशावली भी उन्हीं जोतदानोंसे लिखते हैं:-

बापा रावल	कीर्तिब्रह्म	बेरड	पूर्णपाल
खुमाण	नरब्रह्म	वैरसिंह	पृथ्वीमल्ल
गोविंद	नरवे	तेजसिंह	भूणंगसिंह
महेंद्र	उत्तम	समरसिंह	भीमसिंह
अल्लु	भैरव	करण	जयसिंह
सिंह	कर्णादित्य	राहप राणा	गढमंडलीक लक्ष्मण-सिंह
शक्तिकुमार	भावसिंह	नरपति	अरिसिंह
शालिवाहन	गात्रसिंह	दिनकर	अजयसिंह
नरवाहन	हंसराज	जसकर	
अंबापसाव	जोगराज	नागपाल	

इन ऊपर लिखे हुए नामोंमें भी बहुतसे नाम सहीह हैं, परन्तु उनके नम्बर वगैरहमें कहीं कहीं फ़र्क़ पड़गया है, याने कहींपर पहिला नाम पीछे और कहीं पिछला पहिले करदिया गया है, और कई अस्ल नाम दर्ज ही नहीं कियेगये, और बहुतसे बनावटी नाम भी लिखदिये गये हैं.

अब यहांपर महाराणा हमीरसिंहसे वर्तमान समय तककी वंशावली दर्ज कीजाती है, जिसमें किसी तरहका शक व शुब्ह नहीं है:-

हमीरसिंह - १	विक्रमादित्य	अमरसिंह - २	जवानसिंह
क्षेत्रसिंह (खेता)	उदयसिंह	संग्रामसिंह - २	सर्दारसिंह
लक्षसिंह (लाखा)	प्रतापसिंह - १	जगत्सिंह - २	स्वरूपसिंह
मोकलसिंह (मोकल)	अमरसिंह - १	प्रतापसिंह - २	शम्भुसिंह
कुंभकर्ण (कुंभा)	कर्णसिंह	राजसिंह - २	सज्जनसिंह
रायमल्ल	जगत्सिंह - १	अरिसिंह	फ़त्हसिंह
संग्रामसिंह (सांगा) १	राजसिंह - १	हमीरसिंह - २	
रत्नसिंह	जयसिंह	भीमसिंह	

हमने इस वंशावलीके उपरोक्त चार हिस्से किये हैं, जिनमेंसे पहिला और चौथा हिस्सह तो सन्देह करनेके लाइक़ नहीं, लेकिन् दूसरा बिल्कुल अंधकारमें छिपा हुआ है, और तीसरा ऐसा है, कि जिसको न हम पूरा पूरा सहीह मान सके और न ग़लत ही कह सके हैं. जैसी ग़लती कि पहिले बयान होचुकी है उसीके मुवाफ़िक़ बड़वा भाटोंने बापा रावलका संवत् १९१ मानकर क्रमसे आज पर्यंत बहुतसे राजाओंके राज्याभिषेक तथा राज्यावधिके संवत् और कई राजाओंके नाम भी बनावटी लिखदिये हैं, जो नीचे लिखे जाते हैं:-

नम्बर.	नाम महाराणा.	राज्याभिषेक का संवत् विक्रमी.	राज्याधिकारका समय.			कैफ़ियत.
			वर्ष.	महीना.	दिन.	
१	रावल बापा	१९१	१०१	१	३	
२	रावल खुमाण	२९२	६०	१	५	
३	रावल गोविन्द	३५२	२९	३	९	
४	रावल महेन्द्र	३८१	७०	०	९	
५	रावल अल्लु	४५१	७०	२	११	
६	रावल सिंहा	५२१	४१	९	१	
७	रावल शक्तिकुमार	५६२	२५	१	३	
८	रावल शालिवाहन	५८७	३१	१	५	
९	रावल नरवाहन	६१८	२८	३	२	
१०	रावल अंबापसाव	६४६	४५	०	४	
११	रावल कीर्तिवर्म	६९१	४१	१	१	

नम्बर.	नाम महाराणा.	राज्याभिषेक का संवत् विक्रमी.	राज्याधिकारका समय.			कैफ़ियत.
			वर्ष.	महीना.	दिन.	
१२	रावल नरवर्म	७३२	२१	३	७	
१३	रावल नरवै	७५३	२६	३	८	
१४	रावल उत्तम	७७९	१७	२	५	
१५	रावल भैरव	७९६	११	३	३	
१६	रावल कर्णादित्य	८०७	३२	३	७	
१७	रावल भावसिंह	८३९	४१	५	१	
१८	रावल गात्रसिंह	८८०	४६	१	९	
१९	रावल हंसराज	९२६	३५	३	१८	
२०	रावल योगराज	९६१	३५	३	२	
२१	रावल बैरड़	९९६	४०	५	९	
२२	रावल वैरिसिंह	१०३६	३०	९	१४	
२३	रावल तेजसिंह	१०६६	४०	५	१३	
२४	रावल समरसिंह	११०६	५२	११	५	
२५	रावल रत्नसिंह	११५८	१	३	५	
२६	रावल करणसिंह	११५९	४२	१	२५	

नम्बर.	नाम महाराणा.	राज्याभिषेक का संवत् विक्रमी.	राज्याधिकारका समय.			कैफ़ियत.
			वर्ष.	महीना.	दिन.	
२७	राणा राहप	१२०१	६१	३	५	
२८	राणा नरपति	१२६२	३३	५	१५	
२९	राणा दिनकरण	१२९५	६	६	३	
३०	राणा जसकरण	१३०१	५	२	१	
३१	राणा नागपाल	१३०६	५	६	९	
३२	राणा पूर्णपाल	१३११	४	२	२८	
३३	राणा पृथ्वीपाल	१३१५	४	३	९	
३४	राणा भूणसिंह	१३१९	३	५	९	
३५	राणा भीमसिंह	१३२२	४	५	९	
३६	राणा जयसिंह	१३२६	५	३	५	
३७	राणा गढ़लक्ष्मणसिंह	१३३१	१५	३	४	
३८	राणा अरिसिंह	१३४६	०	१	०	
३९	राणा अजयसिंह	१३४६	११	४	३	
४०	राणा हमीरसिंह	१३५७	६४	७	४	
४१	राणा क्षेत्रसिंह	१४२१	१८	४	१०	

नम्बर.	नाम महाराणा.	राज्याभिषेक का संवत् विक्रमी.	राज्याधिकारका समय.			कैफ़ियत.
			वर्ष.	महीना.	दिन.	
४२	राणा लक्षसिंह (लाखा)	१४३९	१५	४	१	
४३	राणा मोकल	१४५४	२१	१	३	
४४	राणा कुम्भा	१४७५	५०	३	४	
४५	राणा ऊदा	१५२५	५	५	५	
४६	राणा रायमल्ल	१५३०	३५	१	२	
४७	राणा संग्रामसिंह (सांगा)	१५६५	२१	५	९	
४८	राणा रत्नसिंह	१५८६	४	४	५	
४९	राणा विक्रमादित्य	१५९०	२	७	३	
५०	राणा उदयसिंह	१५९२	३६	२	१	
५१	राणा प्रतापसिंह	१६२८	२४	१०	२६	
५२	राणा अमरसिंह	१६५२	२४	०	०	
५३	राणा करणसिंह	१६७६	८	०	१०	
५४	राणा जगत्सिंह	१६८४	२५	१	१६	
५५	राणा राजसिंह	१७०९	२८	२	६	
५६	राणा जयसिंह	१७३७	१८	६	२८	

नम्बर.	नाम महाराणा.	राज्याभिषेक का संवत् विक्रमी.	राज्याधिकारका समय.			कैफ़ियत.
			वर्ष.	महीना.	दिन.	
५७	राणा अमरसिंह	१७५५	१२	३	५	
५८	राणा संग्रामसिंह	१७६७	२३	८	९	
५९	राणा जगत्सिंह	१७९०	१७	१०	११	
६०	राणा प्रतापसिंह	१८०७	२	७	१०	
६१	राणा राजसिंह (१)	१८१०	७	२	१२	
६२	राणा अरिसिंह	१८१७	१२	११	१८	
६३	राणा हमीरसिंह	१८२९	५	८	९	
६४	राणा भीमसिंह	१८३४	५०	३	७	
६५	राणा जवानसिंह	१८८४	१०	४	२०	
६६	राणा सर्दारसिंह	१८९५	३	९	२३	
६७	राणा स्वरूपसिंह	१८९८	१९	४	६	
६८	राणा शम्भुसिंह	१९१८	१२	१०	१२	ये दोनों नाम हमने वंशावली के क्रमानुसार अपने तौरपर लिखे हैं.
६९	राणा सज्जनसिंह	१९३१	१०	३	९	

(१) इस वंशावलीमें कहीं कहीं तो एक राजाके गद्दी विराजनेके संवत्से उसके राज्य समयके वर्ष और महीने सब जोड़कर दूसरे राजाके गद्दी विराजनेका संवत् हिसाबसे दर्ज किया है, और कहीं केवल वर्षोंका ही हिसाब रक्खा है, महीने नहीं जोड़े; परन्तु यह वंशावली बड़वा भाटोंकी पोथियोंसे लीगई है, इसलिये भरोसेके लाइक़ नहीं है.

संस्कृत ग्रन्थों और ख्यातिकी पोथियों अथवा बड़वा भाटोंके लेखोंसे लिखीहुई उपरोक्त वंशावली पाठकोंको इसलिये दिखलाई गई है, कि वे उसकी बाबत अपनी राय देनेमें मज़्बूतीके साथ क़लम उठावें.

अब हम अपनी तह्क़ीक़ात और रायके मुवाफ़िक़ मेवाड़का इतिहास प्रारम्भ करते हैं.

मेवाड़के राजाओंका ख़ानदान पहिले सूर्यवंशी, फिर गुहिलपुत्र, और गुहिलोत, और उसके बाद सीसोदियाके नामसे मश्हूर है. हम ऊपर लिख आये हैं, कि अयोध्याके राजा सुमित्रसे पहिलेकी वंशावलीमें सन्देह करनेकी गुंजाइश नहीं है; केवल अर्थ करनेके समय यदि कोई विद्वान एक दो नामका फ़र्क़ कहीं बतलावे, तो उसका यह कारण जानना चाहिये, कि शायद वह किसी विशेषणको नाम और नामको विशेषण बतलावेगा; और महाराजा सुमित्रके बाद वीर्यनाभसे ग्रहादित्यतक वंशावलीको सहीह बतलानेके लिये किसी तरहका सुबूत नहीं मिलता, अल्बत्तह कुछ नाम सहीह होंगे, जैसे विजयभूप और कनकसेन वग़ैरह, जिनको कर्नेल् टॉडने भी वल्लभीके पूर्वजोंमें होना ख़याल किया है. ख्यातिकी पोथियोंमें अयोध्याका राज्य छूटनेके बाद इनका राज्य दक्षिणके विजयपुर (विराटगढ़) स्थान में क़ाइम होना लिखा है, परन्तु कर्नेल् टॉडने सौराष्ट्र देशमें वल्लभीके राजाओंको मेवाड़का पूर्वज बतलाया है.

एशियाटिक सोसाइटी बंगालकी सौ वर्षकी रिपोर्टके पृष्ठ ११४-११८में लिखा है, कि ".ईसवी १८२९ [वि० १८८६ = हि० १२४४] में कर्नेल् टॉडके ज़रीएसे यह मालूम हुआ, कि वल्लभीके राजाओंका एक ख़ानदान है. उन्होंने अपने राजस्थानके इतिहासमें कईएक जैन लेखोंसे दर्याफ़्त करके यह बयान किया था, कि गुहिलोत राजपूतोंने दूसरी शताब्दीके मध्यके कुछ दिनों पीछे या तो वल्लभीपुरकी बुन्याद डाली, या उसपर क़बज़ा पाया; परन्तु वहांके राजाओंके नाम जिनके बारेमें विशेष वर्णन किया, ये थेः-

कनकसेन, जिसने इस ख़ानदानकी बुन्याद डाली; विजय, जिसने कई पीढ़ियों पीछे अनेक नगर बसाये; शिलादित्य, जो इस ख़ानदानका आख़री राजा था, और जिसके समयमें जंगली लोगोंने (जो कदाचित् किसी क़ौमके मुसल्मान थे, जैसा कि पिछली तह्क़ीक़ातसे मालूम हुआ है) वल्लभीपुरको घेरकर लेलिया.

.ईसवी १८३५ [वि० १८९२ = हि० १२५१] में डब्ल्यु० एच्० वाथन साहिबने दो ताम्रपत्र छपवाये, जो कुछ वर्ष पहिले गुजरातकी ज़मीनके भीतर मिले थे; उनसे वह उक्त ख़ानदानके सोलह राजाओंका नाम क्रम पूर्वक मालूम करनेके योग्य हुआ.

तीन वर्ष बाद .ईसवी १८३८ [वि० १८९५ = हि० १२५४] में मिस्टर जे० प्रिन्सेप्ने एक और नाम तीसरे ताम्रपत्रसे बढ़ाया, जो कि डॉक्टर ए० बर्न्सने मक़ाम खेड़ा में दर्याफ़्त किया था. ईसवी १८७७ और १८७८ [वि० १९३४-३५ = हि० १२९४-९५] में दो और नाम डॉक्टर जी० बुलरने दर्याफ़्त किये, जोकि अब वल्लभीके राजाओंकी फ़िहरिस्तको पूरा करते हैं, और उनको गिनतीमें १९ तक लाते हैं. उक्त फ़िहरिस्त नीचे लिखे मुवाफ़िक़ है. जो राजा कि राजगद्दीपर बैठे हैं उनके नामोंके शुरूमें क्रमसे अंक लगादियेगये हैं, और जिनके नामोंपर गिनतीका निशान नहीं है, उन्होंने राज्य नहीं किया है. जिन नामोंपर * और + निशान हैं उनको मिस्टर प्रिन्सेप् और डॉक्टर बुलरने बढ़ाया है.
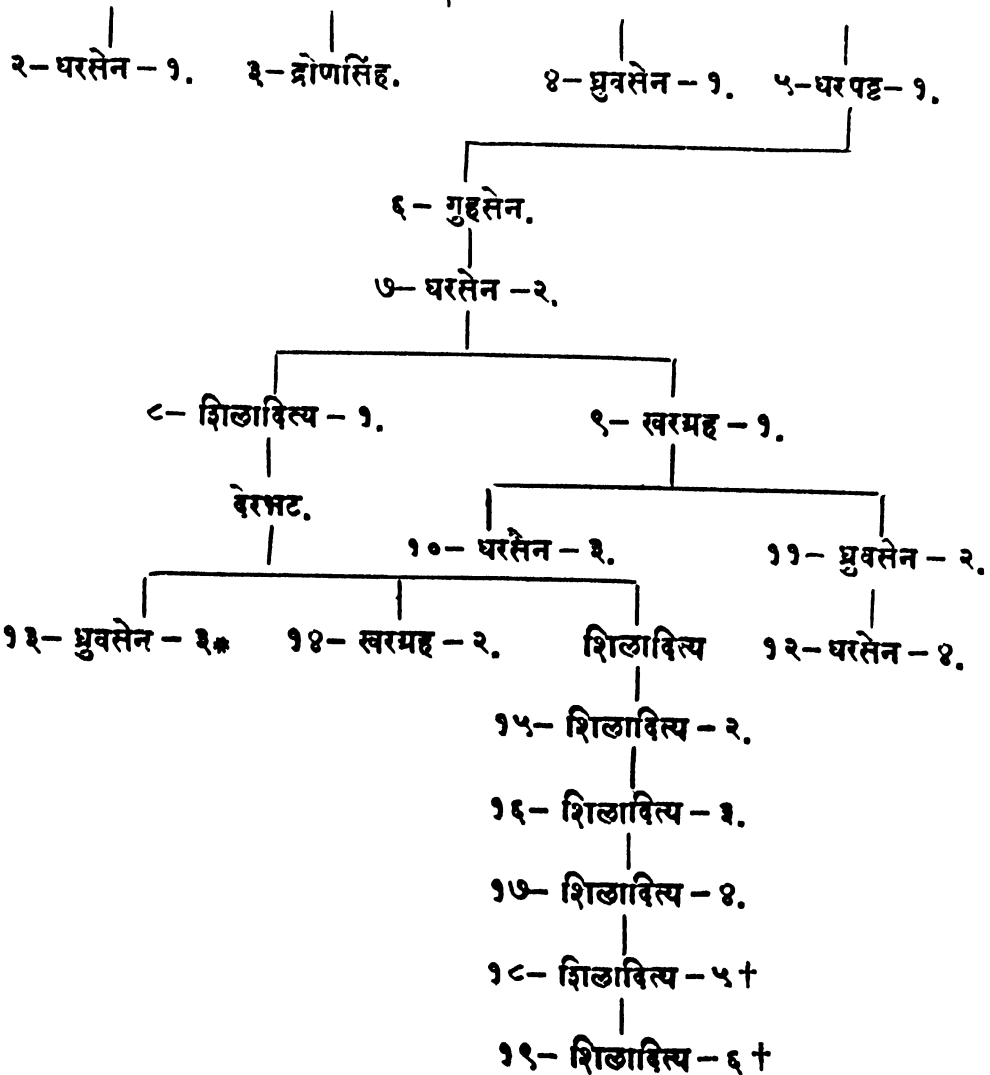
मिस्टर वाथनने बयान किया है, कि दो वल्लभी राजाओंके भूमिदानकी शर्तोंसे मालूम हुआ, कि इस ख़ानदानके सबसे पहिले दो शख़्स एक मुखिया राजाके यहां, जिसने गुजरातका मुल्क उनके सुपुर्द किया था, सेनापति याने फ़ौजी हाकिमके तौरपर उस समयमें नौकर थे, जबकि ऊपर लिखीहुई वंशावलीमेंसे तीसरे नम्बरवाले शख़्स (द्रोणसिंह) को उसके राजाने, जोकि एक बड़ा शहन्शाह, अर्थात् हिन्दुस्तान का चक्रवर्ती था, राजा बनाया. पिछली तह्क़ीक़ातोंसे ज़ाहिर होता है, कि यह बड़ा राजा हर हालतमें गुप्तके नामी ख़ानदानका दूसरा चन्द्रगुप्त था; और यह भी, कि यदि स्वाधीनताका बादशाही रुत्बा वल्लभीके सब राजाओंका नहीं, तथापि बहुतसे राजाओंका केवल नामके लिये था.

वल्लभीके ताम्रपत्रोंसे एक दूसरा बहुत मुफ़ीद हाल यह मिला है, कि क़रीब क़रीब उन सबोंमें उनके ज़मानेकी तारीख़ है. वाथन और प्रिन्सेप् इन दोनों साहिबोंने उन दानपत्रोंको पढ़कर उनका मत्लब निकालनेके लिये कोशिश की थी, परन्तु पूरा पूरा मत्लब हासिल न हुआ, और पीछेसे फिर वे सब अच्छी तरह पढ़े गये; लेकिन् उन सब ताम्रपत्रोंके संवतोंकी बाबत् निश्चय करना बहुत कठिन हुआ, कि उनमें कौनसा संवत् लिखा है. कर्नेल् टॉडने राजस्थानके इतिहासमें लिखा है, कि वल्लभीके राजाओंने अपने ही नामका एक संवत् चलाया था, जो वल्लभी संवत् कहलाता था, और जिसका पहिला संवत् ईसवी ३१९ [वि० ३७६]के मुताबिक़ था. इसी लेखके अनुसार वाथन साहिबने विचार किया, कि इन ताम्रपत्रोंके संवत् उस ख़याल किये हुए वल्लभी संवत्के मुताबिक़ मानने चाहियें; और ऐसा करनेसे वल्लभीका ख़ानदान चौथीसे आठवीं सदी ईसवी तक अर्थात् ईसवी ३१९ से ईसवी ७६६ [वि० ३७६ से ८२३ = हि० १४९] तक होता है, क्योंकि सबसे पिछले ताम्रपत्रमें संवत् ४४७ लिखा है. ईसवी १८३८ [वि० १८९५ = हि० १२५४] में प्रिन्सेप् साहिबने इस बातपर फिर विचार करके यह निश्चय किया, कि वल्लभी दानपत्रोंके संवत् विक्रमी संवत्के अनुसार होने चाहियें, जिसका कि पहिला संवत् सन् ईसवीसे ५६ वर्ष पहिले था. उनकी दलील यह थी, कि ताम्रपत्रमें वल्लभी संवत् नहीं लिखा है, इसलिये केवल संवत् मात्र शब्दसे विक्रमादित्यका संवत् समझना चाहिये. फिर उन ताम्रपत्रोंको दोबारह पढ़नेसे यह मालूम हुआ, कि वे तीसरी और चौथी सदीके थे. इससे मालूम होता है, कि प्रिन्सेप् साहिबने ख़याल किया, कि यदि उन दानपत्रोंके संवत् वल्लभी संवत्के अनुसार गिने जावें, तो वल्लभीके राजाओंका ज़माना दूसरे प्रमाणोंकी अपेक्षा बहुत पीछे होगा. दस वर्ष उपरान्त इस विषयपर फिर विचार हुआ, तो ईसवी १८४८ [वि० १९०५ = हि० १२६४]में टॉमस साहिबने इरादह किया, कि वल्लभीके ताम्रपत्रोंके संवतोंको शक संवत् मानना चाहिये, और यही राय ईसवी १८६८ [वि० १९२५

= हि० १२८५] में डॉक्टर भाउदाजीने, और .ईसवी १८७२ [वि० १९२९ = हि० १२८९] में प्रोफ़ेसर रामकृष्ण गोपाल भंडारकरने ज़ाहिर की. इसके मुख्य कारण ये थे, कि वल्लभीके ताम्रपत्रोंके समयमें दूसरे लेखोंमें शक संवत् प्रचलित था, और वही संवत् सौराष्ट्रके क्षत्रप वंशवाले चलाते थे; इससे ज़ियादहतर यही अनुमान हुआ, कि वल्लभी ख़ानदानने, जो क्षत्रपोंके ख़ानदानको निकालकर आप मालिक बना, उसी संवत्को जारी रक्खा, जो उनके पहिलेवाले राजाओं (क्षत्रपों) के समयमें जारी था. तीन वर्षके बाद, याने .ईसवी १८७५ [वि० १९३२ = हि० १२९२] में डॉक्टर जी० बुलर साहिबने एक नये दानपत्रसे यह साबित करदिया, कि वल्लभीके दानपत्रोंका संवत्, जो शक संवत् अनुमान कियाजाता था, वह अनुमान मंजूर होनेके लाइक़ न था. .ईसवी १८७८ [वि० १९३५ = हि० १२९५] में फिर कोशिश कीगई, और उस समय डॉक्टर जी० बुलरने एक और नये दानपत्रसे मालूम किया, कि छठा शिलादित्य जो हालकी फ़िह्रिस्तमें आख़री है, ध्रुवभट कहलाता था, जैसा कि एम० युजेनी जैकेटने ४० वर्षसे ज़ियादह अरसह हुआ, .ईसवी १८३६ [वि० १८९३ = हि० १२५२] में यह बयान किया था, कि चीनी यात्री ह्युएन्त्सांग भी उस राजाको उसी नामसे जानता था, जबकि उसने .ईसवी ६३९ [वि० ६९६ = हि० १८] के थोड़े ही समय पीछे उक्त राजासे मुलाक़ात की थी; और यह बात ठीक थी, क्योंकि छठे शिलादित्यका दानपत्र संवत् ४४७ का लिखा हुआ था, इसलिये पहिला साल उन पत्रोंके संवत्का या तो सन् २०० .ईसवी के कुछ दिनों पहिले होना चाहिये, या कुछ दिनों पीछे. इसी अरसेमें गुप्त ख़ानदानकी बाबत् .इल्म तारीख़में तलाश करनेसे मालूम हुआ, कि गुप्त संवत्का शुरू साल या तो १६६ .ईसवीमें होना चाहिये, या उस तारीख़ और सन् २०० .ईसवी के कुछ वर्ष बीचमें. अख़ीरमें यह राय क़ाबिल यक़ीन है, कि जो संवत् वल्लभीके दानपत्रोंमें लिखा है, वह गुप्त संवत् है, जिसका बर्ताव वल्लभी ख़ानदानमें गुप्त ख़ानदानके नष्ट होजानेके बाद बराबर जारी रहा, जिस ख़ानदानके तहतमें कि वे कुछ दिनोंतक मातहत राजाओंके तौरपर रहे थे. यह बात ठीक है, कि वल्लभीके ख़ानदानका राज्य कमसे कम २४० वर्षतक ग्यारह पीढ़ियोंमें रहा, क्योंकि ध्रुवसेनका सबसे पुराना दानपत्र संवत् २०७ का और छठे शिलादित्यका सबसे पिछला दानपत्र संवत् ४४७ का लिखा हुआ है, और इससे यह पायागया, कि यह ख़ानदान सन् .ईसवी की दूसरी (१) सदीके अंतसे लेकर सातवीं सदीके मध्यतक रहा."

---

(१) अस्ल किताबके पृष्ठ ११८ में दूसरी सदी लिखा है, परन्तु उसकी जगह चौथी सदी होना चाहिये.

गुप्त संवत्के विषयमें जे० एफ़० फ्लीट साहिबने इण्डियन ऐंटिक्वेरीकी जिल्द १५ के पृष्ठ १८९ में इस तौरपर लिखा है कि- "मंदसोरके कुमारगुप्त और बंधुवर्मन्की प्रशस्ति मालूम होनेके समयतक गुप्त संवत्के बारेमें केवल अल्बेरूनीका बयान काममें आता था, जिसने ग्यारहवीं सदी ईसवीके पूर्वार्द्धमें नीचे लिखीहुई बातें दर्ज की हैं." उनका तर्जमह (अल्बेरूनीकी बनाई हुई उसी नामकी अरबी किताबके पृष्ठ २०५-६ से) यहांपर दर्ज करते हैं:-

"लोग आम तौरसे श्रीहर्ष, विक्रमादित्य, शक, वल्लभ और गुप्तका संवत् काममें लाते हैं. "वल्लभ" जिसके नामका भी एक संवत् है, वल्लभ याने वल्लभी शहरका राजा था, जो दक्षिण तरफ़ अनहलवाड़ासे क़रीब ३० योजनके फ़ासिलेपर वाके है. वल्लभका संवत् शक संवत्के २४१ वर्ष पीछे शुरू हुआ है. उसको काममें लानेके लिये शक संवत्मेंसे ६ का घन (२१६) और ५ का वर्ग (२५) कम करदेते हैं, तो बाक़ी वल्लभी संवत् बचता है. गुप्त संवत्की निस्बत हम गुप्त शब्दसे उन थोड़ेसे लोगोंको समझते हैं, जिनकी निस्बत कहाजाता है, कि वे शरीर (दुष्ट) और ताक़तवर थे, और उनके नामका संवत् उनके ग़ारत होनेका संवत् है. ज़ाहिरमें वल्लभी संवत् गुप्त संवत्के पीछे बहुत ही जल्द शुरू हुआ, क्योंकि गुप्त संवत् भी शक संवत्के २४१ वर्ष पीछे शुरू होता है. श्री हर्षके संवत्का १४८८ वां साल, विक्रमादित्यके संवत्का १०८८ वां वर्ष, शक संवत्का ९५३ वां साल, और वल्लभी और गुप्त संवत्का ७१२ वां साल, ये सब एक ही समयमें आते हैं. ऊपर लिखेहुए खुलासेके मुवाफ़िक़ अल्बेरूनीका यह मत्लब मालूम होता है, कि गुप्त वल्लभी संवत् उस वक़्त शुरू हुआ, जबकि शक संवत्के २१६+२५ = २४१ (३१९, २० सन् ईसवी) गुज़र चुके थे; और उसने जो इस संवत्के ७१२ वें सालको शक संवत्के ९५३ वें वर्षसे मिलाया, इससे भी मालूम होता है, कि इन दोनों में ठीक २४१ वर्षका फ़र्क़ है. वह अपने अगले बयानमें इस संवत्का शक संवत्के २४१ वें वर्षसे शुरू होना साफ़ साफ़ लिखता है, याने वह उस समय शुरू हुआ, जबकि उसके २४० वर्ष गुज़र चुके थे. वह एक तीसरे बयानमें अपनी किताबके अन्दर आगे बढ़कर यह बयान करते वक़्त, कि महमूद गज़नवीके पट्टन सोमनाथ लेनेकी तारीख़ (जैन्युअरी १०२६ ई०) को हिन्दू लोगोंने कैसे मालूम किया? लिखता है, कि शक संवत् ९४७ (ई० १०२५, २६) को इसतरह निकाला, कि अव्वल उन्होंने २४२ लिखा, फिर ६०६ लिखा, और फिर ९९ लिखा. यहांपर अगर्चि वह साफ़ तौरसे गुप्त वल्लभी संवत्का बयान नहीं करता, लेकिन् इसमें कुछ सन्देह नहीं होसक्ता, कि पहिले अंकोंसे वल्लभी संवत् ही मुराद है, और उनसे यह मत्लब मालूम होता है, कि

इस गणनाके अनुसार गुप्त वल्लभी संवत्का पहिला साल उस समय आता है, जबकि शक संवत्के २४२ वर्ष गुज़र चुके थे.

अनहलवाड़ाके अर्जुनदेवकी वेरावलकी प्रशस्तिसे, जिसमें विक्रमी संवत् १३२० और वल्लभी संवत् ९४५ लिखा है, यह साबित होता है, कि यह संवत् वल्लभीके नामके साथ लिखा जाता था- (देखो इण्डियन ऐंटिक्वेरीकी ग्यारहवीं जिल्दका २४१ वां एष्ठ).

कितनेएक लोगोंकी राय यह हुई, कि यह बात नामुम्किन है, कि गुप्त लोगोंका संवत् उनकी बर्बादीके ज़मानेसे शुरू हो; और इस तरहपर दो रायें होगईं. फ़र्गुसन साहिबकी राय थी, की अल्बेरूनीने जो इस संवत्के ज़मानेका हाल लिखा है वह ठीक है, लेकिन् उनकी यह राय नहीं थी, कि वह गुप्त लोगोंकी बर्बादीसे शुरू हुआ, बल्कि उन्होंने ईसवी ३१८, १९ को उस ख़ानदानके (दोबारह) बढ़ने और संवत्के शुरू होनेका सन् माना है.

दूसरे लोगोंकी राय यह थी, कि ईसवी सन् ३१८-१९ गुप्त लोगोंके ग़ारत होनेका समय है, और उन्होंने वल्लभी संवत्को जो ठीक उसी सन्में शुरू हुआ, गुप्त संवत्से बिल्कुल अलग ख़याल किया. इसके सिवा यह कहा, कि गुप्त संवत् गुप्त लोगोंकी बर्बादीकी यादगारमें क़ाइम किया गया; और गुप्त ख़ानदानकी बुन्याद पड़नेका ज़मानह उन्होंने पहिले मानलिया; और उनकी राय यह भी हुई, कि उन लोगोंका संवत् उनकी प्रशस्तियोंमें लिखाजाता है. टॉमस साहिबकी राय थी, की गुप्त संवत् शक संवत्के मुताबिक़ था, और वह ईसवी ७८ में शुरू हुआ. जेनरल कनिंघमने उसको ईसवी १६७ में, और सर एडवर्ड क्लाइव बेलीने १९० ईसवीमें शुरू होना माना. सब लोगोंकी राय थी, कि गुप्त लोगोंके थोड़े ही पीछे वल्लभी राजा हुए, और उन्होंने यह भी माना, कि उन लोगोंने ३१८-१९ ईसवी में वल्लभी शहरकी बुन्याद डाली, और उसी समयसे वल्लभी संवत् क़ाइम हुआ; कुछ तो उस बातकी (वल्लभीकी स्थापना की) यादगारके लिये, और कुछ इस बातकी यादगारके लिये, कि गुप्त राज्यकी समाप्ति होनेपर वह राज्य उनके हाथमें आया तोभी उन्होंने अपना संवत् चलाकर गुप्त संवत्को मेटना नहीं चाहा इससे यह बात सिद्ध होती है, कि भट्टार्क उनके खानदानकी बुन्याद डालने वाला संवत् (गुप्त वल्लभी) २०६ से केवल एक पीढ़ी पहिले आया, जो संवत् कि उनके ही दानपत्रोंमें पहिला है, लेकिन् छठे शिलादित्यके अलीनाके पत्रोंसे, जिनमें संवत (गुप्त) ४४७ है, मालूम होता है, कि उन लोगोंने अपना संवत क़ाइम होनेके पीछे भी गुप्त संवत्को जारी रक्खा, जिसका प्रारम्भ कमसे कम २०६, २८४ और ३१८ ई० में अनुमान किया गया है,

(अलीनाके पत्र इंडियन ऐंटिकेरीकी सातवीं जिल्दके एष्ठ ७९ में छपे हैं) लेकिन् यह बात बहुतही असंभव है. अब इससे अधिक मैं यही कहूंगा, कि पहिली ६ पीढ़ियोंतक, जिनमें भट्टार्क शामिल है, जबकि वे लोग मातह्त सेनापति और महाराज थे, उस समय उनको (वल्लभी राजाओंको) अपना ही संवत् चलानेके लिये न तो इख्तियार था, न ताक़त थी, और न मौक़ा था; और अगर उस घरानेके पहिले बड़े राजा धरसेन चौथेने कोई संवत् क़ाइम किया होता, तो वह कन्नौजके हर्षवर्द्धनके समान अपने राज्याभिषेकसे संवत् शुरू करता, न यहकि अपने ख़ानदानकी बुन्याद पड़नेके समयसे."

ई० १८८७ की इण्डियन ऐंटिकेरीके एष्ठ १४१ में जो फ़्लीट साहिबका लेख दर्ज है उसमें गुप्त वल्लभी संवत्पर उन्होंने यह नोट दिया है, कि- " गुप्त वल्लभी संवत्का नाम प्राचीन समयमें गुप्त संवत् कभी नहीं था, लेकिन् प्रायः ५० वर्षसे बराबर लोग इसको गुप्त संवत् कहते चले आये हैं, और इसलिये जबतक यह निश्चय नहीं होजावे, कि इसकी बुन्याद किसने डाली, तबतक उसका यही नाम रखना ठीक है. पिछले समयमें काठियावाड़ देशमें इसका नाम वल्लभी पड़ा; और अल्बेरूनीने भी लिखा है, कि गुप्त और वल्लभी संवत् दोनों एक ही हैं, और उनका ज़मानह भी एक ही है. सिर्फ़ सन्देह इस बातमें है, कि बाज़े लोगोंकी रायके मुताबिक़ अगले गुप्त लोगोंमें एक गुप्त संवत् प्रचलित था, जो यह गुप्त संवत् नहीं था."

फिर उसी जिल्दके १४२ वें एष्ठमें लिखा है, कि अगर गुप्त वल्लभी संवत् किसी मौक़ेपर दक्षिणी विक्रम संवत् (१) के मुताबिक़ चलता रहा हो, तो इसका विचार करना बहुत ज़रूरी है, क्योंकि इस संवत्की तारीख़ें पिछले वल्लभी संवत्के नामसे काठियावाड़में मिलती हैं, जहांकि गुजरातके समीपवर्ती ज़िलों और उत्तरी कोंकणकी

(१) हिन्दुस्तानमें मुख्य संवत् दो चलते हैं, एक शक संवत्, और दूसरा विक्रम संवत्. शक संवत्का प्रारम्भ हिन्दुस्तान भरमें चैत्र शुक्ल १ को मानाजाता है. विक्रम संवत्के प्रारम्भ और महीनोंके पक्षोंमें उत्तरी और दक्षिणी हिन्दुस्तानमें मत भेद है, याने उत्तरी हिन्दुस्तानमें विक्रम संवत्का प्रारम्भ शक संवत्के अनुसार चैत्र शुक्ल १ को, और अन्त चैत्र कृष्ण ऽऽ को मानाजाता है; और महीनेका प्रारम्भ कृष्ण १ को, और अन्त शुक्ल पूर्णिमाको होता है; इसलिये उत्तरी विक्रम संवत्के महीने पूर्णिमान्त कहेजाते हैं. दक्षिणी हिन्दुस्तानमें विक्रम संवत्का प्रारम्भ कार्तिक शुक्ल १ को, और अन्त आश्विन (अमान्त) कृष्ण अमावास्याको होता है; और इसीलिये दक्षिणी विक्रम संवत्के महीने अमान्त कहेजाते हैं. उत्तरी विक्रम संवत् दक्षिणी विक्रम संवत्से ७ महीने पहिले बैठजाता है.

तरह दक्षिणी विक्रम संवत् प्रचलित है, उन हिस्सोंमें आगे या पीछे गुप्त वल्लभी संवत्का अस्ली हिसाब अलबत्तह लोगोंने अपने स्थानिक कौमी संवत्के हिसाबके मुवाफ़िक़ करना चाहा होगा, और गुजरातमें यह बात होनेका सुबूत वल्लभी राजा चौथे धरसेनके खेड़ाके दानपत्रसे साबित होता है, जो डॉक्टर बुलरने इण्डियन ऐंटिक्वेरीकी १५ वीं जिल्दके पृष्ठ ३३५ में छापा है, उसमें संवत् ३३० द्वितीय मार्गशीर्ष शुक्ल द्वितीया लिखा है. अब आगे मैं यह साबित करूंगा, कि गुप्त वल्लभी संवत्का हिसाब वैसा ही है, जैसा कि उत्तरी शक संवत्, और इन दोनोंका अंतर २४१ वर्षका है. इस दानपत्रमें जो मार्गशीर्ष महीना लिखा है, वह शक संवत् ५७१ अर्थात् .ईसवी ६४९ में होगा, परन्तु कनिंघम साहिबने उस संवत्में अधिक मास नहीं लिखा है, लेकिन् एक वर्ष पहिले अर्थात् शक संवत् ५७० याने .ईसवी ६४८ में कार्तिक अधिक है, और सूर्यकी ठीक स्थितिके ऊपर विचार कियाजावे, तो यह बहुत ठीक मालूम होता है. ज़ियादह विचार करनेसे मालूम हुआ है, कि डॉक्टर श्रामने हिसाब किया, तो .ईसवी ६४८ में निश्चय अधिक मास पायाजाता है, जोकि प्रचलित रीतिके अनुसार कार्तिक होता है, परन्तु औसत गिनतीके हिसाबसे मार्गशीर्ष होगा. उदाहरणके तौरपर मानलो, कि गुप्त वल्लभी संवत् ३०३ के क़रीब गुजरातियोंने उसको अपने यहांके कार्तिकादि हिसाबसे मिलादिया. यदि गुप्त वल्लभी संवत् ३०४ को उन्होंने दक्षिणी विक्रम संवत् ६७९ के साथ कार्तिक शुक्ल १ (१२ ऑक्टोबर ६२२ .ई०) को प्रारम्भ किया हो, तो गुप्त वल्लभी संवत् ३०३ केवल ७ महीने (चैत्र शुक्ल १ से आश्विन् कृष्ण ३०) तक रहा होगा; और यदि गुप्त संवत् ३०४ को उनके यहांके संवत् ६८० के साथ उन्होंने प्रारम्भ किया हो, तो गुप्त संवत् ३०३ को १९ महीनोंतक चलाया होगा; और इस तरह वहांवाले गुप्त वल्लभी संवत्का प्रारम्भ भी गुजरातमें कार्तिक शुक्ल १ से मानते रहे होंगे. लेकिन् वेरावलके लेखसे पायाजाता है, कि यह फेरफार काठियावाड़में गुप्त वल्लभी संवत् ९४५ तक नहीं हुआ; और खेड़ाके दानपत्रसे पायाजाता है, कि गुजरातियोंने दूसरे तरीक़ेसे, याने ६८० के मुताबिक़ ३०४ को प्रारम्भ किया; और इस हिसाबसे मार्गशीर्ष महीना गुप्त वल्लभी संवत् ३३० में आसक्ता है, परन्तु इस संवत्के महीने पूर्णिमान्त हैं. महाराज संक्षोभके दानपत्रमें गुप्त वल्लभी संवत् २०९ चैत्र शुक्ल १३ पहिले लिखा है, और अन्तमें दोबारह तिथि दी है, वहां "चैत्र दि० (दिन) २७" लिखा है, जिससे पायाजाता है, कि यह महीना पूर्णिमान्त है, और इससे यह सिद्ध होता है, कि गुप्त वल्लभी संवत्का हिसाब उत्तरी पूर्णिमान्तसे है, और यही होना ठीक था, क्योंकि अगले गुप्त लोग उत्तरी हिन्दुस्तानके ख़ानदानसे थे.

वेरावलकी प्रशस्तिमें हिजूरी सन् ६६२ = विक्रमी १३२० = वल्लभी संवत् ९४५, तिथि आषाढ़ कृष्ण १३ रविवार लिखा है; और अल्बेरूनीके लिखनेके मुवाफ़िक़ गुप्त वल्लभी संवत् ० = ३१८-१९, या ३१९-२०, अथवा ३२०-२१ .ई०, अर्थात् शक संवत् २४०,२४१ और २४२ मेंसे कोई एक होगा. अब विचार करना चाहिये, कि इन तीनोंमेंसे कौनसा सन् या संवत् शून्यके मुताबिक़ होता है ? इसलिये हमको गुप्त वल्लभी संवत् ९४५ के मुताबिक़ .ईसवी सन् निकालनेके वास्ते शक संवत् ११८५, ११८६ = (गुप्त वल्लभी संवत् ९४५+.ईसवी ३१९-२० = .ईसवी १२६४-६५), और ११८७ पर विचार करना चाहिये.

जोकि वेरावलकी प्रशस्ति काठियावाड़की है, इसलिये यही ख़याल होता है, कि जो विक्रम संवत् इसमें लिखा है वह दक्षिणी विक्रम संवत् है, जो कार्तिक शुक्ल प्रतिपदाको शुरू होता है. इस बातसे और भी निश्चय होता है, कि इसमें हिज्री ६६२ भी लिखा है, और वह रविवार ४ नोवेम्बर सन् १२६३ .ईसवीको शुरू, और शनिवार २३ ऑक्टो-बर सन् १२६४ .ईसवीको ख़त्म हुआ; लेकिन् आषाढ़का महीना अंग्रेज़ी जून या जुलाई के मुताबिक़ होता है, इसलिये अंग्रेज़ी तारीख़ जून या जुलाई १२६४ .ईसवीके नज़्दीक होगी, और इससे उत्तरी विक्रम संवत्का कुछ सरोकार नहीं रहा, क्योंकि उत्तरी विक्रम संवत् १३२० का आषाढ़ १२६३ .ईसवीका जून या जुलाई होता है; और १२६४ का जून या जुलाई शक संवत् ११८६ में पड़ा (अर्थात् वल्लभी संवत् ९४५ ठीक शक संवत् ११८६ के मुताबिक़ होता है), इसलिये शक संवत् ११८५ और ११८७ के लिये हिसाब करना कुछ ज़रूर नहीं. जेनरल कनिंघम साहिबने निश्चय करके लिखा है, कि तारीख़ २५ वीं मई सन् १२६४ .ईसवीको रविवार (जो वेरावलके लेखमें दर्ज है) होता है.

ऊपर लिखेहुए बयानसे साफ़ ज़ाहिर है, कि शक संवत् और गुप्त वल्लभी संवत्का अन्तर २४१ वर्षका है, और उत्तरी विक्रम संवत् तथा शक संवत्का अन्तर १३५ वर्षका. अतः उपरोक्त कुल तह्क़ीक़ातसे उत्तरी विक्रम संवत् और वल्लभी संवत्का अन्तर ३७६ वर्षका, और दक्षिणी विक्रम संवत् और वल्लभी संवत्का ३७५-७६ समझना चाहिये, याने दक्षिणी संवत्में चैत्र शुक्ल १ से आश्विन् कृष्ण अमावास्यातक ३७५ वर्षका और कार्तिक शुक्ल १ से फाल्गुन् कृष्ण अमावास्यातक ३७६ वर्षका अन्तर रहता है.

अब हम अपनी तह्क़ीक़ातके मुवाफ़िक़ कुछ पुराना इतिहास लिखना शुरू करते हैं:-

यह तो साबित होही चुका है, कि वल्लभीकी शाखाके मुख्य अधिकारी उदयपुर (मेवाड़) के महाराणा हैं; तो अब यह कहना ज़रूर है, कि वल्लभीसे मेवाड़में कौन आया ? जिसका जवाब ऐतपुरकी प्रशस्तिसे आसानीके साथ मिलसक्ता है, उसमें लिखा है, कि गुहिल आनन्दपुरसे (मेवाड़के पहाड़ोंमें) आया. परन्तु अब यह एक दूसरा सवाल पैदा हुआ, कि वह (गुहिल) किस तरह और किस वक्त आया ? इस विषयमें हम अपनी राय इस तौरपर ज़ाहिर करते हैं, कि विक्रमी ७१८ [हि० ४१ = .ई० ६६१] की एक प्रशस्ति अपराजितके शुरू समयकी कूंडां ग्राममें हमको मिली उससे साबित हुआ, कि उक्त संवत्में अपराजित राजा राज्य करता था, जो गुहिलसे छठे नम्बरपर है, तो गुहिलका ज़मानह क़रीब क़रीब मालूम होगया, कि छठी सदी विक्रमी के उत्तरार्द्ध (छठी सदी .ईसवीके पूर्वार्द्ध) में गुहिल आनन्दपुरसे मेवाड़में आया, और इससे जेनरल कनिंघमका लिखना भी क़रीब क़रीब सहीह होगया- (देखो पृष्ठ २२२-२२३). हमारा ऊपर बयान कियाहुआ ख़याल इस तरहपर सहीह होसक्ता है, कि ऐतपुरकी प्रशस्ति (शक्तिकुमारके समय की) (१) विक्रमी १०३४ [हि० ३६७ = .ई० ९७७] की, और उदयपुरमें दिल्ली दर्वाज़हके बाहिर शारणेश्वर महादेवके मन्दिरकी प्रशस्ति (अल्लटके समयकी) विक्रमी १०१० [हि० ३४२ = .ई० ९५३] की, और कूंडांकी प्रशस्ति विक्रमी ७१८ [हि० ४१ = .ई० ६६१] की है. यदि कूंडांकी प्रशस्तिके संवत् ७१८ और शारणेश्वरकी प्रशस्तिके संवत् १०१० के बीचका समय निकालें, तो २९२ वर्ष आता है, जिसमें अपराजितसे अल्लटतक ७ राजाओंके समयका औसत निकालनेसे प्रत्येक राजाके राज्यसमयका औसत ४१ वर्षसे कुछ अधिक हुआ, और यह औसत अधिक है, क्योंकि इस हिसाबसे इन राजाओंकी आयुष्य अधिक ठहरती है. इसके बाद ऐतपुरकी प्रशस्ति के संवत् १०३४ तक अल्लटके पीछे २४ वर्षमें तीन राजा हुए, तो इन राजाओंके राज्यका औसत आठ वर्ष आया; इसलिये अब हम संवत् ७१८ से संवत् १०३४ तक, याने ३१६ वर्षमें अपराजितसे शक्तिकुमारतक १० राजाओंके राज्यसमयका औसत निकालते हैं, जिसमें प्रत्येक राजाके लिये ३१ वर्षसे कुछ अधिक समय आता है, और इस हिसाबके मुवाफ़िक़ अपराजितसे पहिले गुहिलतक पांच राजाओंका औसत गिनाजावे, तो विक्रमी ७१८ से १५५ वर्ष पहिले, याने छठी सदी विक्रमी के उत्तरार्द्धमें गुहिलका होना साबित होता

(१) यह प्रशस्ति कर्नेल् टॉडने अपनी किताब टॉडनामह राजस्थानकी जिल्द अव्वलके शेष-संग्रह नम्बर ५ में दर्ज की है.

है; और यदि यह औसत अधिक मानाजावे, तो आम तवारीख़ वाले १०० वर्ष में ४ पुश्तका औसत मानलेते हैं, इससे भी विक्रमी ७१८ से १२५ वर्ष पहिले गुहिलका होना सिद्ध होता है, जैसा कि हम ऊपर लिखआये हैं. इसके सिवा कर्नेल् टॉडने जो अपने प्रमाणोंसे विक्रमी ५८० (.ई० ५२३) में वल्लभीका ग़ारत होना और गुहिलके मेवाड़में आने वगैरहका हाल लिखा है, उससे भी गुहिलका क़रीब क़रीब वही समय साबित होता है, जो हमने बयान किया. लेकिन् उक्त कर्नेल्ने जो वल्लभी ग़ारत होनेके हमलेमें गुहिलके पिता शिलादित्यका माराजाना लिखा है वह ग़लत है, क्योंकि अगर हम उस ज़मानहमें छठे शिलादित्यको गुहिलका पिता मानें, तो उसका एक दानपत्र वल्लभी संवत् ४४७ का मिला, उसके मुताबिक़ विक्रम संवत् निकालने, याने ४४७ में ३७६ जोड़नेसे, जो विक्रम संवत् और वल्लभी संवत्का अन्तर है, विक्रमी ८२३ [हि० १४९ = .ई० ७६६] के पीछे वल्लभी ग़ारत होकर गुहिलका मेवाड़में आना पायागया; परन्तु यह बात गैरमुमकिन है, क्योंकि विक्रमी ७१८ [हि० ४१ = .ई० ६६१] की कूंडांकी प्रशस्तिसे उक्त संवत्में अपराजितका मौजूद होना ऊपर बयान होचुका है, और अपराजित गुहिलसे छठी पीढ़ीमें है, तो विक्रमी ७१८ से एक मुद्दत पीछे विक्रमी ८२३ में छठा शिलादित्य गुहिलका पिता किसीतरह साबित नहीं होसक्ता; और अगर पहिले शिलादित्यको गुहिलका पिता समझें, तो यह भी असम्भव है, क्योंकि उसका ज़मानह उसीके एक दानपत्रसे वल्लभी संवत् २९० (विक्रमी ६६६) होता है, जो विक्रमी ५८० से बहुत पीछे है. हमारे अनुमानसे उस समय वल्लभीमें कोई दूसरा राजा होगा, कि जिसके मारेजाने बाद उक्त खानदानकी बड़ी शाखा (जिसमें गुहिल और बापा हुए) मेवाड़के पहाड़ों याने अर्वली पहाड़में आकर छुपी, और कुछ समय पीछे इसी खानदानकी छोटी शाखाने फिर वल्लभीपर क़बज़ह करलिया, अथवा हमला करनेवाले लोगोंने वल्लभीके बड़े राजाओंको अपना मातहत दिखलानेके लिये इस शाखाके किसी शख़्सको वल्लभीपर बिठादिया हो, (जैसे कि अक्बर और जहांगीर बादशाहने महाराणा प्रतापसिंहके छोटे भाई सगरको महाराणाका खिताब देकर चित्तौड़पर बिठादिया था, और बड़ी शाखा वालोंने शत्रुकी आधीनतासे नफ़त करके पहाड़ोंमें तक्लीफ़ें उठाना सहन किया), और उसीके वंशमें ध्रुवसेन (१) और आख़री राजा छठा शिलादित्य हुआ, जिसके समयमें इस खानदानके हाथसे वल्लभीका राज्य बिल्कुल जाता रहा. अब इससे यह साफ़ तौरपर साबित होगया,

(१) इस राजाको चीनी मुसाफ़िर ह्यूएन्त्सांगने ध्रुवपट लिखा है, जबकि वह .ई० ६३९ में वल्लभीको आया और उससे मुलाक़ात की– (देखो पृष्ठ २२०).

कि विक्रमी ८२३ में या ६६६ में वल्लभी ग़ारत होकर उस ख़ानदानकी शाखा मेवाड़में नहीं आई, और न उस समय वल्लभीमें पहिला या छठा शिलादित्य था, जो वल्लभीसे मेवाड़का ख़ानदान फटनेके समय वहां मारागया हो, किन्तु वह कोई दूसरा राजा था. हां यह पायाजाता है, कि वल्लभीपर दो हमले हुए, जिसमें पहिला बहुत बड़ा हमला तो गुहिलके मेवाड़में आनेके पहिले हुआ, जिसका हाल कर्नेल् टॉड वगैरहने जैन ग्रन्थोंसे दिया है, और प्रशस्तियोंमें भी लिखागया है; और दूसरा हमला छठे शिलादित्यके समयमें अथवा उसके पीछे इस ख़ानदानकी नाताक़र्ताके ज़मानहमें हुआ, परन्तु इसका ठीक ठीक समय और व्यवरेवार हाल नहीं मिलता.

अब हम बापाका हाल लिखते हैं, जिसमें इन बातोंका निर्णय करना ज़रूरी है, कि बापा किसी राजाका नाम था या ख़िताब, और ख़िताब था तो किस राजाका था, और उसने किस तरह और कब चित्तौड़ लिया ? यह निश्चय हुआ है, कि बापा किसी राजाका नाम नहीं, किन्तु ख़िताब है, जिसको कर्नेल् टॉडने भी ख़िताब लिखकर अपराजितके पिता शीलको बापा ठहराया है; लेकिन् कूंडांकी (विक्रमी ७१८ की) प्रशस्तिके मिलनेसे कर्नेल् टॉडका शीलको बापा मानना ग़लत साबित हुआ, क्योंकि उक्त संवत् में शीलका पुत्र अपराजित राज्य करता था, और विक्रमी ७७० [हि० ९४ = ई० ७१३] में मोरी कुलका मानसिंह चित्तौड़का राजा था (१), कि जिसके पीछे विक्रमी ७९१ [हि० ११६ = ई० ७३४] में बापाने चित्तौड़का क़िला मोरियों से लिया, जो हम आगे लिखते हैं, तो हमारी रायसे अपराजितके पुत्र अर्थात् शील के पोते महेन्द्रका ख़िताब बापा था, और वही रावलके पदसे प्रसिद्ध हुआ. सिवा इसके एकलिंग महात्म्यमें बापाका पुत्र भोज और भोजका खुमाण लिखा है, उससे भी महेन्द्रका ही ख़िताब बापा सिद्ध होता है.

ऊपर बयान कीहुई कूंडांकी प्रशस्तिसे पायाजाता है, कि उक्त प्रशस्ति खोदी-जानेके समय अपराजित कम उम्र होगा, और उसने बड़ी उम्र पाई; और उसी प्रशस्तिमें उसके फ़ौजी अफ़्सरको सेनापति महाराज वराहसिंह लिखनेसे यह भी पायाजाता है, कि अपराजित एक बड़ा राजा था, क्योंकि किसी छोटीसी सेनाके अफ़्सरका महाराज और सेनापतिके पदसे प्रसिद्ध होना सम्भव नहीं. यक़ीन होता है,

(१) मानसरोवरकी प्रशस्ति, जो कर्नेल् टॉडको मिली, और जिसके हरएक श्लोकका तर्जमह उसने लिखा है, वह प्रशस्ति विक्रमी ७७० [हि० ९४ = ई० ७१३] में खोदीगई थी, जिस से उक्त संवत्में मोरी ख़ानदानके राजाका चित्तौड़पर राज्य करना साबित है.

कि विक्रमी ७७० [हि० ९४ = .ई० ७१३] के क़रीब शत्रुओंने एकदम हमला करके अपराजितको उसके पहाड़ी राज्यमें आदबाया, जिसमें वह अपने साथियों सहित लड़कर मारागया और उसका राज्य भी उसके हाथसे जातारहा. इस आपत्तिकालमें उक्त राजाकी राणी अपने बालक पुत्र महेन्द्र (बापा) सहित बचाई जाकर नागदामें पुरोहित वशिष्ठ रावलके यहां लाई गई, और वहीं रहने लगी; तो अब बापाके चित्तौड़का राज्य हासिल करनेका समय और उसकी हुकूमतका ज़मानह बताना ज़ुरूर है.

जब महेन्द्र (बापा) अपने पुरोहितके यहां रहते रहते कुछ होश्यार हुआ, तो उसकी गायें चरानेके लिये जंगलमें जाने लगा, और इसी ज़मानहमें उसको भोडेला तालाबके पीछे हारीत नामी एक तपस्वी मिला. बापा हमेशह उसके पास जाता और उसकी टहल बन्दगी किया करता था; उसके ज़रीएसे उसको एकलिङ्ग महादेवके दर्शन हुए, जो बांसके वृक्षोंमें एक शिवलिङ्ग था. एकलिङ्ग माहात्म्यमें इस कथाको करामाती बातोंके साथ बढ़ाकर लिखा है, लेकिन् मश्हूर है, कि उसी महात्माके आशीर्वादसे बापाको बरकत हासिल हुई, और बहुतसी दौलत ज़मीनसे मिली, और उसने विक्रमी ७९१ [हि० ११६ = .ई० ७३४] में राजा मान मोरीसे चित्तौड़का क़िला लिया. कर्नेल् टॉडने अपनी किताबमें जिन प्रमाणोंसे विक्रमी ७८४ [हि० १०८ = .ई० ७२७] में बापाका चित्तौड़ लेना लिखा है, वे प्रमाण अनुमान मात्र हैं. अगर्चि हम भी इस विषयमें अपने अनुमानसे ही काम लेते हैं, परन्तु यह आम क़ाइदह है, कि हरएक बातकी तह्क़ीक़ातमें पहिले अनुमान की बनिस्बत दूसरा अनुमान प्रबल होता है. मेवाड़की ख्यातिकी पोथियों और बड़वा भाटोंकी किताबोंमें बापा रावलका चित्तौड़ लेना विक्रमी १९१ में लिखा है, लेकिन हमारे ख़यालसे विक्रमी ७९१ के एवज़ १९१ का ग़लतीसे मश्हूर होना पायागया, क्योंकि हिन्दी भाषामें एक और सातके अंककी गांठ एकसी होती है, केवल नीचेकी रेखा एककी सीधी और सातके अंककी पुरानी लिपिमें बहुत ही कम टेढ़ी होती थी, किसी प्रशस्ति अथवा पुस्तकमें सातके अंकका झुकाव नष्ट होजानेसे देखने वालोंने सातको एक समझकर १९१ मश्हूर करदिया, और उसीके अनुसार लिखाजाने लगा. कर्नेल् टॉडने अपने अनुमानसे लिखा है, कि मेवाड़के बड़वा भाटोंने यह तो नहीं समझा, कि वल्लभी ग़ारत होनेके १९० वर्ष पीछे बापा पैदा हुआ, और ग़लतीसे १९१ विक्रमीमें उसका होना ख़याल करके वैसा ही अपनी किताबोंमें लिखदिया. अब यह जानना चाहिये, कि यह ग़लती कब हुई ? तो इसके लिये हम यह साबित करसक्ते हैं, कि महाराणा रायमल्लके पीछे यह भूल प्रचलित हुई; क्योंकि एकलिङ्ग माहात्म्यमें, जिसको लोग वायुपुराणका हिस्सह कहते हैं, और जो मेवाड़

देशमें एक पवित्र ग्रन्थ मानाजाता है, उसके २० से २६ अध्यायतक वायु देवताने मेवाड़के भविष्यत राजाओंका वर्णन किया है और उस वंशावलीमें आखरी नाम महाराणा रायमल्लका है, इससे पायाजाता है, कि उक्त राजाके समयमें यह ग्रन्थ बनायागया.

कर्नेल् टॉडने अपने अनुमानसे बापाका २६ वर्षतक राज्य करना लिखा है, परन्तु हमारे अन्दाज़से १९ वर्ष राज्य करना साबित होता है, क्योंकि एकलिङ्ग माहात्म्यके बीसवें अध्यायका इक्कीसवां श्लोक यह है:-

श्लोक.

राज्यन्दत्वा स्वपुत्राय आथर्वणमुपागतः॥
खचन्द्रदिग्गजाख्ये च वर्षे नागह्रदे मुने॥

अर्थ- अपने पुत्रको राज्य देकर (बापा) संवत् ८१० आठ सौ दशमें आथर्वण ऋषिके पास (सन्यास लेनेको) नागदामें आया.

जबकि विक्रमी ७९१ [हि० ११६ = .ई० ७३४] में महेन्द्र (बापा) ने चित्तौड़का राज्य लिया, और विक्रमी ८१० [हि० १३५ = .ई० ७५३] में सन्यास लिया, तो साफ़ तौरपर साबित होगया, कि उसने १९ वर्षतक राज्य किया. इसके सिवा कर्नेल् टॉडने अपने अनुमानसे बापाका १५ वर्षकी अवस्थामें चित्तौड़ लेकर ३९ वर्षकी .उम्रतक राज्य करना लिखा है, लेकिन् हमारे अनुमानसे २० वर्षकी अवस्थामें चित्तौड़ लेकर ३९ वर्षकी अवस्था उसके सन्यास लेनेका समय मानना चाहिये, क्योंकि उक्त कर्नेल्के अनुमानसे भी वल्लभी ग़ारत होनेके १९० वर्ष पीछे बापाका पैदा होना साबित होता है.

बाज़ लोग बापाका देहान्त खुरासानकी तरफ़ होना लिखते हैं, लेकिन् यह बात ग़लत मशहूर होगई है, क्योंकि बापाका समाधिस्थान एकलिङ्गपुरीसे उत्तरको एक मीलसे कुछ अधिक फ़ासिलेपर अबतक मौजूद है, जहां एक छोटासा मन्दिर है, जो जीर्णोद्धार होकर पीछेसे दुरुस्त किया गया है, और उसपर बारहसौसे कुछ ऊपर संवत् लिखा है, जो उसके जीर्णोद्धारका संवत् है. यह रमणीय स्थान 'बापा रावल' के नामसे प्रसिद्ध है. इससे यह साबित होगया, कि बापाने एकलिङ्गपुरीमें परलोक वास किया, खुरासानकी तरफ़ नहीं. अल्बत्तह यह बात सहीह है, कि बापा रावलने थोड़े ही समयमें बहुत बड़ा नाम हासिल किया, और अपना राज्य भी बहुत कुछ बढ़ाया, अगर खुरासान भी उसने फ़त्ह करलिया हो, तो आश्चर्य नहीं.

बापाने जो अपना लक़ब रावल रक्खा इसका कोई पक्का प्रमाण नहीं मिलता, अल्बत्तह जिन पुजारी ब्राह्मणोंके यहां उसने पर्वरिश पाई वे रावल कहलाते थे, शायद यह लक़ब बापाने उनकी ख़ैरख्वाहीकी यादगारमें इख्तियार करलिया हो. लोग इस विषयमें कई क़िस्से बयान करते हैं, जिनमेंसे एक यह है, कि अम्बिका भवानीने स्वप्नमें बापाकी माताको कहा, कि तुम्हारे एक बड़ा प्रतापी और पराक्रमी पुत्र उत्पन्न होगा, उसको चाहिये कि राजाका ख़िताब छोड़कर रावल कहलावे; और उसी क़ौलके मुवाफ़िक़ बापाने अपनी माताके कहनेसे यह पद धारण किया. चाहे कुछही हो, परन्तु इसमें सन्देह नहीं, कि रावल पदका अर्थ बहादुर राजपूतोंको शोभा देनेवाला है, याने राव शब्द उसके लिये आता है, जो लड़ाईके समय गर्जनाको स्वीकार करे.

बापाका चित्तौड़ लेना लोग कई तरहपर प्रसिद्ध करते हैं. बाज़ लोगोंका क़ौल है, कि उसने मान मोरी राजाको फ़त्ह करके चित्तौड़ लेलिया; और बाज़ कहते हैं, कि उसने उक्त राजाके यहां नौकर रहकर राज्य हासिल किया. इसी तरह बापाको हारीतराशिके द्वारा महादेवका दर्शन होना भी बहुतसी करामाती बातोंके साथ प्रसिद्ध है. बाज़ लोग कहते हैं, कि बापाका शरीर याने क़द हारीतराशिके वरदानसे १४ हाथ ऊंचा होगया, उनके हाथकी तलवार बत्तीस मन वज़नकी थी, और वह एक वक्तमें कई बकरे खासक्ते थे वगैरह वगैरह, और हिन्दी कवितामें भी इन बातोंका बयान है; लेकिन् ऐसी बातोंका कोई पक्का सुबूत नहीं मिलता, जैसा जिसके जीमें आया उसी तरहका क़िस्सह कहसुनाया. हां इसमें सन्देह नहीं, कि उसने राजा मानमोरीसे विक्रमी ७९१ [हि० ११६ = ई० ७३४] में चित्तौड़का क़िला लिया. आबूके अचलगढ़ वगैरहकी प्रशस्तियोंमें इन करामाती बातोंका ज़िक्र नहीं है, केवल हारीतराशिकी दुआसे राज्यका मिलना और एक पैरका सोनेका कड़ा बापाको हारीतका देना लिखा है, लेकिन् ये प्रशस्तियां भी उस समयसे बहुत वर्ष पीछे लिखी गई हैं.

अगर्चि राजाओंकी निस्वत करामाती बातों, और प्रसिद्ध क़िस्से कहानियोंको उनके हालमें दर्ज न करना राजपूतानहमें एक बड़ा भारी जुर्म समझा जाता है, परन्तु मुझ अकिञ्चनको अपने स्वामी महाराणा साहिब श्री शम्भुसिंह, श्री सज्जनसिंह और श्री फ़त्हसिंह साहिबकी गुणग्राहकताने इस बातका हौसिलह और हिम्मत दिलाई, कि सहीह और अस्ली हालात ज़ाहिर करनेके सिवा क़िस्से कहानियोंकी बातें बहुत ही कमीके साथ लिखकर पाठकोंके अमूल्य समयको बचावे. यदि क़िस्से कहानियोंका कुछ भी हिस्सह सहीह नहो, तोभी इसमें सन्देह नहीं, कि महेन्द्र (बापा)

हिन्दुस्तानका बड़ा प्रतापी, पराक्रमी और तेजस्वी महाराजाधिराज हुआ, और उसने अपने पूर्वजोंके प्रताप, बड़प्पन और पराक्रमको दोबारह प्रकाशित किया, जो थोड़े समयतक नष्ट होगया था. अगर यह महाराजा सारे हिन्दुस्तानका एक ही छत्रधारी न हुआ हो, तोभी हिन्दुस्तानके दूसरे राजाओंमें अग्रगण्य और बड़ा समझा गया था. इस राजाका बड़ा राज्य होनेकी बहुतसी गवाहियां मिलसक्ती हैं, जैसा कि अरब देशके मुसल्मान मुसाफ़िरों याने सुलैमान और अबूज़ैदुल्हसनने बलहाराका राज्य चीन देशकी सीमातक लिखा है, जो बापा रावलके प्रपौत्रका समय होगा, जिसका तर्जमह ऊपर लिखागया है; और मश्हूर क़िस्से कहानियोंको सुनिये, तो बापा और उसके पोते आदिको हिन्दुस्तानका चक्रवर्ती कहसक्ते हैं.

महेन्द्र (बापा) और रावल समरसिंहके बीचकी पीढ़ियोंका तवारीख़ी हाल सिवा क़िस्से कहानियोंके शृंखलाबद्ध पूरा पूरा न मिलनेके कारण अब हम यहांपर रावल समरसिंहका हाल लिखना शुरू करते हैं, क्योंकि उक्त रावलकी तवारीख़ पृथ्वीराजरासा नामकी पुस्तकसे बहुत कुछ ग़लत मश्हूर होगई है, और हरएक आदमी उसको पूरे यक़ीनके साथ मानता है. वास्तवमें यह ग्रन्थ किसी भाटने पृथ्वीराजके बहुत समय पीछे भाषा कवितामें बनाकर प्रसिद्ध करदिया है; मैं नहीं जानता कि उसने किस मत्लबसे यह ग्रन्थ रचकर राजपूतानहकी तवारीख़को बर्बाद किया.

उक्त ग्रन्थकी नवीनता सिद्ध करनेके लिये यहांपर चन्द सुबूत लिखेजाते हैं:-

यह बहुत प्रसिद्ध हिन्दी काव्य जिसे बहुधा विद्वान लोग पृथ्वीराज चहुवानके कवि चन्द वरदाईका बनाया हुआ मानते हैं, और जो पृथ्वीराजका इतिहास जन्मसे मरण पर्य्यंत वर्णन करता है, अस्ल नहीं है; मेरी बुद्धिके अनुसार यह ग्रन्थ चन्दके कई सौ वर्ष पीछे जाली बनाया गया है. इसका बनाने वाला राजपूतानहका कोई भाट था, जिसने इस काव्यसे अपनी जातिका बड़प्पन दिखलाना चाहा. पृथ्वीराजरासा पृथ्वीराज या चन्दके समयमें नहीं, किन्तु पीछे बना, इस बातको मैं कई प्रमाणोंसे सिद्ध करसक्ता हूं. पहिले तो यह कि बहुतसे उदाहरण लिखकर, और उनको अशुद्ध ठहराकर इस काव्यमें लिखेहुए साल संवतोंकी ग़लती ज़ाहिर करूंगा, जैसे कि पृथ्वीराजका जन्म संवत् उक्त नामकी हस्ताक्षरी पुस्तकके पत्र १८ पृष्ठ १ में लिखा है:-

दोहा.

एकादमसै पंचदह विक्रम साक अनन्द ॥
तिहि रिपुपुर जय हरनको भे पृथिराज नरिन्द ॥

अर्थात् शुभ संवत् विक्रमी १११५ में राजा पृथ्वीराज अपने शत्रुका नगर अथवा देश लेनेको उत्पन्न हुआ.

फिर उसी पत्रके दूसरे पृष्ठपर निम्न लिखित पद्धरी छन्द लिखा है:-

दर्बार बैठि सोमेसराय ॥
लीने हजूर जोतिग बुलाय ॥
कहो जन्मकर्म बालक बिनोद ॥
सुभ लग्न मुहूरत सुनत मोद ॥ १ ॥
संबत्त इक दश पञ्च अग्ग ॥
बैसाप तृतिय पख कृष्ण लग्ग ॥
गुरु सिद्ध जोग चित्रा नखत्त ॥
गर नाम करन सिसु परम हित्त ॥ २ ॥
ऊषा प्रकास इक घरिय राति ॥
पल तीस अंश त्रय बाल जाति ॥
गुरु बुद्ध सुक्र परि दसें थान ॥
अष्टमे वार शनिफल बिधान ॥ ३ ॥
पंचमे थान परि सोम भोम ॥
ग्यारमे राहु खल करन होम ॥
बारमे सूर सो करन रंग ॥
अनमी नमाय तिन करे भंग ॥ ४ ॥

इस छन्दमें पृथ्वीराजके जन्म समयपर ज्योतिषियोंकी कहीहुई जन्मपत्रीकी बातें लिखी हैं. छन्दका अर्थ यह है, कि राजा सोमेश्वरदेव (पृथ्वीराजका पिता) एक दर्बार करके विराजमान हुआ, और उसने ज्योतिषियोंको अपने सामने बुलाकर कहा, कि बालकके जन्मकर्म और चरित्र बतलाओ. उसका अच्छा लग्न और अच्छा मुहूर्त सुनतेही सब लोग हर्षित हुए.

विक्रमी १११५ वैशाख कृष्ण तृतीयाके दिन जन्म हुआ; गुरुवार, सिद्ध योग, और चित्रा नक्षत्र था; और गर नामका करण बालकके लिये परम हितकारी था; जन्म होनेके समय एक घड़ी ३० पल ३ अंश ऊषाकालके व्यतीत हुएथे; बृहस्पति, बुध, और शुक्र १० वें भवनमें थे; आठवें शनिश्चरका फल बालकके लिये बतलाया गया; चन्द्र और मंगल पांचवें स्थानमें थे, और राहु ११ वें स्थानपर था, जो दुष्ट वैरियोंको जलाने-

वाला है; सूर्य बारहवें भवनमें था, जो बड़ा प्रताप या बड़ी कान्ति देने वाला, और नहीं नमने (झुकने) वाले वैरियोंको झुकाकर नष्ट करने वाला है.

इसी छन्दमें आगे ज्योतिषियोंने पृथ्वीराजकी अवस्थाके विषयमें राजा सोमेश्वर-देवसे भविष्यद्वाणी कही है:-

चालीस तीन तिन वर्ष साज । कलि पुहमि इंद्र उद्धार काज ॥

इसका अर्थ यह है, कि तेतालीस वर्षकी उसकी अवस्था होगी, और कलियुगमें वह पृथ्वीका उद्धार करने वाला इंद्र होगा.

फिर एक छप्पय छन्द दिल्लीदानप्रस्तावके पत्र ९० के १ पृष्ठमें लिखा है, जिसमें यह वर्णन है, कि पृथ्वीराजको उसके नाना दिल्लीके राजा अनंगपाल तंवरने गोद लिया, जिसके कोई पुत्र नथा:-

एकादश संवत्तह अट्ठ अग्ग हति तीस भनि ॥
प्रथम सु ऋतु तहं हेम सुद्ध मगसिर सुमास गनि ॥
सेत पक्ख पंचमिय सकल वासर गुरु पूरन ॥
सुदि मगसिर सम इन्द जोग सिद्ध हि सिध चूरन ॥
पहु अनंगपाल अप्पिय पुहमि पुत्तिय पुत्त पवित्त मन ॥
छंड्यो सु मोह सुख तन तरुनि पति बद्री सज्जे सरन ॥ १ ॥

इसका अर्थ यह है, कि संवत् ११३८ के हेमंत ऋतुके आरम्भमें, शुभ मार्गशीर्ष महीनेके शुक्लपक्षकी पंचमी तिथि, और सकल कला करके पूर्ण बृहस्पतिवारको, मंगलदायक मृगशिर नक्षत्र (१) के अखंडित चन्द्रमा, और सिद्ध योग में, जो मंगलकी चूर्ण है, राजा अनंगपालने अपना राज्य अपनी पुत्रीके पुत्र, अर्थात् दौहित्रको प्रसन्नता पूर्वक शुद्ध मनसे दिया; और आप अपने शरीरका तथा स्त्रियोंका सब सुख त्यागकर बद्रिकाश्रमको गया, अर्थात् उसने श्री बद्रीनाथके चरण कमलोंका आश्रय लिया.

फिर माधव भाटकी कथाके पर्व (पत्र ८४ पृष्ठ १) में यह दोहा लिखा है:-

दोहा.

१- ग्यारहसे अठतीस भनि भो दिल्ली पृथिराज ॥
सुन्यो साह सुरतानवर बज्जे बज्ज सुबाज ॥ १ ॥

अरिल.

२- ग्यारहसे अठतीसा मानं भे दिल्ली नृपराज चुहानं ॥
विक्रम बिन सक बंधी सूरं तपै राज पृथिराज करूरं ॥ १ ॥

---

(१) शुक्ल पंचमीमें मृगशिर नक्षत्र नहीं होसका.

अर्थ.

१- पृथ्वीराज संवत् ११३८ में दिल्लीका राजा हुआ; इस बातको सुनकर सुल्तान शहाबुद्दीन गोरीने लड़ाईके अच्छे बाजे बजवाये.

२- संवत् ११३८ में (पृथ्वीराज) चहुवान दिल्लीका राजा हुआ; विक्रमादित्यके बिना भी यह राजा संवत् चलानेके योग्य है, अर्थात् इसका पराक्रम विक्रमके समान है. इसका बड़ा क्रूर राज तपता है, अर्थात् इसकी आज्ञाको कोई नहीं मेट सक्ता.

पृथ्वीराजके नौकरोंमेंसे 'कैमास' नामी एक बुद्धिमान राजपूतने, जिसका नाम अभीतक प्रसिद्ध है, शहाबुद्दीनसे जो लड़ाई की उसका वर्णन १८० पत्रके पहिले पृष्ठमें इस प्रकार लिखा हैः-

हनूफाल छन्द.

१- संवत हरचालीस, वदि चैत एकम दीस ॥
रविवार पुष्य प्रमान, साहाब दिय मैलान ॥ १ ॥

छप्पय.

२- ग्यारहसै चालीस चैत वदि सस्सिय दूजो ॥
चढ्यो साह साहाब आनि पंजाबह पूज्यो ॥
लक्ख तीन असवार तीन सैंहस मद मत्तह ॥
चल्यो साह दरकूच कढिय जुग्गिनि धुर वत्तह ॥
सामंत सूर विकसे उअर कायर कंपे कलह सुनि ॥
कैमास मंत्रि मंत्रह दियो ढिग बैठे चामंड पुनि ॥ १ ॥

अर्थ.

१- संवत् ११४० ('हर' ज्योतिषमें ११ को कहते हैं) चैत्र कृष्ण प्रतिपदा रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र (१) के समय शहाबुद्दीन गोरीने अपनी सैन्यके डेरे दिये.

२- संवत् ११४० चैत्र कृष्ण २ के चन्द्रमाके दिन शहाबुद्दीन गोरीने चढ़ाई की, और पंजाबमें पहुंचा, अथवा वहांके लोगोंने उसको पूजा, अर्थात् मानलिया; उसके साथ तीन लाख सवार और तीन सहस्र मतवाले हाथी थे. वहांसे निकलकर मन्ज़िल दर मन्ज़िल जुग्गिनी (दिल्ली)की ओर घुर्राता हुआ चला, योद्धा और बहादुरोंका मन प्रसन्न हुआ, कायर लोग लड़ाईका नाम सुनकर कांपने लगे, मंत्री कैमास जिसने पृथ्वीराजको सलाह दी थी, और चामंडराय जो उसका वीर योद्धा था, दोनों उसके पास बैठे थे.

(१) इस दिन पुष्य नक्षत्र नहीं होसक्ता.

इसके बाद पत्र १९१ के पृष्ठ १ में निम्नोक्त छप्पय छन्द लिखा है:-

छप्पय.

ग्यारहसै चालीस सोम ग्यारस वदि चैतह ॥
भये साह चहुवान लरन ठाढ़े बनि खेतह ॥
पंच फौज सुरतान पंच चौहान बनाइय ॥
दानव देव समान ज्वान लरने रिन धाइय ॥
कहि चंद दंद दुनिया सुनो वीर कहर चच्चर जहर ॥
जोधान जोध जंगह जुरत उभय मध्य बीत्यो पहर ॥ १ ॥

अर्थ.

संवत् ११४० चैत्र कृष्ण ११ सोमवारके दिन पृथ्वीराज चहुवान दिल्लीका शाह याने राजा, बन सजकर रणरंगमें लड़नेको खड़ा हुआ; सुल्तानकी फ़ौजके ५ व्यूह देखकर चहुवानने भी अपनी फ़ौजके पृथक् पृथक् ५ समूह बनाये; दानवोंके समान मुसल्मान, और देवताओंके समान राजपूत जवान लड़नेके लिये रणको धाये. चन्द कवि कहता है, हे दुन्याके लोगो सुनो! कि लड़ाई किस प्रकारकी हुई - वीरोंके ललाटसे क्रोधका ज़हर (विष) चमकने लगा, लड़ाईमें बहादुरोंसे बहादुर जुटने लगे, और दोनों दलके बीच एक पहरतक लड़ाई हुई.

फिर ६ ऋतुके वर्णनके अध्याय (पत्र २४२) के दूसरे पृष्ठमें यह दोहा लिखा है:-

दोहा.

ग्यारहसै एक्यावने, चैत तीज रविवार ॥
कनवज देखन कारणे, चल्यो सु संभरिवार ॥ १ ॥

अर्थ.

संवत् ११५१ चैत्र कृष्ण ३ रविवारके दिन संभरी, अर्थात् चहुवान राजा क़न्नौज देखनेको चला.

पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन गोरीकी आख़री लड़ाईका वृत्तान्त ३६० पत्रके पहिले पृष्ठमें इस प्रकार लिखा है:-

दोहा.

१- शाकसु विक्रम सत्त शिव।
अट्ठ अग्र पंचास ॥
शनिश्चर संक्रान्ति कर्क।
श्रावण अद्धो मास ॥

२- श्रावण मावस सुभ दिवस ।
उभै घटी उदियत्त ॥
प्रथम रोस दुव दीन दल ।
मिलन सुभर रन रत्त ॥

अर्थ.

१-संवत् ११५८ ('शिव' ज्योतिषमें ११ को बोलते हैं) शनिवारके दिन, जबकि कर्क संक्रान्ति थी, और श्रावणका आधा महीना व्यतीत हुआ था, लड़ाई हुई.

२-श्रावणकी अमावास्याके रोज़, जोकि एक शुभ दिन है, सूर्य निकलनेके दो घड़ी पीछे दोनों दीन (धर्म) के दलोंमें, अर्थात् हिन्दू और मुसल्मानोंमें पहिला क्रोध इसलिये किया गया, कि वीरोंको लाल रंग मिले; संक्षेपमें दोनों दलोंके अंगका रंग क्रोधसे रक्तवर्ण होगया.

पत्र ३८० एष्ठ १, वड़ी लड़ाईके अध्यायमें यह छप्पय लिखा है:-

छप्पय.

एकादससे सत्त, अठ्ठ पंचास अधिकतर ॥
सावन सुकल सुपक्ख, बुद्ध एका तिथि वासर ॥
वज्र योग रोहिनी, करन बालवधिक तैतल ॥
प्रहर सेप रस घटिय, आदि तिथि एक पंचपल ॥
बिथ्थुरिय बत्त जुद्दह सरल, जोगिनिपुर वासर विषम ॥
संपत्तिथान सुरसतिय जुरि, रहसि रवी कीनो विरम ॥ १ ॥

अर्थ.

संवत् ११५८ श्रावण शुक्ल पक्ष प्रतिपदा बुधवारके दिन, वज्र योग, रोहिणी नक्षत्र (१), करण बालव, और उससे अधिक तैतल, जिस समय पिछली रातमें ६ घड़ी बाक़ी थी, और प्रतिपदाकी एक घड़ी और ५ पल बीते थे, लड़ाईकी बात बड़ी सरलतासे (पूरे तौरपर) फैल गई; वह दिन दिल्लीके लिये बड़ा खोटा था. लड़ाई इस तरहपर हुई, कि मानो लक्ष्मीके स्थानपर सरस्वतीने उससे युद्ध किया; लड़ाई देखनेके लिये सूर्यने भी ठहरकर विश्राम किया.

ऊपर लिखे हुए उदाहरण राजपुस्तकालयकी एथ्वीराजरासा नामकी पुस्तकोंको मिलाकर लिखे गये हैं, जो पुस्तकें बेदलेकी पुस्तकके अनुसार हैं. यहांपर उदाहरणके लिये सिर्फ़ एकही जगहका संवत् लिखना काफ़ी होता, परन्तु अनेक संवत् इस तात्पर्यसे लिखे गये हैं, कि किसीको यह सन्देह नहो, कि कदाचित् लिखने वालेने

(१) श्रावण शुक्ल १ को रोहिणी नक्षत्र नहीं होसक्ता.

भूल की हो; और मैं आशा रखता हूं, कि पाठकोंको इस तरहसे सन्तोष होजायेगा, कि ऐसी गलती नहीं हुई.

अब ऊपर लिखेहुए उदाहरणोंके संवतोंपर विचार करना चाहिये. पहिले यह देखना चाहिये, कि पृथ्वीराज शहाबुद्दीन गौरीके साथ किस संवत्में लड़ा, और दिल्लीमें वह किस समय राज करता था.

पृथ्वीराजरासामें लड़ाईका संवत् ११५८ लिखा है, परन्तु यह ठीक नहीं है, क्योंकि संवत् १२४९ में पृथ्वीराजने शहाबुद्दीन गौरीके साथ पंजाबमें लड़ाई की; और वह उस समयसे पहिले दिल्लीमें राज करता था, जिसके प्रमाण नीचे लिखेजाते हैं:—

'तबक़ाति नासिरी' (जो हिज्री ६०२ = विक्रमी १२६१ = .ईसवी १२०५ में बनाई गई) का ग्रन्थकर्ता शहाबुद्दीनके विषयमें इसतरह लिखता है, कि "शहाबुद्दीन गौरीने हिज्री ५७१ [वि० १२३२ = .ई० ११७५] में मुल्तान लिया, और हिज्री ५७४ [वि० १२३५ = .ई० ११७८] में ओरछा और मुल्तान होकर नेहरवालाकी ओर आया; नेहरवालाके राजा भीमदेव या वसुदेवकी फ़ौजसे सामना हुआ; बादशाहकी फ़ौज भागगई, और वह बेमुराद लौटगया. हिज्री ५७७ [वि० १२३८ = .ई० ११८१] में वह लाहौरको आया, और सुल्तान महमूदके सन्तान (खुस्रौमलिक) ने अपने लड़केको मए एक हाथीके उसके पास भेजकर उससे सुलह करली. हिज्री ५७८ [वि० १२३९ = .ई० ११८२] में बादशाह देवलकी ओर आया, और समुद्रके किनारेके तमाम शहर ज़ब्त करलिये, और बहुतसा माल लेकर वापस लौटगया. हिज्री ५८० [वि० १२४१ = .ई० ११८४] में यह दोबारह लाहौरको आया, और सब .इलाक़ह लूटकर सियालकोटका क़िला बनवानेके बाद पीछा लौट गया. हिज्री ५८२ [वि० १२४३ = .ई० ११८६] में उसने लाहौरपर फिर चढ़ाई की, खुस्रौ मलिकको क़ैद करलिया, और लाहौर लेकर सेनापति अलीकर्माख़को वहां का हाकिम नियत किया, और इस किताब लिखने वालेके बाप सिराजुद्दीन मिन्हाजको हिन्दुस्तानकी सेनाका क़ाज़ी बनाया.

हिज्री ५८७ [वि० १२४८ = .ई० ११९१] में उसने सरहिन्दका क़िला फ़त्ह करके क़ाज़ी ज़ियाउद्दीनको सौंपा, जो इस किताबके लिखने वालेके नानाका चचेरा भाई था. क़ाज़ीने १२०० आदमी क़िलेमें रक्खे, कि जिनसे बादशाहके आने तक क़िलेकी रक्षा होसके; लेकिन् राय कोला पिथौरा पास आगया था; सुल्तान भी आपहुंचा. हिन्दुस्तानके सब राजा पिथौराके साथ थे. सुल्तानने दिल्लीके राजा गोविन्द-रायपर हमलह किया, जो हाथीपर सवार था, और नेज़ा अर्थात् भाला मारकर

गोविन्दरायके दो दांत तोड़डाले. राजाने एक सेल (बर्छा) मारा, जिससे सुल्तानकी भुजामें बड़ी चोट लगी, उसको घोड़ेसे गिरते हुए एक ख़ल्जी सिपाहीने संभाला. बादशाहकी सब फ़ौज भाग निकली.

राजा पिथौराने क़ाज़ी तोलकको सरहिन्दके क़िलेमें आघेरा, और १३ महीने तक बराबर लड़ाई रही. बादशाह बदला लेनेको फिर हिन्दुस्तानमें आया. इस किताबके लिखने वालेने एक भरोसेवाले आदमी मुईनुद्दीनसे, जो बादशाहके साथ था, यह सुना कि उस समय मुसल्मानी सेनाकी संख्यामें १२०००० सवार थे. सामना होनेके पहिले सुल्तानने अपनी फ़ौजके ४ टुकड़े करदिये, और सिपाहियोंको कहा कि " हर तरफ़से तीरंदाज़ी करो, और जब नालाइक़ोंके हाथी और आदमी इत्यादि चढ़ाई करें, तो हटजाओ ". मुसल्मानी फ़ौजने ऐसी कार्रवाईसे काफ़िरों (हिन्दुओं) को हरादिया. खुदाने बादशाहको फ़तह बख़्शी, और काफ़िरोंने भागना शुरू किया. पिथौरा हाथीसे उतरकर घोड़ेपर चढ़ा, और एकदम भागा, लेकिन् सरस्वतीकी हदमें पकड़ाजाकर मारडालागया. दिल्लीका गोविन्दराय लड़ाईमें मारागया, जिसकी सूरत बादशाहने पहिचानली; क्योंकि उसके दो दांत पहिली लड़ाईमें टूटगये थे. राजधानी अजमेर, सवालक और हांसी व सरस्वती इत्यादि मुल्क लेलिये गये. यह फ़त्ह हिज्री ५८८ [वि० १२४९ = .ई० ११९२] में प्राप्त हुई. बादशाह कुतुबुद्दीन ऐबकको कुहरामके क़िलेपर नियत करके आप ग़ज़नीको लौटगया, और कुतुबुद्दीन ऐबकने मेरट, दिल्ली आदि लेलिये. हिज्री ५८९ [वि० १२४९ = .ई० ११९३] में कुतुबुद्दीनने कोयलका क़िला लिया. हिज्री ५९० [वि० १२५० = .ई० ११९४] में सुल्तान ग़ज़नीसे क़न्नौज और बनारसको आया, और चदावलके पास राय जयचन्दको मार भगाया. इस जीतमें ३०० से ज़ियादह हाथी हाथ लगे. बादशाहकी मातहतीमें कुतुबुद्दीनने नेहरवाला, कालेवा, बदायूं वग़ैरह बहुतसे शहर फ़त्ह किये. खुदाने चाहा तो इन सब लड़ाइयोंका हाल 'फ़ुतूह कुतुबी' (१) में लिखाजायेगा ".

अब यह देखना चाहिये, कि हिज्री ५८७ = .ई० ११९१ = वि० १२४८ के है, और हिज्री ५८८ = .ई० ११९२ = वि० १२४९ के होता है. इससे सिद्ध हुआ, कि शहाबुद्दीन और पृथ्वीराजकी लड़ाई, जिसमें पृथ्वीराजका देहान्त हुआ, विक्रमी १२४९ में हुई, अर्थात् पृथ्वीराजरासामें लिखे हुए विक्रमी ११५८ [हि० ४९४ = .ई० ११०१] से प्रायः ९० वर्ष पीछे. यद्यपि 'तबक़ाति नासिरी' का लिखने वाला विदेशी

(१) यह किताब सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबकके हालकी मालूम होती है.

था, परन्तु वह संवतोंमें भूल नहीं करसक्ता, शायद नामोंमें गलती भलेही की हो.

तारीख़ अबुल्फ़िदा किताबकी दूसरी जिल्दमें शहाबुद्दीनके हिन्दुस्तानमें आनेका हाल लिखा है, और उसमें हिज्री ५८६, ५८७ व ५८९ में जो जो बातें हुईं, उन सबका संक्षिप्त वर्णन है, परन्तु पृथ्वीराजकी लड़ाईका हाल नहीं लिखा, तोभी शहाबुद्दीन गौरीका उस समयमें होना, अच्छीतरह सिद्ध है; और पीछेके इतिहासोंमें भी वही विक्रमी १२४९ पृथ्वीराज और शहाबुद्दीनकी लड़ाईका संवत् लिखा है. जबकि राजा जयचन्द और शहाबुद्दीन गौरीका समय निश्चिय होगया, तो पृथ्वीराजके समयमें भी कुछ सन्देह नहीं रहा; क्योंकि वह उन्हींके समयमें हुआ था.

किताबोंका प्रमाण देनेके पश्चात् अब मैं पाषाण लेख अर्थात् प्रशस्तियोंका प्रमाण देता हूं, जो मेदपाट (मेवाड़) देशमें पाई गई हैं, और थोड़ेसे उन ताम्रपत्रोंका भी जो बंगालेकी एशियाटिक सोसाइटीके पत्रोंमें छपे हैं.

१ – एक प्रशस्ति मेवाड़के .इलाकेमें बीजोलिया ग्रामके समीप राजधानीसे प्रायः ५० कोसपर महुवेके वृक्षके नीचे एक चटानपर, श्रीपार्श्वनाथजीके कुंडसे उत्तर कोटके निकट है. इस चटानकी अधिकसे अधिक लम्बाई १२ फ़ीट ९ इंच, और कमसे कम ८ फ़ीट ६ इंच; और चौड़ाई ३ फ़ीट ८ इंच है. इस प्रशस्तिमें लिखा है, कि पृथ्वीराजके पिता राजा सोमेश्वरदेवने रेवणा ग्राम स्वयंभू पार्श्वनाथजीको भेट किया. यह प्रशस्ति एक महाजनने विक्रमी १२२६ फाल्गुन कृष्ण ३ को खुदवाई. इससे स्पष्ट है, कि पृथ्वीराज विक्रमी ११५८ में कदापि नहीं होसक्ता, और पृथ्वीराजरासामें लिखा है, कि वह उस संवत्में मारागया, जो बिल्कुल अशुद्ध है. इस प्रशस्तिमें चहुवानोंकी वंशावली सोमेश्वरदेवके नामपर पूरी होगई है. इससे मालूम होता है, कि उसका कुंवर पृथ्वीराज इस प्रशस्तिकी तिथि तक राजगद्दीपर नहीं बैठा था.

२ – दूसरी प्रशस्ति मेनालगढ़ .इलाक़ह मेवाड़में एक महलके उत्तरी फाटकके ऊपर वाले एक स्तम्भपर मिली है, जिसमें यह वर्णन है, कि भावब्रह्म मुनिने विक्रमी १२२६ में, जबकि पृथ्वीराज चहुवान राज करता था, एक मठ बनवाया.

पहिली और दूसरी प्रशस्तियोंके मिलानेसे अनुमान होता है, कि पृथ्वीराजने विक्रमी १२२६ के फाल्गुन कृष्ण ३ और चैत्र कृष्ण ३० के बीचमें राज्यगद्दी पाई होगी; परन्तु यदि संवत्का आरम्भ चैत्र शुक्ल पक्षको छोड़कर किसी दूसरे महीनेसे माननेका प्रचार रहा हो, जैसा कि अभीतक कहीं कहीं प्रचलित है, तो विक्रमी १२२६ फाल्गुन कृष्ण ३ और उसके सिंहासनारूढ होनेके बीचमें अधिक समय व्यतीत हुआ होगा; क्योंकि दूसरे संवत्का आरम्भ कई महीने पीछे हुआ होगा.

यह एक साधारण नियम है, कि इतिहास समयानुसार बनते हैं, जिनमें बढ़ावा या झूठ भी होता है, परन्तु विशेषकर सच्चा हाल लिखाजाता है, और संवत् मितीमें कदापि अन्तर नहीं होता, अगर होता भी है, तो पृथ्वीराजरासा सरीके ग्रन्थोंमें, कि जो अगले ग्रन्थकर्ताओंके नामसे कर्त्तबी (जाली) बनालियेजाते हैं, जैसाकि इस समयमें भी धर्माधिकारी लोग प्राचीन समयका हवाला देनेके लिये नई किताबें रचकर पुरानी पुस्तकोंके नामसे प्रसिद्ध कर उन्हें पुराण बनादेते हैं. यदि पृथ्वीराजके कवि चन्द वरदईने पृथ्वीराजरासाको बनाया होता, तो वह इतनी बड़ी भूल ९० वर्षकी नहीं करता, और जान बूझकर अशुद्ध संवत् लिखनेसे उसको कुछ लाभ नहीं होता.

बंगाल एशियाटिक सोसाइटीके जर्नल सन् १८७३ .ई० के पृष्ठ ३१७ में कन्नौजके राजा जयचन्दके ताम्रपत्रोंका वर्णन है, जिनका संवत् १२३३-१२४३ (.ई० ११७६ - ११८६) है. वहांपर यह लिखा है, कि इस राजाको मुसल्मानोंने संवत् १२४९ (.ई० ११९३) की लड़ाईमें हराया.

जयचन्दकी बेटी संयोगिताके साथ पृथ्वीराजने विवाह किया था; और इसी जयचन्दको शहाबुद्दीन गोरीने कन्नौजमें दिल्ली लेनेके पीछे शिकस्त दी थी, जैसाकि 'तबकाति नासिरी' में लिखा है.

कर्नेल् टॉडने अपनी टॉडनामह राजस्थान नामकी पुस्तकमें विक्रमी १२४९ में शहाबुद्दीन और पृथ्वीराजसे लड़ाई होना लिखा है, परन्तु उन्होंने पृथ्वीराजरासामें लिखेहुए संवत् ११५८ के अशुद्ध होनेका कारण कुछ नहीं लिखा, अर्थात् उसको अशुद्ध ठहरानेके लिये कोई प्रमाण या दलील नहीं दी. फिर उन्होंने रावल समरसीके प्रपौत्र राणा राहप्पका विक्रमके १३ वें शतकमें होना लिखा है, जो वास्तवमें १४ वें शतकके चौथे भागमें हुए थे. हम कर्नेल् टॉडको कुछ दोष नहीं लगासक्ते, क्योंकि पृथ्वीराजरासासे राजपूतानहके इतिहासोंमें संवतोंकी बहुतसी भूलें होगई हैं, और उनके लिये उस समय दूसरा वृत्तान्त लिखना बहुतही कठिन, बल्कि असम्भव था, जबकि इतिहासकी सामग्री बड़ी कठिनतासे प्राप्त होती थी. अगर उनका दोष इस विषयमें है, तो केवल इतना ही है, कि उन्होंने अपनी पुस्तकके पूर्वापरकी ओर दृष्टि नहीं दी. उनके वर्णनसे बहुतेरे ग्रन्थकर्ताओंने गलती की, जैसे फ़ार्बस साहिबने अपनी 'रासमाला' में, प्रिन्सेप साहिबने अपनी 'एंटिक्विटीज़' किताबकी दूसरी जिल्दमें, और डॉक्टर हंटर साहिबने अपने 'इम्पीरियल गज़ेटिअर' की नवीं जिल्दके पृष्ठ १६६ में (लण्डन नगरमें छपी हुई सन् १८८१ .ई० की) लिखा है, कि .ईसवी १२०१ (= वि० १२५७-५८) में राहप्प राणा चित्तौड़के राजा थे, लेकिन् यह गलत है, क्योंकि

विक्रमी १३२४ (= ई० १२६७) के पहिले तो रावल समरसीका भी कोई चिन्ह नहीं मिलता, जैसाकि इस लेखकी अगली प्रशस्तिसे प्रकाशित होगा.

पृथ्वीराजरासासे जो जो अशुद्धताएं इतिहासोंमें हुईं, उनका थोड़ासा वृत्तान्त यहांपर लिखाजाता है :-

पहिले ज़मानहमें इतिहास लिखनेका रवाज मुसल्मान लोगोंमें था, हिन्दुओं में नहीं था, और अगर कुछ था भी तो केवल इतना ही कि कवि लोग बढ़ावेके साथ काव्य लिखते थे, और बड़वा लोग वंशावलीके साथ थोड़ा थोड़ा तवारीख़ी हाल अपनी पोथियोंमें लिखलिया करते थे. लेकिन् यह ख़याल रखना चाहिये, कि इन लोगोंकी पोथियोंमें विक्रमी १४०० से पहिलेकी जो वंशावलियां पाईजाती हैं वे सब अशुद्ध और क़ियासी, अर्थात् अनुमानसे बनाई हुई हैं; और विक्रमी १४०० और विक्रमी १६०० के बीचके कुर्सीनामों (वंशावली) में कई ग़लतियां मिलती हैं, अल्बत्तह विक्रमी १६०० के पीछेकी वंशावली कुछ कुछ शुद्ध मालूम होती है.

जब पृथ्वीराजरासा तय्यार होकर पृथ्वीराजके कवि चन्दका बनाया हुआ प्रसिद्ध कियागया, तब भाट और बड़वोंने पृथ्वीराजके स्वर्गवासका संवत् विक्रमके १२ वें शतकमें मानकर अपनी राजपूतानहकी सब पुस्तकोंमें वही लिखदिया, जैसाकि रासामें चित्तौड़के रावल समरसीका विवाह पृथ्वीराजकी बहिन पृथांके साथ होना लिखनेके कारण रावल समरसीके गाद्दी विराजनेका संवत् ११०६ और पृथ्वीराजके साथ लड़ाईमें १३००० सवारोंके साथ उनके मारेजानेका संवत् ११५८ श्रावण शुक्ल ३ लिखदिया. विचार करना चाहिये, कि उन बड़वा भाटोंने रावल समरसिंहका मारा जाना विक्रमी ११५८ में लिखकर उसीको पुष्ट करनेके लिये रावल समरसिंहसे लेकर राणा मोकलके देहान्त तक नीचे लिखेहुए सब राजाओंके संवत् अपनी किताबोंमें अनुमानसे लिखदिये:-

१ – रावल समरसिंह.
२ – रावल रत्नसिंह.
३ – रावल कर्णसिंह.
४ – राणा राहप्प.
५ – राणा नरपति.
६ – दिनकरण.
७ – यशकरण.
८ – नागपाल.
९ – पूर्णपाल.
१० – पृथ्वीपाल.
११ – भुवनसिंह.
१२ – भीमसिंह.
१३ – जयसिंह.
१४ – लक्ष्मणसिंह.
१५ – अरिसिंह.
१६ – अजयसिंह.
१७ – हमीरसिंह.
१८ – क्षेत्रसिंह.
१९ – लक्षसिंह.
२० – मोकल.

राजपूतानहके लोगोंने इन नामोंके संवतोंपर जैसाकि बड़वोंने लिखा था, विश्वास करलिया, और वैसाही अपनी किताबोंमें भी लिखदिया. अब देखिये कैसे आश्चर्यकी

बात है, कि रावल समरसीका पृथ्वीराजकी बहिनके साथ विवाह करना पृथ्वीराज-रासामें लिखा है, जो कदापि नहीं होसक्ता, क्योंकि राजा पृथ्वीराज रावल समरसीसे १०० वर्ष पहिले हुआ था.

३ - गंभीरी नदी, जोकि चित्तौड़के प्रसिद्ध क़िलेके पास बहती है, उसपर एक पत्थरका पुल बना हुआ है, वह महाराणा लक्ष्मणसिंहके कुंवर अरिसिंहका बनवाया हुआ कहा जाता है; और यद्यपि मैंने किसी फ़ार्सी इतिहासमें लिखा हुआ नहीं देखा, परन्तु कोई कोई मुसल्मान लोग उसको अलाउद्दीन ख़ल्जीके बेटे ख़िज़रख़ांका बनवाया हुआ कहते हैं. चाहे उस पुलको किसीने बनवाया हो, हमको इससे कुछ बहस नहीं; परन्तु यह तो निश्चय है, कि वह विक्रमके चौदहवें शतकके समाप्त होते होते बनाया गया, और उसकी बनावटसे जान पड़ता है, कि वह किसी मुसल्मानने बनवाया होगा. उस पुलमें पानीके नौ निकास हैं, और पूर्वसे पश्चिमकी ओर आठवें दर्वाजेमें एक पाषाण है, जिसपर एक प्रशस्ति है.

यह तीसरी प्रशस्ति विक्रमी १३२४ [हि० ६६५ = ई० १२६७] की है. इसमें रावल समरसीके पिता रावल तेजसिंहका नाम लिखा है. मालूम होता है, कि यह प्रशस्ति पहिले किसी मन्दिरमें लगी हुई थी, परन्तु पुल बननेके समय प्रशस्तिका पत्थर वहांसे निकालकर पुलमें लगादिया गया, अर्थात् पुल बनानेके लिये कुछ सामग्री उस मन्दिरसे लाईगई होगी. इस प्रशस्तिके अक्षर इतने गहरे खुदे हैं, कि कई सौ वर्षतक पानीकी टक्कर लगनेसे भी नहीं बिगड़े. इसमें दो पंक्तियां मौजूद हैं, जिनकी नक्ल शेष संग्रहमें लिखी गई है.

४–चौथी प्रशस्ति उसी पुलके नौकोठेमें और भी है, जिसका संवत् १३–२ ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी है. उसमें यह मत्लब है, कि रावल समरसिंहने लाखोटा बारीके नीचे नदीके तीरपर पृथ्वीका एक टुकड़ा अपनी माता जयतल्लदेवीके मंगलके हेतु किसीको भेट किया.

बड़े खेदका विषय है, कि इस प्रशस्तिका प्रारम्भका भाग ही खंडित है, और बीच बीचमें भी कई जगह अक्षर टूटगये हैं; संवत्के ४ अंकोंमें भी दहाईका अंक खंडित होगया है; परन्तु इसमें सन्देह नहीं, कि यह प्रशस्ति रावल समरसीके समय की है, और संवत्के शतकका अंक १३ साबित और एकाईके स्थानपर २ का अंक है. इससे ऐसा अनुमान होता है, कि यह प्रशस्ति विक्रमी १३३२ की होगी, क्योंकि रावल समरसीके पिता रावल तेजसिंहकी विक्रमी १३२४ की प्रशस्तिसे यह बहुत कुछ मिलती है, और यह संभव है, कि एकही मनुष्यने दोनों प्रशस्तियोंको लिखा हो. इस बातसे १३४२ का संवत् होना असम्भव है.

५-पांचवीं प्रशस्ति चित्तौड़गढ़के महलके चौकमें मिट्टीमें गड़ीहुई मिली, जिसका संवत् विक्रमी १३३५ वैशाख शुक्ल ५ गुरुवार [हि० ६७६ ता० ४ ज़िल्हिज = .ई० १२७८ ता० २९ एप्रिल] है. यह रावल समरसीके समयमें लिखीगई है, जिन्होंने अपनी माता जयतल्लदेवी, रावल तेजसिंहकी राणीके बनवायेहुए श्री श्याम पार्श्वनाथके मन्दिरको कुछ भूमि भेट की थी.

६-छठी प्रशस्ति आबूपर अचलेश्वर महादेवके मन्दिरके पास मठमें एक पत्थर पर पाईगई, जिसकी लम्बाई ३ फुट २ इंच, और चौड़ाई ३ फुट है. इसका संवत् विक्रमी १३४२ [हि० ६८४ = .ई० १२८५] है. इसका मत्लब यह है, कि रावल समरसिंहने मठका जीर्णोद्धार, अर्थात् मरम्मत कराई, और उसके लिये सुवर्णका ध्वजस्तम्भ बनवाया.

७-सातवीं प्रशस्ति, चित्रकोटपर चित्रंग मोरीके बनवाये हुए जलाशयमें एक मन्दिर के भीतर विक्रमी १३४४ वैशाख शुक्ल ३ [हि० ६८६ ता० २ रबीउल्अव्वल = .ई० १२८७ ता० १७ एप्रिल] की है. इसमें यह मत्लब है, कि जब रावल समरसिंह चित्तौड़में राज करते थे; तब वैद्यनाथ महादेवके मन्दिरके लिये भूमि भेट कीगई. यह प्रशस्ति मुझको एक श्वेत पाषाणके स्तम्भपर, जो सुरहका स्तम्भ है, और जिसमें महादेवकी एक मूर्ति बनी है, चित्तौड़के पूर्वी फाटक सूर्य पौलके रास्तेमें तीसरे दर्वाजेमें मिली, जिसको मैंने राजधानी उदयपुरमें मंगवालिया, जो अब विक्टोरिया हॉलमें मौजूद है.

इन प्रशस्तियोंसे सिद्ध होता है, कि रावल समरसिंहके पिता रावल तेजसिंह विक्रमी १३२४ [हि० ६६५ = .ई० १२६७] में, और रावल समरसिंह विक्रमी १३३० से लेकर १३४४ [हि० ६७१-६८६ = .ई० १२७३-१२८७] तक चित्तौड़ और मेवाड़का राज्य करते थे. इस तरह हम देखते हैं, कि रावल समरसिंहका राज्यसमय विक्रमी १३२४ [हि० ६६५ = .ई० १२६७] के पहिले किसीतरह नहीं होसक्ता, परन्तु विक्रमी १३४४ [हि० ६८६ = .ई० १२८७] के पीछे २ या ४ वर्ष राज्य किया हो, तो आश्चर्य नहीं. इसलिये विक्रमी ११५८ [हि० ४९४ = .ई० ११०१] में पृथ्वीराजके साथ रावल समरसिंहका माराजाना, जो पृथ्वीराजरासामें लिखा है, किसीतरह ठीक नहीं होसक्ता.

फिर रावल समरसिंहका होना विक्रमी १२४९ [हि० ५८८ = .ई० ११९२] में भी निश्चित नहीं है, जिस वर्षमें कि पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन गोरीकी लड़ाई हुई. इससे पाया जाता है, कि पृथ्वीराजकी बहिनका विवाह यदि चित्तौड़के किसी राजाके साथ हुआ हो, तो वह कोई दूसरा राजा होगा, समरसिंह नहीं; क्योंकि पृथ्वीराज

विक्रमी १२४९ [हि० ५८८ = .ई० ११९२] में मारागया, और रावल समरसिंहकी प्रशस्तियां विक्रमी १३३० [हि० ६७१ = .ई० १२७३] से लेकर विक्रमी १३४४ [हि० ६८६ = .ई० १२८७] तक की मिलती हैं, अर्थात् समरसिंहका राज्य पृथ्वीराजके मारेजानेसे अनुमान ८० वर्ष पीछे पायाजाता है, जिससे समरसिंहका विवाह पृथ्वीराजकी बहिनके साथ होना, जैसाकि रासामें लिखा है, असम्भव है. यदि यह विचार कियाजावे, कि चित्तौड़पर समरसिंह नामका कोई दूसरा राजा हुआ हो, तो यह सन्देह मेवाड़के राजाओंकी नीचे लिखीहुई वंशावलीके देखनेसे मिटजायेगा:-

नम्बर.	महाराणाओंके नाम.	जन्म संवत्.	राज्याभिषेक का संवत्.	मृत्युका संवत्.	कैफ़ियत.
१	गुहिल	०	०	०	इनका हाल ऊपर लिखदिया गया है.
२	भोज	०	०	०	
३	महेन्द्र	०	०	०	
४	नाग	०	०	०	
५	शील	०	०	०	
६	अपराजित	०	०	०	कुंडां ग्रामकी प्रशस्तिसे मालूम होता है, कि यह राजा विक्रमी ७१८ में राज्य करते थे.
७	महेन्द्र (बापा)	०	०	०	इनका हाल ऊपर लिखदिया गया है.
८	कालभोज	०	०	०	
९	खुम्माण	०	०	०	
१०	भर्तृभट्ट	०	०	०	

नम्बर.	महाराणाओंके नाम.	जन्म संवत.	राज्याभिषेक का संवत.	मृत्युका संवत.	कैफ़ियत.
११	सिंह	०	०	०	
१२	अल्लट	०	०	०	राजधानी उदयपुरके दिल्ली दर्वाज़ा बाहिर शारणेश्वर महादेवके मन्दिरकी प्रशस्तिसे विक्रमी १०१० में इनका राज्य करना पाया-जाता है.
१३	नरवाहन	०	०	०	
१४	शालिवाहन	०	०	०	यह नाम आबू व राणपुरकी प्रशस्तियोंमें नहीं है, परन्तु उसीके क़रीब ज़मानहकी ऐतपुरकी प्रशस्तिके अनुसार लिखागया है.
१५	शक्तिकुमार.	०	०	०	ऐतपुरकी प्रशस्तिसे विक्रमी १०३४ में इन-का राज्य करना पायागया.
१६	शुचिवर्म्मा	०	०	०	रसियाकी छत्रीकी प्रशस्तिमें शक्तिकुमार का पुत्र आम्रपसाव लिखा है, लेकिन् उदयपुर से १ मील फ़ासिलेपर सूरज पौलके बाहिर हरि-सिद्धिके मन्दिरकी सीढ़ियोंपरकी प्रशस्तिमें, जोकि उसी ज़मानेकी है, शक्तिकुमारके बाद शुचिवर्म्मा लिखा है, इसलिये वह नाम यहां नहीं लिखा गया.
१७	नरवर्म्मा	०	०	०	
१८	कीर्तिवर्म्मा	०	०	०	
१९	वैरट	०	०	०	राणपुरकी प्रशस्तिमें कीर्तिवर्म्माके पीछे योगराज लिखा है, परन्तु उसीके क़रीब ज़मानहकी आबूकी प्रशस्तिमें नहीं है, इससे यहां नहीं लिखा गया.
२०	वैरीसिंह	०	०	०	राणपुरकी प्रशस्तिमें वैरटके बाद वंश-पाल लिखा है, जो आबूकी प्रशस्तिमें न होनेसे यहांपर दर्ज नहीं कियागया
२१	विजयसिंह	०	०	०	राणपुरकी प्रशस्तिमें वैरीसिंहके पीछे वीर-सिंह लिखा है, और रसियाकी छत्रीमें विजयसिंह लिखा है.
२२	अरिसिंह	०	०	०	
२३	चौंडसिंह	०	०	०	
२४	विक्रमसिंह	०	०	०	
२५	क्षेमसिंह	०	०	०	

नम्बर.	महाराणाओंके नाम.	जन्म संवत.	राज्याभिषेक का संवत.	मृत्युका संवत.	कैफ़ियत.
२६	सामन्तसिंह	०	०	०	
२७	कुमारसिंह	०	०	०	
२८	मथनसिंह	०	०	०	
२९	पद्मसिंह	०	०	०	
३०	जैतसिंह	०	०	०	एकलिंगेश्वरमें एक समाधिके लेखसे विक्रमी १२७०में इनका राज्य करना साबित होता है.
३१	तेजसिंह	०	०	०	चित्तौड़में गम्भीरी नदीके पुलपर, जो प्रशस्ति है, उससे पायागया, कि विक्रमी १३२४ में तेजसिंह राज्य करते थे.
३२	समरसिंह	०	०	०	विक्रमी १३३० से १३४४ तक इनका राज्य करना कई प्रशस्तियोंसे साबित हुआ है.
३३	रत्नसिंह	०	०	०	विक्रमी १३५९ में अलाउद्दीन खल्जीके साथ इनकी लड़ाई हुई. यह नाम राणपुरकी प्रशस्तिमें दर्ज नहीं है.
३४	कर्णसिंह	०	०	०	यह नाम राणपुरकी प्रशस्तिमें नहीं है.
३५	राहप्प	०	०	०	
३६	नरपति	०	०	०	
३७	दिनकरण	०	०	०	
३८	जशकरण	०	०	०	
३९	नागपाल	०	०	०	
४०	पूर्णपाल	०	०	०	

नम्बर.	महाराणाओंके नाम.	जन्म संवत.	राज्याभिषेक का संवत.	मृत्युका संवत.	कैफ़ियत.
४१	पृथ्वीपाल	०	०	०	
४२	भुवनसिंह.	०	०	०	यह नाम समरसिंहके पीछे राणपुरकी प्रशस्तिमें लिखा है.
४३	भीमसिंह	०	०	०	यह नाम राणपुरकी प्रशस्तिमें नहीं लिखा.
४४	जयसिंह	०	०	०	इस नामसे लेकर कुम्भकर्णतक सब पीढ़ियां राणपुरकी प्रशस्तिमें क्रमसे लिखी हैं.
४५	लक्ष्मणसिंह	०	०	०	
४६	अजयसिंह	०	०	०	
४७	अरिसिंह	०	०	०	
४८	हमीरसिंह	०	०	१४२१	
४९	क्षेत्रसिंह	०	१४२१	१४३९	
५०	लक्षसिंह	०	१४३९	१४५४	
५१	मोकल	०	१४५४	१४९०	
५२	कुम्भकर्ण	०	१४९०	१५२५	
५३	उदयकर्ण	०	१५२५	०	इसने अपने बापको मारा, जिससे पांच वर्ष के बाद इसके भाई रायमल्लने इसको गद्दीसे ख़ारिज करके निकालदिया.
५४	रायमल्ल	०	१५३०	१५६५	
५५	संग्रामसिंह	१५३८	१५६५	१५८४	

नम्बर.	महाराणाओंके नाम.	जन्म संवत्.	राज्याभिषेक का संवत्.	मृत्युका संवत्.	कैफ़ियत.
५६	रत्नसिंह	०	१५८४	१५८८	
५७	विक्रमादित्य	१५७४	१५८८	१५९२	
५८	उदयसिंह	१५७९	१५९४	१६२८	विक्रमादित्यका देहान्त होनेके बाद बनवीरका फ़ुतूर खड़ा होजानेके कारण यह महाराणा दो वर्ष बाद गद्दी नशीन हुए.
५९	प्रतापसिंह	१५९६	१६२८	१६५३	
६०	अमरसिंह	१६१६	१६५३	१६७६	
६१	कर्णसिंह	१६४०	१६७६	१६८४	
६२	जगत्सिंह	१६६४	१६८४	१७०९	
६३	राजसिंह	१६८६	१७०९	१७३७	
६४	जयसिंह	१७१०	१७३७	१७५५	
६५	अमरसिंह	१७२९	१७५५	१७६७	
६६	संग्रामसिंह	१७४७	१७६७	१७९०	
६७	जगत्सिंह	१७६६	१७९०	१८०८	
६८	प्रतापसिंह	१७८१	१८०८	१८१०	
६९	राजसिंह	१८००	१८१०	१८१७	
७०	अरिसिंह	०	१८१७	१८२९	

नम्बर.	महाराणाओंके नाम.	जन्म संवत्.	राज्याभिषेक का संवत्.	मृत्युका संवत्.	कैफ़ियत.
७१	हमीरसिंह	१८१८	१८२९	१८३४	
७२	भीमसिंह	१८२४	१८३४	१८८५	
७३	जवानसिंह	१८५७	१८८५	१८९५	
७४	सर्दारसिंह	१८५५	१८९५	१८९९	
७५	स्वरूपसिंह	१८७१	१८९९	१९१८	
७६	शम्भुसिंह	१९०४	१९१८	१९३१	
७७	सज्जनसिंह	१९१६	१९३१	१९४१	
७८	फ़तहसिंह	१९०६	१९४१		

इस ऊपर लिखीहुई वंशावलीको पुष्ट करनेवाली अनेक प्रशस्तियां हैं:-

१- एकलिङ्गेश्वरसे पश्चिम कूंडां ग्राममें, विक्रमी ७१८ की खुदीहुई अपराजितके राज्यसमयकी.

२- उदयपुरके दिल्ली दर्वाज़ह बाहिर शारणेश्वर महादेवके मन्दिरमें, विक्रमी १०१० की खुदीहुई, अल्लटके राज्यसमयकी.

३- उदयपुरसे १ मील पूर्व हरिसिद्धि देवीके मन्दिरकी सीढ़ियोंपर (१).

४- ऐतपुरकी प्रशस्ति विक्रमी १०३४ की, जो कर्नेल् टॉडको मिली.

५- एकलिंगेश्वरमें विक्रमी १२७० की, रावल जैत्रसिंहके समयकी.

६- चित्तौड़में गम्भीरी नदीके पुलमें, विक्रमी १३२४ की, रावल तेजसिंहके समयकी.

७- चित्तौड़गढ़में महासतीके उत्तरी दर्वाज़हके निकट प्रसिद्ध रसियाकी छत्रीमें, विक्रमी १३३१ की, रावल समरसिंहके समयकी.

(१) यह प्रशस्ति अपूर्ण मिली है, इसलिये इसका संवत नहीं लिखागया.

८- आबूपर अचलगढ़के मठमें, विक्रमी १३४२ की, रावल समरसिंहके समयकी.

९- गोड़वाड़में राणपुरके जैन मन्दिरमें, विक्रमी १४९६ की, महाराणा कुम्भकर्णके समयकी.

१०- कुम्भलगढ़में मामादेवके ऊपर, वि० १५१७ की महाराणा कुम्भकर्णके समयकी.

११- एकलिंगेश्वरके दक्षिण द्वारवाली, विक्रमी १५४५ की.

अनेक प्रशस्तियों और कईएक ग्रन्थोंकी सहायतासे हमने महाराणा हमीरसिंहसे पहिलेकी वंशावलीको सहीह किया है, और महाराणा हमीरसिंहसे लेकर वर्तमान समयतककी वंशावलीके नामोंमें बिल्कुल सन्देह नहीं है. हमने ऊपर लिखीहुई प्रशस्तियोंमें भी समकालीन वा समीपकालीन प्रशस्तियोंको मुख्य और अन्यको गौण माना है. पहिले हमको ऐतपुरकी प्रशस्तिसे वंशावली लिखनी चाहिये; क्योंकि वह गुहिलसे पन्द्रह पीढ़ी पीछे लिखी गई है, और उसको कूंडा, शारणेश्वर, और हरिसिद्धिकी प्रशस्तियां पुष्ट करती हैं; उसके पीछे रसियाकी छत्री तथा आबू अचलगढ़की प्रशस्तियोंको मानना चाहिये; और इनके पीछे राणपुरके जैन मन्दिरकी प्रशस्ति माननेके योग्य है.

ऊपर लिखीहुई वंशावलीमें चित्तौड़पर राज्य करनेवाले केवल एकही महाराणा समरसिंह हुए हैं, और रासामें भी यही लिखा है, कि समरसिंह रावल तेजसिंहके पुत्र थे, और उनके ज्येष्ठ पुत्र रत्नसिंह और कनिष्ठ पुत्र कुम्भकर्ण थे, तो तेजसिंहके पुत्र और रत्नसिंहके पिता यही रावल समरसिंह हुए, जिनका नाम पृथ्वीराजरासामें भूलसे बारहवें शतकमें लिखागया.

दिल्लीके बादशाह अलाउद्दीन ख़ल्जीने चित्तौड़का क़िला बड़े रक्तप्रवाहके साथ विक्रमी १३५९ [हि० ७०१ = ई० १३०२] में लिया, जबकि समरसिंहके पुत्र रावल रत्नसिंह वहांके राजा थे. इस बातसे पृथ्वीराजरासाका यह लिखना कभी सच या संभव नहीं होसक्ता, कि रावल समरसिंहने पृथ्वीराजकी बहिनके साथ विवाह किया, और वह पृथ्वीराजके साथ विक्रमी ११५८ [हि० ४९४ = ई० ११०१] में मारेगये, क्योंकि यदि ऐसा हुआ होता, तो रावल समरसिंहके पुत्र रत्नसिंह विक्रमी १३५९ [हि० ४९५ = ई० ११०२] में, अर्थात् अपने पिताके देहान्तके २०१ वर्ष पीछे अलाउद्दीनसे किसतरह लड़ाई करते.

१ - पृथ्वीराजरासाके लेखसे मेवाड़के इतिहासमें साल संवत्की बड़ी ग़लती हुई, क्योंकि रासामें लिखा है, कि रावल समरसिंह विक्रमी ११०६ [हि० ४४० = ई० १०४९] में मेवाड़की गद्दीपर बैठे, और विक्रमी ११५८ [हि० ४९४ = ई० ११०१] में

शहाबुद्दीन ग़ोरीसे लड़कर पृथ्वीराजके साथ मारेगये. इस बातसे रावल समरसिंहका मौजूद होना उनके ठीक समयसे प्रायः १८६ वर्ष पहिले पायाजाता है, और राजपूतानहके बड़वा भाटोंने पृथ्वीराजरासाको सच्चा मानकर ऐसा ही लिखदिया, तो अगली वंशावली (कुर्सीनामों) में भी ग़लती हुई, अर्थात् रावल समरसिंह और राणा मोकलके बीचका समय दोसौ वर्ष अधिक होगया, और भाटोंने ग़लतीके इन वर्षों को समरसिंह और मोकलके बीचके राजाओंके समयमें बांटकर कुर्सीनामहमें अनुमान से साल संवत् लिखदिये.

२– इसी तरह जोधपुरके लोगोंने भी राजा जयचन्द राठौड़ क़न्नौज वालेके गद्दी बैठनेका संवत् विक्रमी ११३२ [हि० ४६७ = .ई० १०७५] लिखदिया, क्योंकि पृथ्वीराजने जयचन्दकी बेटी संयोगिताके साथ विवाह किया था; और ग़लतीके एकसौ वर्षोंको राजा जयचन्दसे लेकर मंडोवरके राव चूंडाके अन्तकाल पर्य्यन्त, जो राजा हुए उनके समयमें बांटदिया. राजा जयचन्दका गद्दीपर बैठना विक्रमी ११३२ में किसी तरह नहीं होसक्ता, क्योंकि बंगालेकी एशियाटिक सोसाइटीके जर्नल (जिल्द ३३, नम्बर ३, पृष्ठ २३२, सन् १८६४ .ई०) में क़न्नौजके राठौड़ोंका एक नक्शह मेजर जेनरल कनिङ्घम साहिबने इस तरहपर लिखा है :–

नाम.	.ईसवी सन्.	वि० संवत्.
चन्द्रदेव	१०५०	(११०७)
मदनपाल	१०८०	(११३७)
गोविन्दचन्द्र	१११५	(११७२)
विजयचन्द्र	११६५	(१२२२)
जयचन्द्र	११७५	(१२३२)

इस नक्शहसे मालूम होता है, कि जयचन्द उस संवत्से १०० वर्ष पीछे हुआ, जोकि जोधपुरके लोगोंने उसके सिंहासनपर बैठनेके लिये पृथ्वीराजरासाके आधारसे लिखदिया. फिर उक्त सोसाइटीके जर्नल नम्बर ३ के पृष्ठ २१७–२२०, सन् १८५८ .ई० में फिट्ज़ एडवर्ड हॉल साहिबने नीचे लिखेहुए ताम्रपत्रोंकी नक्ल छापी हैः–

नम्बर १०, मदनपाल देवका ताम्रपत्र, विक्रमी ११५४ (=.ई० १०९८) का, पृष्ठ २२१.

नम्बर २०, गोविन्दचन्द्रका दानपत्र विक्रमी ११८२ (= .ई० ११२६) का, पृष्ठ २४३.

इन ताम्रपत्रोंके संवतोंके देखनेसे स्पष्ट ज्ञात होता है, कि इन राजाओंका राज्यसमय

भी विक्रमी ११३२ से पीछे हुआ, जो संवत् कि जयचन्दके गादी विराजनेके लिये मानलियागया; और राजा जयचन्द, मदनपाल और गोविन्दचन्द्रके बहुत पीछे हुआ है.

३– वैसेही आंबेर (जयपुर) के बड़वा भाटोंने भी प्रजून कछवाहाके (जिसका नाम पृथ्वीराजरासामें पृथ्वीराजके शूर वीरोंमें लिखा है) सिंहासनपर बैठनेका संवत् विक्रमी ११२७ [हि० ४६२ = .ई० १०७०], और उसके देहान्तका संवत् विक्रमी ११५१ [हि० ४८७ = .ई० १०९४] लिखदिया. ये संवत् भी किसी प्रकार शुद्ध नहीं होसके. यद्यपि मुझको प्रजूनके गद्दी विराजनेका संवत् ठीक ठीक प्रमाणके साथ नहीं मिला है, लेकिन् चूंकि वह पृथ्वीराजके सर्दारोंमेंसे था, इसलिये उसका समय भी विक्रमी १२४९ [हि० ५८८ = .ई० ११९२] के लगभग होना चाहिये, जो पृथ्वीराजके मारेजानेका सहीह संवत् है.

४– इसी प्रकार बूंदी, सिरोही, और जयसलमेर इत्यादि रियासतोंके इतिहासोंमें भी अशुद्ध संवत् लिखेगये हैं, जैसाकि पृथ्वीराजरासाके लेखसे मालूम हुआ. इस बातसे इतिहास लिखने वालोंके प्रयोजनमें बड़ा भंग हुआ. यदि कोई यह कहे, कि पृथ्वीराजरासाके लेखकने १२०० की जगह भूलसे ११०० लिखदिया, तो उसका उत्तर यह है:–

प्रथम तो कवितामें ऐसा होनेसे छन्द टूटता है.

दूसरे, 'शिव' और 'हर' ये ज्योतिषके शब्द जो रासामें ११ के लिये लिखेगये हैं, इनका मत्लब १२ कभी नहीं होसक्ता.

तीसरे, वही वर्ष अर्थात् ११००, जो हालकी लिखी हुई पृथ्वीराजरासाकी पुस्तकों में मिलते हैं, डेढ़ अथवा दोसौ वर्ष पहिलेकी लिखी हुई पुरानी पुस्तकोंमें भी पायेजाते हैं.

चौथे, संवत् केवल एक या दो स्थानोंमें ही नहीं लिखे हैं, कि लेखक दोष मानलियाजावे, किन्तु कई स्थानोंमें लिखे हैं; और पृथ्वीराजकी जन्मपत्री, जो रासामें लिखी है उसका संवत, मिती, महीना, ग्रह, घटी, और मुहूर्त, ये सब दोहे और छन्दोंमें लिखे हैं. उस जन्मपत्रीको काशीके विद्वान ज्योतिषी पंडित नारायणदेव शास्त्रीने, जो महाराणा साहिबके यहां नौकर है, गणितसे देखा, तो मालूम हुआ, कि वह उस समयकी बनी हुई नहीं है. जन्मपत्रीका गणित प्रश्नोत्तरके तौरपर नीचे लिखे मुवाफ़िक़ है:–

प्रश्न.

संवत् १११५ वैशाख कृष्ण ३ गुरुवार, चित्रा नक्षत्र, सिद्धि योग, सूर्योदयमें डेढ़ घड़ी बाक़ी रहते जन्म हुआ. पृथ्वीराज नाम होनेसे चित्राका पूर्वार्द्ध कन्या राशि है, पंचम स्थानमें चन्द्रमा और मंगल हैं; एवञ्च कन्या राशि पंचम स्थानमें है, अर्थात् वृष

लग्नमें जन्म है; अष्टमे शनि, दशमे गुरु, शुक्र और बुध; एकादशमे राहु; और द्वादशमे सूर्य; यह ग्रहव्यवस्था सब सहीह है वा ग़लत इसका उत्तर गणित समेत कहो?

उत्तर.

श्री सूर्य सिद्धान्तके अनुसार संवत् ११११५ वैशाख कृष्ण ३ रविवारको होती है (१). कलियुगादि अहर्गण १५१९१००, स्पष्ट सूर्य ११।२१।२४।४९॥, स्पष्ट चन्द्र ६।१६।२७।१७, नक्षत्र स्वाति और योग वज्र होता है; और सूर्योदयके पहिले यदि जन्म है, तो लग्नसे द्वादश सूर्य किसी तरह नहीं होसक्ता; और वृष लग्नमें द्वादश सूर्य उस हालतमें होगा जबकि वह मेषका होगा, यहां तो मीनका है; और अब भौमादिक ग्रह स्थितिपर विचार करना कुछ आवश्यक नहीं, इतनेसे ही निश्चित होता है, कि प्रश्न लिखित वार आदि, तथा लग्न, चन्द्र, और सूर्यस्थिति असंगत हैं.

ऐसे ही पृथ्वीराजरासामें शहाबुद्दीन और पृथ्वीराजकी अन्तिम लड़ाईका संवत्, जिसमें पृथ्वीराज मारागया. ११५८ लिखा है, और तिथि श्रावण विदि ३०, कर्क संक्रान्ति, रोहिणी नक्षत्र, और चन्द्रमा वृष राशिका लिखा है. यदि चन्द्रमा रोहिणी नक्षत्रपर हो, तो सूर्यकी वृष राशि होती है, और नियमसे अमावास्याके सूर्य और चन्द्रमा एक ही राशिपर होते हैं. कर्क राशिपर सूर्यका होना तो शुद्ध मालूम होता है, परन्तु वृषका चन्द्रमा जो पृथ्वीराजरासामें लिखा है वह नहीं होसक्ता, कर्कका चन्द्रमा होना चाहिये. इससे जाना जाता है, कि ग्रन्थकर्ता ज्योतिष नहीं पढ़ा था, इसलिये उक्त भूलपर ध्यान नहीं दिया; और यह भी स्पष्ट है, कि वह राजा सोमेश्वरदेव अथवा पृथ्वीराज चहुवानका कवि नहीं था; क्योंकि यदि ऐसा होता, तो वह पृथ्वीराजकी जन्मतिथि, मुहूर्त, और लग्न अवश्य ठीक ठीक जानता; और चन्द वरदाई नामके कविका होना भी पृथ्वीराजरासाहीसे जाना जाता है.

हमारा मन्शा वादानुवाद बढ़ानेके विचारसे इन दलीलोंके लिखनेका नहीं है, बरन केवल इस ग़रज़से कि उक्त ग्रन्थके लेखसे जो ख़ामी इतिहासमें आगई है वह दूर कीजाये. यदि कोई कहे, कि पृथ्वीराजरासामें कुछ हिस्सह पृथ्वीराजके समयका चन्दका बनायाहुआ होगा, जिसको क्षेपक मिलाकर लोगोंने बढ़ादिया है; तो यह भी नहीं होसक्ता, क्योंकि ग्रन्थकर्ता कवि लोग अपने ग्रन्थोंमें नीचे लिखी हुई

(१) संवत् ११११५, शके ९८० वैशाख कृष्ण ३, कलि गताब्दाः ४१५९, अधिमासाः १५३३, ऊनाहाः २४१४७, अहर्गणः १५१९१००, सप्ततष्टेवारः २ शुक्रवारात् गणिते जातो रविवारः एवंच वैशाख कृष्ण ३ रविवासरेऽस्तीति सिद्धं.

बातें दर्ज करना मुख्य मानते हैं:- पहिले, वंशवर्णन; दूसरे, विवाहादि सम्बन्ध; तीसरे, लड़ाइयां; और चौथे, जन्म व मृत्युका हाल.

प्रथम तो इस ग्रन्थमें पृथ्वीराजके पूर्वजोंका वंश वृक्ष ही अशुद्ध है, जो ख़ास महाराजा पृथ्वीराजके पिता सोमेश्वरदेवके समयकी लिखी हुई बीजोलियाकी प्रशस्तिके मिलानेसे पाठक लोगोंको अच्छी तरह मालूम होसक्ता है.

दूसरे, विवाहादि सम्बन्धका यह हाल है, कि चित्तौड़के रावल समरसिंहका ज़मानह पृथ्वीराजरासाके लेखसे दोसौ वर्ष पीछे पत्थरकी प्रशस्तियोंसे साबित हुआ है, तो इस हालतमें उनका विवाह भी राजा पृथ्वीराजकी बहिनके साथ होना बिल्कुल ग़लत है. इसके अलावह आबूके राजा सलख पुंवारकी बेटी और जैत पुंवारकी बहिन इंछनीके साथ पृथ्वीराजका विवाह होना रासामें लिखा है, वह भी ग़लत है; क्योंकि आबूके पाषाण लेख और ताम्रपत्रोंसे पुंवार राजाओंकी वंशावलीमें सलख और जैत नामका कोई राजा नहीं लिखा. फिर उज्जैनके राजा भीमदेव प्रमारकी बेटी इन्द्रावतीके साथ भी पृथ्वीराजका विवाह होना रासामें ग़लत लिखा है, क्योंकि उज्जैनके प्रमार राजाओंकी वंशावलीसे भीमदेव नामके किसी राजाका होना नहीं पायाजाता, बल्कि उस समयसे बहुत पहिले प्रमार राजाओंने उज्जैन छोड़कर धारा नगरीमें अपनी राजधानी क़ाइम करली थी.

तीसरे, राजा पृथ्वीराजकी लड़ाइयोंका हाल सुनिये, कि गुजरातके सोलंखी राजा भीमदेवके साथ पृथ्वीराजकी जो कई लड़ाइयां रासामें लिखी हैं, वहांपर लिखा है, कि जब अख़ीरमें पृथ्वीराजका पिता सोमेश्वरदेव भीमदेवसे लड़कर मारागया, तो पृथ्वीराजने लड़ाईमें भीमदेवको मारकर अपने पिताका बदला लिया. अगर्चि ये लड़ाइयां पृथ्वीराज-रासामें बड़ी तवालतके साथ लिखी गई हैं, लेकिन् भीमदेवका ताम्रपत्र, जो उसने संवत् १२५६ में भूमिदान देनेके समय लिखा था, और जिसमें उसका वंश वृक्ष भी दर्ज है, वह पृथ्वीराजरासाके भीमवध पर्वके लेखसे ११४ वर्ष बाद, और पृथ्वीराजके मारेजानेके अस्ली संवत् विक्रमी १२४९ [हि० ५८८ = ई० ११९२] से ७ वर्ष पीछेका है. इससे साबित हुआ, कि पृथ्वीराजके मरे पीछे सात वर्षतक भीमदेव ज़िन्दह रहा, तो क्या वह मरनेके बाद दोबारह जीवित होकर गुजरातका राज्य करता था ? इसी तरह रावल समरसिंहके साथ करेड़ा ग्राममें भीमदेवकी लड़ाई होना, और उस मौक़ेपर मददके लिये वहां पृथ्वीराजका आपहुंचना लिखा है, वह भी बिल्कुल ग़लत है; क्योंकि रावल समरसिंह भीमदेवके समयसे बहुत पीछे अलाउद्दीन ख़ल्जीके ज़मानेमें चित्तौड़पर राज्य करते थे, जबकि सोलंखियोंका राज्य गुजरातसे नष्ट होचुका था. ऐसेही

शहाबुद्दीन ग़ोरीको कई बार पृथ्वीराजने गिरिफ़्तार किया लिखा है, वह भी तवारीख़ोंके देखनेसे ग़लत मालूम होता है.

चौथे, पृथ्वीराजके जन्म और मृत्युका हाल भी माननेके लाइक़ नहीं है, जिनमेंसे उसके जन्मकी तफ्सील तो ऊपर बयान होही चुकी; अब मौतका हाल सुनिये. पृथ्वीराजरासामें लिखा है, कि शहाबुद्दीन ग़ोरी उस (पृथ्वीराज) को गिरिफ़्तार करके ग़ज़नी लेगया, और छः महीने बाद चन्द भाट भी वहां पहुंचा. चन्दने बादशाहसे कहा, कि राजा तीरसे पीतलके घड़ियालको फोड़ डालता है. बादशाहने परीक्षाके तौरपर राजाको ऐसा करनेकी इजाज़त दी. अगर्चि बादशाहने राजाको अंधा करदिया था, तथापि उस (पृथ्वीराज) ने इम्तिहानके समय आवाज़के सहारेसे शहाबुद्दीनको मारडाला, और आप भी चन्द भाट सहित आत्मघात करके वहीं मरगया. इसके बाद दिल्लीमें पृथ्वीराजका बेटा रेणसी गद्दीपर बैठा, जिसने पंजाबका मुल्क मुसल्मानोंसे वापस लेना चाहा; उस समय शहाबुद्दीनका बेटा विनयशाह चढ़कर आया, रेणसी उससे लड़कर मारागया, और दिल्लीमें मुसल्मानी बादशाहत होगई. उक्त ग्रन्थकी ये सब बातें बिल्कुल बनावटी मालूम होती हैं, क्योंकि अव्वल तो शहाबुद्दीन ग़ोरी पृथ्वीराजके मारेजाने बाद चौदह वर्षतक ज़िन्दह रहा, और उक्त राजाको मारकर देशको बर्बाद करता हुआ अजमेरतक आया, और उसके गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबकने दिल्लीपर क़बज़ह करलिया. फिर दूसरे साल शहाबुद्दीनने आकर क़न्नौजको फ़त्ह करलिया. इसीतरह उसने कई बार हिन्दुस्तान और तुर्किस्तान वग़ैरह मुल्कोंपर हमले किये, जिनकी तफ्सील फ़ार्सी किताबोंमें लिखीगई है. आख़रकार वह हिज्री ६०२ [वि० १२६३ = ई० १२०६] में ग़ज़नीके पास दमयक गांवमें कक्खड़ोंके हाथसे मारागया. उसके एक बेटीके सिवा कोई औलाद नथी, जिससे हिन्दुस्तानका बादशाह तो उसका गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक बनगया, और ग़ज़नी वग़ैरह इलाक़ोंपर उसके भाई ग़यासुद्दीन मुहम्मदका बेटा ग़यासुद्दीन महमूद क़ाबिज़ हुआ, लेकिन् थोड़े ही दिनों पीछे शहाबुद्दीनके दूसरे गुलाम ताजुद्दीन यल्दुज़ने किर्मानसे आकर ग़ज़नी वग़ैरहपर क़बज़ह करलिया, और वह लाहौरपर चढ़ा, तब कुतुबुद्दीनसे शिकस्त पाकर किर्मानको चलागया. कुतुबुद्दीन ४० रोज़तक ग़ज़नीपर क़ाबिज़ रहा, फिर उसको निकालकर ताजुद्दीन मुख़्तार होगया.

अब देखना चाहिये, कि पृथ्वीराजरासाके लेख और फ़ार्सी तवारीख़ोंके बयानमें कितना फ़र्क़ है. जब ऊपर लिखी हुई मुख्य मुख्य बातें ग़लत होचुकीं, तो वह कौनसा ज़िक्र है, जिसको पृथ्वीराजरासामें हम पुराना मानकर उसे चन्दका बनाया हुआ ख़याल करें. हमारे ख़यालसे जिसतरह मलिक मुहम्मद जायसीने पद्मावतीका ख़याली

क़िस्सह बनालिया, उसी तरह पृथ्वीराजरासा भी किसीने ख़याली बनालिया है, क्योंकि इसमें थोड़ेसे सहीह नामोंके साथ ख़याली नाम और ख़याली क़िस्से घड़लिये गये हैं; जिस तरह हंसावतीके विवाह पर्वमें लिखा है, कि राजा पृथ्वीराजका तोता उड़कर समन्दशिखरके राजाकी बेटी हंसावतीके पास चलागया, और उस पक्षीने पृथ्वीराजकी तारीफ़ की, जिसको सुनकर हंसावती पृथ्वीराजपर आशिक़ होगई, और वही तोता उस राजकुमारीका भेजाहुआ पृथ्वीराजके पास आया, और उस राजकन्याकी तारीफ़ करके राजाको मोहित किया; और उसी तोतेके साथ फ़ौज सहित चढ़ाई करके पृथ्वीराज हंसावतीको व्याहलाया. इसीतरह एक हंसके कहने सुननेसे देवगिरीके राजाकी बेटी पद्मावतीके साथ पृथ्वीराजका विवाह हुआ; और ऐसेही एक तोतेके परस्पर संदेसा पहुंचानेसे कन्नौजके राजा जयचन्दकी बेटी संयोगिता और पृथ्वीराजके आपसमें प्रीति उत्पन्न हुई थी. भला ऐसे ख़याली क़िस्सोंकी किताब ऐतिहासिक काव्योंमें किसतरह दाख़िल होसक्ती है ? पृथ्वीराजरासामें शहाबुद्दीन गोरीको सिकन्दर जलालका बेटा लिखा है, और उसका हाल फ़ार्सी तवारीख़ोंमें इसतरहपर है:-- " महमूद ग़ज़नवी और उसके बेटे मसऊदके .इलाक़ेदार सर्दारोंमें गोरके ज़िलेका रहनेवाला हुसैन गोरी फ़ीरोज़कोहका मलिक था, जिसके बेटे अलाउद्दीन गोरी, साम गोरी व सैफ़ुद्दीन गोरी वग़ैरह थे. महमूदकी औलादमेंसे बहरामशाह ग़ज़नवीको निकालकर अलाउद्दीन गोरी मालिक होगया, और उसने अपने भाई साम गोरीके बेटे ग़यासुद्दीन और शहाबुद्दीनको ग़ज़नीका .इलाक़ह देदिया. अलाउद्दीनके मरनेके बाद ग़यासुद्दीन तो फ़ीरोज़कोहका मालिक रहा, और उसने अपने छोटे भाई शहाबुद्दीनको ग़ज़नीपर मुख़्तार किया ". लेकिन् पृथ्वीराजरासेका बनानेवाला तवारीख़ नहीं जानता था, इसलिये उसने शहाबुद्दीन गोरीको एलेग्जैंडर, यानै सिकन्दरका बेटा ख़याल करलिया होगा. अलावह इसके शहाबुद्दीन गोरीके सर्दारोंके जो नाम पृथ्वीराजरासामें लिखे हैं, वह ख़याली नाम हैं, जिनमेंसे थोड़ेसे नाम चुनकर उदाहरणके तौरपर नीचे लिखे जाते हैं:-

खुरासानखां	हासनखां	तोसनखां	ततारखां	बिराहमखां
मूसनखां	पीरोजखां	गजनीखां	सोसनखां	नवरोजखां
दादूखां	अलीखां	आलमखां	मुस्तफाखां	सुरेमखां
सालमखां	ऊमरखां	ममरेजखां	पीरनखां	कोजकखां
सकतखां	रेसनखां	जलालखां	जलूखां	मोहब्बतखां
हीरनखां	काइमखां	राजनखां	मीरनखां	मिरजाखां
ताजनखां	देगनखां	जोसनखां	हाजीखां	दोसनखां

जलेबखां	गाजीखां	लालनखां	महदीखां	सेरनखां
गालिबखां	सहदीखां	नगनीखां	समोसनखां	एरनखां
मीरखां	एलचीखां,			

और शहाबुद्दीनके क़ाज़ीका नाम मदन लिखा है.

अब हम 'तबक़ाति नासिरी' से शहाबुद्दीनके रिश्तह्दार और सर्दारोंके नाम लिखते हैं, जो ऊपर बयान कियेहुए ख़याली नामोंसे कुछ भी नहीं मिलते - (देखो तबक़ाति नासिरी, पृष्ठ १२५):-

बादशाहके क़ाज़ी.

१ - क़ाज़ी ममालिक सद्र शहीद निज़ामुद्दीन अबूबक्र.

२ - क़ाज़ी लश्कर व वकील ममालिक शम्सुद्दीन बल्ख़ी.

बादशाहके कुटुम्बी और सर्दार.

मलिक ज़ियाउद्दीन.
सुल्तान बहाउद्दीन साम.
सुल्तान ग़यासुद्दीन महमूद.
मलिक बद्रुद्दीन कैदानी.
मलिक कुतुबुद्दीन तमरान.
मलिक ताजुद्दीन हरब.
मलिक ताजुद्दीन मकरान.
मलिक अलाउद्दीन.
मलिक शाह वख़्श.
मलिक नासिरुद्दीन ग़ाज़ी.
मलिक ताजुद्दीन जंगी बामियान.
मलिक नासिरुद्दीन मादीन.
मलिक मसऊद.
मुय्यदुद्दीन मसऊद.
मलिक यूसुफ़ुद्दीन मसऊद.
मलिक नासिरुद्दीन तमरान.
मलिक हिसामुद्दीन अली किर्माज.
मलिक मुय्यदुल्मुल्क किर्माज.
मलिक शहाबुद्दीन मादीनी.
सुल्तान ताजुद्दीन यल्दुज़.
सुल्तान ग़यासुद्दीन.
सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक.
मलिक रुकनुद्दीन सूर कैदान.
अमीर हाजिब हुसैन मुहम्मद अली ग़ाज़ी.
अमीर हाजिब हुसैन मुहम्मद हबशी.
अमीर सुलैमान शीश.
अमीर दाद.
अमीर हाजिबहुसैन सर्जी.
अमीर हाजिबख़ां.
मलिक हसनुद्दीन अली किर्मांना.
मलिक ज़हीरुद्दीन किर्माज.
मलिक ज़हीरुद्दीन फ़तह किर्माज.
मलिक हुसैनुद्दीन.
मलिक इज़्ज़ुद्दीन ख़र्मील.
मलिक मुबारिज़ुद्दीन बिन् मुहम्मद अली-अत्सर.
मलिक नासीरुद्दीन हुसैन, अमीर शिकार.
मलिक शम्सुद्दीन सूर कैदान.

सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमिश. मलिक इख़्तियारुद्दीन हर्वली.
सुल्तान अलियुद्दीन मह्मूद. मलिक असदुद्दीन शेर.
सुल्तान नासिरुद्दीन क़बाचा. मलिक अहमरी.

इनमेंसे नीचे लिखे हुए चार सर्दार गुलामोंने बादशाहीका दरजह हासिल किया:-

सुल्तान ताजुद्दीन यल्दुज़. सुल्तान नासिरुद्दीन क़बाचा.
सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमिश. सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक.

शहाबुद्दीन ग़ौरीके वज़ीर.

ज़ियाउल्मुल्क दुरमुन्शी. मुय्यदुल्मुल्क मुहम्मद अब्दुल्लाह संजरी.
शम्सुल्मुल्क अब्दुल् जब्बार कैदानी.

पृथ्वीराजरासाके ख़याली नामोंसे तबक़ाति नासिरीमें लिखे हुए अस्ली नाम बिल्कुल नहीं मिलते, और ख़याली नाम भी बिल्कुल नावाक़िफ़ आदमीने घड़लिये हैं, जिनको सुनतेही यक़ीन होजाता है, कि ये बनावटी नाम हैं.

अलावह इन बातोंके पृथ्वीराजरासाकी बड़ी लड़ाईके पत्र ३३३ में लिखा है, कि रावल समरसिंह पृथ्वीराजकी मददको दिल्ली जानेलगे, उसवक़ उन्होंने अपने बड़े पुत्र रत्नसिंहको चित्तौड़का राज्य देकर बहुत कुछ नसीहत की, और छोटे पुत्र कुम्भकर्णको कुछ न कहा, जिससे वह नाराज़ होकर बहशी बादशाहके पास चलागया, और बादशाहने उसको विदरनगर जागीरमें दिया. ग्रन्थकर्त्ताका प्रयोजन बहशी बादशाहसे बह्मनी बादशाह था, क्योंकि विदर शहर दक्षिणमें है. इससे भी मालूम होता है, कि ग्रन्थकर्त्ता तवारीख़से बिल्कुल वाक़िफ़ नथा, और इसी सबबसे उसने ऐसी गलत घड़ंत करली; क्योंकि हिज्री ७४८ [वि० १४०४ = ई० १३४७] में अलाउद्दीन गांगू बह्मनीने दिल्लीके बादशाह मुहम्मद तुग़लक़के समय दक्षिणमें अपनी राजधानीकी बुन्याद डाली थी, और पृथ्वीराजरासेका बनाने वाला बह्मनी सल्तनतको शहाबुद्दीन गौरीसे भी पुरानी जानता था.

जब रावल समरसिंह पृथ्वीराजकी मददके लिये दिल्ली पहुंचे, उससमय चन्द भाटने समरसिंहकी तारीफ़में नीचे लिखे हुए पद कहे हैं:-

"दख्खनि साहि भंजन अलग्ग, चन्देरि लिद्द किय नाम जग्ग".

इन शब्दोंसे ग्रन्थकर्त्ताका प्रयोजन मांडूके बादशाहसे है, क्योंकि चंदेरी उन्हींके क़बज़ेमें थी, और मांडू राजपूतानहसे दक्षिण तरफ़ है, और चंदेरीको मांडूके बादशाह दूसरे महमूदसे महाराणा संग्रामसिंह (सांगा) ने लिया था. ग्रन्थकर्त्ता यह भी नहीं जानता था, कि मांडूकी बादशाहतकी बुन्याद दिलावर गौरीने हिज्री ८०९ [वि० १४६३

= .ई० १४०६] में फ़ीरोज़शाह तुग़लक़के बेटे मुहम्मदशाहके समयमें क़ाइम की थी, और दूसरे महमूदकी लड़ाई महाराणा संग्रामसिंहसे विक्रमी १५७५ [हि० ९२४ = .ई० १५१८] में हुई थी. इन बातोंसे सिद्ध होगया, कि यह ग्रन्थ महाराणा सांगाके समयसे बहुत अ़रसे बाद घड़ंत कियागया है. ग्रन्थकर्त्ता लिखता है, कि चन्द भाटने रावल समरसिंहको यह आशिस दी- " कलंकियां राय केदार, पापियां राय प्रयाग, हत्यारां राय बाराणसी, मदवीनराय राजानरी गंग, सुल्तान ग्रहण मोषण, सुल्तान माण मलण, " इत्यादि.

इन शब्दोंसे, याने सुल्तानको पकड़कर छोड़नेवाले, और सुल्तानका मान भंग करने वालेसे साफ़ तौरपर साबित होता है, कि मांडूके बादशाह दूसरे महमूदको महाराणा सांगाने पकड़कर छोड़ा था, और गुजराती बादशाहके देशको लूटकर उन्होंने उसका मान भंग किया था. बह्मनी बादशाहके पास जो कुम्भकर्णका जाना लिखा उससे यह साबित होगया, कि उस बादशाहतके क़ाइम होनेके बहुत अ़रसे बाद यह ग्रन्थ बनायागया. फिर मांडूके बादशाह महमूद ख़ल्जीसे चंदेरीका लेना, और उक्त बादशाहको गिरिफ्तार करके पीछा छोड़ना तथा मुज़फ़्फ़रशाह गुजरातीका मान भंग करना, इत्यादि मज़्मूनोंसे साफ़ ज़ाहिर है, कि महाराणा संग्रामसिंह अव्वलके समयमें विक्रमी १५७५ [हि० ९२४ = .ई० १५१८] के बाद यह ग्रन्थ बनायागया; लेकिन् मेरा ख़याल है, कि उक्त ज़मानहसे भी बहुत अ़रसे बाद यह ग्रन्थ बना है; क्योंकि यह बात तो इस ग्रन्थकी चाल ढाल और शब्दोंसे अच्छीतरह साबित है, कि यह ग्रन्थ राजपूतानहके कविने बनाया; और राजपूतानहकी कवितामें फ़ार्सी शब्दोंका प्रचार अक्बर बादशाहके समयसे होने लगा है, क्योंकि उक्त बादशाहके समयमें मेवाड़से महाराज शक्तिसिंह, सगरसिंह, जगमाल, और रामपुराका राव दुर्गभाण वग़ैरह; और मारवाड़से राव मालदेवके बेटे रामसिंह, व उदयसिंह वग़ैरह; और बीकानेरके महाराजा रायसिंह, व आंबेरके महाराजा मानसिंह इत्यादि क्षत्रिय सर्दारोंके साथ मारवाड़ी कवियोंकी भी बादशाही दर्बारमें आमद रफ्त हुई, तबसे ये लोग फ़ार्सी शब्दोंको अपनी कवितामें शामिल करने लगे. इस ज़मानहसे पहिलेकी जो मारवाड़ी कविता मिलती है उसमें फ़ार्सी शब्द बहुतही कम देखनेमें आते हैं. उक्त बादशाहकी गद्दीनशीनीके बाद, और विक्रमी १६७१ [हि० १०२३ = .ई० १६१४] के पहिले यह ग्रन्थ बनायागया, क्योंकि पृथ्वीराजरासाके दिल्ली प्रस्ताव पर्वमें इसतरह लिखा है:-

दोहा.

सोरेसे सत्तोतरे विक्रम साक विदीत ॥
दिल्ली धर चित्तौड़पत ले खागां बलजीत ॥ १ ॥

ग्रन्थकर्त्ताने भविष्यद्वाणी लिखी है, कि विक्रमी १६७७ [हि० १०२९ = .ई० १६२०] में चित्तौड़के राजा दिल्लीकी धरती फ़त्ह करलेंगे; लेकिन् विक्रमी १६७१ [हि० १०२३ = .ई० १६१४] में जहांगीर बादशाह और महाराणा अव्वल अमरसिंहसे सुलह हुई, और महाराणाने नामके लिये राजकुमार कर्णसिंहको बादशाहके पास भेजकर इताअ़त कुबूल की, उस समयसे पहिले वैसा लिखना संभव था. उसके बाद राजपूतानहके लोगोंके ख़यालमें फ़र्क़ आगया था, जिससे हम यक़ीन करते हैं, कि अक्बरकी तख़्तनशीनीके कुछ अ़रसे बाद, और जहांगीरके शुरू अ़ह्दसे पहिले यह ग्रन्थ बनाया गया था. इस विषयको हम बंगालेकी एशियाटिक सोसाइटीके सामयिक पत्र (.ईसवी १८८६ के जर्नल नम्बर १, भाग १) में मुद्रित कराचुके हैं, जिसमें सब हाल सविस्तर प्रश्नोत्तर सहित लिखागया है.

रावल समरसिंहका इतिहास पृथ्वीराजरासाके अ़लावह कहीं नहीं मिलता, बड़वा भाटोंकी और ख्यातिकी पोथियोंमें भी इसी ख़याली ग्रन्थसे चुनकर दर्ज कियागया है.

अब हम रावल समरसिंहसे लेकर अजयसिंहतककी पीढ़ियोंका ज़िक्र लिखते हैं.

१ - रावल समरसिंह.
२ - रावल रत्नसिंह.
३ - रावल कर्णसिंह.
४ - रावल माहप और उनके भाई महाराणा राहप.
५ - राणा नरपत.
६ - राणा दिनकरण.
७ - राणा जसकरण.
८ - राणा नागपाल.
९ - राणा पूर्णपाल.
१० - राणा पृथ्वीपाल.
११ - राणा भुवनसिंह.
१२ - राणा भीमसिंह.
१३ - राणा जयसिंह.
१४ - राणा गढ़लक्ष्मणसिंह.
१५ - राणा अरिसिंह.
१६ - राणा अजयसिंह.

इन पीढ़ियोंके हालमें बड़वा भाटों और ख्यातिकी पोथियां लिखनेवालोंने पृथ्वीराजरासाके ग़लत संवत्का अन्तर फैलाकर बहुतसी घड़न्तें घड़ली हैं, जैसे अ़लाउद्दीन ख़ल्जीकी लड़ाई, जो विक्रमी १३५९ [हि० ७०२ = .ई० १३०२] में रावल समरसिंहके पुत्र रत्नसिंहके साथ हुई थी, उसको उन्होंने लक्ष्मणसिंह और अरिसिंहके साथ होना लिखा है; और उसी लड़ाईमें १३ पीढ़ियोंका माराजाना और लक्ष्मणसिंहके भाई रत्नसिंहकी राणी पद्मिनीका अनेक स्त्रियोंके साथ तहख़ानोंमें बन्द करदेनेसे प्राण देना लिखा है; लेकिन् हमारे ख़यालमें यह बात नहीं आसक्ती. मालूम होता है, कि बड़वा

भाटोंनें पृथ्वीराजरासाके लेखको सच्चा मानकर शहाबुद्दीनके ११५ वर्ष बाद और पृथ्वीराजरासाके लेखसे २०१ वर्ष पीछे अलाउद्दीन ख़ल्जीका चित्तौड़को घेरना समझकर रत्नसिंहकी जगह लक्ष्मणसिंहके साथ अलाउद्दीनकी लड़ाई होना ख़याल करके वैसाही लिखदिया. विक्रमी १३४४ की प्रशस्तिसे यह तो साबित होही चुका, कि उस समय रावल समरसिंह चित्तौड़पर राज्य करते थे, और तअ़ज्जुब नहीं, कि उसके बाद वह पांच सात वर्ष फिर भी जीते रहे हों; और उनके बेटे रावल रत्नसिंहके साथ अलाउद्दीन ख़ल्जीकी लड़ाई होना कुल तवारीख़ोंमें लिखा है, उनमें यह भी लिखा है, कि पद्मिनीके भाई गोरा व बादलने बादशाहसे बड़ी बड़ी लड़ाइयां लड़ीं; रावल रत्नसिंहकी राणी पद्मिनी हज़ारों स्त्रियों सहित आगमें जलमरी; अलाउद्दीनने इस क़िले (चित्तौड़) को फ़तह करके अपने बेटे ख़िज़रखांको सौंपदिया, और क़िलेका नाम ख़िज़राबाद रक्खा; और अपने बेटेको वलीअ़हूद बनानेका जल्सह भी इसी क़िलेमें किया. अलाउद्दीन ख़ल्जी हिज्री ६९५ [वि० १३५३ = ई० १२९६] में अपने चचा जलालुद्दीन ख़ल्जीको मारकर दिल्लीके तख़्तपर बैठा; और छः महीनेतक घेरा डालनेके बाद हिज्री ७०३ मुहर्रम [वि० १३६० भाद्रपद = .ई० १३०३ ऑगस्ट] में उसने क़िला चित्तौड़ फ़तह किया; और हिज्री ७१६ ता० ६ शव्वाल [विक्रमी = १३७३ पौष शुक्ल ७ = .ई० १३१६ ता० २२ डिसेम्बर] को वह मरगया. इससे यह बात अच्छी तरह साबित होगई, कि अलाउद्दीन ख़ल्जीसे रावल समरसिंहके पुत्र रत्नसिंहकी लड़ाई हुई थी; और तारीख़ फ़िरिश्तहमें जो यह बात लिखी है, कि चित्तौड़ वालोंने बादशाही मुलाज़िमको हाथ और गर्दन बांधकर क़िलेसे गिरादिया, जबकि अलाउद्दीनके मरनेका ज़मानह क़रीब था. यह ज़िक्र महाराणा भुवनसिंहका है, क्यौंकि राणपुरके जैन मन्दिरकी प्रशस्तिमें उक्त महाराणाको अलाउद्दीनका फ़तह करनेवाला लिखा है. भुवनसिंहसे पहिले नव पीढ़ियां, याने रत्नसिंहसे पृथ्वीपालतक नव राजा चित्तौड़ लेनेके इरादोंसे मारेगये थे. जब राहपका बड़ा भाई माहप नाउम्मेद होकर डूंगरपुरमें जारहा, तो उसका छोटा भाई राहप चित्तौड़ लेनेके लिये हमला करता रहा, यहांतक कि, वह अपने दुश्मन मंडोवरके मोकल पडियारको गिरिफ़्तार करलाया, और उसका ख़िताब छीनकर आप महाराणा कहलाया, और ऐसी तक्लीफ़की हालतोंमें भी बड़े बड़े बहादुरीके काम करनेपर अपने बाप दादोंकी बुज़ुर्गीका हक़दार बनगया.

कहते हैं, कि कुम्भलमेरके पहाड़ोंमें सीसोदा ग्राम राहपने ही आबाद किया था. पहिले इन महाराणाओंके पुरोहित चौईसा जातिके ब्राह्मण थे, जो तो माहपके साथ रहे, जिनकी औलाद वाले डूंगरपुरमें अबतक पुरोहित कहलाते हैं; और राहपका

सलाहकार एक सरसल पल्लीवाल ब्राह्मण था, उसको राहपने अपना पुरोहित बनालिया, और उसीकी औलादमें अबतक उदयपुरकी पुरोहिताई है. राहप अर्वली पहाड़में रहकर चित्तौड़ लेनेके लिये धावा करता रहा, और आख़रकार वह उन्हीं लड़ाइयोंमें मारागया. उसके पीछे भुवनसिंहने क़िला चित्तौड़ लेलिया, और उसी अरसेमें अलाउद्दीन ख़ल्जीके मरजानेके सबब दिल्लीकी तरफ़से बाज़पुर्स नहुई, परन्तु जब कुछ अरसे बाद हिज्री ७२५ रबीउल्अव्वल [वि० १३८१ फाल्गुन् = ई० १३२५ फ़ेब्रुअरी] में मुहम्मद तुग़लक़ दिल्लीका बादशाह बना, तो उसने मेवाड़के राजाओंकी सरकशीका ख़याल किया, और अपनी फ़ौज चित्तौड़पर भेजी. मेरे ख़यालसे यह ज़मानह महाराणा लक्ष्मणसिंहका मालूम होता है, जो बादशाही फ़ौजके मुक़ाबलेमें बड़ी बहादुरीके साथ लड़कर मारेगये, और जिनके बेटे अरिसिंह भी इसीतरह लड़कर काम आये, और उनके भाई अजयसिंह ज़ख़्मी होकर अर्वलीके पहाड़ोंमें जारहे, जिनका कुछ अरसे बाद वहीं देहान्त होगया.

मुहम्मद तुग़लक़ने एक मस्जिद क़िले चित्तौड़पर बनवाई, और उसमें बड़े बड़े अक्षरोंमें एक प्रशस्ति भी खुदवाई थी – (देखो शेष संग्रह). मुहम्मद तुग़लक़ने मालदेव सोनगराको यह क़िला इसलिये दिया था, कि यह क़िला राजपूतके बिना किसी दूसरेके क़बजेमें नहीं रहसक्ता था. बड़वा भाटों और ख्यातिकी पोथियोंका बयान है, कि लक्ष्मण-सिंहने अलाउद्दीन ख़ल्जीसे लड़ाइयां लड़ीं, उस समय तेरह पीढ़ियां काम आईं; परन्तु अलाउद्दीन ख़ल्जीके साथ लक्ष्मणसिंहकी लड़ाई होना, तो ऊपर लिखी हुई दलीलोंसे किसी हालतमें सहीह नहीं मानाजासक्ता, अल्बत्तह मुहम्मद तुग़लक़के साथ होना संभव है. अब रहा हाल तेरह पीढ़ियोंका, जिसकी बाबत् यह कहा जासक्ता है, कि रावल रत्नसिंहसे लेकर अजयसिंहतक पन्द्रह पीढ़ियां होती हैं, उनमेंसे शायद दो राजा-ओंके सिवा तेरह राजा मुसल्मानोंसे चित्तौड़के लिये लड़कर मारेगये होंगे, जिनका बड़वा भाटोंने एकट्ठा माराजाना ख़याल करलिया है; और राणपुरके जैन मन्दिरकी प्रशस्तिमें रावल समरसिंहके बाद भुवनसिंहका नाम लिखाजाकर, जयसिंह, लक्ष्मणसिंह, अरिसिंह तथा अजयसिंह दर्ज कियेगये हैं. इससे यह मालूम होता है, कि जिनके नाम नहीं लिखेगये, वे रावल समरसिंहके बेटे अथवा पोते होंगे, जो महाराणाके ख़िताबसे गद्दीपर बैठकर चित्तौड़ लेनेके उद्योगमें मारेगये; और भुवनसिंह रत्नसिंहका छोटा भाई होगा, जिसने दूसरे राजाओंके नाम छोड़कर अपनेको अपने बाप समरसिंहकी आशिस दिलाई होगी. इसी तरह भीमसिंह और जयसिंह भी भाई थे, जिनमेंसे जयसिंहने अपने बड़े भाई भीमसिंहका नम्बर छोड़कर अपने पिता भुवनसिंहकी आशिस दिलाई.

जोकि यह रवाज ज़मानह क़दीमसे चला आता है, इसलिये मेरा ख़याल है, कि राणपुरकी प्रशस्तिमें भी कई राजाओंके नाम इसीतरह छोड़दियेगये हैं; लेकिन् उनके होनेमें किसी तरहका सन्देह नहीं. कुम्भलमेरकी प्रशस्तियोंमें लक्ष्मणसिंह और अरिसिंहका वर्णन लिखा है, और ये प्रशस्तियां उक्त राजाओंसे १२५ वर्ष बाद लिखीगई हैं, लेकिन् उनमें अलाउद्दीन ख़ल्जीकी लड़ाइयोंका कुछ भी ज़िक्र नहीं है, इसलिये हमने उन ख़याली क़िस्सोंको छोड़दिया, जो बड़वा भाटोंने मनमाने घड़ लिये हैं, अल्बत्तह रावल रत्नसिंह और अलाउद्दीन ख़ल्जीकी लड़ाई वग़ैरहका हाल लिखनेके योग्य है, लेकिन् उसको फ़ार्सी तवारीख़ोंमें मुख़्तसर तौरपर लिखा है. पद्मावतीकी बाबत् कई तरहके क़िस्से मश्हूर हैं. बाज़े लोगोंका क़ौल है, कि रावल रत्नसिंहकी राणी पद्मिनी (पद्मावती) सिंहलद्वीपके राजाकी बेटी थी, सो ख़ैर इसका तो कुछ आश्चर्य नहीं, क्योंकि बहुत समयसे उक्त टापूके राजा सूर्यवंशी थे, और उनके साथ चित्तौड़के राजाका सम्बन्ध होना सम्भव था; लेकिन् मलिक मुहम्मद जायसी वग़ैरह लोगोंने इस बारेमें कई बड़े बड़े ख़याली क़िस्से घड़लिये हैं, जिनसे हमको कुछ प्रयोजन नहीं, चाहे वे कैसे ही हों; परन्तु अस्ल हाल इस तरहपर है, कि उक्त महाराणीके पीहरका रघुनाथ नामी एक मुलाज़िम (१) जो बड़ा जादूगर था, और रावल रत्नसिंहके पास रहकर अनेक चेटक दिखलानेसे उसको ख़ुश करता था, एक बार रावल रत्नसिंहकी नाराज़गीके सबब मुल्कसे निकालदियागया. उसने दिल्ली पहुंचकर अपनी जादूगरीके ज़रीएसे बादशाह अलाउद्दीन ख़ल्जीके दर्बारमें रहनेका दरजह हासिल किया, और वह ख़िल्वतमें बादशाहके सामने राणी पद्मावतीके रूपकी तारीफ़ करने लगा. बादशाह भी चित्तौड़पर चढ़ाई करनेका बहाना ढूंढही रहा था, रावल रत्नसिंहको लिख भेजा, कि राणी पद्मिनीको यहां भेजदो. यह पढ़कर रत्नसिंह मारे क्रोधके आगका पुतला बनगया, और बादशाहको उस पत्रका बहुत ही सख़्त जवाब लिखभेजा, कि जिसको सुनकर अलाउद्दीन बड़ा ग़ुस्सेमें आया. एक तो मज़्हबी तअस्सुब, दूसरे रणथम्भोर व शिवाणा वग़ैरह क़िलोंकी फ़त्हका ग़ुरूर, तीसरे घरके भेदू रघुनाथ जादूगरका जामिलना, और चौथे क़िला चित्तौड़ दक्षिण हिन्दुस्तानपर बादशाही क़बज़ेके लिये रोक होना, वग़ैरह कारणोंसे विक्रमी १३५९ [हि० ७०२ = ई० १३०२] में बादशाहने बड़ी भारी फ़ौजके साथ दिल्लीसे रवानह होकर क़िले चित्तौड़को आघेरा. रावल रत्नसिंहने भी लड़ाईकी ख़ूब तय्यारियां करली थीं, और मज़्हबी जोशके सबबसे इलाक़ेदारोंके

---

(१) इसको मलिक मुहम्मद जायसीने भाट लिखा है.

सिवा दूसरे राजपूत भी हज़ारों एकट्ठे होगये थे. रावलके आदमी क़िलेसे बाहिर निकल निकलकर बादशाही सेनापर हमले करने लगे, जिसमें दोनों ओरके हज़ारों बहादुर मारेगये. आख़रकार बादशाहने रावलके पास यह पैग़ाम भेजा, कि हमको थोड़ेसे आदमियोंके साथ क़िलेमें आनेदो, कि जिससे हमारी बात रहजावे, फिर हम चले जायेंगे. रावल रत्नसिंहने इस बातको क़बूल करके सौ दोसौ आदमियों सहित बादशाहको क़िलेमें आने दिया, लेकिन् बादशाह दग़ाबाज़ीका दाव खेलनेके-लिये अपनी नाराज़गीको छिपाकर रत्नसिंहकी तारीफ़ करने लगा, और विदा होते समय जब रत्नसिंह उसे पहुंचानेको निकला, तो उसका हाथ पकड़कर मुहब्बतकी बातें करता हुआ आगेको ले चला. रावल उसके धोखेमें आकर दुश्मनीको भूलगया, और क़िलेके दर्वाज़ेसे कुछ क़दम आगे निकल गया, जहां कि बादशाहकी फ़ौज खड़ी थी. बादशाह तुरन्त ही रावलको गिरिफ्तार करके डेरोंमें लेआया. क़िलेवालोंने बहुतेरी कोशिश की, कि रावलको छुड़ालेवें, लेकिन् बादशाहने उनको यही जवाब दिया, कि बग़ैर पद्मावती देनेके रत्नसिंहका छुटकारा न होगा. तब तमाम राजपूतोंने एकत्र होकर अपनी अपनी बुद्धिके मुवाफ़िक़ सलाह ज़ाहिर की, लेकिन् पद्मावतीके भाई गोरा व बादलने कहा, कि बादशाहने हमारे साथ दग़ाबाज़ी की है, इसलिये हमको भी चाहिये, कि उसी तरह अपने मालिकको निकाल लावें; और इस बातको सबोंने क़बूल किया. तब इन दोनों बहादुरोंने बादशाहसे कहलाया, कि पद्मिनी इस शर्तपर आपके पास आती है, कि पहिले वह रत्नसिंहसे आख़री मुलाक़ात करलेवे. बादशाहने क़स्म खाकर इस बातको क़बूल किया. इसपर गोरा व बादलने एक महाजान और ८०० डोलियोंमें शस्त्र रखकर हरएक डोलीके उठानेके लिये सोलह सोलह बहादुर राजपूतोंको कहारोंके भेसमें मुक़र्रर करदिया, और थोड़ीसी जमइयत लेकर आप भी उन डोलियोंके साथ होलिये. बादशाहकी इजाज़तसे ये सब लोग पहिले रावल रत्नसिंहके पास पहुंचे; ज़नानह बन्दोबस्त देखकर शाही मुलाज़िम हटगये, किसीको दग़ाबाज़ीका ख़याल न हुआ, और इस हलचलमें राजपूत लोगोंने रत्नसिंहको घोड़ेपर सवार करके बादशाही लश्करसे बाहिर निकाला. जब वह बहादुर लश्करसे निकलगया, तो वे बनावटी कहार याने बहादुर राजपूत डोलियोंमेंसे अपने अपने शस्त्र निकालकर लड़ाईके लिये तय्यार होगये. बादशाहने भी अपनी दग़ाबाज़ीसे राजपूतोंकी दग़ाबाज़ीको बढ़ी हुई देखकर अफ़्सोसके साथ फ़ौजको लड़ाईका हुक्म दिया. गोरा व बादल, दोनों भाई अपने साथी बहादुर राजपूतों समेत मरते मारते क़िलेमें पहुंचगये. कईएक लोग कहते हैं, कि गोरा रास्तेमें मारागया, और बादल क़िलेमें पहुंचा; और बाज़ोंका

कौल है, कि दोनों इस लड़ाईमें मारेगये. परन्तु तात्पर्य यह कि इन खैरख्वाह राजपूतोंने अपने मालिकको बादशाहकी कैदसे छुड़ाकर किलेमें पहुंचादिया, और फिर लड़ाई शुरू होगई. आखरकार हिज्री ७०३ मुहर्रम [विक्रमी १३६० भाद्रपद = ई० १३०३ ऑगस्ट] में अलाउद्दीनने चारों तरफ़से क़िलेपर सख़्त हमलह किया. इसवक्त रावल रत्नसिंहने सामानकी कमीके सबब लकड़ियोंका एक बड़ा ढेर चुनकर राणी पद्मिनी और अपने ज़नानख़ानहकी कुल स्त्रियों तथा राजपूतोंकी औरतोंको लकड़ियोंपर बिठाकर आग लगादी. हज़ारों औरत व बच्चोंके आगमें जलमरनेसे राजपूतोंने जोशमें आकर किलेके दर्वाज़े खोलदिये, और रावल रत्नसिंह मए कई हज़ार राजपूतोंके बड़ी बहादुरीके साथ लड़कर मारागया. बादशाहने भी नाराज़ होकर क़त्ल आमका हुक्म देदिया; और ६ महीना ७ दिनतक लड़ाई रहकर हिज्री ७०३ ता० ३ मुहर्रम [वि० १३६० भाद्रपद शुक्ल ४ = ई० १३०३ ता० १८ ऑगस्ट] को बादशाहने क़िला फ़तह करलिया (१). इसके बाद बादशाह अपने बेटे खिज़रखांको क़िला सौंपकर वापस लौटगया.

रावल रत्नसिंहने अपने कई भाई बेटोंको यह हिदायत करके क़िलेसे बाहिर निकालदिया था, कि यदि हम मारेजावें, तो तुम मुसल्मानोंसे लड़कर क़िला वापस लेना. बाज़ लोगोंका क़ौल है, कि रावल रत्नसिंहके दूसरे भाई, और बाज़ लोग कहते हैं, कि रत्नसिंहके बेटे कर्णसिंह पश्चिमी पहाड़ोंमें रावल कहलाये. उस ज़मानहमें मंडोवरका रईस मोकल पडियार पहिली अदावतोंके कारण रावल कर्णसिंहके कुटुम्बियोंपर हमलह करता था, इस सबबसे उक्त रावलका बड़ा पुत्र माहप तो आहड़में और छोटा राहप अपने आबाद कियेहुए सीसोदा ग्राममें रहता था. माहपकी टाला-टूली देखकर राहप अपने बापकी इजाज़तसे मोकल पडियारको पकड़लाया, तब कर्ण-सिंहने मोकल पडियारका 'राणा' ख़िताब छीनकर राहपको दिया, और मोकलको रावकी पदवी देकर छोड़दिया. इसके बाद कर्णसिंह तो चित्तौड़पर हमलह करनेकी हालतमें मारागया, और माहप चित्तौड़ लेनेसे ना उम्मेद होकर डूंगरपुरको चलागया. बाज़े लोग इस विषयमें यह कहते हैं, कि माहपने अपने भाई राणा राहपकी मददसे डूंगरथ्या भीलको मारकर डूंगरपुर लिया था, जिसका ज़िक्र डूंगरपुरके हालमें लिखा-जायेगा. राणा राहप चित्तौड़ लेनेके इरादेपर मज्बूत था, वह कभी सीसोदे, कभी कैलवाड़े और कभी कैलवेमें रहता था. एक दिन शिकार खेलते समय राहपने एक

(१) यह हाल 'अक्बर नामह' की दूसरी जिल्दके पृष्ठ १०७ में लिखा है.

सूअरपर तीर चलाया. दैवयोगसे वह तीर कपिलदेव नामी एक ब्राह्मणको जालगा, जो उसी जंगलमें तपस्या करता था, और उस तीरके लगनेसे वह वहीं मरगया. राणा राहपको उस ब्राह्मणके मरनेका बड़ा पश्चात्ताप हुआ, और उन्होंने उसकी यादगारके लिये कुंड वगैरह कई स्थान बनवाये, जो कैलवाड़ा गांवके समीप कपिल मुनिके नामसे अबतक मौजूद हैं. पहिले पहिल राहपने ही राणाका ख़िताब पाया, और सरसल पल्लीवालको अपना पुरोहित बनाया. फिर राहप भी चित्तौड़ लेनेकी कोशिशमें मुसल्मानोंसे लड़कर मारागया, और उसके बाद भुवनसिंहने चित्तौड़का क़िला लिया, जिसका ज़िक्र ऊपर होचुका है.

भुवनसिंहके पीछे महाराणा लक्ष्मणसिंहके समयमें दिल्लीके बादशाह मुहम्मद-तुग़लक़की फ़ौजने चित्तौड़को आघेरा. मालूम होता है, कि यह लड़ाई भी बड़ी भारी हुई, जिसमें महाराणा लक्ष्मणसिंह और उनके पुत्र अरिसिंह वग़ैरह बड़ी वीरताके साथ लड़कर मारेगये; लेकिन् हमको इस लड़ाईका मुफ़स्सल हाल सिवा इसके नहीं मिला, कि अरिसिंहका छोटा भाई अजयसिंह ज़ख्मी होकर केलवाड़ेकी तरफ़ पहाड़ोंमें चलागया, जहां वह महाराणाके नामसे प्रसिद्ध हुआ, और सांडे-रावके जती (जैन गुरु) ने उसके ज़ख्मोंका इलाज किया; जिसपर अजयसिंहने उस जतीको कहा, कि हमारी औलाद तुम्हारी औलादको पूज्य मानती रहेगी; और इसी कारणसे अबतक सांडेरावके महात्माओंका आदर सन्मान मेवाड़के महाराणा करते हैं. बाक़ी हाल अजयसिंहका महाराणा हमीरसिंहके वृत्तान्तमें लिखाजायेगा.

यह महाराणा ऊनवा ग्राम निवासी चन्दाणा (१) राजपूतोंके भानूजे थे; जिसका ज़िक्र इस तरहपर मश्हूर है, कि चित्तौड़के महाराणा लक्ष्मणसिंहके वलीअह्द (पाटवीपुत्र) अरिसिंह एक दिन पश्चिमी पहाड़ोंकी तरफ़ कैलवाड़ाके ज़िलेमें शिकारको गये थे. इत्तिफ़ाक़से वहांपर क्या देखते हैं, कि एक नौजवान कुमारी लड़की अपने बापके यहां जवारके खेतकी रखवाली कररही थी, कि एक सूअर वलीअह्दके हाथसे घायल होकर उसके खेतमें जा घुसा. वलीअह्द भी घोड़े समेत उसके पीछे खेतमें घुसने लगे. लड़कीने अर्ज़ किया, कि आप खेतमें घोड़ा डालकर जवारको न बिगाड़ें, मैं सूअरको निकाल देती हूं; और उसने लाठीसे सूअरको सहजमें निकाल दिया. लड़कीका यह हियाव और बल देखकर वलीअह्दको बड़ा आश्चर्य हुआ, और वह कुछ दूर आगे चलकर किसी आंबके वृक्षकी छायामें जा बैठे, कि इतनेमें उसी लड़कीने किसी जानवरपर गोफन चलाया. इत्तिफ़ाक़से गोफनका पत्थर आंबके नीचे एक घोड़ेको जालगा, और घोड़ेका पैर टूटगया. बाद इसके जब वह लड़की अपने घरको जाने लगी, तो देखा कि सिरपर दूधकी गागर रक्खे और दो भैंसके बच्चोंको अपने साथ क़ाबूमें किये हुए लिये जाती थी, और उनकी ताक़तको इस तरह रोकेहुए थी, कि दूधकी गागरको कुछ भी हानि नहीं पहुंचती थी. इस बातसे वलीअह्दको और भी ज़ियादह तअज्जुब हुआ; और लड़कीसे दर्याफ़्त किया, कि तू किसकी बेटी है ? उसने जवाब दिया, कि चन्दाणा राजपूतकी हूं. राजकुमारने दिलमें सोचा, कि यदि इस लड़कीसे कोई औलाद पैदा हो, तो निस्सन्देह बड़ी बलवान होगी. फिर उन्होंने उस लड़कीके बापको बुलाया, और कहा, कि तेरी लड़कीकी शादी हमारे साथ करदे. राजपूतने इस बातको ग़नीमत जानकर बड़ी ख़ुशीके साथ राजकुमारकी आज्ञाको क़बूल किया; और वलीअह्दने शादी करके उस लड़कीको उसी गांवमें रक्खा, क्योंकि उनको अपने पिताकी तरफ़से

(१) चन्दाणा राजपूत चहुवानोंकी शाखामेंसे हैं.

इस बातका भय था, कि ग्रामीण राजपूतके यहां शादी क्यों की ? लेकिन् शिकारके बहानेसे वहां कभी कभी आजाया करते थे. वहांपर ईश्वरकी कृपासे उस चन्दाणीके एक लड़का पैदा हुआ, जिसका नाम हमीरसिंह रक्खा गया.

जब मुहम्मद तुग़लक़की लड़ाईमें लक्ष्मणसिंह और अरिसिंह वगैरह मारे गये, तो उक्त चन्दाणी राणी अपने पुत्र हमीरसिंह सहित ऊनवा गांवमें मुसल्मानोंके भयसे हमीरसिंहको छिपायेहुए ग्रामीण लोगोंकी तरह दिन काटने लगी. इसी अरसेमें अजयसिंह चित्तौड़की लड़ाईमें ज़ख्मी होकर कैलवाड़ेमें आया, और महाराणाके ख़िताबसे मश्हूर हुआ. बड़वा भाटोंने लिखा है, कि महाराणा अजयसिंहके दो बेटे थे, बड़ा सज्जनसिंह, और छोटा क्षेमसिंह. अजयसिंह उस समय चित्तौड़ लेनेके इरादेमें लग रहे थे, परन्तु बीमारीके कारण दिन ब दिन उनका शरीर निर्बल होता जाता था; और उन्हीं दिनोंमें गोड़वाड़ ज़िलेका रहने वाला मश्हूर लुटेरा मूंजा नामी बालेचा (१) राजपूत उनको लूटमार वगैरहसे सताने लगा. महाराणाने अपने दोनों बेटोंको हुक्म दिया, कि उसको सज़ा देवें, लेकिन् उनसे कुछ बन्दोबस्त न होसका. इसपर महाराणा अपने बेटोंपर नाराज़ हुए, और इसी अरसहमें महाराणा अरिसिंहके पास रहने वाले किसी पुरुषने ऊनवा गांवमें छिपेहुए हमीरसिंहको ज़ाहिर किया; तब महाराणाने ऊनवासे हमीरसिंहको बुलाया. अगर्चि हमीरसिंह इसवक्त १३-१४ वर्षकी उम्रका लड़का था, लेकिन् महाराणाने उसको बड़ा दिलेर, ताक़तवर, और बहादुर देखकर मूंजाकी सज़ादिहीके लिये हुक्म दिया. कहावत है, कि "होनहार बिरवानके चिकने चिकने पात"; हमीरसिंहको ख़बर लगी, कि गोड़वाड़ ज़िलेके सेमारी गांवमें किसी क़ौमी जल्सेपर मूंजा बालेचा मौजूद है, उसी वक़्त हमीरसिंह कैलवाड़ासे निकले, और मूंजाको मारकर उसका सिर काटलाये. महाराणा अजयसिंह उस वक़्त ज़ियादह बीमार थे, इस बहादुरानह हिम्मतको देखकर हमीरसिंहपर बहुत खुश हुए, और अपनी तलवार उसे देकर मूंजाके खूनका तिलक (२)

—

(१) उदयपुरके क़रीब भुवाणा गांवकी सीममें एक छोटेसे दमदमेको लोग मूंजा बालेचाका महल बतलाते हैं.

(२) कर्नेल् टॉडने अपनी किताब टॉडनामह राजस्थानमें लिखा है, कि मेवाड़के महाराणाओंमें गद्दीनशीनीके समय खूनका टीका लगानेकी रस्म बापा (महेन्द्र) रावलके समयसे जारी हुई है; जिसका खुलासह यह है, कि जब बापा नागदासे चित्तौड़की तरफ़ रवानह हुआ, उसवक़्त दो भील भी उसके साथ होलिये, जो बचपनसे उसके साथ रहते थे, और हर जगह और हर हालतमें बापाके शरीक हाल और मददगार रहे. इनमेंसे एकका नाम बीलू और दूसरेका नाम देवा था.

उसके मस्तकपर किया; और कहा, कि हमारे वलीअ़हद बनने और चित्तौड़ लेनेके योग्य तुम ही हो, और हमारे बड़े भाई अरिसिंहकी औलाद होनेसे हक़ भी तुम्हारा ही है. अजयसिंहके पुत्र सज्जनसिंह और क्षेमसिंह इस बातसे नाराज़ होकर दक्षिणकी तरफ़ चलेगये. कहते हैं, कि उनकी औलादमें सितारा, कोलापुर, सावंतवाड़ी, तंजावर और नागपुरके राजा हैं.

महाराणा हमीरसिंहकी गद्दीनशीनीका संवत् निश्चय करना कठिन है, क्योंकि बड़वा भाटोंने तो इनकी गद्दीनशीनी विक्रमी १३५७ [हि० ६९९ = ई० १३००] में लिखी है, लेकिन् यह नहीं होसक्ता; क्योंकि उक्त संवत्के दो वर्ष बाद विक्रमी १३६० [हि० ७०३ = ई० १३०३] में तो बादशाह अ़लाउद्दीन ख़ल्जी और रावल रत्नसिंहकी लड़ाई हुई थी, और उसके बाद बादशाह मुहम्मद तुग़लक़ने महाराणा लक्ष्मणसिंह व अरिसिंह वग़ैरहसे लड़कर क़िला चित्तौड़ फ़त्ह किया था. फिर कुछ अ़रसेतक महाराणा अजयसिंह भी जिन्दह रहे; और मुहम्मद तुग़लक़ हिज्री ७२५ रबीउ़ल्अव्वल [वि० १३८१ फाल्गुन = ई० १३२५ फेब्रुअरी] में दिल्ली के तख़्तपर बैठा, और हिज्री ७५२ ता० २१ मुहर्रम [वि० १४०८ प्रथम वैशाख कृष्ण ७ = ई० १३५१ ता० २० मार्च] को वह मरगया; तो इस अन्तरमें लक्ष्मणसिंहकी लड़ाई और हमीरसिंहकी गद्दीनशीनी समझना चाहिये. इस शूर वीर महाराणाने अपनी तलवारके ज़ोरसे सीसोदियोंके वंशको दुश्मनोंके हमलोंसे बचाया, जो उस समय क़रीब क़रीब बिल्कुल नष्ट होचुका था, और आज दिन पूरी उन्नतिपर है.

जबकि मुहम्मद तुग़लक़ने हमलह करके चित्तौड़को ग़ारत किया, उस ज़मानहमें महाराणा लक्ष्मणसिंहका एक पुत्र अजयसिंह वंश क़ाइम रखनेके लिये चित्तौड़से बाहिर निकालदिया गया था, और वह केलवाड़ाके पहाड़ोंमें आकर रहने लगगया था, जो पेचीदा घाटियों और विकट रास्तों व झाड़ियोंके कारण बड़े बचावकी जगह थी.

अजयसिंहने अपने ख़ास पुत्र सज्जनसिंह और क्षेमसिंहको कमअ़क़्ल जानकर अरिसिंहके पुत्र हमीरसिंहको ऊनवा गांवसे बुलाया और उसे राज्यतिलक दिया,

---

इन दोनों शख़्सोंका नाम ज़बानी क़िस्से कहानियोंमें बापाके नामके साथ अक्सर मश्हूर है. बीलूकी औलादमें ऊंदरी गांवके भील हैं. जब बापा मोरी ख़ानदानके राजासे चित्तौड़ छीनकर आप तख़्तनशीन हुआ, उसवक़्त बीलूने अपने हाथके अंगूठेसे खून निकालकर बापाकी पेशानीपर राज्यतिलक किया था, और उसी सबबसे ऊंदरीके भील मेवाड़के महाराणाकी गद्दीनशीनीके समय उनके ललाटपर अपने हाथसे राज्यतिलक करनेका दावा करते हैं. देवाकी औलादका हाल भी उक्त साहिबने वहांपर सविस्तर लिखा है.

जिसका वृत्तान्त विस्तार सहित ऊपर लिखागया है. गद्दी बैठनेके समय महाराणा हमीरसिंहकी उम्र १३ या १४ वर्षकी थी, परन्तु यह गद्दीनशीनीकी रस्म नहीं थी, सिर्फ़ एक ख़ानदानी रस्म अदा कीगई थी.

इस बुद्धिमान राजाने गद्दी बैठते ही अपने मुल्कके कुल रास्ते, घाटे, व नाके वग़ैरह बन्द करके मेवाड़की प्रजाको बस्ती छोड़कर पहाड़ोंमें रहनेकी आज्ञा दी. यद्यपि ऐसा करनेसे उन्हींके मुल्ककी बर्बादी और नुक्सान था, परन्तु हम ऐसी कार्रवाईपर ज़ियादह दोष नहीं लगाते, क्योंकि जब हमारे सामने हमारी मौरूसी जायदादसे फ़ायदह उठाकर दुश्मन ताक़तवर बने, और हमारी ही दौलतसे हमारा सामना करनेमें कामयाब हो, तो इसमें कौनसी नुक्सानकी बात है, कि हम अपनी प्रजाको अपने निकट बुलाकर रक्षामें रक्खें.

इस ऊपर लिखी हुई आज्ञाका प्रजाके चित्तपर ऐसा असर हुआ, कि कुल मेवाड़ देश वीरान होकर अपने मालिककी रक्षामें जाबसा. बादशाहने राव कानड़देवकी औलादमें राव मालदेव सोनगराको चित्तौड़का क़िला मेवाड़ सहित जागीरमें लिखदिया था, लेकिन् इस समय कुल मेवाड़ ऊजड़ होकर दुश्मनोंके क़बज़ेमें केवल एक क़िला ही आबाद रहगया था. जबकि मुल्ककी आमदनी नाश होजानेके कारण राव मालदेव ख़र्चसे तंग आकर अपने मौरूसी ठिकाने जालौरमें चलागया, और क़िलेकी रक्षाके लिये कुछ फ़ौज छोड़गया, तो महाराणा हमीरसिंहने क़िला लेनेके लिये बहुतसे बहादुरानह हमले और कोशिशें कीं, लेकिन् चित्तौड़का क़िला, जो ईश्वरको थोड़े दिनोंके लिये फिर दूसरेके क़बज़ेमें रखना मन्ज़ूर था, हाथ न आया. इस अ़र्सेमें महाराणाको बहुतसी तक्लीफ़ें उठानी पड़ीं, यहांतक कि आमदनीके बिना फ़ौजको खाना पीनातक भी न मिलने लगा, और इस तक्लीफ़से सब लोग तितर बितर होगये, केवल थोड़ेसे शुभचिन्तक लोग, जोकि मुसीबतके वक़्में अपने मालिकके शरीक हाल रहा करते हैं, महाराणाके पास रहगये. महाराणा अपनी काम्याबीकी नाउम्मेदीसे उन्हीं अपने ख़ैरख़्वाह आदमियों समेत द्वारिकापुरीकी तरफ़ रवानह हुए. जब गुजरात .इलाक़हके खोड़ गांवमें जाकर मक़ाम किया (जो ग्राम कि चारणोंकी जागीरमें था), तो वहांपर चखड़ा चारणकी बेटीको, जिसका नाम बरवड़ी था, बड़ी करामाती सुना. उसको वहांके कुल लोग देवीका अवतार कहते थे. लेकिन् हमको इससे कुछ प्रयोजन नहीं चाहे कुछ ही हो. जब उसके करामाती हालात महाराणाके कानतक पहुंचे, तो वह ख़ुद उसके दर्शनोंको गये. कई पुस्तकोंमें मज़्हबी तौरकी बड़ी बड़ी बातें लिखी हैं, लेकिन् हमको तवारीख़ी हाल लिखना है, इसलिये करामाती हालात छोड़दिये गये. जब बरवड़ीने महाराणाको इस

तक्लीफ़की हालतमें बहुत फ़िक्रमन्द देखा, तो कहा, कि ऐ वीर तुम पीछे केलवाड़े को लौटजाओ, तुमको चित्तौड़ मिलेगा; और यदि तुम्हारी कोई सगाई आवे, तो इन्कार न करना, वही सम्बन्ध तुमको तुम्हारा मुल्क वापस मिलनेका पूरा वसीला होगा. महाराणाने कहा, कि बाई हम चित्तौड़को किस सामानसे लेसकेंगे, क्योंकि हमारे पास न तो चढ़नेके लिये घोड़ा, न लड़नेको सिपाही, और न खानेको ख़र्च है. बरवड़ीने कहा, कि वीर मेरा लड़का बारू घोड़ोंका कारवान लेकर तुम्हारे पास केलवाड़ेमें आवेगा, तुम उससे घोड़े लेकर अपना काम करना, घोड़ोंकी क़ीमत का कुछ फ़िक्र नहीं, तुम्हारे पास हो तब देदेना. बरवड़ीके इन करामाती वचनोंने महाराणाके दिलपर ऐसा असर किया, कि वह उसी वक़्त पीछे लौटकर केलवाड़ेमें आये. पीछेसे बरवड़ीने, जो बड़ी मालदार थी, अपने बेटे बारूको कहा, कि पांच सौ घोड़ोंका एक कारवान लेकर हमीरसिंहके पास केलवाड़े जाओ. चूंकि ये लोग घोड़ोंका व्यापार किया करते थे, इसलिये कुछ घोड़े तो इनके पास मौजूद थे, और कुछ फिर ख़रीदकर अपनी माताके हुक्मके मुवाफ़िक़ पांचसौ घोड़ों समेत केलवाड़े आये. यहांपर महाराणा भी इनका इन्तिज़ार देखरहे थे, आतेही तमाम घोड़ोंको बंधालिया; और बरवड़ीके बेटे बारूको अपने विश्वासपात्रोंमें दाख़िल करके अपनी पौलका नेग उसको दिया, और अपना बारहट बनाकर केलवाड़ाके पास कई गांवों सहित आंतरी गांवका तांबापत्र लिखदिया, जो अबतक उसकी औलादके क़बज़ेमें हैं. ईश्वरको बरवड़ीकी भविष्यद्वाणी सत्य करना मन्ज़ूर था; इसलिये उसी अरसेमें राव मालदेव सोनगराके मुसाहिबोंने रावसे कहा, कि आपकी लड़की बड़ी होगई है, यदि आज्ञा हो, तो हम एक राज्यक्रिया (हिकमत अमली) काममें लानेकी अर्ज़ करें. इसपर रावने इजाज़त दी. उन लोगोंने कहा, कि आपको बादशाहने जो मेवाड़का मुल्क दिया है, वह केवल नामके लिये है, क्योंकि जबतक महाराणा हमीरसिंह और उनकी औलाद क़ाइम रहेगी, तबतक आपको उस मुल्कसे एक कौड़ीका भी फ़ायदह न होगा; और ऐसी हालतमें नाहक़ ख़र्चसे ज़ेरबार होकर सिर्फ़ क़िलेको रखवालना और अपनी बहादुरीको बट्टा लगाना है. अगर हमारी सलाह क़ुबूल हो, तो आप की लड़कीकी शादी महाराणा हमीरसिंहके साथ करके पश्चिमी मेवाड़का ज़िला, जो बिल्कुल वीरान, कम उपजाऊ और बिकट पहाड़ी हिस्सह है, गुज़ारेके लिये उनको देदिया जावे, कि जिससे वह भी सन्तोष करें और बाक़ी आबाद मुल्क अपने क़बज़ेमें रहकर फ़ायदहकी सूरत पैदा हो. मालदेवको यह बात पसन्द आई, और महता जूहड़ व पुरोहित जयपालको टीकेका बहुतसा सामान देकर केलवाड़े भेजा.

इन लोगोंने अर्वली पहाड़ोंमें पहुंचकर महाराणासे मालदेवका संदेसा कहा, और बहुत कुछ आधीनता और समझाइशके साथ अर्ज़ किया, कि आपके बाप दादोंको मुसल्मानोंने मारा है, राव मालदेवने नहीं मारा; अल्बत्तह आपका मुल्क रावके क़बज़ेमें रहा है, सो अब वह अपनी लड़की और कुछ ज़मीन आपको देते हैं, चाहिये कि आप उसको मन्ज़ूर करें. इसपर महाराणाने पहिले तो ऊपरी दिलसे इन्कार किया, लेकिन् फिर बरवड़ीके वचनोंको याद करके मन्ज़ूर करलिया; और रवाजके मुवाफ़िक़ नारियल झेले गये.

महता जूहड़ और पुरोहित जयपालने महाराणासे कहा, कि आप हमारे साथ ही जालौर चलकर शादी करें. महाराणाने बारू बारहटके लाये हुए घोड़ोंपर सवार होकर जालौरकी तरफ़ कूच किया. वहां पहुंचनेके बाद रवाजके मुवाफ़िक़ शादी हुई, और राव मालदेवने इक़ारके मुवाफ़िक़ नीचे लिखे हुए आठ पहाड़ी ज़िले महाराणाको जिहेज़में दिये :- १-मगरा, २-सेरानला, ३-गिरवा, ४- गोड़वाड़, ५-वाराठ, ६-इयालपट्टी, ७-मेरवाड़ा, और ८-घाटेका चौखला. जब दुलहिनको लेकर जानवासेमें आये, तो महाराणी सोनगरी, जो बड़ी बुद्धिमान थी, महाराणासे कहने लगी, कि अब मेरा नफ़ा नुक्सान आपके साथ है, मेरे पिताके साथ नहीं, इसलिये अर्ज़ है, कि यदि आपका इरादह चित्तौड़ लेनेका हो, तो मेरे बापसे कामदार महता मौजीरामको मांगलेवें; वह बड़ा ईमान्दार और बुद्धिमान शख़्स है. महाराणाने इस सलाहको ग़नीमत समझकर अपने ससुरेसे कहा, कि आपने मुझको इतना मुल्क जिहेज़में दिया है, कि जितनेकी मुझे उम्मेद न थी, परन्तु इस आपत्तिकालमें मेरे पास कोई ऐसा होश्यार आदमी नहीं रहा, जो मुल्कका इन्तिज़ाम बख़ूबी करसके, और मुझको मेरे तहूतके मुल्कका इन्तिज़ाम करना ज़ुरूर होगा; इसलिये आपके कामदार महता मौजीरामको मुझे देदेवें, तो मैं आपका बड़ा एहसानमन्द रहूंगा. रावने महाराणाके मुखसे ये स्नेहके वचन सुनकर उनको सीधा व साफ़ जाना, और सोचा, कि यदि मेरा आदमी इनके पास रहेगा, तो फिर आगेको हमारे इनके किसी तरहकी नाइत्तिफ़ाक़ी न होगी. इसी विचारपर महता मौजीरामको महाराणाके सुपुर्द करदिया, और महतासे कहा, कि अबतक तो तू मेरा नौकर था, आजसे महाराणाका नौकर है, इनके नफ़ेमें अपना नफ़ा और इनके नुक्सानमें अपना नुक्सान समझना; और उसका हाथ महाराणाके हाथमें देकर कहा, कि आजसे यह आपका सेवक है. मौजीरामको साथ लेकर महाराणा अपने डेरोंमें आये; और उसीवक़्त मौजीरामने कहा, कि जिस कामके लिये आपने रावसे मुझे मांगा है वह काम करना मन्ज़ूर हो, तो यही वक़्त है. महाराणाने

फ़र्माया, कि अब हमारा सब भरोसा तुम्हारे ऊपर है, जैसा कहोगे वैसा करेंगे. यह सुनकर मौजीरामने ज़ाहिरा तौरपर महाराणासे कहा, कि अमुक जगह शेरकी भाल (ख़बर) है. महाराणा अपने राजपूतों सहित घोड़ोंपर सवार होकर शिकारके बहानेसे रवानह हुए, और दूसरे रोज़ आधी रातके वक़्त क़िले चित्तौड़के दर्वाज़ेपर पहुंचे. महता मौजीरामने आगे बढ़कर क़िले वालोंको आवाज़ दी, कि किंवाड़ खोलो, मैं मौजीराम हूं. जोकि यह महता फ़ौजकी तनूख़्वाह बांटनेको हमेशह क़िलेमें आया करता था, इसलिये इसकी आवाज़ पहिचानकर क़िले वालोंने दर्वाज़ह खोलदिया. दर्वाज़ह खुलते ही महाराणा अपने राजपूतों सहित क़िलेमें दाख़िल हुए, और रावके कुल आदमी मुक़ाबलह करने वाले मारेगये, बाक़ी रहे उनको निकालकर महाराणाने क़िलेपर अपना झंडा जाखड़ा किया. अब पिछला हाल सुनिये, कि राव मालदेवने शेरकी शिकारके लिये महाराणाका जाना सुनकर एक दिन और एक रात तो वापस लौटनेकी राह देखी; लेकिन् जब ख़बर मिली, कि वह चित्तौड़की तरफ़ रवानह हुए हैं, तो आप भी अपनी फ़ौज व पांचों बेटों याने जैसा, कीर्तिपाल, वणवीर, रणधीर, और केलण सहित रवानह हुआ. चित्तौड़में महाराणा हमीरसिंहने भी अपने ख़ानदानके राजपूतोंको एकट्ठा करलिया था, मुक़ाबलेके साथ मालदेवकी पेशवाई की. राव मालदेव शिकस्त पाकर पीछा जालौरको लौटगया, और वहांसे उसने मेवाड़पर एक दो हमले और भी किये, लेकिन् आख़रको शिकस्त पाई.

अब इस जगहपर थोड़ासा ज़िक्र अलाउद्दीन ख़ल्जीसे लेकर मुहम्मद तुग़लक़ तकका लिखाजाता है, जो इस तरहपर है:-

अलाउद्दीन ख़ल्जी हिज्री ७१६ ता० ६ शव्वाल [वि० १३७३ पौष शुक्ल ५ = ई० १३१६ ता० २० डिसेम्बर] को मरा, और उसके दूसरे दिन उसका छोटा बेटा शहाबुद्दीन ख़ल्जी ७ वर्षकी उम्रमें तख़्तनशीन कियागया. फिर हिज्री ७१७ ता० ८ मुहर्रम [वि० १३७४ चैत्र शुक्ल ९ = ई० १३१७ ता० २२ मार्च] को अलाउद्दीनका दूसरा बेटा कुतुबुद्दीन मुबारकशाह ख़ल्जी तख़्तपर बैठा, और उसने अपने छोटे भाई शहाबुद्दीन उमर ख़ल्जीको अंधा करके ग्वालियरके क़िलेमें भेजदिया. इसके बाद हिज्री ७२१ ता० ५ रबीउ़ल्अव्वल [वि० १३७८ वैशाख शुक्ल ६ = ई० १३२१ ता० ३ एप्रिल] को मलिक खुस्रोख़ां कुतुबुद्दीन मुबारकशाहको मारकर बादशाही तख़्तपर बैठा, और उसने अपना नाम " सुल्तान नासिरुद्दीन " रक्खा. उसको मारकर हिज्री ७२१ ता० १ शअ़्बान [वि० १३७८ भाद्रपद शुक्ल २ = ई० १३२१ ता० २५ ऑगस्ट] को मलिक ग़ाज़ी तख़्तपर बैठा, और उसका लक़ब " सुल्तान

गयासुद्दीन तुग़लक़ शाह " रक्खा गया. हिज्री ७२५ रबीउल्अव्वल [वि० १३८१ फाल्गुन = .ई० १३२५ मार्च] में सुल्तान गयासुद्दीन तुग़लक़ एक मकान तुग़लक़-आबादकी छत्त गिरनेसे, जोकि दिल्लीके पास है, दबकर मारागया. उसके तीन दिन बाद उसका बेटा उलग़ख़ां, याने "मुहम्मदशाह तुग़लक़" तख़्तपर बैठा.

जब राव मालदेव महाराणासे शिकस्त पाकर लाचार हुआ, तो बादशाह मुहम्मद तुग़लक़के पास पुकारू गया. ख्यातिकी पोथियोंमें लिखा है, कि मालदेवके पुकारू जाने पर मुहम्मद तुग़लक़ने खुद मए लश्करके मेवाड़पर चढ़ाई की, और उसने मेवाड़के पूर्वी पहाड़ोंमें होकर, जहां कि तंग रास्तोंने उसकी फ़ौजको बड़ी तक्लीफ़ पहुंचाई, सींगोलीमें पहुंचकर डेरा किया. महाराणा हमीरसिंहका दिल क़िला वापस लेलेनेके सबब पहिलेसे ही बढ़ाहुआ था, और सब राजपूत और प्रजा भी उनके पास हाज़िर होगई थी, उन्होंने एकाएक फ़ौज (१) तय्यार करके ऐसा बहादुरानह हमलह किया, कि बादशाहको शिकस्त देकर क़ैद करलिया. इसी लड़ाईमें मालदेवका पोता हरिदास (२) महाराणा हमीरसिंहके हाथसे मारागया; और मुहम्मद तुग़लक़ (३) तीन महीनेतक क़ैद रहनेके बाद अजमेर, रणथम्भोर और शिवपुरके ज़िले तथा पचास लाख रुपया नक्द व १०० हाथी देकर क़ैदसे छूटा. इस जगहपर महाराणाकी बहादुरी देखनेके क़ाबिल है, कि उन्होंने क़ैदसे छोड़नेके वक्त मुहम्मद तुग़लक़से यह इक़ार नहीं कराया, कि फिर हमलह न करेगा; क्योंकि वह पहिले निश्चय कराचुके थे, कि जो सन्मुख चढ़ाई करेगा, तो मैं चौड़ेमें आकर लड़ूंगा (४).

मालदेवका बेटा वणवीर इक़ार करचुका था, कि मैं महाराणाके ताबेदारोंमें रहकर सेवा करूंगा, इसलिये महाराणाने उसको अपनी राणीका भ्राता समझकर नीमच, रत्नपुर, और खेराड़ उसकी पर्वरिशके लिये जागीरमें दिये; और कहा कि पहिले तुम मुसल्मानोंके नौकर थे, अब हिन्दूके ताबे हो, जो तुम्हारे मज़्हबका शरीक है. चित्तौड़के पहाड़ मेरे बापदादोंके ख़ूनसे तर हुए हैं, और जिस देवीकी मैं पूजा करता हूं, उसके दिये हुए मैंने पीछे लिये हैं. थोड़े ही दिनों पीछे मालदेवके पुत्र वणवीरने भैंसरोड़पर

(१) मेवाड़की प्रजा आधीसे ज़ियादह भील, मीना और मेर वग़ैरह लड़ने वाली क़ौमोंमेंसे है.

(२) टॉड साहिबने इसको मालदेवका बेटा लिखा है, लेकिन यह मालदेवका पोता था.

(३) मुहम्मद तुग़लक़की जगह टॉड साहिबने महमूद ख़ल्जी लिखा है, वह ग़लत है, क्योंकि ख़ल्जी बादशाहोंमें महमूद कोई नहीं हुआ.

(४) यह हाल फ़ार्सी तवारीख़ोंमें नहीं लिखा, कर्नेल् टॉडकी पुस्तक और ख्यातिकी पोथियोंसे लिया है, फ़ार्सी तवारीख़ोंमें मुसल्मानोंकी शिकस्त बहुत कम लिखी है.

हमलह करके उसको मेवाड़में मिलालिया. फिर सब राजपूत लोग अपने वंशके राजाको देखकर खुश हुए, और सबने महाराणा हमीरसिंहको अपना मालिक व सर्दार समझा; क्योंकि उस समयमें केवल महाराणा हमीरसिंह ही इस कुलके रक्षक रहगये थे, पुराने वंशके हाथसे सब राज जाचुके थे. इसी अ़र्सेमें राव मालदेव तो मारागया, और मालदेवकी राणी व महाराणी सोनगरीकी अ़र्ज़ी आनेपर महाराणाने सोनगरीको बुलालिया. राव मालदेवके पास तीन चीज़ें, याने बहरी जोगिनीका दिया हुआ एक खांडा (१), एक खप्पर, और ठूमरेकी माला थी, और इन चीज़ोंको वे लोग करामाती समझते थे. राव मालदेवकी राणीने ये तीनों चीज़ें अपनी लड़कीके साथ महाराणाके पास भेजदीं. उस समय मेवाड़की राजगद्दीकी सेवाके लिये मारवाड़, ढूंढाड़, बूंदी, ग्वालियर, चन्देरी, रायसेन, सीकरी, कालपी और आबू वगै़रहके राजा तनमनसे मौजूद थे. अगर्चि मुसल्मानोंके हमलोंके पहिले भी मेवाड़का राज्य उन्नतिपर था, परन्तु जबसे महाराणा हमीरसिंहने मेवाड़पर दोबारह अधिकार जमाया, उसवक़्तसे दोसौ सालतक इस देशका प्रताप ऐसा प्रकाशित हुआ, कि जैसा कभी न हुआ होगा; क्योंकि उस समयमें इन महाराणाको अपने मुल्ककी हिफ़ाज़तके सिवा दूसरे मुल्कोंपर भी हमलह करनेकी ताक़त हासिल थी. उनके प्रतापकी साक्षी पुरानी .इमारतें देती हैं, जिनके तय्यार करानेमें लाखों रुपये लगे होंगे. यह बात क़ियासमें नहीं आती, कि उनके पास .इमारतें बनवानेको इसक़द्र दौलत, और फ़ौज रखनेको ख़र्च कहांसे मिलता था. उस समयमें मेवाड़के केवल राजा ही धनवान नहीं थे, बल्कि उनकी प्रजा भी ऐसी आसूदह थी, कि जिनकी बनाई हुई बड़ी बड़ी .इमारतें जो अभीतक टूटी फूटी दशामें मौजूद हैं, उनके आसूदह होनेकी गवाही देती हैं. मेवाड़ देशके महाराजाओंकी बहादुरीके निशानात बहुत दूर दूरतक मौजूद हैं.

महाराणा हमीरसिंहने चित्तौड़पर पीछा अधिकार जमानेके बाद खोड़ गांवसे बरवड़ीको बुलाकर, जो देवीका अवतार कहलाती थी, बड़े आदरके साथ चित्तौड़पर रक्खा, और वहां उसके मरजानेके बाद उसकी यादगारमें एक बहुत बड़ा मन्दिर बनवाया, जो अन्नपूर्णाके नामसे अबतक क़िले चित्तौड़पर मौजूद है.

इन महाराणाका देहान्त विक्रमी १४२१ [हि० ७६५ = ई० १३६४] में होना लिखा है.

---

(१) यह खड्ग अभीतक श्री महाराणाके सिलहख़ानहमें मौजूद है, जिसका पूजन प्रतिवर्ष बड़ी धूमधामसे आश्विनकी नवरात्रियोंमें होता है.

अब हम पाठकोंका सन्देह दूर करनेके लिये उन बातोंको लिखते हैं, जिनमें कर्नेल् टॉडकी दर्याफ्त और हमारे लिखनेमें फ़र्क़ है. जो बातें टॉड साहिबने नहीं लिखीं और हमने यहांपर लिखी हैं, उनका बयान करना तो कुछ ज़रूर नहीं, क्योंकि उसवक्त अम्नो आमानका शुरू ज़मानह होनेके सबब वे हालात टॉड साहिबको न मिले होंगे; परन्तु जिन बातोंमें कर्नेल् टॉडके और हमारे लिखनेमें फ़र्क़ है उनको हम यहांपर बयान करते हैं:-

पहिले यह, कि कर्नेल् टॉडने महाराणा हमीरसिंहकी गद्दीनशीनीका संवत् १३५७ लिखा है, और हमारी तहक़ीक़ातसे उनकी गद्दीनशीनीका ज़मानह बहुत अरसे पीछे आता है, जिसका ज़िक्र ऊपर लिखागया है. दूसरे, टॉड साहिबने राव मालदेवकी विधवा बेटीके साथ महाराणा हमीरसिंहकी शादी चित्तौड़गढ़पर होना तहरीर किया है; परन्तु जो सामग्री कि टॉड साहिबको मेवाड़की तवारीख़ लिखनेके वास्ते मिली और जिसका वह हवाला देते हैं, वह सामग्री और उसके सिवा जो हालात हमको मिले, वे सब इसवक्त हमारी आंखोंके सामने मौजूद हैं, परन्तु उनमें महाराणाकी शादी विधवा लड़कीसे होना कहीं भी नहीं पायाजाता. न मालूम टॉड साहिबने किस ज़रीएसे यह बात लिखी. मालूम होता है, कि उन्होंने किसीके ज़बानी कहनेपर भरोसा करलिया; क्योंकि अव्वल तो जिस ज़मानहका यह ज़िक्र है उस ज़मानहसे आज दिनतक राजपूतोंके किसी ख़ानदानमें कहीं नहीं सुना गया, कि विधवाकी शादी हुई हो, बल्कि यहांतक रवाज है, कि यदि किसी लड़कीकी एक जगह सगाई होगई और वह दूसरी जगह ब्याहदीगई, तो उसपर भी मरने मारनेके मौके पेश आये हैं; फिर भला ऐसे ख़ानदानमें, जिसकी मिसाल और राजपूतोंको दीजाती है, ऐसा क्योंकर होसक्ता है. जब सगाइयोंपर ही यह हाल होता है, तो भाटी लोग, जो चन्द्रवंशकी एक बड़ी शाखा हैं, कब चुपचाप रहसक्ते थे ! दूसरे, शादीका चित्तौड़में होना और मालदेवका अपने कुल कुटुम्ब सहित क़िलेमें वास करना भी बुद्धिमें नहीं आसक्ता; क्योंकि अव्वल तो मालदेवको अपने मौरूसी ठिकाने जालौरको ख़ाली छोड़कर चित्तौड़में आबाद होनेसे हमीरसिंह जैसे बहादुर दुश्मनके हाथमें जालौरके चलेजानेका भय था; दूसरे मेवाड़को हमीरसिंहने वीरान करदिया था, इसलिये ख़ुराक वग़ैरह सामान भी मालदेव और उसके कुल आदमियोंके लिये जालौरसे ही आता था, तो भला ऐसी जायदादको उसने ख़ाली किसतरह छोड़ा, और हमीरसिंहने उसपर हमलह क्यों न किया; और तीसरे, जब मालदेव अपने कुटुम्ब व लश्कर समेत चित्तौड़में मौजूद था, तो फिर हमीरसिंहका फ़िरेबसे क़िला लेना

किसतरह क़ियासमें आसक्ता है, क्योंकि वह तो उस वक्त तक्लीफ़की हालतमें थे, और मालदेव आसूदह, और बादशाह उसका सहायक था.

अब बूंदीके इतिहास वंशप्रकाशसे जो हाल ज़ाहिर हुआ वह लिखा जाता है:-

बंबावदेके राजा हालूने जीरण व भाणपुर ज़िलेके कई गांव दबालिये थे. जब हालू अपनी शादीके लिये शिवपुर गया, और उसने विवाहका कंकण भी नहीं खोला था, कि जीरणके अधिकारी जैतसिंह पुंवार व भाणपुरके राजा भरत खीचीने उसपर चढ़ाई करदी. महाराणाने उनकी मददके लिये जैतसिंहके बेटे सुन्दरलालके साथ कुछ फ़ौज हालूपर भेजी, और हालूकी मददके वास्ते बूंदीसे हामा भी आया. इस लड़ाईमें महाराणाका काका विजयराज मारागया, और महाराजकुमार क्षेत्रसिंह घायल हुए. तब खुद महाराणा हमीरसिंहने नाराज़ होकर हालूपर चढ़ाई करदी. यह ख़बर सुनकर हामा बूंदीसे महाराणाके पास आ हाज़िर हुआ, और अर्ज़ किया, कि हुज़ूरको यह नहीं चाहिये था, कि खीची और पुंवारोंकी हिमायत करके हालूपर फ़ौज भेजदी. महाराणाने कहा, कि हमारे काका मारेगये, और महाराजकुमार ज़ख़्मी हुए हैं, इसकी सज़ा हालूको देना उचित है. हामाने अर्ज़ किया, कि विजयराज मेरे हाथसे मारेगये हैं, इसलिये इस कुसूरकी सज़ा तो मुझको देवें; और लड़ना मरना राजपूतोंका ही काम है, इस कुसूरमें मैं अपने बेटे लालसिंहकी बेटीकी शादी (१) महाराजकुमारसे करदूंगा. इसके बाद हामाने अपने बेटे लालसिंहकी बेटीकी सगाई महाराजकुमार क्षेत्रसिंहसे करदी.

महाराणा हमीरसिंहके चार पुत्र खेता, लूणा, खंगार, और वैरीशाल हुए.

---

(१) राजपूतोंमें खूनके एवज़ ज़मीन या बेटी देनेसे सफ़ाई होजाती है.

महाराणा क्षेत्रसिंह.

महाराणा हमीरसिंहका देहान्त होनेके बाद विक्रमी १४२१ [हि० ७६५ = ई० १३६४] में महाराणा क्षेत्रसिंह, जिनका मश्हूर नाम खेता है, गादी विराजे. इनके गद्दी विराजनेके संवत् में सन्देह कम मालूम होता है, क्योंकि गोगूंदा ग्राममें एक मन्दिरके छाबणेपर एक प्रशस्ति खुदी है, उसमें इन महाराणाका नाम लिखा है.

इन महाराणाके पोते महाराणा मोकल, और परपोते महाराणा कुम्भा, और कुम्भाके पुत्र रायमल्लके समयकी प्रशस्तियोंमें लिखा है, कि महाराणा खेताने लड़ाईमें गुजरातके राजा रणमल्लको १०० राजाओं समेत क़ैदखानहमें क़ैद किया. हमारी दानिस्तमें वह ईडरका पहिला राव रणमल्ल होगा, जिसने इनसे लड़ाई की थी; और उन्हीं प्रशस्तियोंमें इनका अमीशाहको फ़त्ह करके गिरिफ़्तार करना लिखा है. हमने बहुतसी फ़ार्सी तवारीख़ोंमें ढूंढा, लेकिन् इस नामका कोई बादशाह उस ज़मानहमें नहीं पाया गया; और प्रशस्तियोंका लेख भी झूठा नहीं होसक्ता, क्योंकि वे उसी ज़मानहके क़रीबकी लिखी हुई हैं. यदि यह ख़याल किया-जावे, कि लिखने वालेने अहमदशाह गुजरातीको बिगाड़कर अमीशाह बना लिया, तो यह असम्भव है, क्योंकि अव्वल तो गुजरात और मालवेकी बादशाहतकी बुन्याद ही उस वक्त़तक नहीं पड़ी थी, और अहमदशाह क्षेत्रसिंहके पोते मोकलके समयमें गुजरातका बादशाह बना था; शायद फ़ीरोज़शाह तुग़लक़के ख़िताबमें अहमदका लफ़्ज़ हो, और उसको बिगाड़कर पंडितोंने अमीशाह बनादिया हो, तो आश्चर्य नहीं; अथवा अफ़ग़ानिस्तान, तुर्किस्तान, व ईरानकी तरफ़ कोई अहमदशाह हुआ हो, और वह गुजरातियोंकी मददके लिये आया हो, क्योंकि उन लोगोंकी आमद रफ़्त सिन्ध देश और गुजरातकी तरफ़ होती रही है; अथवा दिल्लीके बादशाहके शाहज़ादे या भाईका नाम अहमदशाह हो, जिसको बादशाहने सेनापति बनाकर राजपूतानहकी

तरफ़ भेजा होगा; वर्नह बाड़से दक्षिणी हिन्दुस्तानकी तरफ़ तो उस समयमें मुसल्मानोंकी कोई मज्बूत बादशाहत क़ाइम नहीं हुई थी, सिर्फ़ एक बीजापुरकी बादशाहतका बानी अ़लाउद्दीन गांगू हसन बहमनी इन महाराणाके राज्यके बाद दक्षिणका हाकिम बना था. इससे मालूम होता है, कि अमीशाह या अहमदशाह नामका कोई बादशाह उस ज़मानहमें नहीं था, शायद कोई दूसरा नाम बिगड़कर अमीशाह हुआ हो, तो तअ़ज्जुब नहीं; लेकिन् महाराणा क्षेत्रसिंहने अमीशाहको फ़त्ह करके गिरिफ्तार किया, इस बातमें सन्देह नहीं है.

ऊपर बयान कीहुई प्रशस्तियोंमें यह भी लिखा है, कि महाराणा क्षेत्रसिंहने मालवेके राजाको फ़त्ह किया, और हाड़ौतीको भी विजय किया; लेकिन् हमारी समझमें नहीं आता, कि दिल्लीके बादशाह हुमायूंको बाकरोलके मक़ामपर महाराणा क्षेत्रसिंहका शिकस्त देना टॉड साहिबने कहांसे लिखदिया, क्योंकि सन् हिज्री और संवत् विक्रमीको मुताबिक़ करनेसे साबित होता है, कि हुमायूंशाह महाराणा रत्नसिंहके वक़्में तख़्त-नशीन था, जो ज़मानह महाराणा खेतासे क़रीब १५० वर्ष पीछेका है. इससे मालूम होता है, कि टॉड साहिबने किसी शख़्ससे ज़बानी क़िस्सह सुनकर लिखदिया.

अ़लावह इसके टॉड साहिबने लिखा है, कि इन महाराणाने अजमेर और जहाज़-पुरको लल्ला पठानसे लिया, इसमें भी उन्होंने धोखा खाया है, क्योंकि लल्ला पठानको महाराणा क्षेत्रसिंहसे पांचवीं पुश्तमें महाराणा रायमल्लके कुंवर पृथ्वीराजने मारा था, और इसी सबबसे उनको बढ़ावेके तौरपर उड़ना पृथ्वीराज कहते हैं, जिसका हाल बीका-नेरके प्रधान महता नेणसीने २०० वर्ष पहिले बड़ी तहक़ीक़ातके साथ लिखा है, और दूसरी पोथियोंमें भी दर्ज है. सिवा इसके यह बात कहावतके तौरपर हर छोटे बड़ेकी ज़बानपर मश्हूर है- "भाग लला पृथीराज आयो, सिंहके साथ श्याल ब्यायो ".

इन महाराणा (क्षेत्रसिंह) के देहान्तका हाल इस तरहपर है, कि जब हामा हाड़ाके बेटे लालसिंहकी बेटीका विवाह इनके साथ क़रार पाया, तो यह बड़ी धूमधामसे शादी करनेको बूंदीकी ओर सिधारे. यह शादी बूंदीमें हुई थी. रीति पूर्वक विवाह होचुकनेके बाद एक दिन दर्बार होरहा था, उस समय महाराणा खेताने बातें करते समय बारहट बारूकी निस्बत फ़र्माया, कि हमारे पिता महाराणा हमीरसिंहने इनको अपना बारहट बनाया है, और इन्हींकी माता बरवड़ीकी बरकतसे, जोकि देवीका अवतार थी, महाराणाके क़बज़ेमें पीछा चित्तौड़ आया; परन्तु यह बारू हमारा किया हुआ अजाची है. इसपर बारूने कहा, कि मैं राजपूतको मांगनेवाला हूं, और महाराणाके सिवा मुझको कोई राजपूत पृथ्वीपर दिखाई नहीं देता, इसलिये इनके

सिवा दूसरेसे नहीं लेता. यह बात हाड़ा लालसिंहको बहुत नागुवार गुज़री, परन्तु उसवक़ तो मौक़ा न देखकर कुछ न बोला, और जब अपने महलोंमें गया, उससमय बारूको कोई सलाह पूछनेके बहानेसे अपने पास बुलाया, और एक मकानमें बन्द करके कहा, कि हम राजपूत हैं, तुमको हमारे पाससे कुछ लेना चाहिये; यदि नहीं लोगे, तो हम तुमसे समझेंगे. बारू बारहटने देखा, कि इसवक्त मैं इनके क़बज़ेमें हूं, ऐसा न हो कि महाराणा साहिब मेरी मदद करें उससे पहिले ही यह कुछ बेइज़्ज़ती कर-बैठें. यह सोचकर उसने दिलमें मरना ठान लिया, और जवाब दिया, कि आप जो देवें वह मुझे इस शर्तपर लेना मंजूर है, कि जो कुछ मैं देऊं उसको पहिले आप लेवें. यह बात लालसिंहने मंजूर की. तब बारूने एक भाटके लड़केको, जोकि उसकी ख़िझ्मतमें रहता था, कहा कि मैं अपना सिर काटकर तुझे देता हूं, वह हाड़ाको जाकर देदेना; इस सेवाका एवज़ तुझको महाराणा देवेंगे (१). उस लड़केने पहिले तो इन्कार किया, परन्तु आख़रको बारूके समझानेसे मंजूर किया; और बारूने तलवारसे अपना सिर काटडाला. उस लड़के (२) ने बारूके हुक्मके मुवाफ़िक़ उसका मस्तक कपड़ेमें लपेटकर लालसिंहको जादिया. मस्तक देखकर लालसिंहको बड़ी चिन्ता हुई. यह सारा वृत्तान्त उस लड़केने महाराणासे जा कहा. इसपर महाराणाने निहायत नाराज़ होकर बूंदीको घेरलिया, और कई दिनोंतक लड़ाई होती रही. निदान जब बूंदीका क़िला फ़त्ह न हुआ, तो महाराणा ख़ुद क़िलेकी दीवारपर चढ़े, जहांपर वह भीतरी लोगोंके हथ्यारोंसे मारेगये. लालसिंहको भी महाराणाकी सेनाके शूर वीरोंने मारलिया, और हाड़ा वरसिंह अपना प्राण बचाकर भागा. इसवक्त महाराणी हाड़ी महाराणाके साथ सती हुई.

महाराणा खेताके पुत्र १- लाखा; २- भाखर; (जिनकी औलादके भाखरोत सीसोदिया कहलाते हैं); ३- माहप; ४- भुवणसिंह; ५- भूचण (जिनकी औलादके भूचरोत कहलाते हैं); ६- सलखा (जिनकी औलादके सलखावत कहलाते हैं); और ७- सखर (जिनकी औलादके सखरावत हैं); और खातण पासबानके पेटसे ८- चाचा, व ९- मेरा थे.

पनवाड़ गांव, जो हालमें जयपुरके क़बज़ेमें है, इन महाराणाने श्री एकलिङ्गेश्वरके

---

(१) मशहूर है, कि उस भाटके लड़केको महाराणा लाखाने बारू बारहटके कहनेके मुताबिक़ चीकलवास गांव दिया.

(२) इस लड़केकी औलादके भाट उदयपुरके नज़्दीक चीकलवास गांवमें मौजूद हैं.

भेट किया था. इन महाराणाने ईडरके राजा रणमल्लको क़ैद करके उसके बेटेको गद्दीनशीन किया, उसका हाल श्री एकलिङ्गजीके मन्दिरके दक्षिणद्वारकी प्रशस्तिके तीसवें श्लोकमें लिखा है. महाराणा खेताने बागड़ तक अपना क़बज़ह करलिया था.

——०००——

महाराणा लक्षसिंह, जिनका नाम लाखा मश्हूर है, विक्रमी १४३९ [हि० ७८४ = .ई० १३८२] में गद्दीनशीन हुए. जब महाराणा क्षेत्रसिंह बूंदीमें मारेगये उसवक्त बूंदीके कुल हाड़ा लोग तितर बितर होगये थे; परन्तु हाड़ोंका उसमें कोई ख़ास कुसूर नहीं था, क्योंकि बारू बारहटने एक छोटीसी बातपर अपना सिर काटडाला, और इसीपर महाराणा खेताने लड़ाई शुरू करदी. यह एक साधारण बात है, कि जहां लड़ाई होती है वहां दोनों तरफ़के आदमी मारे जाते हैं. इस संग्राममें महाराणा क्षेत्रसिंह काम आये, और हाड़ा लालसिंह भी मारागया. तब हामा हाड़ाका पुत्र बरसिंह और लालसिंहका पुत्र जैतसिंह और नौब्रह्म, ये तीनों शख़्स महाराणा लाखाके पास हाज़िर हुए, और अर्ज़ किया, कि इसमें हमारा कुछ कुसूर तो है नहीं, आगे आप मालिक हैं, आपके लिये हमारे सिर हाज़िर हैं, आपकी मर्ज़ी हो दुश्मनोंसे लड़ाकर लेवें, अथवा मर्ज़ी हो खुद लेवें. इस अर्ज़पर महाराणा लाखाने बूंदीका पर्गनह पीछा उनको देदिया; और इस वैरको मिटानेके लिये बरसिंह, जैतसिंह और नौब्रह्मने अपनी व अपने भाइयोंकी बारह लड़कियां महाराणाके भाइयों और सर्दारोंको व्याहदीं, और जलन्धरी, धनवाड़ा, तथा बाजणा वगैरह चौबीस गांव जिहेज़में दिये. फिर इन महाराणाने मारवाड़की तरफ़के पहाड़ी ज़िलोंको, जोकि इनसे फिरे हुए थे, पीछा अपनी हुकूमतमें शामिल किया, और बैराटके क़िलेको गिराकर बदनौर आबाद किया. इन महाराणाके समयमें आबादी और इमारतोंकी बड़ी तरक़्क़ी हुई, और मुल्ककी आमदनीके सिवा एक बड़ी आमद यह हुई, कि जावरमें चांदी और सीसेकी खान (१) निकली.

जबकि इन महाराणापर दिल्लीका बादशाह गयासुद्दीन तुग़लक़ चढ़कर आया,

(१) अब यह खान बहुत दिनोंसे बन्द है.

और बदनौरपर लड़ाई हुई, तो उस लड़ाईमें बादशाह शिकस्त पाकर भागा, और यह शूर वीर महाराणा उसका पीछा करते हुए गयातक चलेगये, और ग़यासुद्दीनसे गयाका कर छुड़ाया. इसी अरसेमें उन्होंने नागरचालके मालिक किसी सांखला राजपूतको भी मक़ाम आंबेरमें पराजय किया. इस हालका संवत् न तो कर्नेल् टॉडने लिखा, और न हमको कहीं मिला, लेकिन् इस मारिकेका ज़िक्र उनके पीछेकी प्रशस्तियोंमें और पोथियोंमें लिखा है. यह मारिका कर्नेल् टॉडने मुहम्मदशाह लोदी और उक्त महाराणासे होना लिखा है, लेकिन् जहांतक हम दर्याफ़्त करसके, हमको मुहम्मदशाह नामके किसी लोदीका दिल्लीके तख़्तपर बैठना मालूम नहीं हुआ.

जब महाराणा लाखाकी माता सोलंखिनी द्वारिकानाथके दर्शनोंको पधारीं, उससमय काठियावाड़में पहुंचते ही काबोंने, जो एक लुटेरी क़ौम है, मेवाड़की फ़ौजको घेरलिया, और लड़ाई होनेलगी; परन्तु काबोंके घेरेको मेवाड़ी सर्दार न हटासके, उस मौक़ेपर शार्दूलगढ़के राव सिंह डोडियाने ग़नीमतका वक़्त समझकर अपनी फ़ौज समेत आकर मेवाड़ी लश्करकी मदद की, और काबोंके साथ बड़ी भारी लड़ाई हुई. इस लड़ाईमें राव सिंहके साथ उसके दोनों बेटे कालू व धवल भी मौजूद थे. लड़ाईमें राव सिंह तो मारागया, और उसके पुत्र कालू व धवलने मेवाड़ी फ़ौज समेत काबोंपर फ़त्ह पाई, और माजी सोलंखिनीको अपने ठिकाने शार्दूलगढ़में मिह्मान करके घायलोंका इलाज करवाया; फिर दोनों भाई बाईजीराज (१) सोलंखिनीको मेवाड़की सीमातक पहुंचाकर अपने ठिकानेको लौटगये. बाईजीराजने यह सब हालात अपने पुत्र महाराणा लाखासे कहे. इसपर महाराणाने उनकी बहुत बड़ी सेवा समझ धवलको पत्र भेजकर बुलाया, और रत्नगढ़, नंदराय और मसौदा वग़ैरह पांच लाखकी जागीर उनको दी, और विक्रमी १४४४ [हि० ७८९ = ई० १३८७] में उन्होंने डोडियोंको अपना उमराव बनाया. जब दूसरी बार यह बाईजीराज सोलंखिनी गयाजीको सिधारीं तब भी महाराणाने धवल डोडियाको बहुतसी फ़ौज समेत उनके साथ भेजा. इसवक़्त छप्पर घाटाके हाकिम शेरख़ांसे लड़ाई हुई, जिसमें धवलने शेरख़ांपर फ़त्ह पाई, और बाईजीराजको गयाका तीर्थ कराकर शेरख़ांका लवाज़िमह छीन लाये, जो महाराणाके नज़ किया

सर्दारगढ़की तवारीख़में लिखा है, कि डोडिया धवल अपने बेटे हरू सहित महाराणाके साथ बदनौरकी लड़ाईमें ग़यासुद्दीन तुग़लक़से लड़कर मारागया. यदि ऐसा हुआ हो, तो ग़यासुद्दीनकी लड़ाईका जो ज़िक्र पहिले किया गया, वह धवलकी ऊपर लिखी हुई कार्रवाइयोंके बाद हुआ होगा.

---

(१) राज्य करनेवालेकी माताको बाईजीराज कहते हैं.

अब हम महाराणा लाखाके छोटे बेटे मोकलको राज्य मिलनेका कारण लिखते हैं:-

मारवाड़में मंडोवरके राव चूंडाने अपने बड़े पुत्र रणमल्लको किसी सबबसे नाराज़ होकर निकालदिया था. उसवक्त रणमल्ल मए पांच सौ सवारोंके चित्तौड़में महाराणा लाखाके पास आकर नौकर रहा. यह एक अच्छा शूर वीर राजपूत था. एक दिनका ज़िक्र है, कि किसी शख़्सकी बरात आती हुई देखकर महाराणाने रणमल्लसे कहा, कि जवान आदमियोंकी शादी होती है, हम बूढ़ोंकी शादी कौन करे (१). इस बातको रणमल्लने तो हंसी समझकर कुछ भी न कहा, परन्तु महाराणाके बड़े कुंवर चूंडा, जोकि पूरे पिताभक्त थे, इस बातको सुनकर सहन न करसके, और उन्होंने महाराणासे अर्ज़ किया, कि रणमल्लकी बहिन बड़ी है उसके साथ हुज़ूर विवाह करें. इसपर महाराणाने फ़र्माया, कि हमने तो हंसीके तौरपर यह बात कही थी, हमारी अवस्था और हमारी इच्छा बिल्कुल विवाह करनेकी नहीं है; परन्तु चूंडाने हठ करके महाराणाको शादी करना मन्जूर कराया. इसके बाद उन्हों (चूंडा) ने रणमल्लसे कहा, कि आपने अपने डेरेपर हमको कभी गोठ नहीं जिमाई. रणमल्लने चूंडाके मिहर्बानी और मुहब्बत भरे हुए वचनोंको सुनकर गोठ तय्यार करवाई, और उक्त राजकुमार अपने भाइयों व सर्दारों समेत रणमल्लके यहां जीमनेको गये. भोजन करते समय चूंडाने रणमल्लसे कहा, कि तुम्हारी बहिनकी शादी महाराणाके साथ करदो. तब रणमल्लने कहा, कि महाराणाके साथ शादी करनेमें हमारा सब तरहसे बड़प्पन है, परन्तु वे उम्रमें ज़ियादह हैं, इस सबबसे शादी नहीं करसक्ता, अल्बत्तह आपके साथ शादी करना मंजूर है. इसपर चूंडाने रणमल्लको बहुत कुछ समझाया, परन्तु उसने इन्कार किया; तब चूंडाने कहा, कि रणमल्लके पास यदि कोई चारण हो तो इनको समझावे. रणमल्लके पास चांदण नामी एक खड़िया गोत्र चारण रहता था, वह बोल उठा, कि मैं हाज़िर हूं. चूंडाने उससे कहा, कि तुम्हारे ठाकुरको समझाओ. इसपर चांदणने कहा, कि महाराणाके उम्रमें ज़ियादह होनेकी तो कुछ चिन्ता नहीं, परन्तु राजा लोगोंमें क़दीमसे यह दस्तूर है, कि बड़ा बेटा राज्यका मालिक हो, और छोटेको नौकरी करनेपर खानेको मिले, सो ऐसी हालतमें कदाचित् हमारी बाईके लड़का पैदा हो, तो इसका क्या प्रबन्ध कियाजावे.

चूंडाने कहा, कि यदि तुम्हारी बाईके लड़का उत्पन्न हो, तो वह चित्तौड़का मालिक होगा, और मैं उसका नौकर रहूंगा. इसपर चांदणने कहा, कि आपसे चित्तौड़का राज्य

(१) बाज़ पोथियोंमें लिखा है, कि रणमल्लने अपनी बहिनकी शादी कुंवर चूंडाके साथ करनेकी दर्ख्वास्त की थी, जिसपर चूंडाने इज्जतके साथ उस राजकुमारीसे अपने पिताकी शादी करवाई.

नहीं छोड़ा जायेगा. तब चूंडाने शपथ खाकर चांदणकी तसल्ली करदी. चांदणने जाकर रणमल्लको समझाया और कहा, कि पुराना चन्दन नये चन्दनसे हमेशह उत्तम होता है. चांदणके इस प्रकार समझाने और चूंडाके इक़ारसे गद्दीका वारिस अपने भानूजेका होना सुनकर रणमल्लने अपनी बहिनकी शादी महाराणाके साथ करना मन्जूर करलिया, और दस्तूरके मुवाफ़िक़ सगाईके नारियल महाराणाको झेलादिये; और साथही इसके चूंडासे महाराणाके सामने इस बातका इक़ारनामा भी लिखालिया, कि यदि रणमल्लके भानूजा पैदा हो, तो मैं (चूंडा) राज्य छोड़दूंगा. महाराणाकी शादी राव चूंडाकी बेटी और रणमल्लकी बहिन हंसबाई (१) से होनेके १३ महीने बाद उसके पेटसे मोकल पैदा हुए, जो अपने पिताके बाद राज्य गद्दीपर बैठे.

महाराणा लाखा राज्यको तरक़ी देनेवाले और अपनी प्रजाको आराम पहुंचाने वाले हुए. इनके हाथसे बहुतसी बड़ी बड़ी इमारतें फिर तय्यार हुईं जो अल्लाउद्दीन खल्जीने गिरादी थीं और बहुतसे तालाब, बन्ध, और मज्बूत क़िले तय्यार हुए. ब्रह्माका एक मन्दिर जो बड़ा आलीशान और लाखों रुपयोंकी लागतसे तय्यार हुआ है, चित्तौड़पर अबतक मौजूद है; न मालूम यह मन्दिर (२) अलाउद्दीनके हमलेसे क्योंकर बचा. पीछोला तालाव भी जोकि इस तरफ़ राजधानी उदयपुरकी रौनक़का एक खास मकाम है, इन्हीं महाराणाके समयमें किसी वणजारेने बनवाया था. इन महाराणाके बहुतसे सन्तान हुए. इनके बड़े बेटे चूंडा थे, जिनके चूंडावत राजपूत हैं; २-राघवदेव, जो पितृ (पूर्वज) के नामसे सीसोदियोंमें पूजे जाते हैं, और जिनकी छत्री अन्नपूर्णाके मन्दिरके पास चित्तौड़में मौजूद है; ३-अज्जा, जिनके सारंगदेवोत हैं; ४-दूल्हा, जिनके दूल्हावत; ५-डूंगरसिंह, जिनके मांडावत; ६-गजसिंह; जिनके गजसिंहोत; ७-लूणा, जिनके लूणावत; ८-मोकल; और ९-बाघसिंह हुए.
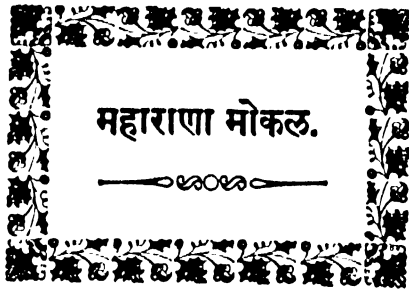
इन महाराणाकी ऊपर लिखी हुई औलादका हाल सर्दारोंके हालातमें लिखा-जावेगा.

---

(१) टॉड साहिबने अपनी तवारीख़में हंसबाईको रणमल्लकी बेटी होना लिखा है, परन्तु मारवाड़की एक तवारीख़से. जो नेणसी महताने दो सौ वर्ष पहिले लिखी है, रणमल्लकी बहिन होना साबित है, और दूसरी तवारीख़ोंमें भी ऐसा ही लिखा देखनेसे हमने हंसबाईको रणमल्लकी बहिन लिखा है.

(२) यह मन्दिर कुम्भश्यामजीके मन्दिरकी पूर्व तरफ़ समिद्धेश्वर महादेवका है, जिसको टॉड-साहिबने ब्रह्माका लिखा है.

विक्रमी १४५४ [हि० ७९९ = ई० १३९७] में इन महाराणाका देहान्त हुआ. इन्होंने सूर्य ग्रहणमें पीपली ग्राम झोटिंग ब्राह्मणको दिया था, जिसकी औलादके क़बज़ेमें अब चित्तौड़के पास ग्राम घाघसा और सामता हैं, पीपली दूसरी क़ौमके ब्राह्मणोंके क़बज़ेमें है. इन्हीं महाराणाने धनेश्वर भट्टको चित्तौड़के पास ग्राम पंचदेवलां दिया था, परन्तु अब वह ग्राम उसकी संतानके पास नहीं है, किन्तु उसी जातिके दूसरे गोत्र वाले दसोरा ब्राह्मणोंके क़बज़ेमें है.

महाराणा मोकल.
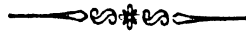
पहिले बयान होचुका है, कि महाराणा लाखाके युवराज पुत्र चूंडाने उक्त महाराणाकी शादी रणमल्लकी बहिनके साथ होनेके समय अपने छोटे भाईको राज्य देनेका इक़ार महाराणाके सामने रणमल्लसे करलिया था; उसको चूंडाने इस मौकेपर पूरा करदिया. सूर्यवंशी राजपूतोंमें यह दूसरा ही मौका है, कि युवराजने पिताकी भक्तिके कारण बापके हुक्मसे राज्यको छोड़दिया; क्योंकि या तो पहिली बार राजा दशरथके पुत्र महाराजा रामचन्द्रने ही ऐसा किया था, या दूसरी बार उसी कुलमें चूंडाने किया.

जब महाराणा लाखाका वैकुण्ठवास हुआ, उस समय रणमल्लकी बहिन हंसबाईने चूंडासे कहा, कि मैं तो अब सती होती हूं, तुमने मेरे बेटे मोकलके वास्ते कौनसा पर्गनह तज्वीज़ किया है ! इसपर चूंडाने कहा, कि हे माता आपका पुत्र तो मेवाड़का मालिक है, और मैं उसका नौकर हूं; और यह भी कहा, कि आपको सती नहीं होना चाहिये, आप तो बाईजीराज (१) बनकर रहें वग़ैरह. निदान इस तरह बहुत कुछ समझाने पर महाराणी राठौड़ने सती होना मौकूफ़ रक्खा, और चूंडाकी बहुतसी तारीफ़ करके कहा, कि जैसा हक़ पिताके भक्त और सच्चे राजपूतोंका होता है वैसा ही तुमने निभाया, आजसे सनदों तथा पर्वानोंपर जो भाला महाराणा करते थे वह तुम्हारे हाथसे होगा (२). इसके बाद चूंडाने महाराणा मोकलका हाथ पकड़कर विक्रमी १४५४ (३)

(१) राज्य करे उसकी माताको बाईजीराज कहते हैं.

(२) उसी समयसे तांबापत्र और पर्वानोंपर चूंडा अपने हाथसे भालेका चिन्ह करनेलगा, और महाराणा भालेके नीचे अपने हाथसे अपना नाम लिखकर पर्वाने आदिको मन्जूर करते रहे. इसके बाद महाराणा अव्वल संग्रामसिंह (सांगा) ने मुसल्मान बादशाहोंके रवाजके मुवाफ़िक़ सही लिखनेका रवाज जारी किया.

(३) यह संवत् ख्यातिकी पोथियों तथा कर्नेल् टॉड साहिबकी किताबमें लिखा है, लेकिन हमारे विचारसे विक्रमी १४६० के बाद इनकी गद्दी नशीनी होना चाहिये, क्योंकि विक्रमी १४५१ में तो

[हि० ७९९ = ई० १३९७] में गादीपर बिठाया, और राज्यतिलक देकर सबसे पहिले आपने नज़ की, जिसके पीछे सब छोटे भाइयोंने दस्तूरके मुवाफ़िक़ नज़ें पेश कीं. फिर महाराणा मोकल व बाईजीराजने चूंडाको अपने राज्यके कुल मुसाहिबोंमें मुख्य मुसाहिब होनेकी सनद देकर रियासतका सब काम उनके सुपुर्द करदिया.

चूंडा बहुत लाइक़ और बहादुर सर्दार था, वह इन्साफ़के साथ अपनी रअ़य्यतको हर तरहसे आराममें रखता था, और उसने इन्तिज़ाम ऐसा अच्छा किया, कि जिससे राज्य और प्रजा दोनोंको फ़ायदह पहुंचा. कुल राज्यका काम चूंडाके इख़्तियारमें होनेके सबब कितने ही लोग उससे नाराज़ रहते थे, क्योंकि यह एक आम क़ाइदहकी बात है, कि राज्यमें जो नालाइक़ आदमी होते हैं वे उत्तम प्रबन्ध करनेवाले शख़्ससे नाराज़ रहा ही करते हैं. ऐसे आदमियोंने महाराणा मोकल और बाईजीराजके कान भरना शुरू किया, कि चूंडाने अपनी सौगन्ध और वचन तो पूरा करदिया, परन्तु अब ख़ुद राज्य करना चाहता है. जोकि औरतोंमें मर्दोंकी अपेक्षा बुद्धि कम होती है, बाईजीराजने लोगोंकी बहकावटपर अमल करके चूंडाको कहलाया, कि अगर तुम मोकलके नौकर हो, तो मेवाड़से बाहिर, जहां जो चाहे, चले जाओ, और यदि राज्य चाहते हो, तो मैं अपने बेटेको लेकर तुम कहो जहां चली जाऊं. चूंडा तो सच्चा, साफ़, और धर्मवाला था, उसने कहा कि मैं तो अभी जाता हूं, परन्तु मेरे भाई और मालिक मोकलकी हिफ़ाज़त और मुल्ककी निगहबानी अच्छी तरहसे रखना, ऐसा न हो कि राज्यकी बर्बादी होजावे. यह कहकर आप अपने तमाम छोटे भाइयों समेत मेवाड़से चलदिया, सिर्फ़ राघवदेवको महाराणाकी हिफ़ाज़तके लिये यहां छोड़ा. चूंडा यहांसे रवानह होकर मांडूके बादशाह दिलावरख़ां (१) के पास पहुंचा. वहांपर बादशाहने उसकी बहुत ख़ातिरदारी की, और कई पर्गने उसको ख़र्चके लिये दिये.

चूंडाके चलेजाने बाद मेवाड़का कुल काम रणमल्लके सुपुर्द हुआ. रणमल्लने रियासतकी कुल फ़ौजका अधिकारी राठौड़ोंको बनाया, और कुछ पर्गने भी मारवाड़के राठौड़ोंको जागीरमें देदिये, याने महाराणाको नाबालिग़ देखकर राज्यपर सब तरहसे

राव चूंडाको ईंदा राजपूतोंसे मंडोवर मिला, और उन दिनों उसका बेटा रणमल्ल भी कमउम्र था, और मंडोवरमें राज जमानेको भी कई वर्षोंका अरसा चाहिये; उसके बाद रणमल्लका चित्तौड़में नौकर होना, जिसके बाद उसकी बहिन हंसबाईकी शादी महाराणा लाखाके साथ होना, जिसके गर्भसे महाराणा मोकल पैदा हुए. इन बातोंके लिये कमसे कम नौ दस वर्षका अरसह चाहिये.

(१) इसका अस्ली नाम हुसैन था.

अपना क़बज़ा जमालिया, और महाराणा मोकलने जवान होनेपर भी उसको अपना विश्वासपात्र मामूं जानकर बदस्तूर मुसाहिब बना रक्खा.

जब मंडोवरका राव चूंडा विक्रमी १४६७ [हि० ८१२ = ई० १४१०] में मारागया और उसके बेटोंमें राज्यतिलकके समय झगड़ा पैदा हुआ, उस समय चूंडाके छोटे बेटे रणधीरने अपनेसे बड़े और रणमल्लसे छोटे भाई सत्ताको कहा, कि यदि आपको राज्य-तिलक करदियाजावे, तो आप हमको क्या देंगे ? इसपर सत्ताने कहा कि, हक़ तो रण-मल्लका है, परन्तु यदि तुम मदद करके ऐसा करो, तो आधा मुल्क तुमको देदूंगा. रणधीरने, जो कि बड़ा बहादुर था, सत्ताको राज्यतिलक देदिया. इसपर रणमल्ल (जो गादीका वारिस था) नाराज़ होकर निकला और महाराणाके पास चित्तौड़ चलाआया, और सत्ता मंडोवरका राज्य करने लगा. सत्ताके लड़का नरवद, और रणधीरके नापा हुआ. कुंवर नरवदने यह सोचकर कि रणधीर आधा हिस्सह किस बातका लेता है, एक दिन किसी आमदनीके सीगेसे आई हुई रुपयोंकी थैली अकेलेने ही रखली. इसपर आपसमें तक्रार बढ़ी. नरवद पालीवाले सोनगरोंका भानूजा, और नापा उनका जमाई था. नरवदने किसी छोकरीको सिखाकर नापाको ज़हर दिलादिया, जिससे वह तो मरगया, और अब रणधीरके मारनेकी फ़िक्रमें लगा. रणधीरको इस बातकी ख़बर नहीं थी, परन्तु दयाल नामी एक मोदीने उसको इस बातकी इत्तिला करदी. यह सुनकर रणधीर अपने राजपूतों समेत वहांसे निकलकर चित्तौड़को चला आया; और रणमल्लसे मिलकर कहा कि चलो तुमको मंडोवरका राज्य दिलाऊं. इसपर रणमल्लने महाराणा मोकलसे अर्ज़ किया, और उन्होंने अपनी फ़ौज साथ लेकर रणमल्लकी मददके वास्ते मंडोवरकी तरफ़ कूच किया. यों तो चूंडाके तमाम बेटे महाराणाके मामूं लगते थे, परन्तु रणमल्लपर उनकी ज़ियादह मुहब्बत थी, कारण यह कि वह उनका नौकर था और कई ख़ैरख्वाहियां भी उसने की थीं, और दूसरे मंडोवरका हक़दार भी वही था; इसलिये महाराणाने रणमल्लकी ही मदद की. मंडोवरमें महाराणाकी फ़ौजके आनेका हाल सुनकर नरवदने अपने पिता सत्तासे कहा, कि यह दुश्मनी मैंने खड़ी की है, इसलिये इसका जवाब मैं ही दूंगा. यह कहकर उसने अपने राजपूतों समेत महाराणाकी फ़ौजका सामना किया, जिसमें चौहथ ईंदा और जीवा ईंदा वग़ैरह बहुतसे राजपूत मारेगये, और नरवद घायल हुआ; उसकी एक आंख तलवारके घावसे फूट गई. फिर महाराणा मोकल रणमल्लको राज्यतिलक (१) देकर सत्ता व नरवदको अपने साथ चित्तौड़ लेआये.

(१) मुन्शी देवीप्रसादकी रायसे मालूम हुआ, कि विक्रमी १४७५ [हि० ८२१ = ई० १४१८] में रणमल्ल मंडोवरका मालिक बना था.

सत्ता तो कुछ अरसे बाद चित्तौड़ ही में मरगया, और नरवदको महाराणा मोकलने बड़ी मुहब्बतके साथ अपने पास रखकर कायलाणाका पट्टा एक लाख रुपयोंकी आमदका जागीरमें दिया.

जब नरवद मंडोवरपर क़ाबिज़ था उन दिनों रूण गांवके मालिक सींहड़ा सांखलाने अपनी बेटी सुपियारदेकी शादी नरवदके साथ करना कुबूल किया था, परन्तु उसके मंडोवरसे ख़ारिज होजाने बाद रूणके सांखलाने सुपियारदेका विवाह सींधलोंमेंसे जैतारणके नरसिंह बीदावतके साथ करदिया. एक दिनका ज़िक्र है, कि नरवदने महाराणा मोकलके सामने लम्बा सांस भरा. उसपर महाराणाने फ़र्माया कि यह श्वास आपने मंडोवरके वास्ते लिया, या किसी दूसरी तक्लीफ़के सबबसे. उसने कहा, कि मंडोवर तो मेरे ही घरमें है, परन्तु मेरी मांग सांखलोंने नरसिंह बीदावत जैतारण वालेको व्याहदी उसका मुझको बड़ा रंज है. यह सुनकर महाराणाने सांखलोंको कहलाया, कि नरवदकी मांग देनी चाहिये. तब सांखलोंने डरकर अर्ज़ कराई, कि सुपियारदेकी तो शादी होचुकी, अब उसकी छोटी बहिनको हम नरवदसे व्याह देंगे. महाराणाने यह बात नरवदसे कही. तब नरवदने अर्ज़ की, कि यदि सुपियारदे आरती करे, तो उसकी छोटी बहिनसे शादी करूं. महाराणाके फ़र्मानेसे इस शर्तको भी सांखलोंने मंजूर करलिया, और यहांसे नरवदकी बरात ब्याहनेको चढ़ी; परन्तु यह शर्त क़रार पानेके वक्त सुपियारदेका ख़ाविन्द नरसिंह सींधल महाराणाके दर्बारमें मौजूद था, वह आपसकी तानादिहीसे तुरन्त ही सवार होकर जैतारण पहुंचा, और उधर सांखले भी सुपियारदेको लेनेके लिये आये. नरसिंहने उसके भेजनेसे इन्कार किया, जिसपर सुपियारदेने बहुत कुछ आजिज़ी की, और अख़ीरमें नतीजह यह हुआ, कि नरसिंहने सुपियारदेसे आरती न करनेका पूरा इक़रार लेकर रुख़्सत दी. सुपियारदे अपने पीहर रूणमें पहुंची, और नरवदकी बरात भी वहां आई. सांखलोंने सुपियारदेको नरवदकी आरती करनेके लिये कहा, परन्तु उसने इन्कार किया. तब सांखलोंने कहा, कि बाई तेरे पतिको जाकर कौन कहता है, इस वक़्त अगर तू आरती न करेगी, तो नरवद हमको मारेगा. पीहर वालोंके कहनेसे सुपियारदेने नरवदकी, आरती की. उस मौक़ेपर नरसिंह सींधलका नाई वहां मौजूद था, उसने जाकर यह हाल नरसिंहसे कहदिया. यहांपर सुपियारदेने नरवरदसे कहलाया, कि मेरे आरती करनेकी ख़बर मेरे पतिको मिलेगी, तो मुझे बड़ी तक्लीफ़ होगी. नरवदने कहा, कि अगर तेरा पति तुझको तक्लीफ़ देवे, तो मुझे लिखना, मैं उसकी ख़बर लूंगा. दैवयोगसे वैसा ही हुआ, कि जब सुपियारदे जैतारण गई, तो उसके पतिने पलंगका पाया उसकी छातीपर रखकर दूसरी औरतको पलंगपर

सुलाया. सुपियारदेने बहुतसी आजिज़ी की, लेकिन् उसने एक भी न सुनी. निदान यह ख़बर सुपियारदेकी सासने सुनी, और वह उसको छुड़ा लेगई. सुपियारदेने यह सारा हाल नरवदको लिख भेजा. नरवदने काग़ज़ बांचकर, एक रथमें अच्छे तेज़ बैल जुतवाये, और काग़ज़ लाने वाले आदमी समेत आप उसमें बैठकर जैतारणकी तरफ़ रवानह हुआ. जब गांवके नज़्दीक पहुंचा, तो उसने उसी आदमीके हाथ मर्दानी पोशाक भेजकर सुपियारदेको अपने आनेकी ख़बर दी. उस वक़्त तमाम सींधल लोग रावलोंका तमाशा देखनेको गये थे. सुपियारदे मर्दाने वस्त्र पहिनकर नरवदके पास चली आई. जब पीछेसे सींधलोंको इस बातकी ख़बर हुई, तो ये सब लोग नरवदके पीछे चढ़ दौड़े. आगे चलकर रास्तेमें एक नदी ढावों पूर बह रही थी, उसको देखकर सुपियारदेने नरवदसे कहा, कि सींधलोंके हाथ आनेसे तो नदीमें डूब मरना बिह्तर है. यह सुनकर नरवदने बैलोंको नदीमें डालदिया, बैल बड़े तेज़ और ज़ोरावर थे, तुरन्त ही पार निकल गये. सींधलोंने भी उसके पीछे अपने घोड़े नदीमें डाले, परन्तु नरवद तो सूर्य उदय होते होते कायलाणे पहुंच गया, और उसका भतीजा आसकरण, जो ख़बरके लिये आया था, सींधलोंसे मुक़ाबलह होनेपर काम आया. यह बात महाराणा मोकलको मालूम हुई, तब उन्होंने नरवदको कायलाणेसे चित्तौड़ बुला लिया, और सींधलोंको धमकाया, कि यह तुम्हारी औरतको लेगया, और तुमने इसके भतीजेको मारडाला. अब फ़साद नहीं करना चाहिये.

यहांपर इस हालके लिखनेसे हमारा मत्लब यह था, कि गद्दीसे ख़ारिज होजानेके सबब नरवदकी मांग सांखलोंने दूसरेको ब्याहदी, उसपर महाराणा मोकलने नरवदको मदद देकर उसकी शर्मिन्दगी दूर करनेके लिये सींहड़की दूसरी लड़कीके साथ शादी करवाई, जिसपर भी इतना फ़साद हुआ, तो भला कर्नेल् टॉडका यह बयान कब ख़यालमें आसक्ता है, कि महाराणा हमीरसिंहके साथ मालदेवकी विधवा लड़की ब्याहीगई.

अब हम यहांसे महाराणाके बाक़ी तवारीख़ी हालात लिखते हैं:-

जब कि नागौरका हाकिम फ़ीरोज़ख़ां, जिसको ख़ुदमुख़्तार रईस कहना चाहिये, एक बड़ी फ़ौज तय्यार करके फ़सादके इरादेपर रवानह हुआ, तो यह ख़बर सुनकर महाराणा मोकल भी अपनी सेना समेत मुक़ाबलेके लिये चढ़े, और गांव जोताईके चौगानमें मक़ाम किया, जहां रातके वक़् फ़ीरोज़ख़ां अपनी फ़ौजके साथ बड़ी दूरसे धावा करके मेवाड़की फ़ौजपर आगिरा. दोनों तरफ़के बहादुरोंने बड़ी वीरताके साथ लड़ाई की. इस लड़ाईमें महाराणा मोकलकी सवारीका घोड़ा मारागया. यह देखकर डोडिया धवलके पोते सबलसिंहने अपना घोड़ा महाराणाके नज़ करदिया,

और आप बड़ी बहादुरीके साथ मारागया. महाराणा मोकल भागकर चित्तौड़ आये, और फ़त्ह फ़ीरोज़खांको नसीब हुई. इस लड़ाईमें महाराणाके ३००० आदमी मारेगये. जब फ़ीरोज़खां फ़त्ह पाकर निशान उड़ाता हुआ, और कुल मेवाड़को लूटता हुआ मालवेकी तरफ़ चला, तो महाराणाको इस बातकी बड़ी शर्मिन्दगी पैदा हुई, और उन्होंने फिर अपने बहादुर राजपूतोंको एकट्ठा करके फ़ीरोज़खांकी तरफ़ कूच किया. फ़ीरोज़खां भी यह बात सुनकर सादड़ी और प्रतापगढ़के पहाड़ोंकी तरफ़ झुका, और जावर मक़ामपर, जो उदयपुरसे दक्षिण तरफ़ क़रीब दस कोसके फ़ासिलेपर है, दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबलह हुआ. यहांपर फ़ीरोज़खांकी फ़ौजका वैसा ही हाल हुआ जैसाकि जोताई मक़ामपर मेवाड़की फ़ौजका हुआ था. अगर्चि तारीख़ फ़िरिश्तह वग़ैरह मुसल्मानोंकी तवारीख़ोंमें इसका ज़िक्रतक नहीं लिखा है, परन्तु इसकी साक्षी चित्तौड़पर महाराणा मोकलके बनाये हुए समिद्धेश्वर महादेवके मन्दिरकी प्रशस्ति देती है.

विक्रमी १४८९ [हि० ८३५ = .ई० १४३२] में गुजरातका बादशाह अहमदशाह बड़ी फ़ौज लेकर मुल्कगीरीके लिये निकला, और नागौर व मेवाड़की तरफ़ झुका. उसने पहिले डूंगरपुर वालोंसे पेशकश (नज़ानह) लिया, और बाद उसके देलवाड़े और कैलवाड़ेको लूटता हुआ मारवाड़की तरफ़ चला. यह हाल सुनकर महाराणा मोकलने अपनी फ़ौज एकट्ठी करके अहमदशाहपर धावा करनेके लिये चढ़ाई की. उस समय महाराणा खेताकी पासबान खातणके बेटे चाचा और मेरा भी मौजूद थे, जो बड़े बहादुर और एक फ़ौजी हिस्सहके मुख़्तार थे. महाराणाने हाड़ा मालदेवके कहनेसे उनको एक वृक्षकी तरफ़ इशारह करके पूछा, कि काकाजी इस वृक्षका क्या नाम है ? मालदेवने तो हंसीके तौरपर कहा था, क्योंकि चाचा और मेरा दोनों खातणके पेटसे थे, और वृक्षको खाती ही पहिचानते हैं, परन्तु महाराणा इस बातको नहीं समझे. यह सुनते ही चाचा और मेरा दोनोंके कलेजेमें आग लग उठी.

विक्रमी १४९० [हि० ८३६ = .ई० १४३३] में जब फ़ौजका मक़ाम बागौरमें हुआ, उसवक़ चाचा व मेराने कितने ही आदमियोंको तो अपनेमें मिलालिया, केवल एक मलेसी डोडिया नहीं मिला, जो शलजीका भाई था. चाचा, मेरा और महपा पुंवार ये तीनों अपने कुटुम्बके दस बीस आदमियों सहित महाराणाके डेरेमें पहुंचे. मलेसीने इन लोगोंको बेधड़क आते हुए देखकर महाराणासे अर्ज़ किया, इतनेहीमें तो उन्होंने एकदम हमलह करदिया. महाराणा मोकल और महाराणी हाड़ी जो उसवक़ डेरेमें थे, और मलेसी डोडिया, ये तीनों १९ आदमियोंको मारकर बड़ी बहादुरीके साथ काम आये; और चाचा व महपा पुंवार कुछ ज़ख़्मी हुए. उसवक़ महाराजकुमार कुम्भा बालक थे, इस

कारण ये बदमआश अपने औरत व बच्चोंको बड़े ज़ोर शोरके साथ चित्तौड़से निकालकर पई कोटड़ीके पहाड़ोंमें जारहे.

इन महाराणाने जहाज़पुर मक़ामपर बादशाह फ़ीरोज़शाहके साथ लड़ाई की, जिसमें बादशाह हारकर उत्तरकी तरफ़ भागा. यह बात श्रीएकलिंगजीके दक्षिण-द्वारकी प्रशस्तिके श्लोक ४३-४४ में लिखी है, जो प्रशस्ति उक्त महाराणाके पोते महाराणा रायमल्लके वक्तकी है, और कुम्भलमेरकी प्रशस्तिमें भी लिखा है; परन्तु इन प्रशस्तियोंके सिवा इस लड़ाईका हाल दूसरी जगह कहीं नहीं मिला. क़ियाससे मालूम होता है, कि यह बादशाह नागौरवाला फ़ीरोज़ख़ां होगा, जिसको उक्त महाराणाने दूसरी दफ़ा शिकस्त दी थी.

महाराणा मोकलने पुष्कर तीर्थमें सुवर्णका तुलादान किया, और चित्तौड़पर द्वारिकानाथ और समिद्धेश्वर वग़ैरहके कई मन्दिर बनवाये. बांधनवाड़ा गांव, जो अब ज़िले अजमेरमें है, और रामा गांव, जो एकलिङ्गजीसे एक कोस है, इन्होंने श्रीएकलिङ्गजीके भेट किये थे. इन्हीं महाराणाने अपने छोटे भाई बाघसिंहके औलाद न होनेके कारण उसके नामपर बाघेला तालाब श्रीएकलिंगजीमें बनवाया. श्रीएकलिङ्गजीके चारों तरफ़का कोट भी इन्हीं महाराणाका बनाया हुआ है. महाराणा मोकलके पुत्र १- कुम्भा, २- क्षेमकरण, ३- शिवा, ४- सत्ता, ५- नाथसिंह, ६- वीरमदेव और ७- राजधर थे.

महाराणा कुम्भकरण
(कुम्भा).
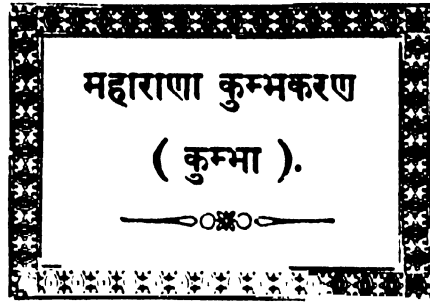
यह महाराणा विक्रमी १४९० [हि० ८३६ = ई० १४३३] में अपने पिता मोकलकी जगह पाट बैठे. कर्नेल् टॉडने और बड़वा भाटोंने इनके गद्दी विराजनेका संवत् विक्रमी १४७५ [हि० ८२१ = ई० १४१८] लिखा है, परन्तु वह ग़लत है. इस ग़लतीको साबित करनेके लिये हमको कई एक पुख़्तह सुबूत मिले हैं. अव्वल तो चित्तौड़की महासतियोंमें क़िलेकी पश्चिमी दीवारपर महाराणा मोकलका बनाया हुआ समिद्धेश्वर महादेवका मन्दिर मौजूद है, जिसकी प्रशस्तिके ७४ वें श्लोकमें साफ़ लिखा है, कि विक्रमी १४८५ [हि० ८३१ = ई० १४२८] में महाराणा मोकलने इस मन्दिरकी प्रतिष्ठा अपने हाथसे की, और ७५ वां श्लोक आशीर्वादात्मक है, जिसका अर्थ यह है, कि " इन्द्र जहांतक स्वर्गमें राज्य करे, और ज़मीनको जहांतक शेष नाग अपने सिरपर रक्खे, वहांतक राज्यलक्ष्मी इन महाराणा मोकलकी भुजापर निवास करे. " इस श्लोकके अर्थसे साफ़ ज़ाहिर है, कि उस समयमें महाराणा विद्यमान थे. सिवा इसके दूसरा सुबूत यह है, कि तारीख़ फ़िरिश्तहकी दूसरी जिल्दके १९० एष्ठमें अहमदशाह गुजरातीके ज़िक्रमें हिज्री ८३६ [वि० १४८९ = ई० १४३३] में महाराणा मोकलका मौजूद होना लिखा है, और यही बात ऑनरेबल ए० के० फ़ार्बस साहिबकी गुजरातकी हिस्ट्री रासमालामें लिखी है. इसी तरह महाराणा अव्वल अमरसिंहके समयके बने हुए अमरकाव्य नामी ग्रन्थमें भी महाराणा कुम्भाका गद्दी बैठना विक्रमी १४९० [हि० ८३७ = ई० १४३३] में लिखा है. प्रयोजन यह है, कि विक्रमी १४७५ [हि० ८२१ = ई० १४१८] में इन महाराणाकी गद्दी-नशीनी सहीह नहीं मालूम होती.

अब हम इन महाराणाकी गद्दीनशीनीके वक्तके हालात लिखते हैं:-

जब महाराणा मोकल मारेगये उस समय राव रणमल्ल मंडोवरमें था. उसने यह ख़बर मिलते ही अपने सिरसे पघड़ी उतारकर फेंटा बांध लिया, और यह प्रतिज्ञा

करली कि महाराणा मोकलके मारने वालों (चाचा और मेरा) को मारकर सिरपर पघड़ी बांधूंगा. फिर वह वहांसे चलकर चित्तौड़में आया, और महाराणा कुम्भाको नज़ानह किया. उक्त महाराणाकी बाल्यावस्थाके कारण कुल राज्यका प्रबन्ध करनेके बाद वह चाचा और मेराको मारनेके लिये पांच सौ सवार लेकर चढ़ा, और उसने पईके पहाड़ोंपर कई धावे किये, लेकिन् विकट जगह होनेके कारण उनको क़ाबूमें न लासका. पईकी पालके एक गमेती भीलको पहिले रणमल्लने मारडाला था, उसके बेटे कई भीलों समेत चाचा व मेराकी मददपर थे. जब रणमल्लका कुछ दाव न लगा, तब वह घोड़ेपर चढ़कर अकेला उसी गमेतीके घरगया, जिसको कि उसने मारा था. उस गमेतीकी विधवा स्त्री वहां बैठी थी, और उसके लड़के कहीं बाहिर गये हुए थे. भीलनीने रणमल्लको देखकर कहा, कि वीर तुमने बहुत बड़ा कुसूर किया है, परन्तु अब तुम घरपर चले आये इससे अब हम तुमको कुछ नहीं (१) कह सक्ते. इतनेमें भीलनीके पांचों लड़के भी आये. भीलनीने अपने बेटोंके आनेसे पहिले रणमल्लको घरके भीतर बैठाकर उसका घोड़ा घरके पीछे बंधवादिया था. जब उसके बेटे आये, तो उनसे कहने लगी, कि इसवक्त अपने घरपर रणमल्ल आजावे तो तुम क्या करो ! उन्होंने कहा, कि माता यदि वह हमारे घरपर आजावे, तो हम उसको कुछ नहीं कहेंगे. यह सुनकर भीलनीने बेटोंकी तारीफ़ की, और राव रणमल्लको बाहिर बुलाया. रणमल्लने उस भीलनीको अपनी बहिन बनाई, और उसके बेटोंको भाई कहकर बतलाया. भीलनीने कहा, कि हमारे लाइक़ चाकरी हो सो कहो. रणमल्लने कहा, कि मैं चाचा और मेराको मारनेके लिये तुम्हारे पास आया हूं. इसपर उन भीलोंने चाचा व मेराको मदद न देने और रणमल्लके मददगार रहनेका इक़ार करलिया. फिर रणमल्ल अपने डेरोंमें आया और दूसरे ही दिन मेवाड़ और मारवाड़के पांच सौ राजपूतोंको साथ लेकर पईकी तरफ़ रवानह हुआ. वहांपर उन भीलोंने कहा, कि आपको थोड़े दिन देर करना चाहिये, क्योंकि रास्तेमें एक शेरनी ब्याई है. रणमल्लने कहा, कि कुछ फ़िक्र नहीं, और आगेको चलदिये. रास्तेमें जब शेरनी डकराकर मुक़ाबलेको आई, तो रमणल्लने अपने बेटे अडमालको उसके मारनेका हुक्म दिया, और उसने आगे बढ़कर तलवार (२) से उस शेरनीका काम तमाम

---

(१) भीलोंमें अब भी यह क़ाइदह है, कि चाहे जैसा दुश्मन हो, यदि वह उनके घरपर आजावे तो फिर उसको किसी तरहका नुक्सान नहीं पहुंचाते.

(२) यह बयान इस तरह भी मश्हूर है, कि चांदण नामी खड़िया चारण रणमल्लके साथ था. जब रणमल्लकी तलवारसे शेरनीके थोड़ासा घाव लगा, उसवक्त चांदणने कटारसे शेरनीको मारकर कहा, कि शस्त्र इसतरह चलाना चाहिये.

किया. आगे बढ़कर देखा, तो ऊपरकी तरफ़ खाली पत्थरोंका कोट नज़र आया, जो चाचा व मेराने अपने रहनेकी जगहके गिर्द बना रक्खा था. रणमल्ल अपने साथियों सहित उसके भीतर घुसपड़ा, और भीतर जाते ही कुछ लोग चाचाके स्थानपर, और कुछ मेराके स्थानपर गये; और राव रणमल्लने महपा पुंवारके मकानपर जाकर आवाज़ दी, कि बाहिर निकल. महपा तो पहिली आवाज़ सुनते ही ज़नानी पोशाक पहिनकर औरतके वेपमें बाहिर निकलगया, और दूसरी बार आवाज़ देनेपर भीतरसे एक डोमनीने जवाब दिया, कि ठाकुर तो मेरे कपड़े पहिनकर बाहिर निकलगये, मैं बिना कपड़े नंगी बैठी हूं. यह सुनकर रणमल्ल पीछा फिरा, और इसी अरसेमें चाचा व मेरा उसके साथवाले राजपूतोंके हाथसे मारेगये, और चाचाका लड़का इक्का भागनिकला. इक्का और महपा पुंवार दोनोंने मांडूके बादशाह महमूदके पास जाकर पनाह ली; और राव रणमल्ल मेवाड़के लोगोंकी उन तमाम लड़कियोंको एकत्र करके अपने साथ देलवाड़ेमें लाया, जिनको चाचा और मेरा पकड़कर लेगये थे. उस समय वहांपर राघवदेव भी फ़ौज लेकर आगया था. जब रणमल्लने हुक्म दिया, कि ये लड़कियां राठौड़ोंके घरमें डालदीजावें, तो यह बात राघवदेवको नागुवार गुज़री, और वह उठकर सब लड़कियोंको अपने डेरेमें लेआया. यह बात रणमल्लको भी बुरी लगी, परन्तु वह सिवा चुप होरहनेके और क्या करसक्ता था ? क्योंकि राघवदेव महाराणा लाखाके बेटे और कुम्भाके काका थे; परन्तु दिलोंमें इन दोनोंके पूरी दुश्मनी बन्धगई. यहांसे दोनोंने चित्तौड़में आकर महाराणा कुम्भासे प्रणाम किया. अब राघवदेव और रणमल्ल दोनोंमें खटपट होने लगी, परन्तु रणमल्लके हाथमें कुल रियासतका काम था, और महाराणा भी उसीके क़ाबूमें थे, इस कारण उसने राघवदेवका काम तमाम करडाला, याने एक दिन राघवदेवको रणमल्लने महाराणा कुम्भाके सामने बुलाकर सरोपाव दिया, जिसमें अंगरखेकी दोनों बाहोंके मुंह सीये हुए थे. जब राघवदेवको एक तरफ़ लेजाकर बख़्शी हुई पोशाक पहिनाने लगे, तो अंगरखेकी बाहोंके मुंह सीये हुए होनेके कारण राघवदेवके दोनों हाथ उनमें फंसगये, और उसीवक़ रणमल्लके दो राजपूतोंने दोनों तरफ़से उसपर कटारके वार करदिये, जिससे राघवदेव मारागया, और रणमल्ल कुल रियासती कारोबारका मालिक बन बैठा. राघवदेवके मरनेसे जो कुछ खटका था वह निकलगया, अब जहां देखिये वहां मारवाड़ी ही मारवाड़ी लोग नज़र आने लगे.

अब हम मालवाके बादशाह महमूदकी गिरिफ्तारीका हाल लिखते हैं. जब विक्रमी १४९६ [हि० ८४३ = ई० १४३९] में महाराणा कुम्भाने राव रणमल्लसे कहा, कि उस हरामख़ोर महपा पुंवारको उसके अपराधका दण्ड नहीं मिला, जिसने हमारे

पिताको मारा था. तब रणमल्लने अर्ज़ किया, कि एक ख़त बादशाह महमूद मालवीको लिखिये, यदि वह महपा पुंवारको सुपुर्द करदेवे तो ठीक, वर्नह लड़ाई करके लेंगे. महाराणाने बादशाहको ख़त भेजा; लेकिन् उसने ख़तका सख़्त जवाब दिया, और कहा कि क्या कभी ऐसा हुआ है, कि अपनी पनाहमें आये हुए आदमीको कोई बहादुर गिरिफ़्तार करादेवे? अगर आपको लड़ाई करना मंजूर हो तो आइये, मैं भी तय्यार हूं. इस पत्रके देखते ही महाराणा कुम्भाने फ़ौजकशीका हुक्म देदिया; और उधरसे बादशाह महमूद भी अपनी फ़ौज लेकर चढ़ा. उसवक़्त चूंडा भी बादशाहके पास मौजूद था, उसको बादशाहने कहा, कि तुम भी हमारे साथ चलकर अपने भाई राघवदेवका वैर रणमल्लसे लो. तब चूंडाने कहा, कि हमारा हक़ महाराणापर चढ़ाई करनेका नहीं है, वह हमारे मालिक हैं, अगर राव रणमल्ल अपनी जमइयत लेकर आया होता, तो बेशक मैं आपके शरीक रहता. यह कहकर चूंडा तो बादशाहकी दीहुई अपनी वर्तमान जागीरपर चलागया. महमूदपर चढ़ाई करनेके वक़्त महाराणा कुम्भाके साथ १००००० सवार और १४०० हाथियोंकी जमइयत होना मश्हूर है. जब मेवाड़की सर्हदपर दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबलह हुआ, तो बड़ी सख़्त लड़ाई होनेके बाद बादशाह महमूदने भागकर मांडूके क़िलेमें पनाह ली. महाराणा कुम्भा भी पीछेसे वहां जा पहुंचे, और क़िला घेरलिया. महपा पुंवार तो पहिले ही क़िलेसे निकलकर भाग गया था, महमूदने क़िलेसे निकलकर मेवाड़की फ़ौजपर फिर हमलह किया, लेकिन् राव रणमल्लने बादशाहको गिरिफ़्तार करलिया, उसकी कुल फ़ौज तितर बितर होगई, और महमूदको लेकर महाराणा चित्तौड़पर आये, जहां छः महीनेतक क़ैद रखनेके बाद कुछ दण्ड लेकर उसे छोड़दिया. यह ज़िक्र फ़िरिश्तह वग़ैरह फ़ार्सी मुवर्रिख़ोंने नहीं लिखा, लेकिन् इस फ़त्हका चिन्ह क़िले चित्तौड़परका कीर्तिस्तम्भ अबतक मौजूद है, जो इस लड़ाई की यादगारके वास्ते विक्रमी १५०५ [हि० ८५२ = ई० १४४८] में बनाया गया था, जिसकी प्रशस्ति भी वहांपर मौजूद है.

अब हम राव रणमल्लके मारेजाने और मंडोवरपर मेवाड़का क़बज़ह होनेका हाल लिखते हैं:-

महाराणा कुम्भकरणके समयमें भी राव रणमल्लका इख़्तियार बढ़ता ही गया, क्योंकि अव्वल तो उसने चाचा व मेरासे महाराणा मोकलका वैर लिया, और उसके बाद बादशाह महमूदकी लड़ाईमें बड़ी बहादुरी और नौकरी दिखलाई. इस बातसे महाराणा कुम्भाके दिलपर उसका एतिबार बढ़ता रहा. इसी अन्तरमें महपा पुंवार और चाचाका बेटा इक्का अपना अपराध क्षमा करानेके लिये किसी बहानेसे छुपकर महाराणा

कुम्भाके पैरोंमें आगिरे. महाराणा बड़े दयालु थे, दया देखकर उनका कुसूर मुआ़फ़ करदिया, और राव रणमल्लको बुलाकर कहा, कि हम क्षत्रिय लोग शरणागत पालक कहलाते हैं, और ये लोग हमारी शरणमें आये हैं, इसलिये हमने इनका अपराध क्षमा करदिया. इसपर रणमल्लने कहा, कि ख़ैर हुज़ूरकी मर्ज़ी.

एक दिनका ज़िक्र है, कि महपा पुंवारने महाराणासे अ़र्ज़ किया, कि राठौड़ोंका दिल साफ़ नहीं है, मालूम होता है, कि शायद ये मेवाड़का राज्य लेनेका इरादह रखते हैं, क्योंकि चारों तरफ़ राठौड़ोंका जाल फैला हुआ है; परन्तु महाराणाको महपा पुंवारके कहनेपर पूरा विश्वास न आया. उन्होंने जाना, कि यह रणमल्लका शत्रु है, इसलिये शायद बनावटी बात घड़ली है. फिर एक दिन महाराणा तो सोते थे और इका पैर दाब रहा था, पैर दाबते दाबते रोने लगा, और उसकी आंखोंसे आंसू निकलकर महाराणाके पैरपर गिरे. गर्म गर्म आंसूके टपकनेसे महाराणाकी नींद उड़गई, और उन्होंने इकासे रोनेका कारण पूछा, तो उसने कहा, कि सीसोदियोंके हाथसे मेवाड़ गई, और राठौड़ मालिक बनेंगे, इस सबबसे मुझे रोज आगया. इस बातपर महाराणाको रणमल्लकी तरफ़से सन्देह तो हुआ, परन्तु उन्होंने उसे बिल्कुल सत्य ही नहीं मानलिया. इसी अ़रसेमें बाईजीराज सौभाग्यदेवीकी दासी भारमली, जिससे राव रणमल्लकी दोस्ती थी, एक दिन रणमल्लके पास कुछ देरमें पहुंची. रणमल्ल उस वक्त़ शराबके नशेमें चूर था, उसने भारमलीसे कहा, कि देरसे क्यों आई ! उसने कहा, कि जिनकी मैं नौकर हूं उनके पाससे छुट्टी मिली तब आई. इसपर नशेकी हालतमें रावने कहदिया, कि अब तू किसीकी नौकर नहीं रहेगी, बल्कि जो लोग चित्तौड़में रहना चाहेंगे वे तेरे नौकर होकर रहेंगे; और बातों ही बातोंमें भारमलीके पूछनेपर रणमल्लने महाराणा कुम्भाके मारने और राज्य छीनलेनेका कुल मन्सूबा कहदिया. यहांपर रणमल्लका वैसा ही हाल हुआ, जैसा कि पंचाख्यानकी चौथी कथा लब्ध प्रणाशमें लिखा है. उस ख़ैरख्वाह दासी (भारमली) ने वह हाल अपनी मालिक बाईजीराजसे ज्यों का त्यों जा कहा. यह भयंकर समाचार सुनकर सौभाग्यदेवीको बड़ी चिन्ता हुई, और उन्होंने अपने पुत्र महाराणा कुम्भाको बुलाकर कुल हाल कहा. तब दोनों मा बेटोंने सोचा, कि जहां देखें वहां राठौड़ ही राठौड़ दिखाई देते हैं, इसलिये अब रावत् चूंडाको बुलाना मुनासिब है. यह सलाह करके महाराणाने एक सांडनीके सवारको चूंडाके पास भेजा. महाराणाका हुक्म पहुंचते ही जल्दी सवार होकर चूंडा चित्तौड़में आया. रणमल्लने बाईजीराजसे अ़र्ज़ करवाई, कि चूंडाका यहां आना अच्छा नहीं है, क्योंकि शायद बुढ़ापेमें राज्यके लिये इसका दिल बिगड़ा हो. तब

बाईजीराजने कहा, कि जिसने राज्यका हक़दार होकर अपने छोटे भाईको राज्य देदिया उसको क़िलेपर बिल्कुल नहीं आनेदेनेमें तो लोग निन्दा करेंगे, और वह थोड़ेसे आदमियोंके साथ यहां आकर क्या करसक्ता है, इसलिये उसके आनेमें कोई हर्ज नहीं है. यह सुनकर रणमल्ल चुप होगया, और चूंडा क़िलेपर आया. दो चार दिनके बाद एक डोमने रणमल्लसे कहा, कि मुझको सन्देह है, कि महाराणा आपपर घात करावेंगे. रणमल्लको भी कुछ कुछ सन्देह हुआ, और उसने अपने बेटे जोधा व कांधल वगैरह सब कुटुम्बियों को क़िलेकी तलहटीमें रखकर कहदिया, कि यदि मैं बुलाऊं तोभी तुम ऊपर मत आना. जबकि रावत् चूंडा और महाराणा कुम्भाके सलाह हुई, कि इन सबको ऊपर बुलाकर मारडालना चाहिये, तो एक दिन महाराणाने रणमल्लको फ़र्माया, कि जोधा कहां है ? तब रणमल्लने कहा कि तलहटीमें है; और जब महाराणाने उसे बुलानेको कहा, तो टालाटूली करगया. इसी रातको भारमलीने महाराणाके इशारेसे रणमल्लको खूब शराब पिलाया, और नशा आजानेकी हालतमें पलंगपर पघड़ीसे कसकर बांध दिया. फिर महपा पुंवार, इक्का और दूसरे आदमियोंको संग लेकर भीतर घुसा, और रणमल्ल पर हथियार चलाये. मशहूर है, कि तीन आदमियोंको रणमल्लने पानीके लोटेसे मारडाला और आपभी मारागया (१). उसी समय एक डोमने क़िलेकी दीवारपर चढ़कर ऊंची आवाज़से ये पद गाये-" ज्यांका रणमल मारिया जोधा भाग सके तो भाग ". इस आवाज़को सुनकर रणमल्लके पुत्र जोधाने भी भागनेकी तय्यारी की, और उसी समय रावत् चूंडा क़िलेपरसे तलहटीमें जा पहुंचा. चित्तौड़से थोड़ी ही दूरपर लड़ाई हुई, जिसमें जोधाके साथ वाले कितने ही राजपूत, याने चरड़ा चंद्रावत, शिवराज, पूना भाटी, भीमा, वैरीशाल, बरजांग भीमावत, और जोधाका चाचा भीम चूंडावत वगैरह मारेगये, और जोधा भागते भागते मांडलके तालाबपर आया. इस लड़ाईमें कितने ही आदमी मारेगये, और कितने ही तितर बितर होगये. मांडलके तालाबपर जोधाका भाई कांधल भी उससे आमिला, फिर दोनों भाई भागकर मारवाड़की तरफ़ गये. पीछेसे रावत् चूंडा भी फ़ौज लेकर वहां पहुंचा और उसने मंडोवरपर अपना क़बज़ह करलिया. चूंडाने अपने बेटों याने कुन्तल, मांजा, और सूवाको वहांके बन्दोबस्तके लिये रक्खा.

कर्नेल् टॉड लिखते हैं, कि महाराणा मोकलकी नाबालिग़ीके समयमें चूंडाके मांडूसे आनेपर रणमल्ल मारागया, और मंडोवर चूंडाने फ़तह करलिया. इससे मालूम होता है, कि यह हाल कर्नेल् टॉडने बड़वोंकी पोथियों और मशहूर कहानियोंसे

(१) विक्रमी १५०० में रणमल्ल मारा गया, इस ज़िक्रको मुख़्तलिफ़ तरहसे क़िस्सह कहानीके तौरपर लोग बयान करते हैं. हमने मुख़्तसर लिखदिया है.

लिखा होगा; क्योंकि हमने जो बयान ऊपर लिखा है वह नेणसी महता मारवाड़ीकी लिखी हुई दोसो वर्ष पहिलेकी एक मोतबर पुस्तकसे लिखा है, जिसकी तस्दीक़ (१) कुम्भलमेरमें महाराणा कुम्भाके वक्तकी प्रशस्तिके २५० श्लोकसे होती है- (देखो शेषसंग्रह).

रणमल्लके मारेजानेपर जोधा तो भागगया, और मंडोवरमें रावत् चूंडाने अपना कबज़ह जा जमाया, लेकिन् रणमल्लका भतीजा नरवद महाराणा कुम्भाके पास चित्तौड़में हाज़िर रहकर महाराणाका दिया हुआ एक लाख रुपयेकी आमदनीका कायलाणेका पट्टा खाता रहा, क्योंकि रणमल्लने नरवद और उसके बाप सत्तासे मंडोवरका राज्य छीन लिया था. एक दिनका ज़िक्र है, कि महाराणा कुम्भा दर्बार करके बैठे थे, उसवक्त सर्दारोंमेंसे किसीने कहा, कि नरवद अच्छा राजपूत है, जो कोई उससे किसी चीज़का सवाल करता है, उसके देनेमें वह कभी इन्कार नहीं करता. महाराणाने फ़र्माया, कि ऐसा तो नहीं होगा. इसपर लोगोंने फिर अर्ज़ किया, कि जो चीज़ उससे मांग लीजाती है वह उसीको देदेता है, और अगर मांगने वाला नहीं लेवे, तो किसी औरको देदेता है, मगर फिर उसे अपने पास नहीं रखता. तब महाराणाने अपने एक ख़वासको भेजकर नरवदसे हंसीके तौरपर कहलाया, कि आपकी आंख चाहती है; और ख़वासको कहदिया, कि आंख मत काढ़ने देना. ख़वासने जाकर नरवदसे वैसा ही कहा. नरवदने जानलिया, कि यह बात हंसीके तौरपर कहलाई है, ख़वास मुझे आंख नहीं निकालने देगा. अगर्चि उसकी बाईं आंख तो पहिले ही मंडोवरकी लड़ाईमें तलवारसे फूट चुकी थी, तथापि इस वक़ उसने ख़वासकी नज़र बचाकर दाहिनी आंख खंजरसे निकालकर उसके हवाले करदी. ख़वासने यह सब हाल महाराणासे जा कहा. इसपर महाराणा बहुत पछताये, और दौड़कर नरवदके मकानपर आये, और उसकी बहुतसी ख़ातिरदारी करके उसको ड्योढ़ी जागीर करदी.

अब मंडोवरपर राव रणमल्लके बेटे जोधाका पीछा क़बज़ह होनेका हाल सुनिये. एक दिन दादी राठौड़जीने, जो महाराणा मोकलकी माता और कुम्भाकी दादी और रणमल्लकी बहिन थीं, महाराणासे कहा, कि हे पुत्र मेरे चित्तौड़ व्याहेजानेमें रणमल्लका माराजाना, और मंडोवरका राज्य नष्ट होकर जोधाका जंगलोंमें मारा मारा फिरना वग़ैरह सब तरहसे राठौड़ोंका नुक़्सान हुआ है, और उन लोगोंने तुम्हारा कुछ बुरा नहीं किया था, बल्कि रणमल्लने चाचा व मेरासे तुम्हारे बापका .एवज़ लिया, और तुम्हारे

(१) कविराज मुरारिदानकी भेजी हुई जोधपुरकी तवारीख़ हमारे पास आई, उसमें विक्रमी १५०० [हि० ८४७ = .ई० १४४३] में राव रणमल्लका चित्तौड़पर माराजाना लिखा है.

दुश्मन मुसल्मानोंके साथ लड़कर लड़ाइयोंमें बड़ी बड़ी बहादुरी दिखलाई थी. अपनी दादीके ये वचन सुनकर महाराणाने कहा, कि आप जोधाको लिखदेवें, कि वह मंडोवरपर अपना क़बज़ह करलेवे, मैं इसमें नाराज़ न होऊंगा, परन्तु ज़ाहिरा तौरपर चूंडाके लिहाज़से कुछ नहीं कहसक्ता, क्योंकि चूंडाके भाई राघवदेवको रणमल्लने मारा था, वह खटक अबतक उसके दिलसे नहीं निकली है. अपने पोतेका यह मन्शा देखकर उन्होंने आशिया चारण डूलाको जोधाके पास भेजा. यह चारण मारवाड़की थलियोंके गांव भाड़ंग और पड़ावेके जंगलोंमें पहुंचकर क्या देखता है, कि राव जोधा मए अपने पचास घोड़ों और कुछ पैदलोंके बाजरेके सिरोंसे अपनी भूख शान्त कररहा है. चारण आशिया डूलाने जोधाको पहिचानकर महाराणा कुम्भाका मन्शा और उनकी दादीका कहा हुआ सब वृत्तान्त उसे कहसुनाया. डूलाका यह कहना ही जोधाको मंडोवर लेनेका सहारा हुआ. वह उसी समय बहुतसी जम्इयत एकट्ठी करके मंडोवरको चलदिया. वहांपर क़िलेकी हिफ़ाज़तके लिये थोड़ेसे लोग और रावत् चूंडाके तीन बेटे कुन्तल, मांजा, व सूवा थे. इन ग़ाफ़िल क़िलेवालोंपर एक दमसे जोधाका हमलह हुआ, और चूंडाके तीनों बेटे कई राजपूतों सहित मारेगये. कर्नेल् टॉड साहिबकी तह्रीरसे चूंडाके दो लड़कोंमेंसे एकका यहीं, और दूसरेका गोड़वाड़में माराजाना पायाजाता है, जिससे तो हमको कुछ बहस नहीं है; परन्तु उन्होंने लिखा है, कि बारह वर्ष बाद जोधाका क़बज़ह मंडोवरपर हुआ, परन्तु हमारी तह्क़ीक़ातसे किसी चारणकी बनाई हुई एक मारवाड़ी (१) कविता और दूसरे चन्द बयानोंके अनुसार सात वर्ष पीछे उसका मंडोवरपर क़ाबिज़ होना साबित होता है.

विक्रमी १४९९ [हि० ८४६ = ई० १४४२] में मालवी बादशाह सुल्तान महमूद ख़ल्जी अपनी गिरिफ़्तारीकी शर्मिन्दगीसे मेवाड़पर चढ़कर आया, और पहाड़के किनारे किनारे होता हुआ सीधा कुम्भलमेरकी तरफ़ गया. महाराणा कुम्भा कुम्भलमेर और चित्तौड़ दोनों जगह मौजूद नहीं थे, चित्तौड़से पूर्वकी तरफ़के पहाड़ोंमें किसीपर चढ़ाई करके गये हुए थे. जब बादशाह कुम्भलमेरके नज़्दीक पहुंचा, तो क़िलेके बाहिर कैलवाड़ा गांवमें बाणमाताके प्रसिद्ध मन्दिरमें (जिसके

(१) लाखावत शबल़ मेल़ दल़ लाखां, लोहां पांण धरा लेवाड़ ॥ कैलपुरै हेकण घर कीधो, मुरधरने बाधो मेवाड़ ॥ १ ॥ खोसेलिया अभनमें खेतल, ज्याबा[illegible] रेवंतने जूंग ॥ रंधिया रांणा तणै रसोड़ै, मुरधररा नीपजिया मूंग ॥ २ ॥ थांणो जाय मंडोवर थटियो, जोर करे [illegible]खपतरे जोध ॥ कियो राज चूंडै नवकोटां, सात बरस तांई सीसोद ॥ ३ ॥ खेड़ेचां बाळी धर खोसे, दस संहसा आकाय दईव ॥ सरगांपुर रड़माल सिधायो, जोधै नींठ बचायो जीव ॥ ४ ॥

चारों तरफ़ मज़बूत कोट था), दीपसिंह नामी महाराणाका एक राजपूत, जो क़िलेपर था, बहुतसे बहादुर राजपूतोंको लेकर आघुसा. क़िलेको बेलाग समझकर महमूदशाहने इसी मन्दिरको घेरा, और सात दिनमें मन्दिरकी गढ़ीको फ़त्ह करलिया. दीपसिंह बहुतसे बादशाही नौकरोंको मारकर अपने कई एक साथी राजपूतों समेत बहादुरीके साथ लड़कर मारागया. महमूदशाहने मूर्त्तियोंको तोड़कर उनके तोले (बाट) बनवाये, जो क़साई लोगोंको मांस तोलनेके लिये दियेगये. उसने काले पत्थरकी बनी हुई बाण-माताकी बड़ी मूर्त्तिका चूना पकवाकर हिन्दुओंको पानमें खिलवाया, और मन्दिरमें लकड़ियां जलवानेके बाद ऊपरसे ठंढा पानी डलवाकर मन्दिरको बिल्कुल जीर्ण करडाला. महमूद इस फ़त्हको ग़नीमत समझकर चित्तौड़की तरफ़ चला, जहांपर ऐसी फ़त्ह कभी किसी मालवी बादशाहको नसीब नहीं हुई थी. फिर वह बहुतसी फ़ौज चित्तौड़में मुक़ाबलेके लिये छोड़कर आप महाराणाकी तलाशमें निकला, और अपने बाप आज़म हुमायूंको उसने महाराणाका मुल्क तबाह करनेके लिये मन्दसौरकी तरफ़ भेजा. यह ख़बर सुनकर महाराणा कुम्भा भी हाड़ौतीकी तरफ़से धावा मारे चले आते थे, रास्तेमें मांडलगढ़के पास बादशाहसे मुक़ाबलह हुआ. फ़िरिश्तह लिखता है, कि "महाराणा शिकस्त पाकर चित्तौड़को भाग आये, और बादशाहने चित्तौड़को आघेरा"; और राजपूतानहकी पोथियोंमें महाराणाकी फ़त्ह लिखी है. चाहे कुछ ही हो, हमको बहससे प्रयोजन नहीं. इसी अरसेमें महमूदका बाप आज़म हुमायूं बीमार होकर मन्दसौरमें मरगया. महमूदशाहने वहां पहुंचकर अपने बापकी लाशको मांडू पहुंचाया. इन्हीं दिनोंमें महाराणा कुम्भाने भी एक बड़ी जर्रार फ़ौज तय्यार करके रातके वक्त महमूदपर धावा किया. दोनों तरफ़के बहादुर ख़ूब लड़े, और बादशाह महमूद भागकर मांडूकी तरफ़ चलागया. तारीख़ फ़िरिश्तहमें लिखा है, कि राणा चित्तौड़की तरफ़ और बादशाह मांडूकी तरफ़ चलागया; लेकिन् सोचना चाहिये, कि बादशाही फ़त्ह होती, तो महमूदशाह पीछा क्यों लौटजाता.

४ वर्षके बाद फ़ुर्सत पाकर विक्रमी १५०३ कार्तिक कृष्ण ५ या ६ [हि० ८५० ता० २०-२१ रजब = ई० १४४६ ता० १०-११ ऑक्टोबर] को महमूद फिर एक बड़ी भारी फ़ौज लेकर मांडलगढ़की तरफ़ आया. जब वह बनास नदी उतरने लगा, तो हज़ारों राजपूतोंने क़िलेसे निकलकर उसका सामना किया. राजपूतानहकी पोथियोंसे तो इस लड़ाईमें भी महाराणाको ही फ़त्ह हासिल होना पाया जाता है, और फ़िरिश्तह लिखता है, कि बादशाह पेशकश लेकर चलागया; परन्तु यह बात हमारे क़ियासमें नहीं आती, शायद मुहम्मद क़ासिमने लिखनेमें तरफ़दारीकी हो, या जिस किताबसे उसने लिखा उसके कर्त्ताने कीहोगी, कारण यह कि तारीख़ फ़िरिश्तहके दूसरे हिस्सेके

पृष्ठ २५० में हिज्री ८५७ [वि० १५१० = .ई० १४५३] में लिखा है, कि सुल्तान महमूद ख़ल्जीने बादशाह कुतुबुद्दीन गुजरातीसे अहद किया, कि महाराणाके गुजरातके पास वाले मुल्कको गुजराती लश्कर लूटे, और मेवाड़ व अजमेर वगैरह पर मालवी फ़ौज क़बज़ह करे. अगर बादशाह महमूद ख़ल्जी पहिलेकी लड़ाइयोंमें फ़त्ह पाता, और पेशकश लेकर गया होता, तो कुतुबुद्दीन गुजरातीको अपना मददगार क्यों बनाता; और दूसरे यह, कि पहिली फ़त्हका मनार (कीर्तिस्तम्भ) जो हमेशहके लिये उसकी बदनामीकी यादगार था, उसको वह ज़रूर गिरादेता; अलावह इसके आगेको इसी तवारीख़के मुवर्रिख़ने फिर कुतुबुद्दीनका कुछ भी हाल नहीं लिखा (१).

हिज्री ८५८ [वि० १५११ = .ई० १४५४] में शाहज़ादह गयासुद्दीनको रणथम्भोरपर भेजकर महमूद चित्तौड़की तरफ़ चला, उस वक़्के हालमें मुवर्रिख़ फ़िरिश्तह लिखता है, कि महाराणा कुम्भाने बड़ी ख़ातिरदारीके साथ पेशकश हाज़िर किया, जिससे महमूद नाराज़ हुआ. सोचना चाहिये, कि फ़िरिश्तहने पहिले तो लिखा है, कि महाराणासे पेशकश लेकर बादशाह ख़ुश होगया, और इस वक़ नाराज़गी ज़ाहिर की, तो भला इस पेशकशमें क्या नुक्सान था, जो नाराज़गीका सबब हुआ. फिर वही मुवर्रिख़ फ़िरिश्तह इसी लड़ाईमें लिखता है, कि महमूदने मेवाड़में ख़ल्जीपुर आबाद करना चाहा था, परन्तु महाराणाने लाचारीसे पेशकश देदिया, इस सबबसे यह बात मौक़ूफ़ रखकर वह अपने वतनको चलागया. ऊपर लिखी हुई कुल लड़ाइयोंमें .इबारतका तर्ज़ देखनेसे महमूदके फ़त्हयाब होनेमें शक पायाजाता है, और इन महाराणासे लेकर महाराणा सांगातक मेवाड़के राजा मालवी बादशाहोंसे प्रबल रहे हैं, उसके लिये यहांपर ज़ियादह लिखनेकी कोई ज़रूरत नहीं है, तवारीख़के देखनेसे आपही मालूम होजावेगा.

हिज्री ८५९ [वि० १५१२ = .ई० १४५५] में मन्दसौरको लेनेके वास्ते बादशाह महमूद ख़ल्जीने चढ़ाई की, उस समय फ़ौजको मंदसौरकी तरफ़ भेजकर आप अजमेरको रवानह हुआ, और फ़ौजने वहां जाकर क़िलेको घेरलिया. वहां गजाधर क़िलेदारने बाहिर निकलकर महमूदकी फ़ौजपर हमलह किया, लेकिन् शिकस्त पाकर पीछा क़िलेमें चलागया. चार दिनतक घेरा रहनेके बाद सब राजपूतोंको साथ लेकर गजाधर बाहिर निकला, और बड़ी बहादुरीके साथ बहुतसे दुश्मनोंको मारकर काम

(१) तारीख़ फ़िरिश्तहमें कुतुबुद्दीन और महमूदकी सुलहके वक़् महमूदके कहे हुए जो शब्द लिखे हैं उनसे साफ़ ज़ाहिर है, कि वह कमज़ोरीकी हालतमें दूसरेकी मदद चाहने वाला हुआ.

आया. बादशाहने क़िलेपर क़बज़ह किया, और वहांकी हुकूमत ख़्वाजिह निअ्मतुल्लाह को देकर आप मांडलगढ़की तरफ़ रवानह हुआ. जब बनास नदीके किनारेपर पहुंचा, तो क़िलेसे महाराणाके हज़ारों राजपूत उसकी फ़ौजपर आगिरे, और बहुतसे बहादुर दोनों तरफ़के मारेगये. तारीख़ फ़िरिश्तहमें लिखा है, कि शामके वक्त अपने अपने मक़ामपर ठहरे और सुबह ही अमीरों व वज़ीरोंने बादशाहसे अ़र्ज़ की, कि बर्सातका मौसम आ पहुंचा है, इसलिये हालमें तो अपनी राजधानीको चले चलना मुनासिब है, आइन्दहको क़िलेके लेनेकी फिर तज्वीज़ कीजावेगी. इस सलाहको मन्ज़ूर करके बादशाह अपनी राजधानीको लौटगया. इस .इबारतसे महमूदका शिकस्त पाकर चलाजाना साफ़ ज़ाहिर है.

इन्हीं दिनोंमें मालवेके बादशाहका शाहज़ादह उ़मरख़ां महाराणा कुम्भाकी शरणमें आया था. यह शाहज़ादह किसी ख़ानगी बखेड़ेके सबब बादशाहसे डरकर अहमदाबादको गया था, लेकिन् आपसकी नाइत्तिफ़ाक़ीके कारण उसको वहांपर सहारा न मिला, तब चित्तौड़में आया. बहुत दिनोंतक यह वहीं रहा और उसके बाद चंदेरी मक़ामपर मालवी बादशाहसे मुक़ाबलह करके मारागया.

अब हम नागौरकी लड़ाइयोंका हाल लिखते हैं. विक्रमी १५१२ [हि० ८५९ = .ई० १४५५] में नागौरके हाकिम फ़ीरोज़ख़ांके मरजाने बाद, जिसको एक ख़ुदमुख़्तार बड़ा रईस समझना चाहिये, उसके छोटे भाई मुजाहिदख़ांने बड़े ज़ोरसे नागौरपर क़बज़ह करलिया, और फ़ीरोज़ख़ांके बेटे शम्सख़ांको मारनेके लिये तय्यार हुआ, इसलिये शम्सख़ां वहांसे भागकर महाराणा कुम्भाकी पनाहमें चला आया. यह वही नागौरका फ़ीरोज़ख़ां है, जिसका कुछ ज़िक्र महाराणा मोकलके हालमें लिखा-जाचुका है. जब महाराणा कुम्भाने मुजाहिदख़ांको सज़ा देने और शम्सख़ांकी मददके लिये अपनी फ़ौजको तय्यार किया, और शम्सख़ां समेत चढ़ाई करके नागौरके क़रीब पहुंचे, तो मुजाहिदख़ां डरकर गुजरातकी तरफ़ भागगया. महाराणाने वहां जाकर शम्सख़ांको उसके बापकी जगह गादीपर बिठादिया, परन्तु गद्दीपर बैठनेके बाद वह उस एहसानको भूलकर उल्टा महाराणाका शक करने लगा, कि यह हमारी रियासत छीन लेंगे. तारीख़ फ़िरिश्तहमें लिखा है, कि महाराणाने शम्सख़ांको कहा, कि क़िले नागौरके तीन कांगरे हमको गिरानेदो, लेकिन् शम्सख़ांको उसके मुसाहिबोंने ग़ैरत दिलाई, इस सबबसे उसने मंज़ूर नहीं किया. महाराणा अपने किये हुए एह्सानको मेटना नहीं चाहते थे, इसलिये वापस कुम्भलमेरको चले आये, परन्तु शम्सख़ांने एह्सानको भूलकर अपने बाप दादोंका ही तरीक़ह इख़्तियार करलिया. तब महाराणा

भी बड़ी भारी फ़ौज लेकर नागौरकी तरफ़ चढ़े. शम्सख़ां भागकर मददके लिये कुतुबुद्दीनके पास अहमदाबाद चलागया, और महाराणाने नागौरको घेरा. शम्सख़ां की फ़ौजके आदमी बहादुरीसे लड़कर मारेगये, और महाराणाने क़िला फ़तह करके उसपर अपना क़बज़ह करलिया. तब शम्सख़ांने गुजरातके बादशाह कुतुबुद्दीनके पास पहुंचकर अपनी लड़की बादशाहको ब्याही, और आप उसके पास रहा. बादशाहने राय रामचन्द और मलिक गदाको बहुत बड़ी फ़ौज देकर महाराणाका मुक़ाबलह करनेके लिये नागौरकी तरफ़ भेजा. महाराणाकी फ़ौजने भी बाहिर निकलकर मैदानमें लड़ाई की. इस लड़ाईमें हज़ारों गुजराती और बहुतसे राजपूत मारेगये. आख़रको महाराणाकी फ़ौजने फ़तह पाई, और बचे हुए गुजराती भागकर बादशाह कुतुबुद्दीनके पास पहुंचे. यह हाल सुनकर सुल्तान कुतुबुद्दीन बड़ा क्रोधित हुआ, और बड़ी भारी फ़ौजके साथ हिज्री ८६० [वि० १५१३ = .ई० १४५६] में खुद नागौरकी तरफ़ रवानह हुआ. क़िले आबूके पास पहुंचकर आप तो वहीं ठहरा, और .इमादुल्मुल्कको फ़ौज देकर आबूको भेजा, जहां कि महाराणाका क़बज़ह था. इस लड़ाईमें भी गुजरातियोंके बहुतसे आदमी मारेगये, और जो बचे वे भागकर कुतुबुद्दीनके पास पहुंचे. महाराणा कुम्भा तो पेश्तर ही कुम्भलमेरको आगये थे, लेकिन् कुतुबुद्दीन उनकी फ़ौजकी फ़तह सुनकर खुद कुम्भलमेरकी तरफ़ चला, और जाते हुए सिरोहीके देवड़ोंसे बड़ी लड़ाई की. आख़रको सिरोही वाले पहाड़ोंमें भागगये. यह ख़बर सुनकर महाराणा कुम्भाने कुतुबुद्दीनकी फ़ौजपर हमलह किया, उसवक़ कुतुबुद्दीन भी कुम्भलगढ़की तलहटी, याने गोड़वाड़में आगया था. इस लड़ाईमें दोनों तरफ़के राजपूत और मुसल्मानोंने बड़ी बहादुरी दिखलाई, और हज़ारों आदमी मारेगये. मुसल्मानोंने कहा, कि हमारी फ़तहको राजपूतोंने अपनी फतह बयान की, लेकिन् फ़तह उसीको कहना चाहिये, कि एक दूसरेपर ग़ालिब आवे. आख़रकार बादशाह कुतुबुद्दीन लाचार होकर पीछा लौट गया. तारीख़ फ़िरिश्तहमें लिखा है, कि कुतुबुद्दीनने कुम्भलमेर पर घेरा डाला, और महाराणाके राजपूतों और खुद महाराणाने कई बार बाहिर निकलकर हमले किये, लेकिन् शिकस्त पाई. निदान क़िलेकी मज़बूती देखकर बादशाह पेशकश लेकर अहमदाबादको लौटगया. वहां पहुंचते ही सुल्तान महमूद ख़ल्जी मालवेवालेने अपने वज़ीर ताजख़ांको बादशाह कुतुबुद्दीनके पास इस मत्लबसे भेजा, कि पहिले तो हमारे तुम्हारे बीचमें जो कुछ हुआ सो हुआ, लेकिन् अब धर्म ईमानके साथ इक़ार करलिया जावे, कि महाराणा कुम्भाका मालवेकी तरफ़का मुल्क हम लूटें, और गुजरातकी तरफ़का तुम लूटो, और वक़्पर एक दूसरेकी मदद करें. इस बातको

सुल्तान कुतुबुद्दीनने मन्जूर किया. दोनों तरफ़के आदमियोंकी मारिफ़त चांपानेरमें ऊपर लिखेहुए मन्शाके मुवाफ़िक़ अह्दनामह लिखागया.

हिज्री ८६१ [वि० १५१४ = .ई० १४५७] में सुल्तान कुतुबुद्दीन गुजराती बहुतसी फ़ौज लेकर पश्चिमसे, और उसी तरह सुल्तान महमूद ख़ल्जी मालवी दक्षिणसे मेवाड़पर चढ़आया. महाराणाका इरादह था, कि पहिले महमूद ख़ल्जीसे लड़ाई करें, परन्तु सुल्तान कुतुबुद्दीन सिरोहीसे बढ़कर कुम्भलगढ़के नज़्दीक आगया. तब महाराणाने भी निकलकर फ़ौजका सामना किया, जिसमें मेवाड़की फ़ौज शिकस्त पाकर पहाड़ोंके घेरमें चली आई. सुल्तान कुतुबुद्दीन भी वहां पहुंचा. दोनों फ़ौजोंके बहादुर शामतक लड़ते रहे, परन्तु फ़त्ह किसीको नसीब न हुई. रात होजानेके सबब दोनों लश्कर अपने अपने डेरोंमें चले आये, मुर्दोंको जलाया, दफ़्नाया, और घायलोंका .इलाज किया; फ़ज्र होते ही फिर लड़ाई शुरू हुई. इस दिन सुल्तान कुतुबुद्दीनकी बहुतसी फ़ौज मारीगई, क्योंकि मेवाड़की फ़ौजको पहाड़ोंका सहारा था. राजपूतानहकी पोथियोंसे तो इस लड़ाईमें महाराणाकी फ़त्ह पाईजाती (१) है, लेकिन् तारीख़ फ़िरिश्तहका मुवर्रिख़ लिखता है, कि चौदह मन सुवर्ण, दो हाथी, और बहुतसी चीज़ें तुह्फ़ेकी लेकर सुल्तानने सुलह करली; लेकिन् हमारे क़ियासमें यह नहीं आता, क्योंकि इस बादशाहकी फ़ौजने नागौर वग़ैरहपर दो तीन बार शिकस्त पाई थी. तारीख़ फ़िरिश्तहका मुवर्रिख़ इस लड़ाईके अख़ीरमें लिखता है, कि सुल्तान कुतुबुद्दीनने अपने शरीरसे बड़ी मर्दानगी दिखलाई. इससे साफ़ यही ज़ाहिर होता है, कि दुश्मन ग़ालिब थे, जिससे वह आप अकेला लड़कर बचा. फिर पेशकशमें रुपया देनेका दस्तूर है, न यह कि ख़ाली चौदह मन सोना; इससे पायाजाता है, कि मुहम्मद क़ासिम फ़िरिश्तहने यह हाल गुजराती तवारीख़ोंसे ही लिया है. हां ऐसा होसक्ता है, कि बादशाहने आबूके मन्दिरों और सिरोही वग़ैरह बहुतसे .इलाक़ोंको लूटा, वहांपर उसको इतना सोना और हाथी वग़ैरह हाथ लगे होंगे, जिसको मुवर्रिख़ोंने पेशकशमें शुमार करलिया; और मुसल्मानोंकी तरफ़दारीका लफ़्ज़ भी हम उन मुवर्रिख़ोंके वास्ते लिख सक्ते हैं, कि उन्होंने मांडूके बादशाह महमूद ख़ल्जीको महाराणा कुम्भाने मांडू फ़त्ह करके गिरिफ्तार किया, वह हाल बिल्कुल नहीं लिखा, जिसकी यादगारका मनार वग़ैरह इमारतें मौजूद

(१) किताब मिराति सिकन्दरीमें महाराणा कुम्भाका चित्तौड़में मौजूद होना, शिकस्त पाकर नागौरपर हमलह न करनेका इक़ार, इख़्तलाफ़ी सिरोहीके देवड़ोंकी, और बादशाहने मदद करके क़िला आबू पीछा महाराणासे सिरोहीके रावको दिलाना लिखा है.

होनेके सिवा कर्नेल् टॉडने भी अपनी किताबमें उसका हाल लिखा है. चाहे कुछ ही हो हमारे विचारसे तो यदि महाराणाकी फ़त्ह न हुई हो, तोभी सुल्तान कुतुबुद्दीनकी फ़त्ह होना नहीं पायाजाता. यदि वह पेशकश लेकर गया होता, तो क्या सुल्तान महमूद चुपचाप चला जाता ? जिसकी निस्बत तारीख़ फ़िरिश्तहमें सिवाय चढ़ाई करनेके उसके बादका और कुछ भी ज़िक्र नहीं लिखा (१). इससे साबित होता है, कि दोनों बादशाह विजय न पाकर पीछे अपने अपने मुल्कको लौटगये. मिराति सिकन्दरीमें तीनही महीनेके बाद फिर नागौरपर महाराणा कुम्भाका चढ़ाई करना और कुतुबुद्दीनका मेवाड़में आकर लूटमार करके पीछा चलाजाना लिखा है. अगर मिराति सिकन्दरीका लिखना सच होता, तो क्या फिर कुतुबुद्दीन मेवाड़की लूटपर ही सब्र करलेता, और अपने पहिले इक़ारके टूटनेका एवज़ न लेता, क्योंकि ऐसा होता, तो फिर भी क़िलेका मुहासरह करता.

बूंदीके हाड़ा भांडा और सांडाने अमरगढ़ तक लूटमार मचाकर अमरगढ़के क़िलेपर अपना क़बज़ह करलिया, और मांडलगढ़के राजपूतोंको भी तक्लीफ़ दी. यह ख़बर सुनतेही महाराणा कुम्भा फ़ौज लेकर चढ़े, और अमरगढ़को फ़त्ह किया. वहां तोगजी वग़ैरह कितने ही हाड़ा राजपूत मारेगये. इसके बाद उन्होंने बूंदीको जाघेरा, लेकिन् जब सांडा और भांडाने दण्ड देकर बहुतसी आजिज़ी की और पैरोंमें आगिरे, तब उनका कुसूर मुआफ़ करके फ़ौज ख़र्च लेनेके बाद पीछे चित्तौड़को चले आये. बूंदीकी तवारीख़ वंशभास्करके खुलासह वंशप्रकाशमें लिखा है, कि महाराणा कुम्भा अमरगढ़ फ़त्ह करके बूंदीपर घेरा डालकर अपनी राणीसे तीजपर आनेका इक़ार करनेके सबब चित्तौड़को चले गये, और बूंदीके घेरेपर महाराणाकी फ़ौज रही, उसको हाड़ोंने शिकस्त दी; इस शर्मिन्दगीके सबबसे महाराणा पीछे ज़नानहसे बाहिर नहीं निकले, और दो महीनेके बाद उनका इन्तिक़ाल होगया. यह बात हमको नीचे लिखे हुए सुबूतोंसे बिल्कुल ग़लत मालूम होती है. अव्वल तो यह, कि महाराणा कुम्भा जैसे बड़े राजा, जिनका ख़ौफ़ गुजराती, बहमनी और मालवी बादशाहोंको रहता था, उनका अपने मातहत हाड़ोंसे अपनी फ़ौजके हारनेपर दोबारह सज़ा देनेकी ताक़त न रखकर शर्मिन्दगीसे मरजाना क़ियासमें नहीं आता. दूसरे कुम्भलमेरके क़िलेमें मामादेवके कुण्डपर विक्रमी १५१७ मार्गशीर्ष कृष्ण ५ की खुदी हुई महाराणा कुम्भाके वक़की प्रशस्तिके श्लोक २६५ में साफ़ लिखा है, कि हाड़ौतीको विजय करके वहांके मालिकसे दण्ड

(१) मिराति सिकन्दरीमें सुल्तान महमूदको मन्दसौर वग़ैरह चन्द पर्गने देकर रुख़्सत करना लिखा है.

लिया. इस प्रशस्तिके खुदनेसे आठ वर्ष पीछेतक महाराणा ज़िन्दह रहे थे, तो बूंदीको फ़त्ह न करनेके सबब दो महीनेके बाद उनका परलोकवास होजाना कैसे संभव होसक्ता है ? इसमें सन्देह नहीं, कि इस तवारीख़का बनाने वाला सूरजमल्ल बहुत सच्चा आदमी था, लेकिन् मालूम होता है कि उसको कोई सच्ची तवारीख़ नहीं मिली, जिससे इस प्रकारकी भूल रहगई.

विक्रमी १५१३ [हि० ८६० = .ई० १४५६] में मालवेके बादशाह महमूद ख़ल्जीने मांडलगढ़पर चढ़ाई की, तब जो जो मुल्क रास्तेमें आये उनको बर्बाद करता हुआ वह मांडलगढ़ पहुंचा. जब क़िलेको घेरकर पासकी पहाड़ी (१) पर महमूदने तोपें चढ़ादीं, और उससे क़िले वालोंका पानी बन्द होगया; तब उन लोगोंने १०००००० दस लाख टंके (२) पेशकश कुबूल करके क़िला बादशाहके सुपुर्द करदिया. इस लड़ाईमें बहुतसे राजपूत मारेगये, और कितनोंहीको बादशाहने क़ैद करलिया. तारीख़ फ़िरिश्तहमें लिखा है, कि हिज्री ८६१ ता० २६ मुहर्रम [वि० १५१३ पौष कृष्ण १० = .ई० १४५६ ता० २३ डिसेम्बर] को महमूद मांडलगढ़की तरफ़ रवानह हुआ था, और हिज्री ८६२ ता० २५ ज़िल्हिज [वि० १५१५ मार्गशीर्ष कृष्ण ११ = .ई० १४५८ ता० ३ नोवेम्बर] को उसने क़िला फ़त्ह किया; लेकिन् ऐसे क़िलेपर दो वर्षतक लड़ाई होना ख़यालमें नहीं आता, क्योंकि सोचनेकी बात है, कि दो वर्षतक लड़ाई होते रहनेकी हालतमें महाराणा कुम्भा चित्तौड़गढ़में ख़ामोश किस तरह बैठे रहे. कदाचित् बादशाहके ख़ौफ़से न आये हों, तो महमूद इस क़िलेपर क्यों आता, वह चित्तौड़को ही क्यों नहीं जाता. हमको नहीं मालूम कि यह हाल सहीह है या मुवर्रिख़ अथवा लेखककी ग़लतीसे ऐसा लिखा गया है. अगर सहीह है, तो महाराणाकी तरफ़के हमले भी उनपर ज़रूर हुए होंगे, लेकिन् उस हालको मुवर्रिख़ोंने छोड़दिया.

विक्रमी १५१५ पौष कृष्ण २ - ३ [हि० ८६३ ता० १५ मुहर्रम = .ई० १४५८ ता० २३ नोवेम्बर] को महमूदशाह आप तो चित्तौड़की तरफ़ रवानह हुआ, और शाहज़ादह गयासुद्दीनको मगरा व भीलवाड़ेकी लूटके लिये रवानह किया. शाहज़ादहने फ़िदाईख़ां और ताजख़ांको केसूंदीका क़िला लेनेकी इजाज़त दी, और आप भी उनके

---

(१) जो अब नकटचाचौड़ और बीजासणका मगरा कहलाता है.

(२) तंगा (टंका) एक तोलेभर सुवर्ण या चांदीके सिक्केको कहते हैं. यहांपर चांदीके सिक्केसे ही मुराद है, और उन दिनोंमें यह ५० पैसेका होता था, और पैसा पौने दो तोलेका होता था.

साथ वहां पहुंचा. वहांके राजपूतोंने बहुतसी लड़ाई की, परन्तु शाहज़ादहने क़िला फ़त्ह करलिया, और उसके बाद मांडूकी तरफ़ अपने बापके पास चलागया. तारीख़ फ़िरिश्तहमें महमूदका चित्तौड़को रवानह होना लिखनेके पीछे उसका कुछ भी हाल नहीं लिखा कि वह चित्तौड़ होकर या और किसी रास्तेसे मांडूको किसतरह पर गया.

इन दिनों आबूके देवड़ा लोग बाग़ी होगये थे, इसलिये महाराणाने राव शलजी के बेटे नरसिंह डोडियाको फ़ौज देकर वहां भेजा. उसने देवड़ोंको सज़ा देकर ताबे बनाया, और आबूपर महाराणाके हुक्मके मुवाफ़िक़ महल (१) व तालाब बनवाया.

मांडूका बादशाह महमूद ख़ल्जी विक्रमी १५१८ [हि० ८६५ = ई०१४६१] में फिर मेवाड़की तरफ़ आया, और आहड़में डेरा किया. उसने शाहज़ादह ग़यासुद्दीन व ताजख़ांको मुल्क लूटनेका हुक्म दिया. फिर वह कुम्भलगढ़की तरफ़ गया, लेकिन् क़िलेको बेलाग देखकर डूंगरपुरके रावलसे दो लाख रुपया फ़ौज ख़र्चका लेताहुआ मांडूको पीछा चला गया.

इन महाराणाने और भी बहुतसी लड़ाइयां की थीं. विक्रमी १५२४ [हि० ८७१ = ई० १४६७] में नागौरके मुसल्मानोंने हिन्दुओंका दिल दुखानेके लिये गोबध अर्थात् गायका मारना शुरू किया. यह क़िला पहिले कई बार महाराणाके क़बज़हमें आया, और कई बार उनके क़बज़हमेंसे निकलकर फिर मुसल्मानोंके हाथमें चला-गया. महाराणाने मुसल्मानोंका यह अत्याचार देखकर उसी संवत्में पचास हज़ार सवार लेकर नागौरपर चढ़ाई की, और क़िलेको फ़त्ह करलिया, जिसमें हज़ारों मुसल्मान मारेगये. इसके बाद वहांके हाकिमने भागकर सुल्तान क़ुतुबुद्दीनके पास फ़र्याद की. महाराणाने क़िलेको फ़त्ह करके वहांका माल अस्बाब, और घोड़े, हाथी वग़ैरह लूटलिये, और क़िलेपर जो हनुमानकी मूर्त्ति थी वह विजयकी यादगारके वास्ते लेआये, जो अभीतक क़िले कुम्भलगढ़के हनुमान पौल दर्वाज़ेपर मौजूद हैं. जब सुल्तान क़ुतुबुद्दीनके पास यह ख़बर पहुंची, तो उसी वक़्त उसका वज़ीर इमादुल्मुल्क अपने बादशाहको, जो शराबके नशेमें चूर था, लेनिकला और एक मंज़िल चलकर

(१) उसवक़् किसी चारण कविने मारवाड़ी भाषामें एक गीत जातिका छन्द कहा था, जो यह है:-
जावरचे खेत महाभारथ जुड़, असहां हूंत बकारे आव ॥ बाही खग नरसीह महाबल, नाग तणै सिरगयो निहाव ॥ १ ॥ करबा जंग सजे गज केहर, तेग बही रणताल तिको ॥ रमियो राब अढार गिरांचो, सेस न खमियो भार सको ॥ २ ॥ सलह सुजाव देवड़ा साझे, लोह प्रवाड़ा मयन्द लिये ॥ भड़ नरसिंह जिसा गज भारां, दो पग पाछा देव दिये ॥ ३ ॥ डोडे राव सिरोही दुजड़ा, दल़ सजड़ा परहंस दिया ॥ आबू गिरवर शिखर ऊपरा, कुम्भे सरवर महल किया ॥ ४ ॥

एक महीनेतक ठहरा और फ़ौज एकट्ठी करने लगा, कि इसी अ़रसेमें महाराणाके कुम्भलमेर चलेआनेकी ख़बर मिली, जिससे बादशाह भी पीछा लौटगया, परन्तु थोड़े ही दिनोंके पीछे कुतुबुद्दीन एक बड़ी जर्रार फ़ौज तय्यार करके सिरोहीकी तरफ़ आया, और उस ज़िलेको लूटकर देवड़ोंको बर्बाद करता हुआ वहांसे आगे बढ़कर कुम्भलमेरकी तरफ़ आया; तब महाराणाने भी अपने बहादुरोंको साथ लेकर उसका मुक़ाबलह किया. कुतुबुद्दीन मेवाड़में होकर मालवेकी तरफ़ होता हुआ पीछा अपने स्थानपर चलागया.

अब हम महाराणा कुम्भाके देहान्तके समयका हाल लिखते हैं. जब यह महाराणा विक्रमी १५२५ [हि० ८७३ = .ई० १४६८] में कुम्भलमेरसे श्री एकलिङ्गजीके दर्शनोंको पधारे, और मन्दिरके बाहिर सवारी पहुंची, उसवक़ एक गायने बड़ी आवाज़से हम्माई (१) की. महाराणाने उस समय तो गायके बोलनेकी बाबत् किसीसे कुछ न कहा, लेकिन् जब एकलिङ्गजीके दर्शन करके पीछे क़िले कुम्भलमेरमें आये, और उसके दूसरे रोज़ दर्बार किया, तब एकाएक तलवार हाथमें उठाकर उन्होंने एक पद (कामधेनु तंडव करिय) अपने मुखसे उच्चारण किया. कुछ देर बाद जब किसी शख़्सने किसी कामके लिये अ़र्ज़ की तो, उसका जवाब कुछ न दिया, सिर्फ़ वही उपरोक्त पद कहा, और दो चार रोज़तक यही हाल रहा. तब तो सब लोग घबराये और कहने लगे, कि अब क्या किया जावे, महाराणाको तो उन्माद (जनून) होगया है. महाराणाके छोटे पुत्र रायमल्लने हिम्मत करके अपने पितासे अ़र्ज़ किया, कि यह पद आप बार बार किसलिये फ़र्माते हैं ? इसपर महाराणाने क्रोधित होकर लोगोंसे कहा, कि इसको हमारे देशसे बाहिर निकाल-दो. यह बात सुनकर रायमल्ल तो वहांसे अपने ससुराल (२) ईडरको चलेगये. अब जो लोग महाराणाके पास रहे उनमेंसे किसीकी हिम्मत नहीं, कि महाराणासे उस पदके बार बार फ़र्मानेका मत्लब पूछ सके, और चारण लोगोंको जो पहिलेसे ही ज्योतिषियोंके इस भविष्यत् कथनके विश्वासपर कि आपकी मृत्यु चारणके हाथसे होगी, मेवाड़ देशसे बाहिर निकाल दिया था, लेकिन् एक चारण राजपूत बनकर किसी सर्दारके पास रहगया था, उसने सर्दारसे कहा, कि महाराणाके कथनका मत्लब मैं समझा हूं, यदि मर्ज़ी हो तो उनका यह बार बार कहना छुड़ादूं. वह सर्दार

---

(१) बैलकी आवाज़के मुवाफ़िक़ ख़ुशीके साथ गायकी आवाज़को हम्माई कहते हैं.

(२) ईडरके राजा नारायणदासके भाई भाणकी बेटीके साथ इनकी शादी हुई थी.

उसको अपना रिश्तहदार भाई बनाकर महाराणाके पास लेगया. महाराणा अपनी आदतके मुवाफ़िक़ वही पद हरवक़ ज़बानपर लाते थे. उस चारणने दर्बारके सामने पहुंचकर मारवाड़ी भाषामें यह छप्पय छन्द कहाः—

छप्पय.

जद धरपर जोवती दीठ नागोर धरंत्ती ॥
गायत्री संग्रहण देख मन मांहि डरंत्ती ॥
सुर कोटी तेतीस आण नीरंता चारो ॥
नहिं चरंत पीवंत मनह करती हंकारो ॥
कुम्भेण राण हणिया कलम आजस उर डर ऊतरिय ॥
तिण दीह द्वार शंकर तणैं कामधेनु तंडव करिय ॥ १ ॥

यह छप्पय सुनकर महाराणाने फ़र्माया, कि तू राजपूत नहीं, किन्तु कोई चारण है, परन्तु हम तुझसे बहुत खुश हुए. तब उसने अर्ज़ की, कि मैं अस्लमें चारण ही हूं; परन्तु आपने मेरी जातिके सब लोगोंकी जागीरें छीन छीनकर उन्हें बेकुसूर देशसे निकालदिया है, इसलिये अब उनकी जागीरें उनको वापस मिलकर देशमें आनेका हुक्म होजाना चाहिये. उसकी अर्ज़के मुवाफ़िक़ हुक्म होगया, परन्तु महाराणाका चित्त विक्षेप होगया था, इस आदतको छोड़नेपर भी वह कुछ की कुछ बातें करते थे. एक दिन कुम्भलमेरके क़िलेमें कटारगढ़के उत्तरकी तरफ़ मामादेव नाम स्थानके पास कुण्डपर महाराणा बैठे थे, कि इतनेमें पीछेसे उनका बड़ा बेटा उदयसिंह पहुंचा, और उसने तलवार मियानसे निकालकर महाराणाका काम तमाम करडाला.

इन महाराणाकी बनाई हुई बहुतसी इमारतें अभीतक मौजूद हैं. कुम्भलमेरका क़िला और वहांपर कुम्भश्यामजीका मन्दिर; चित्तौड़के क़िलेपर कीर्त्तिस्तंभ, कुम्भश्यामजीका मन्दिर, लक्ष्मीनाथका मन्दिर, और रामकुण्ड इन्होंने बनवाये, कुकड़ेश्वरके कुण्डका जीर्णोद्धार करवाया और क़िलेका रास्तह जो बड़ा बिकट और पहाड़ी था उसमें चार दर्वाज़े और पड़कोटा तय्यार कराकर उसे दुरुस्त करवाया. इसके सिवा आबूपर अचलगढ़के खंडहर, बसन्तगढ़का क़िला, और कुम्भश्यामजीका मन्दिर; आरास अम्बावके पास एक क़िला; सादड़ीके पास गोडवाड़में राणपुरका जैन मन्दिर; बदनौरके पास विराटका क़िला; और एकलिङ्गजीके मन्दिरका जीर्णोद्धार आदि मिलाकर ३२ क़िले और बहुतसे देवल व .इमारतें वगैरह इनकी बनवाई हुई हैं, जिनको देखकर तअज्जुब होता है, कि एक पुश्तमें इतनी .इमारतें कैसे तय्यार हुई होंगी. नागदा, कठड़ावण, आमलखेड़ा, और भीमाणा (भुवाणा) ये चार गांव इन्होंने श्रीएकलिंगजी

भेट किये थे. यह महाराणा बड़े प्रतापी और विजयशाली होनेके सिवा पंडित भी पूरे थे. व्याकरण, छन्द, और सांगीत विद्यामें बहुत ही निपुण थे. इन्होंने संगीत-राज वार्तिक, और एकलिंगमहात्म्य वगैरह कई ग्रन्थ स्वयं बनाये थे.

अब हम महाराणा कुम्भाके वह हालात लिखते हैं, जिनका ज़िक्र उस समयकी प्रशस्तियोंके सिवाय और कहीं नहीं मिलता. उन्होंने जोगिनीपुर (१) को फ़त्ह किया, हमीर नगरको फ़त्ह करके अपनी शादी की, धान्य नगरको नष्ट किया, जनकाचल पर्वतको फ़त्ह किया, वृन्दावती (२) पुरीको जलाया, मल्लारगढ़को जलाकर उसके मालिकको क़ैद किया, पच्चीस हज़ार दुश्मनोंको मारकर रणथम्भोरका क़िला लिया, आमृदाचल पर्वतको फ़त्ह किया, हाड़ौतीको फ़त्ह किया, विशाल नगरको फ़त्ह किया, और डूंगरपुरको व सारंगपुरको लूटा.

इन महाराणाके पुत्र १-उदयसिंह, २-रायमल्ल, ३-नगराज, ४-गोपालसिंह, ५-आसकरण, ६-अमरसिंह, ७-गोविन्ददास, ८-जैतसिंह, ९-महरावण, १०-क्षेत्रसिंह, और ११-अचलदास थे.

---

(१) पृथ्वीराज रासा आदिमें यह नाम दिल्लीका लिखा है.

(२) गागरौनका नाम वृन्दावती है.

महाराणा उदयकरण.
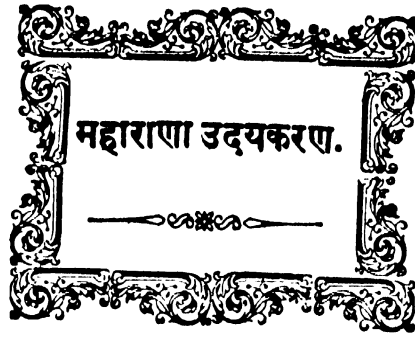
यह महाराणा, जो उदयसिंह नामसे भी मश्हूर थे, विक्रमी १५२५ [हि० ८७३ = ई० १४६८] में अपने बाप कुम्भाको मारकर गद्दीनशीन हुए. इन दुराचारी महाराणाने असत्य और अनित्य राज्यके लालचसे अपने धर्मशील, विवेकी, प्रजावत्सल, और प्रतापी पिताको मारकर सूर्यवंशियोंके कुलमें अपने आपको कलंकका टीका लगाया. यदि संसारके सर्व साधारण लोगोंपर नज़र डाली जावे, तोभी यह संभव नहीं, कि बापके बदचलन होनेकी हालतमें बेटा बापको दण्ड देवे अथवा मारडाले, जिसमें भी कुम्भा जैसे सदाचारी महाराजाधिराजको मारडालना तो बड़ा ही भारी अपराध था. इन महाराणाका गद्दीपर बैठना तो हक़दारीके सबबसे किसीने नहीं रोका, परन्तु महाराणा कुम्भाके पर्वरिश किये हुए लोगोंको इनकी वह दुष्टता कब सहन होसक्ती थी, सब लोगोंको इनसे नफ़्रत होगई. किसीने अपने बेटेको और किसीने भाईको नौकरीके लिये इनके पास भेजदिया. उदयसिंहने बहुतेरा चाहा, कि सब लोग मुझसे प्रीति रक्खें, परन्तु इस भारी अपराधसे लोगोंके दिलोंमें ऐसा रंज पैदा होगया था, कि सब लोग विरोधी बनगये. उदयसिंहने सिरोही वाले देवड़ोंको आज़ाद किया, और अपने देशमेंसे कई पर्गने आस पासके राजाओंको देदिये. आख़रकार रावत् चूंडाके पुत्र कांधल वगैरह सर्दारोंने सोच विचारकर महाराणा रायमल्लको बुलाया, जो उस समय अपनी ससुराल ईडरमें थे. ख़बर मिलते ही रायमल्ल फ़ौरन् कुम्भलमेरमें आ पहुंचे, और बाहिरसे सर्दारोंको इत्तिला दी. सबोंने अपने भाई बेटोंको समझाकर महाराणा उदयसिंहको शिकारके बहानेसे बाहिर निकाला, और महाराणा रायमल्लको क़िलेके भीतर लेलिया. विक्रमी १५३० [हि० ८७८ = ई० १४७३] में महाराणा रायमल्लको सब सर्दारोंने मिलकर गद्दीपर बिठाया. इस खुश ख़बरीको सुनकर उदयसिंहके साथ वाले लोग उसका साथ छोड़कर क़िलेमें चले आये. उदयसिंहने बाहिरसे ही उत्तरका

रास्तह लिया. पीछेसे सर्दारोंने उसके पुत्र सैंसमल्ल व सूरजमल्लको उनके कुटुम्बियों समेत निकालदिया. उस समय किसी कविने यह दोहा कहाः-

दोहा.

ऊदा बाप न मारजै लिखियो लाभै राज ॥
देस बसायो रायमल सर्‌यो न एको काज ॥ १ ॥

इनका बाक़ी हाल महाराणा रायमल्लके वृत्तान्तमें लिखाजावेगा. अब हम वह ज़िक्र लिखते हैं, जो महाराणा रायमल्लके समयके बने हुए "रायमल्लका रासा" नामी ग्रन्थमें लिखा है. यह ग्रन्थ दो सौ वर्षका लिखा हुआ मिला है, लेकिन् पूरा नहीं है. इसमें उदयसिंहका हाल इस तरहपर लिखा है, कि जब महाराणा कुम्भाको मारकर उदयसिंह गद्दीपर बैठे, तबसे ही यह बात महाराणा रायमल्लको, जो अपनी ससुराल ईडरमें थे, बहुत बुरी लगी, और उसी वर्षसे उन्होंने धावा करना शुरू किया, जिसमें दो तीन वर्षतक तो उदयसिंहकी फ़ौजसे कहीं कहीं मुक़ाबलह होता रहा, अन्तमें रायमल्लने जावरपर अपना क़बज़ह करलिया, जहां चांदी और सीसेकी खान और एक बड़ा क़स्बह था. फिर रायमल्लने कुछ लोगोंको एकट्ठा करनेके बाद श्रीएकलिंगजीकी पुरीमें आकर मेवाड़के कई सर्दारोंको बुलाया. यह बात उदयसिंहको मालूम हुई, इसपर वह १०००० फ़ौज लेकर रायमल्लसे मुक़ाबलह करनेको रवानह हुआ, और दाड़मी ग्राममें दोनों दलोंका मुक़ाबलह हुआ, जिसमें दोनों तरफ़के बहादुरोंने खूबही लड़ाई की. आख़रको महाराणा रायमल्लकी फ़त्ह हुई, और उदयसिंह भाग निकले. उनके हाथी, घोड़े, और नक़ारे, निशान रायमल्लने छीन लिये. फिर उदयसिंह जावीके क़िलेमें जाघुसे, और रायमल्लने पीछेसे पहुंचकर उस क़िलेको फ़त्ह करलिया, और वहांसे पानगढ़के क़िलेपर हमलह किया, जहांका चहुवान क़िलेदार उदयसिंहका तरफ़दार था. उसको फ़त्ह करके रायमल्लने चित्तौड़को जाघेरा, और बहुत बड़ी लड़ाई होनेके बाद प्रभातमें चित्तौड़का क़िला भी फ़त्ह होगया. उदयसिंह भागकर कुम्भलमेरके क़िलेमें जाघुसे. फिर तो बागड़, छप्पन, मारवाड़, खैराड़ और बूंदी वग़ैरहके सब सर्दार लोग महाराणा रायमल्लकी फ़ौजमें आ हाज़िर हुए, और कुम्भलमेरको जाघेरा. जहांपर कुछ लड़ाई होनेके बाद उदयसिंह निकल भागे, और कुल मेवाड़में महाराणा रायमल्लका राज्य होगया. उदय-सिंहके निकालनेका वृत्तान्त महाराणा रायमल्लके समयकी श्री एकलिंगजीके दक्षिणद्वारकी प्रशस्तिके ६६ वें श्लोकमें भी लिखा है.

महाराणा रायमल्ल.

यह महाराणा विक्रमी १५३० [हि० ८७८ = ई० १४७३] में गद्दीनशीन हुए, और उदयसिंह कुम्भलमेरसे भागकर सोजतको चलेगये, जहांपर कुंवर बाघा राठौड़की बेटीके साथ उनकी शादी हुई थी. उनके बाल बच्चे भी उनसे वहीं जामिले. वहांसे उदयसिंह अपने दोनों बेटों सूरजमल्ल और सैंसमल्ल समेत मांडूके बादशाह ग़यासुद्दीन ख़ल्जीके पास गये. बादशाहने इनका कुल हाल सुनकर मदद देनेका इक़ार किया, और उदयसिंहने अपनी बेटीकी शादी बादशाहसे करना कुबूल करलिया. जब उदयसिंह बादशाहसे विदा होकर अपने डेरेको आने लगे, उस समय रास्तेमें उनपर एकाएक बिजली आगिरी, जिससे बापके मारनेका फल पाकर दूसरी दुन्याको कूच किया. इनके मरनेके बाद सूरजमल्ल और सैंसमल्लने बादशाह ग़यासुद्दीनसे अर्ज़ की, कि आप मदद करके मेवाड़का राज्य हमको वापस दिला-देवें. तब बादशाह अपनी जर्रार फ़ौज लेकर उनकी मददके वास्ते चित्तौड़पर चढ़ा. यह आपसकी फूट ग़यासुद्दीनके लिये फ़ायदहमन्द हुई; क्योंकि आपसके लड़ाई झगड़ोंके कारण रियासत नाताकत होगई थी, और राज्यका जो विभव उदयसिंहके हाथमें था, उसको वह अपने साथ ही लेगये. इसके सिवा मुल्ककी आमदनी भी कम होगई थी, तो ऐसी हालतमें एक ज़बरदस्त दुश्मनका मुक़ाबलह करके उसपर फ़तह पाना ईश्वरके भरोसेपर ही समझना चाहिये.

ग़यासुद्दीनने अपनी ज़बरदस्त फ़ौजसे क़िले चित्तौड़को आघेरा, और शक जातिके (मुसल्मान) लोगोंने क़िलेपर बड़े बड़े हमले किये, जिसमें उन लोगोंका अफ़्सर मारागया. फिर महाराणा रायमल्ल अपनी फ़ौजको दुरुस्त करके क़िलेसे बाहिर निकले और उन्होंने बादशाह ग़यासुद्दीनकी फ़ौजपर हमलह किया. इस हमलहमें सुल्तानने भागकर मांडूका रास्तह लिया, और उसकी कुल फ़ौज तितर-

बितर होगई. इस फ़त्हके हालकी तस्दीक़ श्रीएकलिङ्गजीके दक्षिण द्वारकी प्रशस्तिके श्लोक ६८-७१ से होती है.

इस अरसेमें महाराणा रायमल्ल तो बेखटके होकर आरामसे राज्य करने लगे, क्योंकि ग़यासुद्दीन जैसे बड़े शत्रुके पराजय होनेसे आसपासके सब दुश्मन उनसे दबगये थे; लेकिन् ग़यासुद्दीन इस शिकस्तको सहन न कर सका. वह धीरे धीरे लड़ाईका सामान एकट्ठा करता रहा, और कुछ अरसे बाद आप तो मांडूके क़िलेमें रहा, और अपने सेनापति व रिश्तेदार ज़फ़रखांको अपनी सारी ताक़तवर फ़ौज साथ देकर मेवाड़की तरफ़ रवानह किया. उसने आकर मेवाड़के पूर्वी हिस्सहमें लूट मार मचाई; तब हाड़ा चाचकदेवने, जो उस समय बेगूंका जागीरदार था, महाराणाके पास हाज़िर होकर फ़र्याद की, कि ज़फ़रखां मलिकने फ़ौज लाकर कुल मुल्कको बर्बाद करदिया है, और कोटा, भैंसरोड़ व सोपरतक अपने थानेदार भी मुक़र्रर करदिये हैं. यह सुनकर महाराणा रायमल्लने ज़फ़रखांसे मुक़ाबलह करनेके वास्ते फ़ौज तय्यार की. इस लड़ाईका बयान "महाराणा रायमल्लका रासा" नामी ग्रन्थमें लिखा है, जिसमें जिन सर्दारों तथा पासबानों वग़ैरहको जो घोड़े दियेगये उनके नाम लिखे हैं, वे नीचे दर्ज कियेजाते हैं:-

सर्दारोंके नाम.	घोड़ोंके नाम.	सर्दारोंके नाम.	घोड़ोंके नाम.
कुंवर कल्याणमल्ल (१).	सोहन मुकट.	सिंह सूवावत.	सीचाणा.
कुंवर पृथ्वीराज.	परेवा.	रावत् भवानीदास सोढा.	भूंभरघो.
कुंवर जयमाल.	जैत तुरंग.		
कुंवर संग्रामसिंह.	जंगहत्थ.	रावल उदयसिंह.	उच्चैःश्रवा.
कुंवर पत्ता.	पंखराज.	ब्रह्मदास.	बलोंहा.
कुंवर रामसिंह.	रेवंत पसाव.	कीता.	काछी.
रावत् कांधल चूंडावत.	मृग.	रामदास पुरोहित.	मनमेल.
रावत् सारंगदेव अजावत.	सिंहला.	राय विनोद प्रधान.	अलवा.
		अचला.	अमर ढाल.
रावत् सूरजमल्ल क्षेमकरणोत.	सूरज पसाव.	सांवल.	शंकर पसाव.

(१) मालूम होता है, कि यह गागरौनके खीची राजाका बेटा था.

सर्दारोंके नाम.	घोड़ोंके नाम.	सर्दारोंके नाम.	घोड़ोंके नाम.
भीमसिंह भाणावत.	नरिन्द.	भामा.	भगवती पसाव.
सावन्तसिंह जोधावत.	रिपुहण.	बणबीर हाड़ा.	विनोद.
पर्वतसिंह राठौड़.	हयथाट.	भाखर चन्द्रावत.	चित्रांगद.
सुल्तानसिंह हाड़ा.	शृंगार हार.	ऊदा भांजावत.	नैनसुख.
महेश.	मेघनाद.	राव जयब्रह्म वीरमदेवोत.	मोर.
देवीदास.	हयदीप.	सारंग रायमल्लोत.	सैंसरूप.
देवड़ा पूंजा.	भ्रमर.	नरपाल.	करड़ो.
रघुनाथ गौड़.	लाडो.	भारमल्ल.	पंचरण.
सगता (शक्ता) गेपावत.	गजकेसरी.	रघुनाथ सोलंखी.	रींछड़ो.
नाथू रायमल्लोत.	जगरूप.	सोलंखी मेघ खेतावत.	सपंख.
रामदास.	पेखणा.	रघुनाथ सोलंखी.	हीरो.
सूरजसेन सोलंखी.	कोड़ीधज.	बाला.	बोर.
नेतसी.	कमल.	चरड़ा.	सांवकरण.
जोगायत डूंगरोत.	जशकलश.	मूला.	मनवश.
सांवल सोलंखी.	हाथीराव.	लोका.	लाखीणो.
हंसा बालणोत.	हंस.	भीमसिंह.	रूपरेख.
राव सुल्तान.	आरबी.	पुंवार राघव महपावत.	लटियालो.
लोला.	लाडलो.	करणा.	सहजोग.
सांखला कांधल मेहावत.	दलभंजन.	रायसिंह.	सालहो.
सिंह समरावत.	सारंग.	सोढा चाचावत.	नीलो.
चरड़ा.	हयविनोद.	कर्णसिंह डोडिया.	चंचलो.
तेजसी.	तरंजड़ा.	तम्बकदास बाघेला.	छींपड़ो.
नारायणदास कर्मसिंहोत.	निर्मोलक.	हुल्ल दूदा लोहटोत.	हीरो.
भाखर हाड़ा.	सिंहला.	हाजा.	हरलंगल.
शत्रुसिंहका पोता. हटीसिंह हाड़ा.	बांदरा.	महासाणी महेश.	माणक.
तेजा.	तेजंगल.		

सर्दारोंके नाम.	घोड़ोंके नाम.	सर्दारोंके नाम.	घोड़ोंके नाम.
जोगा राठौड़.	सायर.	मेरा.	जगमोहन.
छपन्या राठौड़ भाण.	रेणायर.	रणभमशाह सहणावत.	सालहा.
मालदेव.	मनरंजन.	राजसिंह रामसिंहोत.	सोहन.
सूवा वीसावत.	साहणदीप.	कायस्थ हंसराज कालावत.	नीलड़ो.
सगता (शक्ता).	सारंग.	कायस्थ कान्ह.	केवड़ो.
हरदेह.	हंसमन.	निशानदार.	गरुड़.
जैसा बालेचा.	बिहंग.	छत्रधारी.	निकलंक.
खेमा.	चित्रंग.	तम्बोलदार.	सुचंग.
रावत् जोगा.	रणधवल.	पाणेरी.	मोतीरंग.
पर्वत.	पारावत.	हरिदास कपड़दार.	पदार्थ.
भांडा सींधल.	दल श्रृंगार.	राव दूल्हा.	रेवंत.
खंगार.	कटारमल्ल.	आयण महासाणी.	बाल सिरताज.
हरराज.	रूपड़ो.		

इसतरहपर सब राजपूत सर्दारोंको महाराणाने घोड़े दिये, और आप रूपमल्ल घोड़ेपर सवार होकर आसेर, रायसेन, चन्देरी, नरवर, बूंदी आमेर, सांभर, अजमेर, चाटसू, लालसोट, मारहोट, और टोडा वग़ैरहके राजाओं व सर्दारों समेत चित्तोड़से कूच करके मांडलगढ़की तरफ़ आये, जहां मलिक ज़फ़रखांसे लड़ाई शुरू हुई. इस लड़ाईमें बहुतसे राजपूत काम आये, लेकिन् मुसल्मानोंके सैकड़ों सर्दारोंके मारेजानेपर ज़फ़रखां भाग निकला, और महाराणाकी फ़ौजने उसका पीछा किया. लिखा है, कि इस सेनाने मांडूके पास ख़ैराबाद नामी एक गांवको जालूटा, जहांपर ग़यासुद्दीनने महाराणाके पास अपने मोतमदोंके साथ पेशकश भेजा.

ऊपर लिखा हुआ हाल महाराणा रायमल्लके रासासे लिखा गया है, जो उसी ज़मानहका बना हुआ है, और जिसकी साक्षी उन्हीं महाराणाके ज़मानहकी श्रीएकलिंगजीके दक्षिण द्वारकी प्रशस्तिके श्लोक ७७ – ७८ देते हैं.

इसके बाद एक दिन चित्तोड़पर ग़यासुद्दीन [illegible] मोतमद आया. महाराणा रायमल्ल उससे सुलहकी बातें कर रहे थे, कि इतनेमें महाराणाके बड़े कुंवर पृथ्वीराज आये, और महाराणाको मोतमदसे आजिज़ी (नम्रता) की बातें करते हुए सुनकर उनको गुस्सह आया, और कहा, कि हुज़ूर क्या मुसल्मानोंसे दबकर ऐसी आजिज़ी

करते हैं ? इस बातके सुनते ही वह मोतमद गुस्से होकर उठ खड़ा हुआ, और अपने डेरेपर जाकर मांडूकी तरफ़ रवानह होगया. मांडू पहुंचकर उसने कुल हाल गयासुद्दीनको कह सुनाया. गयासुद्दीन अगली बातसे तो जलता ही था, यह सुनकर और भी गुस्सेमें आया, और बड़ी जर्रार फ़ौज अपने साथ लेकर चित्तौड़की तरफ़ रवानह हुआ. इस तरफ़से राजकुमार पृथ्वीराज भी अपने राजपूतोंको लेकर चढ़े, और मेवाड़ व मारवाड़की सीमापर दोनों दलोंका मुक़ाबलह हुआ. तमाम दिन बड़ी बहादुरीके साथ दिल खोलकर दोनों ओरकी फ़ौजें लड़ती रहीं, और शामको दोनों फ़ौजें हटकर अपने अपने डेरोंमें आईं. फिर रातके वक़्त कुंवर पृथ्वीराजने सोचा, कि मैंने इस बादशाहको पकड़कर हाज़िर करनेके लिये अपने पितासे कहा था, परन्तु ऐसा करदिखाना मुश्किल मालूम होता है, इसलिये अब कोई धोखेकी लड़ाई करना चाहिये. यह विचारकर उन्होंने अपनी फ़ौजमेंसे अच्छे अच्छे पांच सौ राजपूत चुने, और उनको अपने साथ लेकर मालवी बादशाहके डेरोंकी तरफ़ रवानह हुए. दस दस पांच पांच राजपूत जुदे जुदे रास्तेसे बादशाही फ़ौजमें जा घुसे, और शाही डेरोंके पास पहुंचकर एकदम हमलह करदिया, और डेरोंमें जो बादशाही सिपाही थे उनको क़त्ल करके बादशाहको गिरिफ्तार करलिया. जब बादशाहकी फ़ौज चारों तरफ़से कुंवर पृथ्वीराजपर हमलह करनेको तय्यार हुई, तब गयासुद्दीन, जो राजकुमारके क़बज़हमें था, अपनी फ़ौजके सर्दारोंको बुलन्द आवाज़से पुकारकर कहने लगा, कि अगर तुम लोग इन राजपूतोंपर हमलह करोगे, तो ये मुझको हर्गिज़ जीता न छोड़ेंगे, मेरे ख़ैरख्वाह हो तो कोई भी मत बोलो. अपने मालिकके यह वचन सुनकर गयासुद्दीनकी फ़ौजके सर्दार ख़ामोश होगये, और राजकुमार पृथ्वीराज गयासुद्दीनको गिरिफ़्तार करके चित्तौड़ लेआये, अर्थात् अपने बापके सामने जो वचन कहे थे वे सच्चे करदिखाये. फिर एक महीनेके बाद गयासुद्दीनको कुछ दण्ड लेकर छोड़दिया. यह बात ख्यातिकी पोथियोंमें लिखी है, तारीख़ फ़िरिश्तह वगैरह फ़ार्सी किताबोंमें इसका कुछ भी ज़िक्र नहीं है, बल्कि फ़िरिश्तह और दूसरी कई फ़ार्सी किताबोंमें लिखा है, कि गयासुद्दीन गद्दीनशीन होनेके बाद बाहिर ही नहीं निकला, वह ऐश व .इश्रतमें मश्गूल होगया.

महाराणा रायमल्लके १३ कुंवर और २ राजकुमारियां थीं, जिनके नाम ये हैं :- १- पृथ्वीराज, २- जयमल्ल, ३- संग्रामसिंह, ४- पत्ता, ५- रामसिंह, ६- भवानीदास, ७- कृष्णदास, ८- नारायणदास, ९- शंकरदास, १०- देवीदास, ११- सुन्दरदास, १२- ईसरदास, और १३- वेणीदास; १- आनन्द कुंवरबाई, और २- दमाबाई, जो सिरोहीके जगमाल देवड़ाको व्याही गई.

एक दिनका ज़िक्र है, कि राजकुमार पृथ्वीराज, जयमल्ल और संग्रामसिंह, तीनों भाइयोंने एक विद्वान ज्योतिषीको अपनी अपनी जन्मपत्रियां दिखलाई. जन्मपत्रियोंको देखकर उस भविष्यत् वक्ताने कहा, कि ग्रह तो पृथ्वीराज और जयमल्लके भी अच्छे पड़े हैं, परन्तु मेवाड़का राज्य संग्रामसिंह करेगा. इसपर दोनों भाइयोंने नाराज़ होकर छोटे भाई संग्रामसिंहके मारनेका इरादह किया, और पृथ्वीराजने तलवारकी हूल मारी, जिससे संग्रामसिंहकी आंख फूटगई. इसी अरसेमें इनके काका सूरजमल्ल आगये, उन्होंने दोनों भाइयोंको ललकारकर कहा, कि यह क्या दुराचार करते हो ! सूरजमल्लको देखकर आपसका विरोध बन्ध होगया, और सूरजमल्लने सांगाको अपने मकानपर लाकर पट्टी वगैरहसे आंखका इलाज किया. थोड़े ही दिन पीछे भाइयोंमें आपसका विरोध बढ़ता देखकर सूरजमल्लने अपने भतीजोंको समझाया, कि तुम आपसमें क्यों कटते मरते हो, ज्योतिषियोंके कहनेपर अमल नहीं करना चाहिये. अलावह इसके अभीतक महाराणा रायमल्ल राज्य करते हैं, इसलिये ऐसा विचार करना ही बुरी बात है; इसके उपरान्त यदि तुम राज्य मिलनेकी भविष्यत् वार्ता ही सुनना चाहते हो, तो श्रीएकलिङ्गजीसे पूर्व नाहरमगराके पास भीमल गांवमें तुंगल कुलके चारणकी बेटी बीरी नामी देवीका अवतार रहती है, उससे दर्याफ्त करो. तब यह बात सुनकर उक्त तीनों भाई अपने काका सूरजमल्ल सहित नाहरमगराकी तरफ़ रवानह हुए, और भीमल गांवमें पहुंचकर बीरीके यहां गये. बीरीने कहा, कि आज तो तुम अपने डेरेपर जाओ, कल सुब्ह ही देवीके मन्दिरमें आना. यह सुनकर उस वक् तो ये अपने डेरेपर चले आये, और दूसरे दिन सुब्ह होते ही देवीके मन्दिरमें गये. देवीकी मूर्तिके दर्शन करके पृथ्वीराज तो एक तरफ़ एक सिंहासन पड़ा था उसपर जा बैठा, और उसी सिंहासनके कोनेपर जयमल्ल भी बैठगया, और सिंहासनके सामने एक गादी बिछी थी उसपर सांगा और गादीके कोनेपर सूरजमल्ल बैठगये. थोड़ी देरके बाद वह शक्तिका अवतार (बीरी) आई. उसको सबने उठकर प्रणाम किया, और कहा, कि बाई हम एक कामके वास्ते आपके पास आये हैं. तब बीरीने कहा, कि बीर हमने तुम्हारे आनेका कारण पहिलेहीसे समझलिया, और उसका जवाब भी होगया, परन्तु तुमको कहना बाक़ी है इसलिये कहती हूं, कि यह गादी जो मैंने मेवाड़के मालिकके लिये बिछाई थी उसपर तो संग्रामसिंह बैठगया, जो इस मुल्कका मालिक होगा, और गादीके कोनेपर सूरजमल्ल बैठा है, इसलिये इस मुल्कके थोड़ेसे कोनेका मुख़्तार यह होगा, और पृथ्वीराज व जयमल्ल दोनों दूसरोंके हाथसे मारेजावेंगे. बीरीके मुखसे ये वचन निकलते ही पृथ्वीराज और जयमल्ल दोनोंने संग्रामसिंहपर शस्त्र चलाना शुरू किया, और इधरसे संग्रामसिंह व सूरजमल्ल भी तय्यार हुए. अन्तमें नतीजह

यह हुआ. कि पृथ्वीराज और सूरजमल्ल तो ज़ियादह घायल होकर वहीं गिरगये, और सांगा अपने घोड़ेपर सवार होकर भागा. जयमल्लने सोचा, कि पृथ्वीराज और सूरजमल्ल तो मरे ही होंगे, अब संग्रामसिंह बाक़ी रहा है, यदि इसको मारडालूं, तो राज्यका मालिक मैं ही रहूंगा, और देवीके वचन भी असत्य होजायेंगे. यह मन्सूबा करके वह अपने साथी राजपूतोंको साथ लेकर संग्रामसिंहके पीछे चढ़ दौड़ा. संग्रामसिंह एक दिन और एक रातमें सेवंत्री गांवमें पहुंचा, जहां महाराणा हमीरसिंहका बनाया हुआ रूपनारायणका प्रसिद्ध मन्दिर है. वहांपर राठौड़ बीदा जैतमल्लोत मारवाड़से दर्शन करनेको आया था, उसने सांगाको खूनसे तर बतर देखकर घोड़ेसे उतारा और उसके घावोंपर पट्टी बांधी. इसी अरसेमें जयमल्ल भी अपने साथियों सहित आपहुंचा, और बीदासे कहा, कि सांगाको हमारे सुपुर्द करदो, नहीं तो तुम भी मारेजाओगे. बीदाने सांगाको सुपुर्द करनेसे इन्कार किया. इसपर जयमल्लने लड़ाई शुरू करदी, तब बीदाने सांगाको तो मारवाड़की तरफ़ रवानह किया, और आप वहां लड़कर मारागया. बीदाकी औलादमें कैलवा वाले हैं. निदान सांगाके न मिलनेसे जयमल्ल निराश होकर कुम्भलमेरके क़िलेमें चला आया, और इसी अरसेमें पृथ्वीराज और सूरजमल्लके भी घाव अच्छे होगये. पृथ्वीराजको महाराणा रायमल्लने कहलाभेजा, कि ऐ दुराचारी पुत्र तू मुझको आकर मुंह मत बतला, क्योंकि मेरे जीते जी ही राज्यके अर्थ तैने ऐसा क्लेश बढ़ाया, और मेरा लिहाज़ कुछ भी नहीं किया, इसलिये तू चित्तौड़पर मत आ, जहां तेरी खुशी हो वहां रह. इस शर्मिन्दगीसे राजकुमार पृथ्वीराज कुम्भलमेरमें जारहे.

अब राजकुमार संग्रामसिंह (सांगा) का हाल सुनिये. जैसे इंग्लिस्तानके मश्हूर बादशाह एल्फ्रेडने एक गडरियेके यहां भेड़ चराकर तक्लीफ़के दिन गुज़ारे, और रोटी जल-जानेके क़ुसूरमें उस गडरियेकी औरतके मुंहसे बहुत कुछ बुरा भला सुना, उसी तरह संग्रामसिंहने भी अपना घोड़ा छोड़कर पृथ्वीराज और जयमल्लके भयसे मारवाड़में जाकर एक गडरियेके यहां थोड़े दिनतक विश्राम किया, और वहांसे निकलकर अजमेरके नज़्दीक श्रीनगरके ठाकुर कर्मचन्द पुंवारके यहां जारहे, जो एक बड़ा लुटेरा राजपूत था. इसके साथ दो दो तीन तीन हजार राजपूत चढ़ते थे. उन्हीं राजपूतोंमें सांगा भी अपना वेष बदले हुए विदेशी राजपूतके नामसे जारहे.

अब हम कुछ हाल कुंवर पृथ्वीराज और उनके काका सूरजमल्लका लिखते हैं, जो इस तरहपर है, कि कुम्भलमेरके पास गोड़वाड़के ज़िलेमें मादड़ेचा बालेचा वगैरह पालवी राजपूत हुक्म नहीं मानते थे. कुंवर पृथ्वीराजने उनपर धावा करना

शुरू किया, और आख़रको सब राजपूत उक्त राजकुमारके फ़र्मांबर्दार बनगये, लेकिन् देवसूरीके मादड़ेचा राजपूत क़ाबूमें नहीं आये, बल्कि दंगा फ़साद व लड़ाई करते रहे. कुंवर पृथ्वीराजने भी उनपर कई हमले किये, मगर देवसूरीका क़िला मज़्बूत होनेके सबब क़बज़हमें न आसका. उसी ज़मानहमें मादड़ेचोंके सम्बन्धी सोलंखी राजपूतों (जो सिरोहीके गांव लांछमें आरहे थे) और सिरोहीके राव लाखाके आपसमें दुश्मनी पैदा होजानेके कारण राव लाखाने सोलंखियोंपर कई हमले किये, परन्तु रावके पांच सात हमले सोलंखी भोजने मारदिये. इसपर राव लाखा शर्मिन्दह होकर ईडरके राजा भाणकी मदद लाया, और लांछके सोलंखियोंपर चढ़ा. इस लड़ाईमें सोलंखी भोज मारागया, और उसका बेटा रायमल्ल और रायमल्लके बेटे शंकरसी, सामन्तसी, सखरा, और भाण वहांसे भागकर कुंवर पृथ्वीराजके पास कुम्भलमेर पहुंचे. राजकुमार पृथ्वीराजने इन लोगोंको कहा, कि हम तुमको देवसूरीका पट्टा देते हैं, तुम मादड़ेचोंको मारकर निकाल दो, और वहां अपना अमल करलो. इसपर सोलंखी रायमल्लने अर्ज़ की, कि मादड़ेचे तो हमारे सम्बन्धी हैं, मेरे लड़के उनके भानूजे हैं. राजकुमार पृथ्वीराजने कहा, कि अगर तुमको ठिकाना लेना है, तो यही मिलेगा. तब लाचार सोलंखी रायमल्लने भी राजकुमारका कहना मन्ज़ूर किया, और प्रथम अपने लड़के शंकरसी व सामन्तसीको उनकी ननसाल देवसूरी भेजकर पीछेसे आप भी बहुतसे लोगोंके साथ वहां पहुंचा. भीतरसे रायमल्लके लड़के शंकरसी और सामन्तसीका इशारह पाकर लोग घुस पड़े, और मादड़ेचा सांडा वग़ैरह कितनेही राजपूतोंको मारकर क़िला फ़त्ह करलिया. क़िला देवसूरी फ़त्ह करके रायमल्लने कुंवर पृथ्वीराजसे जाकर मुज्रा किया; तब राजकुमारने १४० गांव सहित देवसूरीका पट्टा उसको लिखदिया, जिसकी तफ़्सील यह है:-- आगरया गांव १२, बांसरोट गांव १२, धामणया गांव १२, सेवंत्री गांव १२, देवसूरी गांव १२, ढोलाणा गांव १२, आना, कर्णवास, बांसड़ा, मांडपुरा, केशूली, गांथी, गोडला और चावड़्या वग़ैरह. रायमल्लके बेटे शंकरसीकी औलाद जीलवाड़ा गांवमें और सामन्तसीकी औलाद रूपनगरमें मौजूद है, जो मेवाड़के बत्तीस सर्दारोंमें गिने जाते हैं.

जब कुंवर पृथ्वीराजने गोड़वाड़ व मगरा वग़ैरह ज़िलोंमें अपनी हुकूमत अच्छी तरह जमाली और उनके छोटे भाई जयमल्ल भी उन्हींके पास मौजूद थे, उस समय लल्लाख़ां पठानने सोलंखियोंसे टोडा छीनलिया, जिससे सोलंखी लोग चित्तौड़पर चले आये. महाराणाने राव श्यामसिंह सोलंखीको बदनोरका पट्टा दिया. जब राव श्यामसिंहका देहान्त होगया और राव सुल्तान बदनोरमें गद्दीनशीन हुआ, तब

कुम्भलमेरसे कुंवर जयमल्लने राव सुल्तानको कहलाया, कि तुम्हारी बहिन खूबसूरत सुनी जाती है, यदि पहिले मुझे दिखलादो तो मैं उसके साथ शादी करूं. राव सुल्तानने जवाब दिया, कि राजपूतकी बेटी पहिले नहीं दिखाई जाती, और आपको शादी करना मन्जूर हो, तो हमको इन्कार नहीं है. इसपर जयमल्लने कहा, कि मैंने कहा उसी तरह करना होगा. तब राव सुल्तानने अपने साले सांखला रत्नसिंहको भेजकर जयमल्लसे कहलाया, कि हम परदेशी राजपूतोंको आपके पिताने मुसीबतके वक़्में रक्खा है, इसलिये हम नम्रताके साथ कहते हैं, कि ऐसा नहीं करना चाहिये; लेकिन् जयमल्लने उनके कहनेपर कुछ भी ख़याल नहीं किया, और एकदम चढ़ाईकी तय्यारी करदी. यह कुल हाल सांखला रत्नसिंहने अपने बहनोई राव सुल्तानसे मुफ़स्सल तौरपर जा कहा. तब राव सुल्तानने महाराणाका नमक खानेके ख़यालसे लड़ाई करना तो उचित नहीं समझा, और कुल सामान छकड़ोंमें भरकर अपने सब आदमियों समेत बदनौर छोड़कर चलदिया. इधरसे कुंवर जयमल्ल भी अपने राजपूतों सहित बदनौर पहुंचा, परन्तु गांव ख़ाली पाया, तब वहांसे रवानह होकर राव सुल्तानके पीछे लगा, और बदनौरसे सात कोसके फ़ासिलहपर गांव आकड़सादाके पास सुल्तानके लोगोंको जालिया. मशुअ़लोंकी रौशनी देखकर राव सुल्तानकी ठकुरानी सांखलीने अपने भाई रत्नसिंहको कहा, कि दुश्मन आपहुंचे हैं. यह सुनते ही रत्नसिंह अपने घोड़ेका तंग संभालकर पीछा फिरा, और जयमल्लके लश्करमें आकर कुंवर जयमल्लको मशुअ़लकी रौशनीसे घुड़बहलमें बैठा देखकर कहा, कि कुंवर साहिब सांखला रत्नाका मुजरा पहुंचे, और यह कहते ही बर्छीसे कुंवर जयमल्लका काम तमाम करडाला. जयमल्लके साथके राजपूतोंने भी रत्नसिंहको उसी जगह मारलिया. जयमल्लकी दाह क्रिया उसी मक़ामपर कीगई जहांपर कि वह मारागया. जोकि जयमल्लने यह काम महाराणा रायमल्लके बिना हुक्म किया था, इस वास्ते जयमल्लके राजपूतोंने सोलंखियोंका पीछा छोड़दिया, और कुम्भलमेरको लौट आये. फिर राव सुल्तानने बदनौर आकर सब हालकी अ़र्ज़ी महाराणा रायमल्लके दर्बारमें भेजदी. तब महाराणाने फ़र्माया, कि उसी कुपूतका क़ुसूर था, राव सुल्तानका कुछ क़ुसूर नहीं है. इसके बाद कुंवर पृथ्वीराजको सुल्तानने बड़ी नम्रताके साथ कहलाया, कि आप मेरी बहिन तारादेके साथ अपनी शादी करलें, जिसको राजकुमारने मन्जूर करके शादी करली.

शादी होनेके बाद सोलंखियोंने राजकुमारसे अ़र्ज़ की, कि हमारा वतन लल्लाखां पठानने छीनलिया है, वह आप मदद करके पीछा दिलादेवें. सोलंखियोंके अ़र्ज़ करनेपर ५०० सवार लेकर कुंवर पृथ्वीराजने तुरन्त ही टोडेपर चढ़ाई करदी, उस

तरफ़से लल्लाख़ां पठान भी अपनी जमइयत लेकर मुक़ाबलहको आया, और लड़ाई हुई, जिसमें लल्लाख़ां मारागया. राजकुमारने टोडा फ़त्ह करके राव सुल्तानके सुपुर्द किया. उन दिनों अजमेरमें बादशाही सूबेदार मुसल्मान था. यह हाल सुनकर वह लल्लाख़ांकी मददके वास्ते अजमेरसे रवानह हुआ. कुंवर पृथ्वीराजने उसको आता हुआ सुनकर अजमेरके नज़्दीक ही जालिया; वहांपर भी लड़ाई हुई, जिसमें सूबेदार मारागया, और कुंवर पृथ्वीराजने फ़त्ह पाई. इस लड़ाईमें बहुतसे राजपूत मारेगये. कुंवर पृथ्वीराज वापस लौटकर कुम्भलमेरको आये. इसी अरसहमें महाराणा मोकलका पोता और क्षेमकरणका बेटा रावत् सूरजमल्ल और महाराणा लाखाका पोता रावत् अज्जाका बेटा रावत् सारंगदेव दोनोंने महाराणा रायमल्लसे कहा, कि दस्तूरके मुवाफ़िक़ हमको जागीर मिलनी चाहिये. तब महाराणा रायमल्लने भैंसरोड़का पर्गनह सूरजमल्ल और सारंगदेवको जागीरमें देदिया. यह बात सुनकर राजकुमार पृथ्वीराजने महाराणा रायमल्लको लिखा, कि हुज़ूरने इन दोनोंको पांच लाखकी जागीर देदी; अगर इसी तरह छोटोंको इतनी जागीरें मिलतीं, तो अबतक हुज़ूरके पास मेवाड़का कुछ भी हिस्सह बाक़ी नहीं रहता. इसपर महाराणा रायमल्लने राजकुमारके नाम रुक़्आ लिखा, कि हमने तो भैंसरोड़गढ़ देदिया, अगर तुमको यह बात बुरी मालूम हुई हो, तो तुम और वे आपसमें समझलो. महाराणा रायमल्ल उस वक़्त कुंवर पृथ्वीराजका लिहाज़ रखते थे, और रावत् सूरजमल्ल और सारंगदेवसे भी दबते थे, इसलिये उनको तो जागीर देदी, और इनको ऐसा जवाब लिखदिया. महाराणाका रुक़्आ वांचते ही कुंवर पृथ्वीराजने अपने दो हज़ार सवारोंको साथ लेकर भैंसरोड़गढ़पर चढ़ाई करदी, और गढ़के दर्वाज़े खुले पाकर भीतर घुसगये. जिन लोगोंने सामना किया उनको मारा और बाक़ी लोगोंके शस्त्र छीनलिये. रावत् सूरजमल्ल और सारंगदेव क़िलेसे भाग निकले. कुंवर पृथ्वीराजने इन दोनोंके औरत व बच्चोंको क़िलेसे निकालदिया. सूरजमल्ल और सारंगदेव दोनों मेवाड़से निकलकर मांडू पहुंचे, और वहां जाकर बादशाह नासिरुद्दीन ख़ल्जीसे मदद चाही. बादशाहने दुश्मनके घरकी फूट देखकर इन दोनोंको अपनी जमइयतके साथ बहुत कुछ ख़ातिर व तसल्ली करके मेवाड़पर भेजा. महाराणा रायमल्लने भी इनकी आमद सुनकर अपनी फ़ौजको दुरुस्त किया. रावत् सूरजमल्ल और सारंगदेवने अपने औरत व बच्चोंको तो सादड़ीमें रक्खा, और आप अपने राजपूतों और शाही फ़ौजको साथ लेकर चित्तौड़की तरफ़ रवानह हुए. इधरसे महाराणा रायमल्लने भी चढ़ाई की. गम्भीरी नदीपर दोनों दलोंका मुक़ाबलह हुआ, जिसमें दोनों तरफ़के बहादुरोंने दिल खोलकर ख़ूब लड़ाई की, और महाराणा रायमल्ल

ज़रूमी हुए. क़रीब था, कि सूरजमल्ल और सारंगदेव फ़त्हकी नामवरी हासिल करते, लेकिन् कुंवर पृथ्वीराज इन लोगोंके आनेकी ख़बर सुनकर कुम्भलमेरसे रवानह होकर ऐन लड़ाईके वक़्में आ पहुंचे. सूरजमल्ल, सारंगदेव और पृथ्वीराज आपसमें खूब लड़कर ज़रूमी हुए, और फ़त्हका झंडा पृथ्वीराजके हाथमें रहा. सूरजमल्ल और सारंगदेव भागकर अपने डेरोंमें गये, और महाराणा रायमल्लको कुंवर पृथ्वीराज पालकीमें डालकर डेरोंमें लाये. दोनों तरफ़के लोग अपने अपने घायलोंको संभालकर डेरोंमें लेगये, और मर्हम पट्टी कीगई. राजकुमार पृथ्वीराजने महाराणाके ज़रूमोंका .इलाज किया, और पहर रात गये घोड़ेपर सवार होकर अकेले रावत् सूरजमल्लके डेरोंमें पहुंचे. सूरजमल्लके ज़रूमोंपर भी पट्टियां बंधी थीं, वह पृथ्वीराजको आते हुए देखकर उठ खड़ा हुआ. पृथ्वीराजने कहा, कि काकाजी खुश हो ? सूरजमल्लने जवाब दिया, कि तुम्हारे मिलनेसे ज़ियादह खुशी हुई. पृथ्वीराजने कहा, कि काकाजी, मैं भी श्रीदाजीराज (१) के ज़रूमोंपर पट्टी बांधकर आया हूं. सूरजमल्लने कहा, कि भतीज राजपूतोंके यही काम हैं. पृथ्वीराज बोले, कि काकाजी मैं आपको भालेकी नोकसे दबे उतनी भी ज़मीन नहीं दूंगा. इसपर सूरजमल्ल बोला, कि भतीज मैं भी आपको एक पलंगके नीचे आवे जितनी ज़मीनपर आरामसे अमल नहीं करने दूंगा. तब पृथ्वीराजने कहा, कि मैं फिर आऊंगा होश्यार रहना. सूरजमल्ल बोला, कि भतीज जल्दी आना, मैं भी हाज़िर हूं. पृथ्वीराजने कहा कलही आऊंगा. सूरजमल्ल बोला, कि बहुत अच्छा. इस तरह बहस करनेके बाद राजकुमार अपने डेरोंमें लौट आये, और सुब्ह होते ही सवार हुए; सामनेसे सूरजमल्ल और सारंगदेव भी मुक़ाबलेको आये. रावत् सारंगदेवके शरीरपर ३५ ज़रूम और कुंवर पृथ्वीराजके ७ ज़रूम लगे, और सूरजमल्ल भी सख़्त ज़रूमी हुआ, जिसको उसके साथवाले राजपूत वहांसे ले निकले, और कुंवर पृथ्वीराज ज़रूमी होनेकी हालतमें महाराणाके पास गये, जिनको साथ लेकर महाराणा चित्तौड़पर आये. दोनों, तरफ़ ज़रूमोंका .इलाज हुआ. इसके बाद सूरजमल्ल सादड़ी, और सारंगदेव बाठरड़ेमें रहने लगे. थोड़े दिनोंके बाद रावत् सूरजमल्ल सारंगदेवसे मिलनेके लिये बाठरड़े गये, कि उसीवक़ एक हज़ार सवार लेकर कुंवर पृथ्वीराज वहां आपहुंचे. रातका समय होनेके सबब गांवका फलसा (२) लगा हुआ था, और भीतरको लोग आग जलाकर तप रहे थे. फलसा तोड़कर राजकुमार तुरन्त ही गांवके भीतर घुसगये. राजपूतोंने

---

(१) मेवाड़के राजकुमार अपने पिताको दाजीराज कहते हैं.

(२) कांटे और लकड़ियोंसे बनी हुई फाटकको फलसा कहते हैं.

हाथमें तलवारें पकड़ीं, और कितने ही लड़कर मारेगये. पृथ्वीराजके चौनज़र होते ही सूरजमल्लने कहा, कि भतीज हम आपको नहीं मारना चाहते, क्योंकि आपके मारेजानेसे राज डूबता है, हमारे ऊपर तुम बेशक शस्त्र चलाओ. तब पृथ्वीराजने लड़ाई मौकूफ़ करदी, और सवारीसे उतरकर सूरजमल्लसे मिले और पूछा, कि काकाजी क्या करते थे ? उन्होंने कहा, कि भतीज बेखटके होकर बैठे हुए तपरहे थे. इसपर राजकुमारने कहा, कि काकाजी क्या मेरे जैसा दुश्मन सिरपर होनेकी हालतमें भी बेख़ौफ़ होकर बैठना चाहिये ? ऐसी बातें करके सूरजमल्ल तो सुब्ह होते ही सादड़ीकी तरफ़ चला गया, और सारंगदेवको पृथ्वीराजने कहा, कि चलो देवीके दर्शन करें. ये दोनों देवीके मन्दिरमें पहुंचे और बलिदान हुआ. कुंवर पृथ्वीराज उन ज़ख़्मोंको नहीं भूला था, जो सारंगदेवके हाथसे पहिली लड़ाईमें उनके लगे थे. इसवक़्त इन्होंने भी मौक़ा पाकर अपनी कमरसे कटारी निकाली और सारंगदेवके शरीरमें पार करदी. सारंगदेवने भी तलवारका वार किया, लेकिन् वह देवीके पाटपर जा लगी. सारंगदेवको मारनेके बाद कुंवर पृथ्वीराज वहांसे रवानह होकर सादड़ी आये, और सूरजमल्लसे मिलकर ज़नानेमें गये, और अपनी काकीसे मुज्रा करके कहा, कि बहूजी मुझको भूख लगी है. सूरजमल्लकी स्त्रीने भोजन तय्यार करके सामने रक्खा. यह ख़बर सुनकर सूरजमल्ल भीतर आये, और राजकुमारके साथ खानेमें शरीक हुए. तब सूरजमल्लकी औरतने जिस चीज़में ज़हर मिलाया था, वह कटोरी उठाली. पृथ्वीराज सूरजमल्लकी तरफ़ देखने लगे. इसपर सूरजमल्लने गुस्सेमें आकर कहा, कि ऐ नादान मैं तो तेरे पिताका भाई हूं, इसलिये अपने ख़ूनके जोशसे अपने फ़र्ज़न्दकी मृत्युको नहीं देखसक्ता, लेकिन् इस औरतको तेरे मरनेकी क्या फ़िक्र है ? यह बात सुनकर पृथ्वीराजने कहा, कि काकाजी अब सब मेवाड़का राज्य आपके लिये हाज़िर है. सूरजमल्लने कहा, कि भतीज अब हमको आपकी ज़मीनमें पानी पीनेकी भी सौगन्ध है. इसके बाद सूरजमल्लने वहांसे चलनेकी तय्यारी की. पृथ्वीराजने बहुतेरा कहा, लेकिन् उसने एक भी न सुनी, और मेवाड़के किनारे कांठल (१) में जाकर वहांके भीलोंको ज़ेर करके अपना राज्य जमाया. सूरजमल्लकी औलादका बयान इस इतिहासके दूसरे भागमें लिखा जावेगा.

सादड़ीसे रवानह होकर कुंवर पृथ्वीराज पीछे कुम्भलमेरमें आये. इन्हीं दिनोंमें महाराणा रायमल्लकी बहिन रमाबाईके और उनके पति गिरनारके राजा मंडलीक जादवके आपसमें नाइत्तिफ़ाक़ी होगई. मंडलीकने रमाबाईको बहुत तक्लीफ़ दी. यह

(१) यह प्रतापगढ़के ज़िलेका नाम है.

ख़बर सुनकर कुंवर पृथ्वीराजसे कब रहा जाता था, वह उसी वक़्त अपने शूर वीरोंको साथ लेकर गिरनारपर चढ़ दौड़े, और राजा मंडलीकको उसके महलोंमें सोते हुए जा दबाया. मंडलीक उस वक़्त बेख़बर था, उससे कुछ भी न बन पड़ा, और राज कुमारसे प्रार्थना करने लगा. तब राज कुमारने दया करके मंडलीकके एक कानका कोना काट लिया, (१) और अपनी भूवा रमाबाईको पालकीमें बिठाकर अपने साथ ले आये, जो .उम्र भर यहीं रहीं, और उन्होंने कुम्भलमेरमें विष्णु भगवानका एक मन्दिर बनवाया. रमाबाईको जावरका पर्गनह महाराणा रायमल्लने जागीरमें दिया था, जहां उन्होंने रामस्वामीका मन्दिर और रामकुंड वग़ैरह .इमारतें बनवाईं, जिनकी प्रतिष्ठा विक्रमी १५५४ चैत्र शुक्ल ७ रविवार को हुई, उस मौक़ेपर महाराणा रायमल्ल और राजकुमार पृथ्वीराजने निमन्त्रण भेजकर राजा मंडलीकको भी गिरनारसे बुलवाया था. इन इमारतोंका कुछ वृत्तान्त महेश्वर पंडितने वहांकी प्रशस्तियोंमें लिखा है.

अब हम यहांपर राजकुमार पृथ्वीराजके इन्तिक़ालका वृत्तान्त लिखते हैं. राजकुमार पृथ्वीराजकी बहिन आनन्दबाईकी शादी सिरोहीके राव जगमालके साथ हुई थी. वह दूसरी स्त्रियोंके बहकानेसे उनको बहुत दुख दिया करता था, यहांतक कि पलंगका पाया उनके हाथपर रखकर रातका सोता और कहता, कि तेरा बहादुर भाई कहां है, उसको सहायताके लिये बुलाओ. उस पतिव्रताने तो अपने भाईको कुछ नहीं लिखा, लेकिन् यह वृत्तान्त किसी ज़रीएसे पृथ्वीराजके कानतक पहुंच गया, जिसको सुनकर इस शूर वीरसे ख़ामोश न रहागया, और यह अपने राजपूतों सहित उसी वक़्त सिरोहीकी तरफ़ रवानह हुआ. राजकुमारने आधी रातके वक़्त सिरोहीमें पहुंचकर दूसरे साथी राजपूतोंको तो गांवके बाहिर छोड़ा और आप अकेले राव जगमालके महलोंमें घुसगये. वहां क्या देखते हैं, कि आनन्दकुंवरबाईके हाथपर पलंगका पाया रखकर राव नींदमें बे ख़बर सो रहा है. पृथ्वीराजने तलवार मियानसे निकालकर राव जगमालको ठोकर मारी और कहा, कि ऐ राव मेरी बहिनको इस तरह तक्लीफ़ देकर ऐसा ग़ाफ़िल सोता है ! ठोकर लगते ही राव घबराकर उठा, और आनन्द कुंवरबाईने भी पायेके नीचेसे हाथ खेंचलिये, और अपने भाईके सामने झोली बिछाकर बोली, कि हे भाई मेरा सुहाग रक्खो, और मेरे पतिको जीवदान दो. अपनी बहिन की लाचारीसे राजकुमारने राव जगमालको जीवदान देकर कहा, कि आगेको ख़याल रखना चाहिये. राव जगमालने राजकुमारसे बहुत कुछ प्रार्थना की, और अपने

(१) यह बात बड़वा भाटों और ख्यातकी पोथियोंसे लिखी है.

महलोंमें लेजाकर दावतकी तय्यारी की, राजकुमार तो साफ़ दिल थे, अपने राजपूतों सहित रावका विश्वास करके ज़ियाफ़तमें मश्गूल हुए, लेकिन् राव इस वारिदातसे बहुत शर्मिन्दह होगया था. जब राजकुमार कुम्भलमेरको रुख़्सत होने लगे, तब रावने तीन गोलियां, जिनमें ज़हर मिला हुआ था, राजकुमारको दीं, और कहा कि ये बंधेजकी बहुत फ़ायदेमन्द गोलियां हैं. राजकुमारने कुम्भलगढ़के नज़्दीक पहुंचकर एक गोली खाई, और थोड़ी दूर जाकर दूसरी, और इसी तरह तीसरी भी खाली. तीनों गोलियां खाते ही ज़हरने एकदम ऐसा असर किया, कि कुम्भलमेरके क़रीब पहुंचते पहुंचते उनका इन्तिक़ाल होगया. मामादेवके पास क़िले कुम्भलमेरमें उनकी दग्ध क्रिया कीगई. इन राजकुमारकी एक छत्री क़िलेके क़रीब, जहां कि इनका इन्तिक़ाल हुआ था, और दूसरी दग्ध स्थानपर क़िलेमें मामादेवके स्थानपर बनी है. इनके साथ १६ सतियां हुईं.

अब महाराणाके तीसरे कुंवर संग्रामसिंह (सांगा) का वृत्तान्त सुनिये. ऊपर लिखा जाचुका है, कि कुंवर संग्रामसिंह पृथ्वीराजके भयसे मेवाड़ छोड़कर मारवाड़में कुछ दिनों एक गडरियेके यहां दिन गुज़ारकर वहांसे अजमेरके ज़िले श्रीनगरके ठाकुर कर्मचन्द पुंवार मशहूर लुटेरेके पास जारहे, और अपने पास जो कुछ पहिननेका ज़ेवर था वह बेचकर घोड़ा ख़रीदलिया. इन राजकुमारको बहुत दिनोंतक पृथ्वीराजके भयसे राजकीय प्रकृतिको बदलकर लुटेरोंके गिरोहमें उन्हींके समान होकर रहना पड़ा.

एक दिनका ज़िक्र है, कि कर्मचन्द पुंवार कहींसे धाड़ा डालकर पीछा आता था; उसने रास्तेके किसी एक जंगलमें अपने साथियों सहित ठहरकर आराम लिया. साथवालोंमेंसे हरएक शख़्स वृक्षोंकी छायामें, जहां जिसके दिलमें आया ठहरगया; एक बड़के नीचे राजकुमार संग्रामसिंहने भी अपना घोड़ा बांधदिया, और ज़ीनपोश बिछाकर सोरहे. उस वक़्त कर्मचन्दके राजपूतोंमेंसे बालेचा जयसिंह और जामा सींधल दोनों अपने अपने साथियोंकी ख़बरगीरीके लिये फिरते हुए इत्तिफ़ाक़से उस बड़के पास आनिकले. बड़के पत्तोंके बीचमें होकर सूर्यकी किरणें राजकुमार संग्रामसिंहके मुंहपर गिरने लगीं, तब उस बड़की जड़ोंमेंसे एक काले सांपने निकलकर अपने फनसे छाया (१) करली. ये दोनों राजपूत इस बातको देखकर बड़े तअज्जुबमें आये, और दौड़कर कर्मचन्दसे सारा हाल बयान करके कहा, कि वह कोई राजा या राजकुमार है, क्योंकि सांप इस तरह किसीके सिरपर अपने फनसे छाया नहीं करता. कर्मचन्द भी दौड़कर

---

(१) यह बात हिन्दुस्तानमें मशहूर है, कि ऐसी हालत होनेपर लोग छत्रधारी राजा होनेके लिये शुभ शकुन ख़याल करते हैं.

बड़के पास आया, तो वैसाही दिखाई दिया. इसके बाद सर्प तो बिलमें घुसगया, और इन्होंनें सांगाको जगाकर कहा, कि सच कहो आप कौन हो? तब उन्होंने कहा, कि मैं सीसोदिया राजपूत हूं, और संग्रामसिंह मेरा नाम है; इसके सिवा मेरा ज़ियादह हाल दर्याफ़्त करनेसे आपको क्या मतलब है? यह सुनकर कर्मचन्दको और भी ज़ियादह शक हुआ, कि यह शायद महाराणा रायमल्लके छोटे कुंवर संग्रामसिंह हैं, जिनका बहुत दिनोंसे पता नहीं है, और इसी सबबसे यह अपना हाल छिपाते होंगे. ऐसा अनुमान करके कर्मचन्दने राजकुमारसे कहा, कि हम जानते हैं, आप महाराणा रायमल्लके छोटे पुत्र संग्रामसिंह हैं, अगर ऐसाही है तो आपको इसतरह छिपकर नहीं रहना चाहिये; हम भी राजपूत हैं, यदि राजकुमार पृथ्वीराज आपपर चढ़कर आवेंगे, तो हम सैकड़ों राजपूत आपके लिये उनसे मुक़ाबलह करनेको तय्यार हैं. यह सुनकर राजकुमारने भी अपना सारा सच्चा हाल कह सुनाया. राजकुमारको कर्मचन्द अपने घर श्रीनगर ले आया, और अपनी बेटीका विवाह उनके साथ करदिया. यह हाल सुनकर राजकुमार पृथ्वीराजको बड़ा गुस्सह आया, और उन्होंने कर्मचन्द पुंवारपर चढ़ाई करनेका पूरा इरादह करलिया; लेकिन् उसी अरसहमें उनको अपनी बहिनकी तक्लीफ़ सुनकर पहिले सिरोहीकी तरफ़ जाना पड़ा, और वहांसे पीछे आते वक्त रास्ते हीमें देहान्त होगया, जैसा कि पहिले बयान होचुका है.

जबकि महाराणा रायमल्लको पृथ्वीराज और जयमल्लके मरजानेका बहुत शोक हुआ, और उसी रंजके सबबसे वह अधिक बीमार होगये, तब उन्होंने राजकुमार संग्रामसिंहको कर्मचन्द पुंवारके यहां सुनकर उनके पास आदमी भेजे. महाराणाका आज्ञापत्र देखते ही कर्मचन्द पुंवार राजकुमारको लेकर चित्तौड़ हाज़िर हुआ. अपने पुत्रको देखकर महाराणाने बड़ा ही स्नेह प्रगट किया, और कर्मचन्दको अपने उमरावोंमें दाख़िल करके बहुतसी जागीर निकालदी. कर्मचन्दके वंशमें अब भी बत्तीस सर्दारोंमें बंबोरीके ठाकुर मौजूद हैं, जिनका हाल इतिहासके दूसरे भागमें लिखाजायेगा.

विक्रमी १५६५ [हि० ९१४ = ई० १५०८] में महाराणा रायमल्लका देहान्त हुआ, और उसी सालमें महाराणा संग्रामसिंह गादी विराजे. उदयकरणके वक्तमें श्रीएकलिङ्गजीका मन्दिर गिरगया था उसको महाराणा रायमल्लने पीछा बनवाया, और कितनेएक गांव जो उदयकरणके वक्तमें खालिसे होगये थे, वे पीछे भेट किये, और थूर नामी गांव गोपाल भट्टको दिया- (देखो शेष संग्रह). महाराणा रायमल्लकी महाराणी जोधपुरके राव जोधाकी बेटी श्रृंगारदेवीने घोसूंडी गांवमें एक बावड़ी तय्यार करवाई थी - (देखो शेष संग्रह).

गुजरात देशमें हलवद एक ठिकाना है, वहांके राज झाला राजसिंहके बेटे अज्जा और सज्जा अपने भाइयोंके बखेड़ेसे निकलकर विक्रमी १५६३ [हि० ९१२ = ई० १५०६] में मेवाड़में आये, और महाराणा रायमल्लकी सेवामें रहे थे. उन दोनों भाइयोंकी औलादके पांच ठिकाने अभीतक मेवाड़में मौजूद हैं:- अव्वल दरजहके उमरावोंमें १-सादड़ी, २-देलवाड़ा और ३-गोगूंदा; और दूसरे दरजहके सर्दारोंमें १-ताणा, व २-झाड़ोल. इनका सविस्तर वर्णन उमराव सर्दारोंके बयानमें किया जायेगा.
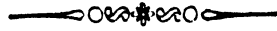
विक्रमी १५६५ ज्येष्ठ शुक्ल ५ [हि० ९१४ ता० ४ मुहर्रम = ई० १५०८ ता० ४ मई] को महाराणा संग्रामसिंह गद्दी विराजे. इन्होंने राजगद्दीपर बैठते ही कर्मचन्द् पुंवारको उसकी सेवाके अनुसार अजमेरका पट्टा जागीरमें लिखदिया, और उसे अपने उमरावोंमें अव्वल दरजहका उमराव बनाया.

जब दिल्लीके बादशाह इब्राहीम लोदीने सुना, कि महाराणा संग्रामसिंहने शाही मुल्कपर अपना क़बज़ह जमाना शुरू किया है, तो वह भी दिल्लीका बादशाह होनेके कारण ऐसी बात सुनकर ख़ामोश न रहसका, और बड़ा भारी लश्कर तय्यार करके मेवाड़की तरफ़ रवानह हुआ. यह ख़बर सुनकर इधरसे महाराणा संग्रामसिंहने भी अपने बहादुर राजपूतों सहित कूच किया. हाड़ौतीकी सीमापर खातोली गांवके पास दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबलह हुआ. दो पहरतक लड़ाई होती रहनेके बाद शाही फ़ौज भाग निकली. बादशाह इब्राहीम लोदीने फ़ौजको ठहरानेके लिये बहुतसी कोशिश की, लेकिन् एकमें भी काम्याब न हुआ. तब लाचार उसको भी फ़ौजके साथ भागना पड़ा; लेकिन् उसके एक शाहज़ादहने पीछे फिरकर महाराणाकी फ़ौजसे मुक़ाबलह किया, और वह पकड़ा गया. इस लड़ाईमें महाराणा संग्रामसिंहका हाथ तलवारसे कटगया, और एक पैरके घुटनेपर ऐसा सख़्त तीर लगा, कि जिससे वह लंगड़े होगये. इसके बाद महाराणाने चित्तौड़में आकर बादशाहके शाहज़ादहको कुछ दण्ड लेकर छोड़ दिया, और उन्हीं दिनोंमें चन्देरीके गौड़ राजाने सिर उठाया, इसलिये कर्मचन्द् पुंवारके बेटे जगमालको फ़ौज देकर चन्देरीपर भेजा, वह उस राजाको जीतकर पकड़ लाया; तब महाराणाने उसको तो अपना मातहत बनाया और जगमालको रावका ख़िताब दिया.

अब हम गुजराती बादशाहोंकी लड़ाइयोंका हाल लिखते हैं:-

ईडरके राव भाणके दो लड़के थे, एक सूर्यमल्ल, और दूसरा भीम. राव भाणका

देहान्त होनेके बाद राव सूर्यमल्ल गद्दी नशीन हुआ, जो १८ मासतक राज्य करके परलोक को सिधाया, और उसकी जगह उसका लड़का रायमल्ल गद्दी नशीन हुआ, लेकिन् रायमल्लके कमउम्र होनेके कारण उसके काका भीमने ईडरका राज्य छीन लिया. तब राव सूर्यमल्लका पुत्र रायमल्ल महाराणा सांगाकी शरणमें चला आया. महाराणाने अपनी बेटीकी शादी उसके साथ करदेनेका इक़ार किया. फिर कुछ अरसह बाद भीमसिंह तो मरगया, और उसका बेटा भारमल्ल ईडरके राज्यका मालिक बना. तब महाराणा सांगाकी मददसे विक्रमी १५७२ चैत्र [हि० ९२१ सफ़र = .ई० १५१५ मार्च] में रायमल्ल पीछा ईडरका मालिक बनगया. भारमल्ल ईडरसे निकलकर सुल्तान मुज़फ़्फ़र गुजरातीके पास अर्ज़ाऊ गया, जिसपर सुल्तानने अपने प्रधान निज़ामुल्मुल्कको फ़र्माया, कि ईडरका राज्य रायमल्लसे छीनकर भारमल्लको दिलादेना चाहिये, और आप भी अहमदनगरकी तरफ़ आया. निज़ामुल्मुल्कने फ़ौज साथ लेकर ईडरको आघेरा; उसवक़ मुसल्मानी फ़ौजकी ज़ियादती देखकर रायमल्ल ईडरको छोड़ बीजानगरके पहाड़ोंमें चलागया, लेकिन् भारमल्लको ईडरका राजा बनाकर निज़ामुल्मुल्कने उसका पीछा किया. तब तो रायमल्लने भी पहाड़ोंमेंसे निकलकर निज़ामुल्मुल्ककी फ़ौजपर हमलह किया, जिसमें बहुतसे मुसल्मान मारेगये, और निज़ामुल्मुल्कने शिकस्त पाई. सुल्तान मुज़फ़्फ़रने यह ख़बर सुनकर निज़ामुल्मुल्कको लिखभेजा, कि यह लड़ाई तुमने बे फ़ायदह की, हमारा मत्लब सिर्फ़ ईडर लेनेसे था. सुल्तानका यह ख़त पहुंचनेपर निज़ामुल्मुल्क ईडरको पीछा चला आया.

विक्रमी १५७३ [हि० ९२२ = .ई० १५१६ [में सुल्तान मुज़फ़्फ़र महमूदाबाद (चांपानेर) को गया, जहांसे अपने प्रधान नुस्रतुल्मुल्कको ईडर भेजकर निज़ामुल्मुल्कको अपने पास बुलाया. नुस्रतुल्मुल्कके ईडर पहुंचनेसे पहिले ही निज़ामुल्मुल्क तो जल्दी करके महमूदाबादको चलदिया, और ज़हीरुल्मुल्कको १०० सवारोंसे ईडरमें छोड़गया. नुस्रतुल्मुल्क तो ईडर पहुंचने ही नहीं पाया, आमनगर उर्फ़ अहमदनगरके ज़िलेमें था, कि इतनेमें राव रायमल्लने पहाड़ोंमेंसे निकलकर ईडरपर हमलह करदिया. ज़हीरुल्मुल्क २७ आदमियोंके साथ मारागया. यह ख़बर सुनकर सुल्तानने नुस्रतुल्मुल्कको लिखा, कि बीजापुर बदमआशोंका ठिकाना है, इसलिये उसको लूटलो. इसी अन्तरमें मालवेका सुल्तान महमूद ख़ल्जी मेदिनीराय (१) पूर्बिया राजपूतसे ख़ौफ़ खाकर मांडूसे भागा, और सुल्तान मुज़फ़्फ़र गुजरातीके पास पहुंचा.

---

(१) यह रायसेनका राजा था.

सुल्तान मुज़फ़्फ़र भी बहुतसी फ़ौज लेकर महमूदके साथ मांडूकी तरफ़ चला. यह ख़बर पाकर मेदिनीराय अपने बेटे राय नत्थूको बहुतसे राजपूतों समेत क़िले मांडूमें छोड़कर महमूदके हाथी और १०००० सवार लेकर धार होता हुआ महाराणा सांगाके पास पहुंचा. उधरसे सुल्तान मुज़फ़्फ़रने आकर मांडूके क़िलेको घेरलिया. राय नत्थूकी फ़ौजके राजपूतोंने बाहिर निकलकर शाही फ़ौजपर हमलह किया, जिसमें बहुतसे राजपूत और क़िवामुल्मुल्कके गिरोहके मुसल्मान मारेगये. फिर राजपूत पीछे क़िलेमें चलेगये, और सुल्तानने अपने अमीरोंको मज्बूत मोर्चोंपर नियत करके क़िलेको घेरा. मेदिनीरायने राय नत्थूको लिख भेजा, कि मैं एक महीनेके अरसहमें महाराणा संग्रामसिंहसे मदद लेकर आता हूं, उस वक़्तक तुम सुल्तानसे बात चीत करके टालाटूली करते रहना. राय नत्थूने वैसा ही किया. उसने वकील भेजकर सुल्तान मुज़फ़्फ़रको कहलाया, कि हम एक महीनेके अरसहमें क़िलेसे निकलजावेंगे, आप अपनी फ़ौज समेत एक मंज़िल पीछे हठजावें. इसपर सुल्तानने तीन कोस पीछे हटकर अपनी फ़ौजके डेरे किये. क़िला ख़ाली करदेनेकी उम्मेदमें सुल्तान मुज़फ़्फ़रने २० दिन गुज़ारे, लेकिन् फिर यह सुना कि मेदिनीरायने महमूदके बहुतसे हाथी, ज़ेवर और रुपया महाराणा सांगाको नज़ करके उन्हें उज्जैनकी तरफ़ अपनी मददके वास्ते लानेका इरादह किया है. तब सुल्तानने बुर्हानपुरके हाकिम आदिलख़ां फ़ारूक़ीके साथ क़िवामुल्मुल्कको बहुतसी फ़ौज देकर महाराणा सांगाके मुक़ाबलहको भेजा, और आप अपने अमीरों समेत क़िले मांडूपर हमलह करनेको रहा. चार दिनतक क़िलेपर बराबर हमले होते रहे, पांचवीं रातको सुल्तान धोखा देनेके वास्ते लड़ाई करनेसे रुका. क़िलेवाले चार दिनके थके हुए होनेके सबब सो गये, और सुल्तानने आधी रातके वक़्त अपने बहादुरोंको सीढ़ियां लगाकर क़िलेपर चढ़ादिया, और भीतरसे दर्वाज़ह खोल देनेके कारण फ़ौज भी क़िलेमें घुसगई. विक्रमी १५७५ चैत्र शुक्ल १५ [हि० ९२४ ता० १४ रबीउ़ल्अव्वल = .ई० १५१८ ता० २६ मार्च] को क़िले वाले राजपूतोंने भी अपने बाल बच्चे व औरतोंको जलाकर हाथमें तलवारें पकड़ीं. लिखा है, कि १९००० राजपूत और हज़ारों मुसल्मान इस लड़ाईमें मारेगये. इसके बाद मांडूकी बादशाहत महमूदको देकर मुज़फ़्फ़रशाह महमूदाबाद (चांपानेर) की तरफ़ चला गया, क्योंकि महाराणा सांगाका उसको ख़ौफ़ था.

तारीख़ फ़िरिश्तहका मुवर्रिख़ लिखता है, कि महाराणा सांगा सुल्तान मुज़फ़्फ़रके ख़ौफ़से पीछे चित्तौड चलेगये, लेकिन् यह बात क़ियासमें नहीं आती; क्योंकि महाराणा सांगा जैसे रोब दाब वाले राजा होकर सिर्फ़ मांडूकी क़त्लसे ख़ौफ़ खाकर सुल्तान

मुज़फ़्फ़रके नामसे पीछे हट जावें, जिसमें भी ऐसी ना ताक़तीकी हालतमें, कि क़िलेके १९००० राजपूत मारे गये उनके मुक़ाबलहमें पचास साठ हज़ारसे कम उसकी फ़ौजके आदमी भी न मरे होंगे. इसके सिवा इन मुसलमान बादशाहोंकी यह स्वाभाविक प्रकृति थी, कि महाराणा ख़ौफ़ खाकर भागते, तो ये चित्तौड़तक उनका पीछा किये बिना हर्गिज़ नहीं रहते. अलावह इसके अगले हालात पढ़नेसे पाठकोंको तारीख़ फ़िरिश्तहके मुवर्रिख़की तरफ़दारी अच्छीतरह मालूम होजावेगी.

मिराति सिकन्दरीमें महाराणा सांगाका मेदिनीराय समेत सारंगपुरतक पहुंचना, और मांडूके क़त्लकी ख़बर सुनकर पीछा चित्तौड़की तरफ़ लौट जाना लिखा है. यदि ऐसा हुआ हो, तो अल्बत्तह क़ियासमें आसका है, कि जिन लोगोंकी मददके लिये उनकी चढ़ाई थी, वे लोग मारेगये, तो ऐसे मौक़ेपर लौट आना ही ठीक समझा हो; क्योंकि थोड़े ही दिनोंके बाद इस लड़ाईका नतीजह ज़ुहूरमें आ गया, याने विक्रमी १५७५ [हि० ९२४ = .ई० १५१८] में जब सुल्तान महमूद गागरौनके क़िलेपर चढ़ा, उन दिनों यह क़िला मेदिनीरायके क़ब्ज़हमें होनेके सबब वह महाराणा सांगाके पास अर्ज़ीऊ हुआ, कि महमूद हमको बर्बाद करता है. तब महाराणा सांगा बड़ी जर्रार फ़ौज लेकर गागरौनकी तरफ़ रवानह हुए. जब दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबलह हुआ, उस वक़्त आसिफ़ख़ां गुजरातीने, जो गुजरातके बादशाहकी तरफ़से बहुतसी फ़ौज सहित महमूदका मददगार था, उस दिन लड़ाई करना ना मुनासिब समझकर महमूदको रोका, लेकिन् उसने किसीका कहा न माना और लड़ाई शुरू करदी. इस लड़ाईमें महमूदके ३२ सिपहसालार (सेनापति) और आसिफ़ख़ां वग़ैरह हज़ारों आदमी फ़ौजके साथ मारेगये. फिर सुल्तान महमूद अकेला बड़ी बहादुरीके साथ राजपूतोंसे लड़ा. आख़िरकार सख़्त ज़ख़्मी होकर घोड़ेसे गिरपड़ा. राजपूतोंने उसको उठाकर महाराणाके पास पहुंचाया. महाराणा .इज़्ज़तके साथ उसको पालकीमें बिठाकर चित्तौड़में लेआये. फिर वहां उसका .इलाज करवाया, और कुछ दिनों पीछे बहुतसा फ़ौज ख़र्च, और एक जड़ाऊ ताज उससे लेकर एक हज़ार राजपूतोंके साथ .इज़्ज़तसे उसको मांडू पहुंचादिया, और उसके एक शाहज़ादहको, जो उसीके साथ क़ैद हुआ था, अपने मुलाज़िमोंमें ओलके तौरपर रक्खा. इस शाहज़ादहके रखनेमें यह हिकमत अमली थी, कि आइन्दहको महमूद फिर फ़साद न करने पावे. महमूद ख़ल्जीकी महाराणा सांगाके साथ लड़ाई होकर उसमें आसिफ़ख़ां और उसके बेटे समेत बहुतसे मालवी उमरावोंका माराजाना और बादशाह महमूदका सख़्त ज़ख़्मी होकर महाराणा सांगाकी क़ैदमें आना, फिर

महाराणाका अपनी जवांमर्दीसे उसपर मिहर्बान होकर उसको .इज़्ज़तके साथ पीछा मांडूको पहुंचादेना वगैरह हाल सुनकर सुल्तान मुज़फ़्फ़र बहुत ही उदास हुआ, और अपने कई सर्दारोंको महमूदके पास भेजकर ख़तसे उसकी तसल्ली की.

तबक़ाति अक्बरीमें अक्बरका बख़्शी निज़ामुद्दीन अहमद लिखता है, कि जो काम महाराणा सांगासे हुआ, वैसा अजीब काम आजतक किसीसे न हुआ. सुल्तान मुज़फ़्फ़र गुजरातीने तो महमूदको अपनी पनाहमें आनेपर सिर्फ़ मदद दी थी, लेकिन् लड़ाईमें फ़त्ह पानेके बाद दुश्मनको गिरिफ़्तार करके पीछा उसको राज्य देदेना, यह काम आजतक मालूम नहीं, कि किसी दूसरेने किया हो. जब इस फ़त्हकी खुशीका दर्बार महाराणा संग्रामसिंहने किया उस वक्त इस तवारीख़के मुसन्निफ़ (कर्ता) (कविराज श्यामल दास) के पूर्वज महपा जैतावतको उन्होंने ढोकलिया गांव उदक आघाट लिख दिया था. उस समयका मारवाड़ी भाषाका एक छप्पय मश्हूर है, जो यहांपर दर्ज करते हैं:-

छप्पय.

चढ़तै दिन चीतोड़, तपै शांगण तालावर।
रतनेसर ऊपरा, बणे दरबार बधोतर।
महपानै कर मोज, बड़ा लीधा जस वायक।
ढोकलिया ऊपरे, शही कीधी शर नायक।
पनरासै समत पिचोतरै, शुकल पक्ख शरशावियो॥
वैशाख मास रिव सप्तमी, दीह तेण शांशण दियो॥ १॥

सुल्तान मुज़फ़्फ़रने ईडरपर मुबारिज़ुल्मुल्कको हाकिम मुक़र्रर किया था. एक भाटने उसके सामने महाराणा सांगाकी तारीफ़ की, और कहा, कि आज तो कुल हिन्दुस्तानमें महाराणा संग्रामसिंहके बराबर दूसरा कोई राजा नहीं है. यह बात सुनकर मुबारिज़ुल्मुल्क बेअदबीके लफ़्ज़ बोल उठा, और एक जानवरका नाम संग्रामसिंह रखकर उसको ईडरके दर्वाज़ेपर बांधदिया, और कहा, कि महाराणा संग्रामसिंह ऐसे मर्द हैं, तो मैं भी तय्यार हूं, यहां आकर अपना ज़ोर आज़मावें. यह सब वृत्तान्त उस भाटने चित्तौड़में आकर महाराणा संग्रामसिंहसे कहा. महाराणाको भी इस बातके सुननेसे बहुत ग़ैरत आई, और उन्होंने ईडरकी तरफ़ गुजरातीके मुल्कपर चढ़ाईका हुक्म देदिया. कहते हैं, किं ४०००० सवार और बहुतसे पैदलोंके साथ विक्रमी १५७५ [हि० ९२५ = ई० १५१८] के अख़ीरमें चित्तौड़से महाराणाने कूच किया. जब वागड़में पहुंचे तो डूंगरपुरके रावल उदयसिंह भी अपने राजपूतों समेत उनकी सेवामें आ हाज़िर हुए. फिर ये डूंगरपुर पहुंचे. यह ख़बर मुबारिज़ुल्मुल्कको मिली.

उसने सुल्तान मुज़फ़्फ़रको मदद भेजनेके वास्ते लिखा, लेकिन् सुल्तानसे कुछ मदद न मिली, बल्कि उसने यह कहला भेजा, कि तुमने एक जानवरका नाम संग्रामसिंह रखकर महाराणाको गैरत दिलाई, जिससे वह चढ़कर आये हैं, तो अब अपने कियेका जवाब आप देलो. इसपर प्रथम तो मुबारिज़ुल्मुल्क महाराणा संग्रामसिंहसे लड़ाई करनेके लिये उनके सामने गया, लेकिन् डरकर पीछा ईडरको लौट आया, परन्तु वहां भी उसके पैर न ठहरसके, तब उसने अहमदनगरके क़िलेका सहारा लिया. दूसरे दिन महाराणा संग्रामसिंहने आकर ईडरपर अपना क़बज़ह करलिया, और ईडरसे निकलकर अहमदनगरको जा घेरा. मुसल्मानोंने किंवाड़ बंध करके क़िलेमेंसे लड़ाई शुरू की. महाराणाने भी अपने लोगोंको अहमदनगरपर हमलह करनेका हुक्म दिया. इस हमलहमें डूंगरसिंह (१) चहुवान बहुत ज़ख़्मी हुआ और उसके भाई बेटे सब मारेगये. डूंगरसिंहके बेटे कान्हसिंहने बड़ी बहादुरी की, याने जब क़िलेके दर्वाज़ेके किंवाड़ तुड़वानेको हाथी हूलनेका मौक़ा आया, और किंवाड़ोंके भालोंके सबबसे हाथी मुहरा न करसका, उस वक़्त कान्हसिंहने भालोंके सामने आकर महावतको ललकारा, कि हाथीको मेरे बदनपर आनेदे, और ऐसा ही हुआ. कान्हसिंहपर हाथीने मुहरा किया, जिससे वह तो मारागया, और किंवाड़ टूटगये. महाराणाकी फ़त्ह हुई, और मलिक मुबारिज़ुल्मुल्क दूसरे रास्तेसे क़िलेके बाहिर निकलकर नदीकी परली तरफ़ जाखड़ा हुआ. वहां भी मेवाड़की फ़ौजने पहुंचकर उसका मुक़ाबलह किया. मुबारिज़ुल्मुल्कके साथ १२०० सवार और १००० पैदल थे. बड़ी मर्दानगीके साथ उसने लड़ाई की, जिसमें उसका सिपहसालार असतखां (असदुल्मुल्क) और दूसरे गुजराती सर्दार मारेगये. फिर ज़ख़्मी मुबारिज़ुल्मुल्क मए ख़िज़रख़ांके अहमदाबादकी तरफ़ चलागया. महाराणाकी फ़ौजने एक रोज़ ठहरकर अहमदनगरको लूटा, और दूसरे रोज़ वहांसे चलकर बड़नगरको पहुंचे. वहांके ब्राह्मणोंने बाहिर निकलकर महाराणासे बड़ी नम्रताके साथ प्रार्थना की, कि हम आपके भिक्षुक हैं, हमेशहसे आपके बड़ोंने हमारी सहायता की है, इसलिये आप भी इस शहरको लूटना मुआफ़ फ़र्मावें. तब बड़नगरको लूटना मौक़ूफ़ रखकर महाराणा मए फ़ौजके बीलनगर (२) पहुंचे, वहांका हाकिम मलिक (३) लड़ाईमें

(१) डूंगरसिंह चहुवानकी औलाद बागड़में अबतक मौजूद है. डूंगरसिंहको महाराणाने बदनौर का ठिकाना जागीरमें दिया था, जहां उसके बनवाये हुए तालाब, बावड़ियां व महल मौजूद हैं.

(२) तारीख़ फ़िरिश्तह और मिराति सिकन्दरीमें बीलनगर लिखा है, परन्तु हमारे क़ियाससे बीसलनगर मालूम होता है.

(३) मिराति सिकन्दरीमें ऐनुल्मुल्क व फ़त्हख़ां नाम लिखा है, लेकिन् माराजाना किसीका नहीं लिखा, क़िलेमें नाज़िमका पनाह लेना लिखा है.

मारागया. बीलनगरको महाराणाकी फ़ौजने लूटा. फिर वहांसे गुजरातके मुल्कको लूटते हुए महाराणा पीछे चित्तौड़को पधारगये.

जब सुल्तान मुज़फ़्फ़रने अपने मुल्ककी बर्बादी व महाराणाकी चढ़ाईका यह हाल सुना, तो उसने भी अपनी फ़ौजकी तय्यारी की, और इमादुल्मुल्क और क़ैसरख़ांको १०० हाथी और बहुतसी फ़ौज देकर महाराणा सांगाके मुक़ाबलहको भेजा. इन लोगोंने क़सबह सरगचमें पहुंचकर महाराणा सांगाके वापस चित्तौड़ चलेजानेका हाल सुल्तानको लिखा, और सुल्तानके लिखनेके मुवाफ़िक़ ये लोग अहमदनगरमें ठहरे. सुल्तान मुज़फ़्फ़रने अपने बापके वक्तके ख़ास गुलाम अयाज़को, जो सूरत वग़ैरह दर्याई किनारेका जागीरदार था, बुलाया. उसने बड़ी हिम्मत और मर्दानगीसे बादशाहकी ख़िद्मतमें महाराणाको फ़त्ह करलेनेकी अ़र्ज़ की, लेकिन् बादशाहने मौक़ा मुनासिब न जानकर कुछ जवाब न दिया. निदान विक्रमी १५७७ पौष शुक्ल [हि० ९२७ मुहर्रम = ई० १५२० डिसेम्बर] में १००००० सवार और १०० हाथी मलिक अयाज़के साथ देकर उसको चित्तौड़, याने मेवाड़की तरफ़ रवानह किया. फिर बादशाहने ताजख़ां और निज़ामुल्मुल्कको २०००० सवार देकर अयाज़की मददके लिये भेजा. जब मलिक अयाज़ बागड़में पहुंचा और वहां उसने डूंगरपुर व बांसवाड़ाको बर्बाद किया, उस मक़ामपर बांसवाड़ेका रावल उदयसिंह उग्रसेन पूर्वियाके साथ छापा मारनेको पहाड़ोंमें तय्यार था. मुसल्मानोंको इनके आनेकी ख़बर होगई, इसलिये अ़ज़ीज़उल्मुल्क और सफ़दरख़ां दोनों सिपहसालारोंने इनका मुक़ाबलह किया, जिसमें उग्रसेन ज़ख़्मी हुआ, और ८० राजपूत व बहुतसे मुसल्मान मारेगये. मलिक अयाज़ भी इस लड़ाईमें मददके लिये आ पहुंचा. दूसरे दिन क़िवामुल्मुल्क तो बांसवाड़ाके पहाड़ोंकी तरफ़ चला, और अयाज़ने कुल फ़ौजके साथ कूच करके मन्दसौरके क़िलेको जाघेरा, जहांका क़िलेदार अशोकमल्ल (१) राजपूत महाराणाकी तरफ़से था. यह बात सुनकर महाराणा सांगा भी अपनी फ़ौज तय्यार करके मन्दसौरकी तरफ़ चले. इसी अ़रसहमें मांडूका बादशाह महमूद ख़ल्जी, जो मुज़फ़्फ़रका इह्सानमन्द था, मलिक अयाज़की मददको आ पहुंचा. फिर क़िवामुल्मुल्क और मलिक अयाज़के आपसमें नाइत्तिफ़ाक़ी फैलगई. अयाज़ने चाहा, कि क़िवामुल्मुल्कके नाम फ़त्ह नहो, और इसने चाहा, कि अयाज़के नाम फ़त्ह नहो. फिर एक सुरंग, जो क़िलेकी दीवारमें लगाया था, उड़ाया गया, लेकिन् उससे कुछ काम्याबी न हुई. इसी

---

(१) मिरातिसिकन्दरीमें अशोकमल्लका माराजाना लिखा है, लेकिन् फ़िरिश्तहमें नहीं लिखा.

अरसहमें महाराणा भी मन्दसौरसे १२ कोसके फ़ासिलहपर मौज़े नांदसेमें आ पहुंचे, दोनों तरफ़से सुलहके पैग़ाम होने लगे, और आख़रकार सुलह होना क़रार पाया. महमूद ख़ल्जीको अयाज़ने पीछा लौटादिया, और आप ख़ल्जीपुरकी तरफ़ चलागया. तारीख़ फ़िरिश्तहमें लिखा है, कि जब मलिक अयाज़ चांपानेर मक़ामपर बादशाह मुज़फ़्फ़रकी ख़िद्मतमें पहुंचा, तो सुल्तान मुज़फ़्फ़र उससे बहुत नाराज़ हुआ, कि तुमने सुलह क्यों करली ? और यह भी लिखा है, कि महाराणा सांगाने मलिक अयाज़के लिखनेसे क़सबह मुंडासामें अपने बेटेको बहुतसे तुह्फ़े लेकर बादशाहकी ख़िद्मतमें भेजा.

विक्रमी १५८१ [हि० ९३० = .ई० १५२४] में सुल्तान मुज़फ़्फ़रका शाहज़ादह बहादुरख़ां अपने भाई सिकन्दरख़ांकी अदावत, और आमद की कमी व ख़र्चकी ज़ियादतीके सबब अपने बापसे नाराज़ होकर चित्तौड़ आया. महाराणा सांगाने उसकी बहुत ख़ातिर व तसल्ली की, और महाराणाकी माता बाईजीराज झालीजीने उसको अपना फ़र्ज़न्द (बेटा) बनाया.

हम यहांपर फ़ार्सी मुवर्रिख़ोंके बयानमें कुछ फ़र्क़ बतलाते हैं, कि उन्होंने अपनी अपनी तवारीख़ोंमें मुसल्मानोंकी तरफ़दारी की है, याने तारीख़ फ़िरिश्तहमें तो बहादुरख़ां और महाराणा संग्रामसिंहकी गुफ्तगूसे ज़ाहिर होता है, कि महाराणाने उक्त शाहज़ादहके आनेपर उसकी ऐसी ख़ातिरदारी की, जैसी कि अपने मालिककी करते हैं; और इसी हालको मिराति सिकन्दरीमें देखनेसे ऐसा प्रतीत होता है, कि किसी बड़े आदमीने किसी .इज़्ज़तदार आदमीकी तक्लीफ़ मिटानेको अपना बड़प्पन दिखाया हो, सो ख़ैर. अब हम वह हाल लिखते हैं, जो मिराति सिकन्दरीके सिवा न तो किसी दूसरी किताबमें और न हमारे यहांकी पोथियोंमें लिखा देखा गया. वह यह है, कि जब सुल्तान मुज़फ़्फ़रका शाहज़ादह बहादुरख़ां चित्तौड़में आकर रहा, उस समयमें एक दिन महाराणाके भतीजेने शाहजादहको दावत दी थी. रातके वक़ उस जल्सेमें नाचने गाने और नशे वग़ैरहका शग़ल (कार्य) होने लगा, उसवक़ शाहज़ादहकी निगाह एक पातरकी तरफ़ देखकर महाराणाके भतीजेने कहा, कि यह शरीफ़ज़ादी अहमदनगरकी लूटमें महाराणाके हाथ आई है. इस बातके सुनतेही शाहज़ादहसे न रहा गया, और उसने एक हाथ तलवारका ऐसा मारा, कि महाराणाके भतीजेके दो टुकड़े होगये. इसपर कुल राजपूतोंने जोशमें आकर शाहज़ादहको मारनेका इरादह किया. तब बाईजीराज झालीजी, याने महाराणा सांगाकी माताने मना किया, और कहा कि इसको कोई मारेगा तो मैं अपनी जान देदूंगी; इस सबबसे शाहज़ादह बचकर मेवातकी तरफ़ दिल्लीको रवानह हुआ.

विक्रमी १५८२ फाल्गुन शुक्ल ३ [हि० ९३२ ता० २ जमादियुल्अव्वल = ई० १५२६ ता० १५ फ़ेब्रुअरी] को सुल्तान मुज़फ़्फ़रका देहान्त हुआ, और उसका बड़ा बेटा सिकन्दर तख़्त नशीन हुआ, और सिकन्दरका छोटा भाई लतीफ़ख़ां अपने भाईसे बाग़ी होकर चित्तौड़के जंगलोंमें चला आया, जिसकी गिरिफ़्तारीके लिये सिकन्दरने मलिक लतीफ़को, जिसका ख़िताब शरज़हख़ां था, भेजा. महाराणाके लश्करने निकलने भागनेके जो नाके घाटे थे उनको बन्द करके मलिक लतीफ़को मए १७०० आदमियोंके क़त्ल करडाला. फिर सिकन्दरने कैसरख़ांको बहुतसी फ़ौज देकर चित्तौड़की तरफ़ रवानह किया, लेकिन् मौतके पंजेमें आकर तीन महीने १७ दिन सल्तनत करनेके बाद सिकन्दर अपने मुल्कमें आप ही मारागया. सिकन्दरके मरनेकी ख़बर सुनकर बहादुरख़ां चित्तौड़की तरफ़ आया, यहां उसके बहुतसे गुजराती सिपाही भी आ शामिल हुए. सुल्तान मुज़फ़्फ़रका शाहज़ादह चांदख़ां और इब्राहीम ये दोनों पहिलेसे ही महाराणा संग्रामसिंहके यहां मुलाज़िमोंमें आ रहे थे. इस मौक़ेपर दोनोंने बहादुरख़ांसे मुलाक़ात की. इब्राहीम तो बहादुरख़ांके साथ गुजरातको आया, और चांदख़ां महाराणाके पास रहा. बहादुरशाह अहमदाबादमें जाकर गुजरातके बादशाही तख़्तपर बैठा.

महाराणा सांगाके पाटवी याने सबसे बड़े पुत्र भोजराज थे, जिनको मेड़ताके मेड़तिया राजा बीरमदेवकी बेटी और जयमल्लकी बहिन ब्याही गई थी. इन राजकुमारका देहान्त महाराणाकी मौजूदगीमें हो चुका था, इसलिये राजकुमार रत्नसिंह, जो राठौड़ बाघाकी बेटी महाराणी धनबाईके पेटसे पैदाहुए थे, भोजराजके मरने बाद राज्यके वारिस ठहरे. महाराणा सांगाने एक विवाह बूंदीके हाड़ा भांडाके बेटे नर्वदकी बेटी करमेतीबाईके साथ भी किया था, जिनसे दो राजकुमार उत्पन्न हुए, १- विक्रमादित्य और २- उदयसिंह. उक्त महाराणाकी मिहर्बानी महाराणी हाड़ीपर ज़ियादह थी. एक दिन महाराणा सांगासे उन्होंने अर्ज़ की, कि आपके बड़े बेटे रत्नसिंह तो गद्दीके वारिस हैं, और मेरे पेटके विक्रमादित्य और उदयसिंह छोटे हैं, इस लिये इनको आपके हाथसे जागीर मिलजावे तो अच्छा है, वर्नह रत्नसिंह इन दोनों भाइयोंको नाराज़गीके सबबसे जागीर नहीं देंगे, और ये दोनों मारे मारे फिरेंगे. तब महाराणाने फ़र्माया, कि तुम्हारी मर्ज़ी हो उस जागीरकी अर्ज़ करो, वही इन दोनोंको मिल जावेगी इसपर महाराणीने अर्ज़ की, कि यदि रणथम्भोरका क़िला पर्गनों सहित इन दोनोंको मिलकर मेरे भाई बूंदीके मालिक सूर्यमल्लको इनका हाथ पकड़ा दियाजावे, तो इनकी बुन्याद मज़बूत होजानेमें सन्देह नहीं रहे. महाराणाने उक्त महाराणीकी यह अर्ज़ मंज़ूर

फ़र्माई, और ज़नानहसे बाहिर पधारकर दर्बार किया, और सूर्यमल्लको हुक्म दिया, कि हम रणथम्भोरका क़िला तुम्हारे भानजे विक्रमादित्य व उदयसिंहको देते हैं, और तुमको इनका हाथ पकड़ाते हैं, कि तुम इनके मददगार रहो. तब सूर्यमल्लने अर्ज़ की, कि हम तो गादीके नौकर हैं, जो मेवाड़की गद्दीपर बैठेगा उसीका हुक्म सिरपर रक्खेंगे. अगर आपके हुक्मसे विक्रमादित्य और उदयसिंहका हाथ पकडूं, तो संभव है, कि कभी न कभी मुझको रत्नसिंहसे मुक़ाबलह करना पड़े, क्योंकि रणथम्भोरका दियाजाना रत्नसिंहको नागुवार गुज़रेगा. यदि मुझको इस विशयमें रत्नसिंहकी भी इजाज़त होजावे, तो आपके हुक्मकी तामील करना हम लोगोंका काम ही है. तब महाराणाने रत्नसिंह को बुलाकर फ़र्माया, कि हम तुम्हारे दोनों छोटे भाइयोंको रणथम्भोरका क़िला मए पर्गनोंके देते हैं, इसमें तुम्हारी क्या राय है ? तब रत्नसिंहने अर्ज़ की, कि जिसमें हुजूर की खुशी हो उसीमें मैं भी खुश हूं. अगर्चि रत्नसिंहके दिलमें यह बात नागुवार गुज़री, परन्तु उसको ऐसे प्रतापी पिताके सामने अपने दिलका हाल खोलदेनेमें राजके हक़से विमुख रहनेका भय था, इसलिये हां में हां मिलानी ही पड़ी. फिर महाराणाने हुक्म दिया, कि हमारा मन्शा है कि बूंदीके हाड़ा सूर्यमल्लको तुम्हारे इन दोनों भाइयोंका हाथ पकड़ाकर इनकी जागीरका ज़िम्मेवार उसको बनादियाजावे, परन्तु सूर्यमल्ल तुम्हारी सम्मति चाहता है. तब रत्नसिंहने सूर्यमल्लसे कहा, कि मैं अपने भाइयोंको रणथम्भोर दियाजानेमें बहुत खुश हूं, और तुमको भी उचित है, कि श्री महाराणाके हुक्मकी तामील करो. इसपर सूर्यमल्लने महाराणाके हुक्मके मुवाफ़िक़ विक्रमादित्य व उदयसिंहका हाथ पकड़कर रणथम्भोरका पट्टा महाराणासे लेलिया.

अब हम तीमूरी ख़ानदानके मुग़ल बादशाह बाबरका अपने सिरपर हिन्दुस्तानकी सल्तनतका ताज रखकर महाराणा सांगासे बयाना मक़ामपर मुक़ाबलह करने और उसमें फ़त्हयाब होनेका हाल लिखते हैं. जबकि बाबरने इब्राहीम लोदीको शिकस्त देकर दिल्लीपर अपना क़बज़ह करलिया, तो उसके बाद वह हिन्दुओंकी तरफ़ मुतवज्जिह हुआ. उन दिनों हिन्दू राजाओंमें महाराणा सांगा अव्वल दरजहके महाराजा थे, और हिन्दुस्तानके कई राजा इनको ख़िराज देते थे. उन्हीं दिनोंमें बयानेका मालिक निज़ामखां महाराणा सांगा और बाबर दोनोंकी ताबेदारीसे टालाटूली करने लगा; याने जब महाराणा संग्रामसिंहने उसको चाकरीके लिये कहा, तो बाबरकी दबागतका बहानह किया, और बाबरने दबाया, तो महाराणाका ताबेदार होना बयान करके टालदिया. इस सबबसे बाबरने निज़ामखांपर चढ़ाई करदी. निज़ामखांने बादशाहसे डरकर क़िला उसके हवाले करदिया, और महाराणा सांगाने यह हाल सुना. जबकि बाबर अफ़ग़ानिस्तानको

फ़त्ह कररहा था, उन दिनों इब्राहीम लोदीकी अदावतसे महाराणा सांगाने भी उससे दोस्तानह ख़त किताबत जारी की (१) थी; लेकिन् ख़ास इब्राहीम लोदीसे ही महाराणाकी अदावत नहीं थी, बल्कि शाही ताजसे थी. जब बाबर दिल्लीका बादशाह हुआ, तो वही अदावत उससे भी रहने लगी. उन्हीं दिनोंमें बाबरने मेवातके नव्वाब हसनख़ांके एक लड़केको, जो उसके पास ओलके तौरपर क़ैद था, इस ग़रज़से छोड़दिया, कि इसका बाप (हसनख़ां) मेरा फ़र्मांबर्दार होकर मुहब्बतसे पेश आवेगा, लेकिन् उसका नतीजह उलटा हुआ, याने हसनख़ां १०००० सवार लेकर महाराणासे आमिला. महाराणाने भी बयानेका क़िला लेने और हसनख़ांकी मदद करनेकी तय्यारी की. उस वक्त् इब्राहीम लोदीके कितनेही अमीर महाराणाकी फ़ौजमें आमिले. दिल्लीके बादशाह सुल्तान सिकन्दरका बेटा महमूदख़ां, जिसके पास १०००० सवार थे, और मारवाड़का राव गांगा व आंबेरका राजा पृथ्वीराज भी अपनी फ़ौज समेत महाराणाके लश्करमें आ शामिल हुए; और इसी तरह राजा ब्रह्मदेव, व राजा नरसिंहदेव, चंदेरीका राजा मेदिनीराय, डूंगरपुरका रावल उदयसिंह, चन्द्रभाण, माणकचन्द चहुवान, और राय दिलीप वग़ैरह पचास साठ हज़ार राजपूतों समेत महाराणा सांगाकी फ़ौजमें शरीक होगये. इस तरहपर महाराणा सांगा दो लाख सवार और बहुतसी पैदल फ़ौज लेकर बयानेकी तरफ़ चले. जब महाराणा रणथम्भोरमें पहुंचे, तो बाबरको बड़ी भारी फ़ौज साथ लेकर इनके आनेकी ख़बर हुई; तब उसने रायसेनके राजा सलहदी तंवरकी मारिफ़त सुलहकी ख्वाहिशसे ख़त किताबत की. यह बात महाराणाको पसन्द आई, लेकिन् दुश्मनपर ज़ियादह दबाव डालनेके लिये फ़ौजका कूच करदिया. फिर वहांसे बयानेके क़रीब पहुंचे, जो आगरेसे ५० मीलके फ़ासिलहपर है, और जिसपर बाबरने क़बज़ह करलिया था. बाबर वहांसे निकलकर सीकरी फ़त्हपुरमें आपड़ा, जो वहांसे २० मीलके फ़ासिलहपर है. इधरसे महाराणा सांगाकी फ़ौजने आकर शाही फ़ौजकी हरावलपर हमलह किया. विक्रमी १५८३ चैत्र कृष्ण ६ [हि० ९३३ ता० २० जमादियुल्अव्वल = ई० १५२७ ता० २१ फ़ेब्रुअरी] को इस लड़ाईमें बाबरकी फ़ौजने शिकस्त पाई, और भागकर कुछ फ़ासिलहपर जा ठहरी. यदि महाराणाकी फ़ौजका उसी वक्त् दूसरा हमलह होता, तो ज़रूर बाबरके पैर न ठहर सक्ते, क्योंकि उसकी फ़ौजके सिपाहियोंका

(१) बाबर अपनी किताब तुज़क बाबरी क़लमीके पृष्ठ २२३ में लिखता है, कि जब मैं काबुलमें था तब मेरे पास राणा सांगाका एल्ची आया था, जिसके साथ यह क़रार पाया, कि बादशाह तो उधरसे दिल्लीकी तरफ़ चढ़े और हम इधरसे आगरेकी तरफ़ चढ़ाई करें, लेकिन् मैंने इब्राहीम लोदीको फ़त्ह करके दिल्ली व आगरेपर क़बज़ह करलिया तो भी वह न आया.

दिल टूटगया था. मुसीबतके मारे भागे हुए सिपाहियोंका ज़बानी बयान सुनकर तो बाबरकी सारी फ़ौजका दिल शिकस्तह होता ही जाता था, कि इसी मुसीबतमें एक दूसरी आफ़त और पैदा हुई, याने एक काबुली ज्योतिषीने कहा, कि मंगलका तारा सामने है, इसलिये बादशाही फ़ौजकी जुरूर हार होगी. इस ज्योतिषीके वचनने बाबरके कुल अमीरों व फ़ौजी अफ़्सरों वगैरहके दिलोंमें यकायक ऐसी घबराहट पैदा करदी, कि सलाह मश्वरेमें शरीक होना तो दरकिनार, अपने मातहत सिपाहियोंके सामने उनके चिहरोंका रंग तक फीका पड़गया. इससे हिन्दुस्तानी फ़ौज तो बादशाहका साथ छोड़कर भागने लगी. इसका प्रभाव अमीरों व अफ़्सरोंपर ही नहीं हुआ, बल्कि खुद बादशाहको भी पूरा अन्देशह पैदा होगया था; लेकिन् बाबरको बहुतसी मुसीबतें उठा उठाकर आदत पड़रही थी, इससे वह नाउम्मेद नहीं हुआ, मगर उसके दिलपर ख़ौफ़ इतना छागया था, कि उसने अपने मज़्हबी तरीक़ेके ख़िलाफ़ जो जो गुनाह किये थे, उनसे तौबह की; याने शराब पीना छोड़कर सोने चांदीके पियाले वगैरह फ़क़ीरोंको लुटादिये, और ख़ुदासे अह्द किया, कि यह लड़ाई में जीतूंगा, तो डाढ़ी मुंडाना और मुसल्मानोंसे महसूल याने स्टेंप लेना छोड़ दूंगा. फिर तो बाबरको फ़ुर्सत ग़नीमत मिलनेसे सन्तोष आता गया, और उसने अपनी सेनाके लोगोंको खूब तसल्ली दी और समझाया, कि भाइयो भागकर बे.इज़्ज़तीके साथ जीनेसे तो सिपाहीके लिये लड़ाईमें मरजाना ही बिहतर है. अगर लड़ाईमें मरोगे, तो शहीद होगे, और ज़िन्दह रहोगे, तो ग़ाज़ी कहलाओगे, एक वक्त सबको मरना है, लेकिन् बे.इज़्ज़तीका जीना मरनेसे बदतर है. बाबरके ऐसे ऐसे नसीहतके बचनोंने उन्हीं २०००० विलायती सिपाहियोंके दिलपर ऐसा असर किया, कि सबने एक दिल होकर बुलन्द आवाज़से कुर्आनकी क़स्म खाकर कहा, कि हम मर-जावेंगे, लेकिन् पीछे कभी न हटेंगे. अगर्चि बाबरने अपनी फ़ौजको हिम्मत और तसल्ली दिलाकर मज़्बूत किया, लेकिन् उसको फ़त्हकी उम्मेद नहीं थी, इसलिये रायसेनके राजा सलहदी तंवरकी मारिफ़त महाराणाके पास फिर सुलहका पैग़ाम भेजा, और बहुतेरा चाहा कि, जो जो शर्तें महाराणा सांगा चाहें वे सब मन्जूर करली जावें, ब क़ौल कर्नेल् टॉडके कि उसने ख़िराज देना भी मंजूर करलिया था, लेकिन् महाराणाने एक भी बात मंजूर नहीं की, क्योंकि उनके मुसाहिब लोग रायसेनके राजा सलहदीसे अदावत रखते थे, इसलिये इस मुआमलेमें उक्त राजाका बीचमें रहना उनको नागुवार गुज़रा, और इस सबबसे उन्होंने महाराणाको अपनी फ़ौजकी ज़ियादती और मर्दानगी, और मुसल्मानोंकी पस्त हिम्मती दिखलाकर सुलहकी बातको न जमने दिया. तब बाबरने विचारा, कि अब देर होना ठीक नहीं है, जो कुछ होना हो जल्द होजावे. फिर

उसने मोर्चोंके सामने अपनी फ़ौजको जमाया, और तोपें बराबर रखदीं. जब लश्करकी पूरी दुरुस्ती होगई, तो आप घोड़ेपर चढ़कर सारी फ़ौजमें घूमा, और सिपाहियोंको बड़े बड़े ख़िताबोंके साथ पुकारकर उनके दिली जोशको बढ़ाया, और सर्दारोंको लड़ाईका ढंग बतलाकर हिदायतें कीं. विक्रमी १५८४ चैत्र शुक्ल १५ [हि० ९३३ ता० १३ जमादियुस्सानी = ई० १५२७ ता० १६ मार्च] को दोनों तरफ़से हमलह हुआ. इस लड़ाईमें राजपूतोंने अपने क़ाइदहके मुवाफ़िक़ तोपोंके सामने हमलह करदिया. तोपोंमें ग्राफ भरे हुए थे, एक दम बाढ़ झड़नेसे हज़ारहा राजपूत मारे गये; और रायसेनका राजा सलहदी तंवर, जिसको उसकी बात न मानी जानेसे बहुत बड़ा रंज हुआ था, महाराणाकी फ़ौजके हरावलसे निकलकर ३५००० सवारों समेत बाबरसे जा मिला. इतनेहीमें महाराणा सांगाके चिहरेपर एक ऐसा सख़्त तीर लगा, कि जिससे उनको मूर्छा आगई. उसीवक्त आंबेर और जोधपुरके राजा व कितनेही मेवाड़ी सर्दार उसी मूर्छाकी हालतमें महाराणाको पालकीमें बिठाकर मेवाड़की तरफ़ ले निकले. तब मेवाड़ी सर्दारोंने, जो फ़ौजमें लड़ाई कर रहे थे, यह सोचा कि बग़ैर मालिकके रहीसही फ़ौजके भी पैर उखड़ जावेंगे, इसलिये हलवदके झाला अज्जाको छत्र चंवर वग़ैरह महाराणाका कुल लवाज़िमह देकर महाराणाकी सवारीके हाथीपर बिठादिया. अज्जाका छोटा भाई सज्जा तो मेवाड़की तरफ़ महाराणाके साथ रवानह होचुका था, और यह नैमित्तिक (कामके लिये) महाराणा बनकर हाथीपर चंवर उड़वाने लगा. तब तमाम सर्दारोंने जो लड़ाईमें मौजूद थे, निश्चय मानलिया, कि लड़ाईमें महाराणा मौजूद हैं; यदि पीछे पैर हटेंगे, तो पुश्तोंतक हमारे वंशको कलंकका धब्बा लगेगा, इसलिये दुश्मनोंकी फ़ौजकी तरफ़ सबने घोड़े उठादिये; लेकिन् बहुतसे तो तोपोंके ग्राफसे तमाम होगये, और कितनेही बहादुरोंने सख़्त ज़ख़्मी होनेपर भी तलवारोंसे बाबरकी फ़ौजका मुक़ाबलह किया, परन्तु अख़ीरमें सब मारे गये. माणकचन्द व चन्द्रभाण चहुवान, हसनखां मेवाती, महमूदखां लोदी, रावल उदयसिंह, रावत् रत्नसिंह चूंडावत कांदलोत, झाला अज्जा सजावत, सोनगरा रामदास, गोकुलदास प्रमार, रायमल्ल राठौड़, और खेतसी व रत्नसिंह वग़ैरह बड़े बड़े सर्दार इस लड़ाईमें मारे गये, और फ़त्ह बाबरको नसीब हुई. इस फ़त्हकी ख़ुशी जो बाबरको हुई, वह तुज़क बाबरीसे अच्छी तरह ज़ाहिर है, क्योंकि बाबरको फ़त्हयाब होनेकी उम्मेद नहीं थी.

जब राजपूतानहके राजा व सर्दार लोग महाराणा सांगाको पालकीमें लिये हुए, गांव बसवा (१) में पहुंचे, जो आजकल जयपुरकी उत्तरी सीमापर है, तो वहांपर

(१) अमरकाव्यमें इन्तिक़ाल कालपी गांवमें और अन्तिम क्रिया मांडलगढ़में होना लिखा है.

महाराणाकी मूर्छा खुली, उसवक़ उन्होंने लोगोंको फ़र्माया, कि फ़ौजकी क्या हालत है, और फ़त्ह किसकी और शिकस्त किसकी हुई ? तब लोगोंने अ़र्ज़ की, कि बाबरकी फ़त्ह हुई और आपकी कुल फ़ौज कटगई. आपको ज़ख़्मी और मूर्छित समझकर हम लोग कई सर्दारों समेत ले निकले हैं. यह सुनकर महाराणाने कहा, कि तुमने बहुत बुरा किया, कि मुझको लड़ाईकी जगहसे ले आये. यह कहकर फिर वहीं मक़ाम करदिया, और फ़र्माया कि मैं बाबरको फ़त्ह किये बिना पीछा चित्तौड़ नहीं जाऊंगा. इसके बाद उसी मक़ामसे फ़ौज एकट्ठी करनेके लिये काग़ज़ लिखेगये. कहते हैं कि महाराणाके इस दोबारह लड़ाई करनेके इरादहको बहुत आदमियोंने रोका, लेकिन् उन्होंने अपने इरादहको नहीं छोड़ा. तब नमकहरामोंने उनको ज़हर देदिया. यदि यह महाराणा ज़िन्दह रहते, तो यक़ीन था, कि बाबरसे ज़रूर दोबारह मुक़ाबलह करते. बाबर अगर्चि फ़त्हयाब हुआ, लेकिन् इसमें सन्देह नहीं कि वह इस बड़े मारिकेसे नाताक़त भी होगया था, और राजपूतोंमें वतनी क़ुव्वत बाक़ी थी, इसलिये यदि फिर हमलह होता, तो बाबरको मुश्किल गुज़रती. इस लड़ाईके बाद बाबरने अपना लक़ब "ग़ाज़ी" रक्खा, और उन मुर्दोंकी खोपरियोंसे एक मनार तय्यार करवाया जो लड़ाईमें मारे गये थे; लेकिन् बयानाके दक्षिणकी तरफ़ मेवाड़के इलाक़ह पर दिल चलानेमें उसको तअ़म्मुलही रखना पड़ा. काणोता व बसवा मेवाड़की उत्तरी सीमा क़ाइम हुई.

ऊपर बयान कीहुई लड़ाईका हाल बाबर बादशाहने अपनी किताब तुज़क बाबरीके पत्र २४२-२५० में बड़े तअ़स्सुबके साथ लिखा है, जिसका ख़ुलासह हम नीचे दर्ज करते हैं:-

वह लिखता है, कि हमारी फ़त्ह दिल्ली, आगरा, व जौनपुर वग़ैरहपर हुई, और हिन्दू व मुसल्मान सबने हमारी ताबेदारी क़बूल की, सिर्फ़ राणा सांगाने सब मुख़ालिफ़ोंका सरगिरोह बनकर सिर फेरा. वह विलायत हिन्दमें इस तरह ग़ालिब था, कि जिन राजा और रावोंने किसीकी ताबेदारी नहीं की थी, वे भी अपने बड़प्पनको छोड़कर उसके झंडेके नीचे आये, और २०० मुसल्मानी शहर मए मस्जिदों और बालबच्चोंके उसके क़ाबूमें थे, और मस्जिदें उसने ख़राब करडाली थीं. एक लाख सवार उसके तह्तमें होनेसे क़ाइदह विलायतके मुताबिक़ उसका मुल्क दस किरोड़ रुपये सालियानह आमदनीको पहुंचा था, और बड़े बड़े नामी दस सर्दार इस्लामकी अ़दावतसे उसके साथ थे. राजा सलहदी तंवर (रायसेनका), ३०००० सवारोंका मालिक; रावल उन्[illegible] बागड़ी (डूंगरपुरका) १२००० सवारोंका

मालिक; मेदिनीराय (चन्देरीका), १२००० सवारोंका मालिक; हसनखां मेवाती, १२००० सवारोंका मालिक; भारमल्ल ईडरी (ईडरका), ४००० सवारोंका मालिक; नरवद हाड़ा (बूंदीका), ७००० सवारोंका मालिक; शत्रुदेव खीची (गागरौनका), ६००० सवारोंका मालिक; वीरमदेव (मेड़ताका), ४००० सवारोंका मालिक; नरसिंहदेव चहुवान, ४००० सवारोंका मालिक; और सुल्तान सिकन्दरका बेटा शाहज़ादह महमूदखां, १०००० सवारोंका मालिक; जिनकी कुल जमइयत दो लाख एक हज़ार सवार होती है, इस्लामके विरुद्ध चढ़कर आये. इधर मुसल्मान भी जिहाद समझकर तय्यार होगये. हिज्री ९३३ ता० १३ जमादियुस्सानी शनैश्चर [वि० १५८४ चैत्र शुक्ल १५ = ई० १५२७ ता० १६ मार्च] के दिन ज़िले खान्वा इलाके बयानामें मुख़ालिफ़के लश्करसे दो कोसपर बादशाही लश्कर जमा हुआ था. यह सुनकर मुख़ालिफ़ लोग इस्लामकी बर्बादीके लिये हाथियोंको तय्यार और फ़ौजको आरास्तह करके लड़ाईके वास्ते मुसल्मानोंसे मुक़ाबिल हुए. इधर मुसल्मानी लश्करने भी तय्यारी की. दस्तूर रूमके मुवाफ़िक़ बन्दूक़चियोंकी हिफ़ाज़तके लिये गाड़ियोंकी क़तारको ज़ंजीरबन्ध करदी, और कुल बन्दोबस्त तारीफ़के लाइक़ किया. निज़ामुद्दीन अली ख़लीफ़ाने इस कामको बड़ी कोशिशसे किया, सब सर्दारोंने और मैंने भी उसके कामको पसन्द किया. शाही फ़ौजकी तर्तीब इस तरह कीगई, कि बीचमें मैं (बादशाह बाबर) रहा, और दाहिनी तरफ़ मेरा भाई चीन तीमूर सुल्तान, शाहज़ादह सुलैमानशाह, ख़्वाजिह दोस्त ख़ाविन्द, यूनसअली, शाह मन्सूर बर्लास, दर्वेश मुहम्मद सारबान, अब्दुल्लाह किताबदार, और दोस्त एशक आक़ा, अपनी अपनी जगह खड़े हुए, और बाईं तरफ़ बहलोल लोदीका बेटा, सुल्तान अलाउद्दीन आलमखां निज़ामुद्दीन अली ख़लीफ़ा, शैख़ जैन ख़वाफ़ी, मुहब्बेअली, निज़ामुद्दीनअली ख़लीफ़ाका बेटा तर्दीबेग, और उसका भतीजा शेरअफ़्गन, आराइशखां और ख़्वाजिह हुसैन वगैरह बड़े बड़े सर्दार अपनी अपनी जगहपर जमगये. इस तरह ख़ास फ़ौजकी तर्तीब हुई. अब बरन्ग़ार फ़ौज (बादशाहके दाहिनी तरफ़की सेना) में शाहज़ादह हुमायूं बहादुर, जिसके दाहिनी तरफ़ क़ासिम हुसैन सुल्तान, अहमद यूसुफ़ ओग़लाक़ची, हिन्दूबेग कोचीन, ख़ुस्रो कोकलताश, क़िमामबेग उर्दूशाह, वलीख़ाजिनकराकोरी, पीर क़ुली सीस्तानी, सुलैमान, ख़्वाजिह पहलवान बदख़्शी, अब्दुश्शकूर, और सुलैमान-आक़ा एल्ची सीस्तानी मुक़र्रर हुए; और शाहज़ादहके बाईं तरफ़ मीर हमामुहम्मदीन कोकलताश, ख़्वाजिह की असद जामदार तईनात हुए; और बरन्ग़ार बादशाहीमें हिन्दुस्तानी अमीरोंमेंसे ख़ानख़ाना दिलावरखां, मलिकदाद किर्रानी, और शैख़ घूरन

क़ाइम हुए. शाही फ़ौजके जरनग़ार (बादशाहके बाईं तरफ़की सेना) में सय्यद महदी ख्वाजिह, मुहम्मद सुल्तान मिर्ज़ा, आदिल सुल्तान, अब्दुल् अज़ीज़ मीर आख़ोर मुहम्मदअली खिंगजंग, कुतुल्ककदम कराविल, शाहहुसैन बारकी, और जानीबेग अन्का वग़ैरहने क़तार जमाई, और इस गिरोहमें हिन्दके अमीर जलालखां व कमालखां, सुल्तान बहलोल लोदीके पोते, निज़ामखां बयानावाला थे. बरनग़ारकी मददको तरदीक और मलिक क़ासिम वग़ैरह कई मुग़ल सर्दार रक्खे; और जरनग़ारकी मददको मोमिन अन्का, रुस्तम तुर्कमान वग़ैरह मुक़र्रर हुए. सुल्तान मुहम्मद बख़्शी सर्दारोंको अपनी अपनी जगहपर जमाकर आप बादशाही हुक्म सुनने और उसकी तामील करानेको मुस्तइद रहा. जब सब लोग जमगये, तब बादशाहने हुक्म दिया, कि बिदून हुक्म हमारे कोई अपनी जगहसे न हिले, और बिना इजाज़त लड़ाई नकरे. क़रीबन् १ पहर और दो घड़ी दिन चढ़े लड़ाई शुरू होगई. बरनग़ार और जरनग़ारसे ऐसी भारी लड़ाई हुई, कि जिसका शोर आसमानतक पहुंचा, याने महाराणाकी जरनग़ार शाही बरनग़ारपर झुकी और खुसरो कोकलताश और मलिक क़ासिमपर हमलह किया. तब शाही हुक्मसे चीन तीमूर सुल्तान उनकी मददको गया, और राजपूतोंको हटाकर उनकी फ़ौजमें पहुंचादिया. यह कार्रवाई तीमूर सुल्तानकी शुमार कीगई. मुस्तफ़ा रूमीने शाहज़ादह हुमायूंकी फ़ौजसे निकलकर गाड़ियोंको सामने लाकर बन्दूकों और तोपोंसे तरफ़ सानीकी फ़ौजी क़तारोंको तोड़ना शुरू किया. ऐन लड़ाईमें उसकी मददको क़ासिमहुसैन सुल्तान, अहमद यूसुफ़, और क़िमामबेग बादशाही हुक्मसे पहुंचे. तरफ़ सानीकी फ़ौज वाले भी दम बदम अपने आदमियोंकी मददको चले आते थे. बादशाहने हिन्दूबेग कोचीन, और उसके पीछे मुहम्मदी कोकलताश, और ख्वाजिह की असद, और उनके पीछे यूनसअली, शाह मन्सूर बर्लास, और अब्दुल्लाह किताबदारको, और इनके पीछे दोस्त एशक आक़ा, और मुहम्मद ख़लील आस्तहबेगीको मददके लिये भेजा. इधर बादशाही जरनग़ारपर तरफ़ सानीके बरनग़ारने लगातार हमले किये, और ग़ाज़ियोंतक पहुंचगये. शाही फ़ौजके ग़ाज़ियोंने बहुतसोंको तीरोंसे मारा और बहुतसोंको पीछा हटाया. फिर शाही फ़ौजसे मोमिन अन्का और रुस्तम तुर्कमानने निकलकर मुख़ालिफ़ोंकी फ़ौजके पीछेकी तरफ़से हमलह किया, और मुल्ला महमूद और अली अन्का बाशलिकको बादशाहने उनकी मददको भेजा. मुहम्मद सुल्तान मिर्ज़ा, आदिल सुल्तान, अब्दुलअज़ीज़ मीर आख़ोर, व कुतुल्ककदम कराविल, व मुहम्मद अली खिंगजंग शाहहुसैन बारबेजीने भी लड़ाईका हाथ खोलकर पांव जमाया, और ख्वाजिह

हुसैन वज़ीरको मए उसकी जमइयतके बादशाहने उनकी मददको भेजा. इन सब जिहाद करने वालोंने बड़ी कोशिशसे लड़ाई की. बादशाह कुर्आनकी आयत पढ़कर कहता है, कि हमारे हक़में मरना और मारना दोनों बिह्तर हैं, हमारे लोगोंने इस बातपर मज़बूत होकर मरने और मारनेका झंडा ऊंचा किया, और जब लड़ाई बढ़ी और बहुत देर होगई, तब बादशाहके हुक्मसे ख़ास जंगी सिपाही दोनों तरफ़ शाही गोलसे निकले, जोकि ज़ंजीर बन्द गाड़ियोंकी आड़में थे, और बीचमें बन्दूक़चियों और तोपचियोंको रखकर दोनों तरफ़से टूटपड़े, जिससे बहुतसे मुख़ालिफ़ मारेगये, उस्ताद अली कुलीने भी. जो मए अपने साथियोंके बादशाही गोलके आगे खड़ा था, बड़ी मर्दानगी दिखलाई, तोप बन्दूक़ व भारी पत्थरोंसे तरफ़ सानीको बहुत नुक्सान पहुंचाया. बन्दूक़चियोंने भी शाही हुक्मसे गाड़ियोंके आगे बढ़कर बहुतसे दुश्मनोंको तबाह किया, और पैदलोंने बड़े ख़तरेकी जगहमें घुसकर नामवरी हासिल की. बादशाह लिखता है, हम भी गाड़ियोंको बढ़ाकर आगे बढ़े, जिससे लश्करको बड़ा जोश ख़रोश पैदा होगया, और फ़ौजोंके बढ़ावसे गर्द ऐसी उड़ी, कि अंधेरा छागया, लड़ाई ऐसी हुई कि कौन हारा, कौन जीता, और किसने वार किया, और किसके लगा, इसकी पहिचान जाती रही. इस जगह बादशाह लिखता है, कि हमारे ग़ाज़ियोंके कानमें ग़ैबसे उस कलामुल्लाहकी आयतके मुवाफ़िक़ आवाज़ आती थी, जिसका मत्लब यह है, कि "मत दबियो, मत ग़मगीन हो, तुमही ग़ालिब रहोगे". मुसल्मान ग़ाज़ी ऐसे लड़े, कि फ़िरिश्ते भी आस्मानमें उनकी तारीफ़ करते थे. दोपहर ढलनेसे चार घड़ी दिन रहेतक लड़ाई ऐसी हुई, कि जिसके शोले आस्मानतक पहुंचे, बादशाही फ़ौजने मुख़ालिफ़ोंकी फ़ौजको उनके गोलमें मिलादिया. तब उन्होंने एकदम तअम्मुल करके दिल जानसे तोड़कर हमारे दाएं बाएं गोलपर हमलह किया, और बाईं तरफ़ हमारे गोलके क़रीब जापहुंचे, लेकिन् हमारे ग़ाज़ियोंने आख़रतका सवाब समझकर बहादुरीसे उनको पीछा हटादिया, और इसके साथ ही हमको फ़त्हकी ख़ुशख़बरी मिली. तरफ़ सानी शिकस्त जानकर तितर बितर होगये, और बहुतसे लड़ाईमें मारेजाकर बाक़ियोंने जंगलका रास्तह लिया. लाशोंके टीले और सिरोंके मनारे बनगये, हसनख़ां मेवाती बन्दूक़के लगनेसे मारागया, और इसी तरह मुख़ालिफ़ोंके बड़े बड़े सर्दार तीर और बन्दूकोंसे तमाम हुए, जिनमें डूंगरपुरका रावल उदयसिंह, जिसके साथ १२००० सवार थे; राय चन्द्रभाण चहुवान, जिसके साथ ४००० सवार; और राव दलपत, जिसके साथ ४००० सवार; और गंगू व कर्मसी व डूंगरसी, जिनके साथ तीन तीन हज़ार सवार थे वग़ैरह और भी कई नामी गिरामी सर्दार मारे

गये. जिधर इस्लामका लश्कर जाता, कोई क़दम मुर्दोंसे ख़ाली नहीं पाता था. इस फ़त्हके बाद मैंने अपना नाम "ग़ाज़ी" रक्खा. बाबर लिखता है, कि मैं इस्लामके लिये इस लड़ाईके जंगलमें आवारह हुआ, और मैंने अपना शहीद होना ठानलिया था, लेकिन् खुदाका शुक्र है, कि ग़ाज़ी बनकर जीता रहा.

ऊपर लिखा हुआ खुलासह जो तुज़क बाबरीसे लियागया है, सिर्फ़ लड़ाईके हालका है; यदि किसी पाठकको ज़ियादह हाल दर्याफ़्त करना हो, तो तुज़कबाबरीको देखें.

महाराणा सांगाका मंझला क़द, मोटा चिह्रा, बड़ी आंख, लंबे हाथ, और गेहुआं रंग था. यह दिलके बड़े मज्बूत थे. इनकी ज़िन्दगीमें इनके बदनपर ८४ ज़ख़्म शस्त्रोंके लगे थे. एक आंख बेकाम, एक हाथ कटा हुआ, और एक पैर लंगड़ा, ये भी लड़ाईकी निशानियां उनके अंगपर मौजूद थीं. इन महाराणाने महियारिया गोत्रके चारण हरिदासको बादशाह महमूद मालवीको गिरिफ़्तार करनेकी खुशीमें अपना कुल चित्तौड़का राज्य देदिया था. फिर हरिदासने राज्य लेनेसे इन्कार किया, और बारह ग्राम अपनी खुशीसे लिये, जिनमेंसे पांचली नामका एक गांव अभीतक उसकी औलादके क़बज़हमें है. इन महाराणाने जोधपुरके राव जोधाके पोते राव सूजाके बेटे कुंवर बाघा की तीन बेटियोंसे शादी की थी. ये तीनों राव बाघाकी राणी चहुवान पुहपावतीसे पैदा हुई थीं. इनमेंसे धनबाईके पेटसे बड़े कुंवर रत्नसिंह पैदा हुए, और बूंदीके राव भांडाकी पोती और नरवदकी बेटी महाराणी कर्मवती बाईसे महाराणा विक्रमादित्य और उदयसिंह पैदा हुए. इन महाराणाके सबसे बड़े राजकुमार भोजराज थे, जिनकी शादी मेड़ताके राजा वीरमदेवके छोटे भाई रत्नसिंहकी बेटी व जयमल्लके काकाकी बेटी मीरांबाईके साथ हुई थी, लेकिन् उक्त राजकुमारका देहान्त महाराणा सांगाके सामने ही होगया था. कर्नेल् टॉड वग़ैरह कितने ही मुवर्रिख़ोंने मीरांबाईको महाराणा कुम्भा की राणी लिखा है, लेकिन् यह बात ग़लत है, क्योंकि मीरांबाईका भाई जयमल्ल तो विक्रमी १६२४ [हि० ९७५ = ई० १५६७] में अक्बरकी लड़ाईमें चित्तौड़पर मारागया, और महाराणा कुम्भाका देहान्त विक्रमी १५२५ [हि० ८७३ = ई० १४६८] में होगया था, फिर न मालूम कर्नेल् टॉडने यह बात अपनी किताबमें कहांसे दर्ज की.

इन महाराणाके ७ राजकुमार थे - भोजराज, कर्ण, रत्नसिंह, पर्वतसिंह, कृष्णदास, विक्रमादित्य, और उदयसिंह; जिनमेंसे भोजराज, कर्ण, पर्वतसिंह और कृष्णदास तो कुंवरपदेहीमें परलोकवास करगये, और रत्नसिंह, विक्रमादित्य, व उदयसिंह, ये तीनों मेवाड़की गादीपर बैठे, जिनका हाल दूसरे भागमें लिखा जायेगा. महाराणा सांगाका जन्म विक्रमी १५३८ वैशाख कृष्ण ९ [हि० ८८६ ता० २३ मुहर्रम =

ई० १४८१ ता० २४ मार्च] को, राज्याभिषेक विक्रमी १५६५ ज्येष्ठ शुक्ल ५ [हि० ९१४ ता० ४ मुहर्रम = ई० १५०८ ता० ४ मई] को, और देहान्त विक्रमी १५८४ [हि० ९३३ रजब = ई० १५२७ एप्रिल] के वैशाख में हुआ था.

शेष संग्रह.

१ – वल्लभीका ताम्रपत्र.

(कॉर्पस इन्स्क्रिप्शनम् इंडिकेरम्की जिल्द ३ री के पृष्ठ १७१—१८० में छपा है.)

ओं स्वस्ति श्रीमदानन्दपुरसमावासितजयस्कन्धावारात् प्रसभप्रणतामित्राणां मैत्रकाणामतुलबलसंपन्नमण्डलाभोगसंसक्तसंप्रहारशतलब्धप्रतापात्प्रतापोपनत-दानमानार्ज्जवोपार्जितानुरागादनुरक्तमौलभृतश्रेणीबलावाप्तराज्यश्रियःपरममाहेश्वर श्रीभट्टार्कादव्यवच्छिन्नवंशान्मातापितृचरणारविन्दप्रणतिप्रविविक्ताशेषकल्मषः शै-शवात्प्रभृतिखड्गद्वितीयबाहुरेव समदपरगजघटास्फोटनप्रकाशितसत्वनिकषः तत्प्र-भावप्रणताराातिचूडारत्नप्रभासंसक्तपादनखरश्मिसंहतिः सकलस्मृतिप्रणीतमार्ग्ग-सम्यक्क्रियापालनप्रजाहृदयरंजनादन्वर्त्थराजशब्दोरूपकान्तिस्थैर्य्यगाम्भीर्य्यबुद्धिसं-पद्भिः स्मरशशांकाद्रिराजोदधित्रिदशगुरुधनेशानतिशयानः शरणागताभयप्रदान-परतया तृणवदपास्ताशेषस्ववीर्य्यफलः प्रार्त्थनाधिकार्त्थप्रदानानन्दितविद्वत्सुहृ-त्प्रणयिहृदयः पादचारीव सकलभुवनमण्डलाभोगप्रमोदः परममाहेश्वरः श्री-गुहसेनः तस्य सुतः तत्पादनखमयूखसंतानविसृतजाह्नवीजलौघप्रक्षालिताशेषक-ल्मषः प्रणयिशतसहस्रोपजीव्यमानसंपद्रूपलोभादिवाश्रितः सरभसमाभिगा-मिकैः गुणैः सहजशक्तिः शिक्षाविशेषविस्मापितसर्वधनुर्द्धरः प्रथमनरपति-समतिसृष्टानामनुपालयिता धर्म्मदायानामपाकर्त्ता प्रजोपघातकारिणां उपप्लवानां शमयिता श्रीसरस्वत्योरेकाधिवासस्य संहताराातिपक्षलक्ष्मीपरिभोगदक्षविक्रमः विक्रमोपसंप्राप्तविमलपार्थिवश्रीः परममाहेश्वरः श्रीधरसेनः तस्य सुतः तत्पादा-नुध्यातः सकलजगदानन्दनात्यद्भुतगुणसमुदयस्थगितसमग्रदिग्मण्डलः समरश-तविजयशोभासनाथमण्डलाग्रद्युतिभासुरान्सपीठो व्यूढगुरुमनोरथमहाभारः सर्व्व-विद्यापारपरमभागाधिगमविमलमतिरपि सर्व्वतः सुभाषितलवेनापि स्वोपपादनी-यपरितोषः समग्रलोकागाधगांभीर्य्यहृदयोपि सच्चरितातिशयसुव्यक्तपरमकल्याण-स्वभावः खिलीभूतकृतयुगनृपतिपथविशोधनाधिगतोदग्रकीर्तिः धर्म्मानुरोधोज्ज्वल-तरीकृतार्त्थसुखसंपदुपसेवानिरूढधर्म्मादित्यद्वितीयनामा परममाहेश्वरः श्रीशीला-दित्यः तस्य सुतः तत्पादानुध्यातः स्वयमुपेन्द्रगुरुणेव (गुरुः) गुरुणात्यादरवता सम-भिलषणीयामपि राजलक्ष्मीं स्कन्धासक्तां परमभद्राणां धुर्य्यस्तदाज्ञासंपादनैकरस-तयोद्वहनखेदसुखरतिभ्यां अनायासितसत्त्वसंपत्तिः प्रभावसंपद्वशीकृतनृपतिशतशि-

रोरत्नच्छा गेपगूढपादपीठोपि परमावज्ञाभिमानरसानालिंगितमनोवृत्तिः प्रणतिमेकां परित्यज्य प्रख्यातपौरुषाभिमानैरप्यरातिभिरनासादितप्रतिक्रियोपायः कृतनिखिलभुवनामोदविमलगुणसंहतिः प्रसभविघटितसकलकलिविलसितगतिर्नीचजनाभिद्रोहिभिरशेषैः दोषैरनामृष्टात्युन्नतहृदयः प्रख्यातपौरुषः शास्त्रकौशलातिशयो (गुण) गणातिथविपक्षक्षितिपतिलक्ष्मीस्वयं (स्वयं) ग्राहप्रकाशितप्रवीरपुरुषप्रथमसंख्याधिगमः परममाहेश्वरः श्रीखरग्रहः तस्य सुतः तत्पादानुध्यातः सर्व्वविद्याधिगमविहितनिखिलविद्वज्जनमनः परितोषितातिषय : सत्वसंपत्त्यागैः शौर्य्येण च विगतानुसंधानसमाहितारातिपक्षमनोरथरथाक्षभंग : सम्यगुपलक्षितानेकशास्त्रकलालोकचरितगह्वरविभागोपि परमभद्रप्रकृतिरकृत्रिमप्रश्रयोपि विनयशोभाविभूषण : समरशतजयपताकाहरणप्रत्ययोदग्रबाहुदण्डविध्वंसितप्रतिपक्षदर्प्पोदयः स्वधनु : प्रभावपरिभूतास्त्रकौशलाभिमानसकलनृपतिमण्डलाभिनन्दितशासनः परममाहेश्वरः श्रीधरसेनः तस्यानुजः तत्पादानुध्यातः सच्चरितातिशयितसकलपूर्व्वनरपतिः दुस्साधनानामपि प्रसाधयिता विषयाणां मूर्तिमानिव पुरुषकारः परिवृद्धगुणानुरागानिर्भराचित्तवृत्तिभिः मनुरिव स्वयमभ्युपपन्नः प्रकृतिभिरधिगतकलाकलापः कान्तितिरस्कृतसलांछनकुमुदनाथः प्राज्यप्रतापस्थगितदिगन्तरालः प्रध्वंसितध्वान्तराशिः सततोदितसविता प्रकृतिभ्यः परं प्रत्ययमर्थवन्तमतिबहुतिथप्रयोजनानुबंधमागमपरिपूर्णं विदधानः सन्धिविग्रहसमासनिश्चयनिपुणः स्थानानुरूपमादेशं ददतां गुणवृद्धिराजविधानजनितसंस्कारसाधूनां राज्यशालातुरीयतन्त्रयोरुभयोरपि निष्णातः प्रकृतिविक्रमोपि करुणामृदुहृदयः श्रुतवानप्यगर्व्वितः कान्तोपि प्रशमी स्थिरसौहार्द्दोपि निरसिता दोषवतामुदयसमुपजनितजनानुरागपरिवृंहितभुवनसमर्थितप्रथितबालादित्यद्वितीयनामा परममाहेश्वरः श्रीधरसेनः तस्य सुतः तत्पादकमलप्रणामधरणिकषणजनितकिणलांछनललाटचन्द्रशकलः शिशुभाव एव श्रवणनिहितमौक्तिकालंकारविभ्रमामलश्रुतविशेषः प्रदानसलिलक्षालिताग्रहस्तारविन्दः व्यास इव मृदुकरग्रहणादमन्दीकृतानन्दविधिः वसुंधरायाः कार्मुकधनुर्वेद इव संभाविताशेषलक्ष्यकलापः प्रणतसमस्तसामन्तमण्डलोपमनिभृतचूडामणिनीयमानशासनः परममाहेश्वरः परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरः चक्रवर्त्तिश्रीधरसेनः तत्पितामहभ्रातृश्रीशिलादित्यस्य शार्ङ्गपाणेरिवाग्रजन्मनो (१) भक्तिबन्धुरावयवकल्पितप्रणते-

(१) कॉर्पस इन्स्क्रिप्शनम् इंडिकेरम्की तीसरी जिल्दके पृष्ठ १७६ के नोट नम्बर ५ में ' अग्रजन्मनो ' को ' अङ्गजन्मनो ' पढ़ो, ऐसा लिखा है.

रतिधवलयातत्पादारविन्दप्रवृत्तया चरणनखमणिरुचा मन्दाकिन्येवनित्यममलितोत्त-मांगदेशस्यागस्त्यस्येव राजर्षेः दाक्षिण्यमातन्वानस्य प्रवलधवलिम्ना यशसां वलयेन मण्डितककुभा नभसि यामिनीपतेर्विरचिताखण्डपरिवेशमण्डलस्य पयोदश्यामशि-खरचूचुकरुचिरसह्यविन्ध्यस्तनयुगायाः क्षितेः पत्युः श्री देरभटस्याग्रजः(१)क्षितिपसं हृतेः चारुविभागस्य सुचिरयशोंशुकभृतः स्वयंवराभिलाषिणीमिव राज्यश्रियमर्प्पय न्त्याः कृतपरिग्रहः शौर्यमप्रतिहतव्यापारमानमितप्रचण्डारिपुमण्डलाग्रमिवालंबमानः शरदि प्रसभमाकृष्टशिलीमुखबाणासनापादितप्रसाधनानां परभुवां विधिवदाचरित-करग्रहणः पूर्व्वमेव विविधवर्णोज्वलेन श्रुतातिशयनोद्भासितश्रवणयुगलः पुनः पुन-रुक्तेनेव रत्नालंकारेणालंकृतश्रोत्रः परिस्फुरत्कटकविकटकीटपक्षरत्नकिरणमविच्छि-न्नप्रदानसलिलनिवहावसेकविलसन्नवशैवलांकुरमिवाग्रपाणिमुद्वहन् धृतविशाल-रत्नवलयजलधिवेलातटायमानभुजपरिष्वक्तविश्वंभरः परममाहेश्वरः श्रीध्रुवसेनः तस्याग्रजोपरमहीपतिस्पर्शदोषनाशनधियेव लक्ष्म्यास्वयमतिस्पष्टचेष्टमाश्लिष्टाङ्गय-ष्टिरतिरुचिरतरचरितगरिमपरिकालितसकलनरपातिरतिप्रकृष्टानुरागसरभसवशीकृत प्रणतसमस्तसामन्तचक्रचूडामणिमयूखखचितचरणकमलयुगलः प्रोद्दामोदारदोर्द-ण्डदलितद्विषद्वर्गदर्प्पः प्रसर्प्पत्पटीयः प्रतापप्लोपिताशेषशत्रुवंशः प्रणयिपक्ष-निक्षिप्तलक्ष्मीकः प्रेरितगदोत्क्षिप्तसुदर्शनचक्रः परिहृतबालक्रीडोनधःकृतद्वि-जातिरेकविक्रमप्रसाधितधरित्रीतलोनङ्गीकृतजलशय्योपूर्व्वपुरुषोत्तमः साक्षाद्धर्म-इव सम्यग्व्यवस्थापितवर्णाश्रमाचारः पूर्व्वैरप्युर्व्वीपतिभिः तृष्णालवलुब्धैः यान्यपहृतानि देवब्रह्मदेयानि तेषामप्यतिसरलमनाः प्रसरमुत्संकलनानुमोदनाभ्यां परिमुदितत्रिभुवनाभिनन्दितोच्छ्रितोत्कृष्टधवलधर्म्मध्वजः प्रकाशितनिजवंशो देव-द्विजगुरुन् प्रतिपूज्य यथार्हमनवरतप्रवर्त्तितमहोद्रङ्गादिदानव्यवस्थानोपजातसंतोषो-पात्तोदारकीर्तिपरंपरादन्तुरितनिखिलदिक्चक्रवालः स्पष्टमेव यथार्थं धर्म्मादित्य-द्वितीयनामा परममाहेश्वरः श्रीखरग्रहः तस्याग्रजन्मनः कुमुदपण्डश्रीविका-सिन्या कलावतश्चन्द्रिकयेव कीर्त्या धवलितसकलदिङ्मण्डलस्य खण्डितागुरुविलेप-नपिण्डश्यामलविंध्यशैलविपुलपयोधरायाः क्षितेः पत्युः श्रीशिलादित्यस्य सूनुर-नवप्रालेयकिरणइव प्रतिदिनसंवर्द्धमान (हृदय) कलाचक्रवालः केसरीन्द्रशिशुरिव राजलक्ष्मीं सकलवनस्थलीमिवालंकुर्व्वाणः शिखण्डिकेतनइव रुचिमच्चूडाम-

---

(१) कॉर्पस इन्स्क्रिप्शनम् इंडिकेरम्की तीसरी जिल्दके पृष्ठ १७६ के नोट नम्बर ९ में 'अग्रजः' को 'अङ्गजः' पढ़ो, ऐसा लिखा है.

ण्डनः प्रचण्डशक्तिप्रभावश्च शरदागम इव (१) द्विषतां परममाहेश्वरः परमभट्टारक महाराजाधिराजपरमेश्वरः श्रीबप्पपादानुध्यातः परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरः श्रीशीलादित्यदेवस्तस्य सुतः परमैश्वर्य्यः कोपाकृष्टनिर्स्त्रिंशपातविदलितारातिकरिकुम्भस्थलोल्लसत्प्रसृतमहाप्रतापानलः प्राकारपरिगतजगन्मण्डललब्धस्थितिः विकटनिजदोर्द्दण्डावलंबिना सकलभुवनाभोगभाजा मन्थास्फालनविधुतदुग्धसिन्धुफेनपिण्डपाण्डुरयशोवितानेन विहितातपत्रः परममाहेश्वरः परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीबप्पपादानुध्यातः परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरः श्री शीलादित्यदेवः तत्पुत्रः प्रतापानुरागप्रणतसमस्तसामन्तचूडामणिनखमयूखनिचितरञ्जितपादारविन्दः परममाहेश्वरः परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरः श्रीबप्पपादानुध्यातः परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीशीलादित्यदेवः तस्यात्मजः प्रशमितरिपुबलदर्प्पः विपुलजयमंगलाश्रयः श्रीसमालिंगनलालितवक्षाः समुपोढनारसिंहविग्रहोर्जितोद्धुरशक्तिः समुद्धतविपक्षभूभृत्कृतनिखिलगोमण्डलरक्षः पुरुषोत्तमः प्रणतप्रभूतपार्थिवकिरीटमाणिक्यमसृणितचरणनखमयूखरंजिताशेषदिग्वधूमुखः परममाहेश्वरः परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीबप्पपादानुध्यातः परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरः श्रीशीलादित्यदेवः परममाहेश्वरः तस्यात्मजः प्रथितदुस्सहवीर्य्यचक्रो लक्ष्म्यालयोनरकनाशकृतप्रयत्नः पृथ्वीसमुद्धरणकार्य्यकृतैकनिष्ठः संपूर्णचन्द्रकरनिर्मलजातकीर्त्तिः ॥ ज्ञातत्रयीगुणमयो जितवैरिपक्षः संपन्न — — मसुखः सुखदः सदैव ज्ञानालयः सकलवन्दितलोकपालो विद्याधरैरनुगतः प्रथितः पृथिव्यां ॥ रत्नोज्ज्वलोवरतनुर्गुणरत्नराशिः ऐश्वर्यविक्रमगुणैः परमैरुपेतः सत्वोपकारकरणे सततं प्रवृत्तः साक्षाज्जनार्द्दनइवार्द्दितदुष्टदर्प्पः ॥ युद्धे सकृद्गजघटाघटनैकदक्षः पुण्यालयो जगति गीतमहाप्रतापः राजाधिराजपरमेश्वरवंशजन्मा श्रीध्रूभटो जयति जातमहाप्रमोदः ॥ स च परममाहेश्वरः परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीबप्पपादानुध्यातः परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरः श्रीशीलादित्यदेवः सर्वानेव समाज्ञापयत्यस्तु वः संविदितं यथा मया मातापित्रोरात्मनश्च पुण्ययशोभिवृद्धये ऐहिकामुष्मिकफलावाप्त्यै श्रीमदानन्दपुरवास्तव्यतच्चातुर्विद्यसामान्यशार्कराक्षिसगोत्रबह्वृचसब्रह्मचारिभट्टाख - ण्डलमित्राय भट्टविष्णुपुत्राय बलिचरुवैश्वदेवाग्निहोत्रक्रतुक्रियाद्युत्सर्पणार्थं श्री-

(१) कार्पस इन्स्क्रिप्शनम् इंडिकेरम्की तीसरी जिल्दके पृष्ठ १७७ के नोट नम्बर ८ में लिखा है, कि 'शरदागम इव' के आगे और 'द्विषतां' के पहिले निम्नोक्त शब्द छूट गये हैं:- प्रतापवानुल्लसत्पद्मः संयुगे विदलयन्नम्भोधरानिव परगजानुदयतपनबालातपइव संग्रामेषु मुष्णन्नभिमुखानामायूंषि-

खेटकाहारे उप्पलहेटपथके महिलाबलीनामग्रामः सोद्रङ्गः सोपरिकरः सोत्पद्यमानविष्टिकः सभूतवातप्रत्यायः सदशापराधः सभोगभागः सधान्यहिरण्यादेयः सर्व्वराजकीयानाम् अहस्तप्रक्षेपणीयः पूर्व्वप्रदत्तदेवदायब्रह्मदायवर्ज्जं भूमिच्छिद्रन्यायेनाचन्द्रार्क्कार्णवक्षितिपर्व्वतसमकालीनः पुत्रपौत्रान्वयभोग्य उदकातिसर्ग्गेण ब्रह्मदायत्वेन प्रतिपादितः यतोस्योचितया ब्रह्मदायस्थित्या भुंजतः कृषतः कर्षापयतः प्रतिदिशतो वा नकैश्चिद्व्यासेधे वर्त्तितव्यं ॥ आगामिभद्रनृपतिभिः अस्मद्वंशजैरन्यैर्व्वानित्यान्यैश्वर्य्याण्यस्थिरं मानुष्यकं सामान्यं च भूमिदानफलं अवगच्छद्भिः अयमस्मद्दायोनुमन्तव्यः पालयितव्यश्च उक्तं च वेदव्यासेन व्यासेन बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ यानीह दत्तानि पुरा नरेन्द्रैः धनानि धर्म्मायतनीकृतानि ॥ निर्माल्यवान्तप्रतिमानि तानि को नाम साधुः पुनराददीत ॥ षष्टिवर्षसहस्राणि स्वर्ग्गे तिष्ठति भूमिदः आच्छेत्ताचानुमंता च तान्येव नरके वसेत् ॥ विंध्याटवीष्वतोयासु शुष्ककोटरवासिनः कृष्णाहयो हि जायन्ते भूमिदायं हरन्ति ये ॥ दूतकोत्र महाप्रतीहारश्रीदेटहाक्षपटलिकराजकुलश्रीसिद्धसेनः श्रीशर्व्वटसुतः तथा तन्नियुक्तप्रतिनर्त्तककुलपुत्रामात्यगुहेन हेम्बटपुत्रेण लिखितमिति ॥ संवत्सरशतचतुष्टये सप्तचत्वारिंशदधिके ज्येष्ठ शुद्ध पंचम्यां अंकतः संव ४४७ ज्येष्ठ शु ५ स्वहस्तो मम.
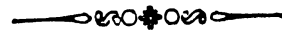
२–कूंडा ग्रामकी प्रशस्ति.

ॐ नमः स्पृष्टा वक्षसि लीलया कररुहैः काचित्कचाकर्षणादन्या कामपरेण पादपतनैः कण्ठग्रहेणापरा धन्यास्ता भुवने सुरेन्द्रतनवो याः प्रापिता निर्वृतिं स्मृत्वेत्थं स्पृहयन्ति गोपवनिता यस्मै सपायाद्धरिः ॥ लक्ष्मीलीलोपधानं प्रलयजलनिधिस्थायिनोगण्डशैला दर्पोद्धृत्तासुरेन्द्रद्रुमगहनवनच्छेददक्षाः कुठाराः संसारापारवारिप्रसररयसमुत्तारणे बद्धकुक्ष्याः दोर्द्दण्डाः पान्तु शौरेस्त्रिभुवनभवनोत्तम्भनस्तम्भभूताः ॥ राजा श्रीगुहिलान्वयामलपयोराशौ स्फुरद्दीधिति ध्वस्तध्वान्तसमूहदुष्टसकलव्यालावलेपान्तकृत् श्रीमानित्यपराजितः क्षितिभृतामभ्यर्चितो मूर्धभिः वृत्तस्वच्छतयेव कौस्तुभमणिर्जातो जगद्भूषणं ॥ शिवात्मजोखण्डितशक्तिसंपद्धुर्यः समाक्रान्तभुजंगशत्रू तेनेन्द्रवत्स्कन्द इव प्रणेता वृतो महाराजवराहसिंहः ॥ जनगृहीतमपि क्षयवर्जितं धवलमप्यनुरञ्जितभूतलं स्थिरमपि प्रविकासि दिशोदश भ्रमति यस्य यशो गुणवेष्टितं ॥ तस्य नाम दधती यशोमती गेहिनी प्रणयिनी यशोमती चित्तमुत्पथगतं निरुन्धती सा बभूव विनयादरुन्धती ॥ श्रीर्व्वन्धकी

स्थाणुरता च गौरी वैधव्यदुःखोपहता रतिश्च बाला त्रिलोक्यामतुलोपमाना सीमन्तिनीनां धुरि सैव जाता ॥ विलोक्यासौ लक्ष्मीं स्वनयननिमेषप्रतिसमां वयो वित्तं रंगत्तनुतरतर[illegible]तरलं तरन्संसाराब्धिं विषमविषयग्रा[illegible]कलितं स्थिरं पोताकारं भवनमकरोत्कैटभरिपो : ॥ सूचिर्विस्फोटयन्तः स्फुटितपुटरजोधूसराः केतकीनामाधुन्वन्तः कलापान्मदकलवचसान्नृत्यताम्बर्हिणानां मेघालीर्व्विक्षिपन्तः सलिलकणभृतोवायव : प्रावृषेण्यावान्त्युच्चैर्यत्र तस्मिन्पुरुनरकीरपोमैंदिरं सन्निविष्टं ॥ यावद्वानोखुराग्रक्षणितजलमुचस्तुङ्गरङ्गास्तुरङ्गा यावत्कामार्तिपृथ्वीतलमतुलजलानोसमुद्रा समुद्रा ॥ यावन्मेरोर्नमेरुप्रसवसुरभयो वान्ति भागा शुभाशा शौरेर्धर्मास्तु तावत्कृतनियमनमाद्विप्रसिद्धं प्रासिद्धं ॥ दामोदरस्य पौत्रेण सूनुना ब्रह्मचारिणः नाम्ना दामोदरेणैव कृता काव्यविडम्बना ॥ बालेनाजितपौत्रेण स्फुटा वत्सस्य सूनुना यशोभटेन पूर्वेयमुत्कीर्ण्णा विकटाक्षरा ॥ संवत्सरशतेषु सप्तसु अष्टादशाधिकेषु मार्गशीर्षशु[illegible]मी प्रतिष्ठा वासुदेवस्य नमः पुरुषोत्तमाय ॥

३-चित्तौड़के मोरी राजाओंके लेख का भाषान्तर.

(यह लेख चित्तौड़के पास मानसरोवर तालाबके किनारे एक स्तम्भपर खुदाहुआ मिला था, जिसका अंग्रेज़ी तर्जमा कर्नेल् टॉडने अपने बनायेहुए टाडनामह राजस्थानकी जिल्द पहिली के पृष्ठ ७९९ में दिया है.)

समुद्र तेरी रक्षा करे. वह क्या है, जो समुद्रके सदृश है ? जिसके तीर पर मधु देने वाले वृक्षोंकी लाल कलियां मधु मक्खियोंके समूहसे ढकी हैं, और जिसकी शोभा अनेक जलधाराओंके संयोगसे अधिक होती है. समुद्रके समान क्या है, जिसमेंसे पारिजातकी सुगंधि निकलती है, और जिसको मदिरा, लक्ष्मी और अमृत रूपी कर (खिराज) देना पड़ा ? ऐसा जो समुद्र है, वह तेरी रक्षा करे.

यह तालाब एक बड़े दानका स्मारक चिन्ह है, जो देखने वालोंके चित्तोंको मोहित करता है, जिसमें अनेक प्रकारके पक्षीगण आनन्द पूर्वक तैरते हैं, जिसके किनारों पर प्रत्येक प्रकारके वृक्ष लगे हुए हैं, और उच्च शिखर वाले पर्वतसे गिरकर स्थानकी शोभा बढ़ाती हुई जलधारा जिसकी ओर वेगसे बहती है. समुद्रके मथन समय वहां का नाग श्रमसे थककर विश्राम लेनेको इस तालाब में आया.

इस पृथ्वीपर महेश्वर नामका एक बड़ा राजा था, जिसके राज्य शासनमें शत्रुका नाम कभी नहीं सुना गया; जिसकी लक्ष्मी आठों दिशाओंमें प्रसिद्ध थी,

जिसकी भुजापर जयश्री सहायताके लिये झुकी हुई थी. वह उस भूमिका प्रकाश था. त्वस्थ (तक्षक) वंशकी प्रशंसा ब्रह्माने अपने मुखारविंदसे स्वयं की है.

अभिमान युक्त सुन्दर हंस, जो कमल समूहके मध्यमें क्रीडा करता है, और वह उस व्यक्तिके हाथसे पला हुआ है, जिसके मुखारविन्दसे प्रतापकी किरणें फैलती हैं, ऐसा अ[illegible]ीका राजा भीम था, वह युद्धरूपी समुद्रके तैरनेमें चतुर था, और वह वहांतक भी गया था, जहां गंगाकी धारा समुद्रमें गिरती है. राजा भीम, क़ैद कीहुई अपने शत्रुओंकी उन चन्द्रवदनी स्त्रियों के हृदयमें भी बसता है, जिनके ओष्ठोंपर उनके पतियोंके दंतक्षत अभीतक बने हैं. उसने अपने भुजबलसे शत्रुओंकी तरफ़ का भय मिटा दिया; और वह उनको दोषोंके समान नष्ट करने योग्य मानता था. वह ऐसा प्रतीत होता था मानो अग्निसे उत्पन्न हुआ है; और वह समुद्रके नाविकोंको भी शिक्षा देसक्ता था.

उसके राजा भोज उत्पन्न हुआ, उसका वर्णन किस रीतिसे कियाजाये; जिसने युद्धक्षेत्रमें हस्तीके मस्तकको विदीर्ण किया, जिसमें से निकले हुए मुक्ता अब उसके वक्षस्थलको सुशोभित करते हैं; जो अपने शत्रुको इस प्रकारसे ग्रस लेता है, जैसे सूर्य अथवा चन्द्रको राहु ग्रसता है; और जिसने पृथ्वीके छोर तक जय-स्तम्भ बनाये.

उसके मान नामका एक पुत्र हुआ, जो सद्गुणों से परिपूर्ण था, और जिसके साथ लक्ष्मी निवास करती थी. वह एक दिन एक वृद्ध पुरुषसे मिला, उसकी आकृति देखकर उसको विचार हुआ, कि उसका शरीर छायाके तुल्य थोड़े ही कालमें नाश होने वाला है; उसमें जो आत्मा रहता है वह सुगन्धित कदम्ब के बीजके तुल्य है; और राज्यलक्ष्मी तृणसमान क्षणभंगुर है; और मनुष्य उस दीपकके समान है, जो दिनके उजेलेमें रक्खाजावे. इस प्रकार विचार करते हुए उसने अपने पूर्वजोंके लिये और अच्छे कार्योंके लिये यह तालाब बनाया, जिसके जलका विस्तार अधिक और गहराई अथाह है. जब मैं इस समुद्रतुल्य तालाबको देखता हूं, तो अपने मनमें तर्क होता है, कि कदाचित् यही (तालाब) महाप्रलय करने वाला न हो.

राजा मानके योद्धे और सर्दार चतुर और वीर हैं, उनका जीवन शुद्ध, और वे ईमान्दार हैं. राजा मान सद्गुणोंका भंडार है, जिस सर्दारपर उसकी कृपा हो, वह सर्व प्रकारकी संपत्ति प्राप्त करसक्ता है; और उसके चरण कमल पर मस्तक नमानेके समय जो रजका कण उसमें लगजाता है, वह उसका

आभूषण होता है. यह ऐसा तालाब है, जिसपर वृक्षोंकी छाया है, जहां पक्षी-गण बहुधा आया करते हैं; और जिसको भाग्यशाली श्रीमान् राजा मानने बड़े परिश्रमसे बनाया है. अपने स्वामी (मान) के नामसे यह तालाब संसारमें प्रसिद्ध है. अलंकारमें निपुण, नागभटके पुत्र पुष्यने ये श्लोक बनाये.

संवत् ७७० में मालवाके राजाने इस तालाबको बनाया. खेत्री करुगके पौत्र शिवादित्यने इन पंक्तियोंको खोदा.

४- उदयपुरसे ईशानकोण, आधमीलके फ़ासिलेपर तारणेश्वर महादेवके मन्दिरमें लगी हुई प्रशस्ति.

ॐ पांतु पद्मांगसंसंगचंचन्द्रोमांचवीचयः श्यामाः कलिन्दतनया पूरा इव हरेर्भुजाः ॥ राज्ञी महालक्ष्म्यभिधानविश्रुता तदंगजोप्यल्लटमेदिनीपतिः तदीय पुत्रो नरवाहनाभिधः सगुन्दलः सोढकसिद्धसीलुकाः ॥ सान्धिविग्रहिकदुर्ल्लभराजो मातृदेवसहितः सदुदेवः अल्लटाच्छपट ाभिनियुक्तौ विश्रुतावपि मयूर समुद्रौ ॥ वसन्तराजद्विजनागरुद्रौ सभूवणौ मावषनारकौ च रिषिः प्रमाता गुहिषोथ गर्ग स्त्रिविक्रमो वन्दिपतिश्च नागः ॥ भिषगधिराजो रुद्रादित्यो वज्रटलिम्बादित्यच्छन्नाः अम्मुलसंगमवीरसजोजाः वैश्रवणाविकभक्तिम्मोहाः संगमवे कनागा जज्जेलकवासुदेवदुम्वटकाः यच्चक्याद्या देशी तथा वणिग्देवराजश्च ॥ प्रतिहारयशः पुष्पो रुद्रहासोथ राहटः धर्म्मः काष्टिकसाहारः श्रीधरोवन्नटिस्तथा ॥ हूणश्च कृषुराजोन्यः सर्वदेवोपि गोष्टिकः कृतमायतनं चेदममात्ये मम्मटे सति ॥ पुण्यप्रबन्धपरिपाकिम कीर्तयो मी संसारसागरमसारमिमं गभीरं बुध्वा त्रिराजशिखरोत्थमचीकरंत पोतायमानमिदमायतनं मुरारेः ॥ कर्णाटमध्यविषयोद्भवलाटटक्का अन्येपि केचिदिह ये वणिजो विशन्ति तैः कल्पितं मधुरिपोः प्रतिपूजनाय दानं न केनचिदपि व्यभिचारणीयम् ॥ द्रम्ममेकं करी दद्यातुरगो रूपकद्वयं द्रम्मार्धविंशकं शृंगी लाटहट्टे तुलाढकौ ॥ एकादशी शुक्लदिनेऽखिलायः कन्दूकृतांस्याद् घटिका पणस्य घृतंधराणामपिपे (टकं) स्यादेकैकशस्तैलपलं च घाणे ॥ रन्धनीनां गते मासे रूपकोथ चतुःसरं ॥ प्रत्यहं मालिकानां च दानमेतदिह स्फुटं ॥ कार्तिकसितपंचम्यामग्रटनाम्ना सुसूत्रधारेण प्रारब्धं देवगृहं काले वसुशून्यादेक्संस्थे ॥ दशदिग्विक्रमकाले वैशाखे शुद्धसप्तमीदिवसे। हरिरिह निवेशितोयं घटितप्रतिमो वराहेण ॥ तथा निरूपिता शेष श्रीमदल्लट (भूपतिः) लेखितारौ च कायस्थौ पाल्वे कसंज्ञकौ ॥ गोपप्रभासमहिधरनारायणभट्टसर्वदेवाद्याः। अम्मकसहिताः सर्वे निश्चितमिह गोष्ठिका ह्येते ॥

५–उदयपुरसे पूर्वकी तरफ़ एक मीलके फ़ासिलेपर हरिसिद्धि माताके मन्दिरकी सीढ़ियोंपरके लेखका अक्षरान्तर.

मुररिपोरिव शम्बरसूदनः पुररिपोरिव बर्हिणवाहनः। जलनिधेरिव शीतरुचिः क्रमादजनि शक्तिकुमारनृपस्ततः॥ अब्धिरिव स्थितिलंघनभीरुः कर्ण्ण इवार्त्थिवितीर्ण्णहिरण्यः शंभुरिवारिपुसंकृतदाघः श्रीशुचिवर्म्मनृपो .... (म) नोहराकृतिरयं साक्षान्मनोभूरिव। को वानेन शरैर्विभिन्नहृदयो वीरोप्यवस्थांतरं नो नीतो न वशीकृतो न निहतः स्वाज्ञां च न ग्राहितः॥ सत्पद्मानि विकासयन्नरितमांस्यस्यन्दिशो भासयन्दोषास्थां क्षपयन्गुणान्प्रकटयन्नु .... न्नृमौक्तिकगणैरुर्वीवधूर्भूषिता। पश्यांगीकृतमप्यहोमहिमतः स्फीतान्यगोत्राकरोद्भूतानंतनरत्नमण्डनमियं भारं गुरुं मन्यते॥ कुले स तेषामभवत् परस्मादप्रार्त्थितार्त्थः स्फुटसिद्धराजः। स्वबंधुवर्गैरुपभुक्तशेषं दत्तं धनं .... सूनुरजायतायतभुजः पुण्यात्मनामग्रणीः। अद्याप्यात्मनियद्गुणौघमसकृच्छुद्धावदातं जनो योगीवैकमनाः परं पदमिव ध्यायन्नयं तिष्ठति॥ धीरत्वं सुसहायतां सरलतां सद्वृत्ततां सत्यतां ज्ञात्वा यस्य कुलीनतां च शु .... र्याम्। नाम्नांकितः स्वजनकस्य विवेकभाजा श्रीराहिलेश्वरविभुर्गमितः प्रतिष्ठाम्॥ प्रख्यातः सोड्ढकोस्ति स्म चौलुक्यकुलसंभवः। तत्सुतासीत्प्रिया यस्य महिमा महिमास्पदम्॥ फुल्लेन्दीवरपत्रचारुनयनः संपूर्ण चन्द्राननः श्री .... नृपो येनादावनुरागिणा प्रतिदिनं संसेवितो मित्रवत्। वीकासं गमितः प्रसाद किरणस्पर्शाज्जलासम्मुखो दूरादप्यनुमोदितेन विहितो यः सम्पदश्चास्पदम् राजकार्येषु सामर्थ्यं चातुर्यं वीक्ष्य चाद्भुतं। अव्याहतं च

६–उदयपुरसे उत्तर १४ मीलके फ़ासिलेपर एकलिंगजीके स्थानमें नाथोंके मठपरका लेख.

(१) ॐ नमोलकुलीशाय॥ प्रथम तीर्थ ....
.... श्वरम्। किंतात – स्वहस्ते विसक
(२) लितमिदं पुत्रपाथः पिवाथोदेवी .... सरल कर – ल – लीलया-
– – वालम्। भूयो ....
(३) न्चभव्यांजलिर्वः। समं .... दितनिह
(४) .... इति॥ मंदं .... कलिकां कंपयन्यक्ष्म–लामालीनोन्त-
र्नयनमुकुलं .... रता॥

(५) ……… म – तः॥ अस्मिनभूद्गुहिलगोत्रनरेंद्रचन्द्रः श्रीबप्पकः क्षितिपतिः क्षितिपीठरत्नं। ज्याघातघोषजनित ……………… एडकोदण्ड ………

(६) लोमणिः सुविदिता दिव्या च सैकावलिः सा शस्त्री शुचिरत्नसंचय ……… रसापाल्हिका। ह ……………… मुल्लघतिसटासंनद्धदेहं च तद्यस्याद्यापिमहा ……… व्यवसित ………………

(७) सबलकरिघटाघनकण्ठपी लौठन्निशातकुलिशोपममण्डलाग्रः। दृप्ताद्विषामसहनो मृगलोचनानामिष्टो जनिष्टनरवा ननामधेयः॥ यस्य प्रयाणसमये प्रव

(८) रतुरङ्गमालारोल्लिखित ……… रापरायै : अग्रेसरक्षितिभुजा मलिनी भवंति च्छत्रध्वजांशुकशिरोमणि मण्डलानि॥ शप्तः पुरा मुरभिदा भृगुकच्छ ……… ………………………

(९) ……………………………… भृगु : सहग ……… ताधिकेन तोषोन्मुखं गिरिसुतामपि मप्रपेयम्॥ मजल्लाटवधूघनस्तनतटोत्तुङ्गत्तरङ्गोत्तरा यस्मिन्मेखलकन्यकाभुवि ………………………

(१०) तद्देशस्य विशुद्धये किमपरं – – गृहीतं मुनेः प्रत्यक्षं लकुलोपलक्षितिकरः कायावतारं शिवः॥ कायावरोहणमतः पुटभेदनं तदुद्बुद्धवालवकुलावलिपुण्य – – म्। ………………

(११) ……………………… नः कैलास ासमपि न स्मरति स्मरारिः॥ अलिकमलिकण्ठे पत्रभंगं कपोले कुचभुविरचयन्तो दाममुक्तामणीनाम्। अपि महति नितंबे मेखलां संदधाना ……… ………………

(१२) ……… ……… पाशुपतयोगभृथो यथार्थज्ञानावदातवपुषः कुशि – दयोन्ये। भस्माङ्गरागतरुवल्कजटाकिरीटलक्ष्माण आविरभवन्मुनयः पुराणः॥ तेभ्यो ……… ………………………

(१३) ……………………………… शसमुद्गतात्ममहसः ष – घरा योगिनः। शापानुग्रहभूमयो हिमशिला रत्नोज्ज्वलादागिरेरासेतो रघुवंशकीर्तिपिशुनाः तीव्रं तपस्त- ………………………

(१४) श्रीमदेकलिंगसुरप्रभाः। पादा जमहापूजाकर्म्म कुर्वन्ति संयताः॥ अश्वग्रामगिरिन्द्रमौलिविलसन्माणिक्यमुकेतनक्षुण्णाम्भोदतडित्कडारशिखरश्रेणीसमुद्भासित ……… ………………………

(१५) – रजनी चन्द्रायमाणं मुहुस्तैरेतल्लकुलीशवेश्म हिमवच्छृङ्गोपमं कारितम्॥ स्याद्वादग्रहनिग्रहागदविधिर्व्विध्वस्तवैताण्डिकच्छद्मासांगतगर्व्व र्वेतभिदा वज्रप्रपातोप :॥ श्रीम ………………………

(१६) ....कार्यभंगक्षम: श्रीवेदाङ्ग..नि: प्रसिद्धमहिमा यस्य प्रसादं व्यधात्॥ तेनेयमाद्यकविना गुणनिधिनादित्यनागतनयेन । सुवृत्ता कृताप्र..स्ति: पदववाक्य प्र..............................

(१७) ....भिधर्विक्रमादित्यभूभृत:। अष्टाविंशतिसंयुक्ते शते दशगुणे सति ॥ नवविचकिलमाला: पाटला कुड्मलिन्य: शिरसि शशिमुखीनां यत्र शोभां लभन्ते । अपि खलु त....................

(१८) ....प्राप भाले प्रसिद्धिम् ॥ श्रीसुपुजितरासिकारापकप्रणमति ॥ श्रीमार्कण्डश्रीभातृपुरसद्योरासिश्रीविनिश्चितरासि । लैलुक नोहुल । एव कार पक...............................

७- ऐतपुरकी प्रशस्तिमें लिखाहुआ वंशक्रम (१).

(टॉड राजस्थान, जिल्द अव्वलके पृष्ठ ८०२-३ में छपे हुए अंग्रेज़ी तर्जमेसे लियागया.)

१- गुहिल.
२- भोज.
३- महीन्द्र.
४- नाग.
५- शील.
६- अपराजित.
७- महीन्द्र.
८- काल भोज.
९- खुम्माण.
१०- भर्तृपट्ट.
११- सिंहजी.
१२- श्री अल्लट.
१३- नरवाहन.
१४- शालिवाहन.
१५- शक्तिकुमार.

८-बीजोलियामें श्री पार्श्वनाथजीके कुंडसे उत्तरकी तरफ़ कोटके पासके चट्टान पर खुदा हुआ लेख.

ॐ ॥ ॐ नमो वीतरागाय। चिद्रूपं सहजोदितं निरवधिं ज्ञानैकनिष्ठार्पितं नित्योन्मीलितमुल्लसत्परकलं स्यात्कारविस्फारितं सुव्यक्तं परमाद्भुतं शिवसुखानंदास्पदं

(१) यह वंशक्रम ऐतपुरके नानक स्वामीके मन्दिरकी प्रशस्तिसे लियागया है, जो विक्रमी १०३४ वैशाख शुक्ला १ की है.

शाश्वतं नौमि स्तौमि जपामि यामि शरणं तज्ज्योतिरात्मोत्थितम् ॥ १ ॥ नास्तं गतः कुग्रहसंग्रहो वा नो तीव्रतेजा .... व: .... नैव सुदुष्टदेहो ऽपूर्व्वो रविस्तात्समुदे वृषो वः ॥ २ ॥ – भूयाच्छ्री शान्तिः शुभविभवभंगीभवभृतां विभोर्यस्याभाति स्फुरितनखरोचिः करयुगं विनम्राणामेषामखिलकृतिनां मंगलमयीं स्थिरीकर्त्तुं लक्ष्मीमुपरचितरज्जुव्रजमिव ॥ ३ ॥ नासाश्वासेन येन प्रबलबलभृता पूरितः पांचजन्यः .... रदलमलिना .... पद्मायदेशैः ॥ हस्तांगुष्टेन शार्ङ्गं धनुरतुलबलं कृष्टमारोप्य विष्णोरंगुल्यां दोलितोयं हलभृदवनतिं तस्य नेमे स्तनोमि ॥ ४ ॥ प्रांशुप्राकारकांतां त्रिदशपरिवृढव्यूहबद्धावकाशां वाचालां केतुकोटिक्कणदनघमणी किंकिणिभिः समंतात् ॥ यस्य व्याख्यानभूमीमहहकिमिदमित्याकुलाः कौतुकेन प्रेक्षंते प्राणभाजः स खलु विजयतां तीर्थकृत्पार्श्वनाथः ॥ ५ ॥ वर्द्धतां वर्द्धमानस्य वर्द्धमान महोदयः ॥ वर्द्धतां वर्द्धमानस्य वर्द्धमान महोदयः ॥ ६ ॥ सारदां सारदां स्तौमि सारदानविसारदां ॥ भारतीं भारतीं भक्तभुक्तिमुक्तिविशारदां ॥ ७ ॥ निःप्रत्यूहमुपास्महे नितपतो नन्यानपि स्वामिनः श्रीनाभेयपुरः सरान् परकृपापीयूषपाथोनिधीन् ॥ येज्योतिः परभागभाजनतया मुक्तात्मतामाश्रिताः श्रीमन्मुक्तिनितंबिनी स्तनतटे हारश्रियं बिभ्रति ॥ ८ ॥ भव्यानां हृदयाभिरामवसतिःसद्धर्महे – स्थितिः कर्म्मोन्मूलनसंगतिः शुभततिर्निर्बाधबोधोद्धृतिः ॥ जीवानामुपकारकारणरतिः श्रेयः श्रियां संसृतिर्दैयान्मे भवसंभृतिः शिवमार्त्तिं जैने चतुर्विंशतिः ॥ ९ ॥ श्रीचाहमानाक्षितिराजवंशः पौर्वोप्यपूर्वोपि जडावतद्व: भिन्नोनचा – नचरंध्रयुक्तो नोनिःफलः सारयुतोनतोनो ॥ १० ॥ लावण्यनिर्मलमहोज्वलितांगयष्टि रच्छोच्छलच्छुचिपयः परिधानधात्री ॥ – – गपर्वतपयोधरभारभुग्ना साकंभराजनिजनीवततोपि विष्णोः ॥ ११ ॥ विप्रश्रीवत्सगोत्रेभू दहिच्छत्रपुरे पुरा ॥ सामंतोनंतसामंत पूर्णतल्ले नृपस्ततः ॥ १२ ॥ तस्मा[illegible]जयराजविग्रहनृपो श्रीचन्द्रगोपेन्द्रको तस्माद् दुल्लभंगूवको शशिनृपो गूवाकसश्चंदनो ॥ श्रीमद्वप्पयराजविंध्यनृपती श्रीसिं[illegible]हौ श्रीमदुर्ल्लभगुंदुवाकूपतिनृपाः श्रीवीर्यरामोऽनुजः ॥ १३ ॥ चामुंडोवनिपेतिराणकवरः श्रीसिंहटो दूसलस्तद्भ्राताथ ततोपि वीसलनृपः श्रीराजदेवीप्रियः ॥ पृथ्वीराजनृपोथ तत्तनुभवो रासल्लदेवीविभुस्तत्पुत्रो जयदेव इत्यवनिपः सोमल्लदेवीपतिः ॥ १४ ॥ हत्वा चाचगसिन्धुलाभिधयशो राजा[illegible] क्षिप्तं क्रूरकृतांत वक्त्रकुहरे श्रीमार्गदुर्गान्वितं ॥ श्री[illegible]दण्डनायकवरः संग्रामरंगांगणे जीवन्नेव नियंत्रितः करभके येनष्टानि – – सात् ॥ १५ ॥ अर्णोराजोस्य सूनुर्धृतहृदयहरिः सत्ववारिष्टसीमो गांभिर्यौदार्यवीर्यः समभवदपरालब्धमध्योनदत्सीः ॥ तच्चित्रं

जंतजाचस्थितिरधृतमहापंकहेतुर्न्नमथ्यो न श्रीमुक्तो न दोषाकररचितरतिर्न्न द्विजिव्हाधिसेव्यः॥ १६॥ यद्राजांकुशवारणं प्रतिकृतं राजांकुशेन स्वयं येनात्रैव न चित्रमेत – पुनर्मन्यामहे तं प्रति॥ तच्चित्रं प्रतिभासते सुकृतिना निर्व्वाणनारायणन्यक्काराच – णेन भंगकरणं श्रीदेवराजं प्रति॥ १७॥ कुवलयविकासकर्त्ता विग्रहराजाजनि[illegible]चित्रं॥ तत्तनयस्तच्चित्रं यन्न जडक्षीणसकलंकः॥ १८॥ भादानल्वंचक्रे भादानपतेः परस्य भादानः॥ यस्य दधत्करवालः करालतां करतलाकलितः॥ १९॥ कृतांतपथसज्जोभूत् सज्जनो सज्जनो भुवः॥ वैकुतं कुंतपालोगाघतो वैकुंतपालकः॥ २०॥ जावालिपुरं ज्वालापुरं कृतापल्लिकापिपल्लीव॥ नड्वलतुल्यं रोषान्नड्वलं येन सौर्येण॥ २१॥ प्रतोल्यां च वलभ्यां च येन विश्रामितं यशः॥ ढिल्लिकाग्रहणश्रांतमाशिकालाभलंभितं॥ २२॥ तज्ज्येष्ठभ्रातृपुत्रोभूत् पृथ्वीराजः पृथूपमः॥ तस्मादर्जितहेमांगो हेमपर्वतदानतः॥ २३॥ अतिधर्मरतेनापि पार्श्वनाथस्वयंभुवे॥ दत्तं मोराकरीग्रामं भुक्तिमुक्तिश्चहेतुना॥ २४॥ स्वर्णादिदाननिवहैर्दशभिर्महाद्भिस्तोलानरैर्नगरदानचयैश्च विप्राः॥ येनार्चिताश्चतुरभूपतिवस्तपालमाक्रम्य चारुमनसिद्धिकरीगृहीतः॥ २५॥ सोमेश्वराल्लब्धराज्यस्ततः सोमेश्वरो नृपः॥ सोमेश्वरनतो यस्माज्जनसोमेश्वरोभवत्॥ २६॥ प्रतापलंकेश्वर इत्यभिख्यां यः प्राप्तवान् प्रौढप्रथुप्रतापः॥ यस्याभिमुख्ये वरवैरिमुख्याः केचिन्मृताः केचिदभिद्रुताश्च॥ २७॥ येन श्रीपार्श्वनाथाय रेवातीरे स्वयंभुवे॥ शासने रेवणाग्रामं दत्तं स्वर्गायकांक्षया॥ २८॥ अथ कारापकवंशानुक्रमः॥ तीर्थे श्रीनेमिनाथस्य राज्ये नारायणस्य च॥ अंभोधिमथनाद्देवबलिभिर्बलशालिभिः॥ २९॥ निर्गतः प्रवरोवंशो देववृंदैः समाश्रितः॥ श्रीमालपत्तने स्थाने स्थापितः शतमन्युना॥ ३०॥ श्रीमालशैलप्रवरावचूलः पूर्वोत्तरः सत्वगुरुः सुवृत्तः॥ प्राग्वाटवंशोस्ति बभूव तस्मिन् मुक्तोपमो वैश्रवणाभिधानः॥ ३१॥ तडागपत्तने येन कारितं जिनमंदिरं॥ – – भ्रांत्या यमस्तत्रमेकत्र स्थिरतां गता॥ ३२॥ योचीक[illegible]रेप्रभाणि व्याघ्रेरकादौ जिनमंदिराणि॥ कीर्त्तिद्रुमारामसमृद्धिहेतोर्विभाति कंदा इव यान्यमंदाः॥ ३३॥ कल्लोलमांसलितकीर्त्तिसुधासमुद्रः सद्बुद्धिबंधुरवधूधरणीधरेशः॥ वीरोपकारकरणप्रगुणांतरात्मा श्रीचच्चुलस्तुतनयः – – – पदेऽभूत्॥ ३४॥ शुभंकरस्तस्य सुतोजनिष्ट शिष्टैर्महिष्टैः परिकीर्त्यकीर्तिः॥ श्रीजासटोसूत तदंगजन्मा यदंगजन्मा खलुपुण्यराशिः॥ ३५॥ मंदिरं वर्द्धमानस्य श्रीनाराणकसंस्थितं॥ भाति यत्कारितं स्वीयपुण्यस्कंधमिवोज्वलम्॥ ३६॥ चत्वारश्चतुराचाराः पुत्राः पात्रं शुभश्रियः॥ अमुष्यामुष्यधर्माणो बभूवुर्भार्ययोर्द्वयोः॥ ३७॥ एकस्यां द्वावजायेतां श्रीमदाम्बटपद्मटौ अपरस्या (मजायेतां सुतौ) लक्ष्मटदसलौ॥ ३८॥ पाकाणां

तया स प्रोक्तो .... सत्यमेवतत्तु श्रीपार्श्वनाथस्य समुद्धृतिं सः प्रासादमर्चा च करिष्यतीह॥ ५७ ॥ गत्वा पुनर्लोलिकमेवमूचे भोभक्त सक्तानुगतातिरक्ताः॥ देवे धने धर्मविधौ जिनेष्टौ श्रीरेवतीतीरमिहाप पार्श्वः॥५८॥ समुद्धरेनं कुरु धर्मकार्यं त्वं कारय श्रीजिनचैत्यगे॰ येनाप्स्यसि श्रीकुलकीर्तिपुत्रपौत्रोरुसंतानसुखादिवृद्धिं॥ ५९॥ तदे — —मास्त्यं वनमिह निवासो जिनपते स्तएते ग्रावाणाः शठकमठमुक्तागगनतः॥ सधारामे .... द्रुपरचयतः कुण्डसरितस्तदत्रैतत्स्नानं .... निगमं प्राप परमं॥ ६०॥ अत्रास्त्युत्तममुत्तमादिशि पुरं सार्द्धष्टमंचोच्छ्रितं तीर्थं श्रीवरलाइकात्र परमं देवोऽतिमुक्ताभिधः॥ सत्यश्चात्र घटेश्वरः सुरनतो देवः कुमारेश्वरः सौभाग्येश्वरदक्षिणेश्वरसुरौ मार्कण्डरिखेश्वरौ॥६१॥ सत्योंबरेश्वरो देवो ब्रह्ममहेश्वरावपि॥ कुटिलेशः कर्करेशो यत्रास्ति कपिलेश्वरः॥ ६२॥ महानालमहाकालपरमेश्वरसंज्ञकाः॥ श्रीत्रिपुष्करतां प्राप्ता धरित्रिभुवनार्चिताः॥६३॥ कर्त्तिनाथं च के .... मिस्वामिनः॥ संगमीसः पुटीसश्च मुखेश्वरघटेश्वराः॥ ६४॥ नित्यप्रमोदितो देवो सिद्धेश्वरगयायुसः॥ गंगाभेदनसोमेश गुरुनाथपुरांतकाः॥ ६५॥ संस्नात्री कोटिलिंगानां यत्रास्ति कुटिला नदी॥ स्वर्णजालेश्वरो देवः समं कपिलधारया॥ ६६॥ नाल्पमृत्युर्न वा रोगा न दुर्भिक्षमवर्षणम्॥ यत्रदेवप्रभावेण कलिपंकप्रधर्षणम्॥६७॥ षण्मासे जायते यत्र शिवलिंगं स्वयंभुवं॥ तत्र कोटीश्वरेतीर्थे का श्लाघा क्रियते मया॥६८॥ इत्येवंज .... कृत्वावतारक्रिया॥ कर्त्ता पार्श्वजिनेश्वरोऽत्र कृपया सोत्पाद्य वासः पतेः शक्रेर्वैक्रियकश्रियस्त्रिभुवनप्राणिप्रबोधं प्रभुः॥ ६९॥ इत्याकर्ण्य वचोविभाव्य मनसा तस्योरगः स्वामिनः सः प्रातः प्रतिबुध्य पार्श्वमभितः क्षोणीं विदार्य क्षणात्तावत्तत्र विभुं ददर्श सहसा निःप्राकृताकारिणं कुंडाभ्यर्णतपोवधानदधतं स्वायंभुवः श्रीश्रितं॥ ७०॥ नासीयत्र जिनेंद्रपादनमनं नो धर्मकर्मार्जनं न स्नानं न विलेपनं न च तपोध्यानं न दानार्चनं॥ नो वा सन्मुनिदर्शनं .... ॥ ७१॥ तत्कुंड मध्यादथ निर्ज्जगाम श्रीस[illegible] पद्मा॥ श्रीक्षेत्रपालस्तदथांबिका च श्रीज्वालिनी श्रीधरणोरगेशः॥ ७२॥ यदावतारमाकार्षीदत्र पार्श्वजिनेश्वरः॥ तदानागह्रदे यक्षागीरिस्तत्र पपात सः॥ ७३॥ यक्षोपि दत्तवान् स्वप्नं लक्ष्मणब्रह्मचारिणः॥ तत्राहमपि यास्यामि यत्र पार्श्वविभुर्मम॥ ७४॥ रेवतीकुण्डनीरे[illegible] या नारी स्नानमाचरेत्॥ सा पुत्रभर्तृसौभाग्यं लक्ष्मीं च लभते स्थिरां॥ ७५॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यो वा शूद्र एव च॥ [illegible]जा वापि स्वर्गं च संप्राप्नो[illegible]त्तमां गतिं

॥ ७६ ॥ धनं धान्यं धरां धर्मं धैर्यं धौरेयतां धियं ॥ धराधिपतिसन्मानं लक्ष्मीं चाप्नोति पुष्कलाम् ॥ ७७ ॥ तीर्थाश्चर्यमिदं जनेन विदितं यद्गीयते सांप्रतं कुष्टप्रेतपिशाचकुज्वररुजा हीनांगगंडापहं ॥ सन्न्यासं च चकार निर्गतभयं घूकश्रृगालीद्वयं काकीनाकमवाप देवकलया किं किं न संपद्यते ॥ ७८ ॥ श्लाघ्यं जन्मकृतं धनं च सफलं नीता प्रसिद्धिं मतिः सद्धर्मोपि च दर्शितस्तनुरुहस्वप्नोर्पितः सत्यतां ॥ .... परदृष्टिदूषितमनाः सद्दृष्टिमार्गे कृतो जैन .... तमाश्रीलोलकः श्रेष्ठिनः॥ ७९॥ किंमेरोः श्रृंगमेत किमुत हिमगिरेः कूटकोटिप्रकाण्डं किं वा कैलासकूटं किमथ सुरपतेः स्वर्विमानं विमानं ॥ इत्थं यत्तर्क्यतेस्म प्रतिदिनममरैर्मर्त्यराजोत्करैर्वा मन्ये श्रीलोलकस्य त्रिभुवनभरणा[illegible] कीर्तिपुंजम् ॥ ८० ॥ पवनसुतपताका पाणितो भव्य[illegible]स्यान् पटुपटहनिनादादाह्वयत्येषजैनः ॥ कलिकलुषमथोच्चैर्दूरमुत्सारयेद्वा त्रिभुवनविभु – भान्नृत्यतीवालयोयं ॥ ८१ ॥ – – स्थानकमाधरंति दधते काश्चिच्च गीतोत्सवं काश्चिद्विप्रातितालवंशललितं कुर्वंति नृत्यं च का:॥ काश्चिद्वाद्यमुपानयन्ति निभृतं वीणास्वरं काश्चन यः प्रौच्चैर्ध्वजकिंकिणीयुवतयः केषां मुदेनाभवन् ॥ ८२॥ यः सद्वृत्तयुतः सुदीप्तिकलितस्त्रासादिदोषो ज्झितश्चितास्यातपदार्थदानचतुरश्चिंतामणेः सोदरः॥ सोभूच्छ्रीजिनचंद्रसूरिसुगुरुस्तत्पादपंकेरुहे योभृंगायतपत्रलोलकवरस्तीर्थं चकारैष सः॥ ८३॥ रेवत्याः सरितस्तटे तरुवरायत्राह्वयंते भृशं शाखा बाहुलतोत्करैर्नरसुरान् पुंस्कोकिलानां रुतैः॥ मत्पुष्पोच्चयपत्रसत्फलच[illegible]रानिर्मलैर्वारिभिर्भोभोभ्यर्चयताभिषेकयत वा श्रीपार्श्वनाथं प्रभुं ॥ ८४ ॥ यावत्पुष्करतीर्थसैकतकुलं यावच्च गंगाजल यावत्तारक चंद्रभास्करकरा यावच्च दिक् कुंजरा:॥ यावच्छ्रीजिनचंद्रशासनमिदंयावन्महेंद्रं पदं तावत्तिष्ठतु सत् प्रशस्तिसहितं जैनं स्थिरं मंदिरं ॥ ८५॥ पूर्वतो रेवतीसिन्धुर्देवस्यापि पुरं तथा॥ दक्षिणस्यां मठस्थानमुदीच्यां कुण्ड[illegible]त्तमं ॥ ८६ ॥ दक्षिणोत्तरतोवाटी नानावृक्षैरलं[illegible]ता ॥ कारितं लोलिकेनैतत् सप्तायतन[illegible]युतं ॥ ८७ ॥ श्रीमन्म – रसिंहोभूद्गुणभद्रो महामुनिः॥ कृता प्रशस्तिरेषा च कविकंठविभूषणा ॥ ८८ ॥ नैगमान्वयकायस्थ छीत्तिगस्य च सूनुना ॥ लिखिता केशवेनेय मुक्ताफलमिवोज्वला ॥ ८९ ॥ हरसिगसूत्रधारोथ तत्पुत्रो पाल्हणो भुवि ॥ तदंगजेमाहडेनापि निर्मितं जिनमंदिरं ॥ ९० ॥ नानिगपुत्रगोविन्द पाल्हणसुतदेल्हणौ उत्कीर्णा प्रशस्तिरेषा च कीर्तिस्तंभं प्रतिष्ठितं ॥ ९१ ॥ प्रसिद्धिमगमद्देव काले विक्रमभास्वतः शड्विंशद्वादशशते फाल्गुन कृष्णपक्षके ॥ ९२ ॥ तृतीयायां तिथौ वारे गुरौ तारे च हस्तके ॥ घ्रातिनामानि योगे च करणे तैतले तथा ॥ ९३ ॥ संवत् १२२६ फाल्गुनवदि ३

कांवारेवणाग्रामयोरंतराले गुां [illegible]० दाम्बरम [illegible] घणसिं [illegible] भ्यां दत्त क्षेत्र डोहली १ खडुंवराग्रामवास्तव्यगोडसोनिगवासुदेवाभ्यां दत्तडोहलिका १ आंतरीप्र तिगणकेरायताग्रामीयमहंतमलींवाडि [illegible] लिभ्यां दत्त क्षेत्र डोहलिका १ बडोवाग्राम-वास्त [illegible] पारिग्रहीआल्हणेन दत्तक्षेत्रडोहलिका १ लघुविक्रोलीग्रामसंगुहिल [illegible] त्रा० शाहरूमहत्तममाहवाभ्यां दत्तक्षेत्रडोहलिका १ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिर्भरतादिभिः ॥ यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलम् ॥ १ ॥

९-मेनालगढ़के महलकी उत्तरी फाटकके स्तंभकी प्रशस्ति.

ॐ नमः शिवाय ॥ [illegible]ः शतैर्द्वादशैश्च षडविंशपूर्वकैः । कारितं मठमनुत्तमं कलौ भावब्रह्ममुनिनामुनाह्ययं ॥ तस्मात्सत्यम [illegible]ः सुभाषितमयः कंदर्प्प-शोभामयः शश्वद्धर्म्ममयः कुलाकुलमयः कल्याणमालामयः । धर्मज्ञं च मकल्मषं कृतधियं श्रीचाहमानान्व [illegible] सांप्रत्क्ष्माधिपसुन्दरोवनिपातिः श्री पृथ्विराजोभवत् ॥ तस्मै धर्म्मवरिष्टस्य पृथ्वीराजस्य धीमतः । पुण्ये कुर्वंति वै राज्यं निष्पन्नं मठमुत्तमं ॥

१०-उदयपुरसे उत्तर ओर १४ मीलके फ़ासिलेपर श्री एकलिंगजीके मन्दिरमें श्याम पत्थरके नन्दिकेश्वरकी दाहिनी तरफ़ गणपतिकी मूर्तिके आगेकी पश्चिम तरफ़की सुरेपर खुदा हुआ लेख.

संवत् १२७० वर्षे महाराजाधिराज श्री जैत्रसिंहदेवेषु राज.........

११-उदयपुरसे उत्तरकी तरफ़ चार कोसके फ़ासिलेपर गांव चीरवाके मन्दिरमें दाहिनी तरफ़की प्रशस्ति.

ॐ नमः श्रीमहादेवाय ॥ श्रीयोगराजेश्वरनामधेयो देवो वृषांकः सशिवाय वोस्तु ॥ स्तुतः सदा यः प्रमदात् प्रसन्नः किं किं प्रभुत्वं न ददाति सद्यः ॥ १ ॥ योगेश्वरी वो भवतु प्रसन्ना देवी स्वभावा नवमप्रभावा ॥ षट्कर्मसंसाधन-लीनवित्तैर्योगीन्द्रवृन्दैरभिवंदितांघ्रिः ॥ २ ॥ गुहिलांगजवंशजः पुरा क्षितिपालोत्र बभूव बप्पकः ॥ प्रथमः परिपंथिपार्थिवध्वजिनीध्वंसनलालसा [illegible] यः ॥ ३ ॥ बहुष्वतीतेषु महीश्वरेषु श्रीपद्मसिं [illegible]ः पुरुषोत्तमोभूत् ॥ सर्वांगह [illegible] यमवाप्य लक्ष्मीस्तस्थौ

विहायाऽस्थिरतां सहोत्थाम् ॥ ४ ॥ श्रीजैत्रसिंहस्तनुजोऽस्य जातो भिजातिभूभृत्प्रलयानिलाभः ॥ सर्वत्र येन स्फुरता न केषां चित्तानि कंपं गमितानि सद्यः ॥ ५ ॥ न मालवीयेन नगोर्ज्जरेण न मारवेशेन न जांगलेन ॥ म्लेच्छाधिनाथेन कदापि मानो ग्लानिं न निन्ये ऽवनिपस्य यस्य ॥ ६ ॥ तेजःसिंह इलापतिः समभवयस्माज्जन्मा नयी चातुर्योदयचंचिता [illegible] : ॥ चचञ्चन्द्ररीचिवञ्च रुचिराचारो विचारांचितं वित्तंन्यंचितचापलं च रचयन् श्रीचन्द्रचूडार्च्चने ॥ ७ ॥ तदनु च तनुजन्मा तस्य कल्याणजन्मा जयति समरसिंहः शत्रुसंहारसिंहः ॥ क्षितिपतिरतिशूरश्चन्द्ररुक्कीर्तिपूरः स्वहितविहितकर्म्माबुद्धसद्धर्म्ममर्म्मा ॥ ८ ॥ इतश्च ॥ जातष्टांटरडज्ञातौ पूर्वमुद्धरणाभिधः ॥ पुमानुमाप्रियोपास्तिसपन्नशुभवैभवः ॥ ९ ॥ यं दुष्टशिष्टशिक्षणरक्षणदक्षंतस्तलारक्षं ॥ श्रीमथनसिंहनृपतिश्चकार नागद्रहद्रंगे ॥ १० ॥ अष्टावस्य विशिष्टाः पुत्रा अभवन् विवेकसुपवि[illegible]ः तेषु बभूव प्रथमः प्रथितयशा योगराज इति ॥ ११ ॥ श्रीपद्मसिंहभूपालाद्योगराजस्तलारतां नागद्रहपुरे प्राप पौरप्रीतिप्रदायकः ॥ १२ ॥ बभूवावरजस्तस्य रत्तभूरिति विश्रुतः ॥ केल्हणस्तनयोमुष्य मुख्यपौरुषशालिनां ॥ १३ ॥ उदयीत्याख्यया [illegible]ख्यातस्तत्सुतो, विततोद[illegible] ॥ अभूज्जात[illegible]त्पुत्र कर्मणः सद्मशर्मणः ॥ १४ ॥ योगराजस्य चत्वारश्चतुरा जज्ञिरेंगजाः ॥ पमराजो महेन्द्रोथ चंपकः क्षेम इत्यमी ॥ १५ ॥ नागद्रहपुरभंगे समं पुरत्राणसैनिकैर्युध्वा ॥ भूतालाहटकूटे पमराजः पंचतां प्राप ॥ १६ ॥ बालाल्हादनचयजा महेन्द्रतनूजास्त्वयस्त्वजायंत ॥ नयविनयपरपराजयजातलया विहितदीनदयाः ॥ १७ ॥ बालाकस्यांगजो जातः पेथाकोविलभद्दलः ॥ सुतोभूत्तस्य सामंतो नन्तोपस्तौ कृतोद्यमः ॥ १८ ॥ बालाकः कोदद्दकग्रहणे श्रीजैत्रसिंहनृपपुरतः ॥ त्रिभुवनराणकयुद्दे जगाम युद्ध्वा परलोकं ॥ १९ ॥ तद्विरहमसहमाना भोल्यपिनाम्नादिमा विदग्धानां ॥ दग्ध्वा दहने देहं तद्भार्य्या यातमन्वगमत् ॥ २० ॥ चंपकस्य सुरभेः स्वभावतो राजसिंह इति नन्दनोभवत् ॥ रामसिंहमथ सः प्रसूतवान् सो जनिष्ट च भचुंडमंगजं ॥ २१ ॥ क्षेमस्तु निर्मितक्षेमश्चित्रकूटेतलारतां ॥ राज्ञः श्रीजैत्रसिंहस्य प्रसादादापदुत्तमाम् ॥ २२ ॥ हीरूरितिप्रसिद्धा प्रतिषिद्धार्त्तार्तिदुर्म्मरभूच ॥ जाया तस्या मायाजायत तनुजस्तयो रत्नः ॥ २३ ॥ रत्नानि संति सगुणानि बहून्यपीह ख्यातानि यस्तदधिकोविदधेतुमत्र ॥ पुंस्त्वाधिरोपणगुणेन गरीयसोऽयं रत्नः स केन समतां समुपैति शुद्धः ॥ २४ ॥ रत्नस्य सूनुरन्यून प्राप्तमानोस्ति मानिषु ॥ लालानामा [illegible] प्रवराचारशौचवान् ॥ २५ ॥ विक्रांतरत्नं समरेथ

रत्नः सपत्नसंहारकृतप्रयत्नः ॥ श्रीचित्रकूट तलाटिकायां श्रीभीमसिंहेन समं ममार ॥ २६ ॥ रत्नानुजोस्ति रुचिराचारप्रख्यातधीरसुविचारः ॥ मदनः प्रसन्नवदनः सततं कृतदुष्टजनकदनः ॥ २७ ॥ यः श्रीजेसलकार्ये भवदुल्वणकरणांगणे प्रहरन् ॥ पंचलगुडिकेन समं प्रकटबलो जैत्रमल्लेन ॥ २८ ॥ श्री भीमसिंहपुत्रः प्राधान्यं प्राप्य राजसिंहोयं ॥ बहु मेने नैकध्यं प्राक् प्रतिपन्नं दधद्हृदयो – ॥ २९ ॥ श्रीचित्रकूटदुर्गे तलारतां यः पितृक्रमायातां ॥ श्रीसमरसिंहराज प्रसादतः प्राप निःपाप ॥ ३० ॥ श्रीभोजराजरचितत्रिभुवननार[illegible]हे ॥ यो विरचयतिस्म सदाशिव परिचर्य्यां स्वशिवलिप्सुः ॥ ३१ ॥ मोहनो नाम यस्यास्ति नंदनो विनयी नयी ॥ बालोपि पापकर्म्मभ्यः साशंकः शूकमत्तया ॥ ३२ ॥ सविकारः शिववैरी यदस्ति विदितः पुरातनो मदनः ॥ निर्विकृते शिवभक्तेरमुष्य तेनोपमानातः ॥ ३३ ॥ इतश्च नागह्रहसंनिधाने पदे पदे प्राज्यलसंनिधाने ॥ ग्रामः सुभूमिभृतिचीरकूपनामास्त्यदोषोमलनीरकूपः ॥ ३४ ॥ तस्याधिपत्येन धनाप्ति शालिना प्राप प्रसादं गु[illegible]लात्मजन्मनः ॥ श्रीपद्मसिंहक्षितिपादुपासितात्प्राग्योगराजः किलविप्रवेषभृत् ॥ ३५ ॥ सयोगराजः प्रथमं पृथुः श्रीरकारयत्तत्र पवित्रचित्तः ॥ श्रीयोगराजेश्वरदेवगेहं योगेश्वरीदेवगृहेण युक्तम् ॥ ३६ ॥ पूर्वमुद्धरणेनेहोद्धरणस्वामिशार्गिणः ॥ हर्म्यं विधायितं रम्यं पूर्वजोद्धरणार्थिना ॥ ३७ ॥ ज्ञात्वा सत्वरगत्वरं जगदिदं सर्वं गणेभ्यः सतां पर्य्यालोच्य विशेषतश्च विषमं पापं तलारत्वजं ॥ धर्मे धूर्जटिपूजन प्रभृतिके नित्य मनोन्यस्तकं नात्मानं मदन श्चिकीर्पुरमलं जन्मन्यमुष्मिन्नपि ॥ ३८ ॥ अस्माद् गात्रमहत्तमेन शिथिलो यस्मादमूकारितौ प्रासादौ ननु योगराज इति विख्यातेन पुण्यात्मना ॥ मातुर्वप्तुरथात्मनश्च मदनो ब्रह्मीयसे श्रेयसे लक्ष्म्यालंकृत उद्दधार तदिमावाजन्मशुद्धाशयः ॥ ३९ ॥ कालेलायसरोवरस्य रुचिरे पश्चाद्भवे गोचरे केदारौ मदनो ददौ प्रमुदितो द्वौ द्वौ विभज्य स्वयं ॥ दुर्गानुत्तरचित्रकूटनगरस्थः क्षेमहीरूयुतो नैवेद्यार्थमवद्यमोचनमना देवाय [illegible]व्यायापे ॥ ४० ॥ वयराकः पाताको मुंडो भुवणोथ तेजसामंतौ ॥ अरियापुत्रो मदनस्त्विदमभिधेः पालनीयमाखिलं ॥ ४१ ॥ भाविभिरेतद्वंश्यैरन्यैरपि रक्ष्यमात्मपुण्याय ॥ विश्वं विनश्य देतद्धर्मस्थानादिकंवस्तु ॥ ४२ ॥ यावच्चन्द्रविरोचनौ विलसतो लोकप्रकाशोद्यतौ तावद्देवगृहद्वयं विजयतामेतन्युदामास्पदं ॥ उद्धर्तास्य च नंदतु प्रमुदवान्न्यायाद[illegible]ग्रणी रन्येप्यस्य सनाभयो गतभया भूयासुरुत्यान्ततः ॥ ४३ ॥ पाशुपतितपस्वी पतिः [illegible]ः शशिगुणराशिः ॥ आराधितैकालिंगोधिष्टातात्रास्ति निष्ठावान् ॥ ४४ ॥ श्रीचैत्रगच्छगगने तारकबुधकविकलावतां

निलये ॥ श्रीभद्रेश्वरसूरिर्गुरुरुदगान्निष्कवर्णांग : ॥ ४५ ॥ श्रीदेवभद्रसूरिस्तदनु श्रीसिद्धसेनसूरिरथ अजनि जिनेश्वरसूरिस्तच्छिष्यो विजयसिंहसूरिश्च ॥ ४६ ॥ श्रीभुवनचन्द्रसूरि स्तत्पट्टेभूदभूतदंभमल: श्रीरत्नप्रभसूरिस्तस्य विनेयोस्ति मुनिरत्नं ॥ ४७ ॥ श्रीमद्विश्वलदेव श्रीतेजः सिंहराजकृतपुज : ॥ स इमां प्रशस्ति मकरोदिह रुचिरां चित्रकूटस्थ : ॥ ४८ ॥ शिष्योमुष्यालिखन्मुख्यो वैदुष्येणविभूषित:॥ पार्श्वचन्द्रइमां विद्वद्वर्ण्यवर्णालिशालिनीं ॥ ४९ ॥ पद्मसिंहसुत : केलिसिंहोमूमुत्त्कार च ॥ स्थानेत्र देल्हण शिल्पी कर्मांतरमकारयत् ॥ ५० ॥ यावद्विश्वसरस्यस्मिन्नस्ति रामस्त्रिपुष्करं ॥ राजहंसयुतं तावत्प्रशस्तिर्नंदतादियं ॥ संवत् १३३० वर्षे कार्तिक शुदि प्रतिपदि शुभम् ॥

१२- चित्तौड़गढ़पर महासती स्थानके दर्वाज़े
(रतियाकी छत्री) की प्रशस्ति.

ॐ नमः शिवाय ॥ जधदधिकविलासं चारुगौरं नखेंदुद्युतिसहितमपि स्वं सर्वलोकेप्वपूर्वं ॥ चरणकमलयुग्मं देवदेवस्य पायाद्भुवनमिदमपायाच्छ्रीसमाधीश्वरस्य ॥ १ ॥ बिभ्राणोविलसत्तृतीयनयनप्रोद्दामवैश्वानरज्वालातापनिवर्तिनीमिव शुभां मंदाकिनीं मूर्द्धनि ॥ कंठालंबितकालकूटविकृतिप्रध्वंसिनीं चादरात् पीयूषांशुकलामिव त्रिनयन : श्रेयो विधत्तां सतां ॥ २ ॥ विषमविशिखशस्त्रं शक्तिराद्याविलग्ना वपुपि विशदशोचिश्चंद्रमामूर्ध्निभग्न : ॥ स्मरसमरविसर्प्पद्दर्प्पलोलस्य यस्य क्षिति धरकटकांते सोवताच्चंद्रचूड : ॥ ३ ॥ सिंदूरधूलिपटलं दधानं प्रत्यूहदाहाय हुताशनाभं ॥ कुंभस्थलं चारु गणाधिपस्य श्रेयांसि भूयांसि तवातनोतु ॥ ४ ॥ प्रत्यर्थिवामनयनानयनांबुधारा संवर्धित : क्षितिभृतां शिरसि प्ररूढ : ॥ यः कुंठितारिकरवालकुठारधारस्त ब्रूमहे गुहिलवंशमपारशाखं ॥ ५ ॥ तीर्थैर्मंदिरकंदरैरिव मनोहृद्यैः पुरैः स्वश्रियो लावण्यैरिव विस्तृतैः सितमणिस्वच्छैः सरोभिश्च यः ॥ व्योमश्री मुकुरैरिव प्रतिपदं स्फीतोजयत्यंगना सौंदर्यैकनिकेतनं जनपदः श्रीमेदपाटाभिधः ॥ ६ ॥ वाहा यत्र विलोद्भवा इव नरा गंधर्वपुत्रा इव स्वर्ज्जाता इव धेनवश्च सुदृशो गीर्वाणकन्या इव ॥ पंचास्या इव शस्त्रिणो मणिरिव स्वच्छं मनो धीमतां देश : सोयमनर्गलामरपुर श्रीगर्वसर्वंकष : ॥ ७ ॥ अस्मिन्नागहृदा[illegible]यं पुरमिलाखंडावनीभूषणं प्रासादावलिविभ्रमैरुपहसच्छुभ्रांशुकोटिश्रियं ॥ मुक्ताप्रौढमिव क्षितेश्रियइव प्रासादपंकेरुहं क्रीडाभूमिरिव [illegible] शशिन : सयेव पीयूषजा ॥ ८ ॥ जीयादानंदपूर्वं तदिह पुरमिलाखंडसौंदर्यशोभि क्षोणीपृष्ठस्य[illegible] त्रिदशपुरमधः कुर्वदुच्चैः समृद्ध्या ॥

यस्मादागत्य विप्र · स्वपुरदधिमहीवेदिनिक्षिप्तयूपो बप्पाख्यो वीतरागश्चरणयुगमुपासीत हारीतराशेः ॥ ९ ॥ संप्राप्याद्भुतमेकलिंगचरणांभोजप्रसादात्फलं यस्मै दिव्य सुवर्णपादकटकं हारीतराशिर्ददौ॥ बप्पाख्यः सपुरा पुराणपुरुषप्रारंभनिर्वाहना तुल्योत्साहगुणो बभूव जगति श्रीमेदपाटाधिपः ॥ १० ॥ सदैकलिंगार्चनशुद्धबोधः संप्राप्तसायुज्यमहोदयस्य ॥ हारीतराशेरसमप्रसादादवाप बप्पो नवराज्यलक्ष्मीम् ॥ ११ ॥ निर्भिन्नप्रतिपक्षसिंधुरशिरः संपातिमुक्ताफलश्रेणीपूर्णचतुष्कभूषणभृतो निर्म्माय युद्धस्थलीः ॥ यस्यासिर्वरयांचकार पुरतः प्रोद्धूतभेरीरवोविद्वेषिश्रिय मंजसा परिजनैः संस्तूयमानोन्वहं ॥ १२ ॥ तस्यात्मजः सनृपतिर्गुहिलाभिधानो धर्म्माच्छशास वसुधां मधुजित्प्रभावः ॥ यस्माद्धधौ गुहिलवर्णनया प्रसिद्धां गौहिल्यवंशभवराजगणोऽत्र जातिं ॥ १३ ॥ अहितनृपतिसेनाशोणितक्षीवनारीदृढतरपरिरंभानंदभाजः पिशाचाः॥ गुहिलनृपतिसंख्ये न स्मरंतिस्म भूयः कुरुनिधननिदानं भीमसेनस्य युद्धं ॥ १४ ॥ दुर्वारमारविशिखातुरनाकनारीरत्युत्सवप्रणयिता गुहिले दधाने ॥ भोजस्ततोनरपतिः प्रशशास भूमिमुच्चैःप्रतापकवलीकृत दुर्जयारिः॥ १५ ॥ प्रजवितुरगहेषारावमाकर्ण्य यस्यासहनियुवतिलोके काननांतं प्रयाति ॥ रुचिरवसनहारैः कंटकाग्रावसक्तैर्द्धवखदिरपलाशाः कल्पवृक्षत्वमापुः॥ १६ ॥ केकी कस्मादकस्मादनुसरति मुदं किं मरालः करालो वाचालश्चातकः किं किमिति तरुशिखासंगतोयं बकोटः ॥ नैषा वर्षाघनाली विलसति भुवने किं तु भोजप्रयाणे लक्ष्यं नैवांतरिक्षं चलितहयखुरोद्धूतधूलीपटेन ॥ १७ ॥ आसीत्तस्मादरातिद्विरदघनघटाघस्मरः शीलनामा भूमीशो वीरलक्ष्मीरतिरसरभसालिंगितस्मेरमूर्तिः॥ यस्मिन्नद्यापि याति श्रुतिपथमसकृद्विस्मार्तिं यांति पूर्वे पृथ्व्याद्याश्चक्रवर्तित्वमपि दधति ये भारते भूमिपालाः ॥ १८ ॥ संपूर्याखिलरोदसीमतितरां यस्याहिलोकांतरं यः शेषोगमदुद्धृतस्य यशसः शेषः सभोगीश्वरः॥ संजज्ञे विशदद्युतिस्त्रिजगतामाधारकंदाय च त्राणायामृतकंदरस्य कमलाकांतस्य संविष्टये ॥ १९ ॥ एपविद्वेषिमातंगसंगादघवतीमिव॥ असिधाराजलैः सिक्त्वा जग्राह विजयश्रियं ॥ २० ॥ विस्फूर्जदत्युग्रतरप्रतापस्तनुश्रिया निर्जितपुष्पचापः॥ यस्यारिवर्गैरनिवार्यमोज स्ततः क्षितीशोऽजनि कालभोजः॥ २१ ॥ यस्यावंध्यरुषः सयुद्धविषयः किं वर्ण्यते मादृशैः खड्गाग्रेण कबंधयंति सुभटान् यस्मिन् कबंधा अपि॥ गर्ज्जद्वीरकरं करांकवद्धतो वेतालवैतालिकास्तालीस्फाल-दाहरंति च यशः खड्गप्रतिष्ठं निशि ॥ २२ ॥ क्वाशोकः क्व च चंपकः क्व तिलकः क्वांबः क्व वा केसरः क्व द्राक्षा

वलयव्यवस्थितिरिति प्रत्यर्थिनां वेश्मसु ॥ अत्यंतो_सितेषु यस्य भयतो दुर्ग्गांतराद्रागतो वैलक्ष्येण परस्परं विधुरितो दासीजन : एच्छाति ॥ २३ ॥ विपदंतकरस्ततः नितेरुदियाय : परिपंथिदुर्जय : ॥ द्युतिमानिव रक्तमंडलो नृपतिर्मत्तटनामधेयक : ॥ २४ ॥ दर्प्पाविष्टविपक्षमालवबधूवक्षोजपीठस्थले पार्थीयं विजयप्रशस्तिमलिखन्नेत्रोदविंदुच्छलात् ॥ प्राक्दुर्योधनवाहिनीमतिरुषा संहृत्य दुःशासनप्रत्यर्थिप्रतिपालिता[illegible]रुयश : कर्णे दधानश्चिरं ॥ २५ ॥ वारं वारमपारवारिभिरयं संप्लावयत्युद्यत : प्रांत्येमामिति सर्व्वदैव दधती तं मत्सरं शाश्वतं ॥ यत्सैन्याश्वखुरोद्धतस्य रजसः साहाय्यमासेदुषी क्षोणीयं परिपूरणाय जलधेरास्[illegible] मालंबत॥२६॥ त्रिपुरांतकपादपंकजाश्रमसेवादरणे दृढव्रतः ॥ भुवि भर्तृभटस्तदात्मज समभूदत्र विशालविक्रमः॥२७॥ [illegible]तामिस्वाननादोगि [illegible]नागसप्त स्फुटमिति कथयामास भोगीश्वराय ॥ माभैर्भूभारतोद्य प्रभृति कतिभिरप्यस्य राज्ञः प्रयाणैर्द्धात्री पात्री समेषा तुरगखुरपुटोत्खातधूलिच्छलेन ॥ २८ ॥ कृत्वा धारानिपातं निविडपरिलसत् कृष्णलक्ष्मीः समंतात् संग्रामस्थानभूमौ विषममसुहृदां मूर्द्धनि यस्यासिमेंघः॥ आश्चर्यं तद्यदेषां मदनसहचरीश्रीभृतां प्रेयसीनां सीमंतेभ्योजहाराविरलरुचिभर सांद्रसिंदूररेणुं ॥ २९ ॥ बभूव तस्मादथ सिंहनामा निदाघमार्तंडसमानधामा ॥ [illegible]तिमानमास्यैरुवाहयस्यारिपुरंध्रिवर्गः ॥ ३० ॥ किं वर्ण्या किल सिंहविक्रमकथा यस्योर्ज्जितैर्गर्जितै : संत्रासादपसृत्य भूधरगजा : संपेदिरे दिग्गजान्॥ हंसीवांडमचंडधामरुचिरा कीर्त्तिः श्रियं यस्य च क्रोडीकृत्य निषेवतेऽखिलमिदं ब्रह्मांडभांडं शुचिः ॥ ३१ ॥ निस्त्रिंशत्रुट्यदस्थिप्रभवपटुकटत्कारतालैरुदारैर्नृत्यंतः स्कंदभेदच्युतरुधिरघनस्निग्धकालेयभाजः ॥ यत्संग्रामे कबंधा मुदितसहचरीसंगभंग्याभिरामैरानंदस्पंदिरंगक्षितिसुहृदि समालोकिताः स्वर्गिवर्गैः॥ ३२ ॥ श्रितवतास्व[illegible]शाधिपवारणं पितुरवाप्य सितातपवारणं भुवमथ प्रशशास महायक : समर मुर्द्धनि भुजैकसहायकः ॥ ३३ ॥ तुरंगलालागजदाननीरप्रवा[illegible]यो : संगममुद्वहंति ॥ यस्य प्रयाणे निखिलापि भूमिः [illegible]र्मी बिभरां बभूव ॥ ३४ ॥ यः पराक्रमसम्नादद्दीपिते क्रोधपावके ॥ निस्त्रिंशसामिधेनीभिर्जुहाव समिधः परान् ॥ ३५ ॥ यस्यासिः प्रतिपक्षसैन्यविपिनप्रस्तारसंप्लावनप्रा[illegible]पारशौर्यजलधे : कल्लोललीलां दधौ ॥ वंशेऽस्मिन् गुहिलस्य मेघविदिते भूपालचूडामणिश्रेणिप्रग्रहभासिताङ्घ्रिरभवत् खुम्माणनामा नृपः ॥ ३६ ॥ आकर्ण्य पन्नगीगीतं यस्य बाहुपराक्रमं ॥ शिरश्चालनया शेषश्चक्रे कंपं परं भुवः ॥ ३७ ॥ शस्त्राणामशनिप्रहारमभित : स्वीकुर्वतां संगरे घातोस्माभिरवापि नाकमपरे संभेजिरे मौलयः ॥ प्राणांत-

श्वसितप्रसारितमुखव्यक्तद्विजश्रेणिभि : शीर्षाणि द्विषतामतीव जहसुः... येनामुना ॥ ३८ ॥ यः पृष्ठं युधि सर्वदोपि न ददौ प्रत्यर्थिनां नानृतं लोकानां वचनं मनो न हि परस्त्रीणां क... भुः ॥ सत्रैलोक्यजनाश्रयाद्गतिकृत : सत्कीर्तिवल्या महाकंद : सर्वगुणो...टोनरपति : क्षोणीं ततोऽपालयत् ॥ ३९ ॥ यम्निर्सिंहहतारिशोणितजलस्रोतस्विनीप्लाविता मध्ये तिष्ठति पश्चिमांबुधिरसावद्यापि शोणद्युति : ॥ एतत्पुष्कररंजितद्युतिभर : सायं त्विषामीश्वर : प्रात : प्रातरुदेति कुंकुमरुचि : प्राचीमुखं मंडयन् ॥ ४० ॥ भल्लटस्य नृपतेरपकर्तुं नि : सहारणमहीषु सपत्ना : ॥ तर्जयंति शबरीरनुशैलं हर्षवर्णिततदीयचरित्राः ॥ ४१ ॥ गौरीनायकमैत्रहृष्टहृदयस्त्रैलोक्यसन्मानसक्रोडक्रीडितविद्धकीर्त्तिवरटो लोकाभिरक्षापर : ॥ सर्वाक्षीणनिधीश्वरोतिबलवान् पुण्यैर्जनै : सेवितो जातोस्मान्नरवाहनो भुवि पतिर्गोहल्यवंशश्रिय : ॥ ४२ ॥ सर्प्पत्सैन्यखुरोद्धतेन रजसा जंबालशेषीकृत : पाथोधि : पुनरेव यस्य तुरगैर्लीलाभिराप्लावित : ॥ हत्वाशेषविरोधिवर्गवनितावैधव्यदीक्षागुरुर्यश्चासीदनिवार्यविक्रमभरप्रोद्भूतवैरिव्रज : ॥ ४३ ॥ समस्तविद्वेषिजनैः प्रकीर्तित : स्वरुय्यानशौर्यादिपरोक्षविक्रमे : ॥ दृष्टेपि चास्मिन् खलु मुक्तधैर्यैरप्रेक्षितस्वीयजनैः पलायितम् ॥ ४४ ॥ ....दोस्थंभप्रतिबद्धमंगलयश : प्रस्तावनोयोजना.................................कुर्वतः ॥ ४५ ॥ दैतेयानिव शत्रून् हंतुं धर्मस्य बाधकानुग्रान् ॥ सर्वज्ञादिव तस्माच्छक्तिकुमारो नृपो जात : ॥ ४६ ॥ भूमीभर्तुरमुष्य भूमघवत : कौक्षेयदंभोलिना ये विद्वेषिमहीभृत : समभवन्नाच्छिन्नपक्षा : पुरा ॥ तेकेचिद्विबुधाश्रयैरपि तथा केचित्समुद्राश्रये : केचिन्मत्तगजाश्रयैरपि पुन : संजातपक्षानहि ॥ ४७ ॥ त्यागेनार्थिमनोहरेण कृतिन : कर्णं यमाचक्षते यं पार्थं प्रथयंति वैरिसुभटा : शौर्येण सत्वाधिकं ॥ यं रत्नाकरमामनंति गुणिनो धैर्येण मर्यादया यं मेरुं महिमाश्रयेण विबुधा : शंसंति सर्वोन्नतं ॥ ४८ ॥ मुक्तादामावदातद्युतिभिरतितरां लोकमुद्भासयंत्या य : कंद : कीर्त्तिवल्या सुरभिगुणभृतोविश्वविस्तारभाज : ॥ प्रौढप्रत्यर्थिसेनाविषमजलनिधे : शोषणेगस्त्य...ल्यस्तस्मादाम्रप्रसाद : समजनि विदितो मेदपाटावनीश : ॥ ४९ ॥ भृगुपतिरिव दृप्तक्षत्रसंहारकारी सुरगुरुरिव शश्वन्नीतिमार्गानुसारी ॥ स्मरइव रतिलोलप्रेयसी...री शिबिरिव सबभूव त्रस्तसत्वोपकारी ॥ ५० ॥ जटाधरसखंडेंदु : कराल : ...रकृत्तिति : ॥ भाति यस्य रणे पाणौ खड्गः कल्पांतभैरवः ॥ ५१ ॥ तस्मिन्नुपरते श्वर्ये गोत्र...तुल्य...णि ॥ उदियाय महीपृष्ठे शुचिवर्मा महीश्वर : ॥ ५२ ॥ उद्योगप्रसरत्तुरंगमखुर...णै : क्षमारेणुभिर्येनाधायि तरंगिणी दिविशदामुद्वेलपूराकुला ॥

स्वर्वामानवसंगसंभृतमुदामानंदजैरश्रुभिः शत्रूणां पुनरेव संभृतपयः पुरा च चक्रेक्षणात् ॥ ५३ ॥ पत्रैः पत्रावलीनां समजनि रचनाधातुभिः पादरागो धूलीभिः कंदराणां विपदमलयजालेपलक्ष्मीरुदारा ॥ गुंजाभिर्हारवल्लीयदरिमृगदृशाइत्यरण्येपि भूषा सौंदर्यं नैव नष्टं शबरसहचरीनिर्विशेष गतानां ॥ ५४ ॥ यद्यात्रासु रजस्तनुः क्षितिरियं मंदाकिनीवारिषु स्नात्वा दिव्यमिवाकरोदितिरवेर्बिंबं स्पृशंती मुहुः ॥ एतेनैव यदि क्षितीशरुधिरैरन्यैरहं तर्पिता संग्रामेषु तदा दुनोतु भगवान् मामेषभासांपतिः ॥ ५५ ॥ ततः प्रत्यर्थिनासार्थवक्षपातोपमः पुनः ॥ नरवर्मा महीपालो बभूवामितविक्रमः ॥ ५६ ॥ ब्रह्मांडभांडोदरसंचरेण श्रमोदबिंदुच्छुरितामलश्रीः ॥ अपारविस्फारसमुद्रवेलाखेलाकरी कीर्त्तिरमुष्य राज्ञः ॥ ५७ ॥ उद्योगे नरवर्मणः स्थगयति क्षोणीरजोमंडले सामस्त्येन पलायिताः शिशुकुलस्योच्चैर्वियोगाग्निना ॥ प्रासादेषु समर्जितस्य भयतो दंदह्यमानाश्चिरं कांतारेषु न वैरिकैतवदृशः स्वास्थ्यं समासेदिरे ॥ ५८ ॥ त्रस्यद्दिक्पालभालस्थलविपुलगलत्स्वेदपूराद्यसेकस्फीतज्वालावलीढक्षितिवलयगताराातिदुर्वारचक्रः ॥ यस्य क्रोधानलोयं गगनपरिसरं गाहते भानुभंग्या संग्रामापास्तदेहानशितुमिव पुनर्द्वेषिणः स्वर्गभाजः ॥ ५९ ॥ यावद्विश्वप्रबोधोद्यतकरनिकरौ तिष्ठतश्चंद्रसूर्यौ यावत्पुण्यापुनीते विमलजलवहा जान्हवी सर्व्वलोकान् ॥ यावद्धर्तुं नियुक्ता भुवि गिरिपतयस्तावदीशप्रतोल्यां नंद्यात्कीर्त्तिर्विशाला गुहिलकुलभुवां सत्प्रशस्तिच्छलेन ॥ ६० ॥ अनंतरवंशवर्णनं द्वितीयप्रशस्तौ वेदितव्यं ॥ वेदशर्मा कविश्चक्रे प्रशस्तिद्वितयीमिमां ॥ आत्मनः कीर्तिविस्फूर्तिसमा गतिमिवापरा ॥ ६१ ॥ सज्जनेन समुत्कीर्णा प्रशस्तिः शिल्पिनामुना ॥ संवत् १३३१ वर्षे आषाढ शुदी ३ भृगुवासरे.

१३-चित्तौड़के पुलके नीचे तलहटीके दर्वाज़हसे आठवें कोठेकी प्रशस्ति, जो पश्चिम तरफ़ की फ़टमें दो सतरें हैं.

ॐ॥ संवत् १३२४ वर्षे इह श्रीचित्रकूटमहादुर्गतलहट्टिकायां पवित्रश्री चैत्रगणव्योमांगणतरणिस्वप्रपितामहप्रभुश्रीहेमप्रभसूरिनिवेशितस्य सुविहितशिरोमणिसिद्धान्तसिन्धुभट्टारकश्रीपद्यचसूरिप्रतिष्ठितस्यास्य देवश्रीमहावीरचैतस्य प्रतिभासमुद्रकविकुंजरपितृतुल्यातुल्यवात्सल्यपूज्यश्रीरत्नप्रभसूरिणामादेशात् राजभगवन्नारायणमहाराज श्री तेजः सिंहदेवकल्याणविजयि राजा विजयमानप्रधानराजराजपुत्रकांगापुत्रपरनारी साहो-

१४-चित्तौड़में नौकोठाके पीछे महलके चौकमें गड़ाहुआ जो स्तम्भ निकला, उसमें खुदीहुई प्रशस्ति.

संवत् १३३५ वर्षे वैशाख सुदि ५ गुरौ श्रीएकलिंगहराराधनपाशुपताचार्य हारीतराशि क्षत्रिय गुहिलपुत्र - हलप्व सहोदर्य च श्री ...... भर्तृपुरस्थानोद्भवद्विजाम्नविभागातुच्छेश्रीभर्तृपुरीयगच्छे श्री चूडामणि भर्तृपुरे श्रीगुहिलपुत्र विहार आदीशप्रतिपत्तौ श्रीचित्रकूट - - मेदपाटाधिपति श्रीतेजःसिंहराज्ञ्या श्रीजयतल्लदेव्या श्रीश्यामपार्श्वनाथ वसही स्वश्रेयसे कारिता ॥ तद्राज्ञी वसही पाश्चात्यभागे - - - गच्छीय श्रीप्रद्युम्नसूरिभ्यो महाराजकुल गुहिलपुत्रवंशतिलक श्रीसमरसिंहेन चतुराघाटोपेतायदानयुता च मठभूमि - - घाटाः पूर्वोत्तरयोज्ज्योतिः साढलस्यावासः दक्षिणस्यां श्रीसोमनाथः ॥ पश्चिमायां श्रीभर्तृपुरगच्छीयचतुर्विंशतिजिनदे...... राज्ञी वसहिका प्र ॥ अन्यच्चायदानानि ॥ श्रीचित्रकूटतलहट्टिकामंडपिकायां च उ० द्रम्मा २४ तथा उत्तरायनेघृतकर्ष १४ तथा तैलकर्ष ६ आघाट मंडपिकायां द्रम्मा ३६ षोहरमंडपिकायाः द्रम्मा ३२ सज्जनपुरमंडपिकायां द्र० ३४ अमून्यायदानानि दत्तानि ॥ ॐ श्रीएकलिंगशिवसेवनतत्परश्रीहारीतराशिवंशसंभूतमहेश्वरराशिस्तच्छिष्य श्री शिवराशि गोड़जातीयद्विजदिवाकरवंशोद्भवव्यासरत्नसुतज्ज्योतिः साढलतथाच विप्रदेल्हणसुतभट्टसाढा तत्पुत्रहारभट्ट खीमटस्तद्भ्रातृभीमासहितेन एभिर्मिलिता श्रीभर्तृपुरीयगच्छे - - कारि ॥ छ ॥

१५-आबूपर अचलेश्वरके मन्दिरके पासके मठमें लगीहुई प्रशस्ति.

ॐ नमः शिवाय ॥ ध्यानानन्दपराः सुराः कति कति ब्रह्मादयोपि स्वसंवेद्यं यस्य महः स्वभाव विशदं किंचिद्विदांकुर्वते ॥ मायामुक्तवपुः सुसंगतभवाभावप्रदः प्रीतितो लोकानामचलेश्वरः सदिशतु श्रेयः प्रभुः प्रत्यहं ॥ १ ॥ सर्ग्गार्थी स्वतनुं हुताशमनिशं पद्मासने जुह्वतः प्राणैः प्राजनि नीललोहितवपुर्यो विश्वमूर्तेः पुरा॥दुष्टांगुष्ठनखांकुरेण हठतस्तेजोमयं पञ्चमं छिन्नं धातृशिरः कराम्बुजतले बिभ्रत् स ...यतां ॥ २ ॥ अव्यक्ताक्षरनिर्भरध्वनिजपस्त्य...न्यकर्मश्रमः स्वदेहात्सितिमानमुज्झितुमना दानाम्बुसंवर्द्धितः॥ यत्कुंभाचलगस्तपांसि वितनोत्यद्यापि भृंगव्रजः प्रत्यूहापगमोन्नतिर्गजमुखो देवः सवोस्तु श्रिये ॥ ३ ॥ क्षुभ्यद्वारिधिदीर्यमाणशिखरिश्रेणिभ्रमद्भूतलं त्रुट्यद्व्योमदिगंतसंहतिपतद्ब्रह्मांडभांडस्थिति॥ कल्पान्तस्य विपर्ययेपि जगतामु...र्दिशत्सिंधोर्लङ्घनमद्भुतं हनुमतः पायादपायात्स नः ॥ ४ ॥

शाखोप ॥खाकुलितः सुपर्व्वा गुणोषितः पत्रविभूषितांशः ॥ कृतास्पदो मूर्द्धनि भूधराणां जयत्युदारो गुहिलस्य वंशः॥ ५ ॥ यद्वंशो गुहिलस्य राजभगवन्नारायणः कीर्त्यते तत्सत्यं कथमन्यथा नृपतयस्तं संश्रयंतेतराम् ॥ मुक्तेः कल्पितवेतसः करतलव्यासक्तदंडोज्वलाः प्राणत्राणधियः श्रियः समुदयैर्न्यस्तापहस्ताः सदा ॥ ६ ॥ मेदः छदभरेण दुर्जनजनस्याप्लावितस्संगरे देशक्लेशकथापकर्षणपटुर्यो बप्पकेनोज्भके ः॥ लावण्योत्करनिर्जितामरपुरः श्रीमेदपाटाभिधामाधत्तेस्म स एष शेषनगरश्रीगर्वसर्वंकषः ॥ ७ ॥ अस्ति नागह्रदं नाम सायाममिह पत्तनं ॥ चक्रे तपांसि हारीतराशिर्यत्र तपोधनः ॥ ८ ॥ केपि क्वापि परप्रभावजनितैः पुण्यैर्हविर्भिर्विभुं प्रीणंति ज्वलनं हिताय जगतां प्रारब्धयागक्रमाः ॥ अन्ये प्राणनिरोधबोधितसुखाः पश्यन्ति चात्मस्थितं विश्वं सद्विजनस्थलीषु मुनयो यत्राप्ततत्वोदयाः ॥९॥ अस्मिन्नेव वने तपस्विनि जने प्रायः स्खलद्बधने वृत्तांतं भुवनस्य योगनियतः प्रत्यक्षत ः पश्यति ॥ हारीत ः शिवसंगमंगविगमात् प्राप्तः स्वसेवाकृते वप्पाय प्रथिताय सिद्धिनिलयो राज्यश्रियं दत्तवान् ॥ १० ॥ हारीतात्किल बप्पकोङ्घ्रिवलयव्याजेन लेभे महः क्षात्रं धातृनिभाद्वितीर्य मुनये ब्राह्मं स्वसेवाच्छलात् ॥ एतेद्यापि महीभुजः क्षितितले तद्वंशसंभूतयः शोभंते सुतरामुपात्तवपुषः क्षात्रा हि धर्मा इव ॥ ११ ॥ बप्पकस्य तनयो नयवेत्ता संबभूव नृपतिर्गुहिलाख्यः ॥ यस्यनामकलितां किलजातिं भूभुजो दधति तत्कुलजाताः ॥ १२ ॥ यः पीयूषमयूखसुंदरमतिर्विद्यासुधालंकृतिर्निःप्रत्यूहविनिर्जितस्मरगतिः प्राकाम्यरंम्याकृतिः॥ गांभीर्योन्नतिसंभृतस्य जलधेर्विस्फोटिताहंकृतिस्तस्माद्भोजनरेश्वरः ससमभूत् संसेवितश्रीपतिः ॥१३॥ शीलः सलीलकरवालकरालपाणिर्भेजे भुजेन तदनुप्रातिपक्षलक्ष्मीः॥ उत्साहभावगमकं पुलकं दधानो वीर ः स्वयं रस इव स्फुटबद्धदेह ः ॥ १४ ॥ चोडस्त्रीयुतिखंडनः कुलनृपश्रेणीशिरोमण्डनः कर्णाटेश्वर[illegible]ण्डनः प्रभुकलामैत्रीमनो नन्दनः॥ तत्सूनुर्मयमर्मनर्मसचिवः श्रीकालभोजः क्षमापालः कालकरालकर्कशधनुर्दण्डप्रचण्डोऽजनि ॥ १५॥ छायाभिर्वनिताः फलैः सुमनसः सत्पत्रपुंजैर्दिशः शाखाभिर्द्विजवर्गमर्गलभुज ः कुर्वन् [illegible]दामास्पदं ॥ तद्वंशः प्रबलाङ्कुरोतिरुचिरः प्रादुर्बभूवावनीपालोभर्तृभटस्त्रिविष्टपतरोर्गर्वाभिहर्त्ता ततः ॥ १६ ॥ मुष्टिप्रमेयमध्यः कपाटवक्षःस्थलस्तदनु ॥ सिंहव्यासित[illegible]धरमतेभोभूपतिर्जयति ॥ १७ ॥ तज्जन्मा समहायिकः स्वभुजयोः प्रातैकसा[illegible]यकः क्षोणीभारमुदारमुन्नतशिरा धत्तेस्म भोगीश्वर ः॥ यत्क्रोधानलविस्फु[illegible] प्रत्यर्थिनोऽनर्थिनः प्रांचत्पक्षपरिग्रहाकुलधिय ः पेतुः पतंगा इव ॥ १८ ॥ [illegible]म्माणस्य ततः प्रयाणवियति

क्षोणीरजोदुर्दिने निस्त्रिंशां धरः सिंचन सुभटान् धाराजलैरुज्ज्वलैः॥ तन्नारीकुचकुंकुमानि जगलुश्चित्राणि नेत्राञ्जनैरित्याश्चर्यमहो मनः सुसुधियामद्यापि [illegible]ति ॥ १९ ॥ अल्लटोजनि ततः क्षितिपालः संगरेनुकृतदुर्जयकालः ॥ यस्य वैरिपृतनां करवालः क्रीडयैव जयतिस्म करालः ॥२०॥ उदयतिस्म ततो नरवाहनः समिति संहृतभूपतिवाहनः॥ विनयसच्चयसेवितशंकरः सकलवैरिजनस्य भयंकरः॥ २१ ॥ विक्रमविधूतविश्वप्रतिभटनीतेस्ततोगुणस्फीतेः ॥ कीर्तिस्तारकजैत्री शक्तिकुमारस्य संजज्ञे ॥ २२ ॥ आसीत्ततो नरपतिः शुचिवर्मनामा युद्धप्रदेशरिपुदर्शितचंडधामा ॥ उच्चैर्महीधरशिरःसु निवेशितांघ्रेः शंभोर्विशाख इव विक्रमसंभृतश्रीः॥ २३ ॥ स्वर्लोके शुचिवर्मणः स्वसुकृतैः पौरंदरं विभ्रमं बिभ्राणे कलकण्ठकिंनरवधूसंगीतदोर्विक्रमे॥माद्यन्मारविकारवैरितरुणीगंडस्थलीपांडुरैर्ब्रह्मांडं नरवर्मणा धवलितं शुभ्रैर्यशोभिस्ततः ॥ २४ ॥ जाते सुरस्त्रीपरिरंभसौ[illegible]समुत्सुके श्रीनरवर्मदेवे ॥ ररक्ष भूमीमथ कीर्तिवर्मा नरेश्वरः शक्रसमानधर्मा ॥ २५ ॥ कामक्षामनिकामतापिनि तपेऽमुष्मिन्नृपे रागिणि स्वःसिंधोर्जलसंप्लुते रमयति स्वर्लोकवामभ्रुवः॥ दोर्दण्डद्वयभग्नवैरिवसतिःक्षोणीश्वरो वैरटश्चक्रे विक्रमतः स्वपीठविलुठन्मूर्धश्चिरं द्वेषिणः॥ २६॥ त[illegible]राज्ञि निहताशेषविद्विषि॥ वैरिसिंहस्ततश्चक्रे निजनामार्थवद्भुवि॥२७॥ व्यूढोरस्कस्तनुर्मध्ये क्ष्वेडाकंपितभूधरः ॥ विजयोपपदःसिंहस्ततोरिकरिणोऽवधीत् ॥ २८ ॥ यन्मुक्तं हृदयाङ्कुरागसहितं गौरत्वमेतद्द्विषन्नारीभिर्विरहात्ततोपि समभूत्किं कर्णिकारक्रमः ॥ धत्ते यत्कुसुमं तदीयमुचितं रक्तत्वमाभ्यंतरे बाह्ये पिंजरतां च कारणगुणग्रामोपसंवर्ग्गणं ॥ २९ ॥ ततः प्रतापानलदग्धवैरिक्षितीशधूमोत्थमषीरसेन ॥ नृपोरिसिंहः सकलासु दिक्षु लिलेख वीरः स्वयशःप्रशस्तिम् ॥ ३० ॥ [illegible]चनेषु सुमनस्तरुणीनामञ्जनानि दिशता यदनेन ॥ वारिकल्पितमहो बत चित्रं कज्जलं हृतमरातिवधूनां ॥ ३१ ॥ [illegible]पोत्तमाङ्गोपलकांतिकूटप्रकाशिताष्टापदपादपीठः ॥ अभूदमुष्मादथ चोडनामा नरेश्वरः सूर्यसमानधामा॥ ३२॥ कुम्भिकुम्भविलुठत्करवालः सङ्गरे विमुखनिर्मितकालः॥ तस्य सूनुरथ विक्रमसिंहो वैरिविक्रमकथां निरमाथीत् ॥ ३३ ॥ भुजवीर्यविलासेन समस्तोद्धृतकण्टकः॥ चक्रे भुवि ततःक्षेम क्षेमसिंहो नरेश्वरः॥३४॥ रक्तं किंचिन्निपीय प्रमदपरिलसत्पादविन्यासमुग्धाः कान्तेभ्यः प्रेतवध्वो ददति रसभरोद्गारमुद्राकपालैः॥ पायं पायं तदुच्चैर्मुदितसहचरीहस्तविन्यस्तपात्रं प्रीतास्ते ते पिशाचाः समरभुवि यशो यस्य संव्याहरन्ति ॥ ३५ ॥ सामन्तसिंहनामा कामाधिकसवं[illegible]न्दरशरीरः॥ भूपालोजनि तस्मादपहृतसामंतसर्वस्वः ॥ ३६ ॥ खुम्माण[illegible]ततिवियो[illegible]र्मीं सेनामदृष्टविरहां गुहिलान्व-

यस्य ॥ राजन्वतीं वसुमतीमकरोत्कुमारसिंहस्ततो रिपुगणानपहृत्य भूयः ॥ ३७ ॥ नामापि यस्य जिष्णोः परबलमथनेन सान्वयं जज्ञे ॥ विक्रमविनीतशत्रुर्नृपति-रभून्मथनसिंहोथ ॥ ३८ ॥ कोशस्थितिः प्रतिभटक्षतजं न भुंक्ते कोशं न वैरिरुधि-राणि निपीयमानः ॥ संग्रामसीमनि पुनः परिरभ्य यस्य पाणिं द्विसंश्रयमवाप फलं कृपाणः ॥ ३९ ॥ शेषानिःशेषसारेण पद्मसिंहेन भूभुजा ॥ मेदपाटमही पश्चात्पा-लिता लालितापि च ॥ ४० ॥ व्यादीर्णवैरिमदसिन्धुरकुम्भकूटानिष्ठ्यूतमौक्तिकमणि-स्फुटवर्णभाजः ॥ युद्धप्रदेशफलिकासु समुल्लिलेख विद्वानयं स्वभुजवीर्यरसप्रब-न्धान् ॥ ४१ ॥ नड्डूलमूलंकषबाहुलक्ष्मीस्तुरुष्कसैन्यार्णवकुम्भयोनिः ॥ अस्मिन्सुरा-धीशसहासनस्थे ररक्ष भूमीमथ जैत्रसिंहः ॥ ४२ ॥ अद्यापि संधकचमूरुधि-रावमत्तसंघूर्णमानरमणीपरिरम्भणेन ॥ आनन्दनंदमनसः समरे पिशाचाः श्रीजैत्रसिंहभुजविक्रममुद्गृणन्ति ॥ ४३ ॥ धवलयतिस्म यशोभिः पुण्यैर्भूमण्डलं तदनु ॥ विहताहितनृपशङ्कस्तेजःसिंहो निरातंकः ॥ ४४ ॥ उप्तं मौक्तिकबीज-मुत्तमभुवि त्यागस्य दानाम्बुभिः सिक्ता सद्गुरुसाधनेन नितरामादाय पुण्यं फलं ॥ राज्ञानेन कृपाणकोटिमटता स्वैरं विगाह्य श्रियः पश्चात्केपि विवर्द्धिता दिशि दिशि स्फारायशोराशयः ॥ ४५ ॥ आद्यक्रोडवपुः कृपाणविलसद्दंष्ट्राङ्कुरो यः क्षणान्म-ग्नामुद्धरतिस्म गुर्जरमहीमुच्चैस्तुरुष्कार्णवात् ॥ तेजःसिंहसुतः सएव समरे क्षोणीश्वर-ग्रामणीराधत्ते वलिकर्णयोर्धुरामिलागोले वदान्योधुना ॥ ४६ ॥ तालीभिः स्फुटतूर्य-तालरचनासंजीवनीभिः करद्वंद्वोपात्तकबंधमुग्धशिरसः संनर्त्तयंतः प्रियाः ॥ अद्याप्यु-न्मदराक्षसास्तव यशःखड्गप्रतिष्ठं रणे गायंति प्रतिपक्षशोणितमदास्तेजस्विसिंहा-त्मज ॥ ४७ ॥ अप्रमेयगुणगुंफकोटिभिर्गाढबद्धवृषविग्रहाकृतेः ॥ कीर्त्यते न सकला तव स्तुतिर्ग्रन्थगौरवभयान्नरेश्वर ॥ ४८ ॥ अर्बुदो विजयते गिरिरुच्चैर्देवसेवित-कुलाचलरत्नम् ॥ यत्र षोडशविकारविपाकैरुज्झितोकृत तपांसि वसिष्ठः ॥ ४९ ॥ क्लेशा-वेशविमुग्धदान्तजनयोः सद्भुक्तिमुक्तिप्रदे लक्ष्मीवेश्मनि पुण्यजन्तनयासंसर्गपू-तात्मनि ॥ प्राप प्रागचलेश्वरत्वमचले यस्मिन्भवानीपतिर्विश्वव्याप्तिविभाव्यसर्व-गतया देवश्चलोपि प्रभुः ॥ ५० ॥ सर्वसौंदर्यसारस्य कोपि पुंजइवाद्भुतः ॥ अयं यत्र मठस्तिष्ठत्यनादिस्तापसोचितः ॥ ५१ ॥ यत्र क्वापि तपस्विनः सुचरिताः कुत्रापि मर्त्याः क्वचिद्गीर्वाणाःपरमात्मनिर्वृतिमिव प्राप्ताः क्षणेषु त्रिषु ॥ यस्याचोद्ग-तिमर्बुदेन सहितां गायंति पौराणिकाः संधत्ते सखलु क्षणत्रयमिषात्त्रैलोक्यलक्ष्मी-मिह ॥ ५२ ॥ जीर्णोद्धारमकारयन्मठमिमं भूमीश्वरग्रामणीर्देवः श्रीसमरः स्वभाग्यवि-भवादिष्टोनिजःश्रेयसे ॥ किंचास्मिन्परमास्तेनरपतिश्चक्रे चतुर्भ्यः कृपासंश्लिष्टः

शुभभोजनस्थितिमपि प्रीत्या मुनिभ्यस्ततः ॥ ५३ ॥ अचलेशदण्डमुच्चैः सौवर्णं समरभूपालः ॥ आयुर्वायुचलाचलमिह दृष्ट्वा कारयामास ॥ ५४ ॥ आसीद्भावाग्निनामेह स्थानाधीशः पुरा मठे ॥ हेलोन्मूलितसंसारबीजः पाशुपतैर्व्रतैः ॥ ५५ ॥ अन्योन्यवैरविरहेण विशुद्धदेहाः स्नेहानुबंधहृदयाः सदया जनेषु ॥ अस्मिंस्तपस्यति मृगेंद्रगजादयोपि सत्वाः समीक्षतविमोक्षविधायितत्वाः ॥ ५६ ॥ शिष्यस्तस्यायमधुना नैष्ठिको भावशंकरः ॥ शिवसायुज्यलाभाय कुरुते दुष्करं तपः ॥ ५७ ॥ फलकुसुमसमृद्धिं सर्वकालं वहंतः परमनियमनिष्टां यस्य भूमीरुहोऽमी ॥ अपरमुनिजनेषु प्रायशः सूचयंति स्खलितविषयवृत्तेरर्बुदाद्रिप्रसूताः ॥ ५८ ॥ राज्ञा समरसिंहेन भावशंकरशासनात् ॥ मठः सौवर्णदंडेन सहितः कारितोर्बुदे ॥५९॥ योकार्षीदेकलिंगत्रिभुवनविदितश्रीसमाधीशचक्रस्वामिप्रासादवृन्दे प्रियपटु[illegible] वेदशर्मा प्रशस्तीः ॥ तेनैषापि व्यधायि स्फुटगुणविशदा नागरज्ञातिभाजा विप्रेणाशेषविद्वज्जनहृदयहरा चित्रकूटस्थितेन ॥ ६० ॥ यावदर्बुदमहीधरसंगं संबिभर्ति भगवानचलेशः ॥ तावदेव पठतामुपजीव्या सत्प्रशस्तिरियमस्तु कवीनाम् ॥ ६१ ॥ लिखिता शुभचन्द्रेण प्रशस्तिरियमुज्वला ॥ उत्कीर्णा कर्मसिंहेन सूत्रधारेण धीमता ॥ ६२ ॥ संवत् १३४२ वर्षे मार्ग शुदि १ प्रशस्तिः कृता.

१६-चित्तौड़गढ़परसे मिले हुए एक स्तंभपर खुदी हुई रावल समरसिंहके समयकी प्रशस्ति.

संवत् १३४४ वैशाख शुदि ३ अद्य श्रीचित्रकूटे समस्तमहारा — कुल-श्रीसमरसिंहदेवकल्याणविजयराज्ये एवं काले चित्रांगतडागमध्ये श्रीवैद्यनाथकृते सक.........................राम्बटेन — कडी दत्त — — म १ कायस्थज्ञातीयं पचसीगसुत वीजडेन कारापितं ॥ १ ॥

१७-ग्राम आबरमें पार्श्वनाथके मन्दिरमें एक स्तम्भपर खुदी हुई प्रशस्ति.

संवत् १४७८ वर्षे पोष शुद ५ राजाधिराजश्रीमोकलदेवविजयरा[illegible] प्राग्वाट सा० नाना भा० फनीसुत सा० रतन भा० लाषूपुत्रेण श्री शत्रुंजय गिरनारा[illegible]द-जीरापल्लीचित्रकू[illegible]तीर्थयात्रा कृता श्री संघमुख्य सा० धणपालेन भा० हांसूपुत्र सा० हाजाभोजाधानावधू [illegible]ऊनाऊ धा [illegible]त्र देवा नरसिंगपुत्रिका पूनी पूरी

मरगद चमकू प्रभृति कुटुंब परिवृतेन श्रीशांतिनाथप्रासादः कारितः प्रतिष्ठितः स्तपापक्षे श्रीदेवसुंदरसूरिपट्टपूर्वाचलदिननायक — — गछनायक निरुपममहिमा-निधान युगप्रधान समान श्रीश्रीश्रीसोमसुंदरसूरिभिः भट्टारक पुरंदर श्रीमुनि-सुंदरसूरि श्रीजयचन्द्रसूरि श्रीभुवनसुन्दरसूरि श्रीजिनसुन्दरसूरि श्रीजिनकीर्ति-सूरि श्रीविशालराजसूरि श्रीरत्नशेखरसूरि श्रीउदयनन्दिसूरि श्री लक्ष्मीसागरसूरि महोपाध्याय श्रीसत्यशेखरगणि श्रीसूरसुन्दरगणि श्रीसोमदेवगणि कलंदिका कुमुदिनीसोमोदय पं० सोमोदवगणि प्रमुखं प्रतिदिनाधिकाधिकोदयमानशिष्यवर्गो चिरं विजयतां श्री शांतिनाथचैत्यं कारिता.

१८–चित्तौड़की महासतियोंमें समिद्धेश्वर महादेवके मन्दिरमें लगी हुई महाराणा मोकलके समयकी प्रशस्ति.

ॐ॥ ॐनमः शिवाय॥ सिद्धार्थामरसुन्दरीकरवलात्सिन्दूरधारारुणश्रीगण्डस्थ-लमण्डलीयुगलसद्दानाम्बुपूरोज्वलः॥सन्ध्याभ्रच्छुरिताभ्रसानुनिपतन्नाकापगौघद्वयः स्वर्णोर्वीभृदिव प्रयच्छतु शिवं देवोगजास्योव्ययम् ॥ १ ॥ वेदावागिति शिष्टतामु-पगतो यः कर्मणामीक्षिता साक्षी तत्प्रतिभूः पुनर्भवति सत्सिद्धार्थसंदर्शनः॥ जात्यैवैषु विनश्वरेषु सकलं दाता विविक्तः फलं देवः स्वस्तिकरः परः ससततं स्तादेकलिङ्गाभिधः ॥ २ ॥ भूमीभृत्स्वयमेति न स्थितिरियं गुर्वी नगाबंधवोविंध्योगस्त्यचरित्रतो न चकितः प्रस्थापयद्ब्राह्मणान् ॥ कन्या मान्यतमा महोत्सवविधावित्येकमंत्रोक्तितो यामानीन-यदर्चनाय गिरिजा विन्ध्यालया सावतात् ॥ ३ ॥ कालिन्दीतटकुञ्जबद्धवसतिः सेयं प्रिया राधिका स्मर्तव्यं ननु रुक्मिणी न भवती हुंचारुहासिन्यसि ॥ युक्तं नासि कला-वती सुविदितं त्वं सत्यभामेऽन्यथा नोक्तासीति विनिन्हुतोक्तमुदितः श्लेषोच्युतः पातु वः ॥ ४ ॥ स्फारन्यायोन्ववायो गुहिलनरपतेरस्ति जाग्रत्प्रशस्तिर्व्यस्तीभूतां-तरायोवसतिरिह युगे धर्मकर्मोदयस्य ॥ शश्वद्यागानुरागस्थिरविमलनिधौ भूरिभो-गोनभागान् भूयोनूनं विधत्ते सपदि शतमुखी यत्र संभूय शक्रः॥ ५ ॥ वाक्-सेतोरचलन्मतिर्दिशि दिशि प्रख्यातमानोन्नतिर्निर्यन्निस्वनवाहिनीपरिवृतो नाना-धनैकाकरः ॥ अत्यक्तक्षितिविग्रहोमुनिकथागीतादिगोत्रस्थितिर्विंध्योवंधुरवंधुतां-वितनुते यस्योपपन्नश्रियः ॥ ६ ॥ वंशे तत्रारिसिंहः क्षितिपतिरजनि क्षत्रनक्ष-त्रलक्ष्मीवीक्षादक्षोरुपक्ष्माबहुलजरजनीध्वंसभास्वद्गभस्तिः ॥ विन्ध्यावन्ध्यप्रदेशस्फु-रदमलखनिव्यक्तरत्नाकरत्वस्फारश्रीमेदपाटक्षितिवलयवलद्दुग्धपाथोदचन्द्रः ॥ ७ ॥ नरपतिरिरिसिंहः शस्त्रशास्त्रोपदेष्टा वितरणरणकर्णोविश्वविख्यातवर्णः ॥ स्फुर-

दमलगुणौघः पुण्यगण्योरुनामा नयविनयविवेकोद्यानपुंस्कोकिलः सन् ॥ ८ ॥ बिभ्यत्सिंहपदादमुष्य सकरी नूनं मघोनोयतो वाजीसत्रहविस्ततोध्वरभुवं नोच्चैः श्रवागच्छति ॥ आहूतः कथमेतु वाहनमृते देवाग्रणीर्वृत्रहा मेघं वाहन मातनोदयमतः सद्दोमधूमोद्भवम् ॥ ९ ॥ कीर्त्तिः कौतुकिनी दिगंतमगमत्कर्पूरपूरोज्वला खेलन्ती निजवासिताभ्रमुवशादालिङ्गिता दिग्गजैः ॥ क्षीराम्भोनिधिगाहनं तु विधिना कृत्वादरादुत्थिता ब्रह्मादीननयोक्कुमुत्तमगुणस्यास्य प्रगल्भा दिवं ॥ १० ॥ विशिष्टजनसंगतो व्यतरदेकलक्ष्यं यतस्ततोधिकतरं यशोलभत भोजभूमीपतिः ॥ अयं कथमदः समः कविभिरुच्यते वा ददद्विशेषविधिनान्वहं विविधलक्षभोजानपि ॥ ११ ॥ निर्व्रीडो न महेश्वरो न कठिनो नाचेतनश्चिन्तितं दातानेकगवीश्वरः परिवृढो नो भारती दुर्भगा ॥ सेनानीर्न विपक्षसंगतिरतो नोच्चैश्श्रवावा हयो नागमः कतिचित्तरुः कथमदः पुर्यासधुर्यादिवः ॥ १२ ॥ शूरः सूनृतवागनूनविभवो वंशावतंसः सुतस्तस्यन्यकृतरत्नसानुगरिमा हम्मीरवीराजयी ॥ विख्यातः स्मररूपजित्वरवपुर्लक्ष्मीनिवासाच्युतो वाग्देवीचतुराननो रिपुकुलप्लोषाग्ररूपो महान् ॥ १३ ॥ हम्मीरः किल वैभवोचितविधिर्दित्सुः सहस्रं गवामित्याकर्ण्य सहस्रगूरविशचीनाथौ भयं जग्मतुः ॥ शश्वत्तद्रहसि स्थितान्मुररिपोः श्रुत्वा सहस्रं पुनर्धेनूनां समुपागतावतिमुदा तद्दानमेवेक्षितुम् ॥ १४ ॥ कर्णादीनतिशय्य दिग्जयविधावादाय दिग्मण्डलीदण्डं दूरमपास्य कालमसकृद्दाता स्वयं दक्षिणाम् ॥ इत्याकर्ण्य जनश्रुतीः परिभवं स्वं शङ्कमानोन्तकृत् द्रष्टुं न क्षमते प्रजामनुनये यस्मिन् महीं शासति ॥ १५ ॥ प्रासादमासादितशातकुम्भकुम्भं वसद्देवमचीकरद्यः ॥ अचीखनत्सागरकल्पमल्पेतरत्सरश्श्रूतवर्नाभिरिद्दम् ॥ १६ ॥ संग्रामग्रामभूमौ सदिदमसिलतासंगतापंचशाखे सच्छाये श्यामलांगी क्षतजजलवलत्पुष्टिरिष्टप्रचारा ॥ चित्रं सूते विकोशा कुसुममतिमहत्कीर्त्तनीयं दिगंते धाम्नाम्नाता नितान्तं दलयति नियतं वारणांगे पतन्ती ॥ १७ ॥ हम्मीरवीरो रणरङ्गधीरो वाङ्माधुरीतर्ज्जितकेकिकीरः धराधवालङ्करणैकहीरस्तत्तद्दनीभूपितासिंधुतीरः ॥ १८ ॥ एतत्पाणौ कृपाणी द्विषदसुपवनाहारतोषं दधाना कालाकारोरगीव स्फुरति सचकितं वीक्षिता भीतिहेतुः ॥ नाधः काये कथंचिद्दशति बहुमता नो विभीते विपक्षात्स्वर्गे वासं क्षतानां वितरति रमते न द्विजिह्वेन चित्रम् ॥ १९ ॥ पायं पायं सुपीनः परभटरुधिरं तन्महीगर्भजातः खड्गः कालः कुतोयं कथमियमपरा कीर्त्तिरत्युज्वलास्य ॥ एकेनास्नायि नूनं रुददरिवनिता नेत्रतोयेंजनाढ्ये तासामुद्वर्त्तितयं मृदुभुजवलयस्वच्छचूर्णैरजस्रम् ॥ २० ॥ उद्यत्प्रौढप्रतापानलमुषितमहाबिंबशोपोविवस्वान्पश्चा-

दुद्दामकीर्त्तिच्छुरिततरतनुः शीतरश्मित्वमेति ॥ शंके रूपान्तरं स्वं कलयति सवपुर्भेदभीतोरणक्ष्माधीरे हम्मीरवीरे घ्नति परसुभटान् संगरे सन्मुखस्थान् ॥ २१ ॥ कुर्वन् पद्मेजनुः स्वं विधिरिति विधिदृग्दृष्टस्टष्टाग्रदिष्टो नो पङ्के जन्मदोषं व्यजगणदतुलं तस्य रक्तेतरस्य॥ भूत्वा हम्मीरदेवक्षितिपतियशसः स्वच्छवर्णोपमेयो गन्ता पुण्योपमानं दिशि दिशि सुचिरं सत्कवीनां मुखेषु ॥ २२ ॥ गौरी गौरीशहासादपि रुचिररुचिश्चंदनाच्चन्द्रतोवा कान्त्या कर्णाटकान्ता सितदशनचतुष्कानुमेया सुगेया॥ शेषस्याशेषवेषस्फुरदमृतरुचश्चारुसौंदर्य्यधुर्य्या कीर्तिर्यस्येंदुमूर्त्तेः किल चरति दशाशांतविश्रांतयात्रा ॥ २३ ॥ तस्मात्क्षेत्रमहीपतिः समभवत् ख्यातो गुणांभोनिधिः शौर्य्यौदार्य्यमहत्वसत्वमहितो धर्म्मो वपुष्मानिव ॥ शक्रार्द्धासनभाजि येन जनके रत्नाकरालंकृतिर्भूर्भुक्ताजितपूर्वराजगरिमप्राप्तप्रभाशालिना ॥ २४ ॥ हृदि विनिहितरामोयोस्त्रविद्याभिरामो मदनसदृशमूर्त्तिर्विश्वविख्यातकीर्त्तिः ॥ समरहतविपक्षोलीलयादत्तलक्षो नयनजितसरोजः प्रक्रियाक्रांतभोजः ॥ २५ ॥ संग्रामे दन्तिदन्तज्वलनकणमुचि प्रोल्लसद्वीरयोधस्फारोन्मुक्ताशुगालीनिविडकवलिताशेषकाष्ठांतराले ॥ जित्वा दुर्गं समग्रं नरपतिमहितं साधुवादस्य सम्यक् स्तंभं योद्धाधारित्र्यामरिकुलपतगश्रेणिचण्डप्रदीपः ॥ २६ ॥ आक्रान्ता वृषपुंगवेन विलसद्भासां चतुर्भिः पदैः सम्यग्वीक्षणपालिता नवनवप्राप्तप्रकर्षोदया ॥ प्रासोष्टामरनैचिकीव बहुशोरत्नान्यनर्घ्याणि गौः शूरे कीर्त्तिपयोधरा शतमखे यस्मिन्मही शासति ॥ २७ ॥ कीर्त्तिः क्षीरोदपूरे बहुविधविरुदप्रोल्लसद्वीचिमाले कृष्णः शेतेस्य खड्गः सुखमुरुसमरे शेषमासाद्य शत्रोः ॥ दृश्यंते राजहंसा दिशि दिशि न ततो मानसे लीयमानाः सीदत्पक्षाविपक्षाः स्फुरति न कमलोन्मेषितापेक्षितैषाम् ॥ २८ ॥ अस्यासिः कालरात्रिः स्फुरति किलभवन्मण्डले वैरिणां यः स्वच्छः प्रोद्भासिवेश्मप्रभवदहिभयं भूतराजोरुतापम् ॥ पद्मोद्बोधो न चैषां भवति विघटते चक्रयोगो नियोगाद्भूरिर्जागर्त्ति भीतिः पतति निजपथोनोज्झितः पङ्कपातः ॥ २९ ॥ भ्रातः कल्पतरो किमात्थ भगवन् हेमाचल श्रूयतां कर्तुं क्षेत्रमहीपतिः प्रयतते दानानि पुण्याशयः ॥ वर्तेहं तु करे गृहांगणभुवि त्वं वर्तसे नित्यशः क्रीडार्थं यदि वा ददाति हि तदा वक्तुं क ईष्टे जनः॥ ३० ॥ इत्थं दानकथा मिथो विजयते चिन्तामणिस्वर्गवीमुख्यानामपि दानशास्त्रविलसन्नाम्नाममुष्य प्रभोः ॥ उन्मीलच्छरदम्बुजामलदलस्वच्छायताक्षिस्फुरत्कोणस्थायुकमित्रवैरिपरिषत्संपद्विपद्वर्त्मनः ॥ ३१ ॥ माद्यद्वेतण्डचण्डध्वनिभरविगलद्वीरवर्गोरुधैर्य्ये स्फुर्जत्कोदंडदं[illegible]पुंचयच्छन्नसैन्येप्यनन्ये॥ जाने प्राणैक पण्ये गणयतिनगणं विद्विषां [illegible]पयराशिर्धन्यः क्षेत्रःक्षितीशः

प्रतिभटनृपतिः क्ष्माकराकृष्टिदृष्टिः ॥ ३२ ॥ मूर्च्छालं तु जडीभवच्छ्रुतिपथं संशुष्कितैकत्वचं मीलंतं च मुहुर्मुहुः शिथिलितं यांतं न वा सुस्थितम् ॥ दारिद्र्योपहतं विबोधयाति यद्दुष्टाहिदष्टं यथा जाप्यं कर्णपथाश्रितं सुविमलंयन्नाममंत्राक्षरम् ॥ ३३ ॥ तत्सूनुः किल लक्षसिंहनृपतिः ख्यातो गुणग्रामणीरुग्रदानफलामलार्जुनयशोवल्लीमतल्लीतरुः ॥ यत्तेजःशिखिनोविपक्षवनितानेत्रांबुजातद्युतेः काष्ठांताक्रमणं झटित्यनुदिनं नाभूद्विचारास्पदम् ॥ ३४ ॥ रामः किं जितदूषणः सुभरतो रामानुरागास्पदं शत्रुघ्नः किमु लक्ष्मणोदयभरः सुग्रीव इवांगदः ॥ तारावल्लभ उत्तमेन वपुषा लंकारमासादतो यो रामायणनायकैकतनुतां दृष्टुं विधात्रा कृतः ॥ ३५ ॥ दानादुद्दामसामा शरणगतजनत्राणपाषाणसीमा भीमा सीमैकधामा शतमखपुरतो विद्विषा गीतनामा ॥ अक्षामारामदामा मखमुखविलसद्भूमधूमोच्चसामा सल्लक्ष्माशेषरोमा धरणिसुरतरुर्लक्षसिंहः सधीमान् ॥ ३६ ॥ वैरिक्षोणींद्रमत्तद्विरदमदनुदः सिंहतः शुद्धसारा दारादुद्गीतकीर्त्तेरमरपुरभिषक्कान्तिनिर्णीतमूर्तेः ॥ दाने माने कृपाणे यशसि महसि वा साधुवाण्यां कृपाण्यां वीरा ल्लक्षक्षितीशाज्जगति नहि परः ख्यातभक्तिः सुभक्तिः ॥ ३७ ॥ नीतिप्रीतिभुजार्जितानि बहुशो रत्नानि यत्नादयं दायं दायममायया व्यतनुत ध्वस्तांतरायां गयाम् ॥ तीर्थानां करमाकलय्य विधिना न्यत्रापि युंक्ते धनं प्रौढग्रावनिबद्धतीर्थसरसीजाग्रद्यशोंभोरुहः ॥ ३८ ॥ संग्रामेषु गतागतानि विदधल्लक्षं परैर्लक्षितो दत्वा लक्षमपि स्वयं वितनुते संतोष मब्जेक्षणः॥ कुर्वाणः किलकानकीमपि तुलां तत्खंडबिंबच्छलाल्लक्षंसांतनुमातनोदिति नृपो लक्षप्रथोजायत ॥ ३९ ॥ दाने हेम्नस्तुलायां मखभुवि बहुधा शुद्धिमापादितानां भास्वज्जांबूनदानां कुतुकिजनभरैस्तर्किताराशयोस्य ॥ संग्रामे लुंठितानां प्रतिनृपमहसां राशयस्ते किमेते विंध्यं बन्धुं समेतुं किमु समुपगताः साधुहेमाद्रिपादाः ॥ ४० ॥ रुद्धाशेषपदांशकाधिपकरव्यग्रीभवजीविनां धीरोमूमुचदर्ज्जुनीमिव गयां मायाविमुक्तायशः ॥ धर्मश्चास्य समस्तलोकमहितः काष्ठां परामागतो निःसत्वीकृतधर्म्मराजवसतेः पद्मालयासद्मनः ॥ ४१ ॥ मत्तुल्या ननु नाभवत्किल तुला पूर्वेति गर्व्वं तु यामुष्य क्षोणिपतेर्ध्रुवं कृतवती गर्व्वासहिष्णोः पुरः ॥ तस्यास्तस्य मुदानुदां विदधता धीरेण दत्तापरासौ मानादधिकाधिकीकृतविधिस्सद्यो विपद्घाटका ॥ ४२ ॥ संख्यातुं कथमीश ते कविजना दानानि दानाविधान्यस्याकृष्टसमस्तराजवसुधावित्तस्य चित्तोन्नतेः॥ लब्धा नो द्विजते वनीपकगणान्दत्वानयत्कीर्तयेत् पात्रंप्राप्य मुदान्वितः स्तृणतुलां स्वर्णं समारोपयेत् ॥ ४३ ॥ तस्य क्ष्मावलयं नयेन नयतः संतोषमायुष्मतः संभूतः स्मरसुन्दरो गुरुनतः पुत्रः सुधीर्मोकलः ॥ शक्त्या भूभृति दारणं

वितनुते यत्तत्कुमारः पुरः सर्वज्ञोस्ति यतस्ततो चलभुवो नाथस्तु पित्रा कृतः ॥ ४४ ॥ प्रासादा बहुशः समुन्नतियुजः क्षोणीभुजा कारिताः शुद्धन्मूर्द्धसु राजमानकनक प्रस्फारकुम्भश्रियः ॥ नागेन्द्रानुशिरस्सु हाटकघटानाधाय लोलत्सुधाः पातुं नाकमिवोत्थिता मखभुजां पीयूषपानोत्सुकाः ॥ ४५ ॥ अंगाः संप्राप्तभंगाः स्मृतघनविटपाः कामरूपा विरूपा वंगा गंगैकसंगा गतविरुदमदा जातसादा निषादाः ॥ चीनाः संग्रामदीनाः स्खलदधिधनुषोभीतिशुष्कास्तुरुष्का भूमीपृष्ठे गरिष्ठे स्फुरति महिमनि क्ष्मापतेर्मोकलस्य ॥ ४६ ॥ मूर्द्धनः सिंदूररेखा शतमखधनुषा राजमाना गभीरं कूर्वंतः शब्दमुच्चै रदरुचिचपलाः स्निग्धतन्वीकचाभाः ॥ संग्रामग्रामयाता रिपुकरिजलदाप्राप्तकालोपयोगा यस्येषुव्रातभिन्नाः खलु रुधिरजलं भूरि वर्षंति सद्यः ॥ ४७ ॥ अस्य प्रौढप्रयाणक्षणरणरसिकह्रेषमानोरुमानस्फूर्ज्जद्वर्व्वार्वचर्य्यक्रमणभरभवद्धूलिधारांधकारम् ॥ नाशं नेता विवस्वानिति तु विरमतु ध्वस्तनेत्रप्रकाशः स्वानश्वानस्ववर्णान्यदि परिचिनुते तत्सभाग्यं महीयः ॥ ४८ ॥ वासोनाशासु भास्वत्कररुचिररुना भासितास्वस्य वैरात् पारावारांतरायादपि नहि गमनं दूरमस्मादकस्मात् ॥ सेवा हेवाकमेवाचरत बहुमतं दत्तवित्तं नितांतं मंत्रोमात्यैरकारि प्रतिविमतसदो भूपतेर्मोकलस्य ॥ ४९ ॥ प्लुष्टप्रौढारिवर्गप्रथितपुरवलद्धूमधूमप्रचारैर्धूम्रं ब्रह्माण्डभाण्डोदरमतिविपुलं वीक्ष्य दक्षेषु मुख्यः ॥ कीर्त्यालेपं सुधोत्थं कलयति बलवान् दिग्वधूर्किंकरीभिस्तारातद्बिन्दुवृंदच्छुरणबहुरुचा योवरेणावृताभिः ॥ ५० ॥ नेता पातोत्तराशा यवननरपतिं लुंठिताशेषसेनं पीरोजंकीर्तिवल्लीकुसुममुरुमतिर्योकरोत्संगरस्थः ॥ पल्लीशाक्रान्तिवार्ता कलयति कलया कीर्तितां यस्य हेलां पंचास्यस्येव माद्यद्गजदलनरुचेर्ल्लीलया रंकुभंगम् ॥ ५१ ॥ आरूढः सविता तुलां कलयति द्राङ्नीचतां कन्यया दूरं मुक्तपरिग्रहो बहुरुचा चित्रोल्लसद्धस्तया ॥ धीरोयं पदमुत्तमं तु विधिना प्राप्तोतुलां गाहते कन्याभिर्व्रियतेतमां क्षितिभुजां श्रीमोकलक्ष्मापतिः ॥ ५२ ॥ यानत्राणमना मनागपि मनोरन्यूननीतिव्रतो नो जानाति निजप्रतापमतुलं सिंहो यथा विक्रमम् ॥ मन्ये भास्वरहेमराशिमिपतो धाता तुलायामधादेतस्मादपि सोगमच्च गुरुतामद्यापि जानाति किम् ॥ ५३ ॥ दृष्ट्वा हाटककोटिकूट मतुलं दानाय मानाधिकं सद्यः शोधितमुद्धतैकमतयः संशेरते शाब्दिकाः ॥ शक्रप्रार्थित हेमदे सुरतरौ किं किं नु चिंतामणौ हेमाद्रौ शकलीकृते किमु तुलाशब्दः स्तु संकेतितः ॥ ५४ ॥ दीव्यत्तद्वीरतुंगतरतुरगवरव्रातजातोरुवातक्षुभ्यत्तत्क्ष्मोत्थरेणुक्षतनयनरुजा व्यग्रसूताः खरांशोः ॥ मंदायंते गतेऽश्वास्तत इव वनिता वैरिणां तद्दिनानां यामाञ्जानन्ति दीर्घानवितथ-

विरुद्दे मोकलेन्द्रे रणस्थे ॥ ५५ ॥ को वा नो वेद विद्वांश्चरमयुगकलावेकपादेव धर्म्मः खंजन्भ्रष्टावलंबः किल चरतु कथं पीनपंके जनेऽस्मिन् ॥ सोयं सद्वंशयष्टिं बहिरन्तर्बहिरथो शुद्दसारोपपन्नं प्राप्य श्रीमोकलेन्द्रं प्रविशति विपुलां मंडलीं पण्डितानाम् ॥ ५६ ॥ नूनंदूतविधावधान्मखभुजामीशः सुमेरुं पणं गण्यस्तत्र मनस्विनां व्यजयत श्रीमोकलक्ष्मापतिः ॥ तादृक्षाः कथमन्यथावनितले हेम्नाममी राशयो नैषां दानविधावमुष्य च मनः पीडाकलापि क्वचित् ॥ ५७ ॥ वन्हावन्हाय सर्पिः पतननतरुचौ भूमधूमायमाने दूनां धामाक्षिपंक्तौ कथमुपकुरुते यागभागो मघोनः ॥ पुण्येनास्यैव जाने दिनमणिरयते सत्कराणांसहस्रं बिभ्रत्सद्योऽस्ततंद्रः स्थगयति विधिना योयमक्ष्णां सहस्रं ॥ ५८ ॥ आरुह्यामलमंडलंकृततुलो यः पुष्करद्योतनः पुण्यश्री सकथं तथा प्रथमतो गण्यो न तेजस्विनाम् ॥ निः पंका करलालिता वसुमती सद्राजहंसायते बंधूनामुदयस्ततस्तदुदये स्यात्संपदामौचितिः ॥ ५९ ॥ पारावारस्यवेलातटनिकटमनुप्राप्तशैलाधिवासा शत्रुश्रेणीसमग्रा निवसति सततं भीतभीता नितान्तम् ॥ जेतुं यात्रा तदीया यदि भवति तदा वाजिराजीखुराग्रत्रुट्यत्क्ष्माधूलिधारा स्थलयति जलधिं पारयानाय तस्याः ॥ ६० ॥ आसाद्यातिथिमाश्रयं त्रिजगतां श्री द्वारकानायकं प्रासादं रचितोपचारमकरोद्भूमीपतिर्मोकलः ॥ देवेनांबुजबांधवेन चकितं यो वीक्षितः शंकया विन्ध्याद्रेर्गिरिसत्तमस्य नियतं मुक्तस्य वाग्बंधनात् ॥ ६१ ॥ यस्य प्रत्युप्तिकर्म्मद्रवदखिलमहाधातुसंभारधारापातक्षमातापशुष्यद्दलविलविलसल्लोललालाःफणींद्रः॥व्याचष्टे स्पष्टमिष्टं ध्रुवमयमधुना भाष्यमभाष्यशिष्यं सश्रीभर्त्तुः पुरस्ताज्जयति खगपतिर्मोकलेन्द्रस्य कीर्तिः ॥ ६२ ॥ सोढुं नेशः पयोधिः क्षणमपि विरहं द्वारकानायकस्य प्रेम्णा पादोपमूलं स्वयमुपगतवान्यस्तडागच्छलेन ॥ नोदन्याकुम्भयोनेरतिपतातितरामंतरेणैनमेष्यन् शापान्तं मे विदध्यादयमिति विनयाद्विन्ध्य एवानवद्यम् ॥ ६३ ॥ विन्ध्यस्कंधैकबंधुर्निजविततिभरादंधुतानीतसिंधुर्नीरक्रीडत्पुरंध्रीप्रसभकुचतटाघातसीदत्तरंगः ॥ संतुष्यत्तोयजंतुर्विविधनगनदीवेगसंरोधितंतुः सत्सेतुर्नेतरस्य स्फुरति वसुमती सिद्धिहेतुः सुकेतुः ॥ ६४ ॥ अमुष्य धरणीभृतो विषयमध्यवर्ती महादरीवृतवपुष्टया विवृतदूरगंभीरतः ॥ महोदरइवापरः परमनोनगम्यांतरः पवित्रतरकीर्तनो जयति चित्रकूटाचलः ॥ ६५ ॥ जायंतां नामकामं कुलधरणिभृतः सप्तशृंगौघतुंगा वैचित्र्याच्चित्रकूटं तुलयितुमनलं तीर्थभूतप्रदेशम् ॥ माभूवन्निर्झरिण्यो मदुदितजनुषो नीचगामानशौंडः शृंगे यः क्षीरवारां निधिमधिततरा मुद्यदंभोजवासं ॥ ६६ ॥ उद्दामग्रावनिर्य्यद्झरभरकणिकाजातसेकातिरेकस्निग्धच्छालप्रवालप्रभवदुरुतरा भोगसूनप्रसूनात् ॥ मध्वासारादपारादुपहतजनुषो दाववन्हे-

निदाघे विश्वग्ध्रीचो वनानि प्रसभपरिभवं नेह शैले विदन्ति ॥ ६७ ॥ एतस्मिन्सरिदस्ति निर्मलजला यस्यां निवापांजलावुन्मीलत्तिलजातपातकवलव्यग्राः शफर्य्यश्चलाः ॥ क्रीडासंभ्रमविस्मृतान्सुबहुशो मज्जद्वधूनामहो वक्त्राकांतिविलोपिकज्जलकणांश्चैतुं स्फुरन्ति स्फुटम् ॥ ६८ ॥ लंका किं नाम दुर्गं जलनिधिरविता यत्र साकालकाका प्रावृट्काले विवर्गैरपि गलितमदैर्या व्रियेताविमानी ॥ यो धत्ते क्षीरवारांनिधिमुपरिपरै राजहंसैरगम्यस्तद्दुर्गं चित्रकूटो जयति वसुमतीमंडनं भूरिभूमिः ॥ ६९ ॥ सौभाग्यैकमहौषधिर्भगवती यस्मिन् भवानी स्वयं जागर्ति प्रियसंनिधानवसतिः साध्वी जनानां गुरुः ॥ देवः सोपि समस्तनाकरमणीसंतानदामव्रजप्रश्च्योतन्मकरंदबिंदुसुरभिप्रस्फारनृत्यांगणः ॥ ७० ॥ सेवा हेवाकदेवस्तुतहरचरितप्रोल्लसद्भावसंपत् सद्यः स्विद्यद्भवानीकृतसुखसवनस्फारसौरभ्यहारि ॥ यद्वारिप्रातिभाव्यं वहति मृगदृशां मज्जतीनामजस्रं पातिव्रत्ये समंतात्समधिकसुभगं भावुकेपि शश्वत् ॥ ७१ ॥ गिरिः कैलासो यद्दशमुखभुजोच्छ्वासनदिनाद्वलन्मूलस्थानात् प्रभवति न नाट्यं विपहितुम् ॥ प्रदेशप्राग्भार प्रकृतिरमणीये तदधुना समिद्देशः श्रीमानिह वसति गौरीसहचरः॥ ७२ ॥ एकैकग्रावतावत्कृतिमुषितमहा सर्वकर्म्माणमेनं कृत्वा प्रासादमाशा मुखमुकुरमतिव्योमसीमानमस्य ॥ यस्याशेषोपचारक्षमधनमददान्मोदमानो वदान्यो ॥ धीरः श्रीमोकलेन्द्रो धनपुरमुचितं ग्राममायामसीम ॥ ७३ ॥ अब्दे बाणाष्टवेदक्षितिपरिकलिते विक्रमांभोजबंधोः पुण्ये मासे तपस्ये सवितरि मकरं याति जीवे घटस्थे ॥ पक्षे शुक्लेतरास्मिन् सुरगुरुदिवसे चार्यमर्क्षे तृतीयातिथ्यां देवप्रतिष्ठामयमकृततरां मोकलो भूमिपालः ॥ ७४ ॥ उन्मीलद्यागयात्रोद्यतसुरतरुणीगीतसंग्रामधामा सुत्रामा यावदिष्टे त्रिदशपुरपरीपालनस्पष्टनीतिः ॥ पर्यायोपात्तभूनां स्फुरति दशशतिः शेषमूर्द्धनां च यावत् प्रस्फारस्फारलक्ष्मीरवतु वसुमती मोकलेन्द्रस्य बाहुः ॥ ७५ ॥ श्रीमद्दशपुरज्ञातिर्भट्टविष्णोस्तनूद्भवः ॥ नाम्नैकनाथनामायमलिखत्कृतिमुज्वलाम् ॥ १ ॥ अनेकप्रासादैः परिवृतमतिप्रांशुकलशं गिरीशप्रासादं व्यरचयदनूनैरनुचरैः ॥ मनाख्यो विख्यातः सकल गुणवान् बीजलसुतस्ततः शिल्पी जातो गुणगणयुतो वीसल इति ॥ २ ॥ अतिप्रशस्तैरलिखत्प्रशस्तिंवर्णैरवर्णेन बहिः कृतैर्यः ॥ श्रीमत्समाधीशमहेश्वरस्यप्रासादतोसौ चिरजीविनोस्तु ॥ ३ ॥ विद्याधरसुतः शिल्पी मनाख्यः सूत्रधारकः ॥ तदात्मजेन वीसेन प्रशस्तिरियमुत्कृता ॥ ४ ॥ रुचिराक्षरमुत्कीर्णा प्रशस्तिरियमुज्वला ॥ लिलेख वीसलः शिल्पी समाधीशप्रसादतः ॥ ५ ॥ संवत् १४८५ वर्षे माघवदि ३ श्रीरस्तु ॥

हरोस्तु रोहनामोना हृव्य कव्य हसेलसे ॥
हसस्य सहतो प्रीतो हरते रहसीरसी ॥ १ ॥ (१)

१९– गोढ़वाड़ इलाकेमें राणपुरके जैन मन्दिरकी प्रशस्ति.

॥ श्री चतुर्मुखजिनयुगादीश्वराय नमः॥ श्रीमद्विक्रमतः संवत् १४९६ संख्य-वर्षे श्रीमेदपाटराजाधिराज श्रीबप्प १ श्रीगुहिल २ भोज ३ शील ४ कालभोज ५ भर्तृभट ६ सिंह ७ महायक ८ राज्ञीसुतयुतस्वसुवर्णतुलातोलकश्रीखुम्माण ९ श्री-मदल्लट १० नरवाहन ११ शक्तिकुमार १२ शुचिवर्म १३ कीर्त्तिवर्म १४ योगराज १५ वैरट १६ वंशपाल १७ वैरिसिंह १८ वीरसिंह १९ श्रीअरिसिंह २० चोडसिंह २१ विक्रमसिंह २२ रणसिंह २३ खेमसिंह २४ सामन्तसिंह २५ कुमारसिंह २६ मथनसिंह २७ पद्मसिंह २८ जैत्रसिंह २९ तेजस्विसिंह ३० समरसिंह ३१ चाहुमान श्रीकीतुक-नृपश्रीअल्लावदीनसुरत्राणजैत्रबप्पवंश्यश्रीभुवनसिंह ३२ सुत श्री जयसिंह ३३ मालवेशगोगादेवजैत्रलक्ष्मसिंह ३४ पुत्र श्रीअजयसिंह ३५ भ्रातृ श्रीअरिसिंह ३६ श्रीहम्मीर ३७ श्रीखेतसिंह ३८ श्रीलक्षाह्वयनरेन्द्र ३९ नंदनसुवर्णतुलादिदानपुण्य-परोपकारादिसारगुणसुरद्रुमविश्रामनंदनश्रीमोकलमहीपति ४० कुलकाननपंचान-नस्यविषमतमाभंगसारंगपुरनागपुरगागरणनराणकाजयमेरुमंडोरमंडलकरबून्दीखाटू-चाटसूजानादिनानामहादुर्गलीलामात्रग्रहणप्रमाणितजितकाशित्वाभिमानस्य नि-

(१) यह श्लोक चित्रकाव्य है, जो इस लेखके ठीक मध्यमें लिखा है, परन्तु इस श्लोकका लेखके श्लोक क्रममें शुमार नहीं किया, इसवास्ते हमने इसको अन्तमें रक्खा है.

जभुजोर्जितसमुपार्जितानेकभद्रगजेन्द्रस्य म्लेच्छमहीपालव्यालचक्रवालविदलन विहंगमेंद्रस्य प्रचंडदोर्दंडखंडिताभिनिवेशनानादेशनरेशभालमालालालितपादारविंदस्य अस्खलितललितलक्ष्मीविलासगोविंदस्य कुनयगहनदहनदवानलायमानप्रतापतापपलायमानसकलबलूलप्रतिकूलक्ष्मापश्वापदवृंदस्य प्रबलपराक्रमाक्रांतढिल्लीमंडलगुर्जरत्रा सुरत्राणदत्तातपत्रप्रथितहिंदुसुरत्राणविरुदस्य सुवर्णसत्रागारस्य षड्दर्शनधर्माधारस्य चतुरंगवाहिनीवाहिनीपारावारस्य कीर्त्तिधर्मप्रजापालन सत्यादिगुणक्रियमाण श्रीरामयुधिष्ठिरादिनरेश्वरानुकारस्य राणाश्री कुम्भकर्ण सर्वोर्वीपतिसार्वभौमस्य ४१ विजयमानराज्ये तस्य प्रसादपात्रेण विनयविवेकधैर्यौदार्यशुभकर्मनिर्मलशीलाद्यद्भुतगुणमणिमयाभरणभासुरगात्रेण श्रीमदहम्मदसुरत्राणदत्तफुरमाणसाधुश्रीगुणराजसंघपतिसाहचर्यकृताश्चर्यकारिदेवालयाद्याडंबरपुरः सरः श्रीशत्रुंजयादितीर्थयात्रेण अजाहरिपिंडरवाटकसालेरादिबहुस्थाननवीनजैनविहारजीर्णोद्धारपदस्थापनाविषमसमयसत्रागारनानाप्रकारपरोपकारश्रीसंघसत्काराद्यगएयपुण्यमहार्थक्रयाणकपूर्यमाणभवार्णवतारणक्षममनुष्यजन्मयानपात्रेण प्राग्वाटवंशावतंस सं० सागरसुत सं० कुरपाल भा० कामलदेपुत्रपरमार्हव सं० धरणाकेन ज्येष्ठभ्रातृ सं० रत्ना भा० रत्नादेपुत्र सं० लाषासंजासोनासालिगस्वभा० सं० धारलदेपुत्रजाझाजावडादिप्रवर्द्धमानसंतानयुतेनराणपुरनगरे राणाश्री कुम्भकर्णनरेन्द्रेण स्वनाम्ना निवेशिततदीयसुप्रसादादेशतस्त्रैलोक्यदीपकाभिधानः श्रीचतुर्मुखयुगादीश्वरविहारकारितः प्रतिष्ठितः श्रीबृहत्तपागछे श्रीजगच्चंद्रसूरि श्रीदेवेन्द्रसूरिसंताने श्रीमत् श्रीदेवसुंदरसूरिपट्टप्रभाकरपरमगुरुसुविहितपुरन्दरगच्छाधिराजश्रीसोमसुंदरसूरिभिः॥ कृतमिदं च सूत्रधारदेपाकस्य अयं च श्रीचतुर्मखविहार आचंद्रार्कं नंदतात् ॥ शुभं भवतु ॥

२०-चित्तौड़के किलेपर शणगारचंवरीके पश्चिम द्वारमें घुसते हुए दाहिनी बाजूके एक स्तम्भमें खुदी हुई प्रशस्ति.

संवत् १५०५ वर्षे राणाश्रीलाखापुत्रराणाश्रीमोकलनंदनराणाश्रीकुम्भकर्ण कोशव्यापारिणा साहकोलापुत्ररत्न भंडारीश्रीवेलाकेनभार्यावील्हणदेवी जयमानभार्यारतनादेपुत्र भं० मूधराज भं० धनराज भं० कुरपालादिपुत्रयुतेन श्रीअष्टापदाह्वः श्रीश्रीश्री शांतिनाथमूलनायकः प्रासादः कारितः श्रीजिनसागरसूरिप्रतिष्ठितः श्री खरतरगच्छे चिरं राजतु श्रीजिनराजसूरिश्रीजिनचन्द्रसूरि श्रीजिनसागरसूरिपट्टांभोजार्कनंदत् श्रीजिनसुन्दरसूरिप्रसादतः शुभं भवतु पं० उदयशीलगणिनंनमिति.

२१-कुम्भलमेरपरके मामादेवके मन्दिरकी प्रशस्तिके चौथे पाषाणका अक्षरान्तर
चतुर्थी पट्टिका.

अर्च्चिभिः किमु सप्तभिः परिवृतः सप्तार्चिरत्रागतः किं वा सप्तभिरेव सप्तिभिरिहायात्सप्तसप्तिर्द्दिव ॥ इत्थं सप्तभिरन्वितः सुतवरैस्तैः शस्त्रपूतैः सह प्राप्ते वुद्धिरभूत्सुपर्वनृपतेः श्रीलक्ष्मसिंहे नृपे ॥ १८० असिर्यस्याराति र्भ्रमरतितरां शीर्षकमले सराङ्गोगादेवोपि हि समधिभूर्मालवभुवः ॥ विजिग्ये येनाजौ निजभुजभुजंगोर्जगरल प्रसारात् सिंहांतः समभवदसौ लक्ष्मनृपतिः ॥ १८१ इति महाराणाश्रीलषमसीवर्णनम् ॥ अथ अरिसिंहवर्णनम् ॥ अभून्नृसिंहप्रतिमोरिसिंहस्तदन्वये भव्यपरंपराढ्ये॥ बिभेद यो वैरिगजेन्द्रकुम्भस्थलीमनूनां नखखड्गघातैः ॥ १८२ पीतवैरिरुधिराद्विपुलांगादुद्गताद्यदसिकृष्णभुजंगात् ॥ अद्भुतं समभवत् सकलाशामंडनं नवयशस्तुहिनाभं ॥ १८३ शशिधवलया कीर्त्यैतीवप्रतापदिवाकरद्युतिमिलितया मन्ये प्रत्याययन्निवभासते ॥ रजतनिचयं दास्येचंचन्महारजतं तया त्यजतु विपुलां चित्ते चिन्तावनीपकमण्डली ॥ १८४ इति अरिसिंहवर्णनम् ॥ अथ महाराणाश्रीहम्मीरवर्णनम् ॥ हम्मीरवीरो रणरंगधीरो वाङ्माधुरीतर्जितकेकिकीरः ॥ धराधवालंकरणैकहीरस्तत्तद्वनीभूपितसिन्धुतीरः ॥ १८५ मन्येभूत्सुरगौरगौः समभवत् कल्पद्रुमः कल्पनातीतोरोहणपर्वतोपि सुधियां नोमानसं रोहति ॥ चिन्ताश्माप जनैर्जडाश्च जडतां धत्तेधिकां भूधवे दानप्रोन्नतचारुपाणिकमले कर्णादयः के पुनः ॥ १८६ यदर्पितैरर्थिजनस्तुरंगमैरनर्घ्यहेमांगदहारकुंडलैः ॥ अलंकृतः कल्पतरौ कृताश्रयं सुराधिराजं हसतीव वैभवात् ॥ १८७ कटकतुरगहेषाविश्रुतेस्त्यक्तधैर्ये व्रजति च रघुभूपे कांदिशीके पलाय्य ॥ अहह विषमधाटीप्रौढपंचाननोसावरिपुरमतिदुर्गं चेलवाटं विजिग्ये ॥ १८८ ईश्वराराधने दाने वीरश्रीवरणे रणे ॥ कदाचिन्नैव विश्रांतः करो हम्मीरभूपतेः ॥ १८९ स क्षेत्रसिंहे तनये निधाय तेजः स्वकीयं त्रिदिवं जगाम ॥ वन्हौ यथार्कोस्तमयं हि भावो महात्मनामत्रनिसर्गसिद्धः ॥ १९० इति महाराणाश्रीहम्मीरवर्णनम् ॥ अथ महाराणाश्रीक्षेत्रसिंहवर्णनम् ॥ ततोरिभूमीशमहेभसिंहः स्वनादवित्रासितमत्तसिंहः ॥ संभावनामोदितभृत्यसिंहः शशास भूमिं किल क्षेत्रसिंहः ॥ १९१ येनानर्गलभल्लदीर्णहृदया श्रीचित्रकूटांतिके तत्तत्सैनिकघोरवीराननिदप्रध्वस्तधैर्योदया ॥ मन्ये यावनवाहिनी निजपरित्राणस्य हेतोरलं भूनिक्षेपमिषेण भीपरवशा पातालमूलं ययौ ॥ १९२ संग्रामाजिरसीम्नि शौर्यविलसद्दोर्दंडहेलोल्लसच्चापप्रोद्गतबाणवृष्टिशमितारातिप्रतापानलः ॥ वीरश्रीरणमल्लमूर्जितशकक्ष्मापालगर्वांतकं

स्फूर्जद्गुर्जरमण्डलेश्वरमसौ कारागृहेवीवसत् ॥ १९३ व्यर्थोनु नूनं महदुद्यमो यदि चेत्थं वचस्तत्सफलं करिष्णुः ॥ शोध्यां पुरीमातलमूलधारं स्वदेलवाटं पुरमानिनाय ॥ १९४ वीरस्य यस्य समरेधिकरं कृपाणीमुत्कंचुकामरिभटानिलबद्धतृष्णां ॥ दृष्ट्वा भुजंगयुवतीमिव वैरिवर्गास्त्रासात्समुद्रमपि गोः पदतामनैषुः ॥ १९५ माद्यन्माद्यन्महेभप्रखरकरहतिक्षिप्तराजन्ययूथो यं खानः पत्तनेशोदफर इति समासाद्य कुण्ठी बभूव ॥ सोयं मल्लोरणादिः शककुलवनितादत्तवैधव्यदीक्षः कारागारे यदिये नृपतिशतयुते संस्तरं नापि लेभे ॥ १९६ शश्वच्चलवाजिवीचितरलं सच्छत्रतिम्याकुलं माद्यत्कुंभिसपक्षखेलदचलं सत्पत्तिमीलज्जलं ॥ रथ्याग्राहचलाचलं स्फुरदमीसाहांबुनाथोज्वलं यो रोषादपिबच्छकार्णवमगस्त्यंतं समूहेखिलं ॥ १९७ हाडावटीदेशपतीन्स जित्वा तन्मण्डलं चात्मवशीचकार ॥ तदत्र चित्रं खलु यत्कान्तं तदेव तेषामिह यो बभंज ॥ १९८ यात्रोत्तुगतुरंगचंचलखुराघातोत्थितै रेणुभिः सेहे यस्य न लुप्तरश्मिपटलव्याजात्प्रतापं रविः ॥ तच्चित्रं किमुसादलादिकनृपा यत्प्राकृतास्तत्रसुस्त्यक्त्वा स्वानि पुराणि कस्तु बलिनां सूक्ष्मो गुरुर्वा पुरः ॥ १९९ शस्त्राशस्त्रिहताजिलंपटभटव्रातोच्छलच्छोणितछन्नप्रोद्गतपांशुपुंजविसरत्प्रादुर्भवत्कर्दमं ॥ त्रस्तः सामिहतो रणेशकपतिर्यस्मात्तथा मालवक्ष्मापोद्यापियथा भयेन चकितः स्वप्नेपि तं पश्यति ॥ २०० वारंवारमनेकवारणघटासंघट्टवित्रासितानेकक्ष्मापतिवीरमालवशकाधीशैकगर्वांतकः ॥ संग्रामाजिरसंगतारिनगरीलुंटाकबाहुर्नृपः कारागारनिवासिनो व्यरचयद्योगुर्जरान् भूमिपान् ॥ २०१ अमीसाहिरग्राहि येनाहिनेव स्फुरद्भेक एकांगवीरव्रतेन ॥ जगत्त्राणकृद्यस्य पाणौ कृपाणः प्रसिद्धोभवद्भूपतिः खेतराणः ॥ २०२ गुरोः प्रसादादधिगम्य विद्यामष्टांगयोगस्थिरचित्तवृत्तिः ॥ ब्रह्मैकतानः परमात्मभूयं जगाम संसारनिवृत्तबुद्धिः ॥ २०३ इति महाराणाश्रीक्षेत्रसिंहवर्णनम् ॥ अथ महाराणाश्रीलक्षसेनवर्णनम् ॥ सहस्रनेत्रादिव वैजयंतो महासमुद्रादिव शीतरश्मिः ॥ मुनेः पुलस्त्यादिव वित्तनाथो बभूव तस्मादिव लक्षसेनः ॥ २०४ यक्षेशः किमयं नसोन्यवशगः किं धर्मसूर्नानुजः स्फीतः सोयमयं बलिस्त्रिपदिकामात्रप्रदः किं नसः ॥ इत्थं तुल्यसुवर्णदानसमये यः पारिशेष्यान्मितो विद्वद्भिः स्वभुजार्जिताधिकधनः श्रीलक्षसिंहो नृपः ॥ २०५ जंबूद्रवः किं परिलोड्य राज्ञा नीतः सुमेरुर्नुसमाहतो वा ॥ इत्यूहिरे तुल्यसुवर्णराशिमुच्चैरवेक्ष्यास्य वनीपकौघाः ॥ २०६ कीनाशपाशान् सकलानपास्थत् यस्त्रिस्थलीमोचनतः शकेभ्यः ॥ तुलादिदानातिभरव्यतारील्लक्ष्याख्यभूपो निहतः प्रतीपः ॥ २०७ रविरिव नलिनीं निपातुषारान् विधुरिव यामवती महांधकारान् ॥ पवनइव

घनान्नवार्कभासं यवनकराच्च गयां मुमोचयद्यः ॥ २०८ संलोपादिव विप्रवृत्ति-मचलां दास्यादिव ब्राह्मणीं गां पंकादिव मोचयन् खलु गयां बंधान्महीवल्लभः ॥ आगोपालकभूमिपालमसकृच्चक्रेखिलान् याचकान् दत्वा मुक्तिमहामृतं पितृगणा-नानंदयच्चापरं ॥ २०९ न कांचनतुलामसौ बहुविधाय मंदादरो न कांचनतुलां परैः सममवाप्तुमैच्छत् क्वचित् ॥ गयामपि विमोच्य तां तुरगयानहेमादिभि श्चकार पृथिवीश्वरः किमु गयां स्वकीर्तिं पुनः ॥ २१० अमोचयद्यवनकराद्गयामयं तुलां व्यधा दमितपराक्रमोमिताः ॥ अपूजयत्कनकभरैर्महीसुरानकारयत् सुरनिलयान्महोन्नतान् ॥ २११ मेदानाराद्वल्लसादुल्लसत्तद्वैरीधीरध्यानविध्वस्तधैर्यान् ॥ कारं कारं यो ग्रहीदु-ग्रतेजा दग्धारातिर्वर्द्धनाख्यं गिरीन्द्रं ॥ २१२ हर्य्यक्षयवल्लक्ष्यनरेश्वरस्य वृत्तिप्र-वृत्तिस्वभुजार्जितेव ॥ ये भुंजते चान्यबलोपपन्नं ग्रासं शृगाला इव भूमिपालाः ॥ २१३ यदर्पितैरर्थिगणोमहद्भिर्ग्रामैरनंतैरभजन्नृपत्वं ॥ तदंकितैः शासनपत्रपूगै-रनारतं पुस्तकवानिवासीत् ॥ २१४ विमोचितान् बहुविधघोरसंसृतेर्विलोकितुं जननिचयानिवागमत्॥शिवांतिकं शिवचरितः शिवाधवक्रमांबुजार्चनपरिहीणकलमषः ॥ २१५ इति श्रीमहाराणा श्रीलक्षसेन वर्णनम् ॥ अथ महाराजाधिराजमहाराणा श्रीमृगांकमोकलेन्द्रवर्णनम् ॥ अर्णोधेरिवपारिजातकतरुश्चंडद्युतेर्दण्डभृद्यद्वत्स-र्वसुपर्वणामधिपतेरासीज्जयंतो यथा ॥ ईशस्येव षडाननो रघुपतेर्यद्वत्कुशो भूपते रस्यासीदतुलप्रतापतपनः श्रीमोकलेन्द्रोंगजः ॥ २१६ यो विप्रानमितान् हलिक-लयतः काश्यैन वृत्तेरलं वेदं सांगमपाठयत् कलिगलग्रस्ते धरित्रीतले ॥ दैत्यान् मीन-इवापरः श्रुतवतामानंदकंदः कलाकौशल्यव्रततीनवीनजलदो भूमण्डलाखण्डलः ॥ २१७ दृष्ट्वेनं रचयन्तमद्भुततुलाहेम्नः सदा संपतद्यागाज्याहुतितर्पितो व्यचर-यन्मन्येतुलोपायनम् ॥ तत्पूर्त्यै कनकाचलंकरमहारज्जूच चेलोपमौ सूर्याचंद्रमसौ हिमाद्रिमकरोद्दंडं सुरग्रामणीः ॥ २१८ एतन्मुक्तगयाविमुक्तपितृभिः प्रोल्लंघ्यमानां हठाद्दृष्ट्वा संयमिनीं लिखत्यनुशयादित्थं तु भूमिं यमः ॥ किं सामर्थ्यमपोहितं खलु कलेर्याताः क्व कामादयो युक्तं याति न कोधिकारविरतौ वक्रेधिकां कालतां ॥ २१९ नलः किमैलः किमु मन्मथोवा किमाश्विनेयद्वितयादिहैकः ॥ कलंकमुक्तः किम यामिनीशस्त्वित्थं जनो यत्र वितर्कमेति ॥ २२० आलोड्याशुसपादलक्षमखिलं जालंधरान् कंपयन् ढिल्लीं शंकितनायकां व्यचरयन्नादाय शाकंभरीं ॥ पीरोजं समहंमदंशरशतैरापास्य यः प्रोल्लसन् कुंतव्रातनिपातदीर्णहृदयास्तस्यावधीद्दंतिनः ॥ २२१ नृपः समाधीश्वरसिद्धतेजाः समाधिभाजां परमं रहस्यं ॥ आराध्य तस्यालयमादधार श्रीचित्रकूटे मां[illegible]कं ॥ २२२ तीर्थमत्र ऋणमोचनं

महत्पापमोचनमपि क्षितीश्वरः ॥ चारुकुंडमपि सेतुमण्डनं मण्डनं त्रिजगतामपि व्यधात् ॥ २२३ यः सुधांशुमुकुटप्रियांगणे वाहनं मृगपतिं मनोरमं ॥ निर्मितं सकलधातुभाक्तिभिः पीठरक्षणविधाविव व्यधात् ॥ २२४ पक्षिराजमपि चक्रपाणये हेमनिर्मितमसौ दधौ नृपः ॥ येन नीलजलदच्छाविर्विभुश्चंचलायुतइवाधिकं बभौ ॥ २२५ जगति विश्रुतिमाप समोकलः प्रतिभटक्षितिपैरसमोकलः ॥ रविसुराधिपशेपसमोकलप्रतिनिधिर्भुवनेपि समोकलः ॥ २२६ स नृवरो नृवरोचितवेषभृत् पवनभृत्पवनोदितवैभवः ॥ अवनतो वनतोपि महत्तरे सकलमोकलमोकलमोकलः ॥ २२७ दण्डश्छत्रेषु भीतिर्विहित विहतितो बंधनं सारणीषु प्रायः सारीषु हिंसारतितातिषु कटाक्षांगुलीतर्जनाद्यं ॥ भेदः कोशेंबुजानां हतिरपि मनसश्चारुगेहेषु नित्य यस्मिन् शासत्यनर्घ्येभवदिह वसुधाराजि राजन्वतीत्थं ॥ २२८ व्यस्तैराजननंदिनं दिनमधि प्रत्तैर्दधीच्यादिभिः दानैरेभिरलंकृतानुकृतिकव्यापारपारंगमैः ॥ मत्वेतीव निराकृतोद्य वसुधानाथोरुदानक्रमः श्रीमानत्र समस्तदाननिलय ब्रह्माण्डदानं व्यधात् ॥ २२९ अमुष्मादुद्भूतः सततमनुभूतार्थनिगमः क्षमः प्रौढक्षोणीपरिवृढदृढोन्मादहातिषु ॥ चरित्रेण स्वीयान् वयमति पवित्रेण कलयन् कलौ धर्माधारो गुरुगरिमभूर्मोकलविभुः ॥ २३० अंगाः संप्राप्तभंगाः स्मृतवनविटपाः कामरूपा विरूपा वंगागंगैकसंगा गतविरुदमदा जातसादा निषादाः ॥ चीना संग्रामदीनाः स्खलदसिधनुषो भीतिशुष्कास्तुरुष्का भूमीपृष्ठे गरिष्ठे स्फुरति महिमनि क्ष्मापतेर्मोकलस्य ॥ २३१ तापं तापं बाहुशौर्याग्निनासौ क्षेपं क्षेपं वैरिरक्तोदकौघे ॥ नायं नायं दार्ढ्यमेवं कृपाणी भेदं भेदं भानुबिंबं विवेश ॥ २३२ इति महाराजाधिराज महाराणा श्रीमृगांकमोकलेन्द्रवर्णनम् ॥ अथ महाराजाधिराज रायराया राणेराय महाराणा श्री कुम्भकर्णवर्णनम् ॥ मूलं धर्मतरोः फलं श्रुतवतां पुण्यस्य गेहं श्रियामाधारः सुगुणोत्करस्य जनिभूः सत्यस्य धामौजसः ॥ धैर्यस्यापि परावधिः प्रतिनिधिः कल्पद्रुमस्याखिलां वीरस्तत्तनयः प्रशास्ति जगतीं श्रीकुम्भकर्णो नृपः ॥ २३३ समस्तदिग्मण्डललब्धवर्णः स्फुरत्प्रतापाधरितार्कवर्णः ॥ स्वदानभूम्ना जितभोजकर्णस्ततोमहीं रक्षति कुम्भकर्णः ॥ २३४ उपास्य जन्मत्रितये गजास्यकनीयसोमातरमेकशक्तेः ॥ श्रीकुम्भकर्णोयमलंभि साध्व्या सौभाग्यदेव्या तनयस्त्रिशक्तिः ॥ २३५ अतः क्षितिभुजां मणेर्निजकुलस्य चूडामणिः प्रसिद्धगुणसभ्रमो जगति कुम्भनामा नृपः ॥ प्रवीरमदभंजनः प्रमुदितः प्रजारंजनादजायत निजायतेक्षणजितेन्दिरामान्दिरः ॥ २३६ वेदानुद्धृत्य पश्चाद्ध्रुवमपि भुजयोस्तां बिभर्त्ति क्षिणोति क्षुद्रान् बध्वा वलिद्विड्ढलमहिततरक्षत्रमुच्छाद्य हत्वा ॥ रक्षोरूपारिमुर्वीभरनृपशमनः

सुक्षमी म्लेच्छघाती जीयात् श्रीकुम्भकर्णो दशविधकृतिकृत् श्रीपतिः कोपि नव्यः॥ २३७ लक्ष्मीशानंदकत्वात् त्रिभुवनरमणीचित्तसंमोहकत्वाल्लावण्यावासभूत्वाद्वपुरमलतया कुम्भकर्णो महीन्द्रः ॥ कामं कामोस्तु सोस्त्री कुरुत इह परं स्त्रीजनं जेतुकामः संग्रामेनेन साक्षात्क्रियत इति नवं स्त्रीजनो स्त्रीजनोपि ॥ २३८ विभ्राजते सकलभूवलयैकवीरः श्रीमेदपाटवसुधोद्धरणैकधीरः ॥ यस्यैकलिंगनिजसेवकइत्युदारा कीर्त्तिप्रशस्तिरचलां सुरभीकरोति॥२२९ एकलिंगनिलयं च खंडितं प्रोन्नतोरणलसन्मणिचक्रं ॥ भानुबिंबमिलितोच्चपताकं सुन्दरं पुनरकारयन्नृपः ॥ २४० माभूत् क्षुभ्यदतच्छदुग्धजलधिस्वच्छोच्छलद्वीचिरुक्तत्सत्कृतपूर्वपूरुषयशस्तत्संकुचद्भूत्तिमत् ॥ इत्थं चारुविचार्य कुम्भनृपतिस्तानेकलिंगे व्यधात् रम्यान् मंडपहेमदंडकलशान् त्रैलोक्यशोभातिगान् ॥ २४१ निःशंकः काव्यसंदर्भे रणारंभे च निर्भयः ॥ विख्यातः कुंभकर्णोयमिति निः शंकनिर्भयः ॥ २४२ व्रजति विजययात्रां यत्र वित्रस्तशत्रौ हयखुरखरघातोत्खातधूलीनिलीनं गगनतलमशेषं वीक्ष्य सजातमोहो नयति रविरथाश्वान् सारथिः साहसिक्यात् ॥२४३ श्रीचित्रकूटविभुरयमुन्नततरवारिशातितारातिः ॥ गिरिजाचरणसरोरुहरोलंबः कुंभभूपतिर्जयति ॥ २४४ विख्यातकीर्त्तिगुहदत्तखुमाणशालिवाहाजयप्रभृतिभूपतिवंशरत्नं॥ श्रीक्षेत्रलक्षनृपमोकलभूमिपालासिंहासनं सफलयत्यथ कुम्भकर्णः ॥ ४४५ या नारदीयनगरावनिनायकस्य नार्या निरन्तरमचीकरदत्रदास्यं॥ तां कुम्भकर्णनृपतेरिह कः सहेत बाणावलीमसमसंगरसञ्चरिष्णोः ॥ २४६ योगिनीपुरमजेयमप्यसौयोगिनीचरणकिंकरो नृपः ॥ कुंतलाकलितवैरिसुंदरीविभ्रमोरमितविक्रमोग्रहीत् ॥२४७ अरिंदमः स्वाङ्घ्रिसरोजलग्नं विशोध्य शोध्याधिपतिप्रतीपं ॥ अरुंतुदं कंटकमिद्धतेजा भंक्त्वाक्षिपद्भूमितलेसिसूच्या ॥ २४८ येन वैरिकुलं हत्वा मंडोवरपुरग्रहे ॥ अ.॥ शान्तिरोषाग्निर्नागरीनयनाम्बुभिः २४९ विगृह्य हम्मीरपुरं शरोत्करैर्निगृह्य तस्मिन् रणवीरविक्रमं॥ पर्यग्रहीदंबुजमंजुलोचना महीमहेन्द्रो नरपालकन्यकाः ॥ २५० नानादिग्भ्यो राजकन्याः समेत्य क्षोणीपालं कुम्भकर्णं श्रयते ॥ सत्यं रत्नं जायते सागरादौ युक्तं विष्णोर्वक्षएवास्य धाम ॥ २५१ आर्ताः काश्चिद्भटेन प्रतिनृपतिभटान् पडायित्वा च काश्चित् काश्चिद्राजन्यवर्यैर्धनगजतुरगैः सार्द्धमानीय दत्ताः ॥ अन्याः प्रोढा विधाटीबलकृतहरणाः प्रत्यहं राजकन्या नव्या नव्या महीभृत्सुविधिपरिणयेष्वेष कामो नवीनः ॥ २५२ स धन्यो धान्यनगरमामूलादुदमूलयत् ॥ पुरारिविक्रमो यागपुरं पुरमिवाजयत् ॥ २५३ ज्वालावलिर्वलयितां व्यतनोघवालीं मन्नीरवीरः दवीवहदष नीरं ॥ यो वर्द्धमानगिरिमा तु विजित्य तस्मिन्मेदानमद्र-

द्वविधीनधाक्षीत् ॥ २५४ जवालीदवालीशिखावलिज्वाली समालीढभालीकराली-
प्रताली ॥ मनीरांधकारं क्षणाद्यस्य संख्ये क्षिपक्षेप्यनर्थैर्नयद्भूपदीपैः ॥ २५५
जनकाचलमुच्चशेखरं बलवन्मालवनाथमस्तके ॥ प्रवरं गिरिदुर्गमुद्धतश्चरणं वाममिव
न्यधादयं ॥ २५६ महोच्चजनकाचले निखिलमालवक्ष्मापतेर्गले पदमिव न्यधादमित-
विक्रमो भूपतिः ॥ सरांसि जयवर्द्धते कृतपुरेपि यो वर्द्धने महामहिमशेखरे विपुलवप्रमु-
ग्रद्युतिः ॥ २५७ जनकाचलमग्रहीदलं महती चंपवतीमतीतपत् ॥ गिरिसुन्दरखो-
लखण्डनावनिवज्रायुधएष भूपतिः ॥ २५८ प्रत्यर्थिपार्थिवपराजयजन्महेतुर्वृन्दावती-
पुरमदीदहदेष वीरः ॥ तद्वर्गराटगिरिदुर्गमपि क्षणेन संक्षोभमाप यदपारपराक्रमेण
॥ २५९ मल्लारण्यपुरं वरेण्यमनलज्वालावलीढं व्यधाद्वीरः सिंहपुरीमबीभरदसिप्र-
ध्वस्तवैरिव्रजैः यत्नं रत्नपुरप्रभंजनविधावाधाय धीमानतो नाथं नायमनेकराजनिक-
रान् कारागृहेवीवसत् ॥ २६० पदातीनां पादलक्षं सपादलक्षनीवृतं ॥ कृत्वा
मल्लारणवीरो रणस्तंभं तथाजयत् ॥ २६१ आमदाद्रिदलनेन दारुणः कोटडा-
कलहकेलिकेसरी ॥ कुम्भकर्णनृपतिर्बबावदो धूलनोद्धतभुजो विराजते ॥ २६२
नम्रानेकनृपालमौलिनिकरप्रत्युप्तहीरांकुरश्रेणीरश्मिमिलन्नखद्युतिभरः शत्रून् रण-
प्रांगणे ॥ दीर्घादोलितबाहुदण्ड.विलसत्कोदण्डदण्डोल्लसद्बाणास्तान्विरचय्य मण्ड-
लकरं दुर्गं क्षणेनाजयत् ॥ २६३ जित्वा देशमनेकदुर्गविषमं हाडावटीं हेलया तन्ना-
थान् करदान्विधाय च जयस्तम्भानुदस्तंभयत् ॥ दुर्गं गोपुरमत्र षट्पुरमपि प्रौढां-
च वृन्दावतीं श्रीमन्मंडलदुर्गमुच्चविलसच्छालां विशालांपुरीं ॥ २६४ उत्खातमूल
सलिलैः प्रभंजन इव द्रुमं ॥ विशालनगरं राजा समूलमुदमूलयत् ॥ २६५ तन्नागरीन-
यननीरतरंगिणीनामंगीकृतं किमु समुत्तरणं तुरंगैः ॥ श्रीकुम्भकर्णनृपतिः प्रविती-
र्णभंगैरालोडयद्गिरिपुरं यदमीभिरुग्रः ॥ २६६ यदीयगर्जद्रणतूर्यघोषसिंहस्वना-
कर्णननष्टशौर्यः ॥ विहाय दुर्गं सहसा पलायांचकार गोपालशृगालबालः ॥ २६७
त्यक्ता दीना दीनदीनाधिनाथा दीना बद्धा येन सारंगपुर्यां ॥ योषाः प्रौढाः पारसी-
काधिपानां ताः संख्यातुं नैव शक्नोति कोपि ॥ २६८ महोमदो युक्ततरो न वैषः
स्वस्वामिघातेन धनार्जनात्ते ॥ इतीव सारंगपुरं बिलोड्य महंमदं त्याजितवान्
महंमदं ॥ २६९ गर्जन् म्लेच्छतिमिंगिलाकुलतरं रंगत्तरंगोर्मिमन् मातंगोद्धतनक्र-
चक्रममितं प्राकारवेलाचलं ॥ एतद्दग्धपुराग्निवाडवमसौ यन्मालवांभोनिधिं क्षोणीशः
पिबातिस्मखड्गचुलकैस्तस्मादगस्त्यः स्फुटं ॥ २७० संवत् १५१७ वर्षे शाके
१३८२ प्रवर्त्तमाने मार्ग वदि ५ सोमे प्रशस्तिः ॥

२२-श्रीएकलिंगजीके निजमन्दिरमें दक्षिणद्वारके सामनेकी दीवारमें लगी हुई प्रशस्ति.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ आनन्दोद्दाममूर्त्तिस्त्रिभुवनजननस्थित्यपायोप्तकीर्त्तिर्विध्यानुध्यातधामा निखिलसुरनरैरेकलिंगोरुनामा ॥ रुद्रो रौद्रारिवीरप्रकरतरुवरव्यासहव्यासमुद्रो माद्यन्मायोर्द्धकायः स्पृहयतु जगदुत्साहसंवर्द्धनाय ॥ १ ॥ यदागमविदो विदां पदममंदमाचक्षते यमिंदुकृतशेखरं हरमतीतविश्वापदं ॥ यथामतिमहोदयं तमिह काव्यमातन्वतां शिवं कविकलावतां प्रमथनाथमभ्यर्चये ॥ २ ॥ उत्साहं सुन्दरी वो दिशतु पशुपतेर्यत्कृपापार्वणेंदोरुद्योतः संचितांतस्तिमिरभरमधिश्रद्दधानं धुनोति ॥ दिव्यं नव्यप्रमोदं कविकुमुदवनं निःप्रदोषं च तन्वन्काव्यांभोधीनधीतिक्षितिषु नवरस श्रीयुजश्चकरीति ॥ ३ ॥ स्फुटं यस्याः पारिप्लवनयनकोणैकशरणः कपालिक्रोधाग्निज्वलितवपुरौद्धत्यमधृत ॥ मनोभूरप्यस्या हिमगिरिसुतायास्सकरुणः कटाक्षव्याक्षेपो दिशतु कवितां नः परिणताम् ॥ ४ ॥ क्वासौ मत्कवितोपिति क्व महिमा खुम्माणभूमीभुजामेवं सत्यपि राजमल्लनृपतेर्जागर्त्ति काचित्कृपा ॥ यामासाद्य महेश्वरः कविगिरां मार्गे चराम्यर्भकोप्युग्रे व्यग्रमुखस्य कंटककुलस्याधाय मौलौ पदं ॥ ५ ॥ अस्ति स्वस्तिमती सुपर्वजगती सौंदर्यसर्वस्वभूर्भूरि श्रीर्महतीमहो विदधती श्रीमेदपाटावनिः ॥ भूवृन्दारकवृन्दमन्दिरशिरः स्फुर्जत्पताकोच्छलच्चेलांदोलनवीज्यमानतरणिर्विभ्राजिराजन्वती ॥ ६ ॥ श्रीमेदपाटवसुधा वसुधाधिपत्यचिन्हं बभार मुकुटं किल चित्रकूटं ॥ नोचेदियं महिमपास्य महीमहीपैः रन्याभयं कथमनाथत नाथमस्याः ॥ ७ ॥ बाप्पान्ववायधर्णारमणप्रभावादुर्वीमिमां नहि परः परिबोभवीति ॥ एवं गणः परिगणय्य शिवस्य कोपि श्रीचित्रकूटशिखरे नगरं व्यधत्त ॥ ८ ॥ यत्र निर्भरविहारिशंबराडंबरोच्छलदमंदबिंदवः ॥ अंबरं सुरसरिन्निरंतरं चक्रुरक्रमचलाश्चतुर्दिशः ॥ ९ ॥ नेह मन्दिरमधीरमीक्षते धीरमंदिरमनिंदिरं न च ॥ नेंदिरा वसति दानवर्जिता नासति स्फुरति दानकल्पना ॥ १० ॥ एकलिंगशिवदत्तवैभवैस्तत्र भूमिरमणैरभूयत ॥ यद्गुणानणुमणीगणः कविक्ष्माभुजां भवति कंठभूषणं ॥ ११ ॥ श्रीमेदपाटभुवि नागह्रदे पुरेभूद्बाप्पोद्विजः शिवपदार्पितचित्तवृत्तिः ॥ यत्कीर्तिकेतककिरन्मकरन्दबिन्दुरिन्दुः प्रचंडरुचिरेषचयत्प्रतापः ॥ १२ ॥ आनंदसुन्दरमनिंदिरमप्युदारमिंदीवरद्युतिवगुंठितकंठपीठं ॥ श्रीमत्त्रिकूटगिरिमंदिरमारराध हारीतराशिरिह शंकरमेकलिंगं ॥ १३ ॥ भक्त्या तपः प्रगुणया प्रससाद शंभुरेतस्य बाधितमदाददतुच्छमच्छं ॥ संवर्द्धमानपरमर्द्धिरदः प्रभावादन्वग्रहीत् स च मुनिस्तमिह

द्विजेन्द्रम् ॥ १४ ॥ हारीतराशिरभवद्गुरुरस्य साक्षादाराध्य शंभुमभजत्परमं मुदं यः ॥ आशास्यतेशकृपया मुनिना च तेन वंशेस्य निर्जितविरुद्धमधीश्वरत्वं ॥ १५ ॥ हारीतराशिवचनाद्वरमिंदुमौलेरासाद्य स द्विजवरो नृपतिर्बभूव पर्य्यग्रहीन्नृपसुताः शतशः स्वशक्त्याजैषीच्च राजकमिलां सकलां बुभोज ॥ १६ ॥ दत्वा महीमच्छगुणाय सूनवे नवेंदुमौलिं हृदि भावयन्नृपः ॥ जगाम बाप्पः परमेश्वरं महो महोदयं योगयुजामसंशयं ॥ १७ ॥ कति कति न बभूवुर्भोजखुम्माणमुख्या रणभरनिरपाये बाप्पभूपान्ववाये ॥ तदपि सदुपनिता मंदसंपत्समूहः समभवदरिसिंहः केवलं वीतमोहः ॥ १८ ॥ चित्रकूटगिरिदुर्गरक्षणे सः क्षणेन विचरन् महारणे ॥ जीवितं परिजहार नोर्ज्जितं वीरवर्त्मनि समार्ज्जितं यशः ॥ १९ ॥ नरपतिररिसिंहः पारसीकैः समीकं यदयमभयचित्तश्चित्रकूटे चकार ॥ असुकुसुमसमूहैरेनमानर्च्च चासाविति हितरतिरेतद्वंशजान्नो जहाति ॥ २० ॥ तदनु तदनुभावः शात्रवारण्यदावः कुसुमविशिखमूर्त्तिर्विश्वविस्फारकीर्त्तिः ॥ अमितिसमितिशूरस्तोपितातिज्ञपूरस्समजनि जयशाली श्रीहमीरांशुमाली ॥ २१ ॥ केलिवाटपुटभेदनादटत् कोटिवाटकटकैरवीवटत् ॥ चेलवाटमटवीघटोत्कटं श्रीहमीरधरणीपुरंदरः ॥ २२ ॥ स्फुरद्धाटीधावत्तुरगखुरविक्षुण्णधरणीसमुन्मीलत्पांशुप्रतिहतपथे भास्कररथे ॥ हमीरक्षोणींद्रो विधृतरणमुद्रो रघुनृपं रटज्झिल्लीपल्लीतटपटुकुटीरं व्यरचयत् ॥ २३ ॥ बलिं कर्णं पार्थं सुरतरुवरं रोहणगिरिं धनेशं स्वर्धेनुं जनिमनुविनिर्म्माय जगतां ॥ हमीरं निर्मित्सुर्घनकनकदानोन्नतकरं रणे धीरं मन्ये विधिरधिकमभ्यासमधृत ॥ २४ ॥ चलद्दलवलज्जलं तुरगनक्रचक्राकुलं महागजगिरिव्रजं प्रचुरवीररत्नस्रजं ॥ इलाचलसमुद्भवं समितिजैत्रकर्णार्णवं शुशोष मुनिपुंगवः किल हमीरभूमीधवः ॥ २५ ॥ शरीरराज्यसंभारमसारं भावयन्नृपः ॥ हमीरः शिवपूजार्थं सिंहवल्लीपुरं ददौ ॥ २६ ॥ शशिखण्डमण्डनमखण्डशासनं भवभारभीरुरुपयातयातन ॥ स्थिरमैश्वरं जिगमिषुर्विनश्वरं वपुरुत्ससर्ज स हमीरभूधरः ॥ २७ ॥ क्षेत्रं क्षात्रस्य नेत्रं नयविनयवतो राजवृत्तस्य गात्रं धर्मस्यातोमहीपान्निखिलनृपकलाकौशलानां च पात्रं ॥ जैत्रं हम्मीरवंशे विधुरवनिभुजां मित्रमर्थिव्रजानामासीदासिंधुवन्धुद्धृतनृपतितनुः क्षेत्रसिंहः क्षितीशः ॥ २८ ॥ संग्रामोद्धुरविद्विषोद्धतशिखाशामित्रमंत्रोज्वलैरभ्युक्ष्य क्षणलक्षितार्थचरितः प्रौढासिधाराजलैः ॥ योमीसाहिमहाहिगर्वगरलं मूलादवादीदहत् सक्षत्रक्षितिभृत्प्रभूतविभवः श्रीचित्रकूटेभवत् ॥ २९ ॥ प्राकारमेलमभिभूय विधूय वीसनादाय कोशमखिलं खलु खेतसिंहः ॥ कारांधकारमनयद्रणमल्लभूपमेतन्महीमकृत तत्सुतसात्प्रसह्यः ॥ ३० ॥ दंडाखंडितचंडमंडलक-

रप्राचीनमाचूर्णयत् तन्मध्योद्यतधीरयोधनिधनं निर्म्माय निर्म्मायधीः॥ हाडामण्डलमुंडखंडनधृतस्फूर्जत्कबन्धोद्धुरं कृत्वा संगरमात्मसाद्वसुमतीं श्रीक्षेत्रसिंहोव्यधात् ॥ ३१ ॥ ग्रामं – – – – – पनवाडपुरं च खेतनरनाथः ॥ सततसपर्यासंभृति हेतोर्गिरिजागिरीशयोरदिशत् ॥ ३२ ॥ इष्टापूर्तैरिष्टदेवानयाक्षीन्नानाद्रव्यैर्विज्ञदैन्यान्यधाक्षीत् ॥ भारं भूमेश्चांगजे योजयित्वा शैवं तेजः क्षेत्रवर्मा विवेश ॥ ३३ ॥ श्रीक्षेत्राक्षितिपे पुरंदरपुरीसाम्राज्यमासेदुषि क्षोणीं लक्षयनृपोभिनव्ययुवतीं प्रीत्या बुभोज क्रमात् ॥ मंदं मंदमुदाजहार मधुरं विश्रंभमभ्यानयन्नक्रूरं करमादधे न परुषं चक्रे हृदा पीडनं ॥ ३४ ॥ जोगादुर्गाधिराजं समरभुवि पराभूय लक्षक्षितींद्रः कन्यारत्नान्यहार्पित्सहगजतुरगैर्यौवराज्यं प्रपन्नः ॥ प्रत्यूहव्यूहमोहं प्रणिधिभिरवधूयाखिलं राजतन्त्रे निर्व्याजं जागरूको हरचरणरतः पित्र्यराज्यं बुभोज ॥३५॥ भूवृन्दारकवृन्दसादकृत यल्लक्षो महीमंडलं मन्ये तन्महिमानमीरितुमना ब्रह्मापि जिह्मायते ॥ दंतिव्राततियत्क्वचित्क्वचिदजह्वाजिव्रजत्यंजसा क्वापि स्वर्णाति रत्नाति क्वचिदिलां दोलद्दुकूलत्यपि ॥ ३६ ॥ लक्षोबलक्षकीर्त्तिश्चीरुवनगरं व्यतीतरद्रुचिरं ॥ चिरवरिवस्यासंभृतिसंपत्तावेकलिंगस्य ॥ ३७ ॥ गयातीर्थव्यर्थीकृतकथपुराणस्मृतिपथं शकैः क्रूरालोकैः करकटकनिर्यंत्रणमधात् ॥ मुमोचदं भित्वा घनकनकटंकैर्भवभुजां सह प्रत्यावृत्यानिगडमिह लक्षक्षितिपतिः ॥ ३८ ॥ लक्षक्षोणिपतिर्द्विजाय विदुषे झोटिंगनाम्ने ददौ ग्रामं पिप्पलिकामुदारविधिना राहूपरुद्धे रवौ ॥ तद्वत् भट्टधनेश्वराय रुचिरं तं पंचदेवालयं प्रादाद्धर्ममतिर्जलेश्वरदिशि श्रीचित्रकूटाचलात् ॥३९॥लक्षं सुवर्णानि ददौ द्विजेभ्यो लक्षस्तुलादानविधानदक्षः ॥ प्रमाणमेतद्विधिरित्यतोसा जवेन सायुज्यसुखं सिशेवे ॥ ४० ॥ नालं कलिः प्रभवितुं भवितुं न चैनो यस्मिन्प्रशासति महीं महितप्रभावे ॥ श्रीमोकलः समुदितो भुवि लक्षभूपात् पाथोनिधेरिव सुधानिधिरिद्धतेजाः ॥ ४१ ॥ शैशवे सदुपदेशमाददे यौवने च विदधे रिपुक्षयं ॥ संततावभिललापभामिनीः पुष्पसायकभिया न मोकलः ॥ ४२ ॥ सत्पक्षः प्रतिपक्षलक्षबलभिज्जिष्णुर्महासंगरे दूतानंतदृगुन्मिषन्मखरातिः श्रीमोकलो भूपतिः॥ आर्जि जाजपुरे प्रभूतपुरुषैरालभ्य दंभोलिभृन्नव्यो नाथधराधरोद्धुरशिरः स्कंधानभांक्षीत्क्षणात् ॥ ४३ ॥ कोणे कूणितकर्णधारविभवः श्रीमोकलो भूधवः प्रौढिं नावमुपयुषो जलचरः पीरोजपृथ्वीभुजः॥स्कंधावारमपारवारणमजह्वाजिव्रजव्याकुलं व्यावल्गत्तरवारिवारिणि रणाकूपारगर्भेक्षिपत् ॥ ४४ ॥ स्वर्धेनुः काशवेश्मन्यभिवलति फलत्यंगणे कल्पशाखी चिन्तारत्नं वियत्नं वसति मधिवसत्यस्य किं वेत्ति भूपः ॥ प्राप्याकूप्यंसरूप्यप्रकरमभिमतं मोकलक्षोणिपालान्नामुष्मिन्कैः कवीशैः प्रतिदिश-

मनिशं संशयानैर्बभूवे ॥ ४५ ॥ ग्रामं वाधणवाडं रामाग्रामं च मोकलो नृपतिः ॥ शिवभूतागमशुल्कं शिवभोगार्थं समर्पयामास ॥ ४६ ॥ आमज्य संगरसरस्तरवारिवारिण्यासज्य राजशिखरं च करे कृपाणं ॥ निर्भिद्य चण्ड-रुचिमंडलमाविवेश शैवं महः किमपि मोकलभूमिपालः ॥ ४७ ॥ उदियाय धरा-धरादमुष्मादवनीमंडलचंडरोचिरुच्चैः ॥ अरिसिंधुरबंधुरांधकारप्रतिवर्णः पृथिवीश-कुंभकर्णः ॥ ४८ ॥ निनीपुरतनुव्ययं जनकवैरमुर्वीतले बिलेशयरिपुव्रजं प्रचुरसंग-रस्थंडिले ॥ जुहाव भुजतेजसि ज्वलति कुंभकर्णो विभुर्नवीनजनमेजयः प्रबल-मत्र नुन्नासिना ॥ ४९ ॥ कुंभः कुंभलमेरुमंबरमणिः सूतांतरालेचलनान्नानिर्झरवारि-हारिणि गिरौ विंध्ये व्यधादुन्नतं ॥ दुर्गे दुर्गमधित्यकामधिचतुर्द्वारं विकायोच्चकैः प्राचीनं परिणद्धमारविवरं तत्रोरुविद्याधरं ॥ ५० ॥ अर्चाखनत्सप्त सरांसि भूभृद्वि-शोककोकानि निजांशुजालैः ॥ यत्राश्रितः श्रीपतिरेषशश्वत्शय्यासुखान्यंबुनिधौ न दध्यौ ॥ ५१ ॥ रथरथमधिरूढमुच्चकूटे नतिखेदं विदधेत्र चित्रकूटे ॥ अगणितगुरु-गोपुरावरुद्धप्रतिगर्वं किल कुंभभूमिपालः ॥ ५२ ॥ अचीकरन्मंदिरमिंदिरापतेरमुत्र दुर्गे किल कुंभभूपतिः ॥ यच्छृंगरिंगद्रथभंगशंकया रविश्चरत्युत्तरदक्षिणाश्रितः ॥ ५३ ॥ माद्यन्मालवनाथमूर्द्धनि चरणं दत्वा रणे दीदहत् श्रीसारंगपुरं सपौरनि-करं कुंभो धराधीश्वरः ॥ धूमस्तज्जनिरुज्जगाम गगने मन्ये तदुल्लासितश्चालीकुंत-लकालिमा निरुपमे तस्मिन्समुन्नीयते ॥ ५४ ॥ प्रत्यर्थिक्षोणिपालान्समरभुवि परा-भूय काश्चिद्गृहीताः काश्चित्सौंदर्यरागादपहृतमनसश्चात्मनैव प्रपन्नाः ॥ काश्चित्तद्दंशा-मुख्यैरुपरतिपदवीमापिता भूमिभर्त्रा भूभृत्कन्यानवीनाः परिणयति पुरा शंकरः कुंभकर्णः ॥ ५५ ॥ रामकुंडमनु मंडनीभवत् पद्मखंडचलदंडजव्रजं ॥ कुंभभूपतिर-चीखनज्जनानंदमंदिरमपारशंकरं ॥ ५६ ॥ स्वर्धेनुर्नधिनोति नामरतरुस्तोषं विधत्ते न वा चित्ते रोहति रोहणोपि न मनश्चिंतामणौ माद्यति ॥ द्यातिर्यत्र न चेतसोपि वितरत्येतावदुर्वीपतौ श्रीकुंभे कतमस्तु कर्णमहिमा भोजे च कीदृग्जयः ॥ ५७ ॥ नागहृदं च कठडावणनामधेयं ग्रामतथामलकखेटकसंज्ञमन्यं ॥ भीमाणनामकमयच्छ-दुमामहेशपूजोपहारविधये नृपकुम्भकर्णः ॥ ५८ ॥ दधौ गीतगोविन्दसंज्ञप्रबंधे स्फुरचित्तवृत्तिर्नृपः कुम्भकर्णः ॥ विनिर्माय विश्वोपकाराय शास्त्रं रसोल्लासिसंगीतराजा-भिधानं ॥ ५९ ॥ संख्यावद्भिर्न संख्यानिरवधिरुदिता नो वियल्लेख्यलक्ष्मी यद्दत्तै-र्भोभिरंभोनिधिरधिमालिनैर्यावदापूरि तोयं ॥ व्यक्तं नक्तं दिवं नो लिखति दशशत-स्फीतहस्तः समस्तं श्रीकुंभक्षोणिभर्तुर्गुणगणमवनौ को विनिर्णेतुमिष्टे ॥ ६० ॥ सार्द्धं सर्वधरावतंसविभवैर्भोगेन लक्ष्मीवतामुल्लासेन मनोभवस्य सुकवेर्भास्वद्रस-

व्यापृतैः ॥ त्रासेन प्रति भूभृतामनुगतः क्षोणीभुजामुत्सवैः काले क्वापि जगाम कुंभनृपतिः श्रीचन्द्रचूडास्पदं ॥ ६१ ॥ श्रीकुंभकर्णादर्णोधेर्जातोरितिमिराप-हृत् ॥ धत्ते कुवलयामोदं राजमल्लः सुधाकरः ॥ ६२ ॥ योगिनीपुरगिरींद्रकंदरं हीरहेममणिपूर्णमंदिरं ॥ अध्यरोहदहितेषु केसरी राजमल्लजगतीपुरंदरः॥ ६३ ॥ अवर्षत्संग्रामे सरभसमसौ दाडिमपुरे धराधीशस्तस्मादभवदनणुः शोणितसरित् ॥ स्खलन्मूलस्तूलोपमितगरिमाक्षेमकुपतिः पतन्तीरे यस्यास्तटविटपिवाटे विघटितः ॥ ६४ ॥ श्रीराजमल्लनृपतिर्नृपतीव्रतापतिग्मद्युतिः करनिरस्तखलांधकारः ॥ स चित्रकूटनगमिंद्रहरिद्गिरींद्रमाक्रामतिस्म जवनाधिकवाजिवर्गैः ॥ ६५ ॥ श्रीकर्णा-दित्यवंशं प्रमथपतिपरीतोपसंप्राप्तदेशं पापिष्ठो नाधितिष्ठेदिति मुदितमना राजमल्लो महीन्द्रः ॥ तादृक्षोभूत्सपक्षं समरभुवि पराभूय मूढोदयाव्हं निर्वास्यैनं यमाशाभि-मुखमभिमतैरग्रहीत्कुंभमेरुं ॥ ६६ ॥ आसज्येज्यं हरमनुमनः पावनं राजमल्लो मल्ली-मालामृदुलकवये श्रीमहेशाय तुष्टः ॥ ग्रामं रत्नप्रभवमभवावृत्तये रत्नखेटं क्षोणीभर्ता व्यतरदरुणे सैंहिकेयाभियुक्ते ॥ ६७ ॥ यन्त्रायंत्रिहलाहलिप्रविचलद्दंतावलव्याकुलं वलगद्वाजिवलक्कमेलककुलं विस्फारवीरारवं ॥ तन्वानं तुमुलं महासिहातिभिः श्री-चित्रकूटे गलद्गर्वं ग्यासशकेश्वरं व्यरचयत् श्रीराजमल्लो नृपः ॥ ६८ ॥ कश्चिद्गौरो वीरवर्यः शकौघं युद्धेमुष्मिन्प्रत्यहं संजहार ॥ तस्मादेतन्नामकामं बभार प्राकारां-शश्चित्रकूटैकशृंगे ॥ ६९ ॥ योधानमुत्र चतुरश्चतुरोमहोच्चान् गौराभिधान्समधिशृं-गमसावचैपीत् ॥ श्रीराजमल्लनृपतिः प्रतिमल्लगर्वसर्वस्वसंहरणचंडभुजाग्निवाद्रौ ॥ ७० ॥ मन्ये श्रीचित्रकूटाचलशिखरशिरोध्यासमासाद्य सद्यो यद्योधा गौरसंज्ञो-सुविदितमहिमाप्राप्तदुच्चैर्नभस्तत ॥ प्रध्वस्तानेकजाग्रच्छकविगलदसृक्पूरसंपर्कदोषं निःशेषीकर्त्तुमिच्छुर्व्रजति सुरसरिद्वारिणि स्नातुकामः ॥ ७१ ॥ जहीरलमहीधरं धरणिवृत्रजिद्विक्रमादटत्कटककंटकिद्रुमसमावृतेरुन्नतं ॥ विभिद्य भिदुरासिभिर्विपुल-पक्षमक्षीणवीरुदक्षिपदिवोपलं समिति राजमल्लो विभुः ॥ ७२ ॥ वंशहाटकहविर्यद-हौषीत् क्रोधहव्यभुजि तत्परितुष्टः ॥ शौर्यदैवतमयच्छदतुच्छं कीर्तिमस्य नृपतेः शशि-गौरां ॥ ७३ ॥ वृद्धत्वं वा सुधायाः सदनमनुसरत्यंबुराशिः शिशुत्वं विस्तारं वा हिमांशुर्गिरिधरणिमिमां मानसं बाध्यवात्सीत् ॥ श्रीरामाव्हं सरोयन्नरपतिरतनो-द्राजमल्लस्तदासौ प्रोत्फुल्लांभोजमित्थं त्रिदशदशमिनोहंत संशेरतेस्म ॥ ७४ ॥ अचीखनच्छंकरनामधेयं महासरो भूपतिराजमल्लः ॥ तन्मानसं यज्जलकेलिलो-भान्नाशिश्रियाते गिरिजागिरीशौ ॥ ७५ ॥ श्रीराजमल्लविभुना समया संकटमसंकट-सलिले ॥ अंबरचुंबितरंगं सेतौ तुंगं महासरो व्यरचि ॥ ७६ ॥ मौलौ मंडलदुर्ग-

मध्यधिपतिः श्रीमेदपाटावनेर्ग्राहं ग्राहमुदारजाफरपरीवारोरुवीरव्रजं॥ कंठच्छेदमचिक्षिपत्क्षितितले श्रीराजमल्लोद्धतं ग्यासक्षोणिपतेः क्षणान्निपातिता मानोन्नतामौलयः॥ ७७॥ खेरावादतरून् विदार्य यवनस्कंधान्विभिद्यासिभिर्हैडान्मालवजान्बलादुपहरन् भिंदंश्च वंशान्द्विषां॥ स्फुर्जत्संगरसूत्रभृद्भिरिधरा संचारिसेनांतरैः कीर्तेर्मंडलमुच्चकैर्व्यरचयत् श्रीराजमल्लो नृपः ॥ ७८ ॥ यत्पाणिस्फीतकुंताहतरिपुरुधिरप्रोल्लसत्सिंधुरोधो रंगप्रोन्मत्तयातूद्धतयुवतिजने तन्वति प्रौढनृत्यं॥ उद्गच्छद्वाजिराजत्खुरदलितधरोद्भूतधूलीनितांतं नीलांतश्चेललीलां भजति सजयति क्षोणिभृद्राजमल्लः ॥ ७९ ॥ मांद्यन्मण्डपचण्डभूधरहारिर्ढिल्लीदृढोन्मूलनप्रौढाहंकृतिरिद्धसिंधुधरणीपाथोधिमंथाचलः ॥ स्फुर्ज्जद्गुर्ज्जरचंद्रमंडलरविः काश्मीरकंसाच्युतः कर्णाटांधकधूर्जटिर्विजयते श्रीराजमल्लो नृपः ॥ ८० ॥ वाग्मी निर्मलयामले कृतमतिस्तंत्रे विचित्रे विधौ काम्ये राजति राजमल्लनृपतेर्गोपालभट्टो गुरुः ॥ यस्य स्वत्ययनैरमुष्य विषये संवर्द्धितासंपदो राज्यप्राज्यमभूदपायमभजन्नुच्चैररातिश्रियः ॥ ८१ ॥ प्रगीता सुतार्थानुपादानमेकं परं ब्रह्मणग्रामतस्तुप्रहाणं॥ अदो दाक्षिणामर्थिने राजमल्लो ददातिस्म गोपालभट्टाय तुष्टः॥ ८२ ॥ धानिनि निधनमाप्तेपत्यहीने तदीयं धनमवनिपभोग्यं प्राहुरर्थागमज्ञाः ॥ विदितनिखिलशास्त्रो राजमल्लस्तदुज्झन् विशदयति यशोभिर्बाप्पभूपान्ववायं ॥ ८३ ॥ या भूर्ब्राह्मणसात्कृता नृपतिभिः खुम्माणवंशोद्भवैर्माभूत्तज्जनिवस्तुमत्कुलभुवामादेयमापत्स्वपि ॥ इत्याज्ञानवडिंडिमध्वनिभरैरुत्साहयन्वाडवान् धर्मज्ञो भुवि राजमल्लजगतीजानिर्विजेजीयते ॥ ८४ ॥ कुंभकर्णनृपवंशभूमिपैरग्रहारजगतीजानि वित्तं ॥ नैवभोग्यमिति राजमल्लगीर्मान्यतामगमदग्रभूभुजां ॥ ८५ ॥ पूर्वक्षोणिपतिप्रदत्तनिखिलग्रामोपहारार्पणा काले लोपमवाप यावनजनैः प्रासादभंगोप्यभूत् ॥ उद्धृत्योन्नतमेकलिंगनिलयं ग्रामांश्चतान्पूर्ववद्दत्वा संप्रति राजमल्लनृपतिर्नौवापुरं चार्पयत् ॥ ८६ ॥ आपो यस्मिन्नमलकमलाः शाखिनः सद्रसालाः शालेयाल्यः सुलभसलिला मंजु मौद्गीनमालाः ॥ इक्षुक्षेत्रं मधुरमददाद्भट्टगोपालनाम्ने थूरग्रामं तमिह गुरवे राजमल्लोनरेन्द्रः ॥ ८७ ॥ यदि त्रिभुवनोदरे स्फुरति दुग्धवारान्निधिः शशी सुरभिरुल्लसेन्मृगमदावदातद्युतिः ॥ विभः क्व च न कतकं यदि तदोपमानं यशो लभेत विशदप्रभं सुरभिराजमल्लप्रभोः ॥ ८८॥ धराभारं यस्मिन्निजभुजयुगेनोद्धृतवति स्फुटं श्रीहम्मीरक्षितिपतिकुलांभोजतरणौ ॥ फणीशो यत्कीर्तिप्रचुरघनसारैरुपरतक्रियस्सर्प्पवृंदे विलसति जयत्येष नृपतिः॥८९॥ यन्नित्यं नहि तन्निमित्तरचनामंचत्यपारं च यन्नोतत्पारदमात्मने पदमदो न स्यात्परस्मै पदं ॥ दानं कांचनचारु तद्वितनुते श्रीराजमल्लो विभुर्द्धर्म्मस्तत्र वितन्वते विहरिण-

स्तिष्ठंति सर्वे सुखं ॥ ९० ॥ वंशे भृगोर्भगवतो भुवनप्रकाशे चंद्रावतंसचरणांबुजचं-
चरीकः ॥ आसीत्पवित्रचरितोनुवसंतयाजी श्रीसोमनाथधरणीविबुधो धरण्यां
॥ ९१ ॥ तस्यात्मजो नरहरिर्हरिरिव साक्षादान्विक्षिकीकमलकाननतिग्मरश्मिः ॥
आसीदिलातलविरिंचिरिति स्फुटार्थं यो वेद वेदवसतिर्विशदं बभार ॥ ९२ ॥ तस्मादं-
बुजिनीपतेरिव मनुश्चंडद्युतिः कश्यपादंभोजासनजो भृगुर्जलनिधेर्यद्वत्सुधादीधितिः॥
संजातो नृहरेरहीनमहिमा श्रीकेशवः कीर्तिमान्यो झोटिंग इति प्रथामुदवहद्दुर्वा-
दिपंचाननः॥ ९३ ॥ अत्रिस्तत्तनयो नयैकनिलयो ज्ञानी विदांतस्थितिर्मीमांसारसमां-
सलातुलमतिः साहित्यसौहित्यवान् ॥ मान्यः श्रीगुहिलान्वयांबुजवनीविद्योतनस्या-
भवत् श्रीमत्कुंभमहीपतेर्दशपुरज्ञातिद्विजाग्रेसरः ॥ ९४ ॥ अत्रेः सुनूर्महेशोस्ति-
राजमल्लस्य संसदि ॥ यो विवादिकुले वृक्षे धत्ते मत्तेभविक्रमं ॥ ९५ ॥ अत्रेः
सूनुरनूनपद्यपदवीभंगीभिरंगीकृतः प्रौढी भट्टमहेश्वरः कविवरः श्रीराजमल्लप्रभोः ॥
स्वोपज्ञप्रगुणःप्रशस्तिनिवहे शस्तां प्रशस्तिं व्यधादुद्यद्वीररसां नवीनरचनां रम्यैकालिं-
गालये ॥ ९६ ॥ उर्वी यावदहीन्द्रशेखररुचं धत्ते तुषारत्विषं श्रीकंठः शिरसि
स्ववक्षसि हरिः श्रीवत्समंभोंबुधिः ॥ तावद्राज्यमखंडितं कलयतः श्रीराजमल्ल-
प्रभोरेषा कीर्तिलता परेव विजयं धत्तां प्रशस्तिश्रियं ॥ ९७ ॥ यत्रोच्चोच्चतरप्रपंच-
रचनाचातुर्यचेतोहरेर्लब्ध्वानंदभरं न राजतगिरिं सस्मार सर्वेश्वरः ॥ देवः सूत्रभृद-
र्जुनोऽव्यरचयत् श्रीशांभवं मंदिरं रम्यं रम्यतमामिमामुदकिरत्तस्मिन्प्रशस्तिं सुधीः
॥ ९८ ॥ वत्सरे नृपतिविक्रमात्ययात् बाणवेदशरभूमि समिते ॥ चैत्रशुक्लदशमी-
गुरुवारे पूर्णतामलभत स्तुतिपङ्क्तिः ॥ ९९ ॥ एकलिंगमतिरंगभिंगितै रंगसंगिभिरनंग-
जीवनैः ॥ कुर्वती जयति पार्वतीवशे विंध्यबन्धुवसतिर्महारसैः ॥ १०० ॥ गीर्वाण-
वाण्यामविचक्षणैर्नरैः सुखावसेयानि वचांसि कानिचित् ॥ स्वदेशभाषामनुसृत्य
भूपतेरनुज्ञया ऽस्यार्थं नयामहे ॥ १०१ ॥

श्रीएकलिंगप्रसादि प्राप्त परमानन्द श्रीहारितराशि मुनिवचन प्राप्त मेदपाट-
प्रमुखसमस्तवसुमती साम्राज्य श्रीबापा, खुम्माण, शालिवाहन, नरवाहन, भोज,
कर्णादिक अनेक महाराजा इणीवंश हुआ, इणीहीज वंशी अरिशीह चित्रोड़ गढ़ दृढ़
प्राकार प्रकार प्रचण्ड भुजदण्ड मण्डलित कोदंड हुआ, तीयिरोपुत्र विषमधाड पचा-
यण कलिकाल कलंकिया राय केदार हम्मीर हुओ, तिणा श्रीएकलिंग चतुर्मुख मूर्ति
धरावी, शिहेलो ग्राम देवभोगार्थ चढाव्युं, तीणरो पुत्र अरिराजमत्तमातंग पंचानन-
षेतो हुओ, तिणीपि पनवाड़ ग्राम देवपूजार्थ चढ़ाव्युं, तिणरो पुत्र अमोक्षराय
मोक्षदाता रायगुरु दानगुरु कुलगुरु वागा गलाराइपरमगुरु लखणसेन हुआ, तिणि

चीरवो ग्राम एकलिंगभोगार्थ चढ़ाव्युं, तिणरा पुत्र द्वापरधर्मावतार विद्वज्जन दैन्यदवदहनदावानल पिरोजख़ानमानमर्दन राजवृत्तपरमाचार्य श्रीमोकलेन्द्र हुआ, तिणी बांधनवाडो अनि रामुवी ग्राम अनि शिवरात्रि नवशतिजीकाईदाण देलवाड़ारा ऊपरशु श्रीएकलिंगपूजारे अर्थ चढ़ाव्या, तिणरो पुत्र अभिनव नन्दकेश्वरावतार रिपुरायमीनजलजाल दर्प्पांधराय भूतभैरव अरिदृढगिरिराटपक्ष विक्षोभवज्राभिघात अभिनवसरताचार्य श्रीकुंभकर्ण माहिमहेन्द्र हुआ, तिण देव श्रीएकलिंगपूजोपहारिअर्थे नागद्रह, कठड़ावण, आमलहेडा, भीमाणो, ए च्यार ग्राम चढाव्या, तिण श्रीकुम्भकर्णरा पुत्र गौडराजन्यवंशाभरण राणी श्री पुवाडरे गर्भरत्न अश्व, गज, नर, दुर्गपति, चतुर्विधरायमुकुटमणि अष्टगुण चतुर्जाति कामिनीमनमोहनमीनकेतन असथा संग्रामजित् संगीतार्णव वीरवर्ण प्रलयकालानल अर्थिजनकल्पनीकल्पद्रुम महाराय श्रीरायमल्ल राज्य भोगवेइछे, तिणि पूर्वजरीपरिदेवी अन्न सर्व प्रवर्त्ताव्यो, कालिकारे ग्राम पूर्व दत्तलोपाणा हुआ ते वले चढाव्या, देव, ब्राह्मण, भाट, नाजका वर्पासन गाम पूर्वजेने आपणी दीधी तिण समस्त राजकर मुकरे कीधा, निधान गुण भूमी घणी भोगवी जिणको अपुत्रिक परलोक पाई तियि रुंधन राजमन्दिर न आवि, इति आज्ञा वर्तमान प्रासाद शुद्ध कराव्युं, प्रशस्ति नवी करावे मंडावी, ते श्रीराजमल्ल महाराज जहां लगी, शेष नागरी मस्तककी पृथ्वी रही ता लगी पुत्र, पौत्रपरिवार विक्रम समयातित सं० १५४५ प्रवर्तमाने चैत्रमासे शुक्लपक्षे दशमी १० तिथौ गुरुवासरे लिखितं शुभं भवतु ॥ (१)

नारलाई गांवकी पश्चिम तरफ़ आदिनाथके जैनमन्दिरके
एक स्तम्भपरका शिलालेख.

॥ ५० ॥ श्रीयशोभद्रसूरि गुरुपादुकाभ्यां नमः संवत् १५५७ (२) वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे षष्ठ्यां तिथौ शुक्रवासरे पुनर्वसुऋक्षप्राप्तचंद्रयोगे श्रीसंडेरगच्छे

(१) इस प्रशस्तिके ठीक मध्यमें एक शिवलिंगाकार चित्रकाव्य बनाहुआ है, जिसमें पांच श्लोक हैं, परन्तु उस स्थानका पत्थर घिसजाने व टूटजानेके कारण कितने एक अक्षर बिल्कुल जातेरहे हैं, जिससे उसके पूरे श्लोक पढ़नेमें न आसके, इसलिये उस काव्यको यहांपर छोड़ दिया है.

(२) भावनगर प्राचीन शोध संग्रह पृ० ९४ से ९६ तक और भावनगरमें छपीहुई प्राकृत ऐंड संस्कृत इन्स्क्रिपृशन्स नामक पुस्तकके पृ० १४०-४२ में यह लेख छपा है, जिसमें इस लेखका संवत् १५९७ लिखा है, लेकिन् उस समय महाराणा उदयसिंह राज्य करते थे, न कि रायमल्ल, इसवास्ते इतिहास कार्यालयके सेक्रेटरी पंडित गौरीशंकर हीराचन्द ओझाको नारलाई भेज दर्याफ़्त कराया तो इसका सही संवत् १५५७ पायागया, जो यहांपर दर्ज है.

कलिकालगौतमावतारः समस्तभाविकजनमनोऽबुजविबोधनैकदिनकरः सकललब्धि-विश्रामः युगप्रधानः। जितानेकवादीश्वरवृंदः। प्रणतानेकनरनायकमुकुटकोटिघृष्ट-पादारविंदः श्रीसूर्य इव महाप्रसादः चतुःषष्टिसुरेंद्रसंगीयमानसाधुवादः। श्रीखंडेर-कीयगणबुधावतंसः। सुभद्राकुक्षिसरोवरराजहंसः यशोवीरसाधुकुलांबरनभोमणिः सकलचारित्रिचक्रवर्तिवक्रचूडामणिः भ० प्रभुश्रीयशोभद्रसूरयः। तत्पट्टे श्री-चाहुमानवंशशृंगारः। लब्धसमस्तनिरवद्यविद्याजलधिपारः श्रीबदरादेवीदत्तगु-रुपदप्रसादः।स्वविमलकुलप्रबोधनैकप्राप्तपरमयशोवादः।भ० श्रीशालिसूरिः त० श्री-सुमतिसूरिः त० श्रीशान्तिसूरिः त० श्रीईश्वरसूरिः। एवं यथा क्रममनेकगुणमणि-गणरोहणगिरीणां महासूरीणां वंशे पुनः श्रीशालिसूरिः त० श्रीसुमतिसूरिः तत्पट्टालंकारहार भ० श्रीशांतिसूरिवराणां सपरिकराणां विजयराज्ये ॥ अथेह श्रीमेदपाटदेशे। श्रीसूर्यवंशीयमहाराजाधिराजश्रीशिलादित्यवंशे श्रीगुहिदत्त-राउलश्रीबप्पाकश्रीखुमाणादिमहाराजान्वये। राणाहमीरश्रीखेतसिंहश्रीलखमसिंह-पुत्रश्रीमोकलमृगांकवंशोद्योतकारकप्रतापमार्त्तंडावतारः। आसमुद्रमहीमंडलाखंडल-अतुलमहाबलराणाश्रीकुंभकर्णपुत्रराणाश्रीरायमल्लविजयमानप्राज्यराज्ये। तत्पुत्र-महाकुमारश्रीपृथ्वीराजानुशासनात्। श्रीऊकेशवंशे रायजडारीगोत्रे राउलश्रीलाषण-पुत्रमं० दूदवंशे मं० मयूरसुत मं० सादूलः। तत्पुत्राभ्यां मं० सीहासमदाभ्यां सद्बांधव मं० कर्मसीधारालाखादिसुकुटंबयुताभ्यां श्रीनंदकुलवत्यां पुर्यां सं ९६४ श्रीयशोभद्रसूरि मंत्रशक्तिसमानीतायां त० सायर कारित देवकुलिकायुद्धारतः। सायरनामश्रीजिनवसत्यां। श्रीआदीश्वरस्य स्थापना कारिता श्रीशांतिसूरिपट्टे देवसुंदर इत्यपरशिष्यनामभिः आ० श्रीईश्वरसूरिभिः इति लघुप्रशस्तिरियं लि० आचार्यश्रीईश्वरसूरिणा उत्कीर्णा सूत्रधारसोमाकेन ॥ शुभं०

चितौड़पर मुहम्मद शाह तुग़लक़के समयकी बनी हुई मस्जिदकी फ़ारसी प्रशस्ति (१).

* .... * خدای ملک سلیمان وتاج وتخت ونگین *

* چو آفتاب جهانگیر و بلکه ظل اله * یگانه ختم سلاطین مصر تغلق شاه *

---

(१) इस प्रशस्तिके पाषाणका प्रारंभका भाग टूटजानेसे प्रशस्तिलेखके ६ शिअ़्रोंमेंसे शुरूके तीन मिस्रे (पद) जाते रहे हैं, जिनसे कि साल संवत् मालूम होता, बाक़ी ९ मिस्रे जो पाषाणपर मौजूद हैं, वे यहां पर दर्ज किये गये हैं.

* سرير مملكت از راے او مزين باد * ....

* مدار ملك اسد الدين (؟) ارسلان جواد * كه گشت محكم از و عدل و داد را بنيان *

* ... از جمادي الاولى گذشته بد ايام * ....

* خدا بفضل مرين خير را قبول كناد * جزاء حسن عمل را يكے هزار دهاد *

महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास कृत, इतिहास वीरविनोद, प्रथम भाग समाप्त.

---
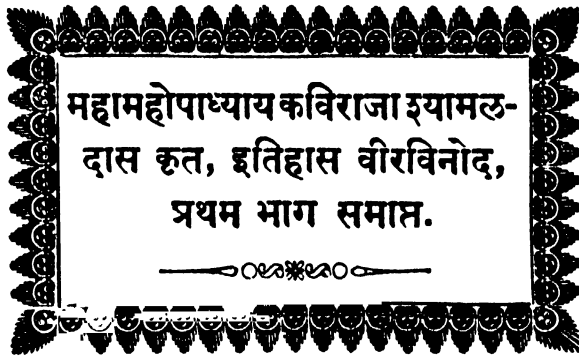
(१) मलिक अलदुद्दीन ग़यासुद्दीन तुग़लक़का भतीजा और मुहम्मद तुग़लक़का चचेरा भाई था, जिसकी तज्वीज़से यह मकान या मस्जिद बनी मालूम होती है.

'The *VIRVINOD* of Shyamaldas, one of the earliest Indian historical works written in Hindi, has long been inaccessible to scholars and the general public. Printed in folio size in Udaipur in 1893, it was never distributed and only a few copies found their way outside of Rajasthan.'
—PROFESSOR THEODORE RICCARDI (Jr), *Columbia University, New York*

THIS monumental four-volume work on the history of Rajasthan, which runs up to 2716 pages, focuses the reader's attention on Mewar as the centre of Rajput glory, chivalry and heroism. The tumultuousness of major events and their challenges, and how the people of Mewar faced them under the leadership of successive Maharanas are graphically described. The clang of arms and the feats of unsurpassed Rajput bravery resound on its every page.

The author attempts to put his narration of Rajasthani history in a world context. A general survey of continents—Europe, Africa, North and South America, Australia and Asia—is made; Alexander's invasion of India and the Muslim inroads are described; upheavals outside the Indian Subcontinent affecting the Mewar way of life are subjected to serious scrutiny; and the history of Nepal in the Himalayan range is minutely detailed.

The richness of the work is supplemented by the inclusion of invaluable inscriptions, state documents, various *farmans* and statistical material that throw light on the political, economic and administrative condition of Rajasthan.

Written in a style unique for its directness, the *VIRVINOD* is reprinted for the first time since its appearance in 1886. This reprint fills the need which has long been felt by Indian scholars, researchers, students and general readers.

KAVIRAJ SHYAMALDAS occupied the seat of poet laureate in the Court of Maharana Sajjan Singh of Mewar (1859-84). The honorific titles of 'Mahamahopadhyaya' and 'Kaiser-e-Hind' were conferred on him as a recognition of his encyclopaedic knowledge and vast erudition. The *VIRVINOD* is his chief work.

Jacket Illustration: Maharana Sajjan Singh (1859-84)

ISBN 81-208-0191-1 **Four-Volume Set Rs. 800**